पारा नं - 1 से 15
पेज नं - 001 से 544

तर्जुमा

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी
एम॰ ए॰ (अलीग॰)

यह ऐसी किताब है जिसमें कोई शुब्हा नहीं

क़ुरआन मजीद

(मय तर्जुमा व अ़रबी मतन)

तर्जुमा

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह०

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी एम. ए. (अ़लीग०)

मौहल्ला महमूद नगर, मुज़फ़्फ़र नगर (उ० प्र०)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

नई दिल्ली

कुरआन मजीद

मय हिन्दी तर्जुमा, अरबी मतन एवं लिपियंतरण

Translation by
Hakimul Ummat Hadhrat Maulana Ashraf Ali Thanvi Rah.

Rendered in Hindi by
Maulana Mohammad Imran Qasmi Bigyanvi

ISBN 978-81-7231-456-9

First Published 2003
Nineteenth Impression 2021

Published by *Abdus Sami* for
Islamic Book Service (P) Ltd.
1516-18, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002 (India)
Tel.: +91-11-23244556, 23253514, 23286551
e-mail: info@ibsbookstore.com
Website: www.ibsbookstore.com

Our Associates
Husami Book Depot, Hyderabad (India)

Printed in India

अपनी बात

अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि उसने इस नाचीज़ को एक अहम और अज़ीमुश्शान दीनी ख़िदमत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं, आप चौदहवीं सदी के ज़बरदस्त आलिमे दीन गुज़रे हैं। ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर (उ. प्र.) के क़सबा 'थाना भवन' में **5** रबीउस्सानी **1280** हिजरी में पैदा होने वाले इस आलिमे दीन ने इस्लाम की वे ख़िदमात अन्जाम दीं कि जिनसे क़ियामत तक उम्मते मुस्लिमा फ़ायदा उठाती रहेगी और अपने दीन को सँवारती रहेगी। मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह. ने क़रीब बीस साल की उम्र में इस्लामी दुनिया की अज़ीम दीनी दर्सगाह दारुल उलूम देवबन्द से फ़रागत हासिल की, आपने क़रीब चौदह साल कानपुर में पढ़ाया और फ़तवे लिखने की ख़िदमत अन्जाम दी। उसके बाद हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह. की हिदायत के मुताबिक़ ख़ानक़ाह इमदादिया 'थाना भवन' में रिहाइश इख़्तियार की, और उम्र की आख़िरी साँस तक यहीं रहकर दीनी ख़िदमात अन्जाम देते रहे। आपका इन्तिक़ाल **17** रजब **1362** हिजरी (**19** जौलाई **1943** ई.) में हुआ।

हज़रत थानवी रह. की किताबों की तायदाद तक़रीबन एक हज़ार तक पहुँचती है, जिनमें इस्लामी उलूम और दीनी व इल्मी मौज़ूआत के तक़रीबन हर गोशे में आपने उम्मत की रहनुमाई फ़रमाई। दो बातों पर आपका ध्यान ख़ास तौर पर रहा- एक **समाज का सुधार** और इस सिलसिले में इस्लामी तालीमात का प्रसार और उनको आम करना। दूसरे **तसव्वुफ़** यानी इनसान का अपनी हक़ीक़त को पहचान कर दुनिया में आने और पैदा किए जाने के मक़सद को सामने रखकर उन तक़ाज़ों को पूरा करना जिनका उसके पैदा करने वाले और मालिक ने उससे मुतालबा किया है।

आपने उम्मते मुस्लिमा की हर-हर मैदान में रहनुमाई फ़रमाई और इस्लामी तालीमात को दुनिया के सामने उनके असली रंग में पेश किया। उम्मत के अन्दर जो बिगाड़ और ख़राबियाँ हैं आपने उनकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई और उनके सुधार की तरफ़ ख़ास ध्यान दिया इसी लिए आपका लक़ब **"हकीमुल उम्मत"** मशहूर हुआ।

आप हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह. के ख़लीफ़ा थे, मख़्लूक़ की रहनुमाई और बैअत की लाईन से भी आपने ज़बरदस्त ख़िदमतें अन्जाम दीं। आपके ख़लीफ़ाओं में बड़ी-बड़ी हस्तियाँ शामिल हैं, जिनमें बड़े-बड़े अल्लामा, दीनी रहनुमा, सूफ़िया और समाज सुधारक शामिल हैं।

जिन दीनी किताबों का प्रकाशन हर साल लाखों में होता है उनमें हज़रत थानवी रह. की दो किताबें पहली सफ़ में अपना दर्जा रखती हैं- **बहिश्ती ज़ेवर** और **तर्जुमा-ए-क़ुरआन**। ये दोनों किताबें हर साल लाखों की तायदाद में छपती हैं, और मुस्लिम क़ौम की दीनी रहनुमाई और हिदायत का ज़रिया बन रही हैं।

मुझे हज़रत थानवी रह. की शख़्सियत और आपकी किताबों से बचपन ही से मुनासबत और ताल्लुक़ रहा। मेरे उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मौलाना **क़ारी अब्दुल ग़फ़ूर** साहिब (मोहतमिम **मदरसा मसीहुल उलूम** ग्रा. बिझाना ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर यू. पी.) को हज़रत थानवी रह. की किताबों ख़ास तौर पर उनके **मवाअ़िज़** (यानी तक़रीरों) से एक तरह का इश्क़ है। मैंने होश संभाला तो अपनी बस्ती में इस मदरसे को क़ायम होता देखा, यही मेरी पहली दर्सगाह (शिक्षा स्थान) है। मौलाना **क़ारी अब्दुल ग़फ़ूर** साहिब के इस ज़ौक़ का थोड़ा बहुत हिस्सा इस नाचीज़ को भी हासिल हुआ, और हज़रत थानवी रह. की ज़ात व शख़्सियत से बचपन ही में एक अक़ीदत व मुहब्बत क़ायम हो गयी जो अल्हम्दु लिल्लाह दिन-ब-दिन बढ़ती ही चली गयी।

पिछले कई सालों से मुझे दीनी किताबों की प्रूफ़ रीडिंग और हिन्दी अनुवाद का मौक़ा मिलता रहा है, कई

बार मेरी ख़्वाहिश हुई कि हज़रत थानवी रह. की कुछ अहम किताबों का हिन्दी में अनुवाद किया जाए ताकि हिन्दी पढ़ने और जानने वाले हज़रात भी उनसे फ़ायदा उठा सकें।

क़रीब दो साल पहले की बात है कि मेरे करम-फ़रमा जनाब **अ़ब्दुल मुईन ख़ाँ** साहिब डायरेक्टर **इस्लामिक बुक सर्विस** ने नाचीज़ बन्दे से हिन्दी में तर्जुमा-ए-क़ुरआन छापने का इरादा ज़ाहिर किया और मुझसे फ़रमाइश की कि हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी या हज़रत मौलाना महमूदुल हसन शैख़ुल-हिन्द के तर्जुमों में से कोई एक तर्जुमा को हिन्दी में करने की ख़िदमत मैं अन्जाम दूँ। चूँकि काम अहम था इसलिए एक बार को मेरी हिम्मत नहीं हुई मगर फिर भाई **अ़ब्दुल मुईन ख़ाँ** के इसरार (जिसमें इस नाचीज़ के साथ उनका बिरादराना ताल्लुक़ और ख़ुलूस शामिल था) के सबब मैंने अल्लाह का नाम लेकर काम शुरू किया और नमूने के तौर पर एक पारः करके ले गया, ताकि वह किसी माहिर और ज़िम्मेदार शख़्स को दिखला कर यह तय कर लें कि हिन्दी अनुवाद में ज़बान का मेयार क्या रहे। अल्लाह का शुक्र व एहसान है कि उनको इस नाचीज़ का किया हुआ काम पसन्द आया और उन्होंने फ़ौरन मुझे इस काम की तकमील (यानी पूरा करने) का हुक्म दिया और उसूल व ज़ाब्ते के तहत एक मुआ़हदा उसी वक़्त तैयार कराकर बन्दे को इनायत फ़रमाया।

तर्जुमा का काम शुरू किया तो बहुत-सी दुश्वारियों का सामना करना पड़ा। हज़रत थानवी रह. की ज़बान व तहरीर बड़ी ही नपी-तुली और इल्मी अन्दाज़ की है, उनकी तहरीर के मफ़्हूम व मतलब को हिन्दी में मुन्तक़िल करना कोई आसान बात नहीं। मैंने अपनी बिसात-भर पूरी कोशिश की है कि उनकी तहरीर का मफ़्हूम व मतलब ज़रूर निकल आये और अल्हम्दु लिल्लाह मुझे इसमें काफ़ी हद तक कामयाबी भी मिली है। तफ़सीर में कहीं-कहीं ज़बान और अन्दाज़े बयान इस क़द्र इल्मी है कि पूरी कोशिश के बावजूद शायद सौ फ़ीसद उसे आसान ज़बान में बयान करने में नाचीज़ को कामयाबी न मिली हो मगर मफ़्हूम व मतलब को पकड़ने की भरपूर कोशिश की है, ऐसे मक़ामात (स्थान) चन्द ही नज़र आयेंगे। अल्लाह का शुक्र है कि यह तर्जुमा इतना आसान हो गया है कि उर्दू तर्जुमा इसके सामने मुश्किल मालूम हो सकता है मगर इससे आसानी से फ़ायदा उठाया जा सकता है।

हज़रत थानवी रह. ने अपने तर्जुमा में मक़सद व मफ़्हूम को स्पष्ट और वाज़ेह करने के लिए ब्रेकेट को इस्तेमाल किया है, ऐसे में मुझे जहाँ यह महसूस हुआ कि यहाँ तर्जुमा का असल लफ़्ज़ बाक़ी रहना चाहिए या यह कि हिन्दी का जो मुतबादिल लफ़्ज़ हम इस्तेमाल कर रहे हैं वह उस उर्दू लफ़्ज़ की सौ फ़ीसद नुमायन्दगी और तर्जुमानी नहीं करता, तो अगर हम भी वहाँ ब्रेकेट में इबारत बढ़ाते तो फिर यह पहचान करनी दुश्वार हो जाती कि कौनसी इज़ाफ़े वाली इबारत हज़रत थानवी रह. की है और कौनसी इबारत इस नाचीज़ (यानी हिन्दी अनुवादक) की है। इस मुश्किल को हमने इस तरह हल किया कि हज़रत थानवी रह. की ब्रेकेट वाली इबारतों को ब्रेकेट ही में रहने दिया और जहाँ कहीं इस नाचीज़ (हिन्दी अनुवादक) को इज़ाफ़े की ज़रूरत महसूस हुई तो तर्जुमा के अन्दर उद्धरण चिन्ह (" ") के दरमियान उस इबारत का इज़ाफ़ा किया, अब पढ़ने वाला अच्छी तरह समझ सकता है कि कौनसी इबारत हज़रत थानवी की है और कौनसा इज़ाफ़ा हिन्दी अनुवादक का। तफ़सीर के अन्दर चूँकि उर्दू अनुवादक (हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह.) ने ब्रेकेट का इस्तेमाल नहीं किया है, शायद ही पूरी तफ़सीर में दो-चार जगह हो, इसलिए तफ़सीर में बन्दे ने अगर कहीं किसी बात को वाज़ेह करने की ज़रूरत पेश आई है तो ब्रेकेट का इस्तेमाल किया है।

मैं बहुत आभारी हूँ जनाब **प्रोफ़ेसर मुहम्मद सुलैमान साहिब** (देवबन्द) और जनाब **प्रोफ़ेसर अ़ब्दुर्-रशीद आगवान साहिब** (देहली) का, जिन्होंने मेरे इस काम को तवज्जोह की नज़र से देखा और प्रशंसा व दुआ़ओं और मुफ़ीद मश्विरों के ज़रिये मेरी हिम्मत बढ़ाई। इसी तरह मुझे **जनाब ख़ालिद निज़ामी साहिब** (देहली) का

भी शुक्रिया अदा करना है जिन्होंने बड़ी मेहनत से इस तर्जुमा की प्रूफ़ रीडिंग की और अपने तजुर्बात से मुझ नाचीज़ की रहनुमाई फ़रमाई, अल्लाह तआ़ला उनको इसका दोनों जहान में बेहतरीन बदला इनायत फ़रमाये। साथ ही दिल से दुआ़ निकलती है अपनी बच्ची **ज़ैनब ख़ातून** के लिए जो अगरचे अपनी उम्र की सिर्फ़ बारहवीं मन्ज़िल में है मगर अल्लाह तआ़ला ने उसको एक ख़ास सलीक़े से नवाज़ा है, ग़लतियों के बनाने और प्रूफ़ रीडिंग में इस बच्ची ने भी मेरा बहुत सहयोग किया।

मैंने इस तर्जुमा को हिन्दी का रूप देने में इस बात का पूरा ख़्याल रखा कि हिन्दी के मुश्किल अल्फ़ाज़ न आने पायें बल्कि आ़म बोल-चाल में जो उर्दू-हिन्दी की मिली-जुली ज़बान इस्तेमाल होती है, कोशिश की है कि उसी आ़म बोल-चाल के स्तर की ज़बान इस्तेमाल की जाए ताकि उसको हर शख़्स आसानी से समझ सके। क्योंकि उर्दू ज़बान भले ही तालीमी इदारों से नापैद होती जा रही हो, भले ही उसके लिखने-पढ़ने वालों की तायदाद में कमी आ रही हो, मगर इसकी अदायगी में आसानी, मिठास और मतलब के समझने-समझाने में असरदार होने के सबब आ़म बोल-चाल और मीडिया पर अस्सी फ़ीसद तक आज भी इस ज़बान का क़ब्ज़ा बरक़रार है।

मैं एक बार फिर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता हूँ जिसने मुझे अपनी पवित्र और क़ियामत तक रहने वाली और इनसानियत की रहनुमाई करनी वाली किताब **क़ुरआन मजीद** की इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई। न सिर्फ़ हिन्दी अनुवाद बल्कि इसकी कम्पोज़िंग और सैटिंग भी मेरी ही निगरानी में अन्जाम पाई और अल्हम्दु लिल्लाह मुझे ख़ुद इसकी सैटिंग करने और तरतीब देने का मौक़ा मिला। यह काम क़रीब डेढ़ साल की मुद्दत में पूरा हुआ।

क़ुरआन पाक के अ़रबी मतन को किसी दूसरी ज़बान में मुन्तक़िल करने के बारे में मैं अपनी राय **"एक ज़रूरी तंबीह"** के उन्वान में लिख चुका हूँ। क़ुरआन पाक के हुरूफ़ को देखना और इज़्ज़त व अदब से वुज़ू की हालत में छूना भी इबादत का दर्जा रखता है, ऐसे में वह फ़ज़ीलत किसी और ज़बान में कैसे हासिल हो सकती है जो अ़रबी ज़बान में है। मेरी तमाम मुसलमानों से गुज़ारिश है कि क़ुरआन पाक की तिलावत की सआ़दत और अ़ज़ीम दौलत को हासिल करने के लिए क़ुरआन पाक को अ़रबी ही में सीखें और पढ़ें, इससे हमें दोनों जहान की कामयाबी हासिल होगी।

इनसान अपनी कोशिश का मुकल्लफ़ है, हमने भी पूरी कोशिश की है कि हमारा यह काम ग़लतियों से पाक हो जाए, मगर इनसान की कोई कोशिश ग़लती से पाक नहीं हो सकती, यह मक़ाम अल्लाह तआ़ला ने सिर्फ़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को बख़्शा है कि अल्लाह तआ़ला ख़ताओं और ग़लतियों से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है। हमने पूरी कोशिश की है कि इस हिन्दी मतन, तर्जुमा और तफ़सीर में कोई ग़लती न रहे, अगर आपकी नज़र से कोई ग़लती गुज़रे तो मेहरबानी फ़रमा कर प्रकाशक को उसकी सूचना दें ताकि अगले संस्करण में उसको दुरुस्त किया जा सके। शुक्रिया।

आख़िर में अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह हमारी इस मेहनत में इख़्लास पैदा फ़रमाये और इसको क़बूल फ़रमाये आमीन। इसके प्रकाशन का बन्दोबस्त करने वाले इदारे **'इस्लामिक बुक सर्विस/समी पब्लीकेशंस प्रा. लि.'** के मालिकान, अधिकारियों और कारकुनान सभी को इसकी ख़ैर व बरकत से नवाज़े, आमीन।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अ़लीग.)

79 महमूद नगर, गली न. 6 मुज़फ़्फ़र नगर यू. पी.

25.12.2002

क़ुरआन मजीद के नाज़िल होने, इकट्ठा किए जाने और तरतीब देने के हालात

जानते हो क़ुरआन मजीद क्या चीज़ है? एक मुक़द्दस और पवित्र किताब है जो सबसे आख़िरी नबी तमाम पैग़म्बरों के सरदार मुहम्मद अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई। यह अ़र्श व कुर्सी के मालिक का कलाम है, जो उसने अपने एक सम्मानित पैग़म्बर और मुकर्रम बन्दे से किया। इस्लाम की बिना इसी पाक आसमानी फ़रमान पर है। जिसने फ़रमाँबरदारी की वह इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुआ और जिसने ज़रा भी सरकशी और नाफ़रमानी की वह उस पाकीज़ा जमाअ़त से ख़ारिज हो गया और अल्लाह जल्ल शानुहू के बाग़ियों में शामिल हुआ। जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई उस वक़्त आपको नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई गई और रिसालत का ताज आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सर पर रखा गया। उसी ज़माने से क़ुरआन पाक के नाज़िल होने की शुरूआ़त हुई। वक़्त वक़्त पर ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा-थोड़ा तेईस (23) साल तक नाज़िल होता रहा। अगली किताबों की तरह पूरा एक ही बार में नाज़िल नहीं किया गया। (1)

सही यह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत के बाद रमज़ान की शबे-क़द्र में पूरा क़ुरआन मजीद लौहे-महफ़ूज़ से इस आसमान पर जिसे हम देख रहे हैं, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुक्म के मुताबिक़ नाज़िल हो गया और उसके बाद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को जिस वक़्त जिस क़द्र हुक्म हुआ उन्होंने इस मुक़द्दस कलाम को बिलकुल उसी हालत में बिना किसी कमी-बेशी और बिना किसी बदलाव और अदल-बदल के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक पहुँचा दिया। कभी दो आयतें, कभी तीन आयतें, कभी एक आयत से भी कम, कभी दस-दस आयतें, कभी-कभी पूरी-पूरी सूरतें। इसी को शरीअ़त में 'वह्य' कहते हैं। उलमा ने **'वह्य'** के अनेक तरीक़े हदीसों से निकाल कर पेश किये हैं।

1. फ़रिश्ता 'वह्य' लेकर आये और एक आवाज़ घन्टी जैसी मालूम हो। यह कैफ़ियत बहुत-सी हदीसों से साबित है, और यह क़िस्म 'वह्य' की तमाम क़िस्मों में सख़्त थी। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बहुत तकलीफ़ होती थी, यहाँ तक कि आपने फ़रमाया कि जब कभी ऐसी 'वह्य' आती है तो मैं समझता हूँ कि अब मेरी जान निकल जायेगी।
2. फ़रिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।
3. फ़रिश्ता आदमी की शक्ल में आकर बात-चीत करे। यह क़िस्म बहुत आसान थी, इसमें तकलीफ़ न होती थी।
4. अल्लाह तआ़ला बिना किसी वास्ते के जागने की हालत में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कलाम फ़रमाये, जैसा कि शबे-मेराज में।
5. अल्लाह तआ़ला ख़्वाब की हालत में कलाम फ़रमाए। यह क़िस्म भी सही हदीसों से साबित है।

---

1. जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तौरात और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर इन्जील और हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर ज़बूर। ये सब किताबें पूरी एक ही दफ़ा में नाज़िल हो गईं। और इसपर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि ये सब किताबें रमज़ान ही के महीने में उतरीं। (इतुक़ान)

6. फ़रिश्ता ख़्वाब की हालत में आकर कलाम करे। मगर याद रहे कि अख़ीर की दो क़िस्मों (5. 6.) की 'वह्य' से कुरआन मजीद ख़ाली है। पूरा कुरआन जागने की हालत में नाज़िल हुआ। अगरचे बाज़ उलमा ने सूरः कौसर को अख़ीर की क़िस्म से क़रार दिया है मगर मुहक़्क़िक़ उलमा ने इसको रद्द कर दिया है और उनके शुब्हे का काफ़ी जवाब दे दिया है। (इत्क़ान)

कुरआन मजीद के थोड़ा-थोड़ा नाज़िल होने में यह भी हिक्मत थी कि उसमें बाज़ आयतें वे थीं जिनका किसी वक़्त मन्सूख़ (यानी निरस्त और रद्द) कर देना ख़ुदा-ए-तआ़ला को मन्ज़ूर था। कुरआन मजीद में तीन क़िस्म के मन्सूख़ात हैं। बाज़ वह जिनका हुक्म भी मन्सूख़ और तिलावत भी मन्सूख़।

मिसालः 1. सूरः 'लम् यकुन्' में "**लौ का-न लि-इब्नि आद-म वादियम् मिम्-मालिन् ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलैहिस्-सानी, व लौ का-न लहुस्-सानी ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलैहिमस्-सालिसु व ला यम्लउ जौफ़ब्नि आद-म इल्लत्-तुराबु व यतूबुल्लाहु अ़ला मन् ता-ब**" भी था।

मिसालः 2. **दुआ़-ए-क़नूत** भी कुरआन मजीद की दो सूरतें थीं।

बाज़ वे हैं जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गयी मगर हुक्म बाक़ी है। जैसे 'आयते रज़्म' कि हुक्म उसका बाक़ी है मगर तिलावत उसकी नहीं होती। ये दोनों क़िस्में कुरआन मजीद से निकाल दी गईं और इनका लिखना भी कुरआन मजीद में जायज़ नहीं।

बाज़ वे हैं जिनकी तिलावत बाक़ी है मगर हुक्म मन्सूख़ हो गया है। यह क़िस्म कुरआन मजीद में दाख़िल है और इसकी बहुत-सी मिसालें हैं। बाज़ आ़लिमों ने मुस्तक़िल किताबें लिखकर उनको जमा किया है। तफ़सीर के फ़न में उनसे बहुत बहस होती है मगर यह मक़ाम उनकी तफ़सील का नहीं। (तफ़सीरे इत्क़ान)

जब नबी-ए-करीम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने हक़ीक़ी मालिक से जा मिले और इस दुनिया से पर्दा फ़रमाया और वह्य के नाज़िल होने का सिलसिला बन्द हो गया, कुरआन मजीद किसी किताब में, जैसा कि आजकल है, जमा न था, विभिन्न चीज़ों पर सूरतें और आयतें लिखी हुई थीं और वे मुख़्तलिफ़ लोगों के पास थीं। अक्सर सहाबा को पूरा कुरआन मजीद ज़बानी याद था। सबसे पहले कुरआन मजीद के इकट्ठा करने का ख़्याल हज़रत अमीरुल-मोमिनीन फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दिल में पैदा हुआ और हक़ तआ़ला ने उनके ज़रिये से अपने उस सच्चे वायदे को पूरा किया जो अपने पैग़म्बर से किया था, यानी यह कि कुरआन मजीद के हम हाफ़िज़ है, इसका जमा करना और हिफ़ाज़त करना हमारे ज़िम्मे है। यह ज़माना हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़ते राशिदा का था। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनकी ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि कुरआन के हाफ़िज़ शहीद हो जाते हैं, और बहुत-से यमामा की लड़ाई में शहीद हो गये। मुझे डर है कि अगर यही हाल रहेगा तो बहुत बड़ा हिस्सा कुरआन मजीद का हाथ से जाता रहेगा। इसलिये मैं मुनासिब समझता हूँ कि आप इस तरफ़ तवज्जोह फ़रमाइए और कुरआन मजीद के जमा करने का एहतिमाम कीजिये। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं किया उसको तुम कैसे कर सकते हो? हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम! यह बहुत अच्छा काम है। फिर वक़्त वक़्त

पर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु इस तरफ़ तवज्जोह दिलाते रहे। यहाँ तक कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में यह बात जम गयी। उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को तलब किया और यह सब क़िस्सा बयान करके फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद के जमा करने के लिये मैंने आपको चुना है। आप 'वह्य' के लिखने वाले थे और नेक जवान हैं। उन्होंने भी वही उज़्र किया कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं किया उसको आप लोग कैसे कर सकते हैं? आख़िरकार वह भी राज़ी हो गये और उन्होंने बहुत ही एहतिमाम और हद दर्जा एहतियात से क़ुरआन मजीद को जमा करना शुरू किया।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को चुनने की वजह उलमा ने यह लिखी है कि हर साल रमज़ान में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ुरआन मजीद का दौर किया करते थे, (1) और वफ़ात के साल में दो बार क़ुरआन मजीद का दौर हुआ और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु उस अख़ीर दौरे में शरीक थे और अख़ीर दौरे के बाद फिर कोई आयत मन्सूख़ नहीं हुई। जिस क़द्र क़ुरआन उस दौरे में पढ़ा गया वह सब बाक़ी रहा, इसलिये उनको मन्सूख़ हुई आयतों का ख़ूब इल्म था। (शरहे सुन्नह्)

जब क़ुरआन मजीद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के निहायत एहतिमाम से जमा हो चुका, हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उसकी नज़रे-सानी की और जहाँ कहीं लिखने में ग़लती हो गयी थी उसको दुरुस्त किया। कई साल तक इस फ़िक्र में रहे और अक्सर समय सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मुनाज़रा भी किया। फिर जब इस एहतिमाम व पाबन्दी और एहतियात के बाद यह काम पूरा हो गया तो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके पढ़ने-पढ़ाने का सख़्त एहतिमाम किया। जो सहाबा हाफ़िज़ थे उनको दूर-दराज़ मुल्कों में क़ुरआन व फ़िक़्ह (यानी मसाइल) की तालीम के लिये भेजा जिसका सिलसिला हम तक पहुँचा।

हक़ यह है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का एहसान इस बारे में तमाम उम्मते मुहम्मदिया पर है, उन्हीं की बदौलत आज हमारे पास क़ुरआन मजीद मौजूद है और हम इसकी तिलावत से फ़ायदा उठाते हैं। इस एहसान का बदला किससे हो सकता है। ऐ अल्लाह! तू उनके दर्जे बुलन्द फ़रमा और उनको अपनी रिज़ा व निकटता का आला मक़ाम अ़ता फ़रमा, आमीन।

फिर हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस एहसान को और भी कामिल कर दिया। अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उन्होंने क़ुरआन मजीद के उस नुस्ख़े (प्रति) की सात नक़लें कराकर दूर-दराज़ के मुल्कों में भेज दीं और क़िराअत (पढ़ने) के इख़्तिलाफ़ की वजह से जो फ़सादात बरपा हो रहे थे और एक-दूसरे की क़िराअत को ख़िलाफ़े हक़ और बातिल समझता था उन सब झगड़ों से दीने इस्लाम को पाक कर दिया। सिर्फ़ एक क़िराअत पर सबको मुत्तफ़िक़ कर दिया। अब अल्हम्दु लिल्लाह जैसी मज़बूत किताब मुसलमानों के पास है कोई मज़हब दुनिया में इसकी मिसाल नहीं ला सकता। इन्जील व तौरात की हालत तो ख़स्ता है, उनके अन्दर वह

1. हदीस में 'मुआ़रज़े' का लफ़्ज़ है जिसका मतलब यह हुआ कि कभी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनको सुनाते थे कभी वह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सुनाते थे। (फ़तहुल-बारी)

तब्दीली और कमी-बेशी हुई कि अल्लाह अपनी हिफ़ाज़त में रखे। क़ुरआन मजीद के बारे में मुख़ालिफ़ों को भी इक़रार है कि हाँ यह वही किताब है जिसके बारे में मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह का कलाम होने का दावा फ़रमाया था। इसमें किसी क़िस्म की कमी-ज्यादती उनके बाद नहीं हुई। इसपर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

क़ुरआन मजीद में आयतों और सूरतों की तरतीब जो इस ज़माने में है यह भी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने दी है, मगर अपनी राय और किसी अन्दाज़े से नहीं बल्कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस तरतीब से पढ़ते थे और जो तरतीब उस मुबारक ज़माने में थी उसके ज़रा भी ख़िलाफ़ नहीं किया। सिर्फ़ दो सूरतों की तरतीब अलबत्ता सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अपने क़ियास से दी है। सूरः बराअत और सूरः अन्फ़ाल। तो यह भी यक़ीनन लौहे-महफ़ूज़ के ख़िलाफ़ न होगी, जिसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआ़ला ने ली हो उसमें तरतीब भी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं हो सकती।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के ज़माने में क़ुरआन मजीद में सूरतों के नाम, पारों के निशानात वग़ैरह कुछ न थे बल्कि हर्फ़ों पर नुक़्ते भी न दिये गये थे, बल्कि बाज़ सहाबा इसको बुरा समझते थे, वे चाहते थे कि मुसहफ़ में सिवाय क़ुरआन के और कोई चीज़ न लिखी जाये। अ़ब्दुल मलिक के ज़माने में अबुल-अस्वद या इमाम हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इसमें नुक़्ते बनाये और उसके बाद फिर ख़ुम्स (पाँचवाँ) और उश्र (दसवाँ) लिखे गये और सूरतों और पारों के नाम भी लिख दिये गये। उलमा इन सब चीज़ों के जायज़ होने पर मुत्तफ़िक़ हैं इसलिये कि ये ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिनके क़ुरआन होने का शुब्हा हो, और उन चीज़ों का लिखना मना है जिनके क़ुरआन होने का शुब्हा पैदा हो।

क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल और उसकी तिलावत वग़ैरह का सवाब

क़ुरआन मजीद की अ़ज़मत, बुज़ुर्गी और उसकी फ़ज़ीलत और बुलन्दी के लिये इसी क़द्र काफ़ी है कि वह तमाम मख़्लूक़ात के ख़ालिक़ व मालिक का कलाम है, तमाम ऐबों और कमियों से बरी और पाक है, ज़बान और बयान के एतिबार से इसकी बुलन्द और बेमिसाल हैसियत को तमाम अ़रब ने मान ली, बड़े-बड़े फ़साहत व बलाग़त के दावे करने वाले इसके जैसे दो-तीन जुमले भी वर्षों की कोशिशों में भी न बना सके। सरेआ़म ऐलान भी किया गया, जोश दिलाने वाले ख़िताब से कहा गया कि अगर तुम इसके ख़ुदा का कलाम होने में शक करते हो और इसको इनसानी कलाम समझते हो तो तुम इसकी छोटी से छोटी सूरः के जैसी कोई इबारत बना लाओ और अपने तमाम मददगारों और सहयोगियों को जमा करो, हरगिज़ न बना सकोगे, हरगिज़ न बना सकोगे। जिन्नों की क़ौम ने जब इस कलाम को सुना, बेसाख़्ता कह उठे कि "इन्ना समिअ़ना क़ुरआनन् अ़-जबा, यह्दी इलर्रुश्दि फ़-आमन्ना बिही व लन् नुश्रि-क बि-रब्बिना अ-हदन्" (यानी बेशक हमने एक अ़जीब क़ुरआन सुना जो नेकी की तरफ़ हिदायत करता है, हम उसपर ईमान लाये और अपने परवर्दिगार का किसी को शरीक हरगिज़ न समझेंगे) ख़ुद अल्लाह जल्ल शानुहू इस मुक़द्दस कलाम की तारीफ़ फ़रमाता है फिर हम लोगों की ज़बान व क़लम में क्या ताक़त है कि इसकी ख़ूबियाँ और फ़ज़ाइल का एक मामूली-सा हिस्सा भी

बयान कर सकें।

इसकी तिलावत और पढ़ने-पढ़ाने का सवाब किसी बयान का मोहताज नहीं। तमाम उलमा-ए-उम्मत मुत्तफ़िक़ हैं कि कोई ज़िक्र क़ुरआन मजीद के पढ़ने से ज़्यादा सवाब नहीं रखता। इस बारे में बहुत ज़्यादा हदीसें हैं, नमूने के लिये बरकत के तौर पर चन्द हदीसें नक़ल की जाती हैं।

1. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हक़ तआ़ला फ़रमाता है कि जो कोई क़ुरआन मजीद के पढ़ने में मश्गूल हो और दुआ़ या किसी दूसरे ज़िक्र की उसको फ़ुरसत न मिले, मैं उसको दुआ़ माँगने वालों से भी ज़्यादा दूँगा और कलामुल्लाह की बुज़ुर्गी तमाम कलामों पर ऐसी है जैसे ख़ुदा की बुज़ुर्गी तमाम मख़्लूक़ पर। (दारमी शरीफ़)

2. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ज़्यादा महबूब है तमाम आसमानों और ज़मीनों और उन चीज़ों से जो उनमें हैं। (दारमी शरीफ़)

3. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर क़ुरआन मजीद किसी खाल में हो तो वह खाल आग में नहीं जल सकती। (दारमी शरीफ़)

खाल से मुराद मोमिन का दिल है, कि अगर उसमें क़ुरआन मजीद हो तो वह दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा।

4. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि तीन क़िस्म के लोगों को क़ियामत में ख़ौफ़ न होगा, न उनसे हिसाब लिया जायेगा, और उन तीन में से क़ुरआन मजीद पढ़ने वाले को आपने बयान फ़रमाया। (दारमी शरीफ़)

5. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक बार अपने ख़ुतबे में फ़रमाया कि ऐ लोगो! मैं भी एक आदमी हूँ क़रीब है कि मेरे रब की तरफ़ से कोई मुझको बुलाने आये और मैं चला जाऊँ। मैं तुममें दो बहुत क़ीमती और बड़ाई वाली चीज़ें छोड़े जाता हूँ- एक ख़ुदा की मुक़द्दस किताब, इसमें हिदायत व नूर है, पस तुम लोग अल्लाह की किताब को मज़बूत पकड़ लो और उसपर अ़मल करो। (रिवायत करने वाले कहते हैं कि फिर आपने लोगों को इसपर बहुत रग़बत दिलाई)। दूसरे मेरे अहले-बैत हैं, (यानी घर वाले और आल-औलाद), तुमको ख़ुदा का ख़ौफ़ याद दिलाता हूँ अपने अहले-बैत के हुक़ूक़ की रियायत करने में। (दारमी शरीफ़)

6. क़ुरआन मजीद की तिलावत के वक़्त फ़रिश्ते और रहमत नाज़िल होते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत उसैद बिन हज़ीर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि एक रात को वह सूरः ब-क़रः पढ़ रहे थे और उनका घोड़ा क़रीब ही बँधा हुआ था, वह भड़कने लगा। वह चुप हो गये, घोड़े को भी सुकून हो गया। फिर उन्होंने पढ़ना शुरू किया, फिर उसकी वही हालत हुई। फिर उन्होंने पढ़ना शुरू किया फिर उसकी वही हालत हुई। तब उन्होंने तिलावत बन्द कर दी, इस ख़्याल से कि उनके साहिबज़ादे यह्या क़रीब ही थे, कहीं घोड़ा ज़्यादा भड़के और वह कुचल न जायें। सुबह को यह वाक़िआ़ हज़रत नबी-ए-करीम की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया, आपने फ़रमाया, ऐ इब्ने हज़ीर! पढ़े जाओ, ऐ इब्ने हज़ीर! पढ़े जाओ। तब उन्होंने अपना वह ख़ौफ़ उज़्र में पेश किया और कहा कि तिलावत ख़त्म करने के बाद मैंने सर उठाकर देखा तो बादल का एक टुकड़ा था जिसमें चिराग़

रोशन थे। यहाँ तक कि वह मेरी नज़र से ग़ायब हो गया। हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जानते हो यह क्या चीज़ थी? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि नहीं! आपने फ़रमाया कि ये फ़रिश्ते थे, तुम्हारी क़िराअत की वजह से नज़दीक आ गये थे। अगर तुम पढ़े जाते तो वे फ़रिश्ते तुम्हारे पास आ जाते और सुबह को सब लोग उनको देखते। इसी क़िस्म का वाक़िआ़ कई सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को क़ुरआन मजीद के पढ़ने के वक़्त पेश आया जो सही हदीसों में बयान किया गया है। कई क़िस्से तो बुख़ारी शरीफ़ में हैं।

7. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि हसद की इजाज़त नहीं मगर दो शख़्सों पर- एक वह जो क़ुरआन मजीद पढ़ता हो और वह उसकी तिलावत में रातों को मश्ग़ूल रहता हो। दूसरे वह जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और वह उसको दिन-रात अल्लाह की राह में ख़र्च करता हो। (बुख़ारी शरीफ़)

इस हदीस में हसद से मुराद रश्क करना है। दोनों में फ़र्क़ यह है कि किसी शख़्स की नेमत के ख़त्म हो जाने की ख़्वाहिश करना हसद है, और उस नेमत की अपने लिये ख़्वाहिश करना बग़ैर इसके कि दूसरे शख़्स से ख़त्म हो, यह रश्क है। रश्क करना मुतलक़न जायज़ है, हसद मुतलक़न नाजायज़। इस हदीस में रश्क करने की इजाज़त सिर्फ़ इन्हीं दोनों चीज़ों में मुन्हसिर (सीमित) करना मक़सूद नहीं बल्कि मतलब यह है कि कोई नेमत इन दोनों नेमतों से बढ़कर नहीं, जिसके हासिल होने की ख़्वाहिश की जाये।

8. हज़रत अबू सालेह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया गया है कि क़ुरआन मजीद अपने पढ़ने वालों की क़ियामत में सिफ़ारिश करेगा। पस उसको बुज़ुर्गी का लिबास पहनाया जायेगा। फिर क़ुरआन मजीद कहेगा कि ऐ अल्लाह! और ज़्यादा इसके ऊपर इनाम फ़रमा, तब उसको बुज़ुर्गी का ताज पहनाया जायेगा। फिर कहेगा ऐ अल्लाह! और ज़्यादा दे, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपनी रज़ामन्दी का परवाना उस शख़्स को अ़ता फ़रमायेगा। (दारमी शरीफ़)

9. जो शख़्स अच्छी तरह क़ुरआन मजीद पढ़े और उसके हलाल को हलाल और हराम को हराम जाने, अ़ल्लाह तआ़ला उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा और उसके दस अ़ज़ीज़ों (रिश्तेदारों) के हक़ में जो दोज़ख़ के मुस्तहिक़ होंगे, उसकी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमायेगा। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

10. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद पढ़ने से हर हर्फ़ के बदले में दस नेकियाँ मिलती हैं। मैं नहीं कहता कि 'अलिफ़, लाम, मीम,' एक हर्फ़ है, बल्कि 'अलिफ़' एक हर्फ़ है, 'लाम' एक हर्फ़ है, 'मीम' एक हर्फ़ है। (दारमी शरीफ़)

मक़सद यह है कि सिर्फ़ 'अलिफ़-लाम-मीम' कहने से तीस नेकियाँ मिलती हैं। अल्लाहु अकबर।

11. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम सबमें बेहतर वह शख़्स है जिसने क़ुरआन मजीद को पढ़ा और पढ़ाया। यह हदीस अबू अ़ब्दुर्रहमान ने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सुनकर क़ुरआन मजीद पढ़ाना शुरू किया। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ख़िलाफ़त के वक़्त से हज्जाज के ज़माने तक पढ़ाते रहे और फ़रमाते थे कि इसी हदीस ने मुझे इस जगह बिठला दिया है कि क़ुरआन पढ़ाने में मश्ग़ूल हूँ। (बुख़ारी शरीफ़, दारमी शरीफ़)

12. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जो शख़्स अपने लड़के को क़ुरआन की तालीम करता है, हक़ तआ़ला उसको क़ियामत में जन्नत का एक ताज पहनायेगा। (तिबरानी)

13. मुआ़ज़ इब्ने अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जो शख़्स अच्छी तरह क़ुरआन पढ़े और उसपर अ़मल करे, क़ियामत के दिन उसके माँ-बाप को एक ताज पहनाया जायेगा जिसकी रोशनी सूरज की रोशनी से कहीं ज़्यादा होगी। फिर क्या कहना उस शख़्स का जिसने पढ़ा और अ़मल किया। (अबू दाऊद)

14. अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि यह क़ुरआन अल्लाह का नेमत-ख़ाना है, इससे लो जिस क़द्र ले सको, मेरे नज़दीक उस घर से ज़्यादा बेबरकत कोई मक़ाम नहीं जिस घर में ख़ुदा की किताब न हो, और बेशक वह दिल जिसमें कुछ भी क़ुरआन न हो एक वीरान घर है जिसमें कोई रहने वाला नहीं। (दारमी शरीफ़)

15. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स क़ुरआन मजीद याद करके भूल जाये वह क़ियामत के दिन कोढ़ी होगा। (बुख़ारी शरीफ़) अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

16. ख़ालिद बिन मअ्दान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जो शख़्स क़ुरआन मजीद पढ़े उसको इकहरा सवाब मिलेगा और जो उसको सुने उसको दोहरा सवाब मिलेगा। (दारमी शरीफ़) इसी हदीस से उलमा ने यह बात निकाली है कि क़ुरआन मजीद के सुनने में पढ़ने से भी ज़्यादा सवाब है। (कबीरी)

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी बहुत पसन्दीदा था कि कोई दूसरा शख़्स क़ुरआन मजीद पढ़े और आप सुनें। एक बार अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इर्शाद हुआ कि तुम पढ़कर मुझको सुनाओ। उन्होंने कहा कि मैं आपको सुनाऊँ? आप ही पर नाज़िल हुआ है। इर्शाद हुआ कि मुझे अच्छा मालूम होता है कि किसी दूसरे से सुनूँ। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सूरः निसा पढ़ना शुरू की यहाँ तक कि इस आयत पर पहुँचेः **"फ़कै-फ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिम् बि-शहीदिंवू-व जिअ्ना बि-क अ़ला हा-उला-इ शहीदा"** (1) हुज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया बस बस। इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि आपकी मुबारक आँखों से आँसू बह रहे थे।

(बुख़ारी शरीफ़, दारमी शरीफ़) (2)

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब कभी हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को देखते तो फ़रमाते कि ऐ मूसा! हमको अपने परवर्दिगार की याद दिलाओ। वह क़ुरआन पढ़ना शुरू कर देते। (दारमी शरीफ़)

यह अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहुत अच्छी आवाज़ के मालिक थे। क़ुरआन मजीद बहुत अच्छा पढ़ते थे। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके पढ़ने की बहुत तारीफ़ फ़रमाई है।

---

(1) तर्जुमाः क्या हाल होगा उस वक़्त जब हम हर उम्मत के लिये उनमें से एक गवाह निकालेंगे और उन लोगों पर तुमको गवाह बनायेंगे। यह ज़िक्र क़ियामत का है कि उस दिन ख़ुदा तआ़ला हर उम्मत पर उनके पैग़म्बर को गवाह बनायेगा और हम लोगों पर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को।

(2) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम शायद इस सबब से रोये कि इस आयत में आपके गवाह बनाने का ज़िक्र है और आपको अपनी उम्मत के तमाम अच्छे-बुरे हालात बयान करने पड़ेंगे, और उम्मत की बुराई आपको नागवार है। इसके अ़लावा आपकी आ़दत भी थी कि क़ुरआन मजीद के पढ़ने में अक्सर रोया करते थे।

इसी तरह क़ुरआन मजीद की ख़ास-ख़ास सूरतों की फ़ज़ीलतें भी सही हदीसों में बहुत आई हैं। मुख़्तसर तौर पर चन्द हदीसें नक़ल की जाती हैं।

सूरः फ़ातिहा के बारे में हदीसों में आया है कि 'सब्ए-मसानी' और 'क़ुरआने अ़ज़ीम' यही है। (बुख़ारी शरीफ़) (1) ऐसी सूरः किसी नबी पर नहीं नाज़िल हुई। (मुस्तद्रक)

सूरः ब-क़रः के हक़ में आया है कि जिस घर में यह सूरः पढ़ी जाये वहाँ से शैतान भाग जाता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़) उसको पढ़ो बरकत होगी वरना हसरत होगी। (मुस्लिम शरीफ़) दो तरोताज़ा चीज़ों को पढ़ा करो, सूरः ब-क़रः और सूरः आलि इमरान। ये दोनों क़ियामत में अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करेंगी और ख़ुदा तआ़ला से झगड़ा करके उसको बख़्शवायेंगी। **आयतुल-कुर्सी** तमाम क़ुरआनी आयतों की बुज़ुर्ग और सरदार है। (मुस्लिम शरीफ़) सूरः ब-क़रः के आख़िर की दो आयतें जिस घर में पढ़ी जायें तीन दिन तक शैतान उस घर के क़रीब नहीं जाता। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः अन्आ़म जब उतरी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तस्बीह पढ़ी और फ़रमाया कि इस क़द्र फ़रिश्ते उसके साथ थे कि आसमान के किनारे भर गये। (मुस्तद्रक, हाकिम)

सूरः कहफ़ जुमा के दिन जो शख़्स पढ़े उसके लिये एक नूर होगा दूसरे जुमा तक। (मुस्तद्रक) उसके लिये नूर होगा क़ियामत के दिन। (हिस्ने हसीन)

सूरः यासीन क़ुरआन मजीद का दिल है। जो कोई शख़्स इसको ख़ुदा के लिये पढ़े वह बख़्श दिया जायेगा, इसको अपने मुर्दों पर पढ़ो। (मुस्तद्रक, हाकिम)

सूरः फ़त्ह मुझको तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है। (बुख़ारी शरीफ़)

सूरः मुल्क ने एक शख़्स की सिफ़ारिश की यहाँ तक कि बख़्श दिया गया। (सिहाहे-सित्ता) यह अपने पढ़ने वालों के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करती है यहाँ तक कि वह बख़्श दिया जायेगा। (इब्ने हब्बान)

मैं चाहता हूँ कि यह सूरः हर मोमिन के दिल में रहे। (मुस्तद्रक, हाकिम) यह सूरः अपने पढ़ने वाले को क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाती है। जो इसको रात को पढ़ ले उसने बहुत नेकी की और अच्छा काम किया। (मुस्तद्रक)

सूरः ज़िल्ज़ाल आधे क़ुरआन के बराबर सवाब रखती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः काफ़िरून में चौथाई क़ुरआन के बराबर सवाब है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः नस्र का सवाब चौथाई क़ुरआन का सवाब है। (बुख़ारी शरीफ़) एक शख़्स इस सूरः को हर नमाज़ में पढ़ा करते थे, नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनसे कह दो कि अल्लाह उनको दोस्त रखता है। (बुख़ारी शरीफ़) उसकी मुहब्बत तुमको जन्नत में दाख़िल करेगी। (बुख़ारी शरीफ़)

एक शख़्स को यह सूरः पढ़ते हुए आपने सुना तो फ़रमाया कि जन्नत ज़रूरी होगी। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः फ़लक़ और **सूरः नास** अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ज़्यादा महबूब हैं। (मुस्तद्रक) इससे बढ़कर कोई

(1) क़ुरआन मजीद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ख़िताब है कि हमने तुमको 'सब्ए-मसानी' और 'क़ुरआने अ़ज़ीम' इनायत फ़रमाया है। उसी को आपने फ़रमा दिया कि सब्ए-मसानी और क़ुरआने अ़ज़ीम से यही सूरः मुराद है।

दुआ़ या इस्तिग़फ़ार नहीं है। (निसाई शरीफ़) यानी यह बहुत आला दर्जे की दुआ़ है और इसके पढ़ने से तमाम बलाओं से नजात मिलती है। जब से ये दोनों सूरतें नाज़िल हुईं नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन्हीं को विर्द कर लिया और दूसरी दुआ़एँ जो जिन्न और हसद वग़ैरह के शर और बुराई से बचने के लिए पढ़ते थे, छोड़ दीं। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

क़ुरआन मजीद तमाम जिस्मानी और रूहानी बीमारियों की दवा है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है **"शिफ़ाउंव्-व रह्मतुल् लिल्-मुअ्मिनी-न, व शिफ़ाउल्-लिमा फ़िस्सुदूरि"**। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई सच्चे दिल से क़ुरआन मजीद पढ़े तो पहाड़ भी हिल जाये। अ़ल्लामा सुयूती इत्क़ान में लिखते हैं कि क़ुरआन मजीद रूहानी तिब (दवा और इलाज) है बशर्ते कि नेक लोगों की ज़बान से अदा हो। अल्लाह के हुक्म से हर बीमारी और रोग की शिफ़ा इससे हासिल होती है, मगर चूँकि नेक लोग कम हैं और हर किसी की ज़बान में असर नहीं होता इसलिये लोगों ने जिस्मानी तिब की तरफ़ रुजू किया।

ख़ास-ख़ास सूरतों के ख़्वास भी सही हदीसों में बहुत आये हैं, सैकड़ों मरीज़ों को इससे शिफ़ा हुई है, हज़ारों बलायें इससे दूर हुई हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में अनेक तरीक़ों से रिवायत किया गया है कि एक शख़्स को साँप ने काट लिया था, कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वहाँ सफ़र की हालत में उतरे हुए थे। उन लोगों ने आकर कहा कि यहाँ के सरदार को साँप ने काट लिया है, आप लोगों में अगर कोई झाड़ते हों तो चलें। उनमें से एक सहाबी चले गये और उन्होंने सूरः फ़ातिहा पढ़कर फूँक दी, वह अच्छा हो गया।

क़श्ती पर सवार होते वक़्त **"बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन्-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम"** पढ़ लेने से कश्ती डूबने से महफ़ूज़ रहती है। (इत्क़ान)

"क़ुलिद्उल्ला-ह अविद्उर्-रह्मा-न" आख़िर सूरः तक पढ़ लेने से चोरी से अमान होता है। (इत्क़ान)

रात को जिस वक़्त उठना मन्ज़ूर हो सोते वक़्त सूरः कह्फ़ का आख़िरी हिस्सा पढ़ ले, उस वक़्त ज़रूर आँख खुल जायेगी। इस हदीस के एक रिवायत करने वाले कहते हैं कि यह मेरा आज़माया हुआ है। (इत्क़ान)

"क़ुलिल्लाहुम्-म मालिकल् मुल्कि तुअ्तिल्-मुल्-क............बिग़ैरि हिसाब" तक पढ़ लेना क़र्ज़ की अदायगी के लिये मुफ़ीद है। (इत्क़ान) यह आयत इस नाचीज़ बन्दे की आज़माई हुई है मगर मुझे एक ख़ास तरीक़ा इसके पढ़ने का बतलाया गया है, वह यह कि नमाज़ के बाद शुरू व आख़िर में तीन-तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़कर सात बार यह आयत पढ़े। वाक़ई बहुत जल्द अपना असर दिखाती है। चालीस दिन भी नहीं गुज़रने पाते कि असर ज़ाहिर होने लगता है।

"रब्बि हब्-ली मिल्लदुन्-क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-बतन्" जिस औ़रत के लड़का न होता हो, चालीस दिन तक पढ़ने से कामयाब हो जाती है, यह भी मेरे सामने कई मर्तबा आज़माई गई है।

क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल और उसके पढ़ने-पढ़ाने का सवाब मुख़्तसर तौर पर बयान हो चुका। ग़ालिबन इस क़द्र सवाब व फ़ज़ीलत मालूम करने के बाद फिर कोई मुसलमान जुर्रत नहीं कर सकता कि क़ुरआन मजीद की तिलावत और इसके पढ़ने-पढ़ाने से ग़फ़लत करे।

ऐ अल्लाह! ऐ अ़र्श व क़ुर्सी के मालिक! ऐ तौरात, ज़बूर, इन्जील और क़ुरआन को नाज़िल करने वाले! ऐ क़ुरआन को तमाम किताबों पर फ़ज़ीलत देने वाले, ऐ नेमत देने वाले! अपने फ़ज़्ल व करम, अपनी रहमते कामिला और करम के सदक़े में हम सब मुसलमानों को इस अपनी मुक़द्दस किताब से फ़ैज़याब फ़रमा। इसकी तिलावत की हमें तौफ़ीक़ दे, हमारे आमाल व अफ़आ़ल को इसके मुवाफ़िक़ कर, क़ियामत के दिन जब हमारे बुरे आमाल हमें दोज़ख़ का मुस्तहिक़ बना दें तो क़ुरआन मजीद को हमारा सिफ़ारिशी कर और क़ुरआन पढ़ने वालों के सदक़े में हमें बख़्श दे, आमीन। कितना ख़ुशनसीब है वह शख़्स जिसको हर दिन क़ुरआन मजीद की ज़ियारत और तिलावत नसीब होती हो। सो उस नेक बन्दे पर फ़िदा होना पसन्दीदा जानें जिसका वज़ीफ़ा ऐसी मुक़द्दस किताब हो, बेशक इन्शा-अल्लाह तआ़ला उन लोगों की यह उम्मीद पूरी होगी जिसको अ़ल्लामा शातबी अपने इन शे'रों में ज़ाहिर फ़रमाते हैं:

ल-अ़ल्-ल इलाहल्-अ़र्शि या इख़्वती यक़ी — जमा-अ़-तना कुल्लल्-मकारिहि हुव्वला
व यज्अ़लुना मिम्-मंय्यकूनु किताबुहू — शफ़ीअ़न् लहू इज़् मा नसूहु फ़ियम्हला

तर्जुमा: उम्मीद है कि ऐ भाइयो! अ़र्श व क़ुर्सी का मालिक हमारी जमाअ़त को तमाम बुराइयों और ख़ौफ़ की चीज़ों से बचा ले, और हमको उन लोगों में शामिल फ़रमाये जिनके लिये उसकी मुक़द्दस किताब क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करेगी। इसलिये कि हमने उसकी मुक़द्दस किताब को भुलाया नहीं जो वह नाख़ुश होकर हमसे कुछ बुराई करे। आख़िरी जुमले में उस हदीस की तरफ़ इशारा है जिसका मज़मून यह है कि जो लोग क़ुरआन मजीद से ग़फ़लत करते हैं क़ुरआन मजीद उनको दोज़ख़ में भिजवायेगा। जमाअ़त से मुराद वे लोग हैं जो क़ुरआन मजीद पढ़ते हैं और उसके उलूम हासिल करते हैं।

यह भी जान लेना चाहिए कि क़ुरआन मजीद की तिलावत का सवाब इसपर मौक़ूफ़ नहीं कि उसके मायने समझकर तिलावत की जाये, जो शख़्स अ़रबी ज़बान न जानता हो, क़ुरआन के मायने न समझ सकता हो उसको भी क़ुरआन मजीद की तिलावत का सवाब मिलेगा और वह भी इस आ़म फ़ैज़ से महरूम न रहेगा, इसलिये कि क़ुरआन मजीद के अल्फ़ाज़ भी तासीर और फ़ायदे से ख़ाली नहीं हैं। (1) यह दूसरी बात है कि अगर मायने समझकर तिलावत की जाये तो ज़्यादा सवाब मिलेगा।

(1) शैख़ अ़ब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी ने 'शरह स-फ़रुस्-सआ़दत' के दीबाचे में लिखा है कि मैंने इस किताब में दुआ़ व अज़्कार का तर्जुमा नहीं किया इसलिये कि इनके असल अल्फ़ाज़ में ख़ासियत है, मायने मालूम हों या न हों, अगरचे मायने मालूम हो जाने से एक क़िस्म की ख़ुशी और ताज़गी हासिल हो जाती है। पस क़ुरआन मजीद जो तमाम ज़िक्रों से अफ़ज़ल है इसके अल्फ़ाज़ तासीर व फ़ैज़ से कैसे ख़ाली रह सकते हैं?।

क़ुरआन मजीद की तिलावत वग़ैरह के आदाब

जब क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल मालूम हो चुके और उसकी अ़ज़मत दिल में बैठ गई तो यह बात क़ाबिले बयान न रही कि इसकी ताज़ीम व अदब में किस दर्जा कोशिश करनी चाहिये और इसके पढ़ने और सुनने में कैसा अदब और एहतिमाम पेशे नज़र रखना चाहिये। मगर चन्द ज़रूरी और मुफ़ीद बातें हम बयान किये देते हैं।

सही यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत और पढ़ने के लिये किसी उस्ताद से इजाज़त लेना या उसको सुनाना शर्त नहीं, हाँ इस क़द्र ज़रूरी है कि क़ुरआन मजीद सही पढ़ता हो, अगर इतनी क़ाबलियत अपने में न देखे तो उसको ज़रूरी है कि किसी उस्ताद को सुना दे या उससे पढ़ ले। (इत्क़ान)

यह भी शर्त नहीं है कि क़ुरआन मजीद के मायने समझ लेता हो, और अगर क़ुरआन मजीद में ऐराब (यानी ज़ेर, ज़बर, पेश वग़ैरह) न हों तब भी उसके सही ऐराब पढ़ लेने पर क़ादिर हो। (1)

सही यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत की नेमत सिर्फ़ इनसान को दी गयी है, शयातीन वग़ैरह इसकी तिलावत पर क़ादिर नहीं, बल्कि फ़रिश्तों को भी यह नेमत नसीब नहीं हुई, वे भी इस आरज़ू में रहते हैं कि कोई इनसान तिलावत करे और वे सुनें। हाँ मोमिनीन जिनको अलबत्ता यह नेमत नसीब है और वे क़ुरआन की तिलावत पर क़ादिर हैं। (इत्क़ान)

शायद इससे हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम अलग हों, इसलिये कि उनके बारे में हदीस में आया है कि हर रमज़ान में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से क़ुरआन मजीद का दौर किया करते थे और हाफ़िज़ इब्ने हज्र अ़स्क़लानी ने फ़तहुल्-बारी में इसका खुलासा किया है कि कभी वह पढ़ते थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सुनते थे और कभी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पढ़ते थे और वह सुनते थे। और अल्लाह ही को ख़ूब इल्म है।

बेहतर यह है कि क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करके पाक-साफ़ निहायत अदब से किसी पाकीज़ा जगह पर बैठकर क़ुरआन मजीद पढ़ा जाये, सबसे बेहतर इस काम के लिये मस्जिद है। जो लोग हर वक़्त या अक्सर वक़्त इसकी तिलावत में मश़्गूल रहना चाहें उनके लिये हर हाल में क़ुरआन मजीद पढ़ना बेहतर है, लेटे हों या बैठे हों, वुज़ू के साथ हों या बे-वुज़ू हों। हाँ मगर नापाकी की हालत में न पढ़ना चाहिये।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कैफ़ियत बयान फ़रमाती हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर हाल में तिलावत फ़रमाया करते थे, वुज़ू की हालत में भी, बे-वुज़ू भी, हाँ अलबत्ता नापाकी की हालत में न करते थे।

क़ुरआन मजीद की तिलावत के लिए एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर कर लेना भी दुरुस्त है। अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़ज्र की नमाज़ के बाद क़ुरआन मजीद पढ़ा करते थे। वक़्त मुक़र्रर कर लेने में नाग़ा भी नहीं होता।

(1) अ़ल्लामा सुयूती वग़ैरह की इबारत से यह मुद्दआ़ बख़ूबी ज़ाहिर है और इस शर्त की कोई वजह भी नहीं मालूम होती। इन सब के अ़लावा अगर यह शर्त लगाई जाए तो तिलावत बिलकुल ही बन्द हो जायेगी। और अल्लाह ही ख़ूब जानते हैं।

सुन्नत यह है कि पढ़ने वाला शुरू करने से पहले ''अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम'' पढ़ ले। और अगर पढ़ने के दरमियान में कोई दुनियावी बात करे तो उसके बाद फिर इस अ़मल को दोहरा ले।

क़ुरआन मजीद की तिलावत ज़बानी पढ़ने के मुक़ाबले में मुस्हफ़ में देखकर ज़्यादा सवाब रखती है इसलिये कि वहाँ दो इबादतें होती हैं- एक तिलावत, दूसरे मुस्हफ़ शरीफ़ की ज़ियारत। (1)

क़ुरआन मजीद पढ़ने की हालत में कोई कलाम करना या और किसी ऐसे काम में मसरूफ़ होना जो दिल को दूसरी तरफ़ मुतवज्जह कर दे, मक्रूह है। क़ुरआन मजीद पढ़ते वक़्त अपने को पूरी तरह उसी तरफ़ मुतवज्जह कर दे, न यह कि ज़बान से अल्फ़ाज़ जारी हों और दिल में इधर-उधर के ख़्यालात।

क़ुरआन मजीद की हर सूरः के शुरू में **'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम'** कह लेना मुस्तहब है मगर सूरः बराअत के शुरू पर बिस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिये।

बेहतर यह है कि क़ुरआन मजीद की सूरतों को उसी तरतीब से पढ़े जिस तरतीब से मुस्हफ़ शरीफ़ में लिखी हैं, हाँ बच्चों के लिये आसानी की ग़रज़ से सूरतों का तरतीब के ख़िलाफ़ पढ़ाना, जैसा कि आजकल पारः अ़म्-म य-तसा-अलून में दस्तूर है, बिना किसी कराहत के जायज़ है। (दुर्रे मुख़्तार) और आयतों का तरतीब के ख़िलाफ़ पढ़ना सबके नज़दीक मना है। (इत्क़ान)

क़ुरआन मजीद की मुख़्तलिफ़ सूरतों की आयतों को एक साथ मिलाकर पढ़ने को उलमा ने मक्रूह लिखा है, इस वजह से कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु को आपने इससे मना फ़रमाया था। (इत्क़ान वग़ैरह)

मगर मेरे ख़्याल में यह कराहत उस वक़्त होगी जब उन आयतों की तिलावत सवाब की ग़रज़ से हो, इसलिये कि झाड़-फूँक के वास्ते मुख़्तलिफ़ आयतों का एक साथ पढ़ना नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उनके सहाबा से सही तौर पर नक़ल किया गया है। और हर एक आयत के ख़्वास अलग-अलग हैं, इसलिये जो ख़ास असर हमें मतलूब है वह जिन-जिन आयतों में होगा हमको उनका पढ़ना ज़रूरी है।

क़ुरआन मजीद ख़ूब अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ना चाहिये जिससे जिस क़द्र भी हो सके। सही हदीसों में आया है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स क़ुरआन मजीद अच्छी आवाज़ से न पढ़े वह हममें से नहीं है। (दारमी शरीफ़) मगर जिसकी आवाज़ ही अच्छी न हो वह मजबूर है और क़िराअत (2) के क़ायदों की पाबन्दी से क़ुरआन मजीद पढ़ना चाहिये। और इसपर तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि क़ुरआन मजीद को राग से पढ़ना और उसको गाने की तरह गाना मक्रूहे तहरीमी है।

क़ुरआन मजीद ठहर-ठहर कर पढ़े बहुत तेज़ी से पढ़ना सब उलमा के नज़दीक मक्रूह है। (3)

---

(1) अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इत्क़ान में चन्द मरफ़ूअ़ हदीसें भी इस बारे में नक़ल की हैं। जैसे यह कि मुसहफ़ में बेदेखे तिलावत करने से एक हज़ार दर्जा सवाब मिलता है और देखकर पढ़ने से दो हज़ार दर्जा।

(2) यह (यानी क़िराअत) एक मुस्तक़िल फ़न है जिसमें क़ुरआन मजीद के पढ़ने के क़ायदे बयान किये जाते हैं और उन मुख़्तलिफ़ क़िराअतों का ज़िक्र होता है जिनमें क़ुरआन नाज़िल हुआ। इस फ़न में बहुत-सी किताबें हैं, मगर हक़ यह है कि उस्ताद के बग़ैर नहीं आता।

(3) ऐसी तेज़ी और जल्दबाज़ी कि जिससे अल्फ़ाज़ के समझने में दिक़्क़त हो मक्रूह है। ठहर-ठहर कर पढ़ने में असर भी ज़्यादा होता है, इसीलिये अ़जमी (यानी ग़ैर-अ़रबी) लोग जो क़ुरआन मजीद के मायने नहीं समझे उनको भी ठहर-ठहर कर पढ़ना मुफ़ीद है। (इत्क़ान)

अफ़सोस! हमारे ज़माने में क़ुरआन मजीद की सख़्त बे-अदबी होती है, पढ़ने में ऐसी तेज़ी की जाती है कि सिवाय बाज़-बाज़ अल्फ़ाज़ के और कुछ समझ में नहीं आता। तरावीह में अक्सर हाफ़िज़ों को ऐसा ही देखा गया। ख़ुदा जाने उनपर किसने ज़बरदस्ती की जो ये तरावीह पढ़ने आये, इससे बेहतर होता कि ऐसे हज़रात न पढ़ते, क़ुरआन मजीद की बे-अदबी तो न होती।

जो शख़्स क़ुरआन मजीद के मायने समझ सकता हो उसको क़ुरआन मजीद पढ़ते वक़्त उसके मायनों पर ग़ौर करना और हर मज़मून के मुवाफ़िक़ अपने में उसका असर ज़ाहिर करना मसनून है। जैसे जब कोई ऐसी आयत पढ़े जिसमें अल्लाह की रहमत का ज़िक्र हो तो रहमत माँगे, और अ़ज़ाब का ज़िक्र हो तो उससे पनाह माँगे। कोई जवाब-तलब मज़मून हो तो उसका जवाब दे। जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सूरः वत्तीनि के आख़िर में पहुँचते तो **"बला व अ-न अ़ला ज़ालि-क मिनश्शाहिदी-न"** पढ़ लेते। (1) (तिर्मिज़ी शरीफ़)

या सूरः क़ियामह् के आख़िर में जब पहुँचते तो फ़रमाते **"बला"** (तिर्मिज़ी शरीफ़)। सूरः फ़ातिहा को जब ख़त्म करते तो आमीन कहते, लेकिन यह जवाब देना या दुआ़ माँगना उस वक़्त मसनून है कि क़ुरआन मजीद फ़र्ज़ नमाज़ में या तरावीह में न पढ़ा जाता हो, अगर फ़र्ज़ नमाज़ या तरावीह में पढ़ा जाता हो तो फिर जवाब न देना चाहिये। (रद्दुल्-मुह्तार)

क़ुरआन मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है। अगर रोना न आये तो अपनी संगदिली पर रन्ज व अफ़सोस करे।

सूरः वज़्ज़ुहा के बाद से अख़ीर तक हर सूरः के ख़त्म होने के बाद **"अल्लाहु अकबर"** कहना मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है। क़ुरआन मजीद ख़त्म होने के बाद दुआ़ माँगना मुस्तहब है। इसलिये कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि हर ख़त्म के बाद दुआ़ मक़बूल होती है। (इत्क़ान)

क़ुरआन मजीद ख़त्म करते वक़्त **सूरः इख़्लास** को तीन बार पढ़ना मुतअख़्ख़िरीन (बाद के उलमा) के नज़दीक बेहतर है, बशर्ते कि क़ुरआन मजीद नमाज़ से बाहर पढ़ा जाये।

जब एक बार क़ुरआन मजीद ख़त्म कर चुके तो मसनून है कि फ़ौरन दूसरा शुरू कर दे, नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बहुत ही महबूब है कि जब क़ुरआन एक मर्तबा ख़त्म हो जाये तो दूसरा शुरू कर दिया जाये और दूसरे को सिर्फ़ **"उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून"** तक पहुँचाकर छोड़ दे, उसके बाद दुआ़ वग़ैरह माँगे। इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सही हदीसों में रिवायत किया गया है।

जहाँ क़ुरआन मजीद पढ़ा जाता हो वहाँ सब लोगों को चाहिये कि पूरी तरह उसी तरफ़ मुतवज्जह रहें। किसी दूसरे काम में, जो सुनने में हर्ज पैदा करने वाला हो, मश्ग़ूल न हों, इसलिये कि क़ुरआन मजीद का सुनना फ़र्ज़ है। हाँ अगर हाज़िरीन को कोई ज़रूरी काम हो जिसकी वजह से वे उस तरफ़ मुतवज्जह न हो सकें तो पढ़ने वाले को चाहिये कि आहिस्ता आवाज़ से पढ़े, और अगर ऐसी हालत में बुलन्द आवाज़ से पढ़ेगा तो गुनाह उसी पर होगा।

अगर कोई लड़का क़ुरआन मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहा हो और लोग अपने ज़रूरी कामों में मश्ग़ूल हों तो कुछ हर्ज नहीं, इसलिये कि शरीअ़त में तंगी नहीं है। अगर लड़का आहिस्ता आवाज़ से पढ़े तो आ़दतन् याद नहीं होता। (रद्दुल्-मुह्तार)

(1) हाँ, और हम इसपर गवाह हैं। चूँकि इस सूरः के अख़ीर में हक़ तआ़ला पूछता है कि क्या हम सब हाकिमों के हाकिम नहीं हैं? इसलिये उसके जवाब में यह जुमला अ़र्ज़ किया गया।

सुनने वालों को तमाम उन बातों की रियायत करनी चाहिये जो ऊपर ज़िक्र हुई हैं, सिवाय "**अऊज़ू बिल्लाहि** और **बिस्मिल्लाह** के।

अगर कोई शख़्स अच्छी आवाज़ वाला हो, कुरआन अच्छा पढ़ता हो, उससे कुरआन मजीद पढ़ने की दरख़्वास्त करना मसनून है। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कुरआन सुनाने की फ़रमाइश की, हज़रत फ़ारूक़े आज़म अबू मूसा अश्अ़री से दरख़्वास्त फ़रमाया करते थे, रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

सज्दा-ए-तिलावत का बयान

सज्दा-ए-तिलावत के वाजिब होने के तीन सबब हैं:

1. सज्दे वाली आयत की तिलावत, चाहे पूरी आयत की तिलावत की जाये या सिर्फ़ उस लफ़्ज़ की जिसमें सज्दा है और उसके साथ पहले या बाद का कोई लफ़्ज़, और चाहे सज्दे की आयत के असल अल्फ़ाज़ के साथ तिलावत की जाये या उसका तर्जुमा किसी और ज़बान में, और चाहे तिलावत करने वाला ख़ुद अपनी तिलावत को सुने या न सुने, जैसे कोई बहरा तिलावत करे। सही यह है कि अगर रुकूअ़ या सज्दे या तशह्हुद (यानी अत्तहिय्यात पढ़ने की हालत) में सज्दे की आयत तिलावत की जाये तब भी सज्दा वाजिब हो जायेगा और उसी हालत में उसकी भी नीयत कर ली जायेगी। (रद्दुल-मुह्तार)

अगर कोई शख़्स सोने की हालत में सज्दा की आयत तिलावत करे उसपर भी इत्तिला मिलने के बाद सज्दा वाजिब है।

2. आयते सज्दा का किसी इनसान से सुनना, चाहे पूरी आयत सुने या सिर्फ़ लफ़्ज़े सज्दा मय एक लफ़्ज़ उसके पहले या उसके बाद के, और चाहे अ़रबी ज़बान में सुने या और किसी ज़बान में, और चाहे सुनने वाला यह जानता हो कि यह तर्जुमा आयते सज्दा का है या न जानता हो, लेकिन न जानने से सज्दा अदा करने में जिस क़द्र ताख़ीर और देरी होगी उसमें वह माज़ूर समझा जायेगा। (फ़तावा आ़लमगीरी)

किसी जानवर से जैसे तोते वग़ैरह से अगर आयते सज्दा सुनी जाये तो सही यह है कि सज्दा वाजिब न होगा, इसी तरह अगर किसी ऐसे मजनूँ से आयते सज्दा सुनी जाये जिसका जुनून यानी पागलपन एक दिन रात से ज़्यादा हो जाये और ख़त्म न हो तो सज्दा वाजिब न होगा।

3. ऐसे शख़्स की इक़्तिदा करना (यानी नमाज़ में उसकी पैरवी करना) जिसने आयते सज्दा की तिलावत की हो कि चाहे उसकी इक़्तिदा से पहले या इक़्तिदा के बाद, और चाहे उसने ऐसी आहिस्ता आवाज से तिलावत की हो कि किसी मुक़्तदी ने न सुना हो या बुलन्द आवाज़ से की हो। अगर कोई शख़्स किसी इमाम से आयते सज्दा सुने उसके बाद उसकी इक़्तिदा करे तो उसको इमाम के साथ सज्दा करना चाहिये और अगर इमाम सज्दा कर चुका हो तो उसमें दो सूरतें हैं- जिस रक्अ़त में इमाम ने आयते सज्दा की तिलावत की हो वही रक्अ़त उसको अगर मिल जाये तो उसको सज्दे की ज़रूरत नहीं, उस रक्अ़त के मिल जाने से समझा जायेगा कि वह सज्दा भी मिल गया। और अगर वह रक्अ़त न मिले तो फिर उसको नमाज़ पूरी करने के बाद

नमाज़ से बाहर सज्दा करना वाजिब है। (बहरुर्-राइक़, रद्दुल-मुह्तार)

मुक़्तदी से अगर सज्दे की आयत सुनी जाये तो सज्दा वाजिब न होगा, न उसपर न इमाम पर, न उन लोगों पर जो उस नमाज़ में शरीक हैं। हाँ जो लोग उस नमाज़ में शरीक नहीं, चाहे वे लोग नमाज़ ही न पढ़ते हों या कोई दूसरी नमाज़ पढ़ रहे हों तो उनपर सज्दा वाजिब होगा। (रद्दुल-मुह्तार)

ये तीन सबब जो सज्दे के वाजिब होने के बयान किये गये इनके सिवा किसी और चीज़ से सज्दा वाजिब नहीं होता, जैसे कोई शख़्स आयते सज्दा लिखे या दिल में पढ़े, ज़बान से न कहे, या एक-एक हर्फ़ करके पूरी पढ़े, पूरी आयत एक दम न पढ़े, या इसी तरह किसी से सुने तो उन सब सूरतों में सज्दा वाजिब न होगा। (रद्दुल-मुह्तार)

(1) सज्दा-ए-तिलावत उन्हीं लोगों पर वाजिब है जिनपर नमाज़ वाजिब है। हैज़ वाली (माहवारी की हालत में होने वाली औ़रत) और निफ़ास वाली (यानी ज़च्चा होने की हालत वाली) औ़रत पर वाजिब नहीं, न उस वक़्त और न बाद में उसकी क़ज़ा की ज़रूरत है। नाबालिग़ पर और ऐसे मजनूँ पर वाजिब नहीं जिसका जुनून एक दिन रात से ज़्यादा हो गया, चाहे उसके बाद ख़त्म हो या नहीं। जिस मजनूँ का जुनून एक दिन रात से कम रहे उसपर वाजिब है, इसी तरह मस्त और नापाकी की हालत में होने वाले पर भी।

(2) सज्दा-ए-तिलावत के सही होने की वही सब शर्तें हैं जो नमाज़ के सही होने की हैं, यानी तहारत (पाकी) और सत्रे औ़रत (यानी वह हिस्सा जिसका छुपाना ज़रूरी है जो मर्द के लिए नाफ़ से घुटनों तक और औ़रत के लिए हाथ, पाँव और चेहरे के अ़लावा पूरा बदन है) और नीयत और क़िब्ला की तरफ़ रुख़ होना। तकबीरे तहरीमा उसमें शर्त नहीं। उसकी नीयत में आयत का मुतैयन करना शर्त नहीं कि यह सज्दा फ़लाँ आयत के सबब से है। और अगर नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी जाये और फ़ौरन सज्दा किया जाये तो नीयत भी शर्त नहीं। (रद्दुल-मुह्तार)

(3) जिन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है उन चीज़ों से सज्दा-ए-तिलावत में भी फ़साद आ जाता है और फिर उसका लौटाना वाजिब हो जाता है, हाँ इस क़द्र फ़र्क़ है कि नमाज़ में क़हक़हा मारकर हँसने से वुज़ू जाता रहता है और इसमें क़हक़हा मारने से वुज़ू नहीं जाता, और औ़रत के मुक़ाबिल होने से भी यहाँ कोई ख़राबी नहीं आती।

(4) सज्दा-ए-तिलावत अगर नमाज़ से बाहर वाजिब हुआ हो तो बेहतर है कि फ़ौरन अदा कर ले और अगर उस वक़्त अदा न करे तब भी जायज़ है मगर मक्रूहे तन्ज़ीही है। और अगर नमाज़ में वाजिब हुआ हो तो उसका अदा करना फ़ौरन वाजिब है, देर करने की इजाज़त नहीं। (रद्दुल-मुह्तार)

(5) नमाज़ से बाहर वाजिब हुआ सज्दा नमाज़ में और नमाज़ में वाजिब हुआ सज्दा नमाज़ से बाहर बल्कि दूसरी नमाज़ में भी अदा नहीं किया जा सकता। पस अगर कोई शख़्स नमाज़ में आयते सज्दा पढ़े और सज्दा करना भूल जाये तो उसका गुनाह उसके ज़िम्मे होगा जिसकी तदबीर इसके सिवा कोइ नहीं कि तौबा करे, अर्‌हमुर्-राहिमीन अपने फ़ज़्ल व करम से माफ़ फ़रमा देगा। (बहरुर्-राइक़)

नमाज़ का सज्दा नमाज़ से बाहर उस वक़्त अदा नहीं हो सकता जबकि नमाज़ फ़ासिद न हो, अगर

नमाज़ फ़ासिद हो जाये और उसका फ़ासिद करने वाला हैज़ (यानी माहवारी) का आना न हो तो वह सज्दा ख़ारिज में यानी नमाज़ से बाहर अदा कर लिया जाये। और अगर हैज़ की वजह से नमाज़ में फ़साद आया हो तो वह सज्दा माफ़ हो जाता है। (बहरुर्-राइक़, दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह)

(6) अगर कोई शख़्स नमाज़ की हालत में किसी दूसरे से आयते सज्दा सुने, चाहे वह दूसरा भी नमाज़ में हो तो यह सज्दा नमाज़ से बाहर का समझा जायेगा और नमाज़ के अन्दर वह अदा न किया जायेगा बल्कि नमाज़ से बाहर अदा किया जाएगा।

(7) अगर एक आयते सज्दा की तिलावत एक ही मज्लिस में कई बार की जाये तो एक ही सज्दा वाजिब होगा। और एक आयते सज्दा की तिलावत की जाये फिर वही आयत मुख़्तलिफ़ लोगों से सुनी जाये तब भी एक ही सज्दा वाजिब होगा। अगर सुनने वाले की मज्लिस न बदले तो एक ही सज्दा वाजिब होगा चाहे पढ़ने वाले की मज्लिस बदल जाये या न बदले। अगर सुनने वाले की मज्लिस बदल जाए तो उसपर भी मज्लिस बदलने के एतिबार से अलग-अलग सज्दे वाजिब होंगे, चाहे पढ़ने वाले की मज्लिस बदले या न बदले। और अगर पढ़ने वाले की मजलिस बदल जायेगी तो उसपर भी मज्लिस के एतिबार से अलग-अलग सज्दे वाजिब होंगे। (बहरुर्-राइक़)

(8) अगर एक आयते सज्दा कई मर्तबा एक ही मज्लिस में पढ़ी जाये तो इख़्तियार है कि सबके बाद सज्दा किया जाये या पहली ही तिलावत के बाद, क्योंकि एक ही सज्दा अपने से पहले और बाद में की जाने वाली तिलावत के लिये काफ़ी है, मगर एहतियात इसमें है कि सबके बाद किया जाये। (बहरुर्-राइक़)

अगर आयते सज्दा नमाज़ में पढ़ी जाये और फ़ौरन रुकूअ़ किया जाये या दो तीन आयतों के बाद, और रुकूअ़ में झुकते वक़्त सज्दा-ए-तिलावत की भी नीयत कर ली जाये तो सज्दा अदा हो जायेगा। और इसी तरह अगर आयते सज्दा की तिलावत के बाद नमाज़ का सज्दा किया जाये तब भी यह सज्दा अदा हो जायेगा और उसमें नीयत की भी ज़रूरत न होगी। (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल-मुह्तार वग़ैरह)

(9) जुमा और ईदों और आहिस्ता आवाज़ की नमाज़ों में आयते सज्दा न पढ़ना चाहिये, इसलिये कि सज्दा करने में मुक़्तदियों के शुब्हे में पड़ने का ख़ौफ़ है। (बहरुर्-राइक़)

(10) किसी सूरः का पढ़ना और ख़ासकर आयते सज्दा को छोड़ देना मक्रूह है। (बहरुर्-राइक़)

(11) अगर हाज़िरीन वुज़ू के साथ सज्दे के लिये मुस्तैद न बैठे हों तो आयते सज्दा का आहिस्ता आवाज़ से तिलावत करना बेहतर है, इसलिये कि वे लोग उस वक़्त सज्दा न करेंगे और दूसरे वक़्त शायद भूल जायें तो गुनाहगार होंगे। (दुर्रे मुख़्तार)

सज्दा-ए-तिलावत का तरीक़ा

सज्दा-ए-तिलावत का तरीक़ा यह है कि क़िब्ला-रू होकर नीयत करके **'अल्लाहु अकबर'** कहे और सज्दा करे, फिर उठते वक़्त **'अल्लाहु अकबर'** कहकर उठे और खड़े होकर सज्दा करना मुस्तहब है। सज्दा-ए-तिलावत कई आदमी मिलकर भी कर सकते हैं, इस तरह कि एक शख़्स को इमाम की तरह आगे खड़ा करें और खुद मुक़्तदियों की तरह सफ़ बाँधकर पीछे खड़े हों और उसकी पैरवी करें। यह सूरत हक़ीक़त

में जमाअ़त की नहीं है, इसी लिये अगर इमाम का सज्दा किसी वजह से फ़ासिद हो जाये तो मुक़्तदियों का सज्दा फ़ासिद न होगा, और इसी सबब से औ़रत का आगे खड़ा कर देना भी जायज़ है।

आयते सज्दा अगर फ़र्ज़ नमाज़ों में पढ़ी जाये तो उसके सज्दे में नमाज़ के सज्दे की तरह **'सुब्हा-न रब्बियल् अअ़्ला'** कहना बेहतर है, और नफ़िल नमाज़ों में या नमाज़ से बाहर अगर पढ़ी जाये तो उसके सज्दे में इख़्तियार है कि **'सुब्हा-न रब्बियल् अअ़्ला'** कहें या और तस्बीहें जो हदीसों में आई हैं वे पढ़ें, जैसे यह तस्बीह **"स-ज-द वज्ही लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व सव्व-रहू व शक़्-क़ सम्अ़हू व ब-स-रहू बिहौलिही व क़ुव्वतिही फ़-तबा-रकल्लाहु अह्सनुल्-ख़ालिक़ीन"** और दोनों को जमा कर लें तो और भी बेहतर है।

उलमा ने लिखा है कि अगर कोई शख़्स सज्दे की तमाम आयतों को एक ही मज्लिस में तिलावत करे तो हक़ तआ़ला उसकी मुश्किल को दूर फ़रमाता है। और ऐसी हालत में इख़्तियार है कि सब आयतें एक दफ़ा पढ़ ले और उसके बाद चौदह सज्दे करे, या हर आयत को पढ़कर उसका सज्दा करता जाये। (रद्दुल-मुह्तार)

रुमूज़े औक़ाफ़े क़ुरआन मजीद

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्तगू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कहीं ज़्यादा। और उस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और उसका सही मतलब समझने में बहुत दख़ल है। क़ुरआन मजीद की इबारत भी गुफ़्तगू के अन्दाज़ में है इसी लिये आ़लिमों ने इसके ठहरने न ठहरने की निशानियाँ मुक़र्रर कर दी हैं, जिनको **"रुमूज़े औक़ाफ़े क़ुरआन मजीद"** कहते हैं। ज़रूरी है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत करने वाले इन रुमूज़ का पूरा ख़्याल रखें। रुमूज़े औक़ाफ़े क़ुरआन मजीद की तायदाद तक़रीबन पन्द्रह है, लेकिन चूँकि हमने उनमें से सिर्फ़ दो चीज़ों की निशानियाँ मुक़र्रर की हैं इसलिए उन्हीं का बयान किया जाता है।

वक़्फ़े लाज़िमः वक़्फ़े लाज़िम का एक निशान है उसपर ज़रूर ठहरना चाहिये, अगर न ठहरा जाये तो अन्देशा है कि मतलब कुछ-का-कुछ हो जाये। इसकी मिसाल हिन्दी में यूँ समझनी चाहिये कि जैसे किसी को यह कहना हो कि: **उठो, मत बैठो**। जिसमें उठने का हुक्म और बैठने की मनाही है। तो **'उठो'** पर ठहरना लाज़िम और ज़रूरी है, अगर ठहरा न जाये तो **'उठो मत बैठो'** हो जायेगा। जिसमें उठने की मनाही और बैठने के हुक्म का एहतिमाल और अन्देशा है। यानी सामने वाला इससे यह भी समझ सकता है कि उठने की मनाही की जा रही है। और अगर ऐसा हो जाए तो यह कहने वाले के मतलब और मन्शा के ख़िलाफ़ हो जायेगा। अ़रबी में इसकी निशानी (م) यह हर्फ़ है, हमने पढ़ने वालों की सहूलत के लिए अ़रबी के हिन्दी मतन में (⁘) यह निशानी मुक़र्रर की है।

निशान सज्दाः क़ुरआन पाक में चौदह स्थान ऐसे हैं जहाँ सज्दा करने का हुक्म है और वहाँ सज्दा करना लाज़िमी है। सज्दा से मुताल्लिक़ मसाइल और उसका तरीक़ा हमने इस मुक़द्दिमा के पृष्ठ **19-22** पर बयान किया है वहाँ तफ़सील देख लें। इसी तरह सज्दों के स्थानों की एक सूचि पृष्ठ **24** पर दी गयी है। हमने सज्दा के स्थान को बताने के लिए यह निशान (❑ सज्दा) मुक़र्रर किया है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

आयत नम्बरः जहाँ बात पूरी हो जाती है वहाँ (अ़रबी मतन में) एक गोल दायरा बना देते हैं। यह पूरी तरह ठहरने की अ़लामत (निशानी) है। इसको आयत कहते हैं। हमने पढ़ने वालों की आसानी और सहूलत के लिए ब्रेकेट के अन्दर आयत का नम्बर लिख दिया है। इसपर ठहरना चाहिये।

निशान रुकूअ़ः यह (❖) रुकूअ़ का निशान है। अगर हाशिए पर ऐसा निशान लगा है तो इसका मतलब है कि रुकूअ़ का निशान है। इसमें जो संख्याओं की तरतीब है वह कुरआन पाक में जो रुकूअ़ के निशान लगे हैं उन्हीं के मुताबिक़ है। जैसे (❖ रु. **12/3/10**) इस तरह लिखा है तो इसका मतलब है कि वह उस सूरः का बारहवाँ रुकूअ़ है और उसके अन्दर तीन आयतें हैं और वह उस पारः का दसवाँ रुकूअ़ है।

निशान रुबूअ़ः हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। उनमें से पहले हिस्से को रुबूअ़ 1/4 यानी चौथाई कहते हैं। उसके लिए हमने यह निशान (◆ रुबूअ़ 1/4) मुक़र्रर किया है।

निशान निस्फ़ः हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। जहाँ आधा पारः हो जाता है उसको निस्फ़ कहते हैं। आधे की निशानी के लिए हमने यह निशान (● निस्फ़ 1/2) मुक़र्रर किया है।

निशान सलासहः हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। जहाँ पारः का तीन चौथाई हिस्सा मुकम्मल हो गया है वहाँ हमने यह निशान (▲ सलासः 3/4) मुक़र्रर किया है।

निशान आधा कुरआनः हर्फ़ों की तायदाद के एतिबार से जहाँ कुरआन आधा हुआ है वहाँ हमने अ़रबी मतन में यह (✪) निशान लगाया है। इसको पारः 15 में सूरः कह्फ़ की आयत 19 में देखा जा सकता है।

कुरआन मजीद की मन्ज़िलें

क्रम. सं.	सूरः	सूरः सं.	पृष्ठ सं.	पारः सं.	नाम पारः
1	फ़ातिहः	1	1- 190		अलिफ़-लाम्-मीम्
2	मा-इदः	5	192- 371	6	ला युहिब्बुल्लाहु
3	यूनुस	10	373- 507	11	यअ़्तज़िरू-न
4	बनी इस्राईल	17	509- 659	15	सुब्हानल्लज़ी
5	शु-अ़रा-इ	26	661- 801	19	व क़ालल्लज़ी-न
6	वस्साफ़्फ़ात	37	803- 931	23	व मा लि-य
7	क़ाफ़	50	933- 1111	26	हा-मीम

कुरआन मजीद में सज्दा-ए-तिलावत के स्थान

क्रम. सं.	पारः	सूरः	सज्दे वाले शब्द	सज्दे का स्थान	पृष्ठ सं.	आयत सं.
1	9	सूरः आराफ़	यस्जुदून	यस्जुदून	317	206
2	13	सूरः रअ़द	व लिल्लाहि यस्जुदु	वल्-आसाल	451	15
3	14	सूरः नह्ल	व लिल्लाहि यस्जुदु	मा युअ्मरून	491	49-50
4	15	सूरः बनी इस्राईल	यख़िर्रू-न लिल् अज़्क़ानि सुज्ज-दन्	ख़ुशूआ़	529	107-109
5	16	सूरः मरियम	ख़र्रू सुज्जदन्	व बुकिय्या	557	58
6	17	सूरः हज	यस्जुदु लहू	मा यशा-उ	603	18
7	17	सूरः हज[1]	वस्जुदू	तुफ़्लिहून	615	77
8	19	सूरः फ़ुरक़ान	उस्जुदू	नुफ़ूरा	651	60
9	19	सूरः नमूल	अल्ला यस्जुदू	रब्बिल्-अ़र्शिल् अ़ज़ीम	683	25-26
10	21	सूरः सज्दा	ख़र्रू सुज्जदन्	ला यस्तक्बिरून	751	15
11	23	सूरः सॉद[2]	व ख़र्-र राकिअ़न्	व अनाब	819	24
12	24	सूरः हा-मीम सज्दा	वस्जुदू लिल्लाहि	ला यस्अमून	865	37-38
13	27	सूरः नज्म	फ़स्जुदू	वअ्बुदू	951	62
14	30	सूरः इन्शिक़ाक़	ला यस्जुदून	ला यस्जुदून	1083	21
15	30	सूरः अ़लक़	वस्जुद्	वक़्तरिब्	1099	19

1. 2. इन दो सज्दों में मतभेद है। सूरः 22 आयत 77 पर इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़दीक नहीं है। और सूरः 38 आयत 24 पर इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक नहीं है। बहरहाल दोनों इमामों के नज़दीक सज्दों की कुल तायदाद 14 ही है।

क़ुरआन मजीद को कितने समय में ख़त्म किया जाए

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने तीन दिन से कम में कुरआन मजीद ख़त्म किया वह कुछ न समझ सका। इमाम अबू हनीफ़ा से नक़ल किया गया है कि जिसने हर साल में दो बार कुरआन मजीद ख़त्म किया उसने हक़ अदा किया। इसलिये कि हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी वफ़ात (इन्तिक़ाल) के साल में दो ही बार कुरआन ख़त्म किया था। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उस इबादत में कुछ बेहतरी नहीं है जिसमें समझ न हो, औ न उस क़िराअत (पढ़ने) में जिसमें फ़िक्र (सोच-समझ) न हो। इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अपने आपको कुरआन मजीद के ख़त्म करने की गिनती पर हावी न करो, बल्कि एक आयत का सोचकर पढ़ना सारी रात में दो कुरआन ख़त्म करने से बेहतर है।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे साथ खड़े हुए तो आप यह आयत बड़ी देर तक पढ़ते रहे:

"इन तुअ़ज़्ज़िबूहुम फ़-इन्नहुम् अ़िबादु-क"

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे पाँच दिन से कम समय में पूरा कुरआन मजीद ख़त्म करने की इजाज़त नहीं दी।

ज़रूरी तंबीह

कुरआन मजीद के मतन को अ़रबी के अ़लावा हिन्दी या किसी दूसरी भाषा के रस्मुलख़त (लिपि) में रुपान्तर करने पर उलमा की रायों में मतभेद है। कुछ उलमा का ख़्याल है कि इस तरह करने से कुरआन मजीद के हर्फ़ों की तहरीफ़ (कमी-बेशी) होती है और उनको भय (डर) है कि जिस तरह इन्जील और तौरात तहरीफ का शिकार हो गईं वैसे ही खुदा न करे इसका भी वही हाल हो, जबकि यह नामुम्किन है। करोड़ों हाफ़िज़ों को कुरआन मजीद ज़बानी याद है।

इस सिलसिले में नाचीज़ **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी** (इस कुरआन का हिन्दी अनुवादक) अ़र्ज़ करता है कि हक़ीक़त यह है कि अ़रबी रस्मुलख़त के अ़लावा दूसरी भाषा में कुरआन मजीद को क़तई तौर पर सौ फ़ीसद सही नहीं पढ़ा जा सकता। इसलिए कि हर्फ़ों की बनावट के एतिबार से भी किसी दूसरी भाषा में यह गुन्जाइश नहीं कि वह अ़रबी ज़बान के तमाम हुरूफ़ का मुतबादिल (विकल्प) पेश कर सके। फिर अगर किसी तरह कोई निशानी मुक़र्रर करके इस कमी को पूरा करने की कोशिश भी की जाए तो **'मख़ारिजे हुरूफ़'** यानी हुरूफ़ के निकालने का जो तरीक़ा और इल्म है वह उस वैकल्पिक तरीक़े से हासिल नहीं किया जा सकता। जबकि यह सबको मालूम है कि सिर्फ़ अल्फ़ाज़ के निकालने में फ़र्क़ होने से अ़रबी ज़बान में मायने बदल जाते हैं। मैं यहाँ सिर्फ़ तीन मिसालें बयान करके अपनी बात की ताईद पेश करूँगा:

(1) कुरआन पाक में एक लफ़्ज़ जगह-जगह आता है **"अलीम"**। इस लफ़्ज़ में अगर **"अ"** को हलक़ के अगले हिस्से से निकाला जाए तो इसके मायने होंगे **"तकलीफ़ देने वाला"** जैसे **'अ़ज़ाबुन् अलीम'** यानी

तकलीफ़ देने वाला अ़ज़ाब। और अगर इस लफ़्ज़ को हलक़ के दरमियानी हिस्से से निकाला जाए यानी **"अ़"** तो अब **"अ़लीम"** के मायने होंगे **"जानने वाला"**।

(2) क़ुरआन पाक में **"अ़सा"** का लफ़्ज़ आया है। यह दो तरह लिखा है- एक **"अ़ैन, सीन और या"** के साथ। **"सीन"** को ज़बान की नोक और दाँतों के अगले किनारे से निकाला जाता है तो उस सूरत में इसके मायने होंगे **"उम्मीद है, शायद"**। और दूसरे **"अ़ैन, सॉद और या"** के साथ, **"सॉद"** को ज़बान की नोक और अगले दाँतों के बीच से निकाला जाता है। अब **"अ़सा"** के मायने होंगे **"नाफ़रमानी की, ग़लती की"**।

(3) तीसरी मिसाल यह है कि क़ुरआन पाक में **"मुन्ज़रून"** का लफ़्ज़ भी कई जगह आया है। यह भी दो तरह लिखा जाता है- एक **"मीम, नून, ज़ाल, रा और नून"** से, और दूसरे **"मीम, नून, ज़ोए, रा और नून"** के साथ, यानी दोनों में एक हर्फ़ का फ़र्क़ है, एक तरफ़ **"ज़ाल"** है और दूसरी तरफ़ **"ज़ोए"** है। यह फ़र्क़ भी और इस लफ़्ज़ के निकालने और अदा करने का तरीक़ा भी **किराअत** का इल्म पढ़े और सीखे बग़ैर नहीं आ सकता। **"ज़ाल"** ज़बान की नोक और दाँतों के अगले किनारों से अदा किया जाता है। और **"ज़ोए"** को भी इसी स्थान से निकाला जाता है मगर जो माहिर हैं वह इसको अलग अन्दाज़ से अदा करने की मश्क़ कराते हैं। अब जिस लफ़्ज़ में **"ज़ाल"** है, उसके मायने हैं **"जिन लोगों को डराया गया हो"** और जिस लफ़्ज़ में **"ज़ोए"** है उसके मायने हैं **"जिसको मोहलत दी गयी हो, जिसको छोड़ दिया गया हो"**।

इन मिसालों के बाद यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि जब तक अ़रबी के हुरूफ़ की सही पहचान और उनकी अदायगी का सही तरीक़ा नहीं सीखा जाएगा उस वक़्त तक क़ुरआन पाक की सही तिलावत मुम्किन नहीं। और यह सिर्फ़ और सिर्फ़ क़ुरआन मजीद को अ़रबी ज़बान के अन्दर सीखने से आ सकता है, किसी दूसरी ज़बान के ज़रीए इसको सीख पाना तैराकी का फ़न पानी से बाहर सीखने वाली बात होगी। अब सवाल यह पैदा होता है कि हमने यह सब जानते हुए अ़रबी मतन को हिन्दी में तब्दील करने की कोशिश क्यों की? सो इसका एक जवाब तो यह है कि आपके अन्दर इस चीज़ का शौक़ पैदा करने के लिए कि आप इस अ़ज़ीम दौलत को हासिल करने की कोशिश करें और आपको इस तरफ़ तवज्जोह हो। दूसरी बात यह है कि अ़रबी ज़बान में एक मिठास है और फिर क़ुरआन तो तमाम जहानों के ख़ालिक़ व मालिक का कलाम है इसके अन्दर तो एक क़ुदरती कशिश भी है जो अपनी तरफ़ खींचे बग़ैर नहीं रहती, इसलिए हो सकता है किसी अल्लाह के बन्दे के क़ुरआन सीखने का यही ज़रिया बन जाए।

अगर आप मेरी इस बात से इत्तिफ़ाक़ न करें कि क़ुरआन पाक को अ़रबी के अ़लावा सही नहीं पढ़ा जा सकता तो मैं आपको इसकी आज़माइश का भी एक तरीक़ा बतलाता हूँ। वह यह कि आप हिन्दी या किसी और ज़बान में मतन तब्दील शुदा क़ुरआन खोलकर बैठें और किसी अच्छे क़ारी के पढ़े हुए क़ुरआन की कैसिट लें और उसी जगह से उसको चलाएँ जहाँ आप क़ुरआन पाक में कोई मक़ाम खोले बैठे हैं, फिर जो आवाज़ उस रिकार्ड से निकलती जाए उसको अल्फ़ाज़ पर फिट करते जाएँ और देखें कि क्या मैं इस लिखी हुई इबारत को इस तरह अदा कर सकता हूँ? और जो हुरूफ़ ज़बान से निकल रहे हैं क्या मैं उनके इस तरह निकालने पर क़ादिर हूँ? देखने में तो **"स"** एक हर्फ़ है मगर अ़रबी के तीन हर्फ़ों की नुमायन्दगी करता है।

बहरहाल इस अ़र्ज़ करने का मक़सद यह है कि आप सिर्फ़ इस भरोसे पर न बैठ जाएँ कि हम अ़रबी के अ़लावा दूसरी भाषाओं में जो क़ुरआन पाक पढ़ते हैं वह सही तौर पर अदा हो जाता है, बल्कि डर है कि किसी जगह ऐसा न हो जाए कि मायने ही बदल जाएँ और बजाय सवाब के गुनाह के हक़दार बन जाएँ। अल्लाह तआ़ला इस से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए और हमें क़ुरआन को हासिल करने और उसको पढ़ने और उसपर अ़मल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए, आमीन।

क़ुरआन मजीद की सूरतों की ख़ासियतें और असरात

अगर कोई यह अ़क़ीदा रखे कि क़ुरआन अ़मलियात और तावीज़ों के लिये नाज़िल हुआ है तो यह जहालत और बड़ा गुनाह है। क्योंकि क़ुरआन हक़ीक़त में ख़ुदा के हुक़ूक़ जो लोगों पर हैं और साथ ही लोगों के जो आपस में एक-दूसरे पर हुक़ूक़ हैं और उनके अदा करने या न करने के सबब जो परिणाम दुनिया में और मरने के बाद सामने आयेंगे उन सबके बयान के लिये ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। मगर इसके साथ ही बहुत-सी आयतों और सूरतों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, सहाबा-ए-किराम और बुज़ुर्गाने दीन अ़मलियात के तौर पर मुसीबतों के दूर करने के लिये भी पढ़ते थे जिनकी बरकत से वह मुसीबत दूर हो जाती थी, मगर जो शख़्स किसी मतलब के लिये कोई अ़मल पढ़ता हो और असबाब की दुनिया के तक़ाज़े के मुताबिक़ ज़ाहिरी कोशिश न करता हो तो वह यक़ीनन नाकाम होगा, क्योंकि उसकी मिसाल एक ऐसे बीमार के जैसी होगी जो दवा खाता हो मगर परहेज़ न करता हो, बल्कि अ़मल पढ़ने का यह मतलब होता है कि अ़मल की वजह से ज़ाहिरी कोशिश नाकाम न रहे। अब आगे हम सूरतों के ख़्वास (ख़ासियतें और असरात) लिखते हैं जो रसूले करीम की हदीसों, सहाबा-ए-किराम के आसार और नक़्शबन्दी, चिश्तिया, क़ादिरिया और सहरूवरदिया ख़ानदान के बुज़ुर्गों के तजुर्बों के मुताबिक़ हैं, और उन सब बुज़ुर्गाने दीन का तजुर्बा है कि जिस आयत के मज़मून को जिस काम से मुनासबत पाई जाये तो वह आयत उस काम के लिये अ़मल के तौर पर पढ़ी जा सकती है। जैसे क़ुरआन में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में ज़िक्र है कि उन्होंने दुआ़ की "क़ा-ल रब्बिश्रह् ली सद्री व यस्सिर् ली अम्री, वह्लुल् उक़्द-तम् मिल्लिसानी, यफ़्क़हू क़ौली"

तर्जुमाः मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़िरऔ़न को हिदायत की तरफ़ बुलाने के लिए जाते वक़्त) कहा ऐ ख़ुदा! मेरे सीने को खोल और मेरे काम को मेरे लिये आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल (ताकि बयान में सफ़ाई हो) और वे लोग मेरी बात को समझें।

इस आयत को हर शख़्स मुश्किल कामों की आसानी के लिये पढ़ सकता है और इस मतलब के लिये पढ़ सकता है कि उसकी ज़बान में तासीर हो ताकि दूसरे लोग उसकी बात और फ़ैसले को मान लें। और अपने ज़ेहन व अ़क़्ल के बढ़ने के लिये पढ़ सकता है। और तथा सूरः नूह में जहाँ हज़रत नूह ने कुफ़्फ़ार की तबाही के लिये दुआ़ की है कि ऐ ख़ुदा! किसी काफ़िर को ज़मीन पर ज़िन्दा न छोड़, इन आयतों को दुश्मन की तबाही के लिये पढ़ सकता है।

क़ुरआन के अ़मल के मामले में वक़्त का निश्चित करना और पढ़ने की तायदाद की क़ैद नहीं है, बल्कि

हर शख़्स को चाहिये कि वह ख़ुद इशा, या सुबह की नमाज़ के बाद, या कोई और वक़्त मुक़र्रर करके, और पढ़ने की तायदाद भी अपनी तरफ़ से क़ायम करके पढ़ा करे, अव्वल व आख़िर में दुरूद हो और हर चीज़ को पाक रखे। मगर यह बात तजुर्बों से साबित हुई है कि अगर कोई शख़्स क़ुरआन की आयत किसी नाजायज़ काम के लिये अ़मल के तौर पर इस्तेमाल में लाये तो वह सरसब्ज़ नहीं होता और पागल हो जाता है।

सूरः फ़ातिहः की ख़ासियतें:- हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब किसी शख़्स पर कोई मुसीवत पड़ती देखते तो आप सूरः फ़ातिहः पढ़ने का हुक्म करते। और जो शख़्स फ़ज्र की सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान बिस्मिल्लाह के साथ चालीस (40) बार पढ़कर किसी बीमार के मुँह पर दम करे तो अल्लाह तआ़ला इस सूरः की वरकत से उसको मुकम्मल सेहत अ़ता फ़रमायेगा। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्फ़ाति-हतु शिफ़ाउ कुल्लि दाइन्" यानी सूरः फ़ातिहः हर बीमारी के लिए शिफ़ा है। चुनाँचे एक शख़्स वीमार हुआ तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सूरः फ़ातिहः को पढ़कर उसके मुँह पर दम किया, उसको विलकुल आराम हो गया।

सूरः ब-क़रः की ख़ासियतें:- हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि यह सूरः जिस घर में पढ़ी जाती है उस घर में शैतान दाख़िला नहीं पाता। और एक हदीस में फ़रमाया कि सूरः ब-क़रः को पढ़ो कि उसमें ख़ैर व बरकत है।

सूरः आलि इमरान की ख़ासियतें:- इस सूरः शरीफ़ का विर्द रखने वाला क़र्ज़ के बोझ से छुटकारा पायेगा। और जो शख़्स सात मर्तबा पढ़े तो तमाम क़र्ज़ा दूर हो जाये और उसको मालूम न हो कि उसके लिये रिज़्क़ किस जगह से आता है।

सूरः निसा की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स हर दिन सात मर्तबा इस सूरः शरीफ़ का विर्द करे तो बीवी को उससे मुहव्वत ज़्यादा हो। और अगर बीवी पढ़े तो मर्द ज़्यादा मुवाफ़क़त करे।

सूरः मा-इदः की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स क़हत-साली (अकाल) के दिनों में सूरः मा-इदः को पढ़े तो वह शख़्स क़हत से महफ़ूज़ रहे।

सूरः अन्आ़म की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः को एक मर्तबा पढ़े तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करते हैं और हर क़िस्म की ज़रूरतों और हाजतों में पढ़ने से मुश्किलात में आसानी होती है, और जो मुश्किल होती है वह हल हो जाती है।

सूरः आराफ़ की ख़ासियतें:- जो शख़्स सूरः आराफ़ को पढ़े तो क़ियामत के दिन उसका हाथ जनाब आदम अ़लैहिस्सलाम के हाथ में होगा। और अगर किसी बादशाह का ख़ौफ़ दिल पर तारी हो या किसी ज़ालिम बादशाह से वास्ता पड़े तो तीन बार पढ़े, ज़ालिम अपने ज़ुल्म से बाज़ आयेगा और मेहरबानी से पेश आयेगा।

सूरः अन्फ़ाल की ख़ासियतें:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस सूरः शरीफ़ के पढ़ने पर पाबन्दी रखेगा तो क़ियामत के दिन मैं गवाही दूँगा कि यह शख़्स निफ़ाक़ से बेज़ार है। और अगर कोई शख़्स क़ैद में मुब्तला हो तो वह इस सूरः को पढ़ा करे। अगर वह बेक़ुसूर है तो अल्लाह तआ़ला इसकी वरकत से उसको नजात देगा। अगर ख़ुद न पढ़ सके तो कोई रिश्तेदार पढ़ लिया करे। और

हाकिम उसपर मेहरबान होगा।

सूरः तौबा की ख़ासियतें:- इस सूरः का हर दिन एक बार पढ़ना ईमान की सलामती का सवव होता है। चुनाँचे बुज़ुर्गाने दीन इसकी तिलावत से ऐसे-ऐसे फ़ायदे उठाते रहे हैं कि ज़ाहिरी आँखें उनको नामुम्किन ख़्याल करती हैं। किसी हाकिम के सामने पढ़कर जाये तो वह मेहरबान हो जाता है। और अगर कोई ख़ता हो तो उसकी बख़्शिश हो जाती है।

सूरः यूनुस की ख़ासियतें:- इस सूरः का जो हमेशा विर्द रखे उसपर जान निकलने की सख़्ती और क़ब्र का अज़ाब न होगा। और जो शख़्स इक्कीस (21) मर्तबा पढ़े वह दुश्मनों पर ग़ल्बा और फ़त्ह पाएगा। और अगर कोई सख़्ती या मुसीबत पेश आए तो तेरह (13) बार पढ़ें, वह सख़्ती और मुसीबत दूर हो जाती है। इन्शा-अल्लाह।

सूरः यूसुफ़ की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स अपने ओहदे (पद) से हटा दिया गया हो तो वह इसकी तिलावत की पाबन्दी इख़्तियार करे, इस सूरः की बरकत से बहाल हो जायेगा। और अगर किसी हाकिम से कोई हाजत हो तो तेरह (13) बार पढ़कर उसके पास जाये अपने मक़सद में ज़रूर कामयाब होगा।

सूरः कह्फ़ की ख़ासियतें:- जो शख़्स क़र्ज़ में मुब्तला हो, जुमा की नमाज़ के वाद सूरः कह्फ़ सात बार पाढ़े और अल्लाह के सामने रो-रोकर दुआयें करे, उसका क़र्ज़ा उतर जायेगा और वह हैरान हो जायेगा। और जो कोई इसको जुमा की रात में पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसको ऐसा नूर अ़ता करेगा कि जिसकी रोशनी बैतुल्लाह शरीफ़ तक पहुँचे और उसके गुनाह माफ़ किये जायेंगे। और इस सूरः को पावन्दी के साथ पढ़ने वाला ताऊन, सफ़ेद कोढ़, ख़ून ख़राब होने की बीमारी और दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ रहेगा। और उसकी शुरू की दस आयतों के पढ़ने की सख़्त ताकीद है। और ज़बान बन्दी, बलाओं और मुसीवतों से हिफ़ाज़त रिज़्क़ में बढ़ोतरी व बरकत के लिए रोज़ाना सुबह को पढ़ें।

सूरः मरियम की ख़ासियतें:- जो शख़्स रोज़गार और काम-धन्धे की कमी के सवव परेशान हो तो सूरः मरियम को सात बार पढ़कर दुआ करे। और अगर कोई ज़रूरत सामने हो तो तीन बार पढ़े।

सूरः तॉ-हा की ख़ासियतें:- इसके आ़मिल पर जादू या सेहर कोई असर नहीं करता और रिज़्क़ की फ़राग़त होती है।

सूरः अम्बिया की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स परेशान हाल हो और अक्सर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की परेशानियों में घिरा रहता हो तो रोज़ाना तीन बार सूरः अम्बिया को पढ़े, अल्लाह तआ़ला उसके तमाम ग़म और परेशानियों को दूर कर देगा। जो सूरः अम्बिया पढ़ेगा क़ियामत के दिन उसका हिसाव न होगा।

सूरः सबा की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः को दस बार पढ़ेगा तो वह आफ़तों और वलाओं से महफ़ूज़ रहेगा। और फ़रमाया हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कि जो आदमी इस सूरः को पढ़ता रहे वह ख़ुशनसीब है क्योंकि क़ियामत के दिन कोई ऐसा नबी न होगा जो उसके साथ मुसाफ़ा न करे।

सूरः यासीन की ख़ासियतें:- इस सूरः की ख़ासियतें और असरात इस क़द्र हैं कि क़लम उनको लिखने की ताक़त नहीं रखता, क्योंकि यह क़ुरआन का दिल है। चुनाँचे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

फ़रमाया कि हर चीज़ का दिल होता है और क़ुरआन मजीद का दिल सूरः यासीन है। और जो शख़्स इसको किसी हाजत के लिये एक बार पढ़े तो उसकी हाजत पूरी हो। और अगर बाँझ औ़रत को किसी चीनी के बरतन पर लिखकर और अ़र्क़े गुलाब से धोकर पिलाते रहें तो उसके नरीना औलाद हो। और मोहताज पढ़े तो मालदार हो जाये। और अगर किसी ऐसे शख़्स पर पढ़ी जाए जिसपर जादू का असर हो तो वह सेहर और जादू दूर हो जाये। अगर किसी ऐसे शख़्स पर पढ़कर दम की जाए जिसपर कोई जिन्न भूत वग़ैरह का असर हो तो वह असर भाग जाए। अगर कोई शख़्स रात को नीयत के ख़ुलूस के साथ पढ़े तो वह जन्नती है और दीन व दुनिया की तमाम मुश्किलें उसपर आसान हो जाती हैं। और हर मुहिम और हर मतलब के लिये इसका पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। और अगर किसी शख़्स की जान अटक जाये तो उसपर इस सूरः शरीफ़ को तीन बार पढ़कर दम करें, उसकी रूह फ़ौरन निकल जाये। और अगर बीमार पर पढ़कर फूँकें तो वह सेहत पाये।

सूरः सॉद की ख़ासियतें:- अगर इस सूरः को बुरी नज़र के दूर करने के लिये सात बार पढ़कर दम करें तो नज़रे-बद दूर होगी।

सूरः ज़ुमर की ख़ासियतें:- जो शख़्स रोज़ाना सात बार इस सूरः को पढ़े तो इज़्ज़त और रुतबे का मालिक हो, और उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी और रुतबे में बुलन्दी हो और हमेशा राहत रहे।

सूरः मुहम्मद की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः शरीफ़ को पढ़े या लिखकर गुलाब से धोकर पिये तो वह रुतबे व पद में बुलन्द हो। और अगर लिखकर गले में डाले तो दुश्मनों पर फ़त्ह पाये। अगर सख़्त मुहिम दरपेश हो तो शुरू और आख़िर में ग्यारह (11) बार दुरूद शरीफ़ को पढ़े, इन्शा-अल्लाह नजात हासिल हो और उस मुहिम पर ग़ालिब आये।

सूरः फ़त्ह की ख़ासियतें:- जो शख़्स सूरः फ़त्ह को इक्तालीस (41) बार पढ़े तो दुश्मनों पर फ़त्ह पाये। और अगर रमज़ान का चाँद देखकर खड़े-खड़े तीन बार पढ़े तो तमाम साल अमन में रहे। जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस सूरः शरीफ़ को पढ़ता है गोया कि वह मेरे साथ जिहाद में शामिल है।

सूरः क़ाफ़ की ख़ासियतें:- अगर इस सूरः शरीफ़ को लिखें और बारिश के पानी से धोकर पेटदर्द के मरीज़ को पिलायें तो सेहत हो। और जिस लड़के के दाँत मुश्किल से निकलते हों उसको पिलायें बहुत आसानी से दाँत निकल आयें। और इस सूरः के पढ़ने की पाबन्दी करने वाले पर मौत के वक़्त की सख़्ती में आसानी हो जाती है, और इस सूरः का आ़मिल जब मर जाता है तो उसकी क़ब्र में एक रोशनी पैदा हो जाती है।

सूरः क़मर की ख़ासियतें:- अगर किसी को हाकिम का ख़ौफ़ पैदा हो, या उससे कोई तकलीफ़ पहुँचने का अन्देशा लगा हुआ हो तो सूरः क़मर को सात बार पढ़े।

सूरः रहमान की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरः रहमान को पढ़ता है गोया वह अल्लाह तआ़ला की तमाम नेमतों का शुक्र अदा करता है। और आँख के दर्द में पढ़कर दम करें तो अल्लाह तआ़ला शिफ़ा बख़्शे। और तिल्ली के मरीज़ पर दम करें तो सेहत हो जाये। और अगर कोई ग्यारह (11) बार पढ़े तो अपने मतलब को पहुँचे।

सूरः वाक़िआ की ख़ासियतें:- 'तबअे ताबिईन' में बाज़ बुज़ुर्गों ने मालदारी हासिल करने के लिए सूरः वाक़िआ का अमल इस तरह लिखा है कि जुमा के दिन से सात दिन तक बिना नाग़ा किए हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार पढ़े, फिर जब जुमा की रात आये तो इस सूरः को मग़रिब की नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार पढ़े, फिर इशा की नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद शरीफ़ भेजे, उसके बाद रोज़ाना सुबह व शाम एक बार नमाज़ के बाद पढ़ा करे तो अल्लाह तआ़ला उसको मालदार कर देगा। या जिस मतलब के वास्ते पढ़ेगा वह मतलब पूरा होगा।

सूरः मुजादला की ख़ासियतें:- अगर किसी क़ौम में झगड़ा फ़साद बरपा हो तो सूरः मुजादला पढ़ें क्योंकि इस सूरः शरीफ़ का पढ़ना आपसी निफ़ाक़ और बुग़्ज़ व कीना को दूर करता है। और दुश्मनों को नीचा करने के लिए भी आज़माई हुई है।

सूरः हश्र की ख़ासियतें:- अगर कोई ज़रूरत सामने हो तो चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ें और हर रक्अ़त में फ़ातिहः (यानी अल्हम्दु) के बाद सूरः हश्र एक बार पढ़ें, फिर सलाम फेरकर जो दुआ़ करें क़बूल होगी।

सूरः जुमा की ख़ासियतें:- जिन मियाँ-बीवी के दरमियान में नाइत्तिफ़ाक़ी हो उनमें से कोई जुमा के दिन इस सूरः शरीफ़ को तीन बार पढ़कर दुआ़ माँगे। उनमें मुहब्बत बढ़ जायेगी और आपस का झगड़ा दूर होगा। और कोई शख़्स अच्छी तरह कलाम न कर सकता हो तो इसका विर्द रखे, उसकी ज़बान दुरुस्त हो जायेगी।

सूरः मुनाफ़िक़ून की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स किसी चुग़लख़ोर की तरफ़ से तकलीफ़ में हो तो सूरः मुनाफ़िक़ून को एक सौ साठ (160) बार पढ़े, अल्लाह तआ़ला उसके हाल पर रहम करेगा और उस तकलीफ़ से बचालेगा। या उस चुग़लख़ोर की ज़बान को बन्द कर देगा।

सूरः तग़ाबुन की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में आया है कि जो कोई सूरः तग़ाबुन को रोज़ाना एक बार पढ़े तो वह आदमी नागहानी और अचानक की मौत से महफ़ूज़ रहे। और अगर कोई शख़्स तीन बार पढ़ा करे तो उसके माल में ख़ैर व बरकत हो।

सूरः मुल्क की ख़ासियतें:- हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन में एक सूरः है जिसमें तीस आयतें हैं। उसने एक शख़्स की शफ़ाअ़त की यहाँ तक कि वह शख़्स बख़्शा गया। और इब्ने हब्बान से रिवायत है कि यह सूरः अपने पढ़ने वाले के लिए इस्तिग़फ़ार करती है यहाँ तक कि वह बख़्शा जाता है। और इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का यह लफ़्ज़ है कि यह सूरः नजात देने वाली है, क़ब्र के अ़ज़ाब से नजात देती है। मैं चाहता हूँ कि यह सूरः हर मोमिन के दिल में हो। और जो शख़्स इसको इक्तालीस (41) बार पढ़े तो उसकी तमाम मुश्किलें हल हों और वह तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ रहे। और अगर क़र्ज़दार हो तो उसका क़र्ज़ा उतर जाये।

सूरः मआ़रिज की ख़ासियतें:- जो शख़्स रोज़ाना सूरः मआ़रिज को पढ़े वह तमाम दिन शैतानी वस्वसों से बचा रहे। और जिस शख़्स को एहतिलाम (स्वपनदोष) कसरत से होता हो वह आठ बार सूरः मआ़रिज को पढ़े, या सोते वक़्त रोज़ाना एक बार पढ़ लिया करे, इन्शा-अल्लाह तआ़ला वह शख़्स महफ़ूज़ रहेगा।

सूरः नूह की ख़ासियतें:- अगर किसी सख़्त दुश्मन से पाला पड़ जाये और उसको दफ़ा करना नामुम्किन

हो तो एक हज़ार बार सूरः नूह पढ़ें या बहुत-से आदमी जिनकी तायदाद ताक़ (यानी बेजोड़ हो.जैसे पाँच, सात, नौ, ग्यारह) हो, एक ही मजलिस में बैठकर ख़त्म करें या दो तीन दिन में ख़त्म करें, दुश्मन हलाक हो जायेगा।

सूरः जिन्न की ख़ासियतें:- अगर किसी शख़्स को आसेब (जिन्न भूत वग़ैरह का असर) हो गया हो तो सूरः जिन्न को सात बार पढ़कर सात दिन तक दम करें, आसेब भाग जायेगा। और जिन्न व परी को क़ब्ज़े में करने के वास्ते सात सौ (700) बार पढ़ें, जिन्न क़ाबू में आ जायेगा।

सूरः मुज़्ज़म्मिल की ख़ासियतें:- जो शख़्स रोज़ाना सूरः मुज़्ज़म्मिल को अपना विर्द बनाये तो वह हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत पाये और ख़ैर व बरकत का सबब है। अगर इस सूरः को पढ़कर हाकिम के पास जाये तो हाकिम मेहरबान हो जाये। और ज़बान बन्दी और तलवार बन्दी के वास्ते आज़माई हुई है। और अगर लिखकर मरीज़ के गले में लटकाये तो उसको सेहत हो और हर दिन सात बार पढ़े तो रिज़्क़ में फ़राख़ी हो।

सूरः इन्शिराह की ख़ासियतें:- अगर किसी शख़्स के सीने में दर्द हो तो इस सूरः पाक से दम किया हुआ पानी छाती पर मले। और दिल के दर्द के वास्ते अक्सीर है। और अगर कोई काम अनेक कारणों से बन्द हो गया हो तो इस सूरः को बीस (20) बार पढ़े, वह काम खुल जायेगा। और जो शख़्स कुछ माल ख़रीदे उसपर पढ़कर दम करे तो बरकत हो।

सूरः क़द्र की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः को सुबह व शाम तीन-तीन बार पढ़े तो सब दोस्त व आश्ना उसकी इज़्ज़त करें और बुलन्द रुतबे हासिल करने के लिए हमेशा इसका विर्द रखना अ़जीब व ग़रीब असर रखता है। और चीनी के बरतन पर लिखकर और उसे गुलाब या बारिश के पानी से धोकर मरीज़ को पिलायें तो इन्शा-अल्लाह शिफ़ा हो।

सूरः इख़्लास की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स तीन बार सूरः इख़्लास को पढ़े तो उसको एक क़ुरआन ख़त्म करने का सवाब हासिल होगा और जन्नत उसपर वाजिब हो जाती है। और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "क़ुल् हुवल्लाहु शरीफ़" का पढ़ने वाला अपनी मुरादों को पहुँचेगा चाहे दुनियावी हों या दीनी। और अगर इशा की नमाज़ के बाद खड़े होकर एक सौ एक (101) बार पढ़े तो तमाम गुनाह उसके माफ़ किये जायें। और अगर बीमार को लिखकर और धोकर पिलायें तो उसे सेहत हासिल हो। यह हर बला को दूर करने वाली है।

सूरः फ़लक़ की ख़ासियतें:- इस सूरः को हर दिन बिना नाग़ा तिलावत करने वाला हर तरह की आफ़तों से महफ़ूज़ रहता है। और हासिदों और दुश्मनों के शर और बुराई से बचा रहता है। और अगर किसी शख़्स पर सेहर या जादू असर कर गया हो तो इस सूरः को पढ़कर दम करें, और जिसपर जादू का असर हुआ है अगर वह सौ (100) बार पढ़े तो उससे छुटकारा पाये, और घोलकर पिये और लिखकर गले में बाँधे।

सूरः नास की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः को अपने ऊपर पढ़कर दम करे उसपर किसी का जादू न चले और हर बला से महफ़ूज़ रहे। और जादू के वास्ते सौ (100) बार पढ़ें। और अगर हर रोज़ पढ़ें तो तमाम गुनाह माफ़ किये जाते हैं। और जिस आदमी पर जादू कर दिया गया हो या उसपर किसी जिन्न भूत वग़ैरह का असर हो उसपर दम करें तो उसे नजात हासिल हो।

सूरतों की तरतीब

क्र. स.	नाम सूरः	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर	क्र. स.	नाम सूरः	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर
1	सूरः फ़ातिहः		1	31	सूरः लुक़मान	21	741-747
2	सूरः ब-क़रः	1-2-3	3-87	32	सूरः सज्दा	21	747-753
3	सूरःआलि इमरान	3-4	89-137	33	सूरः अहज़ाब	21-22	753-771
4	सूरः निसा	4-5-6	137-189	34	सूरः सबा	22	771-783
5	सूरः मा-इदः	6-7	191-229	35	सूरः फ़ातिर	22	783-793
6	सूरः अन्आम	7-8	229-269	36	सूरः यासीन	22-23	793-803
7	सूरः आराफ़	8-9	271-317	37	सूरः साफ़्फ़ात	23	803-817
8	सूरः अन्फ़ाल	9-10	317-335	38	सूरः सॉद	23	817-825
9	सूरः तौबा	10-11	335-371	39	सूरः जुमर	23-24	825-841
10	सूरः यूनुस	11	373-397	40	सूरः मुअ्मिन	24	841-859
11	सूरः हूद	11-12	397-423	41	सूरः हा-मीम सज्दा	24-25	859-869
12	सूरः यूसुफ़	12-13	423-445	42	सूरः शूरा	25	871-881
13	सूरः रअ्द	13	447-461	43	सूरः जुख़्रुफ़	25	881-893
14	सूरः इब्राहीम	13	461-471	44	सूरः दुख़ान	25	893-897
15	सूरः हिज्र	13-14	471-481	45	सूरः जासियः	25	897-903
16	सूरः नह्ल	14	481-507	46	सूरः अहक़ाफ़	26	905-913
17	सूरः बनी इस्राईल	15	509-529	47	सूरः मुहम्मद	26	913-919
18	सूरः कह्फ़	15-16	529-549	48	सूरः फ़त्ह	26	921-927
19	सूरः मरियम	16	551-563	49	सूरः हुजुरात	26	927-933
20	सूरः तॉ-हा	16	563-579	50	सूरः क़ाफ़	26	933-937
21	सूरः अम्बिया	17	581-597	51	सूरः ज़ारियात	26-27	937-943
22	सूरः हज	17	599-615	52	सूरः तूर	27	943-947
23	सूरः मुअ्मिनून	18	617-631	53	सूरः नज्म	27	947-951
24	सूरः नूर	18	631-649	54	सूरः क़मर	27	951-957
25	सूरः फ़ुरक़ान	18-19	649-661	55	सूरः रहमान	27	957-961
26	सूरः शु-अरा	19	661-679	56	सूरः वाक़िआ	27	963-967
27	सूरः नम्ल	19-20	679-693	57	सूरः हदीद	27	969-975
28	सूरः क़सस्	20	695-715	58	सूरः मुजादला	28	979-985
29	सूरः अन्कबूत	20-21	715-729	59	सूरः हश्र	28	985-991
30	सूरः रूम	21	729-741	60	सूरः मुम्तहिना	28	993-997

क्र. स.	नाम सूरः	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर	क्र. स.	नाम सूरः	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर
61	सूरः सफ़्फ़	28	997-1001	88	सूरः ग़ाशयः	30	1087-89
62	सूरः जुमुअः	28	1001-03	89	सूरः फ़ज्र	30	1089-91
63	सूरः मुनाफ़िकून	28	1003-07	90	सूरः बलद	30	1091-95
64	सूरः तग़ाबुन	28	1007-11	91	सूरः शम्स	30	1095
65	सूरः तलाक़	28	1011-15	92	सूरः लैल	30	1095-97
66	सूरः तहरीम	28	1015-17	93	सूरः जुहा	30	1097
67	सूरः मुल्क	29	1021-25	94	सूरः इन्शिराह	30	1097
68	सूरः क़लम	29	1025-29	95	सूरः तीन	30	1099
69	सूरः हाक़्क़ः	29	1029-33	96	सूरः अ़लक़	30	1099
70	सूरः मआ़रिज	29	1033-37	97	सूरः क़द्र	30	1101
71	सूरः नूह	29	1037-41	98	सूरः बय्यिनः	30	1101
72	सूरः जिन्न	29	1041-49	99	सूरः ज़िल्ज़ाल	30	1103
73	सूरः मुज़्ज़म्मिल	29	1049-51	100	सूरः आ़दियात	30	1103
74	सूरः मुद्दस्सिर	29	1051-55	101	सूरः क़ारिअः	30	1103-05
75	सूरः क़ियामः	29	1055-57	102	सूरः तकासुर	30	1105
76	सूरः दह्र	29	1057-61	103	सूरः अ़स्र	30	1105
77	सूरः मुर्सलात	29	1061-63	104	सूरः हु-मज़ः	30	1105-07
78	सूरः नबा	30	1067-69	105	सूरः फ़ील	30	1107
79	सूरः नाज़िआ़त	30	1069-71	106	सूरः कुरैश	30	1107
80	सूरः अ़-ब-स	30	1071-73	107	सूरः माऊन	30	1107
81	सूरः तकवीर	30	1075	108	सूरः कौसर	30	1109
82	सूरः इन्फ़ितार	30	1075-77	109	सूरः काफ़िरून	30	1109
83	सूरः ततफ़ीफ़	30	1077-79	110	सूरः नस्र	30	1109
84	सूरः इन्शिक़ाक़	30	1079-83	111	सूरः ल-हब	30	1109-11
85	सूरः बुरूज	30	1083-85	112	सूरः इख़्लास	30	1111
86	सूरः तारिक़	30	1085	113	सूरः फ़लक़	30	1111
87	सूरः अअ़्ला	30	1087	114	सूरः नास	30	1111

नोटः यहाँ सूरतों की तरतीब उसी तरह है जिस तरह कुरआन पाक में है। वैसे हमने सूरतों के साथ उनके नाज़िल होने की तरतीब का नम्बर भी लिखा है, चुनाँचे आप देखेंगे कि हमने हर सूरः के साथ दो नम्बर लिखे हैं जैसेः (2 सूरः ब-क़रः 87---- 96 सूरः अ़लक़ 1) इसका मतलब यह है कि कुरआन पाक में स्थान की हैसियत से सूरः ब-क़रः का नम्बर 2 वाँ और सूरः अ़लक़ का नम्बर 96 वाँ है, और इनके नाज़िल होने के एतिबार से सूरः ब-क़रः का नम्बर 87 वाँ और सूरः अ़लक़ का नम्बर 1 वाँ है। **(मुहम्मद इमरान क़ासमी)**

व क़ालर्-रसूलु या रब्बि

इन्-न क़ौमित्त-ख़ज़ू हाज़ल्-क़ुरआ-न मह्जूरा

तर्जुमाः और पैग़म्बर कहेंगे कि ऐ परवर्दिगार! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था।

फ़ायदाः जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ियामत के दिन ख़ुदा से शिकायत करेंगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी क़ौम ने क़ुरआन को छोड़ दिया। छोड़ देने की कई सूरतें हैं- इसको न मानना और इसपर ईमान न लाना भी छोड़ देना है, इसमें ग़ौर न करना और सोच समझकर न पढ़ना भी छोड़ देना है, और इसके अवामिर (यानी जिन चीज़ों का हुक्म फ़रमाया गया है) पर अ़मल न करना और मन्हियात (यानी जिन चीज़ों और कामों से रोका गया है उन) से न बचना भी छोड़ देना है। क़ुरआन पाक की परवाह न करके दूसरी चीज़ों जैसे बेहूदा नाविलों, शायरी की किताबों, बेमक़सद बातों, खेल-तमाशों, राग-रंग में मसरूफ़ (व्यस्त) होना भी छोड़ देना है।

अफ़सोस है कि आजकल के मुसलमान क़ुरआन की तरफ़ से बहुत ही ग़ाफ़िल हो रहे हैं। इसके पढ़ने, सोचने-समझने और हिदायतों से फ़ायदा उठाने की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते और यह खुल्लम-खुल्ला क़ुरआन पाक को छोड़ देना है। ख़ुदा तआ़ला उनको इसकी तरफ़ राग़िब और इसकी तिलावत में मश्ग़ूल होने की तौफ़ीक़ बख़्शे, ताकि वे इसपर अ़मल करें और दोनों जहान की कामयाबी और फ़लाह हासिल हो।

1 सूरतुल्-फ़ातिहति 5

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 123 अक्षर, 25 शब्द, 7 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

سورة ٢ الفاتحة ١

سُورَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝٤ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝٧

منزل

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन (1) अर्रह्मानिर्रहीम (2) मालिकि यौमिद्दीन (3) इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन (4) इह्दिनस्-सिरातल्-मुस्तक़ीम (5) सिरातल्लज़ी-न अन्अ़म्-त अ़लैहिम् (6) ग़ैरिल्-मग़्ज़ूबि अ़लैहिम् व लज़्ज़ाल्लीन (7) ❖
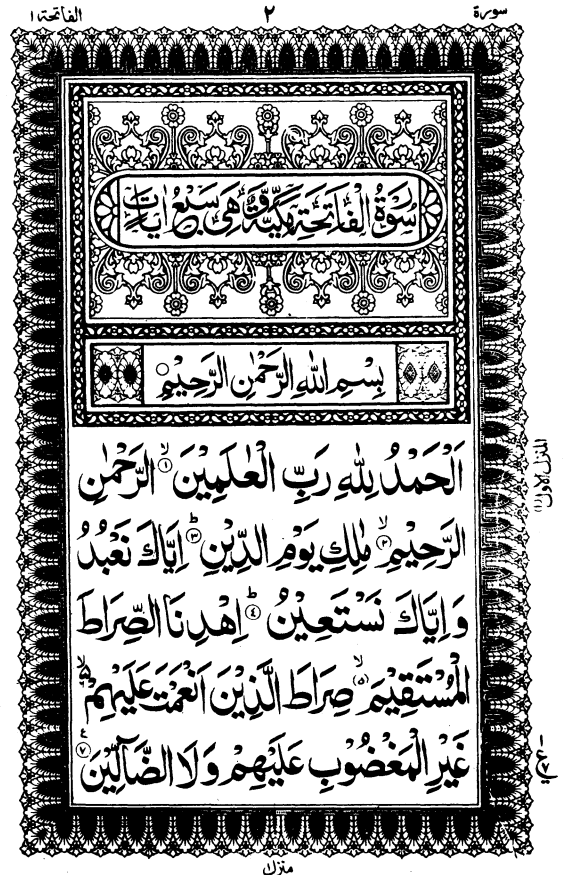
1 सूरः फ़ातिहः 5

सूरः फ़ातिहः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 7 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[1]सब तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लायक़ हैं जो पालने वाले हैं हर-हर आ़लम के।[2] **(1)** जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं। **(2)** जो मालिक हैं बदले के दिन के। **(3)** हम आप ही की इबादत करते हैं और आप ही से मदद की दरख़्वास्त करते हैं। **(4)** बतला दीजिए हमको रास्ता सीधा। **(5)** रास्ता उन लोगों का जिनपर आपने इनाम फ़रमाया है।[3] **(6)** न रास्ता उन लोगों का जिनपर आपका ग़ज़ब किया गया[4] और न उन लोगों का जो रास्ते से गुम हो गए। **(7)** ❖

---

1. यह सूरः रब्बुल आ़लमीन ने अपने बन्दों की ज़बान से फ़रमाई कि इन अल्फ़ाज़ में अपने ख़ालिक़ व राज़िक़ के सामने दरख़्वास्त पेश किया करें।

2. मख़्लूक़ात की अलग-अलग जिन्स एक-एक आ़लम कहलाता है, जैसे आ़लमे मलायका, आ़लमे इनसान, आ़लमे परिन्द, आ़लमे हैवानात, आ़लमे जिन्न।

3. इनाम से दीनी इनाम मुराद है। इनाम वाले चार गिरोह हैं, अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और नेक लोग।

4. ग़ज़ब के हक़दार वे लोग हैं जो तहक़ीक़ात के बावजूद हिदायत के रास्ते को छोड़ दें और गुमराह वे हैं जो सीधे रास्ते की तहक़ीक़ात न करना चाहें, इनमें से मग़ज़ूब ज़्यादा नाराज़ी के हक़दार हैं जो देखते-भालते हक़ की मुख़ालफ़त में सरगर्म हैं।

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम्

2 सूरतुल् ब-क़्-रति 87

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 20000 अक्षर, 6021 शब्द 286 आयतें और 40 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) ज़ालिकल्-किताबु ला रै-ब फ़ीहि हुदल्लिल्-मुत्तक़ीन (2) अल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्-ग़ैबि व युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (3) वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क व बिल्-आख़ि-रति हुम् यूक़िनून (4)

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम

2 सूरः ब-क़रः 87

सूरः ब-क़रः मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 286 आयतें और 40 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-मीम।[1] (1) यह किताब ऐसी है जिसमें कोई शुब्हा नहीं[2] राह बतलाने वाली है ख़ुदा तआ़ला से डरने वालों को।[3] (2) वे ख़ुदा से डरने वाले लोग ऐसे हैं जो यक़ीन लाते हैं छुपी हुई चीज़ों पर[4] और क़ायम रखते हैं[5] नमाज़ को, और जो कुछ दिया है हमने उनको उसमें से ख़र्च करते हैं।[6] (3) और वे लोग ऐसे हैं कि यक़ीन रखते हैं इस किताब पर भी जो आपकी तरफ़ उतारी गई है और उन किताबों पर भी जो आपसे पहले उतारी जा चुकी हैं[7] और आख़िरत पर भी वे लोग यक़ीन रखते हैं।[8] (4) बस ये लोग हैं ठीक राह पर जो उनके परवर्दिगार की तरफ़ से

---

1. इन हुरूफ़ के मायने से अ़वाम को इत्तिला नहीं दी गई, शायद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बतला दिया गया हो, क्योंकि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एहतिमाम के साथ वही बातें बताई हैं जिनके न जानने से दीन में कोई हर्ज और नुक़सान लाज़िम आता था, लेकिन इन हुरूफ़ का मतलब न जानने से कोई हर्ज न था इसलिए हमको भी ऐसी बातों की तफ़तीश न करनी चाहिए।
2. यानी क़ुरआन के अल्लाह की जानिब से होने में कोई शक नहीं। यानी यह बात यक़ीनी है चाहे कोई ना-समझ इसमें शुब्हा रखता हो, क्योंकि यक़ीनी बात किसी के शुब्हा करने से भी यक़ीनी ही रहती है।
3. क्योंकि जिसको ख़ौफ़े ख़ुदा न हो वह क़ुरआन का बतलाया हुआ रास्ता नहीं देखता।
4. यानी जो चीज़ें हवास और अ़क़्ल से पोशीदा हैं उनको सिर्फ़ अल्लाह व रसूल के फ़रमाने से सही मान लेते हैं।
5. यानी उसको पाबन्दी से हमेशा अदा करते हैं और उसकी शर्तों और अरकान को पूरा-पूरा बजा लाते हैं।
6. यानी नेक कामों में।
7. यानी क़ुरआन पर भी ईमान रखते हैं और पहली आसमानी किताबों पर भी। ईमान सच्चा समझने को कहते हैं, अ़मल करना दूसरी बात है। पस हक़ तआ़ला ने जितनी किताबें पिछले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर नाज़िल की हैं सबको सच्चा समझना फ़र्ज़ और ईमान की शर्त है, रह गया अ़मल सो वह सिर्फ़ क़ुरआन पर होगा, पहली किताबें मन्सूख़ हो गई हैं इसलिए उनपर अ़मल जायज़ नहीं।
8. आख़िरत से क़ियामत का दिन मुराद है, चूँकि वह दिन दुनिया के बाद आएगा इसलिए उसको आख़िरत कहते हैं।

उलाइ-क अ़ला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (5) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला युअ्मिनून (6) ख़-तमल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् व अ़ला सम्अिहिम् व अ़ला अब्सारिहिम् ग़िशा-वतुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (7) ❖

व मिनन्नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आख़िरि व मा हुम् बिमुअ्मिनीन ✣ (8) युख़ादिअूनल्ला-ह वल्लज़ी-न आमनू, व मा यख़्दअू-न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अुरून (9) फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् फ़ज़ा-दहुमुल्लाहु म-रज़न् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्ज़िबून (10) व इज़ा क़ी-ल लहुम् ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि क़ालू इन्नमा नहनु मुस्लिहून (11) अला इन्नहुम् हुमुल्- मुफ़्सिदू-न व ला किल्ला यश्अुरून (12) व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू कमा आ-मनन्नासु क़ालू अनुअ्मिनु कमा आ-मनस्-सु-फ़हा-उ, अला इन्नहुम् हुमुस्-सु-फ़हा-उ व लाकिल्ला यअ्लमून (13) व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ इला शयातीनिहिम् क़ालू इन्ना म-अ़कुम् इन्नमा नहनु मुस्तह्ज़िऊन (14) अल्लाहु यस्तह्ज़िउ बिहिम् व यमुद्दुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून (15) उला-इकल्लज़ीनश्त-रवुज़्-ज़ला-ल-त बिल्हुदा फ़मा रबिहत्-तिजारतुहुम् व मा कानू मुह्तदीन (16) म-सलुहुम् क-म-सलिल्-लज़िस्तौ-क़-द नारन् फ़-लम्मा अज़ा-अत् मा हौ-लहू ज़-हबल्लाहु बिनूरिहिम्

الٓمٓ ١ — ٣ — البقرة ٢

اولئك على هدى من ربهم واولئك هم المفلحون ﴿٥﴾ ان الذين
كفروا سواء عليهم ءانذرتهم ام لم تنذرهم لا يؤمنون ﴿٦﴾ ختم
الله على قلوبهم وعلى سمعهم وعلى ابصارهم غشاوة ولهم
عذاب عظيم ﴿٧﴾ ومن الناس من يقول امنا بالله وباليوم
الاخر وما هم بمؤمنين ﴿٨﴾ يخادعون الله والذين امنوا وما
يخدعون الا انفسهم وما يشعرون ﴿٩﴾ في قلوبهم مرض
فزادهم الله مرضا ولهم عذاب اليم بما كانوا يكذبون ﴿١٠﴾
واذا قيل لهم لا تفسدوا في الارض قالوا انما نحن مصلحون ﴿١١﴾
الا انهم هم المفسدون ولكن لا يشعرون ﴿١٢﴾ واذا قيل لهم
امنوا كما امن الناس قالوا انؤمن كما امن السفهاء الا انهم
هم السفهاء ولكن لا يعلمون ﴿١٣﴾ واذا لقوا الذين امنوا قالوا امنا
واذا خلوا الى شيطينهم قالوا انا معكم انما نحن مستهزءون ﴿١٤﴾
الله يستهزئ بهم ويمدهم في طغيانهم يعمهون ﴿١٥﴾ اولئك
الذين اشتروا الضللة بالهدى فما ربحت تجارتهم وما كانوا
مهتدين ﴿١٦﴾ مثلهم كمثل الذي استوقد نارا فلما اضاءت
ما حوله ذهب الله بنورهم وتركهم في ظلمت لا يبصرون ﴿١٧﴾

منزل ١

❖ रु. 1/7/1 ✣ व. लाज़िम

मिली है, और ये लोग हैं पूरे कामयाब।[1] **(5)** बेशक जो लोग काफ़िर हो चुके हैं बराबर है उनके हक़ में चाहे आप उनको डराएँ या न डराएँ, वे ईमान न लाएँगे।[2] **(6)** बंद लगा दिया है अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर, और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए सज़ा बड़ी है।[3] **(7)** ❖

और उन लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं, हम ईमान लाए अल्लाह तआला पर और आख़िरी दिन पर, हालाँकि वे बिलकुल ईमान वाले नहीं। **(8)** चालबाज़ी करते हैं अल्लाह तआला से और उन लोगों से जो ईमान ला चुके हैं। (यानी सिर्फ़ चालबाज़ी की राह से ईमान का इज़हार करते हैं) और हक़ीक़त में किसी के साथ भी चालबाज़ी नहीं करते सिवाय अपनी ज़ात के, और वे इसका शऊर नहीं रखते।[4] **(9)** उनके दिलों में बड़ा मर्ज़ है सो और भी बढ़ा दिया अल्लाह तआला ने उनका मर्ज़,[5] और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है इस वजह से कि वे झूठ बोला करते थे। **(10)** और जब उनसे कहा जाता है कि फ़साद "यानी ख़राबी और बिगाड़" मत करो ज़मीन में, तो कहते हैं कि हम तो सुधार ही करने वाले हैं। **(11)** याद रखो बेशक यही लोग मुफ़सिद "यानी बिगाड़ पैदा करने वाले" हैं, लेकिन वे इसका शऊर नहीं रखते। **(12)** और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी ऐसा ही ईमान ले आओ जैसा ईमान लाए हैं और लोग, तो कहते हैं, क्या हम ईमान लाएँगे जैसा ईमान लाए हैं ये बेवक़ूफ़? याद रखो बेशक यही हैं बेवक़ूफ़, लेकिन वे इसका इल्म नहीं रखते। **(13)** और जब मिलते हैं वे मुनाफ़िक़ उन लोगों से जो ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं, और जब तन्हाई में पहुँचते हैं अपने बुरे सरदारों के पास तो कहते हैं कि हम बेशक तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ़ मज़ाक़ किया करते हैं। **(14)** अल्लाह ही मज़ाक़ कर रहे हैं उनके साथ और ढील देते चले जाते हैं उनको कि वे अपनी सरकशी में हैरान व सरगरदाँ हो रहे हैं। **(15)** ये वे लोग हैं कि उन्होंने गुमराही ले ली बजाय हिदायत के, तो फ़ायदेमंद न हुई उनकी यह तिजारत और न ये ठीक तरीक़े पर चले।[6] **(16)** उनकी हालत उस शख़्स की हालत के जैसी है जिसने कहीं आग जलाई हो, फिर जब रोशन कर दिया हो उस आग ने उस शख़्स के आस-पास की सब चीज़ों को, ऐसी हालत में छीन लिया हो अल्लाह तआला ने उनकी रोशनी को और छोड़ दिया हो उनको अन्धेरों में कि कुछ देखते भालते न हों। **(17)** बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, सो ये अब रुजू

---

1. यानी ऐसे लोगों को दुनिया में यह नेमत मिली कि हक़ का रास्ता नसीब हुआ और आख़िरत में यह दौलत नसीब होगी कि हर तरह की कामयाबी उनके लिए है।

2. इस आयत में सब काफ़िरों का बयान नहीं बल्कि ख़ास उन काफ़िरों का ज़िक्र है जिनके बारे में खुदा तआला को मालूम है कि उनका ख़ात्मा कुफ़्र पर होगा। और इस आयत से यह ग़रज़ नहीं कि उनको अल्लाह के अ़ज़ाब से डराने और अहकाम सुनाने की ज़रूरत नहीं बल्कि मतलब यह है कि आप उनके ईमान लाने की फ़िक्र न करें और उनके ईमान न लाने से रंजीदा न हों, उनके ईमान लाने की उम्मीद नहीं।

3. उन्होंने शरारत और दुश्मनी करके अपने इख़्तियार से खुद अपनी सलाहियत बर्बाद कर ली है, सो इस सलाहियत के तबाह होने का सबब और करने वाले तो वे खुद ही हैं, मगर चूँकि बन्दों के तमाम अफ़आ़ल का ख़ालिक़ अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला है इसलिए इस आयत में अपने ख़ालिक़ होने का बयान फ़रमा दिया कि जब वे सलाहियत के तबाह करने वाले हुए और उसको अपने इरादे से इख़्तियार करना चाहा तो हमने भी वह बुरी सलाहियत की कैफ़ियत उनके दिलों वग़ैरह में पैदा कर दी। बन्द लगाने से इसी बुरी सलाहियत का पैदा करना मुराद है, उनका यह फ़ेल (काम) इस ख़त्म यानी बन्द लगाने का सबब हुआ, अल्लाह का बन्द लगाना इस फ़ेल का सबब नहीं हुआ।

4. यानी इस चालबाज़ी का बुरा अन्जाम खुद उन्हीं को भुगतना पड़ेगा।

5. मर्ज़ में उनका बुरा एतिक़ाद रखना, हसद और हर वक़्त का अन्देशा व ख़लजान सब कुछ आ गया, चूँकि इस्लाम की रोज़ाना तरक़्क़ी होती जाती थी इसलिए उनके दिलों में साथ-साथ ये बीमारियाँ तरक़्क़ी पाती जाती थीं।

6. यानी उनको तिजारत का ढंग न आया कि हिदायत जैसी चीज़ छोड़ी और गुमराही जैसी बुरी चीज़ ली।

व त-र-कहुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्ला युब्सिरून (17) सम्मुम्- बुक्मुन् अ़ुम्युन् फ़हुम् ला यर्जिअ़ून (18) औ क-सय्यिबिम्-मिनस्समा-इ फ़ीहि ज़ुलुमातुंव्-व रअ़्दुंव्-व बर्क़ुन्, यज्अ़लू-न असाबि-अ़हुम् फ़ी आज़ानिहिम् मिनस्सवाअ़िक़ि ह-ज़रल्मौति वल्लाहु मुहीतुम्-बिल्काफ़िरीन (19) यकादुल्-बर्क़ु यख़्तफ़ु अब्सा-रहुम्, कुल्लमा अज़ा-अ लहुम् मशौ फ़ीहि व इज़ा अज़्ल-म अ़लैहिम् क़ामू, व लौ शा-अल्लाहु ल-ज़-ह-ब बिसम्अ़िहिम् व अब्सारिहिम्, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (20) ❖

या अय्युहन्नासुअ़्बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (21) अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्अर्-ज़ फ़िराशंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़-अख़्र-ज बिही मिनस्स-मराति रिज़्क़ल् लकुम् फ़ला तज्अ़लू लिल्लाहि अन्दादंव्-व अन्तुम् तअ़्लमून (22) व इन कुन्तुम् फ़ी रैबिम्-मिम्मा नज़्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना फ़अ्तू बिसू-रतिम् मिम्-मिस्लिही वद्अ़ू शु-हदाअकुम् मिन् दूनिल्लाहि इन कुन्तुम् सादिक़ीन (23) फ़-इल्लम तफ़्अ़लू व लन् तफ़्अ़लू फ़त्तक़ुन्नारल्लती व क़ूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु उअ़िद्दत् लिल्काफ़िरीन (24) व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति अन्-न लहुम् जन्नातिन तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् स-म-रतिर्-रिज़्क़न् क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना

الٓمّٓ ١ — ٥ — البقرة ٢

صم بكم عمي فهم لا يرجعون ﴿١٨﴾ أو كصيب من السماء
فيه ظلمت ورعد وبرق يجعلون أصابعهم في آذانهم
من الصواعق حذر الموت والله محيط بالكفرين ﴿١٩﴾
يكاد البرق يخطف أبصارهم كلما أضاء لهم مشوا
فيه وإذا أظلم عليهم قاموا ولو شاء الله لذهب
بسمعهم وأبصارهم إن الله على كل شيء قدير ﴿٢٠﴾
يأيها الناس اعبدوا ربكم الذي خلقكم والذين من
قبلكم لعلكم تتقون ﴿٢١﴾ الذي جعل لكم الأرض فرشا
والسماء بناء وأنزل من السماء ماء فأخرج به من
الثمرت رزقا لكم فلا تجعلوا لله أندادا وأنتم تعلمون ﴿٢٢﴾
وإن كنتم في ريب مما نزلنا على عبدنا فأتوا بسورة من
مثله وادعوا شهداءكم من دون الله إن كنتم صدقين ﴿٢٣﴾
فإن لم تفعلوا ولن تفعلوا فاتقوا النار التي وقودها
الناس والحجارة أعدت للكفرين ﴿٢٤﴾ وبشر الذين آمنوا
وعملوا الصلحت أن لهم جنت تجري من تحتها الأنهر
كلما رزقوا منها من ثمرة رزقا قالوا هذا الذي رزقنا

منزل ١

न होंगे[1] (18) या उन मुनाफ़िक़ों की ऐसी मिसाल है जैसे बारिश हो आसमान की तरफ़ से, उसमें अन्धेरा भी हो और बिजली व कड़क भी हो, जो लोग उस बारिश में चल रहे हैं वे ठूँसे लेते हैं अपनी उंगलियाँ अपने कानों में कड़क के सबब मौत के अन्देशे से, और अल्लाह तआ़ला घेरे में लिए हुए हैं काफ़िरों को। (19) बिजली की यह हालत है कि मालूम होता है कि अभी उनकी आँखों की रोशनी उसने ली। जहाँ ज़रा उनको बिजली की चमक हुई तो उसकी रोशनी में चलना शुरू किया और जब उनपर अन्धेरा हुआ फिर खड़े के खड़े रह गए, और अगर अल्लाह तआ़ला इरादा करते तो उनके आँख-कान सब छीन लेते, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर हैं।[2] (20) ❖

ऐ लोगो! इबादत इख़्तियार करो अपने परवर्दिगार की जिसने तुमको पैदा किया और उन लोगों को भी कि तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, अ़जब नहीं कि तुम दोज़ख़ से बच जाओ।[3] (21) वह ज़ाते पाक ऐसी है जिसने बनाया तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत, और बरसाया आसमान से पानी, फिर नापैदी के परदे से निकाला बज़रिए उस पानी के फलों की ग़िज़ा को तुम लोगों के वास्ते, तो अब मत ठहराओ अल्लाह के मुक़ाबिल और तुम जानते बूझते हो।[4] (22) और अगर तुम कुछ ख़लजान में हो इस किताब के बारे में जो हमने नाज़िल फ़रमाई है अपने ख़ास बन्दे पर, तो अच्छा फिर तुम बना लाओ एक महदूद "यानी सीमित" टुकड़ा जो उसके जैसा हो,[5] और बुला लो अपने हिमायतियों को जो ख़ुदा से अलग (तजवीज़ कर रखे) हैं अगर तुम सच्चे हो।[6] (23) फिर अगर तुम यह काम न कर सके और क़ियामत तक भी न कर सकोगे तो फिर ज़रा बचते रहो दोज़ख़ से जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं, तैयार हुई रखी है काफ़िरों के वास्ते।[7] (24) और ख़ुशख़बरी सुना दीजिए आप ऐ पैग़म्बर उन लोगों को जो ईमान लाए और काम किए अच्छे, इस बात की कि बेशक उनके वास्ते जन्नतें हैं कि बहती होंगी उनके नीचे से नहरें, जब कभी दिए जाएँगे वे लोग उन जन्नतों में से किसी फल की ग़िज़ा तो हर बार में यही कहेंगे कि यह तो वही है जो हमको मिला था इससे पहले और मिलेगा भी उनको दोनों बार का फल मिलता जुलता।[8] और उनके वास्ते उन जन्नतों में बीवियाँ होंगी साफ़, पाक की हुईं, और वे लोग उन जन्नतों में हमेशा को बसने वाले होंगे। (25) हाँ वाक़ई अल्लाह तआ़ला तो नहीं शरमाते इस बात से कि बयान कर दें कोई मिसाल भी चाहे मच्छर की हो चाहे उससे

1. यानी हक़ से बहुत दूर हो गए हैं कि उनके कान हक़ सुनने के क़ाबिल न रहे, ज़बान उनकी हक़ बात कहने के लायक़ न रही, आँखें हक़ देखने के क़ाबिल न रहीं, सो अब उनके हक़ की तरफ़ रुजू होने की क्या उम्मीद है।
2. मुतरद्दिद (शक में पड़े हुए) मुनाफ़िक़ीन इस्लाम के ग़ालिब होने के आसार की ज़्यादती देखकर कभी इस्लाम के नूर की झलक देखकर इधर को बढ़ने लगते हैं और कभी ख़ुद-ग़रज़ी के अन्धेरे में पड़कर फिर हक़ से रुक जाते हैं।
3. शाही मुहावरे में 'अ़जब नहीं' का लफ़्ज़ वायदे के मौक़े में बोला जाता है।
4. यानी इस बात को जानते हो कि इन तसर्रुफ़ात का (यानी इन कामों का) सिवाय ख़ुदा तआ़ला के कोई करने वाला नहीं, तो इस सूरत में कब मुनासिब है कि ख़ुदा के मुक़ाबले में दूसरों को माबूद बनाओ।
5. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बेशुमार मोजिज़े अ़ता हुए, जिनमें सबसे बड़ा मोजिज़ा क़ुरआन शरीफ़ है कि नुबुव्वत के साबित करने की बड़ी दलील है। इसके मोजिज़ा होने में मुख़ालिफ़ीन को शुब्हा था कि शायद इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुद तसनीफ़ कर लिया करते हों तो इस सूरत में इसके मोजिज़ा होने में कलाम की गुन्जाइश हो गई, पस नुबुव्वत की दलील मुश्तबह हो गई, इसलिए अल्लाह तआ़ला इस शुब्हा को ख़त्म फ़रमाते हैं ताकि इसका मोजिज़ा होना साबित हो जाए। फिर नुबुव्वत पर क़तई दलील बन सके।
6. जब बावजूद इसके न बना सकेंगे तो इन्साफ़ की रू से बिना सोचे साबित हो जाएगा कि यह मोजिज़ा अल्लाह की जानिब से है, और बिला शुब्हा आप पैग़म्बर हैं और यही मक़सूद था।
7. यह सुनकर कैसा कुछ जोश व ख़रोश और बल व गुस्सा न आया होगा, और कोशिश की कोई कसर क्यों उठा रखी होगी? फिर आ़जिज़ होकर अपना-सा मुँह लेकर बैठ रहना क़तई दलील है कि क़ुरआने करीम मोजिज़ा है।
8. दोनों बार के फलों की सूरत एक-सी होगी, जिससे वे यूँ समझेंगे कि यह पहली ही क़िस्म का फल है मगर खाने में मज़ा दूसरा होगा, जिससे लुत्फ़ और ख़ुशी बढ़ जाएगी।

मिन् क़ब्लु व उतू बिही मु-तशाबिहन्, व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मु-तह्ह-रतुंव्- व हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(25)** इन्नल्ला-ह ला यस्तह्यी अंय्यज़्रि-ब म-सलम्मा बऊ-ज़तन् फ़मा फ़ौ-क़हा, फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़-यअ्लमू-न अन्नहुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम्, व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-यक़ूलू-न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म-सलन् ✣ युज़िल्लु बिही कसीरंव्-व यह्दी बिही कसीरन्, व मा युज़िल्लु बिही इल्लल्-फ़ासिक़ीन **(26)** अल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न अह्दल्लाहि मिम्-बअ्दि मीसाक़िही व यक़्तअू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यू-स-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि, उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(27)** कै-फ़ तक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ़-अह्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जअून **(28)** हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअन्, सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ़-सव्वाहुन्-न सब्-अ समावातिन्, व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(29)** ❖

الم ٦ البقرة

مِنْ قَبْلُ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ
وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا
مَا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ
بِهَٰذَا مَثَلًا يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ
بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ۝ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَ
كُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ
هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى
السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِذْ
قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً قَالُوا
أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَّمَ
آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي
بِأَسْمَاءِ هَٰؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا

منزل

व इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी जाअिलुन् फ़िल्अर्ज़ि ख़ली-फ़तन्, क़ालू अ-तज्अलु फ़ीहा मंय्युफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमा-अ व नह्नु नुसब्बिहु बिहम्दि-क व नुक़द्दिसु ल-क, क़ा-ल इन्नी अअ्लमु मा ला तअ्लमून **(30)** व अ़ल्ल-म आ-दमल्-अस्मा-अ कुल्लहा सुम्-म अ़-र-ज़हुम् अ़लल्-मलाइ-कति फ़क़ा-ल अम्बिऊनी बिअस्मा-इ हा-उला-इ इन कुन्तुम् सादिक़ीन **(31)** क़ालू सुब्हा-न-क ला अ़िल्-म लना इल्ला मा

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 3/9/3

भी बढ़ी हुई हो, सो जो लोग ईमान लाए हुए हैं चाहे कुछ ही हो वे तो यक़ीन करेंगे कि बेशक यह मिसाल तो बहुत ही मौके की है उनके रब की जानिब से, और रह गए वे लोग जो काफ़िर हैं, सो चाहे कुछ भी हो जाए वे यूँ ही कहते रहेंगेः वह कौन-सा मतलब होगा जिसका इरादा किया होगा अल्लाह ने इस हक़ीर मिसाल से, गुमराह करते हैं अल्लाह तआला उस मिसाल की वजह से बहुतों को और हिदायत करते हैं उसकी वजह से बहुतों को। और गुमराह नहीं करते अल्लाह तआला उस मिसाल से किसी को मगर सिर्फ़ बेहुक्मी करने वालों को। **(26)** जो कि तोड़ते रहते हैं उस मुआहदे को जो अल्लाह तआला से कर चुके थे, उसकी मज़बूती के बाद और ख़त्म करते रहते हैं उन ताल्लुक़ात को कि हुक्म दिया है अल्लाह ने उनको वाबस्ता रखने "यानी जोड़ने" का[1] और फ़साद "यानी बिगाड़" करते रहते हैं ज़मीन में, पस ये लोग पूरे घाटे में पड़ने वाले हैं।[2] **(27)** भला क्योंकर नाशुक्री करते हो अल्लाह की हालाँकि थे तुम महज़ बेजान सो तुमको जानदार किया, फिर तुमको मौत देंगे, फिर ज़िन्दा करेंगे (यानी क़ियामत के दिन) फिर उन्हीं के पास ले जाए जाओगे। **(28)** वह ज़ाते पाक ऐसी है जिसने पैदा किया तुम्हारे फ़ायदे के लिए जो कुछ भी ज़मीन में मौजूद है सब का सब, फिर तवज्जोह फ़रमाई आसमान की तरफ़, सो दुरुस्त करके बनाए सात आसमान[3] और वह तो सब चीज़ों के जानने वाले हैं। **(29)** ❖

और जिस वक़्त इर्शाद फ़रमाया आपके रब ने फ़रिश्तों से कि ज़रूर मैं बनाऊँगा ज़मीन में एक नायब[4] फ़रिश्ते कहने लगेः क्या आप पैदा करेंगे ज़मीन में ऐसे लोगों को जो फ़साद करेंगे और ख़ून बहाएँगे? और हम बराबर तस्बीह करते रहते हैं बिहम्दिल्लाह, और पाकी बयान करते रहते हैं आपकी।[5] हक़ तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं जानता हूँ उस बात को जिसको तुम नहीं जानते।[6] **(30)** और इल्म दे दिया अल्लाह तआला ने (हज़रत) आदम (अ़लैहिस्सलाम) को (उनको पैदा करके) कुल चीज़ों के नामों का[7] फिर वे चीज़ें फ़रिश्तों के सामने कर दीं, फिर फ़रमाया कि बतलाओ मुझको नाम इन चीज़ों के (उनके आसार व ख़ासियतों के साथ) अगर तुम सच्चे हो। **(31)** फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया कि आप तो पाक हैं हमको कोई इल्म नहीं, मगर वही जो कुछ आपने हमको इल्म दिया।

---

1. इसमें तमाम शरई ताल्लुक़ात दाख़िल हो गए।

2. यहाँ तक उस शुब्हा के जवाब का सिलसिला था जो कि कुफ़्फ़ार ने पेश किया था कि अल्लाह के कलाम में ऐसी कम-क़द्र चीज़ों का ज़िक्र क्यों आया। अब उस मज़मून की तरफ़ रुजू करते हैं जो इससे ऊपर आयत "या अय्युहन्नासुअ़बुदू" में तौहीद से मुताल्लिक़ मज़कूर हुआ था।

3. अव्वल ज़मीन का माद्दा बना और अभी इसकी मौजूदा शक्ल न बनी थी कि उसी हालत में आसमान का माद्दा बना, जो धुँए की सूरत में था। उसके बाद ज़मीन मौजूदा शक्ल पर फैला दी गई, फिर उसपर पहाड़ और पेड़ वग़ैरह पैदा किए गए। फिर उस धुँए के बहते हुए माद्दे के सात आसमान बना दिए।

4. यानी वह मेरा नायब होगा कि अपने शरई अहकाम को जारी करने और लागू करने की ख़िदमत मैं उसके सुपुर्द करूँगा।

5. यह बतौर एतिराज़ के नहीं कहा, न अपना हक़ जताया बल्कि यह फ़रिश्तों की अ़र्ज़ व दरख़्वास्त इन्किसारी और आ़जिज़ी के इज़हार के वास्ते थी।

6. यानी जो मामला तुम्हारे नज़दीक आदम की औलाद की पैदाइश के लिए रुकावट है, वही मामला हक़ीक़त में उनकी पैदाइश और तख़्लीक़ का सबब है।

7. यानी रू-ए-ज़मीन पर मौजूद तमाम चीज़ों के नामों और उनकी ख़ासियतों का इल्म दे दिया।

अ़ल्लम्तना इन्न-क अन्तल्-अ़लीमुल्-हकीम **(32)** क़ा-ल या आदमु अम्बिअ्हुम् बिअस्मा-इहिम् फ़-लम्मा अम्ब-अहुम् बिअस्मा-इहिम् क़ा-ल अलम् अक़ुल्लकुम् इन्नी अअ्लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि व अअ्लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम् तक्तुमून **(33)** व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआ-द-म फ़-स-जदू इल्ला इब्लीस्, अबा वस्तक्ब-र व का-न मिनल्काफ़िरीन **(34)** व क़ुल्ना या आ-दमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकल्-जन्न-त व कुला मिन्हा र-ग़दन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़रबा हाज़िहिश्-श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्- ज़ालिमीन **(35)** फ़-अज़ल्-लहुमश्- शैतानु अ़न्हा फ़-अख़्र-जहुमा मिम्मा काना फ़ीही व कुल्-नह्बितू बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्-व मताअुन् इला हीन **(36)** फ़-त-लक़्क़ा आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ता-ब अ़लैहि, इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम **(37)** क़ुल्नह्बितू मिन्हा जमीअन् फ़-इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मन् तबि-अ़ हुदा-य फ़ला ख़ौफुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(38)** वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(39)** ❖

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ्मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व औफ़ू बि-अ़ह्दी ऊफ़ि बि-अ़ह्दिकुम् व इय्या-य फ़र्हबून **(40)** व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु मुसद्दिक़ल्लिमा म-अ़कुम् व ला तकूनू अव्व-ल काफ़िरिम् बिही व ला तश्तरू बिआयाती स-मनन् क़लीलंव्-व

الٓمّٓ ١ ٤ البقرة ٢

اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ
بِاَسْمَآئِهِمْ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ
اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ
تَكْتُمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ
اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ
وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ
الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا
مِمَّا كَانَا فِيْهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي
الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ۝ فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ
فَتَابَ عَلَيْهِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا
فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ
اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ وَاِيَّايَ
فَارْهَبُوْنِ ۝ وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ
كَافِرٍۢ بِهٖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ۝ وَلَا تَلْبِسُوا

منزل ١

बेशक आप बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक्मत वाले हैं (कि जिस क़द्र जिसके लिए मसलिहत जाना उसी क़द्र समझ व इल्म अ़ता फ़रमाया)। **(32)** हक़ तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ आदम! इनको इन चीज़ों के नाम बतला दो, सो जब बतला दिए उनको आदम ने उन चीज़ों के नाम तो हक़ तआ़ला ने फ़रमायाः (देखो) मैं तुमसे कहता न था कि बेशक मैं जानता हूँ तमाम छुपी चीज़ें आसमानों और ज़मीन की, और जानता हूँ जिस बात को तुम ज़ाहिर कर देते हो और जिस बात को दिल में रखते हो। **(33)** और जिस वक़्त हमने हुक्म दिया फ़रिश्तों को (और जिन्नों को भी) कि सज्दे में गिर जाओ आदम के सामने,[1] सो सब सज्दे में गिर पड़े सिवाय इबलीस के, उसने कहना न माना और ग़ुरूर में आ गया, और हो गया काफ़िरों में से।[2] **(34)** और हमने हुक्म दिया कि ऐ आदम! रहा करो तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में, फिर खाओ दोनों इसमें से फ़राग़त के साथ जिस जगह से चाहो, और नज़दीक न जाइयो उस दरख़्त के, वरना तुम भी उन्हीं में शुमार हो जाओगे जो अपना नुक़सान कर बैठते हैं।[3] **(35)** फिर बहका दिया आदम और हव्वा को शैतान ने उस दरख़्त की वजह से, सो निकलवाकर रहा उनको उस ऐश से जिसमें वे थे, और हमने कहाः नीचे उतरो तुममें से बाज़े बाज़ों के दुश्मन रहेंगे, और तुमको ज़मीन पर कम ही ठहरना है, और काम चलाना एक मुक़र्ररा मीयाद तक।[4] **(36)** उसके बाद हासिल कर लिए आदम ने अपने रब से चन्द अलफ़ाज़, तो अल्लाह तआ़ला ने रहमत के साथ तवज्जोह फ़रमाई उनपर (यानी तौबा क़बूल कर ली) बेशक वही हैं बड़े तौबा क़बूल करने वाले, बड़े मेहरबान। **(37)** हमने हुक्म फ़रमायाः नीचे जाओ इस जन्नत से सबके सब, फिर अगर आए तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से किसी क़िस्म की हिदायत, सो जो शख़्स पैरवी करेगा मेरी उस हिदायत की तो न कुछ अन्देशा होगा उसपर और न ऐसे लोग ग़मगीन होंगे। **(38)** और जो लोग कुफ़्र करेंगे और झुठलाएँगे हमारे अहकाम को, ये लोग होंगे दोज़ख़ वाले, वे उसमें हमेशा रहेंगे। **(39)** ❖

ऐ बनी इसराईल! याद करो तुम लोग मेरे उन एहसानों को जो किए हैं मैंने तुमपर, और पूरा करो तुम मेरे अ़ह्द को, पूरा करूँगा मैं तुम्हारे अ़ह्द को, और सिर्फ़ मुझ ही से डरो। **(40)** और ईमान ले आओ उस किताब पर जो मैंने नाज़िल की है (यानी क़ुरआन पर) ऐसी हालत में कि वह सच बतलाने वाली है उस किताब को जो तुम्हारे पास है (यानी तौरात के अल्लाह की किताब होने की तस्दीक़ करती है) और मत बनो तुम सबमें पहले इनकार करने वाले इस (क़ुरआन) के, और मत लो मेरे अहकाम के मुक़ाबले में हक़ीर मुआवज़े को, और ख़ास मुझ ही से पूरे तौर पर डरो।[5] **(41)** और मख़्लूत "यानी गड्-मड्" मत करो हक़ को नाहक़ के साथ, और छुपाओ भी मत हक़ को

---

1. ग़ालिबन फ़रिश्तों को बिला वास्ता हुक्म किया होगा और जिन्नों को किसी फ़रिश्ते वग़ैरह के ज़रिए से कहा गया होगा।

2. उसपर काफ़िर होने का फ़तवा इसलिए दिया गया कि उसने हुक्मे इलाही के मुक़ाबले में तकब्बुर किया और उसके क़बूल करने में बुरा समझा और उसको ख़िलाफ़े हिक्मत और ख़िलाफ़े मस्लहत ठहराया।

3. ख़ुदा जाने वह क्या दरख़्त था।

4. यानी वहाँ भी जाकर दवाम (हमेशा का रहना) न मिलेगा, कुछ वक़्त के बाद वह घर भी छोड़ना पड़ेगा।

5. यानी मेरे अहकाम छोड़कर और उनको बदल कर और छुपाकर आ़म लोगों से दुनिया-ए-ज़लील व क़लील को वसूल मत करो, जैसा कि उनकी आ़दत थी।

इय्या-य फ़त्तक़ून (41) व ला तल्बिसुल्-हक़्-क़ बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्लमून (42) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वर्-कअू म-अर्राकिअीन (43) अ-तअ्मुरूनन्ना-स बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम् तत्लूनल्-किता-ब, अ-फ़ला तअ्क़िलून (44) वस्तअीनू बिस्सब्रि वस्सलाति, व इन्नहा ल-कबी-रतुन् इल्ला अ़लल्-ख़ाशिअीन (45) अल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम्-मुलाक़ू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहि राजिअून ◆ (46) ❖

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ्मति-यल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़लल् आ़लमीन (47) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न्-नफ़्सिन् शैअंव्-व ला युक़्बलु मिन्हा शफ़ा-अ़तुंव्-व ला युअ्-ख़ज़ु मिन्हा अ़द्लुंव्-व ला हुम् युन्सरून (48) व इज़् नज्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ़-न यसूमू-नकुम् सूअल्-अ़ज़ाबि युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम् व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम (49) व इज़् फ़-रक़्ना

البقرة ٢

الحق بالباطل وتكتموا الحق وانتم تعلمون ﴿٤٢﴾ واقيموا الصلوة
واتوا الزكوة واركعوا مع الركعين ﴿٤٣﴾ اتامرون الناس بالبر و
تنسون انفسكم وانتم تتلون الكتب افلا تعقلون ﴿٤٤﴾ واستعينوا
بالصبر والصلوة وانها لكبيرة الا على الخشعين ﴿٤٥﴾ الذين
يظنون انهم ملقوا ربهم وانهم اليه رجعون ﴿٤٦﴾ يبني اسراءيل
اذكروا نعمتي التي انعمت عليكم واني فضلتكم على العلمين ﴿٤٧﴾
واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ولا يقبل منها
شفاعة ولا يؤخذ منها عدل ولا هم ينصرون ﴿٤٨﴾ واذ
نجينكم من ال فرعون يسومونكم سوء العذاب يذبحون
ابناءكم ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم
عظيم ﴿٤٩﴾ واذ فرقنا بكم البحر فانجينكم واغرقنا ال فرعون
وانتم تنظرون ﴿٥٠﴾ واذ وعدنا موسى اربعين ليلة ثم
اتخذتم العجل من بعده وانتم ظلمون ﴿٥١﴾ ثم عفونا عنكم
من بعد ذلك لعلكم تشكرون ﴿٥٢﴾ واذ اتينا موسى الكتب
والفرقان لعلكم تهتدون ﴿٥٣﴾ واذ قال موسى لقومه يقوم
انكم ظلمتم انفسكم باتخاذكم العجل فتوبوا الى بارئكم

منزل

बिकुमुल्-बह्-र फ़-अन्जैनाकुम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्औ़-न व अन्तुम् तन्ज़ुरून (50) व इज़् वाअ़द्ना मूसा अर्बअी-न लै-लतन् सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्- अ़िज्-ल मिम्-बअ्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (51) सुम्-म अ़फ़ौना अ़न्कुम् मिम्-बअ्दि ज़ालि-क लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (52) व इज़् आतैना मूसल्-किता-ब वल्फ़ुरक़ा-न लअ़ल्लकुम् तह्तदून (53) व इज़् क़ा-ल मूसा

जिस हालत में कि तुम जानते हो।[1] (42) और क़ायम करो तुम लोग नमाज़ को (यानी मुसलमान होकर) और दो ज़कात को और आ़जिज़ी करो आ़जिज़ी करने वालों के साथ।[2] (43) क्या ग़ज़ब है कि कहते हो और लोगों को नेक काम करने को (नेक काम करने से मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान लाना है) और अपनी ख़बर नहीं लेते, हालाँकि तुम तिलावत करते रहते हो किताब की, तो फिर क्या तुम इतना भी नहीं समझते।[3] (44) और (अगर तुमको माल और जाह की मुहब्बत के ग़लबे से ईमान लाना दुश्वार मालूम हो तो) मदद लो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह नमाज़ दुश्वार ज़रूर है मगर जिनके दिल में ख़ुशूअ़ "यानी आ़जिज़ी और गिड़गिड़ाना" हो उनपर कुछ दुश्वार नहीं। (45) वे ख़ाशिअ़ीन, वे लोग हैं जो ख़्याल रखते हैं इसका कि वे बेशक मिलने वाले हैं अपने रब से। ◆ (46) ❖

और इस बात का भी ख़्याल रखते हैं कि वे बेशक अपने रब की तरफ़ वापस जाने वाले हैं। ऐ याकूब की औलाद! तुम लोग मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुमको इनाम में दी थी और उस (बात) को (याद करो) कि मैंने तुमको तमाम दुनिया जहान वालों पर (ख़ास बर्ताव में) फ़ौक़ियत दी थी। (47) और डरो तुम ऐसे दिन से कि न तो कोई शख़्स किसी शख़्स की तरफ़ से कुछ मुतालबा अदा कर सकता है और न किसी शख़्स की तरफ़ से कोई सिफ़ारिश क़बूल हो सकती है, और न किसी शख़्स की तरफ़ से कोई मुआ़वज़ा लिया जा सकता है, और न उन लोगों की तरफ़दारी चल सकेगी।[4] (48) और (वह ज़माना याद करो) जबकि रिहाई दी हमने तुमको फ़िरऔ़न के मुताल्लिक़ीन से जो फ़िक्र में लगे रहते थे तुम्हें सख़्त तकलीफ़ पहुँचाने के, गले काटते थे तुम्हारे लड़कों के और ज़िन्दा छोड़ देते थे तुम्हारी औ़रतों को। इस (वाक़िए) में एक इम्तिहान था तुम्हारे रब की जानिब से बड़ा भारी।[5] (49) और जब फाड़ दिया हमने तुम्हारी वजह से दरिया-ए-शोर "यानी नमकीन या काले पानी के दरिया" को, फिर हमने (डूबने से) तुमको बचा लिया और फ़िरऔ़न के मुताल्लिक़ीन को (मय फ़िरऔ़न के) डुबो दिया, और तुम (उसका) मुआ़यना कर रहे थे।[6] (50) और (वह ज़माना याद करो) जबकि वायदा किया था हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से चालीस रात का, फिर तुम लोगों ने तजवीज़ कर लिया गौसाला को मूसा के (जाने के) बाद, और तुमने ज़ुल्म पर कमर बाँध रखी थी। (51) फिर भी हमने (तुम्हारे तौबा करने पर) माफ़ किया तुमसे इतनी बड़ी बात होने के बाद, इस उम्मीद पर कि तुम एहसान मानोगे। (52) और (वह ज़माना याद करो) जब दी हमने मूसा को किताब (तौरात)

---

1. शरीअ़त के अहकाम की तब्दीली दो तरह से किया करते हैं। एक तो यह कि उसको ज़ाहिर ही न होने दिया, यह छुपाना है। और अगर छुपाए न छुप सका और ज़ाहिर ही हो गया तो फिर उसमें गड्-मड् करना चाहते हैं, यह "लब्स" (हक़ के साथ नाहक़ को मिला देना) है। हक़ तआ़ला ने दोनों से मना कर दिया।
2. नमाज़ से उनकी रुतबे और मन्सब की मुहब्बत कम होगी, ज़कात से उनकी माल की मुहब्बत घटेगी, बातिनी तवाज़ो से हसद वग़ैरह में कमी आएगी। यही मर्ज़ उनमें ज़्यादा थे।
3. इससे यह मसला नहीं निकलता कि बे-अ़मल को वाइज़ बनना जायज़ नहीं, बल्कि यह निकलता है कि वाइज़ को बे-अ़मल बनना जायज़ नहीं।
4. यह दिन क़ियामत का होगा।
5. किसी ने फ़िरऔ़न से भविष्यवाणी कर दी थी कि बनी इसराईल में एक लड़का पैदा होगा जिसके हाथों तेरी हुकूमत जाती रहेगी, इसलिए उसने नये पैदा होने वाले लड़कों को क़त्ल करना शुरू कर दिया।
6. यह क़िस्सा उस वक़्त हुआ कि मूसा अ़लैहिस्सलाम पैदा होकर पैग़म्बर हो गए और मुद्दतों फ़िरऔ़न को समझाते रहे।
7. फ़ैसले की चीज़ या तो उन अहकाम को कहा जो तौरात में लिखे हैं, या मोजिज़ों को कहा, या ख़ुद तौरात ही को कह दिया।

लिक़ौमिही या क़ौमि इन्नकुम् ज़-लम्तुम् अन्फ़ु-सकुम् बित्तिख़ाज़िकुमुल्-अिज्-ल फ़तूबू इला बारिइकुम् फ़क़्तुलू अन्फ़ु-सकुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अिन्-द बारिइकुम्, फ़ता-ब अ़लैकुम् इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम **(54)** व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन्-नुअ्मि-न ल-क हत्ता नरल्ला-ह जह्-रतन् फ़-अ-ख़ज़त्कुमुसाअि-क़तु व अन्तुम् तन्ज़ुरून **(55)** सुम्-म बअ़स्नाकुम् मिम्-बअ्दि मौतिकुम् लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(56)** व ज़ल्लल्ना अ़लैकुमुल्-ग़मा-म व अन्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्मन्-न वस्सल्वा, कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम्, व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(57)** व इज़् क़ुल्नद्ख़ुलू हाज़िहिल्-क़र्-य-त फ़कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् र-ग़दंव्-वद्ख़ुलुल्-बा-ब सुज्जदंव्-व क़ूलू हित्ततुन् नग़्फ़िर् लकुम ख़तायाकुम्, व स-नज़ीदुल् मुह्सिनीन **(58)** फ़-बद्-द-लल्लज़ी-न ज़-लमू क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अन्ज़ल्ना अ़लल्लज़ी-न ज़-लमू रिज्ज़म्-मिनस्-समा-इ बिमा कानू यफ़्सुक़ून **(59)** ❖

فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىِٕكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ
حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝
ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَظَلَّلْنَا
عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ
شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا
غَيْرَ الَّذِىْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ
السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ
فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ
وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ
نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ
الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا

व इज़िस्तस्क़ा मूसा लिक़ौमिही फ़-क़ुल्नज़्रिब् बिअ़साकल् ह-ज-र, फ़न्फ़-जरत् मिन्हुस्-नता अ़श्र-त अ़ैनन्, क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम् मश्र-बहुम्, कुलू वश्रबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन **(60)** व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन्-नस्बि-र अ़ला तआमिंव्वाहिदिन् फ़द्अु लना रब्ब-क युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु

और फ़ैसले की चीज़,[7] इस उम्मीद पर कि तुम राह पर चलते रहो। **(53)** और (वह ज़माना याद करो) जब मूसा ने फ़रमाया अपनी क़ौम से कि ऐ मेरी क़ौम! बेशक तुमने अपना बड़ा नुक़सान किया, अपनी इस गौसाला (को पूजने) की तजवीज़ से, सो तुम अब अपने ख़ालिक़ की तरफ़ मुतवज्जह हो, फिर बाज़ आदमी बाज़ को क़त्ल करो।[1] यह (अ़मल करना) तुम्हारे लिए बेहतर होगा तुम्हारे ख़ालिक़ के नज़दीक, फिर हक़ तआ़ला तुम्हारे हाल पर (अपनी इनायत से) मुतवज्जह हुए, बेशक वह तो ऐसे ही हैं कि तौबा क़बूल कर लेते हैं और इनायत फ़रमाते हैं। **(54)** और जब तुम लोगों ने (यूँ) कहा कि ऐ मूसा! हम हरगिज़ न मानेंगे तुम्हारे कहने से यहाँ तक कि हम (ख़ुद) देख लें अल्लाह तआ़ला को खुले तौर पर, सो (इस गुस्ताख़ी पर) आ पड़ी तुमपर कड़क बिजली और तुम (उसका आना) अपनी आँखों से देख रहे थे। **(55)** फिर हमने तुमको ज़िन्दा कर उठाया तुम्हारे मर जाने के बाद, इस उम्मीद पर कि तुम एहसान मानोगे। **(56)** और साया डालने वाला किया हमने तुमपर बादल को, (तीह के मैदान में) और (ग़ैब के ख़ज़ाने से) पहुँचाया हमने तुम्हारे पास तुरन्जबीन और बटेरें। खाओ नफ़ीस चीज़ों से जो कि हमने तुमको दी हैं, और (इससे) उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया, लेकिन अपना ही नुक़सान करते थे।[2] **(57)** और जब हमने हुक्म किया कि तुम लोग उस आबादी के अन्दर दाख़िल हो, फिर खाओ उस (की चीज़ों में) से जिस जगह तुम रग़बत करो बेतकल्लुफ़ी से, और दरवाज़े में दाख़िल होना (आ़जिज़ी से) झुके-झुके और (ज़बान से) कहते जाना कि तौबा है (तौबा है)। हम माफ़ कर देंगे तुम्हारी ख़ताएँ और अभी उसपर और ज़्यादा देंगे दिल से नेक काम करने वालों को। **(58)** सो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक और कलिमा जो ख़िलाफ़ था उस कलिमे के जिस (के कहने) की उनसे फ़रमाइश की गई थी, इसपर हमने नाज़िल की उन ज़ालिमों पर एक आसमानी आफ़त, इस वजह से कि वे नाफ़रमानी करते थे।[3] **(59)** ❖

और (वह ज़माना याद करो) जब (हज़रत) मूसा ने पानी की दुआ़ माँगी अपनी क़ौम के वास्ते, इसपर हमने (मूसा को) हुक्म दिया कि अपनी इस लाठी को फ़लाँ पत्थर पर मारो, पस फ़ौरन उससे फूट निकले बारह चश्मे (और बारह ही ख़ानदान थे बनी इसराईल के, चुनाँचे) मालूम कर लिया हर-हर शख़्स ने अपने पानी पीने की जगह को। खाओ और (पीने को) पियो अल्लाह के रिज़्क़ से और (दरमियाना दर्जे की) हद से मत निकलो फ़साद (व फ़ितना) करते हुए मुल्क में।[4] **(60)** और जब तुम लोगों ने (यूँ) कहा कि ऐ मूसा (रोज़ के रोज़) हम एक ही क़िस्म के खाने

---

1. यह बयान है उस तरीक़े का जो उनकी तौबा के लिए तजवीज़ हुआ, यानी मुजरिम लोग क़त्ल किए जाएँ।

2. ये दोनों क़िस्से वादी-ए-तीह में हुए, तीह के मायने हैं सरगर्दानी (हैरानी व परेशानी)।

3. वह ख़िलाफ़ कलिमा यह था कि "हित्ततुन्" जिसके मायने तौबा की जगह के हैं, इसकी जगह मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में "हब्बतुन् फ़ी शअ़्रतिन्" यानी 'ग़ल्ला जौ के दरमियान' कहना शुरू कर दिया, और वह आसमानी आफ़त ताऊन था।

4. यह क़िस्सा वादी-ए-तीह में हुआ, वहाँ प्यास लगी तो पानी माँगा, मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की तो एक ख़ास पत्थर से सिर्फ़ लाठी के मारने से बारह चश्मे अल्लाह की क़ुदरत से निकल पड़े, और खाने से मुराद "मन्न" व "सल्वा" का खाना है, और पीने से यही पानी पीना मुराद है। और फ़साद व फ़ितना फ़रमाया नाफ़रमानी और अहकाम के छोड़ने को।

मिम्-बक़्लिहा व क़िस्सा-इहा व फ़ूमिहा व अ़-दसिहा व ब-सलिहा, क़ा-ल अ-तस्तब्दिलूनल्लज़ी हु-व अद्ना बिल्लज़ी हु-व ख़ैरुन्, इह्बितू मिस्रन् फ़-इन्-न लकुम् मा सअल्तुम, व ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु वल्मस्क-नतु व बाऊ बि-ग़-ज़बिम्-मिनल्लाहि, ज़ालि-क बिअन्न-हुम् कानू यक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्-नबिय्यी-न बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, ज़ालि-क बिमा अ़सव्-व कानू यअ़्तदून (61) ❖

इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वन्नसारा वस्साबिईन मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल् -आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़-लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम वला हुम् यह्ज़नून (62) व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् व र-फ़अ़्ना फ़ौ-क़कुमुत्तू-र ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (63) सुम्-म तवल्लैतुम् मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क फ़लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू लकुन्तुम् मिनल् ख़ासिरीन (64) व लक़द् अ़लिम्तुमुल्लज़ीनअ़्तदौ मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ़क़ुल्ना लहुम् कूनू क़ि-र-दतन् ख़ासिईन (65) फ़-जअ़ल्नाहा नकालल्लिमा बै-न यदैहा व मा ख़ल्फ़हा व मौअि-ज़तल् लिल्मुत्तक़ीन (66) व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही इन्नल्ला-ह यअ़्मुरुकुम् अन् तज़्बहू ब-क़-रतन्, क़ालू अ-तत्तख़िज़ुना हुज़ुवन्, क़ा-ल अऊज़ु बिल्लाहि अन् अकू-न मिनल्जाहिलीन (67) क़ालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य, क़ा-ल

الم ١٠ البقرة

قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ اهْبِطُوا
مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ
وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا
يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَ ع
الصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾
وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم
بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُم مِّن
بَعْدِ ذَٰلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنتُم مِّنَ
الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنكُمْ فِي السَّبْتِ
فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ
لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا
هُزُوًا قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ
لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا

منزل ١

पर कभी न रहेंगे, आप हमारे वास्ते अपने परवर्दिगार से दुआ़ करें कि वह हमारे लिए ऐसी चीज़ें पैदा करें जो ज़मीन में उगा करती हैं, साग (हुआ) ककड़ी (हुई) गेहूँ (हुआ) मसूर (हुई) और प्याज़ (हुई) आपने फ़रमायाः क्या तुम बदले में लेना चाहते हो अदना दर्जे की चीज़ों को ऐसी चीज़ के मुक़ाबले में जो आला दर्जे की है। किसी शहर में (जाकर) उतरो, (वहाँ) ज़रूर तुमको वे चीज़ें मिलेंगी जिनकी तुम दरख़्वास्त करते हो, और जम गई उनपर ज़िल्लत और पस्ती (कि दूसरों की निगाह में क़द्र और खुद उनमें हिम्मत व जुर्रत न रही) और मुस्तहिक़ हो गए अल्लाह के ग़ज़ब के।[1] (और) यह इस वजह से (हुआ) कि वे लोग इनकारी हो जाते थे अहकामे इलाही के और क़त्ल कर दिया करते थे पैग़म्बरों को नाहक़ (और दूसरे) यह इस वजह से हुआ कि उन लोगों ने इताअ़त न की और (इताअ़त के) दायरे से निकल निकल जाते थे। **(61)** ❖

यह तहक़ीक़ी बात है कि मुसलमान और यहूदी और नसारा ''यानी ईसाई'' और फ़िर्क़ा साबिईन (इन सबमें) जो शख़्स यक़ीन रखता हो अल्लाह तआ़ला (की ज़ात और सिफ़ात) पर और क़ियामत के दिन पर, और कारगुज़ारी अच्छी करे, ऐसों के लिए उनका अज्र भी है उनके परवर्दिगार के पास, और (वहाँ जाकर) किसी तरह का अन्देशा भी नहीं उनपर और न वे ग़मज़दा होगें।[2] **(62)** और जब हमने तुमसे क़ौल व क़रार लिया (कि तौरात पर अ़मल करेंगे) और हमने तूर पहाड़ को उठाकर तुम्हारे ऊपर (बिलकुल सामने मुक़ाबिल में) लटका दिया कि (जल्दी) क़बूल करो जो किताब हमने तुमको दी है मज़बूती के साथ, और याद रखो जो (अहकाम) उसमें हैं जिससे उम्मीद है कि तुम मुत्तक़ी बन जाओ। **(63)** फिर तुम इस क़ौल व क़रार के बाद भी (उससे) फिर गए, सो अगर तुम लोगों पर ख़ुदा तआ़ला का फ़ज़्ल और रहम न होता तो ज़रूर तुम (फ़ौरन) तबाह (और हलाक) हो जाते। **(64)** और तुम जानते ही हो उन लोगों का हाल जो तुममें से (शरीअ़त की) हद से निकल गए थे, (उस हुक्म के) बारे में (जो) शनिवार के दिन के (मुताल्लिक़ था) सो हमने उनको कह दिया कि तुम बन्दर ज़लील बन जाओ। **(65)** फिर हमने उसको एक सबक़ (हासिल किए जाने वाला वाक़िआ़) बना दिया उन लोगों के लिए भी जो उस क़ौम के ज़माने के लोग थे और उन लोगों के लिए भी जो बाद के ज़माने में आते रहे, और नसीहत का ज़रिया (बनाया ख़ुदा तआ़ला से) डरने वालों के लिए।[3] **(66)** और (वह ज़माना याद करो) जब मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि हक़ तआ़ला तुमको हुक्म देते हैं कि तुम एक बैल ज़िब्ह करो। वे लोग कहने लगे कि आया आप हमको मस्ख़रा बनाते हैं। (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमायाः मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ जो मैं ऐसी जहालत वालों जैसा काम करूँ।[4] **(67)** वे

---

1. ज़िल्लत व आ़जिज़ी में से यह भी है कि यहूदियों से हुकूमत क़ियामत के क़रीब होने तक के लिए छीन ली गई।
2. क़ानून का हासिल ज़ाहिर है कि जो शख़्स पूरी इताअ़त एतिक़ाद और आमाल में इख़्तियार करेगा, चाहे वह पहले से कैसा ही हो, हमारे यहाँ मक़बूल और उसकी ख़िदमत क़ाबिले क़द्र है। मतलब यह हुआ कि जो मुसलमान हो जाएगा अज्र व आख़िरत में नजात का हक़दार होगा।
3. बनी इसराईल के लिए शनिवार का दिन अ़ज़मत वाला और इबादत के लिए मुक़र्रर था और मछली का शिकार भी इस दिन मना था। ये लोग समुद्र के किनारे आबाद थे, मछली के शौक़ीन हज़ार जाल डालकर शिकार करना था सो किया, उसपर अल्लाह तआ़ला का यह अ़ज़ाब शक्ल को बिगाड़ देने का नाज़िल हुआ और तीन दिन के बाद वे सब मर गए।
4. बनी इसराईल में एक ख़ून हो गया था, लेकिन उस वक़्त क़ातिल का पता न लगा था। बनी इसराईल ने मूसा अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया कि हम चाहते हैं कि क़ातिल का पता लगे। आपने अल्लाह के हुक्म से एक बैल के ज़िब्ह करने का हुक्म फ़रमाया। इसपर उन्होंने अपनी फ़ितरत के मुवाफ़िक़ हुज्जतें निकालना शुरू कीं।

इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल्ला-फ़ारिज़ुवं-व ला बिक्रुन्, अ़वानुम् बै-न ज़ालि-क, फ़फ़्अ़लू मा तुअ्मरून **(68)** क़ालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा लौनुहा, क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुन् सफ़रा-उ फ़ाक़िअुल् लौनुहा तसुर्रुन्नाज़िरीन **(69)** क़ालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य इन्नल् ब-क़-र तशाब-ह अ़लैना, व इन्ना इन्शा- अल्लाहु लमुह्तदून **(70)** क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल् ला ज़लूलुन् तसीरुल्-अर्-ज़ व ला तस्क़िल्-हर्-स मुसल्ल-मतुल्-ला शिय-त फ़ीहा, क़ालुल्आ-न जिअ्-त बिल्हक़्क़ि, फ़-ज़-बहूहा व मा कादू यफ़्अ़लून **(71)** ❖

व इज़् क़तल्तुम् नफ़्सन् फ़द्दारअ्तुम् फ़ीहा, वल्लाहु मुख़्रिजुम्-मा कुन्तुम् तक्तुमून **(72)** फ़-क़ुल्नज़्रिबूहु बि-बअ्ज़िहा, कज़ालि-क युह्यिल्लाहुल्-मौता व युरीकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून **(73)** सुम्-म क़सत् क़ुलूबुकुम् मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क फ़हि-य कल्हिजा-रति औ अशद्दु क़स्वतन्, व इन्-न मिनल्-हिजारति लमा य-तफ़ज्जरु मिन्हुल्-अन्हारु, व इन्-न मिन्हा लमा यश्शक़्क़क़ु फ़-यख़्रुजु मिन्हुल्मा-उ, व इन्-न मिन्हा लमा यह्बितु मिन् ख़श्यतिल्लाहि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून **(74)** अ-फ़तत्मअ़ू-न अंय्युअ्मिनू लकुम् व क़द् का-न फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यस्मअ़ू-न कलामल्लाहि सुम्-म युहर्रिफ़ूनहू मिम्-बअ़्दि मा अ-क़लूहु व हुम् यअ्लमून **(75)** व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न

فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا
بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ اِنْ
شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ
تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ قَالُوا
الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاِذْ
قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ
تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْىِ اللّٰهُ
الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِىَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ
الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ
مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا
اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ
وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ
مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

लोग कहने लगे कि आप दरख़्वास्त कीजिए अपने रब से कि हमसे बयान कर दे कि उस (बैल) की सिफ़तें क्या हैं। आपने फ़रमाया कि वह यह फ़रमाते हैं कि वह ऐसा बैल हो कि न बिलकुल बूढ़ा हो न बहुत बच्चा हो, (बल्कि) पट्ठा हो, दोनों उम्रों के दरमियान में, सो अब (ज़्यादा हुज्जत मत कीजियो बल्कि) कर डालो जो कुछ तुमको हुक्म मिला है।[1] **(68)** कहने लगे कि (अच्छा यह भी) दरख़्वास्त कर दीजिए हमारे लिए अपने रब से कि हमसे यह भी बयान कर दें कि उसका रंग कैसा हो। आपने फ़रमाया कि हक़ तआ़ला यह फ़रमाते हैं कि वह एक ज़र्द रंग का बैल हो, जिसका रंग तेज़ ज़र्द ''यानी तेज़ पीला'' हो कि देखने वालों को अच्छा लगता हो। **(69)** कहने लगे कि (अबकी बार और) हमारी ख़ातिर अपने रब से दरियाफ़्त कर दीजिए कि हमसे बयान कर दें कि उसकी ख़ूबियाँ और सिफ़तें क्या-क्या हों, क्योंकि हमको उस बैल में (किसी क़द्र) इशतिबाह ''यानी सिफ़तें पहचानने में शक व शुब्हा'' है, और हम ज़रूर इन्शा-अल्लाह तआ़ला (अबकी बार) ठीक समझ जाएँगे। **(70)** मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने जवाब दिया कि हक़ तआ़ला यूँ फ़रमाते हैं कि वह न तो हल में चला हुआ हो, जिससे ज़मीन जोती जाए और न उससे खेती को पानी दिया जाए (ग़रज़ हर क़िस्म के ऐब से) सालिम हो और उसमें कोई दाग़ न हो। (यह सुनकर) कहने लगे कि अब आपने पूरी बात फ़रमाई। फिर उसको ज़िब्ह किया और (उनकी हुज्जतों से बज़ाहिर) करते हुए मालूम न होते थे। **(71)** ❖

और जब तुम लोगों (में से किसी) ने एक आदमी का ख़ून कर दिया फिर एक-दूसरे पर उसको डालने लगे, और अल्लाह को उस मामले का ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था, जिसको तुम पोशीदा रखना चाहते थे। **(72)** इसलिए हमने हुक्म दिया कि उसको उसके कोई से टुकड़े से छुआ दो, इसी तरह हक़ तआ़ला (क़ियामत में) मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगे, और अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुदरत के नज़ारे तुमको दिखलाते हैं, इसी उम्मीद पर कि तुम अ़क़्ल से काम लिया करो।[2] **(73)** ऐसे-ऐसे वाक़िआ़त के बाद तुम्हारे दिल फिर भी सख़्त ही रहे तो (यूँ कहना चाहिए कि) उनकी मिसाल पत्थर जैसी है, बल्कि सख़्ती में (पत्थर से भी) ज़्यादा सख़्त। और कुछ पत्थर तो ऐसे हैं जिनसे (बड़ी-बड़ी) नहरें फूटकर चलती हैं और उन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं कि जो फट जाते हैं, फिर उनसे (अगर ज़्यादा नहीं तो थोड़ा ही) पानी निकल आता है, और उन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं जो ख़ुदा तआ़ला के ख़ौफ़ से ऊपर से नीचे लुढ़क आते हैं, और हक़ तआ़ला तुम्हारे आमाल से बेख़बर नहीं हैं।[3] **(74)** (ऐ मुसलमानो!) क्या अब भी तुम उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएँगे, हालाँकि इनमें के कुछ लोग ऐसे गुज़रे हैं कि अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसको कुछ का कुछ कर डालते थे (और) उसको समझने के बाद (ऐसा करते) और जानते थे।[4] **(75)** और जब मिलते हैं (मुनाफ़िक़ीन यहूद) मुसलमानों से तो (उनसे तो) कहते हैं कि हम (भी) ईमान ले आए हैं, और

1. हदीस में है कि अगर वे हुज्जतें न करते तो इतनी क़ैदें (शर्तें) उनके ज़िम्मे न होतीं, जो बैल ज़िब्ह कर देते काफ़ी हो जाता।

2. उस क़त्ल किए गए शख़्स ने ज़िन्दा होकर अपने क़ातिल का नाम बतला दिया और फ़ौरन फिर मर गया।

3. इस मक़ाम पर इन पत्थरों की तीनों क़िस्मों में तरतीब निहायत लतीफ़ और जो फ़ायदा पहुँचाना मक़सूद है उसमें निहायत बलीग़ है। यानी कुछ पत्थरों से मख़्लूक़ को नहरों का बड़ा नफ़ा पहुँचता है, उनके दिल ऐसे भी नहीं। कुछ पत्थरों से थोड़े पानी का कम नफ़ा पहुँचता है, लेकिन उनके दिल उनसे भी सख़्त हैं, और कुछ पत्थरों से अगरचे किसी को नफ़ा नहीं पहुँचता मगर ख़ुद तो उनमें एक असर है, मगर उनके दिलों में असर क़बूल करने की यह मामूली कैफ़ियत भी नहीं।

4. मतलब यह कि जो लोग ऐसे निडर और नफ़्सानी ग़रज़ों के बन्धक हों, वे किसी के कहने से कब बाज़ आने वाले और किसी की कब सुनने वाले हैं।

आमनू क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़ला बअ़्ज़ुहुम् इला बअ़्ज़िन् क़ालूं अतुहद्दिसू-नहुम् बिमा फ़-तहल्लाहु अ़लैकुम् लियुहाज्जूकुम् बिही अ़िन्-द रब्बिकुम, अ-फ़ला तअ़्क़िलून **(76)** अ-व ला यअ़्लमू-न अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ़्लिनून **(77)** व मिन्हुम् उम्मिय्यू-न ला यअ़्लमूनल् किता-ब इल्ला अमानिय्-य व इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून ● **(78)**

फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न यक्तुबूनल्-किता-ब बिऐदीहिम, सुम्-म यक़ूलू-न हाज़ा मिन् अ़िन्दिल्लाहि लियश्तरू बिही स-मनन् क़लीलन्, फ़वैलुल्लहुम् मिम्मा क-तबत् ऐदीहिम व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून **(79)** व क़ालू लन् तमस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम् मअ़्दू-दतन्, क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् अ़िन्दल्लाहि अ़ह्दन् फ़-लंय्-युख़्लिफ़ल्लाहु अ़ह्दहु अम् तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून **(80)** बला मन् क-स-ब सय्यि-अतंव्-व अहातत् बिही ख़तीअतुहू फ़-उलाइ-क अस्हाबुन्-नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(81)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(82)** ❖

البقرة۲ | ۱۲ | الٓمّٓ

قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ
بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۶﴾ اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا
يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ
وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿۷۸﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ
بِاَيْدِيْهِمْ ۤ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ
مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ۭ
قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ
اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۰﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً
وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْۗـــــَٔـتُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰۗىِٕكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۸۲﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ
بَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۣ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا
وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ

منزل

व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्राई-ल ला तअ़्बुदू-न इल्लल्ला-ह, व बिल्वालिदैनि इह्सानंव्-व ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि व क़ूलू लिन्नासि हुस्नंव्-व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त, सुम्-म तवल्लैतुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्कुम् व अन्तुम्

जब तन्हाई में जाते हैं ये बाज़े दूसरे कुछ (ऐलानिया) यहूदियों के पास तो वे उनसे कहते हैं कि तुम मुसलमानों को वो बातें बतला देते हो जो अल्लाह ने तुमपर ज़ाहिर कर दी हैं, तो नतीजा यह होगा कि वे लोग तुमको हुज्जत में मग़लूब कर देंगे कि यह मज़मून अल्लाह के पास (से) है, क्या तुम (इतनी मोटी बात) नहीं समझते। **(76)** क्या उनको इल्म नहीं है इसका कि हक़ तआ़ला को सब ख़बर है उन चीज़ों की भी जिनको वे पोशीदा रखते हैं **(77)** और उनकी भी जिनका वे इज़्हार कर देते हैं। और उन (यहूदियों) में बहुत से अनपढ़ (भी) हैं जो किताबी इल्म नहीं रखते, लेकिन (बग़ैर सनद के) दिल ख़ुश करने वाली बातें (बहुत याद हैं) और वे लोग और कुछ नहीं, ख़्यालात पका लेते हैं। ● **(78)** तो बड़ी ख़राबी उनकी होगी जो लिखते हैं (अदल-बदलकर) किताब (तौरात) को अपने हाथों से, फिर कह देते हैं कि यह (हुक्म) ख़ुदा की तरफ़ से है। ग़र्ज़ (सिर्फ़) यह होती है कि इस ज़रिये से कुछ नक़्द किसी क़द्र थोड़ा वसूल कर लें। सो बड़ी ख़राबी (पेश) आएगी उनको उसकी बदौलत (भी) जिसको उनके हाथों ने लिखा था और बड़ी ख़राबी होगी उनको उसकी बदौलत (भी) जिसको वे वसूल कर लिया करते थे। **(79)** और यहूदियों ने यह भी कहा कि हरगिज़ हमको (दोज़ख़ की) आग छुएगी (भी) नहीं, मगर (बहुत) थोड़े दिन जो (उँगलियों पर) गिन लिए जा सकें। आप यूँ फ़रमा दीजिएः क्या तुम लोगों ने हक़ तआ़ला से (इसके मुताल्लिक़) कोई मुआ़हदा ले लिया है, जिसमें अल्लाह तआ़ला अपने मुआ़हदे के ख़िलाफ़ न करेंगे, या अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसकी कोई इल्मी सनद अपने पास नहीं रखते।[1] **(80)** क्यों नहीं? जो शख़्स जान बूझकर बुरी बातें करता रहे और उसको उसकी ख़ता (और क़ुसूर इस तरह) घेर ले (कि कहीं नेकी का असर तक न रहे) सो ऐसे लोग दोज़ख़ वाले होते हैं, (और) वे उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे।[2] **(81)** और जो लोग (अल्लाह और रसूल पर) ईमान लाएँ और नेक काम करें, ऐसे लोग जन्नत वाले होते हैं (और) वे उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। **(82)** ❖

और (वह ज़माना याद करो) जब लिया हमने (तौरात में) क़ौल व क़रार बनी इसराईल से कि इबादत मत करना (किसी की) सिवाय अल्लाह तआ़ला के, और माँ-बाप की अच्छी तरह ख़िदमत गुज़ारी करना और रिश्तेदारों व क़रीबी लोगों की भी, और यतीम बच्चों की भी और ग़रीब मोहताजों की भी, और आ़म लोगों से बात भी अच्छी तरह (अच्छे अख़्लाक़ से) करना, और पाबन्दी रखना नमाज़ की, और अदा करते रहना ज़कात, फिर तुम (क़ौल व क़रार करके) उससे फिर गए सिवाय कुछ के, और तुम्हारी तो मामूली आ़दत है इक़रार करके हट जाना। **(83)** और (वह ज़माना भी याद करो) जब हमने तुमसे यह क़ौल व क़रार (भी) लिया कि आपस में ख़ून मत बहाना और एक-दूसरे को वतन से मत निकालना, फिर तुमने इक़रार भी कर लिया और (इक़रार भी इशारे में नहीं बल्कि ऐसा

1. यह मामला तहक़ीक़ी है कि अगर मोमिन गुनाहगार हो तो अगरचे गुनाहों की वजह से दोज़ख़ में अ़ज़ाब पाए, लेकिन ईमान की वजह से हमेशा दोज़ख़ में न रहेगा। कुछ मुद्दत के बाद नजात हो जाएगी।

2. कुफ़्र की वजह से कोई नेक अ़मल मक़बूल नहीं होता, बल्कि अगर कुछ कुफ़्र के पहले के आमाल हों तो वे भी बेकार और ज़ाया हो जाते हैं। इस वजह से कुफ़्फ़ार में सब बदी ही बदी होगी, ब-ख़िलाफ़ ईमान वालों के कि अव्वल तो उनका ईमान ख़ुद एक सबसे बड़ा नेक अ़मल है, दूसरे और आमाल भी उनके आमाल नामे में दर्ज होते हैं, इसलिए वे नेकी के असर से ख़ाली नहीं।

मुअ्रिज़ून **(83)** व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् ला तस्फ़िकू-न दिमा-अकुम् व ला तुख़्रिजू-न अन्फ़ु-सकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्-म अक़्रर्तुम् व अन्तुम् तश्हदून **(84)** सुम्-म अन्तुम् हा-उला-इ तक़्तुलू-न अन्फ़ु-सकुम् व तुख़्रिजू-न फ़रीक़म् मिन्कुम् मिन् दियारिहिम तज़ाहरू-न अ़लैहिम बिल्इस्मि वल्-अुद्वानि, व इंय्यअ्तूकुम् उसारा तुफ़ादूहुम् व हु-व मुहर्रमुन् अ़लैकुम् इख़्राजुहुम, अ-फ़-तुअ्मिनू-न बिबअ्ज़िल्-किताबि व तक्फ़ुरू-न बिबअ्ज़िन् फ़मा जज़ा-उ मंय्यफ़्अ़लु ज़ालि-क मिन्कुम् इल्ला ख़िज़्युन् फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौमल्-क़ियामति युरद्दू-न इला अशद्दिल्-अ़ज़ाबि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून **(85)** उला-इकल्लज़ीनश्-त-र-वुल्हयातद्दुन्या बिल्आख़िरति फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल् अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्सरून **(86)** ❖

व लक़द् आतैना मूसल्-किता-ब व क़फ़्फ़ैना मिम्-बअ्दिही बिर्रुसुलि व आतैना अ़ीसब्-न मर्यमल्बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बिरूहिल्क़ुदुसि, अ-फ़कुल्लमा जाअकुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुस्तक्बर्तुम् फ़-फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् व फ़रीक़न् तक़्तुलून **(87)** व क़ालू क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन्, बल् ल-अ़-नहुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम फ़-क़लीलम्मा युअ्मिनून **(88)** व लम्मा जाअहुम् किताबुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़हुम् व कानू मिन् क़ब्लु यस्तफ़्तिहू-न अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू, फ़-लम्मा जा-अहुम् मा अ़-रफ़ू क-फ़रू

الۤمّ ١٣ البقرة ٢

وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ
وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ
تَشْهَدُوْنَ ۝ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ
فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ
اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَآءُ
مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ ع
وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ
وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ بِمَا لَا تَهْوٰٓى
اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ۝ وَ
قَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَ
كَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَمَّا جَآءَهُمْ

منزل ١

❖ रु. 10/4/10

साफ़ जैसे) तुम शहादत देते हो। **(84)** फिर तुम यह (आँखों के सामने मौजूद ही) हो (कि) क़त्ल व क़िताल भी करते हो और एक-दूसरे को वतन से भी निकालते हो (इस तौर पर कि) उन अपनों के मुक़ाबले में (उनकी मुख़ालिफ़ क़ौमों की) इम्दाद करते हो, गुनाह और ज़ुल्म के साथ, और अगर उन लोगों में से कोई गिरफ़्तार होकर तुम तक पहुँच जाता है तो ऐसों को कुछ ख़र्च कर कराकर रिहा करा देते हो, हालाँकि यह बात (भी मालूम) है कि तुमको उनका वतन से निकाल देना भी मना है।[1] क्या (पस यूँ कहो कि) किताब (तौरात) के बाज़ "यानी कुछ" (अहकाम) पर तुम ईमान रखते हो और बाज़ पर ईमान नहीं रखते, सो और क्या सज़ा हो ऐसे शख़्स की जो तुम लोगों में से ऐसी हरकत करे, सिवाय रुस्वाई के दुनियावी ज़िन्दगी में और क़ियामत के दिन को बड़े सख़्त अ़ज़ाब में डाल दिए जाएँ, और अल्लाह तआ़ला (कुछ) बेख़बर नहीं है तुम्हारे (बुरे) आमाल से। **(85)** ये वे लोग हैं कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी (के लुत्फ़, और मज़ों) को ले लिया है आख़िरत (की नजात) के बदले में, सो न तो उनकी सज़ा में (कुछ) कमी की जाएगी और न कोई उनकी तरफ़दारी (पैरवी) करने पाएगा। **(86)** ❖

और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी, और (फिर) उनके बाद एक के बाद एक पैग़म्बरों को भेजते रहे, और फिर हमने ईसा इब्ने मरियम को (नुबुव्वत की) वाज़ेह दलीलें अ़ता फ़रमाईं और हमने रूहुल्-क़ुदुस से ताईद दी, क्या जब कभी (भी) कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास ऐसे अहकाम लाए जिनको तुम्हारा दिल न चाहता था, (जब ही) तुमने तकब्बुर करना शुरू कर दिया, सो बाज़ों को तो तुमने झूठा बतलाया और बाज़ों को (बे-धड़क) क़त्ल ही कर डालते थे। **(87)** और वे (यहूदी फ़ख़्र के तौर पर) कहते हैं कि हमारे दिल महफ़ूज़ हैं, बल्कि उनके कुफ़्र के सबब उनपर ख़ुदा की मार है, सो बहुत ही थोड़ा-सा ईमान रखते हैं। **(88)** और जब उनको एक ऐसी किताब पहुँची (यानी क़ुरआन) जो अल्लाह की तरफ़ से है (और) उसकी (भी) तस्दीक़ करने वाली है जो पहले से उनके पास है, (यानी तौरात) हालाँकि इसके पहले वे (ख़ुद) बयान किया करते थे कुफ़्फ़ार से। फिर जब वह चीज़ आ पहुँची जिसको वे (ख़ूब जानते) पहचानते हैं तो उसका (साफ़) इनकार कर बैठे। सो (बस) ख़ुदा की मार हो ऐसे इनकार करने वालों पर। **(89)** वह हालत (बहुत ही) बुरी है जिसको इख़्तियार करके वे अपनी जानों को छुड़ाना चाहते हैं, (और वह हालत) यह (है) कि कुफ़्र करते हैं ऐसी चीज़ का जो हक़ तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई, सिर्फ़ (इसी) ज़िद पर कि

1. इस बारे में उनपर तीन हुक्म वाजिब थे। अव्वल क़त्ल न करना, दूसरे न निकालना, तीसरे अपनी क़ौम में से किसी को गिरफ़्तार व बन्द देखें तो रुपया ख़र्च करके छुड़ा देना। सो उन लोगों ने पहले और दूसरे हुक्म को तो ज़ाया कर दिया था और तीसरे की पाबन्दी किया करते थे। जिन मुख़ालिफ़ क़ौमों कि इम्दाद का ज़िक्र फ़रमाया है, मुराद उन क़ौमों से औस और ख़ज़्रज हैं, कि औस बनू क़ुरैज़ा की मुवाफ़क़त में बनू नज़ीर के मुख़ालिफ़ थे और ख़ज़्रज बनू नज़ीर की मुवाफ़क़त में बनू क़ुरैज़ा के मुख़ालिफ़ थे। गुनाह और ज़ुल्म दो लफ़्ज़ लाने में इशारा हो सकता है कि इसमें दो हक़ ज़ाया होते हैं, अल्लाह का हक़ भी कि हुक्मे इलाही की तामील न की, और बन्दे का हक़ भी कि दूसरे को तकलीफ़ पहुँची।

बिही फ़-लअ़्नतुल्लाहि अ़लल्-काफ़िरीन **(89)** बिअ्-स-मश्तरौ बिही अन्फ़ु-सहुम् अंय्यक्फ़ुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग़्यन् अंय्युनज़्ज़िलल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही फ़-बाऊ बि-ग़-ज़बिन् अ़ला ग़-ज़बिन्, व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम् मुहीन **(90)** व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु क़ालू नुअ्मिनु बिमा उन्ज़ि-ल अ़लैना व यक्फ़ुरू-न बिमा वरा-अहू, व हुवल्-हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्-लिमा म-अ़हुम, क़ुल् फ़लि-म तक़्तुलू-न अम्बिया-अल्लाहि मिन् क़ब्लु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(91)** व लक़द् जाअकुम् मूसा बिल्-बय्यिनाति सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्-अ़िज्-ल मिम्-बअ्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून **(92)** व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् व र-फ़अ्ना फ़ौ-क़कुमुत्-तू-र, ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्-वस्मअ़ू, क़ालू समिअ़्ना व अ़सैना व उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-अ़िज्-ल बिकुफ़्रिहिम, क़ुल् बिअ्समा यअ्मुरुकुम् बिही ईमानुकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(93)** क़ुल् इन् कानत् लकुमुद्-दारुल्-आख़िरतु अ़िन्दल्लाहि

الم ١٤ البقرة

تَا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ
اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۭ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۤ وَهُوَ
الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۭ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ
قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذْنَا
مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۭ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ۭ
قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۤ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۭ
قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ اِنْ
كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ
عَلٰي حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ
سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ

منزل

ख़ालि-सतम् मिन् दूनिन्नासि फ़-तमन्नवुल्मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(94)** व लंय्य-तमन्नौहु अ-बदम् बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम, वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़्ज़ालिमीन **(95)** व ल-तजिदन्नहुम् अह्रसन्नासि अ़ला हयातिन्, व मिनल्लज़ी-न अश्रकू यवद्दु अ-हदुहुम् लौ युअ़म्मरु अल्-फ़ स-नतिन्, व मा हु-व बिमुज़ह्ज़िहिही मिनल्-अ़ज़ाबि अंय्युअ़म्म-र, वल्लाहु बसीरुम् बिमा

अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से जिस बन्दे पर उसको मन्ज़ूर हो नाज़िल फ़रमाए, सो वे लोग ग़ज़ब पर ग़ज़ब के हक़दार हो गए, और इन कुफ़्र करने वालों को ऐसी सज़ा होगी जिसमें ज़िल्लत (भी) है।[1] **(90)** और जब उनसे कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उन (तमाम) किताबों पर जो अल्लाह तआ़ला ने (अनेक पैग़म्बरों पर) नाज़िल फ़रमाई हैं, तो कहते हैं कि हम (तो सिर्फ़) उस (ही) किताब पर ईमान लाएँगे जो हमपर नाज़िल की गई है, (यानी तौरात) और जितनी उसके अ़लावा हैं उन (सब) का इनकार करते हैं, हालाँकि वे भी हक़ हैं और तस्दीक़ करने वाली भी हैं उसकी जो उनके पास है (यानी तौरात की)। आप कहिए कि (अच्छा तो) फिर क्यों क़त्ल किया करते थे अल्लाह के पैग़म्बरों को इससे पहले के ज़माने में अगर तुम (तौरात पर) ईमान रखने वाले थे। **(91)** और (हज़रत) मूसा तुम लोगों के पास साफ़-साफ़ दलीलें लाए (मगर) इसपर भी तुम लोगों ने गौसाला को (माबूद) तज्वीज़ कर लिया मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के (तूर पर जाने के) बाद, और तुम सितम ढा रहे थे।[2] **(92)** और जब हमने तुम्हारा क़ौल व क़रार लिया था और तूर को तुम्हारे (सरों के) ऊपर ला खड़ा किया था, जो कुछ (अहकाम) हम तुमको देते हैं हिम्मत (और पुख़्तगी) के साथ लो और सुनो। (उस वक़्त) उन्होंने ज़बान से कह दिया कि हमने सुन लिया और हमसे अ़मल न होगा, और (वजह इसकी यह है कि) उनके दिलों में वही गौसाला जम गया था, उनके (पहले) कुफ़्र की वजह से। आप फ़रमा दीजिए कि ये आमाल बहुत बुरे हैं जिनकी तालीम तुम्हारा ईमान तुमको कर रहा है, अगर तुम ईमान वाले हो। **(93)** आप कह दीजिए कि अगर (तुम्हारे कहने के मुताबिक़) आ़लमे आख़िरत सिर्फ़ तुम्हारे लिए ही नफ़ा देने वाला है अल्लाह के पास किसी दूसरे की शिर्कत के बग़ैर तो तुम (इसकी तस्दीक़ के लिए ज़रा) मौत की तमन्ना कर (के दिखला) दो, अगर तुम सच्चे हो। **(94)** और वे हरगिज़ कभी उस (मौत) की तमन्ना न करेंगे उन (कुफ़्रिया) आमाल (की सज़ा के डर) की वजह से जो अपने हाथों समेटे हैं, और हक़ तआ़ला को ख़ूब इत्तिला है इन ज़ालिमों (के हाल) की। **(95)** और आप (तो) उनको (दुनियावी) ज़िन्दगी के (आ़म) लालची आदमियों से भी बढ़कर पाएँगे, और मुश्रिकीन से भी इनका एक-एक (शख़्स) इस हवस में है कि उसकी उम्र हज़ार साल की हो जाए, और यह चीज़ अ़ज़ाब से तो नहीं बचा सकती कि (किसी की बड़ी) उम्र हो जाए, और हक़ तआ़ला के सब सामने हैं उनके (बुरे) आमाल।[3] **(96)** ❖

---

1. एक ग़ज़ब तो कुफ़्र पर था ही, दूसरा ग़ज़ब उनके हसद पर हो गया। और अ़ज़ाब में "मुहीन" (ज़िल्लत वाले) की क़ैद से कुफ़्फ़ार को ख़ास करना हो गया, क्योंकि मोमिन गुनाहगार को अ़ज़ाब गुनाहों से पाक करने के लिए होगा।

2. "बय्यिनात" से मुराद वे दलीलें हैं जो इस क़िस्से से पहले कि उस वक़्त तक तौरात न मिली थी, मूसा अ़लैहिस्सलाम के सच्चा होने पर क़ायम हो चुकी थीं, जैसे 'अ़सा' (लाठी) और 'चमकता हुआ हाथ' और 'दरिया का फटना' और इनके अ़लावा और मोजिज़े।

3. बावजूद आख़िरत के एतिक़ाद के लम्बी उम्र की तमन्ना साफ़ दलील है कि यह आख़िरत की नेमतों के हक़दार होने और अपने ख़ास होने का दावा ही दावा है, दिल में ख़ूब समझते हैं कि वहाँ पहुँचकर जहन्नम ही नसीब होना है। इसलिए जब तक बचे रहें तब तक ही सही।

यअ्मलून (96) ❖

क़ुल् मन् का-न अ़दुव्वल्लिजिब्री-ल फ़-इन्नहू नज़्ज़-लहू अ़ला क़ल्बि-क बि-इज़्निल्लाहि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व हुदंव्-व बुशरा लिल्-मुअ्मिनीन (97) मन् का-न अ़दुव्वल्-लिल्लाहि व मला-इ-कतिही व रुसुलिही व जिब्री-ल व मीका-ल फ़-इन्नल्ला-ह अ़दुव्वुल्-लिल्काफ़िरीन (98) व लक़द् अन्ज़ल्ना इलै-क आयातिम्- बय्यिनातिन् व मा यक्फ़ुरु बिहा इल्लल्-फ़ासिक़ून (99) अ-व कुल्लमा अ़ा-हदू अ़ह्दन् न-ब-ज़हू फ़रीक़ुम् मिन्हुम, बल् अक्सरुहुम् ला युअ्मिनून (100) व लम्मा जाअहुम् रसूलुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्-लिमा म-अ़हुम् न-ब-ज़ फ़रीक़ुम् मिनल्-लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब किताबल्लाहि वरा-अ ज़ुहूरिहिम् क-अन्नहुम् ला यअ्लमून (101) वत्त-बअू मा तत्लुश्-शयातीनु अ़ला मुल्कि सुलैमा-न व मा क-फ़-र सुलैमानु व लाकिन्नश्शयाती-न क-फ़रू युअ़ल्लिमूनन्नासस्सिह्-र, व मा उन्ज़ि-ल अ़लल् म-लकैनि बिबाबि-ल हारू-त व मारू-त, व मा युअ़ल्लिमानि मिन् अ-हदिन् हत्ता यक़ूला इन्नमा नह्नु फ़ित्नतुन् फ़ला तक्फ़ुर्, फ़-य-तअ़ल्लमू-न मिन्हुमा मा युफ़र्रिक़ू-न बिही बैनल्-मर्इ व ज़ौजिही, व मा हुम् बिज़ार्री-न बिही मिन् अ-हदिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व य-तअ़ल्लमू-न मा यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अुहुम, व लक़द् अ़लिमू ल-मनिश्तराहु मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् ख़लाक़िन्, व

الم ١٥ البقرة ٢

بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۞ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى
قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۞ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ
وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ۞ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۭ
بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ۞ اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا
نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۞ وَلَمَّا جَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ
وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ
السِّحْرَ ۤ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۭ
وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۭ
فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۭ وَمَا هُمْ
بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ
وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۭ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ڜ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۞

منزل ١

आप (इनसे) यह कहिए कि जो शख़्स जिबराईल से दुश्मनी रखे, सो उन्होंने यह क़ुरआन आपके दिल तक पहुँचा दिया है अल्लाह के हुक्म से, उसकी (ख़ुद) यह हालत है कि तसदीक़ कर रहा है अपने से पहले वाली (आसमानी) किताबों की, और रहनुमाई कर रहा है और ख़ुशख़बरी सुना रहा है ईमान वालों को। **(97)** जो (कोई) शख़्स हक़ तआ़ला का दुश्मन हो और फ़रिश्तों का (हो) और पैग़म्बरों का (हो) और जिबराईल का (हो) और मीकाईल का (हो) तो अल्लाह तआ़ला दुश्मन है ऐसे काफ़िरों का।[1] **(98)** और हमने तो आपके पास बहुत-सी दलीलें खुली नाज़िल की हैं, और कोई इनकार नहीं किया करता मगर सिर्फ़ वही लोग जो नाफ़रमानी के आ़दी हैं। **(99)** क्या और जब कभी भी उन लागों ने कोई अ़हद किया होगा (ज़रूर) उसको उनमें से किसी न किसी फ़रीक़ ने नज़र-अन्दाज़ कर दिया होगा, बल्कि उनमें ज़्यादा तो ऐसे ही निकलेंगे जो (मेरे उस अ़हद का) यक़ीन ही नहीं रखते। **(100)** और जब उनके पास एक पैग़म्बर आए अल्लाह की तरफ़ से, जो तसदीक़ भी कर रहे हैं उस किताब की जो उन लोगों के पास है (यानी तौरात की)। इन अह्ले किताब में के एक फ़रीक़ ने ख़ुद उस अल्लाह की किताब ही को पीठ पीछे डाल दिया है, जैसे उनको गोया बिलकुल इल्म ही नहीं। **(101)** और उन्होंने ऐसी चीज़ का (यानी जादू का) इत्तिबा किया जिसका चर्चा किया करते थे शयातीन (यानी ख़बीस जिन्न) (हज़रत) सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) की हुकूमत के ज़माने में, और (हज़रत) सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) ने कुफ़्र नहीं किया,[2] मगर (हाँ) शयातीन कुफ़्र करते थे, और (हालत यह थी कि) आदमियों को भी (उस) जादू की तालीम किया करते थे, और उस (जादू) की भी जो कि उन दोनों फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया था शहर बाबिल में जिनका नाम हारूत व मारूत था।[3] और वे दोनों किसी को न बतलाते जब तक यह (न) कह देते कि हमारा वजूद भी एक इम्तिहान है, सो तू कहीं काफ़िर मत बन जाइयो (कि इसमें फँस जाए) सो (कुछ) लोग उन दोनों से इस क़िस्म का जादू सीख लेते थे जिसके ज़रिए से (अ़मल करके) किसी मर्द और उसकी बीवी में जुदाई पैदा कर देते थे। और ये (जादूगर) लोग उसके ज़रिए से किसी को भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते थे मगर ख़ुदा ही के (तक़दीरी) हुक्म से। और ऐसी चीज़ें सीख लेते हैं जो (ख़ुद) उनको नुक़सान पहुँचाने वाली हैं और उनको नफ़ा देने वाली नहीं हैं। और ज़रूर ये (यहूदी) भी इतना जानते हैं कि जो शख़्स इसको इख़्तियार करे ऐसे शख़्स का आख़िरत में कोई हिस्सा (बाक़ी) नहीं। और बेशक बुरी है वह चीज़ (यानी जादू व कुफ़्र) जिसमें वे लोग अपनी जान दे रहे हैं। काश उनको (इतनी) अ़क़्ल होती! **(102)** और अगर वे लोग (बजाय इसके) ईमान और तक़्वा (इख़्तियार) करते तो ख़ुदा तआ़ला के यहाँ का मुआ़वज़ा बेहतर था। काश उनको

1. बाज़े यहूदियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से यह सुनकर कि जिबराईल अ़लैहिस्सलाम वह्य लाते हैं, कहा कि उनसे तो हमारी दुश्मनी है, मशक़्क़त में डालने वाले अहकाम और डरावने वाक़िआ़त उन्हीं के हाथों आया किए हैं। मीकाईल ख़ूब हैं कि बारिश और रहमत उनसे मुताल्लिक़ है। अगर वह वह्य लाया करते तो हम मान लेते। इस आयत में इसी का रद्द है।

2. ये बेवक़ूफ़ लोग जो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ जादू की निस्बत करते थे यहूद हैं, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने बीच में उन (सुलैमान अ़लैहिस्सलाम) का बरी होना भी ज़ाहिर फ़रमा दिया।

3. इन आयतों के मुताल्लिक़ एक लम्बा-चौड़ा क़िस्सा ज़ोहरा का मशहूर है जो किसी मोतबर रिवायत से साबित नहीं।

लबिअ्-स मा शरौ बिही अन्फ़ु-सहुम, लौ कानू यअ्लमून **(102)** व लौ अन्नहुम् आमनू वत्तक़ौ ल-मसू-बतुम् मिन् अिन्दिल्लाहि ख़ैरुन्, लौ कानू यअ्लमून **(103)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़ूलू राअिना व क़ूलुन्ज़ुर्ना वस्मअू, व लिल्काफ़िरी-न अज़ाबुन् अलीम **(104)** मा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्- किताबि व लल्-मुश्रिकी-न अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैकुम् मिन् ख़ैरिम्-मिर्रब्बिकुम, वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह्मतिही मय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम **(105)** मा नन्सख़् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअ्ति बिख़ैरिम् मिन्हा औ मिस्लिहा, अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(106)** अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(107)** अम् तुरीदू-न अन् तस्अलू रसूलकुम् कमा सुइ-ल मूसा मिन् क़ब्लु, व मंय्-य-तबद्दलिल्-कुफ़्-र बिल्ईमानि फ़-क़द् ज़ल्-ल सवाअस्सबील **(108)** वद्-द कसीरुम् मिन् अह्लिल्-किताबि लौ यरुद्दूनकुम् मिम्-बअ्दि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन् ह-सदम्-मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिहिम् मिम्-बअ्दि मा तबय्य-न लहुमुल्-हक़्क़ु फ़अ्फ़ू वस्फ़हू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ▲ **(109)** व अक़ीमुस्-सला-त व आतुज़्ज़का-त, व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अिन्दल्लाहि,

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ خَيْرٌ ۖ لَّوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا
وَاسْمَعُوا ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ مَّا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَن يُنَزَّلَ عَلَيْكُم مِّنْ خَيْرٍ مِّن
رَّبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾ مَا نَنسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَا أَوْ
مِثْلِهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ
اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ
مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٧﴾ أَمْ تُرِيدُونَ أَن تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ
كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ ۗ وَمَن يَتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُم
مِّن بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم مِّن
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۖ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ
بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٩﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَ
آتُوا الزَّكَاةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ
اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ

(इतनी) अ़क़्ल होती! **(103)** ❖

ऐ ईमान वालो! तुम (लफ़्ज़) 'राअ़िना' मत कहा करो और 'उनूज़ुरना' कह दिया करो, और (इसको अच्छी तरह) सुन लीजियो, और (इन) काफ़िरों को (तो) दर्दनाक सज़ा (ही) होगी।[1] **(104)** ज़रा भी पसन्द नहीं करते काफ़िर लोग, (चाहे) उन अहले किताब में से (हों) और (चाहे) मुश्रिकीन में से, इस बात को कि तुमको किसी तरह की बेहतरी (भी) नसीब हो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से, हालाँकि अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत (व इनायत) के साथ जिसको मन्ज़ूर होता है मख़सूस फ़रमा लेते हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल (करने) वाले हैं।[2] **(105)** हम किसी आयत का हुक्म जो मौक़ूफ़ "यानी रोक देते और मुल्तवी" कर देते हैं, या उस आयत (ही) को (ज़ेहनों से) भुला देते हैं, तो हम उस आयत से बेहतर या उस आयत ही की मिसूल ले आते हैं। (ऐ एतिराज़ करने वाले!) क्या तुझको यह मालूम नहीं कि हक़ तआ़ला हर चीज़ पर क़ुदरत रखते हैं।[3] **(106)** क्या तुझको यह मालूम नहीं कि हक़ तआ़ला ऐसे हैं कि ख़ास उन्ही की है हुकूमत आसमानों की और ज़मीन की, और (यह भी समझ रखो कि) तुम्हारा हक़ तआ़ला के सिवा कोई यार व मददगार भी नहीं। **(107)** हाँ क्या तुम यह चाहते हो कि अपने रसूल से (बेजा-बेजा) दरख़्वास्तें करो, जैसा कि इससे पहले मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से भी (ऐसी-ऐसी) दरख़्वास्तें की जा चुकी हैं, और जो शख़्स बजाय ईमान लाने के कुफ़्र (की बातें) करे, बेशक वह शख़्स सीधे रास्ते से दूर जा पड़ा। **(108)** इन अह्ले किताब (यानी यहूद) में से बहुत-से दिल से यह चाहते हैं कि तुमको तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर काफ़िर कर डालें, सिर्फ़ हसद की वजह से जो कि ख़ुद उनके दिलों ही से (जोश मारता) है हक़ वाज़ेह होने के बाद। ख़ैर (अब तो) माफ़ करो और दरगुज़र करो, जब तक हक़ तआ़ला (इस मामले के मुताल्लिक़) अपना हुक्म (नया क़ानून) भेजें,[4] अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर हैं। ▲ **(109)** और (फ़िलहाल सिर्फ़) नमाज़ें पाबन्दी से पढ़े जाओ और ज़कात दिए जाओ, और जो नेक काम भी अपनी भलाई के वास्ते जमा करते रहोगे हक़ तआ़ला के पास (पहुँचकर) उसको पा लोगे, क्योंकि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब किए हुए कामों को देखभाल रहे हैं।[5] **(110)** और (यहूदी और ईसाई यूँ) कहते हैं कि जन्नत में हरगिज़ कोई न जाने पाएगा सिवाय उन लोगों के जो यहूदी हों या उन लोगों के जो ईसाई हों, यह (ख़ाली) दिल बहलाने की बातें हैं। आप कहिए कि (अच्छा) अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे

---

1. कुछ यहूदियों ने एक शरारत ईजाद की कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुज़ूर में आकर "राअ़िना" से आपको ख़िताब करते, जिसके मायने उनकी इबरानी ज़बान में बुरे हैं। और वे उसी नीयत से कहते, और अ़रबी में इसके मायने बहुत अच्छे हैं। और उस अच्छे मायने के इरादे से बाज़े मुसलमान भी हुज़ूर को इस कलिमे से ख़िताब करने लगे। इससे उन शरीरों को और गुन्जाइश मिली, हक़ तआ़ला ने उस गुन्जाइश को ख़त्म करने के लिए मुसलमानों को यह हुक्म दिया।
2. बाज़े यहूद बाज़ मुसलमानों से कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! हम दिल से तुम्हारा भला चाहने वाले हैं, मगर तुम्हारा दीन हमारे दीन से अच्छा साबित नहीं हुआ। हक़ तआ़ला इस भला चाहने के दावे का झूठा होना इस आयत में बयान फ़रमाते हैं।
3. यहूद ने क़िबला का हुक्म बदल जाने पर जिसका ज़िक्र आगे जल्द ही आता है, एतिराज़ किया था और मुश्रिकीन भी बाज़े हुक्मों के मन्सूख़ हो जाने पर ज़बान-दराज़ी करते थे, हक़ तआ़ला उस ताना मारने और एतिराज़ करने का इस आयत में जवाब देते हैं।
4. इशारे के तौर पर बतला दिया कि उनकी शरारतों का इलाज आ़म अमन के इन्तिज़ामी क़ानून यानी क़िताल व जिज़या (मुस्लिम हुकूमत में रहने वाले ग़ैर-मुस्लिमों से उनकी जान-माल की हिफ़ाज़त के बदले में लिया जाने वाला टैक्स) से हम जल्दी ही करने वाले हैं।
5. उस वक़्त मौजूदा हालत का तक़ाज़ा यही था। फिर हक़ तआ़ला ने इस वायदे को पूरा फ़रमा दिया और जिहाद की आयतें नाज़िल फ़रमा दीं।

इन्नल्ला-ह बिमा तअ्मलू-न बसीर **(110)** व क़ालू लंय्यद्ख़ुलल् जन्न-त इल्ला मन् का-न हूदन् औ नसारा, तिल्-क अमानिय्युहुम, क़ुल् हातू बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(111)** बला, मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-लहू अज्रुहू अिन्-द रब्बिही व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम व ला हुम् यह्ज़नून **(112)** ❖

व क़ालतिल् यहूदु लैसतिन्नसारा अ़ला शैइंव्-व क़ालतिन्नसारा लैसतिल् यहूदु अ़ला शैइंव्-व हुम् यत्लूनल्-किता-ब, कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न ला यअ्लमू-न मिस्-ल क़ौलिहिम् फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(113)** व मन् अज़्लमु मिम्मम्-म-न-अ़ मसाजिदल्लाहि अंय्युज़्क-र फ़ीहस्मुहू व सआ़ फ़ी ख़राबिहा, उलाइ-क मा का-न लहुम् अंय्यद्ख़ुलूहा इल्ला ख़ा-इफ़ी-न, लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व लहुम् फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(114)** व लिल्लाहिल् मश्रिक़ु वल्-मग़्रिबु फ़-ऐनमा तुवल्लू फ़-सम्-म वज्हुल्लाहि, इन्नल्ला-ह वासिअुन् अ़लीम **(115)** व क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व-लदन् सुब्हानहू, बल्-लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्लुल्लहू क़ानितून **(116)** बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून **(117)** व क़ालल्लज़ी-न ला यअ्लमू-न लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औ तअ्तीना आयतुन्, कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिस्-ल क़ौलिहिम्, तशाब-हत् क़ुलूबुहुम, क़द् बय्यन्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्यूक़िनून **(118)** इन्ना अर्सल्ना-क बिल्हक़्क़ि बशीरंव्-

الا من كان هودا او نصرى تلك امانيهم قل هاتوا برهانكم
ان كنتم صدقين بلى من اسلم وجهه لله وهو
محسن فله اجره عند ربه ولا خوف عليهم ولا هم
يحزنون وقالت اليهود ليست النصرى على شيء و
قالت النصرى ليست اليهود على شيء وهم يتلون
الكتب كذلك قال الذين لا يعلمون مثل قولهم فالله
يحكم بينهم يوم القيمة فيما كانوا فيه يختلفون و
من اظلم ممن منع مسجد الله ان يذكر فيها اسمه
وسعى في خرابها اولئك ما كان لهم ان يدخلوها
الا خائفين لهم في الدنيا خزي ولهم في الاخرة عذاب
عظيم ولله المشرق والمغرب فاينما تولوا فثم وجه
الله ان الله واسع عليم وقالوا اتخذ الله ولدا سبحنه
بل له ما في السموت والارض كل له قنتون بديع
السموت والارض واذا قضى امرا فانما يقول له كن
فيكون وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله او تاتينا
اية كذلك قال الذين من قبلهم مثل قولهم تشابهت

हो। **(111)** ज़रूर (दूसरे लोग भी जाएँगे) जो कोई शख़्स भी अपना रुख़ अल्लाह तआला की तरफ़ झुका दे और वह मुख़्लिस भी हो तो ऐसे शख़्स को उसका अज्र मिलता है उसके परवर्दिगार के पास पहुँचकर, और न ऐसे लोगों पर (क़ियामत में) कोई अन्देशा है और न ऐसे लोग (उस दिन) ग़मगीन होने वाले हैं।[1] **(112)** ❖

और यहूद कहने लगे कि ईसाइयों का मज़हब किसी बुनियाद पर क़ायम नहीं और (इसी तरह) ईसाई कहने लगे कि यहूद किसी बुनियाद पर नहीं, हालाँकि ये सब (लोग आसमानी) किताबें (भी) पढ़ते हैं। इसी तरह ये लोग (भी) जो कि (महज़) बेइल्म हैं उनके जैसे बात कहने लगे। सो अल्लाह उन सबके दरमियान (अ़मली) फ़ैसला कर देंगे क़ियामत के दिन, उन तमाम (मुक़द्दमों) में जिनमें वे आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे।[2] **(113)** और उस शख़्स से ज़्यादा और कौन ज़ालिम होगा जो ख़ुदा तआला की मस्जिदों में उनका ज़िक्र (और इबादत) किए जाने से बन्दिश करे, और उनके वीरान (व बेकार) होने (के बारे) में कोशिश करे, उन लोगों को तो कभी निडर होकर उनमें क़दम भी न रखना चाहिए था (बल्कि जब जाते डर और अदब से जाते)। उन लोगों को दुनिया में भी रुस्वाई (नसीब) होगी और उनको आख़िरत में भी बड़ी सज़ा होगी।[3] **(114)** और अल्लाह ही की ममलूक हैं (सब सम्तें) मश्रिक़ भी और मग़रिब भी, पस तुम लोग जिस तरफ़ मुँह करो (उधर ही) अल्लाह तआला का रुख़ है, क्योंकि अल्लाह तआला (तमाम सम्तों को) घेरे हुए हैं, कामिल इल्म वाले हैं।[4] **(115)** और ये लोग कहते हैं कि ख़ुदा तआला औलाद रखता है। सुब्हानल्लाह! (क्या बेकार बात है) बल्कि ख़ास अल्लाह तआला की ममलूक हैं जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में (मौजूद चीज़ें) हैं, (और) सब उनके महकूम (भी) हैं। **(116)** (हक़ तआला) बनाने वाले हैं आसमानों और ज़मीन के। और जब किसी काम को पूरा करना चाहते हैं तो बस उस काम के बारे में (इतना) फ़रमा देते हैं कि हो जा, पस वह (उसी तरह) हो जाता है।[5] **(117)** और (बाज़े) जाहिल यूँ कहते हैं कि (ख़ुद) हमसे क्यों नहीं कलाम फ़रमाते अल्लाह तआला, या हमारे पास कोई और ही दलील आ जाए।[6] इसी तरह वे (जाहिल) लोग भी कहते चले आए हैं जो इनसे पहले हो गुज़रे हैं, उन्हीं के जैसा (जाहिलाना) क़ौल, उन सबके दिल (टेढ़ी समझ रखने में) आपस में एक दूसरे के जैसे हैं, हमने तो बहुत-सी दलीलें साफ़-साफ़ बयान कर दी हैं, (मगर वे) उन लोगों के लिए (फ़ायदेमन्द हैं) जो यक़ीन (हासिल करना) चाहते हैं। **(118)** हमने आपको एक सच्चा दीन देकर भेजा है कि

---

1. दलील का हासिल यह हुआ कि जब यह क़ानून मुसल्लम है तो अब सिर्फ़ यह देख लो कि यह मज़मून किस पर फ़िट बैठता है। सो ज़ाहिर है कि किसी पहले हुक्म के मन्सूख़ हो जाने के बाद उसपर चलने वाला किसी तरह फ़रमाँबर्दार नहीं कहा जा सकता। पस यहूदी और ईसाई किसी तरह फ़रमाँबर्दार न हुए।

2. अ़मली फ़ैसला यह कि अहले हक़ को जन्नत में और अहले बातिल को दोज़ख़ में भेज देंगे। और यह क़ैद इसलिए लगाई कि क़ौल से और दलील के ज़रिए फ़ैसला तो हक़ व बातिल के दरमियान अ़क़्ली और नक़्ली दलीलों से दुनिया में भी हो चुका है।

3. मस्जिदों में मक्का की मस्जिद, मदीना की मस्जिद, बैतुल मक़्दिस की मस्जिद और सब मस्जिदें आ गईं।

4. यहूद ने क़िब्ला के बदलने के हुक्म पर एतिराज़ किया था, उसका जवाब हक़ तआला यह देते हैं कि सब सम्तें अल्लाह तआला की मिल्क में हैं। जब वह मालिक हैं तो जिस सम्त को चाहें क़िब्ला मुक़र्रर कर दें।

5. 'कुन' कहने में दो एहतिमाल हैं, एक यह कि मुराद हो जल्दी हो जाने और जल्दी बना देने से, दूसरे यह कि हक़ीक़त में हक़ तआला की यही आ़दत हो।

6. यहूद व नसारा (ईसाइयों) को बावजूद अहले किताब व अहले इल्म होने के जाहिल इसलिए कह दिया गया कि यह बात जाहिलों जैसी कही थी कि बावजूद मज़बूत, क़तई और बहुत-सी दलीलों के क़ायम हो चुकने के अभी तक इनकार किए जाते हैं।

व नज़ीरंव्-व ला तुस्अलु अ़न् अस्हाबिल् जहीम **(119)** व लन् तर्ज़ा अ़न्कल्-यहूदु व लन्-नसारा हत्ता तत्तबि-अ़ मिल्ल-तहुम, क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्-हुदा, व ल-इनित्त-बअ़्-त अह्वा-अहुम् बअ़्दल्लज़ी जाअ-क मिनल्-अ़िल्मि मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(120)** अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यत्लूनहू हक़्-क़ तिलावतिही, उलाइ-क युअ्मिनू-न बिही, व मंय्यक्फ़ुर् बिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(121)** ❖

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ़्मति--यल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़लल् आ़लमीन **(122)** वत्तक़ू यौमल्ला-तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न्-नफ़्सिन् शैअंव्-व ला युक़्बलु मिन्हा अ़दलुंव्-व ला तन्फ़अ़ुहा शफ़ाअ़तुंव्-व ला हुम् युन्सरून **(123)** व इज़िब्तला इब्राही-म रब्बुहू बि-कलिमातिन् फ़-अ-तम्म-हुन्-न, क़ा-ल इन्नी जाअ़िलु-क लिन्नासि इमामन्, क़ा-ल व मिन् ज़ुर्रिय्यती, क़ा-ल ला यनालु अ़ह्दिज़्-ज़ालिमीन **(124)** व इज़् जअ़ल्नल्बै-त मसा-बतल् लिन्नासि व अम्नन्, वत्तख़िज़ू मिम्-मक़ामि इब्राही-म मुसल्लन्, व अ़हिद्ना इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल अन् तह्हिरा बैति-य लित्ता-इफ़ी-न वल्-आ़किफ़ी-न वर्रुक्कअ़िस्सुजूद **(125)** व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ा ब-लदन् आमिनंव्वर्ज़ुक़् अह्लहू मिनस्स-मराति मन् आम-न मिन्हुम्

الٓمّٓ ١٨ البقرة ٢

قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوقِنُونَ ﴿١١٨﴾ إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ
بَشِيرًا وَّنَذِيرًا وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ أَصْحٰبِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾ وَلَنْ
تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ
إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ
الَّذِي جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيرٍ ﴿١٢٠﴾
الَّذِينَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ
بِهِ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهِ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٢١﴾ يٰبَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ
اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِيٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى
الْعٰلَمِينَ ﴿١٢٢﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ
مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذِ ابْتَلٰٓى
إِبْرٰهٖمَ رَبُّهُ بِكَلِمٰتٍ فَأَتَمَّهُنَّ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا
قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِينَ ﴿١٢٤﴾ وَإِذْ
جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ
إِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَآ إِلٰٓى إِبْرٰهٖمَ وَإِسْمٰعِيلَ أَنْ طَهِّرَا
بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِينَ وَالْعٰكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ
إِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرٰتِ

منزل

ख़ुशख़बरी सुनाते रहिए और डराते रहिए, और आपसे दोज़ख़ में जाने वालों की पूछ-ताछ न होगी।[1] **(119)** और कभी ख़ुश न होंगे आपसे यहूद और न ईसाई जब तक कि आप (ख़ुदा न करे) उनके मज़हब के (बिलकुल) पैरवी करने वाले न हो जाएँ। (आप साफ़) कह दीजिए कि (भाई) हक़ीक़त में तो हिदायत का वही रास्ता है जिसको ख़ुदा तआ़ला ने बतलाया है, और अगर आप इत्तिबा करने लगें उनके ग़लत ख़्यालात का (अल्लाह की वह्य से साबित क़तई) इल्म के आ चुकने के बाद तो आपका कोई ख़ुदा से बचाने वाला न यार निकले न मददगार। **(120)** जिन लोगों को हमने किताब (तौरात व इन्जील) दी, शर्त यह है कि वे उसकी तिलावत (उस तरह) करते रहे जिस तरह कि तिलावत का हक़ है। ऐसे लोग उसपर ईमान ले आते हैं, और जो शख़्स न मानेगा (किसका नुक़सान करेगा) ख़ुद ही ऐसे लोग घाटे में रहेंगे। **(121)** ❖

ऐ याक़ूब की औलाद! मेरी उन नेमतों को याद करो जिनका मैंने तुमपर (वक़्त-वक़्त पर) इनाम किया, और इसको (भी) कि मैंने तुमको बहुत-से लोगों पर फ़ौक़ियत "यानी रुतबा और बड़ाई" दी। **(122)** और तुम डरो ऐसे दिन से जिसमें कोई शख़्स किसी शख़्स की तरफ़ से न कोई मुतालबा (वाजिब हक़) अदा करने पाएगा और न किसी की तरफ़ से कोई मुआ़वज़ा क़बूल किया जाएगा, और न किसी को कोई सिफ़ारिश (जबकि ईमान न हो) मुफ़ीद होगी, और न उन लोगों को कोई बचा सकेगा। **(123)** और जिस वक़्त इम्तिहान किया (हज़रत) इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) का उनके परवर्दिगार ने चन्द बातों में, और वह उनको पूरे तौर से बजा लाए, (उस वक़्त) हक़ तआ़ला ने (उनसे) फ़रमाया कि मैं तुमको लोगों का मुक़्तदा "यानी रहनुमा और ऐसा शख़्स जिसकी पैरवी की जाए" बनाऊँगा। उन्होंने अ़र्ज किया: और मेरी औलाद में से भी किसी-किसी को (नुबुव्वत दीजिए) इर्शाद हुआ कि मेरा (यह नुबुव्वत का) ओ़हदा ख़िलाफ़-वर्ज़ी करने वालों को न मिलेगा। **(124)** और (वह वक़्त भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जिस वक़्त हमने काबा शरीफ़ को लोगों के इबादत की जगह और अमन (की जगह) मुक़र्रर किया।[2] और मक़ामे इब्राहीम को (कभी-कभी) नमाज़ पढ़ने की जगह बना लिया करो।[3] और हमने (हज़रत) इब्राहीम और (हज़रत) इसमाईल (अ़लैहिमस्सलाम) की तरफ़ हुक्म भेजा कि मेरे (इस) घर को ख़ूब पाक-साफ़ रखा करो, बाहर से आने वालों और मक़ामी लोगों (की इबादत) के वास्ते, और रुकू और सज्दे करने वालों के वास्ते। **(125)** और जिस वक़्त इब्राहीम

---

1. यहाँ तक यहूद की चालीस क़बाहतें "यानी ख़राबियाँ और बुराइयाँ" जिनमें से कुछ में ईसाई भी शरीक हैं, बयान फ़रमाई गईं। आगे यह बतलाना मक़सूद है कि ऐसे हठ-धर्म लोगों से ईमान की उम्मीद न रखनी चाहिए। और इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ग़म व फ़िक्र को दूर करना है, कि आप उनके आ़म तौर पर ईमान लाने से मायूस हो जाइए और परेशानी और कुल्फ़त दिल से दूर कीजिए। और इसके अ़लावा आगे उनकी एक और बुराई का भी बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी करने की तो उनको क्या तौफ़ीक़ होती वे तो यहाँ तक सोचते हैं कि 'अल्लाह की पनाह' आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपनी राह पर चलाने की नामुम्किन फ़िक्र में हैं।

2. अमन का मक़ाम दो वजह से फ़रमाया, एक तो यह कि इसमें हज व उमरः और नमाज़ व तवाफ़ करने से दोज़ख़ के अ़ज़ाब से अमन होता है, दूसरे इस वजह से कि अगर कोई ख़ूनी काबा की हदों में जिसको "हरम" कहते हैं, जा घुसे तो वहाँ उसे मौत की सज़ा न देंगे।

3. मक़ामे इब्राहीम एक ख़ास पत्थर का नाम है जिसपर खड़े होकर आपने काबा की इमारत बनाई। वह काबा के पास एक महफ़ूज़ जगह रखा है और वहाँ नफ़्लें पढ़ना सवाब है।

बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, क़ा-ल व मन् क-फ़-र फ़-उमत्तिअुहू क़लीलन् सुम्-म अज़्तर्रुहू इला अ़ज़ाबिन्नारि, व बिअ्सल्-मसीर **(126)** व इज़् यर्फ़अु इब्राहीमुल् क़वाअि़-द मिनल्-बैति व इस्माअ़ीलु, रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना, इन्न-क अन्तस्समीअुल्- अ़लीम **(127)** रब्बना वज्अ़ल्ना मुस्लिमैनि ल-क व मिन् ज़ुर्रिय्यतिना उम्म-तम् मुस्लि-मतल् ल-क व अरिना मनासि-कना व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्- रहीम **(128)** रब्बना वब्अ़स् फ़ीहिम् रसूलम्-मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आयाति-क व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्-हिक्म-त व युज़क्कीहिम, इन्न-क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(129)** ❖

व मंय्यर्ग़बु अ़म्-मिल्लति इब्राही-म इल्ला मन् सफ़ि-ह नफ़्सहू, व ल-क़दिस्तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल्-आख़िरति लमिनस्सालिहीन **(130)** इज़् क़ा-ल लहू रब्बुहू अस्लिम् क़ा-ल अस्लम्तु लि-रब्बिल् आ़लमीन **(131)** व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअ़्क़ूबु, या बनिय्-य इन्नल्लाहस्तफ़ा लकुमुद्दी-न फ़ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम्-मुस्लिमून **(132)** अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज़् ह-ज़-र यअ़्क़ूबल्-मौतु इज़् क़ा-ल लि-बनीहि मा तअ़्बुदू-न मिम्-बअ़्दी, क़ालू नअ़्बुदु इलाह-क व इला-ह आबाइ-क इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ इलाहंव्-वाहिदंव्-व नह्नु लहू मुस्लिमून **(133)** तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़लत् लहा

الٓمّٓ ۱ ۱۹ البقرة ۲

مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ
قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۲۶﴾ وَ
اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ۭ رَبَّنَا تَقَبَّلْ
مِنَّا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۷﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ
عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۲۸﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ
رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۲۹﴾ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ
اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ
وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ
قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ
وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ
اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ
الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ۭ قَالُوْا نَعْبُدُ
اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَاۗىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا
وَّاحِدًا ښ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا

منزل

(अलैहिस्सलाम) ने (दुआ में) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! इसको एक (आबाद) शहर बना दीजिए[1] अमन (व अमान) वाला, और इसके बसने वालों को फलों से भी इनायत कीजिए, उनको (कहता हूँ) जो कि उनमें से अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हों।[2] हक़ तआला ने इर्शाद फ़रमाया और उस शख़्स को भी जो कि काफ़िर रहे, सो ऐसे शख़्स को थोड़े दिन तो ख़ूब आराम बरताऊँगा फिर उसे खींचते हुए दोज़ख़ के अ़ज़ाब में पहुँचाऊँगा, और वह पहुँचने की जगह तो बहुत बुरी है। **(126)** और जबकि उठा रहे थे इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ख़ाना-काबा की दीवारें और इसमाईल भी,[3] (और यह कहते जाते थे) ऐ हमारे परवर्दिगार! (यह ख़िदमत) हमसे क़बूल फ़रमाइए बिला शुब्हा आप ख़ूब सुनने वाले जानने वाले हैं। **(127)** ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको अपना और ज़्यादा फ़रमाँबर्दार बना लीजिए और हमारी औलाद में से भी एक ऐसी जमाअ़त (पैदा) कीजिए जो आपकी इताअ़त करने वाली हो, और (तथा) हमको हमारे हज (वग़ैरह) के अह्काम भी बतला दीजिए और हमारे हाल पर तवज्जोह रखिए, (और) हक़ीक़त में आप ही हैं तवज्जोह फ़रमाने वाले, मेहरबानी करने वाले। **(128)** ऐ हमारे परवर्दिगार! और उस जमाअ़त के अन्दर उन्हीं में से एक ऐसे पैग़म्बर भी मुक़र्रर कीजिए जो उन लोगों को आपकी आयतें पढ़-पढ़कर सुनाया करें, और उनको (आसमानी) किताब की और अ़क़्ल व समझ की तालीम दिया करें और उनको पाक कर दें। बेशक आप ही हैं ग़ालिब क़ुदरत वाले, कामिल इन्तिज़ाम वाले।[4] **(129)** ❖

और मिल्लते इब्राहीमी से तो वही मुँह फेरेगा जो अपनी ज़ात ही से अहमक़ हो, और हमने उन (इब्राहीम अ़लै.) को दुनिया में चुना और (इसी की बदौलत) वह आख़िरत में बड़े लायक़ लोगों में शुमार किए जाते हैं। **(130)** जबकि उनसे उनके परवर्दिगार ने फ़रमाया कि तुम इताअ़त इख़्तियार करो, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैंने इताअ़त इख़्तियार की रब्बुल-आ़लमीन की। **(131)** और इसी का हुक्म कर गए हैं इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अपने बेटों को और (इसी तरह) याक़ूब (अलैहिस्सलाम) भी, मेरे बेटो! अल्लाह ने इस दीन (इस्लाम) को तुम्हारे लिए मुन्तख़ब फ़रमाया है, सो तुम सिवाय इस्लाम के और किसी हालत पर जान मत देना। **(132)** क्या तुम ख़ुद (उस वक़्त) मौजूद थे जिस वक़्त याक़ूब (अलैहिस्सलाम) का आख़िरी वक़्त आया, (और) जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि तुम लोग मेरे (मरने के) बाद किस चीज़ की परस्तिश "यानी पूजा और इबादत" करोगे। उन्होंने (मुत्तफ़िक़ होकर) जवाब दिया कि हम उसकी इबादत करेंगे जिसकी आप और आपके बुज़ुर्ग (हज़रात) इब्राहीम व इसमाईल व इसहाक़ इबादत करते आए हैं, यानी वही माबूद जो अकेला है जिसका कोई शरीक नहीं है, और हम उसी की इताअ़त पर (क़ायम) रहेंगे। **(133)** यह (उन बुज़ुर्गों की) एक जमाअ़त थी जो गुज़र चुकी, उनके काम उनका किया हुआ आयेगा

1. शहर होने की दुआ़ इस वास्ते की थी कि उस वक़्त यह जगह बिलकुल जंगल थी, फिर अल्लाह तआ़ला ने उसको शहर कर दिया।
2. इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने जो काफ़िरों के लिए रिज़्क़ की दुआ़ नहीं माँगी, ग़ालिबन् इसकी वजह यह हुई कि पहली दुआ़ के जवाब में हक़ तआ़ला ने ज़ालिमों को एक नेमत की सलाहियत से ख़ारिज फ़रमा दिया था, इसलिए अदब की वजह से इस दुआ़ में उनको शामिल नहीं किया कि कहीं अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो।
3. हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम का शरीक होना दो तरह हो सकता है, या तो पत्थर-गारा देते होंगे या किसी वक़्त चुनाई भी करते होंगे।
4. जिस जमाअ़त का इस आयत में ज़िक्र है वे सिर्फ़ इसमाईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद हैं, जिनमें जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भेजे गए। क्योंकि यह दुआ़ दोनों हज़रात ने की है, तो वही जमाअ़त मुराद हो सकती है जो दोनों की औलाद हो, और पैग़म्बर के ज़िक्र में कहा गया है कि वे इस जमाअ़त से हों तो वह जमाअ़त इसमाईल की औलाद हुई और पैग़म्बर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हुए जो कि इसमाईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। इसी लिए सही हदीस में नबी करीम का इर्शाद है कि मैं अपने बाप इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ का ज़ुहूर हूँ।

मा क-सबत् व लकुम् मा क-सब्तुम् व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ़्मलून **(134)** व क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह्तदू, क़ुल् बल् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन **(135)** क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्-अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अ़ीसा व मा ऊतियन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम्-मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून **(136)** फ़-इन् आमनू बिमिस्लि मा आमन्तुम् बिही फ़-क़दिह्तदौ व इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा हुम् फ़ी शिक़ाक़िन् फ़-सयक्फ़ी-कहुमुल्लाहु व हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम **(137)** सिब्ग़तल्लाहि व मन् अह्सनु मिनल्लाहि सिब्ग़-तंव्-व नह्नु लहू आ़बिदून **(138)** क़ुल् अतुहाज्जू-नना फ़िल्लाहि व हु-व रब्बुना व रब्बुकुम् व लना अअ़्मालुना व लकुम् अअ़्मालुकुम् व नह्नु लहू मुख़्लिसून **(139)** अम् तक़ूलू-न इन्-न इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्-अस्बा-त कानू हूदन् औ नसारा, क़ुल् अ-अन्तुम् अअ़्लमु अमिल्लाहु, व मन् अज़्लमु मिम्मन् क-त-म शहा-दतन् अ़िन्दहू मिनल्लाहि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून **(140)** तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़लत् लहा मा क-सबत् व लकुम् मा क-सब्तुम् व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ़्मलून **(141)** ❖

الٓمّ ٢٠ البقرة ٢

كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٤﴾ وَ
قَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَٰرَىٰ تَهْتَدُوا ۗ قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرٰهٖمَ
حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾ قُولُوٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ
أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنْزِلَ إِلٰٓى إِبْرٰهٖمَ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ
وَالْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوتِيَ مُوسٰى وَعِيسٰى وَمَآ أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ
رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾
فَإِنْ اٰمَنُوا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا
هُمْ فِي شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾
صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَنَحْنُ لَهُ عٰبِدُونَ ﴿١٣٨﴾
قُلْ أَتُحَآجُّونَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ أَعْمَالُنَا وَ
لَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾ أَمْ تَقُولُونَ
إِنَّ إِبْرٰهٖمَ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ
كَانُوا هُودًا أَوْ نَصٰرٰى ۗ قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللّٰهُ ۗ وَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْـَٔلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

منزل

और तुम्हारे काम तुम्हारा किया हुआ आयेगा, और तुमसे उनके किए हुए की पूछ भी तो न होगी। **(134)** और ये (यहूदी व ईसाई) लोग कहते हैं कि तुम लोग यहूदी हो जाओ या ईसाई हो जाओ, तुम भी राह पर पड़ जाओगे। आप कह दीजिए कि हम तो मिल्लते इब्राहीम (यानी इस्लाम) पर रहेंगे, जिसमें टेढ़ का नाम नहीं, और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) मुश्रिक भी न थे।[1] **(135)** (मुसलमानो!) कह दो कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस (हुक्म) पर जो हमारे पास भेजा गया और उसपर भी जो (हज़रत) इब्राहीम और (हज़रत) इसमाईल और (हज़रत) इसहाक़ और (हज़रत) याकूब (अ़लैहिमुस्सलाम) और याकूब की औलाद की तरफ़ भेजा गया, और उस (हुक्म व मोजिज़े) पर भी जो (हज़रत) ईसा को दिया गया, और उसपर भी जो कुछ और नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) को दिया गया उनके परवर्दिगार की तरफ़ से, इस कैफ़ियत से कि हम उन (हज़रात) में से किसी एक में भी तफ़रीक़ नहीं करते, और हम तो अल्लाह तआ़ला के फ़रमाँबर्दार हैं।[2] **(136)** सो अगर वे भी इसी तरीक़े से ईमान ले आएँ जिस तरीक़े से तुम (मुसलमान) ईमान लाए हो, तब तो वे भी (हक़) रास्ते पर लग जाएँगे, और अगर वे रूगर्दानी करें तो वे लोग तो (हमेशा से) मुख़ालफ़त पर कमर बाँधे हुए हैं ही, तो (समझ लो कि) तुम्हारी तरफ़ से जल्द ही निमट लेंगे अल्लाह तआ़ला, और अल्लाह तआ़ला सुनते हैं, (और) जानते हैं। **(137)** हम (दीन की) उस हालत पर हैं जिसमें (हमको) अल्लाह तआ़ला ने रंग दिया है, और (दूसरा) कौन है जिसके रंग देने की हालत अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा अच्छी हो, और (इसी लिए) हम उसी की गुलामी इख़्तियार किए हुए हैं। **(138)** आप फ़रमा दीजिए कि क्या तुम लोग हमसे (अब भी) हुज्जत किए जाते हो अल्लाह तआ़ला के बारे में, हालाँकि वह हमारा और तुम्हारा (सबका) रब है, और हमको हमारा किया हुआ मिलेगा और तुमको तुम्हारा किया हुआ मिलेगा, और हमने सिर्फ़ हक़ तआ़ला के लिए अपने (दीन) को (शिर्क वग़ैरह) से ख़ालिस कर रखा है। **(139)** या कहे जाते हो कि इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याकूब और याकूब की औलाद (में जो नबी गुज़रे हैं, ये सब हज़रात) यहूदी या ईसाई थे। (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! कह दीजिए कि तुम ज़्यादा वाक़िफ़ हो या हक़ तआ़ला, और ऐसे शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो ऐसी गवाही को छुपाए जो उसके पास अल्लाह की जानिब से पहुँची हो, और अल्लाह तुम्हारे किए हुए से बेख़बर नहीं हैं।[3] **(140)** यह (उन बुज़ुर्गों की) एक जमाअ़त थी जो गुज़र गई, उनके काम उनका किया हुआ आएगा और तुम्हारे काम तुम्हारा किया हुआ आएगा, और तुमसे उनके किए हुए की पूछ भी तो न होगी।[4] **(141)** ❖

---

1. 'मिल्लते इब्राहीम' एक लक़ब है 'शरीअ़ते मुहम्मदिया' का। सो यह कहना कि हम मिल्लते इब्राहीम पर रहेंगे, या यह कहना कि तुम मिल्लते इब्राहीम की इत्तिबा करो, इसका मतलब यही है कि हम शरीअ़ते मुहम्मदिया पर रहेंगे और तुम शरीअ़ते मुहम्मदिया की इत्तिबा करो।

2. हुक्म में सहीफ़े और किताबें सब दाख़िल हैं। मज़मून का हासिल यह हुआ कि देखो हमारा दीन कैसा इन्साफ़ और हक़ का है कि सब नबियों को मानते हैं, सब किताबों को सच्चा जानते हैं, सबके मोजिज़ों को हक़ पहचानते हैं। अगरचे ज़्यादातर अहकाम के रद्द हो जाने की वजह से दूसरी मुस्तक़िल शरीअ़त यानी शरीअ़ते मुहम्मदिया पर अ़मल करते हैं लेकिन इनकार और झुठलाना किसी का नहीं करते।

3. पस जब ये हज़रात यहूद व ईसाई न थे तो तुम दीन के तरीक़े में उनके मुवाफ़िक़ कब हुए? फिर तुम्हारा हक़ पर होना भी साबित न होगा।

4. और जब ख़ाली तज़किरा भी न होगा तो उससे तुमको कोई नफ़ा नहीं पहुँच सकता। इससे साबित हुआ कि किसी बुज़ुर्ग से ख़ाली किसी निस्बत और ताल्लुक़ का होना आख़िरत की नजात के लिए काफ़ी नहीं हो सकता।

दूसरा पारः स-यक़ूलु

सूरतुल् ब-क्-रति (आयत 142 से 252)

स-यक़ूलुस्सु-फ़हा-उ मिनन्नासि मा वल्लाहुम् अ़न् क़िब्लतिहिमुल्लती कानू अ़लैहा, क़ुल् लिल्लाहिल्-मश्रिक़ु वल्मग़्रिबु, यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(142)** व कज़ालि-क जअ़ल्नाकुम् उम्मतंव्-व-स-तल्लितकूनू शु-हदा-अ अ़लन्-नासि व यकूनर्रसूलु अ़लैकुम् शहीदन्, व मा जअ़ल्नल्-क़िब्लतल्लती कुन्-त अ़लैहा इल्ला लिनअ़्ल-म मंय्यत्तबिअ़ुर्रसू-ल मिम्-मंय्यन्क़लिबु अ़ला अ़क़िबैहि, व इन् कानत् ल-कबी-रतन् इल्ला अ़लल्लज़ी-न हदल्लाहु, व मा कानल्लाहु लियुज़ी-अ़ ईमानकुम, इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफ़ुर्रहीम **(143)** क़द् नरा तक़ल्लु-ब वज्हि-क फ़िस्समा-इ फ़-लनुवल्लियन्न-क क़िब्लतन् तर्ज़ाहा फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-हरामि, व हैसु मा कुन्तुम् फ़-वल्लू वुजू-हकुम् शत्रहू, व इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ल-यअ़्लमू-न अन्नहुल्- हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ़्मलून **(144)** व लइन् अतैतल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब बिकुल्लि आयतिम्मा तबिअ़ू क़िब्ल-त-क व मा अन्-त बिताबिअ़िन् क़िब्ल-तहुम् व मा बअ़्ज़ुहुम् बिताबिअ़िन् क़िब्ल-त बअ़्ज़िन्, व ल-इनित्तबअ़्-त अह्वा-अहुम् मिम्-बअ़्दि मा जाअ-क मिनल्-अ़िल्मि इन्न-क इज़ल्- लमिनज़्ज़ालिमीन ✣ **(145)** अल्लज़ी-न

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي
كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا
شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا
جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ
مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى
الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ
بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٣﴾ قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ
فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٤﴾
وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا
أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَئِنِ
اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ
الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾

✣ व. लाज़िम

दूसरा पारः स-यक़ूलु

सूरः ब-क़रः (आयत 142 से 252)

अब तो (ये) बेवकूफ़ लोग ज़रूर कहेंगे ही, कि उन (मुसलमानों) को उनके (पहली सम्त वाले) क़िब्ला से (कि बैतुल मक़्दिस था) जिस तरफ़ पहले मुतवज्जह हुआ करते थे, किस (बात) ने बदल दिया। आप फ़रमा दीजिए कि सब पूरब और पश्चिम अल्लाह ही की मिल्क हैं।[1] जिसको ख़ुदा ही चाहें (यह) सीधा रास्ता बतला देते हैं।[2] **(142)** और हमने तुमको ऐसी ही एक जमाअ़त बना दी है जो (हर पहलू से) दरमियानी राह पर है, ताकि तुम (मुख़ालिफ़) लोगों के मुक़ाबले में गवाह हो, और तुम्हारे लिए (अल्लाह के) रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) गवाह हों।[3] और जिस (सम्त) क़िब्ला पर आप रह चुके हैं (यानी बैतुल मक़्दिस) वह तो सिर्फ़ इसलिए था कि हमको मालूम हो जाए कि कौन तो (अल्लाह के) रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पैरवी इख़्तियार करता है और कौन पीछे को हटता जाता है। और यह (क़िब्ला का बदलना बेराह और नाफ़रमान लोगों पर) बड़ा भारी है, (हाँ) मगर जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला ने हिदायत फ़रमाई है। और अल्लाह तआ़ला ऐसे नहीं हैं कि तुम्हारे ईमान को ज़ाया (और नाक़िस) कर दें, (और) वाक़ई अल्लाह तआ़ला तो (ऐसे) लोगों पर बहुत ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान हैं।[4] **(143)** हम आपके मुँह का (यह) बार-बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं, इसलिए हम आपको उसी क़िब्ला की तरफ़ मुतवज्जह कर देंगे जिसके लिए आपकी मर्ज़ी है, (लो) फिर अपना चेहरा (नमाज़ में) मस्जिदे हराम (काबा) की तरफ़ किया कीजिए, और तुम सब लोग जहाँ कहीं भी मौजूद हो अपने चेहरों को उसी (मस्जिदे हराम) की तरफ़ किया करो, और ये अहले किताब भी यक़ीनन जानते हैं कि यह (हुक्म) बिलकुल ठीक है, (और) उनके परवर्दिगार ही की तरफ़ से (है) और अल्लाह तआ़ला उनकी कार्रवाइयों से बेख़बर नहीं हैं।[5] **(144)** और अगर आप (इन) अहले किताब के सामने तमाम (दुनिया भर की) दलीलें पेश कर दें जब भी यह (कभी) आपके क़िब्ला को क़बूल न करें, और आप भी उनके क़िब्ला को क़बूल नहीं कर सकते, (फिर मुवाफ़क़त की क्या सूरत) और उनका कोई (फ़रीक़) भी दूसरे (फ़रीक़) के क़िब्ला को क़बूल नहीं करता। और अगर आप उनके (उन) नफ़्सानी ख़्यालात को इख़्तियार कर लें (और वे भी) आपके पास इल्म (वह्य) आने के बाद तो यक़ीनन आप (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) ज़ालिमों में शुमार होने लगें।[6] **(145)** जिन लोगों को हमने किताब (तौरात व इन्जील) दी है वे लोग इन (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को ऐसा पहचानते हैं जैसा कि अपने बेटों को पहचानते हैं, और बाज़े उनमें से हक़ को इसके बावजूद कि ख़ूब जानते हैं, (मगर) छुपाते हैं।[7] **(146)** (हालाँकि) यह हक़ बात अल्लाह की जानिब से (साबित हो

---

1. ख़ुदा तआ़ला को मालिकाना इख़्तियार है, जिस सम्त (दिशा) को चाहें क़िब्ला मुक़र्रर फ़रमा दें, किसी को वजह दरियाफ़्त करने का हक़ नहीं।

2. जिस चीज़ को इस मक़ाम पर सीधा रास्ता कहा गया है हक़ीक़त में सलामती और अमन उसी तरीक़े में है।

3. यानी तुम एक बड़े मुक़द्दमे में जिसमें एक फ़रीक़ हज़राते अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम होंगे और दूसरा फ़रीक़ उनकी मुख़ालिफ़ क़ौमें होंगी, उन मुख़ालिफ़ लोगों के मुक़ाबले में गवाह तजवीज़ हो, और इज़्ज़त पर इज़्ज़त यह है कि तुम्हारे गवाही के क़ाबिल और मोतबर होने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गवाह हों।

4. क़िब्ला की तब्दीली पर एतिराज़ का हाकिमाना जवाब देकर अब हकीमाना जवाब शुरू होता है जिसमें कई हिक्मतों की तरफ़ इशारा है।

5. इस आयत से बैतुल मक़्दिस का मन्सूख़ करना और काबा को क़िब्ला मुक़र्रर करना मन्ज़ूर है। हासिल हिक्मत का यह है कि हमको आपकी ख़ुशी मन्ज़ूर थी और आपकी ख़ुशी काबा के क़िब्ला मुक़र्रर होने में देखी, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 42 पर)**

आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्रिफ़ूनहू कमा यअ्रिफ़ू-न अब्ना-अहुम, व इन्-न फ़रीक़म्-मिन्हुम् ल-यक्तुमूनल्-हक़्-क़ व हुम् यअ्लमून **(146)** अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन **(147)** ❖

व लिकुल्लिंव्विज्हतुन् हु-व मुवल्लीहा फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति, ऐ-न मा तकूनू यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीअ़न्, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(148)** व मिन् हैसु ख़रज्-त फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-हरामि, व इन्नहू लल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून **(149)** व मिन् हैसु ख़रज्-त फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-हरामि, व हैसु मा कुन्तुम् फ़-वल्लू वुजूहकुम् शत्रहू लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अ़लैकुम् हुज्जतुन्, इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् फ़ला तख़्शौहुम् वख़्शौनी, व लि-उतिम्-म निअ्मती अ़लैकुम् व लअ़ल्लकुम् तह्तदून **(150)** कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम्-मिन्कुम् यत्लू अ़लैकुम् आयातिना व युज़क्कीकुम् व युअ़ल्लिमुकुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व युअ़ल्लिमुकुम् मा लम् तकूनू तअ्लमून **(151)** फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम् वश्कुरू ली व ला तक्फ़ुरून **(152)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति, इन्नल्ला-ह मअ़स्साबिरीन **(153)** व ला तक़ूलू लिमंय्युक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातुन्, बल् अह्याउंव्-व लाकिल्ला तश्अुरून **(154)** व ल-नब्लुवन्नकुम् बिशैइम्-मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअि व नक़्सिम् मिनल्-

الحق من ربك فلا تكونن من الممترين ۝ ولكل وجهة
هو موليها فاستبقوا الخيرات اين ما تكونوا يات بكم الله
جميعا ان الله على كل شيء قدير ۝ ومن حيث خرجت
فول وجهك شطر المسجد الحرام وانه للحق من ربك
وما الله بغافل عما تعملون ۝ ومن حيث خرجت فول
وجهك شطر المسجد الحرام وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم
شطره لئلا يكون للناس عليكم حجة الا الذين ظلموا منهم
فلا تخشوهم واخشوني ولاتم نعمتي عليكم ولعلكم تهتدون ۝
كما ارسلنا فيكم رسولا منكم يتلوا عليكم اياتنا ويزكيكم
ويعلمكم الكتب والحكمة ويعلمكم ما لم تكونوا تعلمون ۝
فاذكروني اذكركم واشكروا لي ولا تكفرون ۝ يايها الذين
امنوا استعينوا بالصبر والصلوة ان الله مع الصبرين ۝
ولا تقولوا لمن يقتل في سبيل الله اموات بل احياء
ولكن لا تشعرون ۝ ولنبلونكم بشيء من الخوف
والجوع ونقص من الاموال والانفس والثمرت و
بشر الصبرين ۝ الذين اذا اصابتهم مصيبة قالوا انا

منزل ١

चुकी) है, सो हरगिज़ शक व शुब्हा लाने वालों में शुमार न होना। **(147)** ❖

और हर शख़्स (मज़हब वाले) के वास्ते एक-एक क़िब्ला रहा है जिसकी तरफ़ वह (इबादत में) मुँह करता रहा है, सो तुम नेक कामों में दौड़-धूप करो चाहे तुम कहीं होगे (लेकिन) अल्लाह तआ़ला तुम सबको हाज़िर कर देंगे। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला हर मामले पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। **(148)** और जिस जगह से भी (कहीं सफ़र में) आप बाहर जाएँ तो (भी) अपना चेहरा (नमाज़ में) मस्जिदे हराम (यानी काबा) की तरफ़ रखा कीजिए, और यह (हुक्म आ़म क़िब्ला का) बिलकुल हक़ है (और) अल्लाह की जानिब से (है) और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे किए हुए कामों से हरगिज़ बेख़बर नहीं। **(149)** और (फिर कहा जाता है कि) आप जिस जगह से भी (सफ़र में) बाहर जाएँ अपना चेहरा मस्जिदे हराम की तरफ़ रखिए और तुम लोग जहाँ कहीं (मौजूद) हो अपना चेहरा उसी की तरफ़ रखा करो, ताकि (इन मुख़ालिफ़) लोगों को तुम्हारे मुक़ाबले में गुफ़्तगू (की मजाल) न रहे, मगर उनमें जो (बिलकुल ही) बेइन्साफ़ हैं, तो ऐसे लोगों से (हरगिज़) अन्देशा न करो, और मुझसे डरते रहो, और ताकि तुमपर जो (कुछ) मेरा इनाम है मैं उसकी तक्मील कर दूँ, और ताकि (दुनिया में) तुम हक़ रास्ते पर रहो।[1] **(150)** जिस तरह तुम लोगों में हमने एक (अ़ज़ीमुश्शान) रसूल भेजा, तुम ही में से, जो हमारी आयतें (और अहकाम) पढ़-पढ़कर तुमको सुनाते हैं और (जहालत से) तुम्हारी सफ़ाई करते रहते हैं और तुमको (अल्लाह की) किताब और समझ की बातें बतलाते रहते हैं। और तुमको ऐसी (मुफ़ीद) बातें तालीम करते रहते हैं जिनकी तुमको ख़बर भी न थी।[2] **(151)** तो (इन नेमतों पर) मुझको याद करो मैं तुमको (इनायत से) याद रखूँगा और मेरी (नेमत की) शुक्र गुज़ारी करो, और मेरी नाशुक्री मत करो। **(152)** ❖

ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से सहारा हासिल करो, बेशक अल्लह सब्र करने वालों के साथ (रहते) हैं। (और नमाज़ पढ़ने वालों के साथ तो और भी ज़्यादा)[3] **(153)** और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए जाते हैं उनके बारे में (यूँ भी) मत कहो कि वे (मामूली मुर्दों की तरह) मुर्दे हैं, बल्कि वे तो (एक ख़ास ज़िन्दगी के साथ) ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (इन हवास से उस ज़िन्दगी का) एहसास नहीं कर सकते।[4] **(154)** और (देखो) हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे किसी क़द्र ख़ौफ़ से, और फ़ाक़े से, और माल और जान और फलों की कमी से, और आप ऐसे सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए **(155)** (जिनकी यह आ़दत है) कि उनपर जब कोई मुसीबत पड़ती है तो वे

(पृष्ठ 40 का शेष) इसलिए उसी को क़िब्ला मुक़र्रर कर दिया। रहा यह कि आपकी ख़ुशी इसमें क्यों थी, वजह इसकी यह मालूम होती है कि आपकी नुबुव्वत की निशानियों में से एक निशानी यह भी थी कि आपके क़िब्ला की यह सम्त होगी। अल्लाह तआ़ला ने आपके नूरानी दिल में उसी के मुवाफ़िक़ तमन्ना पैदा कर दी।

6. आपका ज़ालिम होना मासूम (यानी ख़ता व गुनाहों से महफ़ूज़ होने की वजह से) मुहाल है, इसलिए यह बात कि आप उनके ख़्यालात को जिनमें से एक उनका क़िब्ला भी है, क़बूल कर लें मुहाल है।

7. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पहचानने को जो बेटों के पहचानने के मानिन्द बताया है तो तश्बीह यानी मिसाल देने में बेटे के बेटा होने का लिहाज़ नहीं है बल्कि बेटे की सूरत का लिहाज़ किया गया है।

1. क़िब्ला की बहस के शुरू और आख़िर के इत्तिहाद में इशारा है कि काबा का इन नबी की शरीअ़त में क़िब्ला मुक़र्रर होना कोई ताज्जुब की बात नहीं, क्योंकि काबा इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का तामीर किया हुआ है और यह नबी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं, और इस इमारत के क़बूल होने की और इस "बेटे" के रसूल होने की उन्होंने दुआ़ भी की थी, हमने उनकी दोनों दुआ़एँ क़बूल कर लीं।

2. ऊपर की आयतों में हक़ तआ़ला की बड़ी-बड़ी नेमतों का ज़िक्र था, इसलिए अगली आयत में नेमत देने वाले (यानी अल्लाह पाक) के ज़िक्र और उनकी नेमत के शुक्र का हुक्म फ़रमाकर ज़िक्र की हुई आयतों के मज़मून को उम्दा तरीक़े से मुकम्मल फ़रमाते हैं।

3. जब सब्र में यह वायदा है तो नामज़ जो उससे बढ़कर है उसमें तो और ज़्यादा यह ख़ुशख़बरी होगी। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 44 पर)**

अम्वालि वल्-अन्फ़ुसि वस्स-मराति, व बश्शिरिस्साबिरीन **(155)** अल्लज़ी-न इज़ा असाबत्हुम् मुसीबतुन् क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून **(156)** उलाइ-क अ़लैहिम स-लवातुम्-मिर्रब्बिहिम् व रह्मतुन्, व उलाइ-क हुमुल्-मुह्तदून **(157)** इन्नस्सफ़ा वल्मर्-व-त मिन् शआ-इरिल्लाहि फ़-मन् हज्जल्बै-त अविअ्-त-म-र फ़ला जुना-ह अ़लैहि अंय्यत्तव्व-फ़ बिहिमा, व मन् त-तव्व-अ़ ख़ैरन् फ़-इन्नल्ला-ह शाकिरुन् अ़लीम **(158)** इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़ल्ना मिनल् बय्यिनाति वल्हुदा मिम्-बअ़्दि मा बय्यन्नाहु लिन्नासि फ़िल्-किताबि उलाइ-क यल्अ़नुहुमुल्लाहु व यल्अ़नुहुमुल्-लाअ़िनून **(159)** इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू व बय्यनू फ़-उलाइ-क अतूबु अ़लैहिम् व अ-नत्तव्वाबुर्रहीम **(160)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् उलाइ-क अ़लैहिम् लअ़्नतुल्लाहि वल्-मलाइ-कति वन्नासि अज्मअ़ीन **(161)** ख़ालिदी-न फ़ीहा ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्-अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून **(162)** व इलाहुकुम् इलाहुंव्- वाहिदुन् ला इला-ह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम **(163)** ❖

سیقول ٢ ٢٣ البقرة ٢

لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ
وَرَحْمَةٌ ○ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ○ اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ
مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ۭ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ
شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ
وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ
يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ○ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا
وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ
وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ○ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ○ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِىْ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ
بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ
فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ
وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ

منزل

इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तज्री फ़िल्बह्रि बिमा यन्फ़अुन्ना-स व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ बअ़्-द मौतिहा व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् व तस्रीफ़िर्रियाहि वस्सहाबिल्-मुसख़्ख़रि बैनस्समा-इ वल्अर्ज़ि लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ़्क़िलून **(164)** व मिनन्नासि

कहते हैं कि हम तो (मय माल व औलाद हक़ीक़त में) अल्लाह तआ़ला ही की मिल्क हैं, और हम सब (दुनिया से) अल्लाह तआ़ला के पास जाने वाले हैं। **(156)** उन लोगों पर (अलग-अलग) ख़ास-ख़ास रहमतें भी उनके रब की तरफ़ से होंगी, और (सबपर मुश्तरका) आ़म रहमत भी होगी, और यही लोग हैं जिनकी (असल हक़ीक़त तक) पहुँच हो गई[1] **(157)** यह बात तहक़ीक़ी है कि सफ़ा और मर्वा अल्लाह (के दीन) की यादगारों में से हैं, इसलिए जो शख़्स हज करे (अल्लाह के) घर का, या (उसका) उमरः करे, उसपर ज़रा भी गुनाह नहीं उन दोनों के दरमियान आना-जाना करने में (जिसका नाम "सई" है) और जो शख़्स ख़ुशी से कोई ख़ैर की बात करे तो हक़ तआ़ला (उसकी बड़ी) क़दर-दानी करते हैं, (और उसकी नीयत को) ख़ूब जानते हैं।[2] **(158)** जो लोग छुपाते हैं उन मज़ामीन को जिनको हमने नाज़िल किया है, जो कि (अपनी ज़ात में) वाज़ेह हैं और (दूसरों को) हिदायत देने वाले हैं बाद इसके कि हम उनको (अल्लाह की) किताब (तौरात व इन्जील) में आ़म लोगों पर ज़ाहिर कर चुके हैं, ऐसे लोगों पर अल्लाह तआ़ला भी लानत फ़रमाते हैं और (दूसरे बहुत-से) लानत करने वाले भी उनपर लानत भेजते हैं। **(159)** मगर जो लोग तौबा कर लें और सुधार कर लें और (उन मज़ामीन को) ज़ाहिर कर दें तो ऐसे लोगों पर मैं मुतवज्जह हो जाता हूँ, और मेरी तो आ़दत ही है तौबा क़बूल कर लेना और मेहरबानी फ़रमाना। **(160)** अलबत्ता जो लोग (उनमें से) इस्लाम न लाएँ और इसी ग़ैर-इस्लामी हालत पर मर जाएँ, ऐसे लोगों पर (वह) लानत (जिसका ज़िक्र हुआ) अल्लाह की और फ़रिश्तों की और आदमियों की भी सबकी **(161)** (ऐसे तौर पर बरसा करेगी कि) वे हमेशा-हमेशा उसी (लानत) में रहेंगे। उनसे अ़ज़ाब हल्का न होने पाएगा और न (दाख़िल होने से पहले) उनको मोहलत दी जाएगी।[3] **(162)** और (ऐसा माबूद) जो तुम सबके माबूद बनने का मुस्तहिक़ "यानी हक़दार" है, वह तो एक ही (हक़ीक़ी) माबूद है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, (वही) रहमान है और रहीम है।[4] **(163)** ❖

बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद एक रात और दिन के आने में और जहाज़ों में जो कि समुंद्रों में चलते हैं, आदमियों के नफ़े की चीज़ें (और असबाब) लेकर और (बारिश के) पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से बरसाया, फिर उससे ज़मीन को तरोताज़ा किया उसके सूख जाने के बाद, और हर क़िस्म के जानदार उसमें फैला दिए, और हवाओं के बदलने में, और बादल में जो ज़मीन व आसमान के दरमियान मुक़ैयद (और लटका हुआ) रहता है, (तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल (सही सलामत) रखते हैं।[5] **(164)** और एक आदमी वह (भी) हैं जो ख़ुदा तआ़ला के अ़लावा औरों को भी (ख़ुदाई में) शरीक क़रार देते हैं, उनसे ऐसी

(पृष्ठ 42 का शेष) **4.** ऐसे क़त्ल किए गए शख़्स को शहीद कहते हैं, और उसके मुताल्लिक़ अगरचे यह कहना कि वह मर गया सही और जायज़ है लेकिन उसकी मौत को दूसरे मुर्दों के जैसी मौत समझने की मनाही की गई है।

1. यह ख़िताब सारी उम्मत को है, तो सबको समझ लेना चाहिए कि दुनिया मुसीबतों और परेशानियों का घर है, यहाँ के हादसों को अ़जीब और बईद न समझना चाहिए।

2. हज, उमरः और सई का तरीक़ा मसाइल की किताबों में बयान किया गया है, और सई इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़दीक सुन्नते मुसतहिबा है, और इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अ़लैहि व इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़दीक फ़र्ज़ है, और इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़दीक वाजिब है, कि उसके छोड़ने से एक बकरी ज़िब्ह करनी पड़ती है।

3. इस आयत में हक़ के छुपाने पर जो वईद (डाँट-डपट और सज़ा की धमकी) ज़िक्र हुई, हर चन्द कि हर हक़ मामले के बारे में लफ़्ज़ों के एतिबार से आ़म है, लेकिन जुमला "यअ़रिफ़ूनहू कमा यअ़रिफ़ू-न अब्ना-अहुम्" के क़रीने से मक़ाम के ख़ास होने के सबब ज़्यादा मक़सूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रिसालत का मसला है, पस इस लिहाज़ से इस आयत में रिसालत के मसले को साबित करना हुआ, चूँकि तौहीद व रिसालत का एतिक़ाद दोनों शरीअ़त में जुड़े हुए हैं, इसलिए अगली आयत में तौहीद के मसले की तक़रीर फ़रमाई जाती है।

4. अ़रब के मुश्रिक लोगों ने जो आयत "इलाहुकुम् इलाहुन् वाहिदुन्" (यानी ऐसा माबूद जो तुम सबके माबूद **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 46 पर)**

मंय्यत्तख़िज़ु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्युहिब्बू-नहुम् कहुब्बिल्लाहि, वल्लज़ी-न आमनू अशद्दु हुब्बल्-लिल्लाहि, व लौ यरल्लज़ी-न ज़-लमू इज़् यरौनल्-अ़ज़ा-ब अन्नल्-क़ुव्व-त लिल्लाहि जमीअंव्-व अन्नल्ला-ह शदीदुल् अ़ज़ाब **(165)** इज़् त-बर्रअल्लज़ीनत्तुबिअ़ू मिनल्लज़ीनत्-त-बअ़ू व र-अवुल्-अ़ज़ा-ब व त-क़त्तअ़त् बिहिमुल् अस्बाब **(166)** व क़ालल्लज़ीनत्त-बअ़ू लौ अन्-न लना कर्रतन् फ़-न-तबर्र-अ मिन्हुम् कमा तबर्रअू मिन्ना, कज़ालि-क युरीहिमुल्लाहु अअ़्मालहुम् ह-सरातिन् अ़लैहिम्, व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिनन्नार **(167)** ❖

या अय्युहन्नासु कुलू मिम्मा फ़िल्-अर्ज़ि हलालन् तय्यिबंव्-वला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन **(168)** इन्नमा यअ्मुरुकुम् बिस्सू-इ वल्-फ़ह्शा-इ व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून **(169)** व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअ़ू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअ़ु मा अल्फ़ैना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ का-न आबाउहुम् ला यअ़्क़िलू-न शैअंव्-व ला यह्तदून **(170)** व म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू क-म-सलिल्लज़ी यन्अ़िक़ु बिमा ला यस्मअ़ु इल्ला दुआअंव्-व निदाअन्, सुम्मुम् बुक्मुन् अ़ुम्युन् फ़हुम् ला यअ़्क़िलून **(171)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम् वश्कुरू लिल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ़्बुदून **(172)** इन्नमा हर्र-म अ़लैकुमुल्-मै-त-त वद्द-म व लह्मल् ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल बिही लिग़ैरिल्लाहि

لايت لقوم يعقلون ۝ ومن الناس من يتخذ من دون
الله اندادا يحبونهم كحب الله ؕ والذين امنوا اشد حبا
لله ؕ ولو يرى الذين ظلموا اذ يرون العذاب ۙ ان القوة
لله جميعا ۙ وان الله شديد العذاب ۝ اذ تبرا الذين
اتبعوا من الذين اتبعوا وراوا العذاب وتقطعت بهم
الاسباب ۝ وقال الذين اتبعوا لو ان لنا كرة فنتبرا
منهم كما تبرءوا منا ؕ كذلك يريهم الله اعمالهم حسرت
عليهم ؕ وما هم بخرجين من النار ۝ يايها الناس كلوا
مما في الارض حللا طيبا ۖ ولا تتبعوا خطوت الشيطن ؕ
انه لكم عدو مبين ۝ انما يامركم بالسوء والفحشاء و
ان تقولوا على الله ما لا تعلمون ۝ واذا قيل لهم اتبعوا
ما انزل الله قالوا بل نتبع ما الفينا عليه اباءنا ؕ اولو
كان اباؤهم لا يعقلون شيئا ولا يهتدون ۝ ومثل الذين
كفروا كمثل الذي ينعق بما لا يسمع الا دعاء ونداء ؕ
صم بكم عمي فهم لا يعقلون ۝ يايها الذين امنوا كلوا
من طيبت ما رزقنكم واشكروا لله ان كنتم اياه تعبدون ۝

मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से (रखना ज़रूरी) है, और जो मोमिन हैं उनको अल्लाह तआला के साथ क़वी मुहब्बत है,[1] और क्या ख़ूब होता अगर ये ज़ालिम (मुश्रिकीन) जब (दुनिया में) किसी मुसीबत को देखते तो (उसके पेश आने में ग़ौर करके) समझ लिया करते कि सब क़ुव्वत हक़ तआला ही को है, और यह (समझ लिया करते) कि अल्लाह तआला का अ़ज़ाब (आख़िरत में और भी) सख़्त होगा।[2] **(165)** जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से साफ़ अलग हो जाएँगे जो उनके कहने पर चलते थे, और सब अ़ज़ाब को देख लेंगे, और आपस में उनमें जो ताल्लुक़ात थे उस वक़्त सब टूट जाएँगे। **(166)** और (जब) ये पैरोकार लोग यूँ कहने लगेंगे कि किसी तरह हम सबको ज़रा एक दफ़ा (दुनिया में) जाना मिल जाए तो हम भी उनसे साफ़ अलग हो जाएँ, जैसा कि ये हमसे (इस वक़्त) साफ़ अलग हो बैठे, अल्लाह तआला यूँ ही उनकी बद-आमालियों को ख़ाली अरमान करके उनको दिखला देंगे, और उनको दोज़ख़ से निकलना भी नसीब न होगा।[3] **(167)** ❖

ऐ लोगो! जो चीज़ें ज़मीन में मौजूद हैं उनमें से (शरई) हलाल पाक चीज़ों को खाओ (बरतो) और शैतान के क़दम से क़दम मिलाकर मत चलो, हक़ीक़त में वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। **(168)** वह तो तुमको उन्हीं बातों की तालीम करेगा जो कि (शरई तौर पर) बुरी और गन्दी हैं, और यह (भी तालीम करेगा) कि अल्लाह तआला के ज़िम्मे वे बातें लगाओ जिसकी तुम सनद भी नहीं रखते। **(169)** और जब कोई उन (मुश्रिक) लोगों से कहता है कि अल्लाह तआला ने जो हुक्म भेजा है उसपर चलो, तो कहते हैं (नहीं) बल्कि हम तो उसी (तरीक़े) पर चलेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या अगरचे उनके बाप-दादा (दीन की) न कुछ समझ रखते हों और न (किसी आसमानी किताब की) हिदायत रखते हों।[4] **(170)** और इन काफ़िरों की कैफ़ियत (ना-समझी में) उस (जानवर की) कैफ़ियत के जैसी है कि एक शख़्स है, वह ऐसे (जानवर) के पीछे चिल्ला रहा है जो सिवाय बुलाने और पुकारने के कोई बात नहीं सुनता। (इसी तरह ये कुफ़्फ़ार) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, इसलिए समझते कुछ नहीं। **(171)** ऐ ईमान वालो! जो (शरीअ़त की रू से) पाक चीज़ें हमने तुमको इनायत फ़रमाई हैं, उनमें से (जो चाहो) खाओ (बरतो) और हक़ तआला की शुक्र गुज़ारी करो, अगर तुम ख़ास उनके साथ ग़ुलामी (का ताल्लुक़) रखते हो। **(172)** अल्लाह तआला ने तो तुमपर सिर्फ़ हराम किया है मुर्दार को, और ख़ून को (जो बहता हो) और सुअर के गोश्त को, (इसी

(पृष्ठ 44 का शेष) बनने का हक़दार है, वह तो एक ही हक़ीक़ी माबूद है) अपने अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ सुनी तो ताज्जुब से कहने लगे कि कहीं सारे जहान का एक माबूद भी हो सकता है? और अगर यह दावा सही है तो कोई दलील पेश करनी चाहिए। हक़ तआला आगे तौहीद की दलील बयान फ़रमाते हैं।

5. ऊपर की आयतों में तौहीद का सुबूत था, आगे मुश्रिकीन की ग़लती और वईद (डाँट और धमकी) का बयान फ़रमाते हैं।

1. अगर किसी मुश्रिक को यह साबित हो जाए कि मेरे माबूद से मुझपर नुक़सान पड़ेगा तो फ़ौरन मुहब्बत ख़त्म हो जाए, और मोमिन बावजूद इसके कि नफ़े व नुक़सान का पहुँचाने वाला अल्लाह तआला ही को एतिक़ाद करता है, लेकिन फिर भी मुहब्बत व रिज़ा उसकी बाक़ी रहती है।

2. और आख़िरत के अ़ज़ाब को सख़्त फ़रमाया है। आगे उस सख़्ती की कैफ़ियत का बयान फ़रमाते हैं।

3. इस अ़ज़ाब में कई तरह की सख़्ती साबित हुई, हसरत और आग से निकलना न होने की वजह वग़ैरह से। ऊपर मुश्रिकों के अ़क़ीदे के बातिल होने का बयान है, आगे मुश्रिकों के बाज़ आमाल के बातिल होने का बयान है, जैसे साँड का अदब व ताज़ीम वग़ैरह।

4. बाज़ मुश्रिकीन बुतों के नाम पर जानवर छोड़ते थे और उनसे फ़ायदा उठाने को, उनकी ताज़ीम के एतिक़ाद की वजह से हराम समझते थे। और अपने इस फ़ेल को हुक्मे इलाही और अल्लाह तआला की रिज़ा का सबब और उन बुतों की सिफ़ारिश के वास्ते से अल्लाह तआला के क़ुर्ब का ज़रिया समझते थे, इस आयत में इसकी मनाही की गई है।

फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़ला इस्-म अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(173)** इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़लल्लाहु मिनल्-किताबि व यश्तरू-न बिही स-मनन् क़लीलन् उलाइ-क मा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम् इल्लन्ना-र व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल्-क़ियामति व ला युज़क्कीहिम व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(174)** उला-इकल्लज़ीनश्त-रवुज़्-ज़लाल-त बिल्हुदा वल्-अ़ज़ा-ब बिल्-मग़्फ़ि-रति फ़मा अस्ब-रहुम् अ़लन्नार **(175)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह नज़्ज़लल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि, व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़िल्-किताबि लफ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद ◆ **(176)** ❖

लैसल्बिर्-र अन् तुवल्लू वुजू-हकुम् क़ि-बलल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व लाकिन्नल्-बिर्-र मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि वल्मलाइ-कति वल्किताबि वन्नबिय्यी-न व आतल्मा-ल अ़ला हुब्बिही ज़विल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकी-न वब्नस्सबीलि वस्सा-इली-न व फ़िर्रिक़ाबि, व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त वल्मूफ़ू-न बि-अ़ह्दिहिम इज़ा आ़-हदू वस्साबिरी-न फ़िल्-बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ व हीनल्-बअ्सि, उलाइ-कल्लज़ी-न स-दक़ू, व उलाइ-क हुमुल्-मुत्तक़ून **(177)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़िसासु फ़िल्क़त्ला, अल्हुर्रु बिल्हुर्रि वल्अ़ब्दु बिल्अ़ब्दि वल्-उन्सा बिल्-उन्सा, फ़-मन् अ़ुफ़ि-य लहू मिन् अख़ीहि शैउन् फ़त्तिबाअ़ुम् बिलमअ्रूफ़ि व अदाउन् इलैहि

إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل
به لغير الله فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه
إن الله غفور رحيم ۝ إن الذين يكتمون ما أنزل الله من
الكتب ويشترون به ثمنا قليلا أولئك ما يأكلون في
بطونهم إلا النار ولا يكلمهم الله يوم القيمة ولا يزكيهم
ولهم عذاب أليم ۝ أولئك الذين اشتروا الضللة بالهدى
والعذاب بالمغفرة فما أصبرهم على النار ۝ ذلك بأن
الله نزل الكتب بالحق وإن الذين اختلفوا في الكتب
لفي شقاق بعيد ۝ ليس البر أن تولوا وجوهكم قبل
المشرق والمغرب ولكن البر من آمن بالله واليوم
الآخر والملئكة والكتب والنبين وآتى المال على حبه
ذوي القربى واليتمى والمسكين وابن السبيل والسائلين
وفي الرقاب وأقام الصلوة وآتى الزكوة والموفون بعهدهم
إذا عهدوا والصبرين في البأساء والضراء وحين البأس
أولئك الذين صدقوا وأولئك هم المتقون ۝ يأيها الذين
آمنوا كتب عليكم القصاص في القتلى الحر بالحر والعبد

तरह उसके सब अंगों और हिस्सों को भी) और ऐसे जानवर को जो (निकटता हासिल करने के इरादे से) अल्लाह के ग़ैर के लिए नामज़द कर दिया गया हो, फिर भी जो शख़्स (भूख से बहुत ही) बेताब हो जाए, शर्त यह है कि न तो मज़े का तालिब हो और न (ज़रूरत की मात्रा से) आगे बढ़ने वाला हो, तो उस शख़्स पर कोई गुनाह नहीं होता, वाक़ई अल्लाह तआ़ला हैं बड़े बख़्शने वाले, रहम करने वाले।[1] **(173)** इसमें कोई शुब्हा नहीं कि जो लोग अल्लाह की भेजी हुई किताब (के मज़ामीन) को छुपाते हैं और उसके मुआवज़े में (दुनिया की) मामूली क़ीमत और फ़ायदा वसूल करते हैं,[2] ऐसे लोग और कुछ नहीं अपने पेट में आग (के अंगारे) भर रहे हैं, और अल्लाह तआ़ला उनसे न तो क़ियामत में (नरमी और मेहरबानी के साथ) कलाम करेंगे और न (गुनाह माफ़ करके) उनकी सफ़ाई करेंगे, और उनको दर्दनाक सज़ा होगी। **(174)** ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने (दुनिया में तो) हिदायत छोड़कर गुमराही इख़्तियार की और (आख़िरत में) मग़फ़िरत छोड़कर अ़ज़ाब (सर पर लिया) सो दोज़ख़ के लिए कैसे हिम्मत वाले हैं। **(175)** ये (सारी ज़िक्र की गई सज़ाएँ उनको) इस वजह से हैं कि अल्लाह ने (उस) किताब को ठीक़-ठीक भेजा था। और जो लोग (ऐसी) किताब में बेराही करें वे बड़ी दूर के इख़्तिलाफ़ में होंगे।[3] ◆ **(176)** ❖

(कुछ सारा) कमाल इसी में नहीं (आ गया) कि तुम अपना मुँह पूरब को कर लो या पश्चिम को,[4] लेकिन (असली) कमाल तो यह है कि कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला पर यक़ीन रखे, और क़ियामत के दिन पर, और फ़रिश्तों पर, और (सब आसमानी) किताबों पर, और पैग़म्बरों पर, और माल देता हो अल्लाह की मुहब्बत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और (ख़र्च से परेशान) मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दन छुड़ाने में, और नमाज़ की पाबन्दी रखता हो और ज़कात भी अदा करता हो, और जो लोग अपने अ़हदों को पूरा करने वाले हों जब अ़हद कर लें, और (वे लोग) मुस्तक़िल रहने वाले हों तंगदस्ती में और बीमारी में और क़िताल में, ये लोग हैं जो सच्चे (कमाल वाले) हैं, और यही लोग हैं जो (सच्चे) मुत्तक़ी (कहे जा सकते) हैं।[5] **(177)** ऐ

---

1. इस मक़ाम के मुताल्लिक़ चन्द फ़िक़्ही मसाइल हैं। **1:** जिस जानवर का ज़िब्ह करना शरअ़न ज़रूरी हो और वह बिना ज़िब्ह किए हलाक हो जाए वह हराम होता है, और जिस जानवर का ज़िब्ह करना ज़रूरी नहीं हैं वे दो तरह के हैं: एक टिड्डी और मछली, दूसरे जंगली जैसे हिरन वग़ैरह, जबकि उसके ज़िब्ह करने पर ताक़त न हो, तो उसको दूर ही से तीर या और किसी तेज़ हथियार से अगर बिस्मिल्लाह कहकर ज़ख़्मी किया जाए तो हलाल हो जाता है, अलबत्ता बन्दूक़ का शिकार बिना ज़िब्ह किए हलाल नहीं, क्योंकि गोली में धार नहीं होती। **2:** ख़ून जो बहता न हो। इससे दो चीज़ें मुराद हैं: जिगर और तिल्ली, ये हलाल हैं। **3:** ख़िनज़ीर (सुअर) के सब अंग और हिस्से और गोश्त, चर्बी, खाल और पट्ठे वग़ैरह हराम भी हैं और नापाक भी हैं। **4:** जिस जानवर को अल्लाह के ग़ैर के लिए नामज़द इस नीयत से कर दिया हो कि वे हमसे ख़ुश होंगे और हमारी कार्रवाई कर देंगे, वह हराम हो जाता है, अगरचे ज़िब्ह के वक़्त उसपर अल्लाह तआ़ला का नाम लिया हो।

2. ऊपर महसूस होने वाली हराम चीज़ों का ज़िक्र था, इस आयत में उन हराम चीज़ों का बयान है जिन्हें ज़ाहिरी तौर पर महसूस नहीं किया जा सकता, जो यहूदी आ़लिमों की आ़दत थी कि अहकाम ग़लत बयान करके अ़वाम से रिश्वत लेते और खाते थे। तथा इसमें तालीम है उम्मते मुहम्मदिया के आ़लिमों को कि हमने जो कुछ अहकाम बयान किए हैं, किसी नफ़्सानी ग़रज़ और फ़ायदे से उनके बयान व तब्लीग़ में कोताही मत करना।

3. आने वाली आयतों में जो कि सूरः ब-क़रः का बाक़ी का आधा हिस्सा है, ज़्यादा मक़सूद मुसलमानों को बाज़ बुनियादी और कुछ अ़मली चीज़ों की तालीम करना है, अगरचे किसी मज़मून के ताबे होकर ग़ैर-मुस्लिमों को कोई ख़िताब हो जाए। और यह मज़मून सूरः के ख़त्म तक चला गया है, जिसको एक मुख़्तसर उन्वान "बिर्र" से शुरू किया गया है जो कि तमाम ज़ाहिरी व बातिनी नेकियों को आ़म है। और अव्वल आयत में जामे अल्फ़ाज़ से एक तालीम की गई है, आगे इस "बिर्र" की तफ़सील चली है, जिसमें बहुत से अहकाम वक़्त और जगह की ज़रूरत के मुताबिक़ ज़रूरत के बक़द्र बयान फ़रमा कर ख़ुशख़बरी, रहमत और मग़्फ़िरत के वायदे पर ख़त्म फ़रमा दिया।

4. ख़ास सम्तों का क़िस्सा यहाँ इसलिए बयान हुआ है कि क़िब्ला की तब्दीली के वक़्त पूरी की पूरी बहस यहूद व नसारा की इसी में रह गई थी, इसलिए ख़बरदार फ़रमाया कि इससे बढ़कर और काम हैं उनकी पाबन्दी और एहतिमाम करो।

5. ग़रज़ यह कि दीन के असली मक़ासिद और कमालात ये हैं, नमाज़ में किसी सम्त को मुँह करना इन्हें **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 50 पर)**

बि-इह्सानिन्, ज़ालि-क तख़्फ़ीफ़ुम्-मिर्रब्बिकुम् व रह्मतुन्, फ़-मनिअ्तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् अलीम **(178)** व लकुम् फ़िल्क़िसासि हयातुंय्या उलिल्-अल्बाबि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून **(179)** कुति-ब अ़लैकुम् इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु इन् त-र-क ख़ै-रनिल्-वसिय्यतु लिल्वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न बिल्मअ्रूफ़ि हक़्क़न् अ़लल्-मुत्तक़ीन **(180)** फ़-मम् बद्-द लहू बअ्-द मा समि-अ़हू फ़-इन्नमा इस्मुहू अ़लल्लज़ी-न युबद्दिलूनहू, इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम **(181)** फ़-मन् ख़ा-फ़ मिम्-मूसिन् ज-नफ़न् औ इस्मन् फ़-अस्ल-ह बैनहुम् फ़ला इस्-म अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(182)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अ़लैकुमुस्- -सियामु कमा कुति-ब अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून **(183)** अय्यामम्-मअ्दूदातिन्, फ़-मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़-अ़िद्दतुम् मिन् अय्यामिन् उ-ख़-र, व अ़लल्लज़ी-न युतीक़ूनहू फ़िद्यतुन् तआ़मु मिस्कीनिन्, फ़-मन् त-तव्व-अ़ फ़हु-व ख़ैरुल्लहू, व अन् तसूमू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(184)** शह्रु र-मज़ानल्लज़ी उन्ज़ि-ल फ़ीहिल्क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम्-मिनल्हुदा वल्फ़ुर्क़ानि फ़-मन् शहि-द मिन्कुमुश्शह्-र फ़ल्यसुम्हु, व मन् का-न मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़अ़िद्दतुम् मिन् अय्यामिन् उ-ख़-र, युरीदुल्लाहु बिकुमुल्-

بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَىٰ بِالْأُنْثَىٰ ۚ فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ
فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ۗ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ
مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ۝ كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ
خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝ فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَمَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ
عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ فَمَنْ خَافَ
مِنْ مُوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝
أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ
مِسْكِينٍ ۖ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۚ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ
لَكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ
الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ

ईमान वालो! तुमपर क़िसास "यानी बदले" (का क़ानून) फ़र्ज़ किया जाता है, (जान-बूझकर क़त्ल करने से) क़त्ल किए गए लोगों के बारे में, आज़ाद आदमी आज़ाद अदमी के बदले में और गुलाम गुलाम के बदले में, और औ़रत औ़रत के बदले में। हाँ जिसको उसके फ़रीक़ की तरफ़ से कुछ माफ़ी हो जाए (मगर पूरी न हो) तो (दावा करने वाले के ज़िम्मे) माकूल तौर पर (ख़ून की क़ीमत का) मुतालबा करना और (क़ातिल के ज़िम्मे) ख़ूबी के साथ उसके पास पहुँचा देना (है), यह (माफ़ करने और ख़ून की क़ीमत लेने का क़ानून) तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से (सज़ा में) कमी और (शाहाना) रहम करना है। फिर जो शख़्स उसके बाद ज़्यादती करेगा तो उस शख़्स को बड़ा दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। **(178)** और ऐ समझदार लोगो! बदले (के इस क़ानून) में तुम्हारी जानों का बड़ा बचाव है, (हम) उम्मीद (करते हैं) कि तुम लोग (ऐसे अमन वाले क़ानून की ख़िलाफ़-वर्ज़ी करने से) परहेज़ रखोगे। **(179)** तुमपर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब किसी को मौत नज़दीक मालूम होने लगे, शर्त यह है कि कुछ माल भी अपने पीछे छोड़ा हो, तो माँ-बाप और रिश्तेदारों व क़रीबी लोगों के लिए माकूल तौर पर (जो कि कुल मिलाकर एक तिहाई से ज़्यादा न हो) कुछ-कुछ बतला जाए, (इसका नाम वसीयत है) जिनको ख़ुदा का ख़ौफ़ है उनके ज़िम्मे यह ज़रूरी है।[1] **(180)** फिर जो शख़्स उस (वसीयत) के सुन लेने के बाद उसको तब्दील करेगा तो उसका गुनाह उन्हीं लोगों को होगा जो उसको तब्दील करेंगे, अल्लाह तआ़ला तो यक़ीनन सुनते, जानते हैं। **(181)** हाँ, जिस शख़्स को वसीयत करने वाले की जानिब से किसी बेइन्तिज़ामी की या किसी जुर्म के करने की तहक़ीक़ हुई हो, फिर यह शख़्स उनमें आपस में सुलह-सफ़ाई करा दे तो इसपर कोई गुनाह नहीं, वाक़ई अल्लाह तआ़ला (तो ख़ुद गुनाहों के) माफ़ करने वाले हैं (और गुनाहगारों पर) रहम करने वाले हैं। **(182)** ❖

ऐ ईमान वालो! तुमपर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया, जिस तरह तुमसे पहले (वाली उम्मतों के) लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था, इस उम्मीद पर कि तुम (रोज़े की बदौलत धीरे-धीरे) परहेज़गार बन जाओ।[2] **(183)** थोड़े दिनों (रोज़ा रख लिया करो) फिर (इसमें भी इतनी आसानी है कि) जो शख़्स तुममें (ऐसा) बीमार हो (जिसमें रोज़ा रखना मुश्किल या नुक़सानदेह हो) या (शरई) सफ़र में हो तो दूसरे दिनों का शुमार (करके उनमें रोज़े) रखना (उसपर वाजिब) है, और (दूसरी आसानी जो बाद में मन्सूख़ हो गई यह है कि) जो लोग (रोज़े की) ताक़त रखते हों उनके ज़िम्मे फ़िदया है (कि वह) एक ग़रीब का खाना (खिला देना या दे देना है), और जो शख़्स ख़ुशी से (ज़्यादा) ख़ैर करे (कि ज़्यादा फ़िदया दे) तो उस शख़्स के लिए और भी बेहतर है। और तुम्हारा रोज़ा रखना (इस हाल में) ज़्यादा बेहतर है अगर तुम (रोज़े की फ़ज़ीलत की) ख़बर रखते हो।[3] **(184)** (वे थोड़े दिन) रमज़ान का महीना है जिसमें क़ुरआन मजीद

(पृष्ठ 48 का शेष) ज़िक्र हुए कमालात में से एक ख़ास कमाल यानी नमाज़ के क़ायम करने की शर्तों और ताबे चीज़ों में से है, और उसके अच्छा होने से इसमें भी अच्छाई और कमाल आ गया, वरना अगर नमाज़ न होती तो किसी ख़ास सम्त को मुँह करना भी इबादत न होता।

1. इस हुक्म के तीन हिस्से थेः एक सिवाय औलाद के अ़लावा वारिसों के हिस्सों व हुक़ूक़ का तर्के में मुक़र्रर न होना। दूसरे ऐसे रिश्तेदारों और क़रीबी लोगों के लिए वसीयत का वाजिब होना। तीसरे एक तिहाई माल से ज़्यादा वसीयत की इजाज़त न होना। पस पहला हिस्सा तो मीरास की आयत से मन्सूख़ है, दूसरा हिस्सा हदीस से जो कि इज्मा के ज़रिए ताईद-शुदा है मन्सूख़ है, और वाजिब होने के साथ जायज़ होना भी मन्सूख़ हो गया, यानी शरई वारिस के लिए माल की वसीयत बातिल है। तीसरा हिस्सा अब भी बाक़ी है, एक तिहाई से ज़्यादा में बिना बालिग़ वारिसों की रज़ामन्दी के वसीयत बातिल है।
2. रोज़ा रखने से नफ़्स को उसके अनेक तक़ाज़ों से रोकने की आ़दत पड़ेगी, और इसी आ़दत की पुख़्तगी तक़्वे की बुनियाद है। यह रोज़े की एक हिक्मत का बयान है, लेकिन हिक्मत इसी में सीमित नहीं हो गई, ख़ुदा जाने और क्या-क्या हज़ारों हिक्मतें होंगी।
3. अब यह हुक्म मन्सूख़ है, अलबत्ता जो शख़्स बहुत बूढ़ा हो या ऐसा बीमार हो कि अब सेहत की उम्मीद नहीं, ऐसे लोगों के लिए यह हुक्म अब भी है।

युस्-र व ला युरीदु बिकुमुल्- अ़ुस्-र व लितुक्मिलुल्- अ़िद्द-त व लितुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम् व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(185)** व इज़ा स-अ-ल-क अ़िबादी अ़न्नी फ़-इन्नी क़रीबुन्, उजीबु दअ़्-वतद्दाअ़ि इज़ा दअ़ानि फ़ल्यस्तजीबू ली वल्युअ्मिनू बी लअ़ल्लहुम् यर्शुदून **(186)** उहिल्-ल लकूम् लै-लतस्सियामिर्र-फ़सु इला निसा-इकूम, हुन्-न लिबासुल्लकूम् व अन्तुम् लिबासुल्-लहुन्-न, अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम् तख़्तानू-न अन्फु-सकुम् फ़ता-ब अ़लैकुम् व अ़फ़ा अ़न्कुम् फ़ल्आ-न बाशिरूहुन्-न वब्तग़ू मा क-तबल्लाहु लकुम् व कुलू वश्रबू हत्ता य-तबय्य-न लकुमुल्ख़ैतुल्-अब्यज़ु मिनल्ख़ैतिल्-अस्वदि मिनल्-फ़ज्रि सुम्-म अतिम्मुस्-सिया-म इलल्लैलि व ला तुबाशिरूहुन्-न व अन्तुम् आ़किफ़ू-न फ़िल्-मसाजिदि, तिल्-क हुदूदुल्लाहि फ़ला तक़रबूहा, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु आयातिही लिन्नासि लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून **(187)** व ला तअ्कुलू अम्वा-लकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि व तुद्लू बिहा इलल्-हुक्कामि लितअ्कुलू फ़रीक़म् मिन् अम्वालिन्नासि बिल्इस्मि व अन्तुम् तअ्लमून **(188)** ❖

यस्अलून-क अ़निल्-अहिल्लति, क़ुल् हि-य मवाक़ीतु लिन्नासि वल्-हज्जि, व लैसल्बिर्रु

شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ
سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ
بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ
أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي
لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۝ أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ
نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ
أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ ۖ
فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا
حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ
الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ
عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم
بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ
أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ
قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا

भेजा गया है,[1] जिसका (एक) वस्फ़ 'यानी ख़ूबी' यह है कि लोगों के लिए हिदायत (का ज़रिया) है, और (दूसरा वस्फ़) वाज़ेह दलालत करने वाला है उन सब किताबों में जो कि हिदायत (का ज़रिया भी) हैं और (हक़ व बातिल में) फ़ैसला करने वाली (भी) हैं। सो जो शख़्स इस महीने में मौजूद हो उसको ज़रूर इस (महीने) में रोज़ा रखना चाहिए, और जो शख़्स बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों का (उतना ही) शुमार (करके उनमें रोज़ा) रखना (उसपर वाजिब) है। अल्लाह को तुम्हारे साथ (अहकाम में) आसानी करना मन्ज़ूर है, और तुम्हारे साथ (अहकाम व क़वानीन मुक़र्रर करने में) दुश्वारी मन्ज़ूर नहीं, और ताकि तुम लोग (अदा या क़ज़ा के दिनों के) शुमार को पूरा कर लिया करो, (कि सवाब में कमी न रहे) इसलिए तुम लोग अल्लाह की बड़ाई (व तारीफ़) बयान किया करो, इसपर कि तुमको (एक ऐसा) तरीक़ा बतला दिया (जिससे तुम रमज़ान की बरकतों और फ़ायदों से महरूम न रहोगे) और (उ़ज़्र की वजह से ख़ास रमज़ान में रोज़े न रखने की इजाज़त इसलिए दे दी) ताकि तुम लोग (इस आसानी की नेमत पर अल्लाह का) शुक्र अदा किया करो। **(185)** और जब आपसे मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक़ दरियाफ़्त करें तो (आप मेरी तरफ़ से फ़रमा दीजिए कि) मैं क़रीब ही हूँ, (और नामुनासिब दरख़्वास्त को छोड़कर) मन्ज़ूर कर लेता हूँ (हर) अ़र्ज़ी दरख़्वास्त करने वाले की, जबकि वह मेरे हुज़ूर में दरख़्वास्त दे, सो उनको चाहिए कि मेरे अहकाम को क़बूल किया करें और मुझपर यक़ीन रखें, उम्मीद है कि वे लोग हिदायत (व फ़लाह) हासिल कर सकेंगे।[2] **(186)** तुम लोगों के लिए रोज़े की रात में अपनी बीवियों से मश्ग़ूल होना हलाल कर दिया गया, क्योंकि वे तुम्हारे ओढ़ने-बिछौने (की जगह) हैं, और तुम उनके ओढ़ने-बिछौने (जैसे) हो, ख़ुदा तआ़ला को इसकी ख़बर थी कि तुम ख़ियानत (कर) के गुनाह में अपने को मुब्तला कर रहे थे, (मगर) ख़ैर अल्लाह तआ़ला ने तुमपर इनायत फ़रमाई और तुमसे गुनाह को धो दिया।[3] सो अब उनसे मिलो-मिलाओ, और जो (इजाज़त का क़ानून) अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए तजवीज़ कर दिया है (बिला तकल्लुफ़) उसका सामान करो, और खाओ और पियो (भी) उस वक़्त तक कि तुमको सफ़ेद ख़त (यानी सुबहे सादिक़ का नूर) अलग मालूम हो जाए काले ख़त से।[4] फिर (सुबहे सादिक़ से) रात तक रोज़ा पूरा किया करो, और उन (बीवियों) से अपना बदन भी मत मिलने दो जिस ज़माने में कि तुम लोग एतिकाफ़ वाले हो मस्जिदों में।[5] ये ख़ुदाई ज़ाबते हैं, सो इन (से निकलने) के नज़दीक भी मत हो, इसी तरह अल्लाह तआ़ला अपने (और) अहकाम (भी) लोगों (की इस्लाह) के वास्ते बयान फ़रमाते हैं, इस उम्मीद पर कि वे लोग (बाख़बर होकर ख़िलाफ़ करने से) परहेज़ रखें। **(187)** और आपस में एक-दूसरे के माल नाहक़ (तौर पर) मत खाओ, और उन (के झूठे

---

1. क़ुरआन मजीद में दूसरी आयत में आया है कि हमने क़ुरआन मजीद शबे क़दर में नाज़िल फ़रमाया, और यहाँ रमज़ान शरीफ़ में नाज़िल करना फ़रमाया है। सो वह शबे क़दर रमज़ान की थी, इसलिए दोनों मज़्मून मुवाफ़िक़ हो गए। और अगर यह वस्वसा हो कि क़ुरआन मजीद तो कई साल में थोड़ा-थोड़ा करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल हुआ है फिर रमज़ान या शबे क़दर में नाज़िल फ़रमाने के क्या मायने? इसका जवाब यह है कि क़ुरआन लौहे-महफ़ूज़ से दुनिया के आसमान पर एक ही बार में रमज़ान की शबे क़दर में नाज़िल हो चुका था, फिर दुनिया के आसमान से दुनिया में धीरे-धीरे कई साल में नाज़िल हुआ। पस इसमें भी इख़्तिलाफ़ और टकराव न रहा।

2. यह जो फ़रमाया कि मैं क़रीब हूँ तो जिस तरह हक़ तआ़ला की ज़ात की हक़ीक़त बेनज़ीर व बेमिस्ल होने की वजह से महसूस नहीं की जा सकती, उसी तरह उनकी सिफ़ात की हक़ीक़त भी मालूम नहीं हो सकती, इसलिए ऐसी चीज़ों में ज़्यादा खोज-बीन जायज़ नहीं।

3. शुरू इस्लाम में यह हुक्म था कि रात को एक बार नींद आ जाने से आँख खुलने के बाद खाना-पीना और बीवी के पास जाना हराम हो जाता था। कुछ सहाबा से ग़ल्बे में इस हुक्म के पूरा करने में कोताही हो गई, फिर शर्मिन्दा होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इत्तिला की। उनकी शर्मिन्दगी और तौबा पर हक़ तआ़ला ने रहमत फ़रमाई और इस हुक्म को मन्सूख़ कर दिया।

4. मुराद अलग और फ़र्क़ मालूम होने से यह है कि सुबह सादिक़ निकल आए।

5. एतिकाफ़ की हालत में बीवी के साथ सोहबत और इसी तरह चूमना और लिपटाना सब हराम है। एतिकाफ़ सिर्फ़ ऐसी मस्जिद में जायज़ है जिसमें पाँचों वक़्त जमाअ़त से नमाज़ का इन्तिज़ाम हो। जो एतिकाफ़ रमज़ान में न हो उसमें भी रोज़ा शर्त है। एतिकाफ़ वाले को मस्जिद से किसी वक़्त बाहर निकलना दुरुस्त नहीं, अलबत्ता जो काम बहुत ही लाचारी के हैं जैसे पाख़ाना या कोई खाना लाने वाला न हो तो घर से खाना ले आना या जामा मस्जिद में जुमा की नमाज़ के लिए बाहर जाना दुरुस्त है, लेकिन घर या रास्ते में ठहरना दुरुस्त नहीं। अगर औ़रत एतिकाफ़ करना चाहे तो जो जगह उसकी नमाज़ पढ़ने की मुक़र्रर है उसी जगह एतिकाफ़ भी दुरुस्त है।

बि-अन्तअ्तुल्-बुयू-त मिन् ज़ुहूरिहा व ला किन्नल्बिर्-र मनित्तक़ा वअ्तुल्-बुयू-त मिन् अब्वाबिहा वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(189)** व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न युक़ातिलू-नकुम् व ला तअ्तदू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुअ्तदीन **(190)** वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम् व अख़्रिजूहुम् मिन् हैसु अख़्रजूकुम् वल्फ़ित्नतु अशद्दु मिनल्-क़त्लि व ला तुक़ातिलूहुम् अिन्दल्-मस्जिदिल्- हरामि हत्ता युक़ातिलूकुम् फ़ीहि, फ़-इन् क़ा-तलूकुम् फ़क़्तुलूहुम्, कज़ालि-क जज़ाउल्-काफ़िरीन **(191)** फ़-इनिन्तहौ फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(192)** व क़ातिलूहुम् हत्ता ला तकू-न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु लिल्लाहि, फ़-इनिन्तहौ फ़ला अ़ुद्वा-न इल्ला अ़लज़्ज़ालिमीन **(193)** अश्शह्रुल्-हरामु बिश्शह्रिल्-हरामि वल्-हुरुमातु क़िसासुन्, फ़-मनिअ्तदा अ़लैकुम् फ़अ्तदू अ़लैहि बिमिस्लि मअ्तदा अ़लैकुम् वत्तक़ुल्ला-ह वअ़्लमू अन्नल्ला-ह म-अ़ल्मुत्तक़ीन **(194)** व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहिं व ला तुल्क़ू बिऐदीकुम् इलत्तह्लु-कति, व अह्सिनू इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुह्सिनीन **(195)** व अतिम्मुल्-हज्-ज वल्-अ़ुम्र-त लिल्लाहि, फ़-इन् उह्सिर्तुम् फ़-मस्तै-स-र मिनल्-हद्यि व ला तह्लिक़ू रुऊ-सकुम् हत्ता यब्लुग़ल्-हद्यु महिल्लहू, फ़-मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ बिही अज़म्-मिर्रअ्सिही फ़-फ़िद्यतुम्-मिन् सियामिन् औ स-द-क़तिन् औ नुसुकिन् फ़-इज़ा अमिन्तुम फ़-मन् तमत्त-अ़ बिल्-उ़म्रति इलल्-हज्जि

الْبُيُوتَ مِن ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا الْبُيُوتَ
مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُم
مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ
عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِن قَاتَلُوكُمْ
فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ
الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾
الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ
اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩٤﴾ وَأَنفِقُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَأَحْسِنُوا ۛ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٥﴾ وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ
أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ
حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ بِهِ

मुक़द्दमे) को हाकिमों के यहाँ इस ग़रज़ से रुजू मत करो कि (उसके ज़रिए से) लोगों के मालों का एक हिस्सा गुनाह के तरीक़े पर (यानी ज़ुल्म से) खा जाओ और तुमको (अपने झूठ और ज़ुल्म का) इल्म भी हो। **(188)** ❖

आपसे चाँदों के हालात की तहक़ीक़ात करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि वह (चाँद) वक़्तों के पहचानने का आला "यानी यन्त्र" है, लोगों (के इख़्तियारी मामलात जैसे इद्दत और हुक़ूक़ के मुतालबे) के लिए, (और ग़ैर-इख़्तियारी इबादात जैसे रोज़ा, ज़कात वग़ैरह) और हज के लिए।[1] और इसमें कोई फ़ज़ीलत नहीं कि घरों में उनकी पुश्त की तरफ़ से आया करो, हाँ लेकिन फ़ज़ीलत यह है कि कोई शख़्स (हराम चीज़ों से) बचे, और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ,[2] और ख़ुदा तआ़ला से डरते रहो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो। **(189)** और (बेतकल्लुफ़) तुम लड़ो अल्लाह की राह में, उन लोगों के साथ जो (अ़हद को तोड़ कर) तुम्हारे साथ लड़ने लगें और (अपनी तरफ़ से मुआ़हदे की) हद से न निकलो। वाक़ई अल्लाह तआ़ला (शरई क़ानून की) हद से निकलने वालों को पसन्द नहीं करते। **(190)** और (जिस हालत में वे ख़ुद अ़हद तोड़ें उस वक़्त चाहे) उनको क़त्ल करो जहाँ उनको पाओ और (चाहे) उनको निकाल बाहर करो जहाँ से उन्होंने तुमको निकलने पर मजबूर किया है, और शरारत क़त्ल से भी ज़्यादा सख़्त है, और उनके साथ मस्जिदे हराम के (आस) पास में (जो कि हरम कहलाता है) क़िताल मत करो जब तक कि वे लोग वहाँ तुमसे ख़ुद न लड़ें। हाँ अगर वे (काफ़िर लोग) ख़ुद ही लड़ने का सामान करने लगें तो तुम (भी) उनको मारो, ऐसे काफ़िरों की (जो हरम में लड़ने लगें) ऐसी ही सज़ा है। **(191)** फिर अगर वे लोग (अपने कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँ (और इस्लाम क़बूल कर लें) तो अल्लाह तआ़ला बख़्श देंगे और मेहरबानी फ़रमा देंगे। **(192)** और उनके साथ इस हद तक लड़ो कि अ़क़ीदे का बिगाड़ (यानी शिर्क) न रहे और (उनका) दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो जाए। और अगर वे लोग कुफ़्र से बाज़ आ जाएँ तो सख़्ती किसी पर नहीं हुआ करती सिवाय बेइन्साफ़ी करने वालों के। **(193)** हुर्मत वाला महीना है हुर्मत वाले महीने के बदले, और (ये) हुर्मतें तो बदला मुआवज़ा (की चीज़ें) हैं, सो जो तुमपर ज़्यादती करे तो तुम भी उसपर ज़्यादती करो जैसी उसने तुमपर ज़्यादती की है, और अल्लाह से डरते रहो और यक़ीन कर लो कि अल्लाह तआ़ला डरने वालों के साथ होते हैं।[3] **(194)** और तुम लोग (जान के साथ माल भी) ख़र्च किया करो अल्लाह की राह में, और अपने आपको अपने हाथों तबाही में मत डालो,[4] और काम अच्छी तरह किया करो बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला पसन्द करते हैं अच्छी तरह काम करने

---

1. शरीअ़त ने बुनियादी तौर पर चाँद के हिसाब पर अहकाम व इबादतों का मदार रखा है कि सबका जमा होना व इत्तिफ़ाक़ इन उमूर में सहूलत से मुम्किन हो, फिर कुछ अहकाम में तो इस हिसाब पर लाज़िम कर दिया है कि उनमें दूसरे हिसाब पर मदार रखना जायज़ ही नहीं, जैसे हज, रमज़ान के रोज़े, दोनों ईद, ज़कात और इद्दत व तलाक़ वग़ैरह। और कुछ में अगरचे इख़्तियार दिया है, जैसे कोई चीज़ ख़रीदी और वायदा ठहरा कि इस वक़्त से एक साल सूरज के हिसाब से गुज़रने पर क़ीमत अदा करेंगे, इसमें शरीअ़त ने मजबूर नहीं किया कि चाँद के हिसाब से साल पूरा हो जाने पर मुतालबे का हक़ हो जाएगा। लेकिन इसमें शक नहीं है कि अगर शुरू में चाँद के हिसाब पर मदार रखा जाए तो आ़म तौर पर सहूलत उसमें है।

2. कई लोग इस्लाम से पहले हज के एहराम की हालत में अगर किसी ज़रूरत से घर जाना चाहते तो दरवाज़े से जाना मना समझते, इसलिए पीछे की दीवार में नक़्ब देकर उसमें से अन्दर जाते थे, और इस अ़मल को फ़ज़ीलत का सबब समझते थे। हक़ तआ़ला इसके मुताल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं कि इसमें कोई फ़ज़ीलत नहीं कि घरों में उनकी पुश्त की तरफ़ से आया करो। इससे एक बड़े काम की बात मालूम होती है कि जो चीज़ शरीअ़त में मुबाह हो उसको नेकी व इबादत एतिक़ाद कर लेना इसी तरह उसको गुनाह और मलामत का मौक़ा एतिक़ाद कर लेना शरअ़न् बुरा है और बिद्अ़त में दाख़िल है।

3. काफ़िरों के साथ क़िताल करने की पहल करना जायज़ है जबकि उसके जायज़ होने की शर्तें पाई जाएँ। जज़ीरा-ए-अ़रब के अन्दर कुफ़्फ़ार को वतन बनाने की इजाज़त नहीं।

4. यह जो फ़रमाया है कि "अपने हाथों" इस क़ैद लगाने का हासिल यह है कि अपने इख़्तियार से कोई काम ख़िलाफ़े हुक्म न करे, और जो बिना इरादे व इख़्तियार के कुछ हो जाए तो वह माफ़ है।

फ़-मस्तै-स-र मिनल्-हद्‌यि फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल्-हज्जि व सब्-अतिन् इज़ा रजअ्तुम, तिल्-क अ़-श-रतुन् कामि-लतुन्, ज़ालि-क लिमल्-लम् यकुन् अह्लुहू हाज़िरिल्-मस्जिदिल्-हरामि, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब **(196)** ❖

अल्हज्जु अश्हुरुम्-मअ्लूमातुन् फ़-मन् फ़-र-ज़ फ़ीहिन्नल्-हज्-ज फ़ला र-फ़-स व ला .फ़ु-सू-क़ व ला जिदा-ल फ़िल्-हज्जि, व मा तफ़्अ़लू मिन् खै़रिंय्-यअ्लम्हुल्लाहु, व तज़व्वदू फ़-इन्-न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा वत्तक़ूनि या उलिल्-अल्बाब **(197)** लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तब्तग़ू फ़ज़्लम्-मिर्रब्बिकुम, फ़-इज़ा अफ़ज़्तुम् मिन् अ़-रफ़ातिन् फ़ज़्कुरुल्ला-ह अ़िन्दल्-मश्अ़रिल्-हरामि वज़्कुरूहु कमा हदाकुम् व इन् कुन्तुम् मिन् क़ब्लिही ल-मिनज़्ज़ाल्लीन **(198)**

أَذًى مِّن رَّأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ
فَإِذَا أَمِنتُمْ فَمَن تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَ
سَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ذَٰلِكَ لِمَن لَّمْ يَكُنْ
أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَاتٌ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ
الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفْعَلُوا
مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ وَ
اتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا
فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ فَإِذَا أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ
عِندَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِن كُنتُم مِّن
قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ فَإِذَا قَضَيْتُم
مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا فَمِنَ
النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي

सुम्-म अफ़ीज़ू मिन् हैसु अफ़ाज़न्नासु वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(199)** फ़-इज़ा क़ज़ैतुम् मनासि-ककुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह क-ज़िक्रिकुम् अबा-अकुम् औ अशद्-द ज़िक्रन्, फ़-मिनन्नासि मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या व मा लहू फ़िल्-आख़ि-रति मिन् ख़लाक़ **(200)** व मिन्हुम् मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल्-

❖ रु. 24/8/8

वालों को। **(195)** और (जब हज व उमरः करना हो तो उस) हज व उमरे को अल्लाह तआला के वास्ते पूरा-पूरा अदा किया करो। फिर अगर (किसी दुश्मन या बीमारी के सबब) रोक दिए जाओ तो क़ुर्बानी का जानवर जो कुछ मयस्सर हो (ज़िब्ह करो) और अपने सरों को उस वक़्त तक न मुंडवाओ जब तक कि क़ुर्बानी अपनी जगह पर न पहुँच जाए, (और वह जगह हरम है, कि किसी के हाथ वहाँ जानवर भेज दिया जाए)। अलबत्ता अगर तुममें से कोई बीमार हो या उसके सर में कुछ तकलीफ़ हो, (जिससे पहले ही सर मुंडाने की ज़रूरत पड़ जाए) तो (वह सर मुँडवाकर) फ़िदया (यानी उसका शरई बदला) दे दे (तीन) रोज़े से या (छह मिस्कीनों को) ख़ैरात दे देने या (एक बकरी) ज़िब्ह कर देने से, फिर जब अमन की हालत में हो (या तो पहले ही से कोई ख़ौफ़ पेश न आया हो, या होकर जाता रहा हो) तो जो शख़्स उमरः से उसको हज के साथ मिलाकर मुनतफ़ा हुआ हो (यानी हज के दिनों में उमरः भी किया हो) तो जो कुछ क़ुर्बानी मयस्सर हो (ज़िब्ह) करे, (और जिसने सिर्फ़ उमरः या सिर्फ़ हज किया हो, उसपर हज वग़ैरह के मुताल्लिक़ कोई क़ुर्बानी नहीं)। फिर जिस शख़्स को क़ुर्बानी का जानवर मयस्सर न हो तो (उसके ज़िम्मे) तीन दिन के रोज़े हैं हज (के दिनों) में, और सात हैं जबकि (हज से) तुम्हारे लौटने का वक़्त आ जाए, ये पूरे दस हुए। यह उस शख़्स के लिए है जिसके अहल (व अ़याल) ''यानी बाल-बच्चे और घर वाले'' मस्जिदे हराम (यानी काबा) के क़रीब में न रहते हों (यानी क़रीब का वतन रखने वाला न हो) और अल्लाह तआला से डरते रहो (कि किसी बात में हुक्म के ख़िलाफ़ न हो जाए) और जान लो कि बेशक अल्लाह तआला (बेबाकी और मुख़ालफ़त करने वालों को) सख़्त सज़ा देते हैं।[1] **(196)** ❖

हज (का ज़माना) चन्द महीने हैं जो मालूम हैं, (शव्वाल, ज़ीक़ादा और ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ें) सो जो शख़्स इनमें हज मुक़र्रर करे तो फिर (उसको) न कोई गन्दी बात (जायज़) है और न कोई नाफ़रमानी (दुरुस्त) है, और न किसी क़िस्म का झगड़ा (मुनासिब) है। हज में[2] जो नेक काम करोगे ख़ुदा तआला को उसकी इत्तिला होती है, और (जब हज को जाने लगो) ख़र्च ज़रूर ले लिया करो क्योंकि सबसे बड़ी बात ख़र्च में (भीख माँगने से) बचा रहना है, और ऐ अ़क़्ल वालो! मुझसे डरते रहो।[3] **(197)** तुमको इसमें ज़रा भी गुनाह नहीं कि (हज में) रोज़ी की तलाश करो,[4] जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से है, फिर जब तुम लोग अ़रफ़ात से वापस आने लगो तो मश्अ़रे हराम के पास (मुज़दलिफ़ा में रात को ठहर करके) ख़ुदा तआला की याद करो,[5] और (इस तरह) याद करो जिस तरह तुमको बतला रखा है, (न यह कि अपनी राय को दख़ल दो) और हक़ीक़त में इससे पहले तुम महज़ अन्जान ही थे। **(198)** फिर तुम सबको ज़रूरी है कि उसी जगह होकर वापस आओ जहाँ और लोग जाकर वहाँ से वापस आते हैं, और (हज के अहकाम में पुरानी रस्मों पर अ़मल करने से) अल्लाह के सामने तौबा करो, यक़ीनन अल्लाह

---

1. औ़रत को सर मुंडाना हराम है, वह सिर्फ़ एक-एक उंगल बाल काट डाले। हज तीन तरह का होता हैः ''इफ़राद'' कि हज के दिनों में सिर्फ़ हज किया जाए। और ''तमत्तो'' और ''क़िरान'' जिनमें हज के दिनों में उमरः और हज दोनों किए जाएँ। इफ़राद हर शख़्स को जायज़ है और तमत्तो और क़िरान सिर्फ़ उन लोगों को जायज़ है जो ''मीक़ात'' की हदों से बाहर रहते हैं। और जो लोग ''मीक़ात'' के अन्दर रहते हैं उनके लिए तमत्तो और क़िरान की इजाज़त नहीं है।

2. गन्दी और बेहूदा बातें दो तरह की हैंः एक वह जो पहले ही से हराम है, वह हज की हालत में ज़्यादा हराम होगी। दूसरे वह कि पहले से हलाल थी जैसे अपनी बीवी से बेपर्दगी की बातें करना, हज में यह भी दुरुस्त नहीं।

3. बेख़र्च लिए हुए ऐसे शख़्स को हज को जाना दुरुस्त नहीं जिसके नफ़्स में तवक्कुल की ताक़त न हो।

4. हज में तिजारत यक़ीनन मुबाह (जायज़ और दुरुस्त) है, अब रही यह बात कि इख़्लास के ख़िलाफ़ तो नहीं, सो इसमें इसका हुक्म और जायज़ चीज़ों की तरह है कि दारो-मदार नीयत पर होता है।

5. ज़माना-ए-जाहिलियत में क़ुरैश अ़रफ़ात में न जाते थे, मुज़दलिफ़ा ही में ठहर कर वहाँ से लौट आते थे, इसलिए अल्लाह तआला ने इस आयत में इन अहकाम का आ़म होना बतला दिया।

आख़ि-रति ह-स-नतंव्-व क़िना अ़ज़ाबन्नार **(201)** उलाइ-क लहुम् नसीबुम् मिम्मा क-सबू, वल्लाहु सरीअ़ुल् हिसाब ● **(202)** वज़्कुरुल्ला-ह फ़ी अय्यामिम्-मअ़्दूदातिन् फ़-मन् त-अ़ज्ज-ल फ़ी यौमैनि फ़ला इस्-म अ़लैहि व मन् त-अख़्ख़-र फ़ला इस्-म अ़लैहि लि-मनित्तक़ा, वत्तक़ुल्ला-ह वअ़्लमू अन्नकुम् इलैहि तुह्शरून **(203)** व मिनन्नासि मंय्युअ़्जिबु-क क़ौलुहू फ़िल्हयातिद्दुन्या व युश्हिदुल्ला-ह अ़ला मा फ़ी क़ल्बिही व हु-व अलद्दुल्-ख़िसाम **(204)** व इज़ा तवल्ला सआ़ फ़िल्अर्ज़ि लियुफ़्सि-द फ़ीहा व युह्लिकल्-हर्-स वन्नस्-ल, वल्लाहु ला युहिब्बुल् फ़साद **(205)** व इज़ा क़ी-ल लहुत्तक़िल्ला-ह अ-ख़ज़त्हुल्-अ़िज़्ज़तु बिल्-इस्मि फ़-हस्बुहू जहन्नमु, व लबिअ्सल्-मिहाद **(206)** व मिनन्नासि मंय्यश्री नफ़्सहुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि,

سیقول ٢   ٣٠   البقرة ٢

الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا
كَسَبُوْا ۚ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ
فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ
عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ
اللّٰهَ عَلٰي مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ۝ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى
فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ
فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ
نَفْسَهُ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَاۗفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا
جَاۗءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ
اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَ
قُضِيَ الْاَمْرُ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ
كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

منزل ١

वल्लाहु रऊफ़ुम् बिल्-अ़िबाद **(207)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तंव्-व ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन **(208)** फ़-इन् ज़लल्तुम् मिम्-बअ़्दि मा जा-अत्कुमुल्-बय्यिनातु फ़अ़्लमू अन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(209)** हल्

तआ़ला माफ़ कर देंगे (और) मेहरबानी फ़रमा देंगे। **(199)** फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर चुको तो हक़ तआ़ला का (इस तरह) ज़िक्र किया करो जिस तरह तुम अपने बापों (और दादाओं) का ज़िक्र किया करते हो, बल्कि यह ज़िक्र उससे (कई दरजे) बढ़कर हो।[1] सो बाज़े आदमी (जो कि काफ़िर हैं) ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार हमको (जो कुछ देना हो) दुनिया में दे दीजिए, और ऐसे शख़्स को आख़िरत में (आख़िरत के इनकार करने की वजह से) कोई हिस्सा न मिलेगा। **(200)** और बाज़े आदमी (जो कि मोमिन हैं) ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको दुनिया में भी बेहतरी इनायत कीजिए और आख़िरत में भी बेहतरी दीजिए और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचाइए। **(201)** ऐसे लोगों को (दोनों जहान में) बड़ा हिस्सा मिलेगा उनके अ़मल की बदौलत, और अल्लाह तआ़ला जल्द ही हिसाब लेने वाले हैं।[2] ● **(202)** और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करो कई दिन तक, फिर जो शख़्स दो दिन में (मक्का वापस आने में) जल्दी करे उसपर भी कुछ गुनाह नहीं, और जो शख़्स (दो दिन में) ताख़ीर "यानी देरी" करे उसपर भी कुछ गुनाह नहीं उस शख़्स के लिए जो (ख़ुदा से) डरे, और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और ख़ूब यक़ीन रखो कि तुम सबको ख़ुदा के ही पास जमा होना है। **(203)** और बाज़ा आदमी ऐसा भी है कि आपको उसकी गुफ़्तगू जो सिर्फ़ दुनियावी ग़रज़ से होती है मज़ेदार मालूम होती है और वह अल्लाह तआ़ला को हाज़िर व नाज़िर बताता है अपने दिल की बात पर, हालाँकि वह (आपकी) मुख़ालफ़त में (बहुत ही) सख़्त है। **(204)** और जब पीठ फेरता है तो इस दौड़-धूप में फिरता रहता है कि शहर में फ़साद करे और (किसी के) खेत या मवेशी को बर्बाद कर दे, और अल्लाह तआ़ला फ़साद को पसन्द नहीं फ़रमाते। **(205)** और जब उससे कोई कहता है कि ख़ुदा का ख़ौफ़ कर, तो घमंड उसको उस गुनाह पर (दुगना) आमादा कर देता है, सो ऐसे शख़्स की काफ़ी सज़ा जहन्नम है, और वह बुरा ही ठिकाना है।[3] **(206)** और बाज़ा आदमी ऐसा भी है कि अल्लाह की रिज़ा हासिल करने में अपनी जान तक ख़र्च कर डालता है, और अल्लाह (ऐसे) बन्दों (के हाल) पर निहायत मेहरबान हैं। **(207)** ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो, और (फ़ासिद ख़्यालात में पड़कर) शैतान के क़दम से क़दम मिलाकर मत चलो, वाक़ई वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। **(208)** फिर अगर तुम इसके बाद कि तुमको वाज़ेह दलीलें पहुँच चुकी हैं (सीधे रास्ते से) बहकने लगो तो यक़ीन रखो कि हक़ तआ़ला बड़े ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले हैं। **(209)** ये (टेढ़ी राह चलने वाले) लोग इस बात के मुन्तज़िर (मालूम होते) हैं कि हक़ तआ़ला और फ़रिश्ते बादल के छज्जों में उनके पास (सज़ा देने के लिए) आएँ और सारा क़िस्सा ही ख़त्म हो जाए, और ये सारे मुक़द्दमे अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ लौटाए जाएँगे।[4] **(210)** ❖

---

1. आयत में जो हुक्म याद का फ़रमाया इसमें नमाज़ें भी दाख़िल हैं। पस यह ज़िक्र तो वाजिब है, बाक़ी ज़िक्र जो कुछ करे मुस्तहब है।
2. हासिल यह है कि दुनिया तलब की जगह है, ख़ुद मतलूब नहीं बल्कि मतलूब बेहतरी है।
3. कोई शख़्स था अख़्नस बिन शुरैक़, बड़ा फ़सीह व बलीग़ था। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर क़स्में खा-खाकर झूठा इस्लाम का दावा किया करता और मज्लिस से उठकर जाता तो फ़साद व शरारत और मख़्लूक़ को तकलीफ़ पहुँचाने में लग जाता था। उस मुनाफ़िक़ के बारे में ये आयतें नाज़िल हुईं।
4. रूहुल-मआ़नी में इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हदीसे पाक नक़ल की गई है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला तमाम अगलों और पिछलों को जमा फ़रमाएँगे और सब हिसाब किताब के मुन्तज़िर होंगे। अल्लाह तआ़ला बादल के सायबानों (साया करने वालों) में अ़र्श से तजल्ली फ़रमाएँगे। और इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत नक़ल की है कि उन सायबानों के चारों तरफ़ फ़रिश्ते होंगे, सो आयत में इस क़िस्से की तरफ़ इशारा है। मतलब यह हुआ कि क़ियामत के मुन्तज़िर हैं फिर उस वक़्त क्या हो सकता है?

यन्ज़ुरू-न इल्ला अंय्यअ्ति-यहुमुल्लाहु फ़ी ज़ु-ललिम् मिनल्-ग़मामि वल्-मलाइ-कतु व क़ुज़ियल्-अम्रु, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर **(210)** ❖

सल् बनी इस्राई-ल कम् आतैनाहुम् मिन् आयतिम् बय्यि-नतिन्, व मंय्युबद्दिल् निअ्-मतल्लाहि मिम्-बअ्दि मा जाअत्हु फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल् अिक़ाब **(211)** ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रुल्-हयातुद्दुन्या व यस्ख़रू-न मिनल्लज़ी-न आमनू ✣ वल्लज़ीनत्तक़ौ फ़ौ-क़हुम् यौमल्-क़ियामति, वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब **(212)** कानन्नासु उम्म-तंव्-वाहि-दतन्, फ़-ब-असल्लाहुन्नबिय्यी-न मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न व अन्ज़-ल म-अ़हुमुल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि लियह्कु-म बैनन्नासि फ़ी मख़्त-लफ़ू फ़ीहि, व मख़्त-ल-फ़ फ़ीहि इल्लल्लज़ी-न ऊतूहु मिम्-बअ्दि मा जाअत्हुमुल् बय्यिनातु बग़्यम्- बैनहुम् फ़-हदल्लाहुल्लज़ी-न आमनू लिमख़्त-लफ़ू फ़ीहि मिनल्-हक़्क़ि बि-इज़्निही, वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(213)** अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्तिकुम् म-सलुल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम, मस्सत्हुमुल्- बअ्सा-उ वज़्ज़र्रा-उ व ज़ुल्ज़िलू हत्ता यक़ूलर्- रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू मता नस्रुल्लाहि, अला इन्-न नस्रल्लाहि क़रीब **(214)** यस्अलून-क माज़ा युन्फ़िक़ू-न, क़ुल् मा अन्फ़क़्तुम् मिन् ख़ैरिन्

سيقول ٢ ٣١ البقرة ٢

مَا جَآءَتْهُ فَإِنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا
فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾
كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِينَ
وَمُنْذِرِينَ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ
النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ اِلَّا الَّذِينَ اُوتُوهُ
مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ
الَّذِينَ اٰمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ وَاللّٰهُ يَهْدِي
مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢١٣﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا
الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ
الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوا حَتّٰى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا
مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْـَٔلُونَكَ
مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَ
الْاَقْرَبِينَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا تَفْعَلُوا
مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيمٌ ﴿٢١٥﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ
لَّكُمْ وَعَسٰى اَنْ تَكْرَهُوا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسٰى اَنْ تُحِبُّوا

منزل ١

आप बनी इसराईल (के उलमा) से (ज़रा) पूछिए (तो सही) कि हमने उनको कितनी वाज़ेह दलीलें दी थीं,[1] और जो शख़्स अल्लाह तआला की नेमत को बदलता है उसके पास पहुँचने के बाद, तो हक़ तआला यक़ीनन सख़्त सज़ा देते हैं।[2] **(211)** दुनियावी ज़िन्दगी कुफ़्फ़ार को अच्छी और ख़ुशनुमा मालूम होती है, और (इसी वजह से) इन मुसलमानों से ठट्ठा-मज़ाक़ करते हैं, हालाँकि ये (मुसलमान) जो (कुफ़्र व शिर्क से) बचते हैं, उन (काफ़िरों) से आला दर्जे में होंगे क़ियामत के दिन, और रोज़ी तो अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं बेहिसाब दे देते हैं।[3] **(212)** (एक ज़माने में) सब आदमी एक ही तरीक़े के थे[4] फिर अल्लाह तआला ने पैग़म्बरों को भेजा, जो कि ख़ुशी (के वायदे) सुनाते थे और डराते थे और उनके साथ (आसमानी) किताबें भी ठीक तौर पर नाज़िल फ़रमाईं, इस ग़रज़ से कि अल्लाह तआला लोगों में उनके (मज़हबी) इख़्तिलाफ़ी मामलों में फ़ैसला फ़रमा दें, और इस (किताब) में (यह) इख़्तिलाफ़ और किसी ने नहीं किया मगर सिर्फ़ उन लोगों ने जिनको (शुरू में) वह (किताब) मिली थी, उसके बाद कि उनके पास वाज़ेह दलीलें पहुँच चुकी थीं, आपसी ज़िद्दा-ज़िद्दी की वजह से। फिर अल्लाह तआला ने (हमेशा) ईमान वालों को वह हक़ अम्र ''यानी बात और मामला'' जिसमें इख़्तिलाफ़ करने वाले इख़्तिलाफ़ किया करते थे, अपने फ़ज़्ल व करम से बतला दिया, और अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं उसको सही रास्ता बतला देते हैं। **(213)** (दूसरी बात सुनो) क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि जन्नत में (मशक़्क़त उठाए बग़ैर) जा दाख़िल होंगे, हालाँकि तुमको अभी उन (मुसलमान) लोगों के जैसा कोई अजीब वाक़िआ पेश नहीं आया जो तुमसे पहले हो गुज़रे हैं, उनपर (मुख़ालिफ़ों के सबब) ऐसी-ऐसी तंगी और सख़्ती पेश आई और (मुसीबतों से) उनको यहाँ तक हिलाया गया कि (उस ज़माने के) पैग़म्बर तक और जो उनके साथ ईमान वाले थे, बोल उठे कि अल्लाह तआला की (वायदा की गई) इम्दाद कब होगी।[5] याद रखो बेशक अल्लाह तआला की इम्दाद (बहुत) नज़दीक है। **(214)** लोग आपसे पूछते हैं कि क्या चीज़ ख़र्च किया करें? आप फ़रमा दीजिए कि जो कुछ माल तुमको ख़र्च करना हो सो माँ-बाप का हक़ है[6] और रिश्तेदारों व क़रीबी लोगों का, और बेबाप के बच्चों का, और मोहताजों का, और मुसाफ़िर का, और जो भी नेक काम करोगे सो अल्लाह तआला को उसकी ख़ूब ख़बर है। (वह उसपर सवाब देंगे) **(215)** जिहाद करना तुमपर फ़र्ज़

---

1. जैसे तौरात मिली, चाहिए था कि उसको क़बूल करते मगर उसका इनकार किया। आख़िर तूर पहाड़ गिराने की धमकी दी गई। और जैसे हक़ तआला का कलाम सुना, चाहिए था कि सर-आँखों पर रखते, मगर शुब्हात निकाले। आख़िर बिजली से हलाक हुए। और जैसे दरिया को फाड़कर के फ़िरऔन से नजात दी गई, एहसान मानते, मगर गौसाला को पूजना शुरू कर दिया, तो क़त्ल की सज़ा दी गई। और जैसे ''मन्न'' व ''सलवा'' नाज़िल हुआ, शुक्र करना चाहिए था, मगर नाफ़रमानी की, वह सड़ने लगा और उससे नफ़रत ज़ाहिर की तो वह बन्द हो गया (यानी अल्लाह की तरफ़ से उसका अता करना बंद कर दिया गया) और खेती की मुसीबत सर पर पड़ी। और जैसे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का सिलसिला उनमें जारी रहा, ग़नीमत समझते, मगर उनको क़त्ल करना शुरू किया, हुकूमत से महरूमी की सज़ा दी गई। और इसी तरह बहुत-से मामलात इस सूरः अल-बक़रः के शुरू में भी ज़िक्र हो चुके हैं।
2. यह सज़ा कभी दुनिया में भी हो जाती है, कभी आख़िरत में होगी।
3. पस इसका मदार क़िस्मत पर है न कि कमाल और मक़बूलियत पर।
4. अव्वल दुनिया में आदम अलैहिस्सलाम मय अपनी बीवी के तशरीफ़ लाए और जो औलाद होती गई उनको दीने हक़ की तालीम फ़रमाते रहे, और वे उनकी तालीम पर अमल करते रहे। एक मुद्दत इसी हालत में गुज़र गई, फिर तबीयतों के मुख़्तलिफ़ और अलग-अलग होने से मक़सद और ग़रज़ में इख़्तिलाफ़ होना शुरू हुआ, यहाँ तक कि एक मुद्दत के बाद आमाल व अक़ीदों में इख़्तिलाफ़ की नौबत आ गई।
5. नबियों और मोमिनों का इस तरह कहना नऊज़ु बिल्लाह (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) शक की वजह से न था, बल्कि वजह यह थी कि इम्दाद आने और मुख़ालिफ़ीन के मुक़ाबले में ग़ालिब होने का वक़्त उन हज़रात को न बतलाया गया था, वक़्त के साफ़ बयान न होने से उनको जल्दी होने का इन्तिज़ार रहता था। जब इन्तिज़ार से थक जाते तब इस तरह अर्ज़ व दरख़्वास्त करने लगते, जिसका हासिल गिड़गिड़ाने के साथ दुआ करना है, और रोना-गिड़गिड़ाना ख़िलाफ़े रिज़ा व तस्लीम नहीं है, बल्कि जब गिड़गिड़ाने और आजिज़ी करने का अल्लाह तआला के नज़दीक पसन्दीदा होना रिज़ा-ए-हक़ से है तो रोना और गिड़गिड़ाना बिलकुल हक़ की रिज़ा से है।
6. माँ-बाप को ज़कात और दूसरे वाजिब सदक़ात देना दुरुस्त नहीं। इस आयत में नफ़िल ख़ैरात का बयान है।

फ़-लिल्वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न वल्-यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि, व मा तफ़्अलू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम **(215)** कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु व हु-व कुर्हुल्लकुम् व अ़सा अन् तक्रहू शैअंव्-व हु-व ख़ैरुल्लकुम् व अ़सा अन् तुहिब्बू शैअंव्-व हु-व शर्रुल्लकुम, वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून **(216)** ❖

यस्अलून-क अ़निश्शह्रिल्-हरामि क़ितालिन् फ़ीहि, क़ुल् क़ितालुन् फ़ीहि कबीरुन्, व सद्दुन् अ़न् सबीलिल्लाहि व कुफ़्रुम् बिही वल्मस्जिदिल्-हरामि, व इख़्राजु अह्लिही मिन्हु अक्बरु अ़िन्दल्लाहि वल्-फ़ित्नतु अक्बरु मिनल्-क़त्लि, व ला यज़ालू-न युक़ातिलू-नकुम् हत्ता यरुद्दूकुम् अ़न् दीनिकुम् इनिस्तताअू, व मंय्यर्-तदिद् मिन्कुम् अ़न् दीनिही फ़-यमुत् व हु-व काफ़िरुन् फ़-उलाइ-क हबितत् अअ्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(217)** इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि उलाइ-क यर्जू-न रह्मतल्लाहि, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(218)** यस्अलून-क अ़निल्-ख़म्रि वल्-मैसिरि क़ुल् फ़ीहिमा इस्मुन् कबीरुंव्-व मनाफ़िअु लिन्नासि व इस्मुहुमा अक्बरु मिन्नफ़्अ़िहिमा, व यस्अलून-क माज़ा युन्फ़िक़ू-न, क़ुलिल्-अ़फ़्-व कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम् त-तफ़क्करून **(219)** फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व यस्अलून-क अ़निल्-यतामा, क़ुल् इस्लाहुल्लहुम् ख़ैरुन्, व इन् तुख़ालितूहुम् फ़-इख़्वानुकुम, वल्लाहु यअ्लमुल्-

شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ
عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۗ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۗ وَصَدٌّ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ
مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ
يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ۗ وَمَنْ
يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۗ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ
وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ
مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ۥ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ
الْيَتٰمٰى ۗ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۗ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۗ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۗ

किया गया है और वह तुमको (तबई तौर पर) गिराँ "यानी भारी और नागवार" (मालूम होता) है, और यह बात मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को गिराँ समझो और वह तुम्हारे हक़ में ख़ैर हो, और यह (भी) मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को अच्छा समझो और वह तुम्हारे हक़ में ख़राबी (का सबब) हो। और अल्लाह तआ़ला जानते हैं और तुम (पूरा-पूरा) नहीं जानते।[1] **(216)** ❖

लोग आपसे हराम महीने में क़िताल करने के मुताल्लिक़ सवाल करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उसमें ख़ास तौर पर क़िताल करना (यानी जान-बूझकर) बड़ा जुर्म है, और अल्लाह की राह से रोक-टोक करना और अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र करना और मस्जिदे हराम (यानी काबा) के साथ, और जो लोग मस्जिदे हराम के अहल थे उनको उससे ख़ारिज कर देना बहुत बड़ा जुर्म है अल्लाह के नज़दीक, और फ़ितना उठाना (उस ख़ास) क़त्ल से कई दर्जे बढ़कर है,[2] और ये कुफ़्फ़ार तुम्हारे साथ हमेशा जंग रखेंगे इस ग़रज़ से कि अगर (ख़ुदा न करे) क़ाबू पाएँ तो तुमको तुम्हारे दीन (इस्लाम) से फेर दें, और जो शख़्स तुममें से अपने दीन से फिर जाए, फिर काफ़िर ही होने की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के (नेक) आमाल दुनिया व आख़िरत में सब ग़ारत हो जाते हैं[3] और ऐसे लोग दोज़ख़ी होते हैं, (और) ये लोग दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। **(217)** हक़ीक़त में जो लोग ईमान लाए हों और जिन लोगों ने राहे ख़ुदा में वतन छोड़ा हो और जिहाद किया हो, ऐसे लोग तो अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हुआ करते हैं, और अल्लाह तआ़ला (इस ग़लती को) माफ़ कर देंगे (और तुमपर) रहमत करेंगे। **(218)** लोग आपसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि इन दोनों (के इस्तेमाल) में गुनाह की बड़ी-बड़ी बातें भी हैं और लोगों को (बाज़े) फ़ायदे भी हैं, और (वे) गुनाह की बातें उनके फ़ायदों से ज़्यादा बढ़ी हुई हैं।[4] और लोग आपसे पूछते हैं कि (ख़ैर-ख़ैरात में) कितना ख़र्च किया करें, आप फ़रमा दीजिए कि जितना आसान हो, अल्लाह तआ़ला इसी तरह अहकाम को साफ़-साफ़ बयान फ़रमाते हैं। **(219)** ताकि तुम दुनिया व आख़िरत के मामलों में सोच लिया करो। और लोग आपसे यतीम बच्चों का हुक्म पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उनकी मस्लहत की रियायत रखना ज़्यादा बेहतर है, और अगर तुम उनके साथ ख़र्च शामिल रखो तो वे तुम्हारे (दीनी) भाई हैं, और अल्लाह तआ़ला मस्लहत के ज़ाया करने वाले को और मस्लहत की रियायत रखने वाले को (अलग-अलग) जानते हैं,[5] और अगर अल्लाह चाहते तो तुमको मुसीबत में डाल देते, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। **(220)** और

---

1. जिहाद फ़र्ज़ है जबकि उसकी वे शर्तें पाई जाएँ जो मसाइल की किताबों (फ़िक़्ह) में ज़िक्र हुई हैं। और फ़र्ज़ दो तरह का होता हैः फ़र्ज़े अ़ैन और फ़र्ज़े किफ़ाया। सो दीन के दुश्मन जब मुसलमानों पर चढ़ आएँ तब तो जिहाद फ़र्ज़े अ़ैन है, वरना फ़र्ज़े किफ़ाया है।

2. हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के कुछ सहाबा का एक सफ़र में इत्तिफ़ाक़ से काफ़िरों के साथ मुक़ाबला हो गया। एक काफ़िर उनके हाथ से मारा गया, और जिस दिन यह क़िस्सा हुआ रजब की पहली तारीख़ थी, मगर सहाबा जमादिल आख़िर की तीस समझते थे। (और रजब उन महीनों में से है जिनको हराम का दर्जा हासिल है। यानी जिन महीनों में लड़ाई और क़िताल की मनाही है)। कुफ़्फ़ार ने इस वाक़िए पर ताना दिया कि मुसलमानों ने 'शह्रे हराम' (यानी हराम महीने) की हुर्मत और इज़्ज़त का भी ख़्याल नहीं किया। मुसलमानों को इसकी फ़िक्र हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा। इस आयत में उसी का जवाब इर्शाद हुआ है, और ख़ुलासा जवाब का यह है कि अव्वल तो मुसलमानों ने कोई गुनाह नहीं किया, और अगर मान लें कि किया है तो एतिराज़ करने वाले इससे बड़े-बड़े गुनाह यानी कुफ़्र और दीने हक़ से टकराने और रुकावट पैदा करने में मुब्तला हैं। फिर उनको मुसलमानों पर एतिराज़ करने का क्या हक़ है।

3. दुनिया में आमाल का ज़ाया होना यह है कि उसकी बीवी निकाह से निकल जाती है, अगर उसका कोई मूरिस (जिसकी मीरास मिलने वाली हो) मुसलमान मरे, उस शख़्स को मीरास का हिस्सा नहीं मिलता। इस्लाम की हालत में नमाज़-रोज़ा जो कुछ किया था सब ज़ाया हो जाता है। मरने के बाद जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी जाती, मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़न नहीं किया जाता। और आख़िरत में ज़ाया होना यह है कि इबादतों का सवाब नहीं मिलता, हमेशा-हमेशा के लिए दोज़ख़ में दाख़िल होता है।

4. पहले ये दोनों चीज़ें हलाल थीं। सबसे पहली आयत शराब व जुए के मुताल्लिक़ यह नाज़िल की गई। इस आयत से इन दोनों को हुर्मत का इनकी ज़ात के एतिबार से बयान मक़सूद नहीं था, बल्कि बाज़-बाज़ पेश आने वाली ग़ैर-ज़रूरी चीज़ों की वजह से इन दोनों के छोड़ने का मश्विरा देना मक़सद था।

5. चूँकि शुरू में हिन्दुस्तान की तरह अरब में भी यतीमों का हक़ देने में पूरी एहतियात न थी इसलिए यह वईद सुनाई गई थी कि यतीमों का माल खाना ऐसा है जैसा कि दोज़ख़ के अंगारे पेट में भरना। तो सुनने वाले डर गए। इसके मुताल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई।

मुस्फ़्-द मिनल्-मुस्लिहि, व लौ शाअल्लाहु ल-अअ्न-तकुम, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (220) व ला तन्किहुल् मुश्रिकाति हत्ता युअ्मिन्-न, व ल-अ-मतुम् मुअ्मि-नतुन् ख़ैरुम्-मिम्-मुश्रि-कतिंव्-व लौ अअ्-जबत्कुम् व ला तुन्किहुल् मुश्रिकी-न हत्ता युअ्मिनू, व ल-अ़ब्दुम्-मुअ्मिनुन् ख़ैरुम् मिम्-मुश्रिकिंव्-व लौ अअ्ज-बकुम, उलाइ-क यदअू-न इलन्नारि वल्लाहु यद्अू इलल्-जन्नति वल्-मग़्फ़िरति बि-इज़्निही व युबय्यिनु आयातिही लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (221) ❖

व यस्अलून-क अ़निल्-महीज़ि क़ुल् हु-व अ-ज़न् फ़अ्तज़िलुन्निसा-अ फ़िल्-महीज़ि वला तक़्रबूहुन्-न हत्ता यत्हुर्-न फ़-इज़ा त-तह्हर्-न फ़अ्तूहुन्-न मिन् हैसु अ-म-रकुमुल्लाहु, इन्नल्ला-ह युहिब्बुत्तव्वाबी-न व युहिब्बुल् मु-त-तह्हिरीन (222) निसाउकुम् हर्सुल्लकुम् फ़अ्तू हर्सकुम् अन्ना शिअ्तुम् व क़द्दिमू लि-अन्फ़ुसिकुम, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नकुम् मुलाक़ूहु, व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (223) व ला तज्अ़लुल्ला-ह अ़ुर्-ज़तल् लिऐमानिकुम् अन् तबर्रू व तत्तक़ू व तुस्लिहू बैनन्नासि, वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम (224) ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा क-सबत् क़ुलूबुकुम, वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम (225) लिल्लज़ी-न युअ्लू-न मिन्निसा-इहिम् तरब्बुसु अर्-ब-अ़ति अश्हुरिन् फ़-इन् फ़ाऊ फ़-इन्नला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (226) व इन् अ़-ज़मुत्तला-क़ फ़-इन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (227) वल्मुतल्लक़ातु य-तरब्बस्-न बि-अन्फ़ुसिहिन्-न

سیقول ۲ ۳۳ البقرة ۲

وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۭ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ
وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ښ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا
اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَيَسْــَٔـلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ
فَاعْتَزِلُوا النِّسَاۗءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى
يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝ نِسَاۗؤُكُمْ
حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۡ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ۭ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَ
تُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ
اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ
قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ
تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَاۗءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقٰتُ

منزل ۱

निकाह मत करो काफ़िर औ़रतों के साथ जब तक कि वे मुसलमान न हो जाएँ, और मुसलमान औ़रत (चाहे) बाँदी (क्यों न हो, वह हज़ार दर्जा) बेहतर है काफ़िर औ़रत से, चाहे वह तुमको अच्छी ही मालूम हो। और औ़रतों को काफ़िर मर्दों के निकाह में मत दो, जब तक कि वे मुसलमान न हो जाएँ। और मुसलमान मर्द गुलाम बेहतर है काफ़िर मर्द से, चाहे वह तुमको अच्छा ही मालूम हो, (क्योंकि) ये लोग दोज़ख़ (में जाने) की तहरीक देते हैं "यानी दोज़ख़ की ओर ले जाते हैं", और अल्लाह तआ़ला जन्नत और मग़्फ़िरत की तहरीक देते हैं अपने हुक्म से।[1] और (अल्लाह इस वास्ते) आदमियों को अपने अहकाम बता देते हैं ताकि वे लोग नसीहत पर अ़मल करें। **(221)** ❖

और लोग आपसे हैज़ "यानी माहवारी" का हुक्म पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि वह गन्दी चीज़ है। तो माहवारी में तुम औ़रतों से अलग रहा करो और उनसे निकटता मत किया करो जब तक कि वे पाक न हो जाएँ, फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएँ तो उनके पास आओ-जाओ जिस जगह से अल्लाह तआ़ला ने तुमको इजाज़त दी है (यानी आगे से), यक़ीनन अल्लाह तआ़ला मुहब्बत रखते हैं तौबा करने वालों से, और मुहब्बत रखते हैं साफ़-पाक रहने वालों से।[2] **(222)** तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारे (लिए बतौर) खेत (के) हैं। सो अपने खेत में जिस तरफ़ से होकर चाहो आओ। और आइन्दा के लिए (भी) अपने लिए कुछ करते रहो, और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और यह यक़ीन रखो कि बेशक तुम अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होने वाले हो, और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ऐसे ईमानदारों को ख़ुशी की ख़बर सुना दीजिए। **(223)** और अल्लाह तआ़ला को अपनी क़स्मों के ज़रिये से इन उमूर का हिजाब मत बनाओ कि तुम नेकी के और तक़्वे के और मख़्लूक़ के दरमियान सुधार के काम करो, और अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनते जानते हैं।[3] **(224)** अल्लाह तआ़ला तुमपर (आख़िरत में) पकड़ न फ़रमाएँगे तुम्हारी (ऐसी) बेहूदा क़स्मों पर, लेकिन पकड़ फ़रमाएँगे उस (झूठी क़सम) पर जिसमें तुम्हारे दिलों ने (झूठ बोलने का) इरादा किया था, और अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाले हैं, हलीम "यानी बर्दाश्त करने वाले और नर्मी बरतने वाले" हैं।[4] **(225)** जो लोग क़सम खा बैठते हैं अपनी बीवियों (के पास जाने) से, उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है। सो अगर ये लोग (क़सम तोड़कर औ़रत की तरफ़) रुजू कर लें तब तो अल्लाह तआ़ला माफ़ कर देंगे, रहमत फ़रमा देंगे।[5] **(226)** और अगर बिलकुल छोड़ ही देने का पुख़्ता इरादा कर लिया है तो अल्लाह तआ़ला सुनते हैं,

---

1. इस आयत में दो हुक्म हैं, एक यह कि काफ़िर मर्दों से मुसलमान औ़रतों का निकाह न किया जाए। सो यह हुक्म तो अब भी बाक़ी है। दूसरा हुक्म यह है कि मुसलमान मर्द का काफ़िर औ़रत से निकाह न किया जाए। इस हुक्म में दो हिस्से हैं, एक हिस्सा यह है कि वह काफ़िर औ़रत किताबी यानी यहूदी या ईसाई न हो और कोई मज़हब कुफ़्र का रखती हो। सो इस हिस्से में भी इसका हुक्म बाक़ी है। चुनाँचे हिन्दू औ़रत या आग को पूजने वाली औ़रत से मुसलमान का निकाह नहीं हो सकता। दूसरा हिस्सा यह है कि औ़रत किताबिया हो यानी यहूदी या ईसाई हो। इस ख़ास हिस्से में इस आयत का हुक्म बाक़ी नहीं, बल्कि एक आयत सूरः माइदः में इस मज़मून की है कि किताबी औ़रत से निकाह दुरुस्त है, सो इस सूरत में इस आयत का यह ख़ास हिस्सा मन्सूख़ हो गया। चुनाँचे यहूदी या ईसाई औ़रत से निकाह दुरुस्त है। अगरचे किताबी औ़रत से निकाह दुरुस्त है लेकिन अच्छा नहीं है। हदीस में दीनदार औ़रत के हासिल करने का हुक्म है, तो बद्-दीन औ़रत का हासिल करना इस दर्जे में ना-पसन्द होगा।
2. माहवारी की हालत में नाफ़ से घुटने तक औ़रत के बदन को देखना और हाथ लगाना भी दुरुस्त नहीं।
3. नेक काम का छोड़ना बिना क़सम भी बुरा है।
4. बेहूदा क़सम के दो मायने हैं, एक तो यह कि किसी गुज़री हुई बात पर झूठी क़सम बिना इरादा निकल गई, या आगे आने वाली बात पर इस तरह क़सम निकल गई कि कहना चाहता था कुछ और बेइरादा मुँह से क़सम निकल गई, इसमें गुनाह नहीं होता। इसके मुक़ाबले में जिसपर पकड़ होने का ज़िक्र फ़रमाया, यह वह क़सम है जो जान-बूझकर झूठी समझकर खाई हो।
5. अगर कोई क़सम खा ले कि मैं अपनी बीवी से सोहबत न करूँगा, तो अगर चार महीने के अन्दर अपनी क़सम तोड़ डाले और बीवी के पास चला जाए तो क़सम का कफ़्फ़ारा दे और निकाह बाक़ी है। और अगर चार महीने गुज़र गए और क़सम न तोड़ी तो उस औ़रत पर क़तई तलाक़ पड़ गई, रुजू करना दुरुस्त नहीं रहा, अलबत्ता अगर दोनों रज़ामन्दी से फिर निकाह कर लें तो दुरुस्त है।

सलास-त क़ुरूइन्, व ला यहिल्लु लहुन्-न अंय्यक्तुम्-न मा ख़-लक़ल्लाहु फ़ी अर्हामिहिन्-न इन् कुन्-न युअ्मिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, व बुअू-लतुहुन्-न अहक़्क़ु बि-रद्दिहिन्-न फ़ी ज़ालि-क इन् अरादू इस्लाहन्, व लहुन्-न मिस्लुल्लज़ी अ़लैहिन्-न बिल्मअ़्रूफ़ि व लिर्रिजालि अ़लैहिन्-न द-र-जतुन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(228)** ❖

अत्तलाक़ु मर्रतानि फ़-इम्साकुम्-बिमअ़्रूफ़िन् औ तस्रीहुम् बि-इह्सानिन्, व ला यहिल्लु लकुम् अन् तअ्ख़ुज़ू मिम्मा आतैतुमूहुन्-न शैअन् इल्ला अंय्यख़ाफ़ा अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि, फ़-इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा फ़ीमफ़्तदत् बिही, तिल्-क हुदूदुल्लाहि फ़ला तअ़्तदूहा व मंय्य-तअ़द्-द हुदूदल्लाहि फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून **(229)** फ़-इन् तल्ल-क़हा फ़ला तहिल्लु लहू मिम्-बअ़्दु हत्ता तन्कि-ह ज़ौजन् ग़ैरहू, फ़-इन् तल्ल-क़हा फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा अंय्य-तरा-जआ़ इन् ज़न्ना अंय्युक़ीमा हुदूदल्लाहि, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि युबय्यिनुहा लिक़ौमिंय्यअ़्लमून

سیقول ۲ ۳۴ البقرة ۲

يتربصن بانفسهن ثلثة قروء ۗ ولا يحل لهن ان يكتمن
ما خلق الله في ارحامهن ان كن يؤمن بالله واليوم
الاخر ۗ وبعولتهن احق بردهن في ذلك ان ارادوا اصلاحا ۗ
ولهن مثل الذي عليهن بالمعروف ۖ وللرجال عليهن
درجة ۗ والله عزيز حكيم ۝ الطلاق مرتن ۖ فامساك بمعروف
او تسريح باحسان ۗ ولا يحل لكم ان تاخذوا مما اتيتموهن
شيئا الا ان يخافا الا يقيما حدود الله ۗ فان خفتم الا يقيما
حدود الله ۙ فلا جناح عليهما فيما افتدت به ۗ تلك
حدود الله فلا تعتدوها ۚ ومن يتعد حدود الله فاولئك
هم الظلمون ۝ فان طلقها فلا تحل له من بعد حتى
تنكح زوجا غيره ۗ فان طلقها فلا جناح عليهما ان يتراجعا
ان ظنا ان يقيما حدود الله ۗ وتلك حدود الله يبينها
لقوم يعلمون ۝ واذا طلقتم النساء فبلغن اجلهن
فامسكوهن بمعروف او سرحوهن بمعروف ۪ ولا تمسكوهن
ضرارا لتعتدوا ۚ ومن يفعل ذلك فقد ظلم نفسه ۗ ولا
تتخذوا ايت الله هزوا ۘ واذكروا نعمت الله عليكم وما انزل

منزل ۱

(230) व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्-न बिमअ़्रूफ़िन् औ सर्रिहूहुन्-न बिमअ़्रूफ़िंव्-व ला तुम्सिकूहुन्-न ज़िरारल् लितअ़्-तदू व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू, व ला तत्तख़िज़ू आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-वज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् व मा अन्ज़-ल अ़लैकुम् मिनल्-किताबि वल्हिक्मति यअिज़ुकुम्

जानते हैं। **(227)** और तलाक़ दी हुई औ़रतें अपने आपको (निकाह से) रोके रखें तीन हैज़ तक,[1] और उन औ़रतों को यह बात हलाल नहीं कि ख़ुदा तआ़ला ने जो कुछ उनके रहम में पैदा किया हो (चाहे गर्भ या हैज़) उसको छुपाएँ, अगर वे औ़रतें अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखती हैं। और उन औ़रतों के शौहर उनके (बिना दोबारा निकाह किए) फिर लौटा लेने का हक़ रखते हैं, उस (इद्दत) के अन्दर, शर्त यह है कि इस्लाह "यानी भलाई और सुधार" का इरादा रखते हों। और औ़रतों के भी हुक़ूक़ हैं जो कि उन्हीं के हुक़ूक़ की तरह हैं जो उन औ़रतों पर हैं (शरई) क़ायदे के मुवाफ़िक़। और मर्दों का उनके मुक़ाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त (हाकिम) हैं, हकीम हैं।[2] **(228)** ❖

वह तलाक़ दो बार (की) है, फिर चाहे रख लेना क़ायदे के मुवाफ़िक़ चाहे छोड़ देना अच्छे अन्दाज़ के साथ,[3] और तुम्हारे लिए यह बात हलाल नहीं कि (छोड़ने के वक़्त) कुछ भी लो (अगरचे) उसमें से (ही सही) जो तुमने उनको (मह्र में) दिया था, मगर यह कि मियाँ-बीवी दोनों को अन्देशा हो कि अल्लाह तआ़ला के ज़ाबतों "यानी क़ानूनों" को क़ायम न कर सकेंगे। सो अगर तुम लोगों को यह अन्देशा हो कि वे दोनों ख़ुदावन्दी ज़ाबतों को क़ायम न कर सकेंगे तो दोनों पर कोई गुनाह न होगा उस (माल के लेने-देने) में जिसको देकर औ़रत अपनी जान छुड़ा ले। ये ख़ुदाई ज़ाबते हैं सो तुम इनसे बाहर मत निकलना। और जो शख़्स ख़ुदाई ज़ाबतों से बाहर निकल जाए सो ऐसे ही लोग अपना नुक़सान करने वाले हैं।[4] **(229)** फिर अगर कोई (तीसरी) तलाक़ दे दे औ़रत को तो फिर वह उसके लिए हलाल न रहेगी उसके बाद, यहाँ तक कि वह उसके सिवा एक और ख़ाविन्द के साथ (इद्दत के बाद) निकाह करे। फिर अगर यह उसको तलाक़ दे दे तो इन दोनों पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि बदस्तूर फिर मिल जाएँ, शर्त यह है कि दोनों ग़ालिब गुमान रखते हों कि (आइन्दा) ख़ुदावन्दी ज़ाबतों को क़ायम रखेंगे।[5] और ये ख़ुदावन्दी ज़ाबते हैं, (हक़ तआ़ला) उनको बयान फ़रमाते हैं, ऐसे लोगों के लिए जो समझदार हैं। **(230)** और जब तुमने औ़रतों को (रज्ई) तलाक़ दे दी हो, फिर वे अपनी इद्दत गुज़रने के क़रीब पहुँच जाएँ तो (या तो) तुम उनको क़ायदे के मुवाफ़िक़ (लौटा करके) निकाह में रहने दो या क़ायदे के मुवाफ़िक़ उनको रिहाई दो। और उनको तकलीफ़ पहुँचाने की ग़रज़ से मत रोको, इस इरादे से कि उनपर ज़ुल्म किया करोगे। और जो शख़्स ऐसा (बर्ताव) करेगा सो वह अपना ही नुक़सान करेगा। और अल्लाह तआ़ला के अहकाम को खेल-कूद (की तरह बेवक़ूफ़त) मत समझो, और हक़ तआ़ला की जो नेमतें तुमपर हैं उनको याद करो, और (ख़ास कर) इस किताब और हिक्मत (के मज़ामीन) को जो अल्लाह तआ़ला ने तुमपर (इस हैसियत से) नाज़िल फ़रमाई है कि तुमको उसके ज़रिए से नसीहत फ़रमाते हैं। और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और यक़ीन रखो कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। ▲ **(231)** ❖

---

1. उन औ़रतों में इतनी सिफ़तें होंः ख़ाविन्द ने उनसे सोहबत या "ख़िलवते सहीहा" (यानी इतनी देर मियाँ-बीवी को तन्हाई का मौक़ा मिलना कि अगर चाहें तो सोहबत कर सकें) की हो, उनको हैज़ (माहवारी) आता हो, आज़ाद हों यानी शरई क़ायदे से बाँदी न हों। जिस औ़रत से मर्द ने सोहबत या ख़िलवते सहीहा न की हो और उसको तलाक़ दे दे तो उसपर बिलकुल इद्दत लाज़िम नहीं, इद्दत के अन्दर दूसरे शौहर से निकाह दुरुस्त है।

2. तलाक़ पाई हुई औ़रत पर वाजिब है कि अपने माहवारी में होने या गर्भ से होने की हालत ज़ाहिर कर दे, ताकि उसके मुवाफ़िक़ इद्दत का हिसाब हो। मर्द पर औ़रत के ख़ास हुक़ूक़ ये हैंः अपनी गुंजाइश के मुताबिक़ उसको खाना, कपड़ा, रहने का घर और मह्र दे, उसको तंग न करे। और औ़रत पर मर्द के ख़ास हक़ ये हैं कि उसकी फ़रमाँबरदारी करे, उसकी ख़िदमत करे।

3. उस तलाक़ को 'रज्ई' कहते हैं जो कि दो बार से ज़्यादा न हो, और उसमें यह भी क़ैद है कि साफ़ लफ़्ज़ों से हों। और क़ायदे से मुराद यह है कि उसका तरीक़ा भी शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो और नीयत भी उसमें शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो, और अच्छे अन्दाज़ से भी मुराद यह है कि उसका तरीक़ा शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो। तथा अच्छे अन्दाज़ से छोड़ने के लिए ज़रूरी है कि नीयत भी शरीअ़त के मुताबिक़ हो यानी झगड़े का टालना मक़सूद हो, यह मक़सद न हो कि उसका दिल तोड़ें, उसको ज़लील करें, इसलिए नरमी व हमदर्दी की रियायत ज़रूरी है।

4. औ़रत से माल ठहराकर छोड़ना इसकी दो सूरतें हैं। एक "ख़ुला" दूसरा "तलाक़ अ़ला माल"। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 68 पर)**

बिही, वत्तक़ुल्ला-ह वअ़्लमू अन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ▲ (231) ❖

व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़ला तअ़्ज़ुलूहुन्-न अंय्यन्किह्-न अज़्वाजहुन्-न इज़ा तराज़ौ बैनहुम् बिल्मअ़्रूफ़ि, ज़ालि-क यू-अ़ज़ु बिही मन् का-न मिन्कुम् युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, ज़ालिकुम् अज़्का लकुम् व अत्हरु, वल्लाहु यअ़्लमु व अन्तुम् ला तअ़्लमून **(232)** वल्-वालिदातु युर्ज़िअ़्-न औलादहुन्-न हौलैनि कामिलैनि लि-मन् अरा-द अंय्युतिम्मर्रज़ा-अ़-त, व अ़लल्-मौलूदि लहू रिज़्क़ुहुन्-न व किस्वतुहुन्-न बिल्मअ़्रूफ़ि, ला तुकल्लफ़ु नफ़्सुन् इल्ला वुस्अ़हा ला तुज़ार्-र वालि-दतुम् बि-व-लदिहा व ला मौलूदुल्लाहू बि-व-लदिही, व अ़लल्-वारिसि मिस्लु ज़ालि-क फ़-इन् अरादा फ़िसालन् अ़न् तराज़िम् मिन्हुमा व तशावुरिन् फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा, व इन् अरत्तुम् अन् तस्तर्ज़िअ़ू औलादकुम् फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम् बिल्मअ़्रूफ़ि, वत्तक़ुल्ला-ह वअ़्लमू अन्नल्ला-ह बिमा तअ़्मलू-न बसीर **(233)** वल्लज़ी-न यु-तवफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंय्य-तरब्बस्-न बिअन्फ़ुसिहिन्-न अर्ब-अ़-त अश्हुरिवं-व अ़श्रन् फ़-इज़ा बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा फ़-अ़ल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न बिल्मअ़्रूफ़ि, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न ख़बीर **(234)** व ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा अ़र्रज़्तुम् बिही मिन् ख़ित्बतिन्निसा-इ औ अक्नन्तुम् फ़ी अन्फ़ुसिकुम,

سيقول ٢ | ٣٥ | البقرة ٢

عليكم من الكتب والحكمة يعظكم به واتقوا الله واعلموا
ان الله بكل شيء عليم ۝ واذا طلقتم النساء فبلغن
اجلهن فلا تعضلوهن ان ينكحن ازواجهن اذا تراضوا
بينهم بالمعروف ذلك يوعظ به من كان منكم يؤمن
بالله واليوم الاخر ذلكم ازكى لكم واطهر والله يعلم
وانتم لا تعلمون ۝ والوالدت يرضعن اولادهن حولين
كاملين لمن اراد ان يتم الرضاعة وعلى المولود له
رزقهن وكسوتهن بالمعروف لا تكلف نفس الا وسعها
لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده وعلى
الوارث مثل ذلك فان ارادا فصالا عن تراض منهما و
تشاور فلا جناح عليهما وان اردتم ان تسترضعوا
اولادكم فلا جناح عليكم اذا سلمتم ما اتيتم بالمعروف
واتقوا الله واعلموا ان الله بما تعملون بصير ۝ والذين
يتوفون منكم ويذرون ازواجا يتربصن بانفسهن اربعة
اشهر وعشرا فاذا بلغن اجلهن فلا جناح عليكم فيما
فعلن في انفسهن بالمعروف والله بما تعملون خبير ۝

منزل ١

और जब तुम (में ऐसे लोग पाए जाएँ कि वे) अपनी बीवियों को तलाक़ दे दें, फिर वे औ़रतें अपनी (इ़द्दत की) मीयाद भी पूरी कर चुकें तो तुम उनको इस बात से मत रोको कि वे अपने शौहरों से निकाह कर लें, जबकि आपस में सब रज़ामन्द हो जाएँ क़ायदे के मुवाफ़िक़। इस (मज़मून) से नसीहत की जाती है उस शख़्स को जो कि तुममें से अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखता हो, यह (यानी इस नसीहत को क़बूल करना) तुम्हारे लिए ज़्यादा सफ़ाई और ज़्यादा पाकी की बात है, और अल्लाह तआ़ला जानते हैं और तुम नहीं जानते।[1] **(232)** और माएँ आपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाया करें, (यह मुद्दत) उसके लिए (है) जो दूध पिलाने की तक्मील करना चाहे। और जिसका बच्चा है (यानी बाप) उसके ज़िम्मे है उन (माओं) का खाना और कपड़ा क़ायदे के मुवाफ़िक़, किसी शख़्स को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बर्दाश्त के मुवाफ़िक़। किसी माँ को तकलीफ़ न पहुँचाना चाहिए उसके बच्चे की वजह से, और न किसी बाप को तकलीफ़ देनी चाहिए उसके बच्चे की वजह से,[2] और इसी तरह (यानी ज़िक्र हुए तरीक़े के मुताबिक़) उसके ज़िम्मे है जो वारिस हो,[3] फिर अगर दोनों दूध छुड़ाना चाहें अपनी रज़ामन्दी और मश्विरे से तो दोनों पर किसी क़िस्म का गुनाह नहीं, और अगर तुम लोग अपने बच्चों को (किसी और अन्ना का) दूध पिलवाना चाहो तब भी तुमपर कोई गुनाह नहीं, जबकि उनके हवाले कर दो जो कुछ उनको देना किया है क़ायदे के मुवाफ़िक़, और हक़ तआ़ला से डरते रहो, और यक़ीन रखो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे किए हुए कामों को ख़ूब देख रहे हैं। **(233)** और जो लोग तुममें वफ़ात पा जाते हैं और बीवियाँ छोड़ जाते हैं, वे बीवियाँ अपने आपको (निकाह वग़ैरह से) रोके रखें चार महीने और दस दिन, फिर जब अपनी (इ़द्दत की) मीयाद ख़त्म कर लें तो तुमको कुछ गुनाह न होगा ऐसी बात में कि वे औ़रतें अपनी ज़ात के लिए (निकाह की) कुछ कार्रवाई करें क़ायदे के मुवाफ़िक़, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों की ख़बर रखते हैं।[4] **(234)** और तुमपर कोई गुनाह नहीं होगा जो (इन ज़िक्र की गई) औ़रतों को (निकाह का) पैग़ाम देने के बारे में कोई बात इशारे में कहो, या अपने दिल में (निकाह के इरादे को) छुपाओ, अल्लाह तआ़ला को यह बात मालूम है कि तुम उन औ़रतों का (ज़रूर) ज़िक्र मज़कूर करोगे, लेकिन उनसे निकाह का वायदा (और गुफ़्तगू) मत करो, मगर यह कि कोई बात क़ायदे के मुवाफ़िक़ कहो। और तुम निकाह के ताल्लुक़ का (फ़िलहाल) इरादा भी मत करो, यहाँ तक कि मुक़र्ररा इ़द्दत अपनी इन्तिहा को (न) पहुँच जाए। और यक़ीन रखो इसका कि अल्लाह तआ़ला को इत्तिला है तुम्हारे दिलों की बात की, सो अल्लाह तआ़ला से डरते रहा करो। और यक़ीन रखो कि अल्लाह तआला माफ़ भी करने वाले हैं, हलीम भी हैं।[5] **(235)** ◆

(पृष्ठ 66 का शेष) खुला यह है कि औ़रत कहे कि तू इतने माल पर मुझसे खुला कर ले और मर्द कहे कि मुझको मन्ज़ूर है। इसके कहते ही अगरचे तलाक़ का लफ़्ज़ न कहे मगर "तलाक़े बाइन" पड़ जाएगी, और उसी क़द्र माल औ़रत के ज़िम्मे वाजिब हो जाएगा। और 'तलाक़ अ़ला माल' यह है कि मर्द औ़रत से कहे कि तुझको इस क़द्र माल के बदले तलाक़ है। इसका हुक्म यह है कि औ़रत मन्ज़ूर न करे तो तलाक़ नहीं होती और मन्ज़ूर कर ले तो "तलाक़े बाइन" हो जाएगी, और उस क़द्र माल औ़रत के ज़िम्मे वाजिब हो जाएगा।

5. इसको हलाला कहते हैं।

1. इस आयत में रोकने की सब सूरतें दाख़िल हैं, और हर सूरत में रोकने को मना फ़रमाया है।

2. यानी बच्चे के माँ-बाप आपस में किसी बात पर ज़िद्दा-ज़िद्दी न करें। माँ अगर किसी वजह से माज़ूर न हो तो उसके ज़िम्मे दियानत के तौर पर यानी अल्लाह के नज़दीक वाजिब है कि बच्चे को दूध पिलाए, जबकि वह निकाह वाली (बीवी) हो या इ़द्दत में हो, और उजूरत लेना दुरुस्त नहीं। और अगर तलाक़ के बाद इ़द्दत गुज़र चुकी तो उसपर बिना उजूरत दूध पिलाना वाजिब नहीं। अगर माँ दूध पिलाने से इनकार करे तो उसपर ज़बरदस्ती न की जाएगी। हाँ अगर बच्चा किसी का दूध ही नहीं लेता और न ऊपर का दूध पीता है तो माँ को मजबूर किया जाएगा। माँ दूध पिलाना चाहती है और उसके दूध में कोई ख़राबी भी नहीं तो बाप को जायज़ नहीं कि उसको न पिलाने दे और दूसरी अन्ना का दूध पिलाए। माँ दूध पिलाने पर रज़ामन्द है **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 70 पर)**

अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् स-तज़्कुरूनहुन्-न व लाकिल्ला तुवाअ़िदूहुन्-न सिर्रन् इल्ला अन् तक़ूलू क़ौलम्-मअ़्रूफ़न्, व ला तअ़्ज़िमू अुक़्दतन्निकाहि हत्ता यब्लुग़ल्-किताबु अ-ज-लहू, वअ़्लमू अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् फ़ह्-ज़रूहु वअ़्लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् हलीम **(235)** ❖

ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् तल्लक़्तुमुन्निसा-अ मा लम् तमस्सूहुन्-न औ तफ़्रिज़ू लहुन्-न फ़री-ज़तंव्-व मत्तिअ़ूहुन्-न अ़लल्-मूसिअ़ि क़-दरुहू व अ़लल्-मुक़्तिरि क़-दरुहू मताअ़म्-बिल्मअ़्रूफ़ि हक़्क़न् अ़लल्-मुह्सिनीन **(236)** व इन् तल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न व क़द् फ़रज़्तुम् लहुन्-न फ़री-ज़तन् फ़-निस्फ़ु मा फ़रज़्तुम् इल्ला अंय्यअ़्फ़ू-न औ यअ़्फ़ुवल्लज़ी बि-यदिही उ़क़्दतुन्निकाहि, व अन् तअ़्फ़ू अक़्रबु लित्तक़्वा, व ला तन्सवुल्-फ़ज़्-ल बैनकुम, इन्नल्ला-ह बिमा तअ़्मलू-न बसीर **(237)** हाफ़िज़ू अ़लस्स-लवाति वस्सलातिल्-वुस्ता व क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन **(238)** फ़-इन् ख़िफ़्तुम् फ़-रिजालन् औ रुक्बानन् फ़-इज़ा अमिन्तुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह कमा अ़ल्ल-मकुम् मा लम् तकूनू तअ़्लमून **(239)** वल्लज़ी-न यु-तवफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंव्-वसिय्यतल् लि-अज़्वाजिहिम् मताअ़न् इलल्-हौलि ग़ै-र इख़्राजिन् फ़-इन् ख़रज्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ी मा फ़-अ़ल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न मिम्-मअ़्रूफ़िन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(240)** व लिल्मुतल्लक़ाति मताअ़ुम्-बिल्मअ़्रूफ़ि, हक़्क़न् अ़लल् मुत्तक़ीन **(241)**

سيقول ٢ ٣٦ البقرة ٢

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ
أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِنْ
لَا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا
عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ
تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ قَدَرُهُ
وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ۝
وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ
لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَا
الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَ
لَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝
حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ۝
فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا
عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَ
يَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ

منزل ١

तुमपर (महर का) कुछ मुतालबा और पकड़ नहीं अगर बीवियों को ऐसी हालत में तलाक़ दे दो कि न उनको तुमने हाथ लगाया है और न उनके लिए कुछ महर मुक़र्रर किया है, और (सिर्फ़) उनको एक जोड़ा दे दो। गुंजाइश वाले के ज़िम्मे उसकी हैसियत के मुवाफ़िक़ है और तंगदस्त के ज़िम्मे उसकी हैसियत के मुवाफ़िक़ जोड़ा देना क़ायदे के मुवाफ़िक़ वाजिब है, मामले के अच्छे लोगों पर। **(236)** और अगर तुम उन बीवियों को तलाक़ दो इससे पहले कि उनको हाथ लगाओ और उनके लिए कुछ महर भी मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुक़र्रर किया हो उसका आधा (वाजिब) है, मगर यह कि वे औरतें (अपना आधा) माफ़ कर दें या यह कि वह शख़्स रियायत कर दे जिसके हाथ में निकाह का ताल्लुक़ (रखना और तोड़ना) है। और तुम्हारा माफ़ कर देना (ब-निस्बत वसूल करने के) तक़्वे से ज़्यादा क़रीब है। और आपस में एहसान करने से ग़फ़लत न करो। बेशक अल्लाह तआ़ला सब कामों को ख़ूब देखते हैं।[1] **(237)** हिफ़ाज़त करो सब नमाज़ों की (आ़म तौर पर) और दरमियान वाली नमाज़ की (ख़ास तौर पर), और खड़े हुआ करो अल्लाह के सामने आ़जिज़ बने हुए।[2] **(238)** फिर अगर तुमको अन्देशा हो तो खड़े-खड़े या सवारी पर चढ़े-चढ़े पढ़ लिया करो। फिर जब तुमको इत्मीनान हो जाए तो तुम ख़ुदा तआ़ला की याद उस तरीक़े से करो जो तुमको सिखलाया है, जिसको तुम न जानते थे। **(239)** और जो लोग वफ़ात पा जाते हैं तुममें से और छोड़ जाते हैं बीवियों को, वे वसीयत कर जाया करें अपनी उन बीवियों के वास्ते एक साल तक फ़ायदा उठाने की, इस तौर पर कि वे घर से निकाली न जाएँ, हाँ अगर ख़ुद निकल जाएँ तो तुमको कोई गुनाह नहीं उस क़ायदे की बात में जिसको वे अपने बारे में करें, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।[3] **(240)** और सब तलाक़ दी हुई औ़रतों के लिए कुछ-कुछ फ़ायदा पहुँचाना क़ायदे के मुवाफ़िक़ (यह) मुक़र्रर हुआ है उनपर जो (शिर्क व कुफ़्र से) परहेज़ करते हैं।[4] **(241)** इसी तरह हक़ तआ़ला तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान फ़रमाते हैं, इस उम्मीद पर कि

(पृष्ठ 68 का शेष) लेकिन उसका दूध बच्चे को नुक़सानदेह है तो बाप को जायज़ है कि उसको दूध न पिलाने दे और किसी अन्ना का दूध पिलवाए।

3. बाप के होते हुए बच्चे की परवरिश का ख़र्च सिर्फ़ बाप के ज़िम्मे है, और जब बाप मर जाए तो उसमें तफ़सील यह है कि अगर बच्चा माल का मालिक है तब तो उसी माल में से उसका ख़र्च होगा, और अगर माल का मालिक नहीं है तो उसके मालदार रिश्तेदारों में जो उसके मेहरम हैं और मेहरम होने के अ़लावा शरई तौर पर उसकी मीरास के हक़दार भी हैं, पस ऐसे मेहरम वारिस रिश्तेदारों के ज़िम्मे उसका ख़र्च वाजिब होगा और उन रिश्तेदारों में माँ भी दाख़िल है।

4. यह इद्दत उस बेवा की है जिसको हमल (गर्भ) न हो। और अगर हमल हो तो बच्चा पैदा होने तक उसकी इद्दत है, चाहे जनाज़ा लेजाने से पहले ही पैदा हो जाए या चार महीने दस दिन से भी ज़्यादा में हो। यह मसला सूरः तलाक़ में आएगा। जिसका शौहर मर जाए उसको इद्दत के अन्दर सिंघार करना, सुर्मा और तेल दवा की ज़रूरत के बिना लगाना, मेहंदी लगाना, रंगीन कपड़े पहनना दुरुस्त नहीं, और दूसरे निकाह के लिए खुली बात-चीत करना भी दुरुस्त नहीं जैसा कि अगली आयत में आता है। और रात को दूसरे के घर में रहना भी दुरुस्त नहीं।

5. यहाँ इद्दत के अन्दर चार काम ज़िक्र किए गए हैं, दो ज़बान के और दो दिल के, और हर एक का अलग हुक्म है। अव्वल ज़बान से खुले तौर पर पैग़ाम देना, यह हराम है। "ला तुवाअ़िदूहुन्-न सिर्रन्" में इसका ज़िक्र है। दूसरे ज़बान से इशारे के तौर पर कहना, यह जायज़ है। "ला जुना-ह अ़लैकुम्" और "क़ौलम्-मअ़रूफ़न्" में इसका ज़िक्र है। तीसरे दिल से यह इरादा करना कि अभी यानी इद्दत के अन्दर निकाह कर लेंगे, यह भी हराम है। क्योंकि इद्दत के अन्दर निकाह करना हराम है, और हराम का इरादा करना हराम है। "ला तअ़्ज़िमू" में इसका ज़िक्र है। चौथे दिल से यह इरादा करना कि इद्दत के बाद निकाह कर लेंगे, यह जायज़ है। "अक-नन्तुम् फ़ी अन्फ़ुसिकुम्" में इसका ज़िक्र है।

1. जिस औ़रत का महर निकाह के वक़्त मुक़र्रर हुआ हो उसको सोहबत व मुकम्मल तन्हाई से पहले अगर तलाक़ दे दी हो तो मुक़र्रर किए हुए महर का आधा मर्द के ज़िम्मे वाजिब होगा, हाँ अगर औ़रत माफ़ कर दे या मर्द पूरा दे दे तो इख़्तियारी बात है।

2. कस्रत से उलमा का क़ौल बाज़ हदीसों की दलील से यह है कि बीच वाली नमाज़ 'अ़सर' है क्योंकि इसके एक तरफ़ दो नमाज़ें दिन की हैं 'फ़ज्र' और 'ज़ोहर' और एक तरफ़ दो नमाज़ें रात की हैं 'मग़रिब' व 'इशा'। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 72 पर)**

कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून (242) ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न ख़-रजू मिन् दियारिहिम् व हुम् उलूफ़ुन् ह-ज़रल्मौति फ़क़ा-ल लहुमुल्लाहु मूतू सुम्-म अह्याहुम, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (243) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि वअ़्लमू अन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (244) मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन् फ़-युज़ाअ़ि-फ़हू लहू अज़्आ़फ़न् कसीर-तन्, वल्लाहु यक़्बिज़ु व यब्सुतु व इलैहि तुर्जअ़ून (245) अलम् त-र इलल्-म-लइ मिम्-बनी इस्राई-ल मिम्-बअ़्दि मूसा ✣ इज़् क़ालू लि-नबिय्यिल्-लहुमुब्अ़स् लना मलिकन्नुक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि, क़ा-ल हल् अ़सैतुम् इन् कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु अल्ला तुक़ातिलू, क़ालू व मा लना अल्ला नुक़ाति-ल फ़ी सबीलिल्लाहि व क़द् उख़्रिज्ना मिन् दियारिना व अब्ना-इना, फ़-लम्मा कुति-ब अ़लैहिमुल्-क़ितालु तवल्लौ इल्ला क़लीलम् मिन्हुम, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (246) व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्ला-ह क़द् ब-अ़-स लकुम् तालू-त मलिकन्, क़ालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अ़लैना व नह्नु अहक़्क़ु बिल्मुल्कि मिन्हु व लम् युअ़्-त स-अ़तम् मिनल्-मालि, क़ा-ल इन्नल्लाहस्तफ़ाहु अ़लैकुम् व ज़ा-दहू बस्त-तन् फ़िल्-इ़ल्मि वल्-जिस्मि, वल्लाहु युअ़्ती मुल्कहू मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (247)

فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ
مَعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾ أَلَمْ
تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ
لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا
فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۚ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ
إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ
هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا
لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ
أَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۗ وَ
اللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ
لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ
بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ

तुम समझो (और अ़मल करो)। **(242)** ❖

(ऐ मुख़ातब!) तुझको उन लोगों का क़िस्सा तहक़ीक़ नहीं हुआ जो कि अपने घरों से निकल गए थे, और वे लोग हज़ारों ही थे मौत से बचने के लिए, सो अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए (हुक्म) फ़रमा दिया कि मर जाओ, फिर उनको ज़िन्दा कर दिया। बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा फ़ज़्ल करने वाले हैं लोगों (के हाल) पर, मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। **(243)** (इस क़िस्से में ग़ौर करो) और अल्लाह की राह में क़िताल करो और यक़ीन रखो इस बात का कि अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाले (और) ख़ूब जानने वाले हैं। **(244)** (ऐसा) कौन शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़ दे अच्छे तौर पर क़र्ज़ देना, फिर अल्लाह तआ़ला उस (के सवाब) को बढ़ाकर बहुत-से हिस्से कर दे,[1] और अल्लाह कमी करते हैं और फ़राख़ी "यानी वुसुअ़त" करते हैं, और तुम उसी की तरफ़ (मरने के बाद) ले जाए जाओगे। **(245)** (ऐ मुख़ातब!) तुझको बनी इसराईल की जमाअ़त का क़िस्सा जो मूसा के बाद हुआ है तहक़ीक़ नहीं हुआ, जबकि उन लोगों ने अपने एक पैग़म्बर से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दीजिए कि हम अल्लाह की राह में (जालूत से) क़िताल करें। (उन पैग़म्बर ने) फ़रमायाः क्या यह एहतिमाल "यानी वहम व अन्देशा" नहीं कि अगर तुमको जिहाद का हुक्म दिया जाए तो तुम (उस वक़्त) जिहाद न करो? वे लोग कहने लगे कि हमारे वास्ते ऐसा कौन-सा सबब होगा कि हम अल्लाह की राह में जिहाद न करें? हालाँकि हम अपनी बस्तियों और अपने बेटों से भी जुदा कर दिए गए हैं, फिर जब उन लोगों को जिहाद का हुक्म हुआ तो बहुत थोड़े-से लोगों को छोड़कर (बाक़ी) सब फिर गए। और अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को ख़ूब जानते हैं।[2] **(246)** और उन लोगों से उनके पैग़म्बर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुमपर तालूत को बादशाह मुक़र्रर फ़रमाया है। वे कहने लगे उनको हमपर हुक्मरानी का हक़ कैसे हासिल हो सकता है? हालाँकि उनकी ब-निस्बत हम हुक्मरानी के ज़्यादा हक़दार हैं, और उनको तो कुछ माली गुंजाइश भी नहीं दी गई। (उन पैग़म्बर ने जवाब में) फ़रमाया कि (अव्वल तो) अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे मुक़ाबले में उनको चुना है, और (दूसरे) इल्म और जसामत "यानी भारी-भरकम होने और डील-डोल" में उनको ज़्यादती दी है,[3] और (तीसरे) अल्लाह तआ़ला अपना मुल्क जिसको चाहें दें, और (चौथे) अल्लाह तआ़ला वुसुअ़त देने वाले, जानने वाले हैं। **(247)** और उनसे उनके पैग़म्बर ने फ़रमाया कि उनके (अल्लाह की जानिब से)

(पृष्ठ 70 का शेष) और आ़जिज़ी की तफ़सीर हदीस में ख़ामोशी के साथ आई है। इसी आयत से नमाज़ में बातें करने की मनाही हुई, इससे पहले बोलना दुरुस्त था।

3. जब मीरास की आयत नाज़िल हो गई, घर-बाहर सब तरके में से औ़रत का हक़ मिल गया तो यह आयत मन्सूख़ हो गई।

4. निकाह और तलाक़ वग़ैरह के अहकाम में जगह-जगह "इत्तक़ुल्ला-ह" और "हुदूदुल्लाह" और "समीअुन् अ़लीमुन्" और "अ़ज़ीज़ुन् हकीमुन्" और "बसीरुन्" और "ख़बीरुन्" और "हुमुज़्ज़ालिमून" और "फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू" वग़ैरह का आना क़तई दलील है कि ये सब अहकाम शरीअ़त में मक़सूद और वाजिब हैं। बतौर मश्विरे के नहीं जिनमें तर्मीम व तब्दीली करने का या अ़मल न करने का हमको नऊ़ज़ु बिल्लाह इख़्तियार हो।

1. क़र्ज़ मजाज़न् कह दिया वरना सब ख़ुदा ही की मिल्क है। मतलब यह है कि जैसे क़र्ज़ का बदला ज़रूर ही दिया जाता है इसी तरह तुम्हारे ख़र्च करने का बदला ज़रूर मिलेगा। और बढ़ाने का बयान एक हदीस में इस तरह आया है कि अगर एक छुवारा अल्लाह की राह में ख़र्च किया जाए तो ख़ुदा तआ़ला उसको इतना बढ़ाते हैं कि वह उहुद पहाड़ से ज़्यादा हो जाता है।

2. उन बनी इसराईल ने हक़ तआ़ला के अहकाम को छोड़ दिया था, अ़मालिक़ा के काफ़िरों को उनपर मुसल्लत कर दिया गया, उस वक़्त उन लोगों को इस्लाह की फ़िक्र हुई। और उन पैग़म्बर का नाम शमवील मशहूर है।

3. बादशाह होने के लिए इल्म की ज़्यादा ज़रूरत है ताकि मुल्क के इन्तिज़ाम पर क़ादिर हो और जसामत (भारी-भरकम और डील-डोल का होना) भी इस मायने में मुनासिब है कि मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ के दिल में वक़्अ़त व रोब पैदा हो।

व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्-न आय-त मुल्किही अंय्यअ्ति-यकुमुत्ताबूतु फ़ीहि सकीनतुम् मिर्रब्बिकुम् व बक़िय्यतुम् मिम्मा त-र-क आलु मूसा व आलु हारू-न तह्मिलुहुल्-मलाइ-कतु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(248)** ❖

फ़-लम्मा फ़-स-ल तालूतु बिल्जुनूदि क़ा-ल इन्नल्ला-ह मुब्तलीकुम बि-न-हरिन् फ़-मन् शरि-ब मिन्हु फ़लै-स मिन्नी व मल्लम् यत्अ़म्हु फ़-इन्नहू मिन्नी इल्ला मनिग़्त-र-फ़ ग़ुर्-फ़तम् बि-यदिही फ़-शरिबू मिन्हु इल्ला क़लीलम् मिन्हुम, फ़-लम्मा जा-व-ज़हू हु-व वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू क़ालू ला ता-क़-त लनल्-यौ-म बिजालू-त व जुनूदिही, क़ालल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ुल्लाहि कम् मिन् फ़ि-अतिन् क़लीलतिन् ग़-लबत् फ़ि-अतन् कसी-रतम् बि-इज़्निल्लाहि, वल्लाहु म-अ़स्साबिरीन **(249)** व लम्मा ब-रज़ू लिजालू-त व जुनूदिही क़ालू रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना सब्रंव्-व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ़लल्-क़ौमिल् काफ़िरीन **(250)** फ़-ह-ज़मूहुम् बि-इज़्निल्लाहि व क़-त-ल दावूदु जालू-त व आताहुल्लाहुल्-मुल्-क वल्-हिक्म-त व अ़ल्ल-महू मिम्मा यशा-उ, व लौ ला दफ़्अुल्लाहिन्ना-स बअ़्-ज़हुम् बिबअ़्ज़िल् ल-फ़-स-दतिल्-अर्ज़ु व लाकिन्नल्ला-ह ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल्-आ़लमीन **(251)** तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि, व इन्न-क ल-मिनल्-मुर्सलीन **(252)**

عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ
أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِمَّا تَرَكَ
آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ
مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ
فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا
مِنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا
الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُو
اللَّهِ كَمْ مِنْ فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ
الصَّابِرِينَ ۝ وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ فَهَزَمُوهُمْ
بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَ
عَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ
لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝
تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

बादशाह होने की यह निशानी है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आ जाएगा जिसमें तस्कीन (और बरकत) की चीज़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से, और कुछ बची हुई चीज़ें हैं जिनको (हज़रत) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और (हज़रत) हारून (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद छोड़ गई है। उस (सन्दूक़) को फ़रिश्ते ले आएँगे। उसमें तुम लोगों के वास्ते पूरी निशानी है अगर तुम यक़ीन लाने वाले हो।[1] **(248)** ❖

फिर जब तालूत फ़ौजों को लेकर (बैतुल मक्दिस से अ़मालिक़ा की तरफ़) चले तो उन्होंने कहा कि हक़ तआ़ला तुम्हारा इम्तिहान करेंगे एक नहर से। सो जो शख़्स (बहुत ज़्यादती के साथ) उससे पानी पियेगा तो वह मेरे साथियों में नहीं, और जो उसको ज़बान पर भी न रखे वह मेरे साथियों में है, लेकिन जो शख़्स अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले। सो सबने उससे (बहुत ज़्यादा) पीना शुरू कर दिया, मगर थोड़े आदमियों ने उनमें से।[2] सो जब तालूत और जो मोमिनीन उनके साथ थे नहर के पार उतर गए, कहने लगे कि आज तो हममें जालूत और उसके लश्कर से मुक़ाबले की ताक़त मालूम नहीं होती, (यह सुनकर) ऐसे लोग जिनको यह ख़्याल था कि वे अल्लाह तआ़ला के रू-ब-रू पेश होने वाले हैं, कहने लगे कि कितनी ही बार बहुत-सी छोटी-छोटी जमाअ़तें बड़ी-बड़ी जमाअ़तों पर ख़ुदा के हुक्म से ग़ालिब आ गई हैं, और अल्लाह तआ़ला मुस्तक़िल रहने और जमने वालों का साथ देते हैं। **(249)** और जब जालूत और उसकी फ़ौजों के सामने (मैदान में) आए तो कहने लगेः ऐ हमारे परवर्दिगार! हमपर इस्तिक़लाल "यानी मज़बूती और मुस्तक़िल मिज़ाजी" (ग़ैब से) नाज़िल फ़रमाइए और हमारे क़दम जमाए रखिए और हमको इस काफ़िर क़ौम पर ग़ालिब कीजिए।[3] **(250)** फिर (तालूत वालों ने जालूत वालों को) ख़ुदा तआ़ला के हुक्म से शिकस्त दे दी और दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) ने जालूत को क़त्ल कर डाला, और उनको (यानी दाऊद को) अल्लाह तआ़ला ने हुकूमत और हिक्मत अ़ता फ़रमाई, और भी जो-जो मन्ज़ूर हुआ उनको तालीम फ़रमाया। और अगर यह बात न होती कि अल्लाह तआ़ला बाज़े आदमियों को बाज़ों के ज़रिये से दफ़ा करते रहा करते हैं तो सर-ज़मीन "यानी दुनिया" (पूरी की पूरी) फ़साद और बिगाड़ से भर जाती, लेकिन अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं जहान वालों पर।[4] **(251)** ये अल्लाह तआ़ला की आयतें हैं जो सही-सही तौर पर हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और (इससे साबित है कि) आप बेशक पैग़म्बरों में से हैं। **(252)**

1. उस सन्दूक़ में तबर्रुकात थे। जालूत जब बनी इसराईल पर ग़ालिब आया था तो यह सन्दूक़ भी ले गया था। जब अल्लाह को उस सन्दूक़ का पहुँचाना मन्ज़ूर हुआ तो यह सामान किया कि जहाँ उस सन्दूक़ को रखते वहाँ ही सख़्त बलाएँ नाज़िल होतीं। आख़िर उन लोगों ने एक गाड़ी पर उसको लादकर बैलों को हाँक दिया। फ़रिश्ते उसको हाँककर यहाँ पहुँचा गए, जिससे बनी इसराईल को बड़ी ख़ुशी हुई और तालूत बादशाह मान लिए गए।

2. इस इम्तिहान की हिक्मत और वजह नाचीज़ (हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि) के ज़ौक़ में यह मालूम होती है कि ऐसे मौक़ों पर जोश व ख़रोश और भीड़-भाड़ बहुत हो जाया करती है, लेकिन वक़्त पर जमने वाले कम होते हैं और उस वक़्त ऐसों का उखड़ जाना बाक़ी लोगों के पाँव भी उखाड़ देता है, अल्लाह तआ़ला को ऐसे लोगों का अलग करना मन्ज़ूर था।

3. इस दुआ़ की तरतीब बड़ी पाकीज़ा है कि ग़ल्बे के लिए चूँकि क़दम जमाने की ज़रूरत है इसलिए पहले उसकी दुआ़ की, और साबित-क़दमी का मदार दिल के जमने पर है इसलिए उससे पहले दिल के जमने और मुस्तक़िल रहने की दुआ़ की।

4. चूँकि क़ुरआन के बड़े मक़ासिद में से हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत का साबित करना भी है, इसलिए अक्सर जिस जगह किसी मज़मून के साथ मुनासबत होने से मौक़ा होता है वहाँ उसको दोहराया जाता है। चुनाँचे इस मक़ाम पर इस क़िस्से की सही ख़बर देना ऐसे तौर पर कि न आपने कहीं पढ़ा न किसी से सुना न आपने देखा, मोजिज़ा होने की बिना पर नुबुव्वत के दावे के सच्चा होने की खुली दलील है, इसलिए आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत पर इस्तिदलाल फ़रमाते हैं।

तीसरा पारः तिल्करुसुलु

सूरतुल् ब-क़-रति (आयत 253 से 286)

तिल्करुसुलु फ़ज़्ज़ल्ना बअ्-ज़हुम अ़ला बअ्ज़िन् ✣ मिन्हुम् मन् कल्लमल्लाहु व र-फ़-अ़ बअ्-ज़हुम द-रजातिन्, व आतैना अ़ीसब्-न मर्यमल्-बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बिरूहिल्क़ुदुसि, व लौ शाअल्लाहु मक़्त-तलल्लज़ी-न मिम्- बअ्दिहिम् मिम्-बअ्दि मा जाअत्हुमुल् -बय्यिनातु व लाकिनिख़्त-लफ़ू फ़-मिन्हुम् मन् आम-न व मिन्हुम् मन् क-फ़-र, व लौ शाअल्लाहु मक़्त-तलू, व लाकिन्नल्ला-ह यफ़्अ़लु मा युरीद (253) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़ुल्लतुंव्-व ला शफ़ाअ़तुन्, वल्-काफ़िरू-न हुमुज़्ज़ालिमून (254) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अल्-हय्युल्-क़य्यूमु ला तअ्ख़ुज़ुहू सि-नतुंव्-व ला नौमुन्, लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, मन्

البقرة ٢ ٣٩ تلك الرسل ٣

تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض منهم من
كلم الله ورفع بعضهم درجت واتينا عيسى ابن مريم
البينت وايدنه بروح القدس ولو شاء الله ما اقتتل الذين
من بعدهم من بعد ما جاءتهم البينت ولكن اختلفوا
فمنهم من امن ومنهم من كفر ولو شاء الله ما اقتتلوا
ولكن الله يفعل ما يريد ۝ يايها الذين امنوا انفقوا مما
رزقنكم من قبل ان ياتي يوم لا بيع فيه ولا خلة و
لا شفاعة والكفرون هم الظلمون ۝ الله لا اله الا هو
الحي القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم له ما في السموت
وما في الارض من ذا الذي يشفع عنده الا باذنه يعلم
ما بين ايديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشيء من
علمه الا بما شاء وسع كرسيه السموت والارض و
لا يؤده حفظهما وهو العلي العظيم ۝ لا اكراه في
الدين قد تبين الرشد من الغي فمن يكفر بالطاغوت
ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام
لها والله سميع عليم ۝ الله ولي الذين امنوا يخرجهم

منزل

ज़ल्लज़ी यश्फ़अु अ़िन्दहू इल्ला बि-इज़्निही, यअ्लमु मा बै-न ऐदीहिम व मा ख़ल्फ़हुम व ला युहीतू-न बिशैइम् मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्-ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल् अ़लिय्युल् अ़ज़ीम (255) ला इक्रा-ह फ़िद्दीनि क़त्तबय्यनर्रुश्दु मिनल्-ग़य्यि फ़-मंय्यक्फ़ुर् बित्ताग़ूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्तम्स-क

तीसरा पारः तिल्कर्रुसुलु

सूरः ब-क़रः आयत (253 से 286)

ये हज़राते मुर्सलीन ऐसे हैं[1] कि हमने उनमें से बाज़ों को बाज़ों पर फ़ौक़ियत दी है, (मिसाल के तौर पर) बाज़े उनमें वे हैं जो अल्लाह तआ़ला से हम-कलाम हुए और बाज़ों को उनमें से बहुत-से दर्जों पर सरफ़राज़ किया। और हमने (हज़रत) ईसा बिन मरियम को खुली-खुली दलीलें अ़ता फ़रमाईं, और हमने उनकी ताईद रूहुल-क़ुदुस (यानी जिबराईल) से फ़रमाई। और अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो (उम्मत के) जो लोग उनके बाद हुए आपस में क़त्ल व क़िताल न करते, बाद इसके कि उनके पास (हक़ बात के) दलाइल पहुँच चुके थे, लेकिन वे लोग (आपस में दीन में) मुख़्तलिफ़ हुए, सो उनमें कोई तो ईमान लाया और कोई काफ़िर रहा, (और नौबत क़त्ल व क़िताल की पहुँची) और अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो वे लोग आपस में क़त्ल व क़िताल न करते, लेकिन अल्लाह तआ़ला जो चाहते हैं करते हैं।[2] **(253)** ❖

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उन चीज़ों में से जो हमने तुमको दी हैं, इससे पहले कि वह (क़ियामत का) दिन आ जाए जिसमें न तो ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती होगी, और न (बिना अल्लाह की इजाज़त के) कोई सिफ़ारिश होगी, और काफ़िर लोग ही ज़ुल्म करते हैं। (तो तुम ऐसे मत बनो)।[3] **(254)** अल्लाह तआ़ला (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं,[4] ज़िन्दा है संभालने वाला है (तमाम आ़लम का) न उसको ऊँघ दबा सकती है और न नींद, उसी के मम्लूक हैं सब जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं, ऐसा कौन शख़्स है जो उसके पास (किसी की) सिफ़ारिश कर सके बिना उसकी इजाज़त के,[5] वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व ग़ायब हालात को, और वे मौजूदात उसके मालूमात में से किसी चीज़ को अपने इल्मी इहाते "यानी जानकारी के घेरे" में नहीं ला सकते, मगर जिस क़द्र (इल्म देना) वही चाहे, उसकी कुर्सी ने सब आसमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा है,[6] और अल्लाह को उन दोनों की हिफ़ाज़त कुछ गिराँ नहीं गुज़रती, और वह आ़लीशान और अ़ज़ीमुश्शान है। **(255)** दीन में ज़बरदस्ती (का अपने आपमें कोई मौक़ा) नहीं,[7] (क्योंकि) हिदायत यक़ीनन गुमराही से मुम्ताज़ "यानी अलग और नुमायाँ" हो चुकी है, सो जो शख़्स शैतान से बद-एतिक़ाद हो और अल्लाह तआ़ला के साथ अच्छा एतिक़ाद रखे (यानी इस्लाम क़बूल कर ले) तो उसने बड़ा मज़बूत हल्क़ा थाम लिया, जिसको किसी तरह शिकस्तगी नहीं[8] (हो सकती) और अल्लाह ख़ूब सुनने वाले (और) ख़ूब जानने वाले हैं। **(256)** अल्लाह साथी है उन

---

1. चूँकि ऊपर की आयत में ज़िम्नी तौर पर पैग़म्बरों का मुख़्तसरन् ज़िक्र आ गया था इसलिए इस आयत में किसी क़द्र तफ़सील उनमें से बाज़ हज़रात के हालात व कमालात की और फिर उनके ज़िक्र की मुनासबत से उनकी उम्मतों की एक ख़ास हालत और उस हालत के वजूद में आने में ख़ुदा की हिक्मत व मस्लहत के शामिल होने की तरफ़ इशारा, ये सब मज़ामीन ज़िक्र किये जाते हैं।
2. इस मज़मून में एक तरह से तसल्ली देना है। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने यह बात सुना दी कि और भी पैग़म्बर मुख़्तलिफ़ दर्जों के गुज़रे हैं, लेकिन ईमान किसी की उम्मत में आ़म नहीं हुआ, किसी ने मुवाफ़क़त की, किसी ने मुख़ालफ़त की। और इसमें भी हक़ तआ़ला की हिक्मतें होती हैं, भले ही हर शख़्स पर ज़ाहिर न हों मगर मुख़्तसर तौर पर इतना अ़क़ीदा रखना ज़रूरी और लाज़िम है कि कोई हिक्मत ज़रूर है।
3. मतलब यह है कि जो नेक अ़मल दुनिया में छूट जाएगा फिर वहाँ उसकी कोई तलाफ़ी क़ुदरत से ख़ारिज हो जाएगी। चुनाँचे तलाफ़ी के तरीक़ों में से कुछ तरीक़े तो ख़ुद ही न होंगे, जैसे ख़रीद व फ़रोख़्त, और बाज़े आ़म न होंगे जैसे दोस्ती, बाज़े इख़्तियारी न होंगे जैसे शफ़ाअ़त। और इससे मक़सूद क़ियामत के दिन नेक आमाल के बदले और नतीजे को हासिल करने पर क़ादिर न होने का याद दिलाना है।
4. इस आयत का लक़ब "आयतुल कुर्सी" है।
5. क़ियामत में अम्बिया और औलिया गुनाहगारों की शफ़ाअ़त करेंगे। वे पहले हक़ तआ़ला की मरज़ी पा लेंगे जब शफ़ाअ़त करेंगे।
6. कुर्सी अ़र्श से छोटा और आसमानों से बड़ा एक जिस्म है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 78 पर)**

बिल्-अुर्वतिल्-वुस्क़ा लन्फ़िसा-म लहा, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (**256**) अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी-न आमनू युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, वल्लज़ी-न क-फ़रू औलिया-उहुमुत्ताग़ूतु युख़्रिजू-नहुम् मिनन्नूरि इलज़्ज़ुलुमाति, उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (**257**) ❖

अ़लम् त-र इलल्लज़ी हाज्-ज इब्राही-म फ़ी रब्बिही अन् आताहुल्लाहुल्-मुल्क ✣ इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बियल्लज़ी युह़्यी व युमीतु क़ा-ल अ-न उह़्यी व उमीतु, क़ा-ल इब्राहीमु फ़-इन्नल्ला-ह यअ्ती बिश्शम्सि मिनलमश्रिक़ि फ़अ्ति बिहा मिनल्-मग़्रिबि फ़-बुहितल्लज़ी क-फ़-र, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन (**258**) औ कल्लज़ी मर्-र अ़ला क़र्यतिंव्-व हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला अ़ुरूशिहा क़ा-ल अन्ना युह़्यी हाज़िहिल्लाहु बअ़्-द मौतिहा फ़-अमातहुल्लाहु मि-अ-त आ़मिन् सुम्-म ब-अ़-सहू, क़ा-ल कम् लबिस्-त, क़ा-ल लबिस्तु यौमन् औ बअ़्-ज़ यौमिन्, क़ा-ल बल्लबिस्-त

تلک الرسل ٣ — ٤٠ — البقرة ٢

مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ
يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِىْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِىْ رَبِّهٖۤ اَنْ
اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّىَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۙ
قَالَ اَنَا اُحْىٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِىْ بِالشَّمْسِ
مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِىْ كَفَرَ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ
وَّهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ
فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ
وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا
ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِىْ كَيْفَ تُحْىِ الْمَوْتٰى ؕ
قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِىْ ؕ قَالَ فَخُذْ
اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ

منزل ١

मि-अ-त आ़मिन् फ़न्ज़ुर् इला तआ़मि-क व शराबि-क लम् य-तसन्नह् वन्ज़ुर् इला हिमारि-क व लि-नज्अ़-ल-क आयतल् लिन्नासि वन्ज़ुर् इलल्-अ़िज़ामि कै-फ़ नुन्शिज़ुहा सुम्-म नक्सूहा लह़्मन्, फ़-लम्मा तबय्य-न लहू क़ा-ल अअ़्लमु अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (**259**) व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कै-फ़ तुह़्यिल्मौता, क़ा-ल अ-व

लोगों का जो ईमान लाए, उनको (कुफ़्र की) अन्धेरियों से निकालकर (या बचाकर) (इस्लाम के) नूर की तरफ़ लाता है, और जो लोग काफ़िर हैं उनके साथी शयातीन हैं, (इनसानी या जिन्नी) वे उनको (इस्लाम के) नूर से निकालकर (या बचाकर कुफ़्र की) अन्धेरियों की तरफ़ ले जाते हैं, ऐसे लोग दोज़ख़ में रहने वाले हैं, (और) ये लोग उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। **(257)** ❖

(ऐ मुख़ातब!) तुझको उस शख़्स का क़िस्सा मालूम नहीं हुआ (यानी नमरूद का) जिसने (हज़रत) इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) से मुबाहसा किया था, अपने परवर्दिगार के (वजूद के) बारे में, इस वजह से कि ख़ुदा तआ़ला ने उसको हुकूमत दी थी। जब इब्राहीम ने फ़रमाया कि मेरा परवर्दिगार ऐसा है कि वह ज़िन्दा करता है और मारता है, कहने लगा कि मैं भी ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ। इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला सूरज को (हर दिन) पूरब से निकालता है तू (एक ही दिन) पश्चिम से निकाल दे, इसपर चकित रह गया वह काफ़िर (और कुछ जवाब बन न आया) और अल्लाह तआ़ला (की आ़दत है कि) ऐसे बेजा राह पर चलने वालों को हिदायत नहीं फ़रमाते। **(258)** या तुमको इस तरह का क़िस्सा भी मालूम है जैसे एक शख़्स था[1] कि एक बस्ती पर ऐसी हालत में उसका गुज़र हुआ कि उसके मकानात अपनी छतों पर गिर गए थे,[2] कहने लगा कि अल्लाह तआ़ला इस बस्ती (के मुर्दों) को उसके मरने के बाद किस कैफ़ियत से ज़िन्दा करेंगे, सो अल्लाह तआ़ला ने उस शख़्स को सौ साल तक मुर्दा रखा, फिर उसको ज़िन्दा कर उठाया (और फिर) पूछा कि तू कितनी मुद्दत इस हालत में रहा? उस शख़्स ने जवाब दिया कि एक दिन रहा हूँगा या एक दिन से भी कम, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि नहीं! बल्कि तू सौ साल रहा है।[3] तू अपने खाने (की चीज़) और पीने (की चीज़) को देख ले कि नहीं सड़ी-गली, और (दूसरे) अपने गधे की तरफ़ नज़र कर, और ताकि हम तुझको एक नज़ीर लोगों के लिए बना दें, और (इस गधे की) हड्डियों की तरफ़ नज़र कर कि हम उनको किस तरह तरकीब दिए देते हैं, फिर उनपर गोश्त चढ़ाए देते हैं। फिर जब यह सब कैफ़ियत उस शख़्स को वाज़ेह हो गई तो कह उठा कि मैं यक़ीन रखता हूँ कि बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं।[4] **(259)** और (उस वक़्त को याद करो) जबकि इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको दिखला दीजिए कि आप मुर्दों को किस कैफ़ियत से ज़िन्दा करेंगे। इर्शाद फ़रमायाः क्या तुम यक़ीन नहीं लाए? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि यक़ीन क्यों न लाता, लेकिन इस ग़रज़ से यह दरख़्वास्त करता हूँ कि मेरे दिल को सुकून हो जाए।[5] इर्शाद हुआ कि अच्छा तो तुम चार पक्षी लो फिर उनको (पालकर) अपने लिए हिला लो, फिर हर पहाड़ पर उनमें का एक-एक हिस्सा रख दो (और) फिर उन सबको बुलाओ, (देखो) तुम्हारे पास सब दौड़ते चले आएँगे, और ख़ूब यक़ीन रखो इस बात का कि हक़ तआ़ला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।[6] **(260)** ❖

(पृष्ठ 76 का शेष) **7.** ऊपर आयत "व इन्न-क ल-मिनल् मुर्सली-न" में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रिसालत, और "आयतुल कुर्सी" में हक़ तआ़ला की तौहीद मज़कूर हुई है, और यही दो चीज़ें इस्लाम की असल और बुनियादी हैं, तो उनके साबित करने से दीने इस्लाम का हक़ होना भी लाज़िमी तौर पर साबित हो गया। इस आयत में इसी से निकालते हुए इस्लाम का ज़बरदस्ती का महल न होना इर्शाद फ़रमाते हैं।

8. इस्लाम को मज़बूत पकड़ने वाला चूँकि हलाकत व घाटे से महफ़ूज़ रहता है इसलिए उसको ऐसे शख़्स से तश्बीह दी जो किसी मज़बूत रस्सी का हल्क़ा हाथ में मज़बूत थाम कर गिरने से महफ़ूज़ रहता है।

फ़ायदाः- अगर मुर्तद (जो दीन से फिर गया हो) पर या काफ़िर हर्बी पर दलील के मख़्फ़ी होने की वजह से इक्राह यानी ज़बरदस्ती की जाए जैसा कि शरीअ़त में हुक्म है तो यह अपने आपमें "इक्राह" की नफ़ी के ख़िलाफ़ नहीं।

1. रूहुल-मआ़नी में हाकिम की रिवायत से हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से और इसहाक़ बिन बशर की रिवायत से हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से नक़ल किया है कि यह बुज़ुर्ग उज़ैर अ़लैहिस्सलाम हैं।

2. यानी पहले छतें गिरीं फिर उनपर दीवारें गिर गईं। मुराद यह कि किसी हादसे से वह बस्ती बिलकुल वीरान हो गई थी और सब आदमी मर-मरा गए थे।

3. यह तो यक़ीन था कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत में मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगें, मगर उस वक़्त के ज़िन्दा करने का जो ख़्याल ग़ालिब हुआ तो अ़जीब मामला होने की वजह से एक हैरत-सी दिल पर ग़ालिब हो गई, और चूँकि अल्लाह तआ़ला एक काम को कई तरह कर सकते हैं इसलिए तबीयत में इसकी ख़्वाहिश हुई कि ख़ुदा जाने ज़िन्दा करना किस सूरत से होगा। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 80 पर)**

लम् तुअ्मिन्, क़ा-ल बला व लाकिल्लियत्-मइन्-न क़ल्बी, क़ा-ल फ़-ख़ुज़् अर्ब-अ़तम् मिनत्तैरि फ़सुर्हुन्-न इलै-क सुम्मज्अ़ल् अ़ला कुल्लि ज-बलिम् मिन्हुन्-न जुज़्अन् सुम्मद्अुहुन्-न यअ्ती-न-क सअ्यन्, वअ्लम् अन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(260)** ❖

म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम फ़ी सबीलिल्लाहि क-म-सलि हब्बतिन् अम्ब-तत् सब्-अ़ सनाबि-ल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिम् मि-अतु हब्बतिन्, वल्लाहु युज़ाअिफ़ु लिमंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम **(261)** अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म ला युत्बिअू-न मा अन्फ़क़ू मन्नंव्-व ला अ-ज़ल् लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(262)** क़ौलुम् मअ्रूफ़ुंव्-व मग़्फ़ि-रतुन् ख़ैरुम् मिन् स-द-क़तिंय्-यत्बअुहा अज़न्, वल्लाहु ग़निय्युन् हलीम **(263)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुब्तिलू स-दक़ातिकुम् बिल्मन्नि वल्-अज़ा कल्लज़ी युन्फ़िक़ु मालहू रिआ-अन्नासि व ला युअ्मिनु बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि, फ़-म-सलुहू क-म-सलि सफ़्वानिन् अ़लैहि तुराबुन् फ़-असाबहू वाबिलुन् फ़-त-र-कहू सल्दन्, ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम् मिम्मा क-सबू, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल् काफ़िरीन **(264)** व म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुमुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि व तस्बीतम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् क-म-सलि जन्नतिम्-बिरब्वतिन् असाबहा वाबिलुन् फ़-आतत् उकु-लहा ज़िअ्फ़ैनि फ़-इल्लम् युसिब्हा वाबिलुन् फ़-तल्लुन्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर **(265)** अ-यवद्दु अ-हदुकुम अन् तकू-न लहू जन्नतुम्-मिन्नख़ीलिंव्-व

مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِيْنَكَ سَعْيًا وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ
حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ
وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ اَلَّذِيْنَ
يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا
مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ
صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى كَالَّذِيْ يُنْفِقُ
مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَمَثَلُهٗ
كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا
لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكٰفِرِيْنَ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ
اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ
فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ

जो लोग अल्लाह की राह में अपने मालों को ख़र्च करते हैं, उनके ख़र्च किए हुए मालों की हालत ऐसी है जैसे एक दाने की हालत (अल्लाह तआ़ला के नज़दीक) जिससे (फ़र्ज़ करो) सात बालें जमें (और) हर बाल के अन्दर सौ दाने हों, और यह बढ़ोत्तरी ख़ुदा तआ़ला जिसको चाहता है अ़ता फ़रमाता है, और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुस्अ़त वाले हैं, जानने वाले हैं।[1] **(261)** जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर ख़र्च करने के बाद न तो (उसपर) एहसान जतलाते हैं और न (बर्ताव से उसको) तकलीफ़ पहुँचाते हैं।[2] उन लोगों को उन (के आमाल) का सवाब मिलेगा उनके परवर्दिगार के पास, और न उनपर कोई ख़तरा होगा और न वे ग़मगीन होंगे। **(262)** (कुछ पास न होने के वक़्त) मुनासिब बात कह देना और दरगुज़र करना (हज़ार दर्जे) बेहतर है ऐसी ख़ैरात (देने) से जिसके बाद तकलीफ़ पहुँचाई जाए। और अल्लाह तआ़ला ग़नी हैं, हलीम हैं।[3] **(263)** ऐ ईमान वालो! तुम एहसान जतलाकर या तकलीफ़ पहुँचाकर अपनी ख़ैरात को बर्बाद मत करो, उस शख़्स की तरह जो अपना माल ख़र्च करता है (महज़) लोगों को दिखलाने की ग़रज़ से, और ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर, सो उस शख़्स की हालत ऐसी है जैसे एक चिकना पत्थर (हो) जिसपर कुछ मिट्टी (आ गई) हो फिर उसपर ज़ोर की बारिश पड़ जाए सो उसको बिलकुल साफ़ कर दे, ऐसे लोगों को अपनी कमाई ज़रा भी हाथ न लगेगी, और अल्लाह तआ़ला काफ़िर लोगों को (जन्नत का) रास्ता न बतलायेंगे।[4] **(264)** और उन लोगों के ख़र्च किए हुए माल की हालत जो अपने मालों को ख़र्च करते हैं अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने की ग़रज़ से, और इस ग़रज़ से कि अपने नफ़्सों (को इस कठिन काम का आ़दी बनाकर उन) में पुख़्तगी पैदा करें, उनकी हालत एक बाग़ की तरह है जो किसी टीले पर हो कि उसपर ज़ोर की बारिश पड़ी हो, फिर वह दोगुना (चौगुना) फल लाया हो, और अगर ऐसे ज़ोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी उसको काफ़ी है, और अल्लाह तुम्हारे कामों को ख़ूब देखते हैं। **(265)** भला तुम में से किसी को यह बात पसन्द है कि उसका एक बाग़ हो खजूरों का और अंगूरों का, उसके (पेड़ों के) नीचे नहरें बहती हों, उस शख़्स के यहाँ उस बाग़ में और भी हर क़िस्म के (मुनासिब) मेवे हों, और उस शख़्स का बुढ़ापा आ गया हो और अहल व अ़याल "यानी घर वाले और बाल बच्चे" भी हों जिनमें (कमाने की) ताक़त नहीं, से उस बाग़ पर बगूला आए जिसमें आग का (माद्दा) हो, फिर वह बाग़ जल जाए। अल्लाह तआ़ला इसी तरह नज़ीरें बयान फ़रमाते हैं तुम्हारे लिए ताकि तुम सोचा करो।[5] **(266)** ❖

ऐ ईमान वालो! (नेक काम में) ख़र्च किया करो उम्दा चीज़ को अपनी कमाई में से, और उसमें से जो कि हमने

(पृष्ठ 78 का शेष) अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर हुआ कि उसका तमाशा उनको दुनिया ही में दिखला दें ताकि एक नज़ीर के ज़ाहिर हो जाने से लोगों को ज़्यादा हिदायत हो।

4. उनकी हैरत का जवाब इस मजमूई कैफ़ियत से देना, इसकी वजह नाचीज़ (हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि) के ज़ौक़ में यह है कि हैरत की बात यानी क़ियामत के दिन ज़िन्दा करना मुश्तमिल है कई हिस्सों पर, अव्वल तो ख़ुद ज़िन्दा करना, दूसरे लम्बी मुद्दत के बाद ज़िन्दा करना, तीसरे ख़ास कैफ़ियत से ज़िन्दा करना, चौथे उस मुद्दत तक रूह का बाक़ी रखना, पाँचवे ज़िन्दा होने के बाद बरज़ख़ में रहने की मुद्दत मालूम न होना। पहले जुज़ पर ख़ुद उनके ज़िन्दा करने और उनके गधे में जान डालने से दलालत की गई, और दूसरे जुज के साबित करने के लिए उनको सौ साल तक मुर्दा रखा, तीसरा जुज ख़ुद गधा उनके सामने ज़िन्दा करके दिखला दिया, चौथे जुज़ का नमूना खान-पान का बाक़ी रखना और ख़ुद उनके बदन का बाक़ी रखना दिखला दिया जो रूह के बाक़ी रहने के मुम्किन होने पर अच्छी तरह दलालत करता है, क्योंकि बदन और खान-पान अ़नासिर पर मुश्तमिल होने के सबब रूह के मुक़ाबले में तब्दीली और ख़राब होने के ज़्यादा क़ाबिल हैं, और पाँचवे अमूर की नज़ीर उनका जवाब में "यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन्" (एक दिन या उससे भी कम) कहना है, जैसा कि बिलकुल यही जवाब बाज़ महशर वाले भी देंगे।

5. यानी ज़िन्दा करने का तो यक़ीन है मगर अ़क़्ली तौर पर उसकी मुख़्तलिफ़ कैफ़ियतें हैं, अब उनमें से मालूम नहीं कौन-सी कैफ़ियत होगी।

6. इस वाक़िए को दिखला कर अल्लाह ने क़ियामत के दिन ज़िन्दा करने की कैफ़ियत बतला दी कि इसी तरह पहले बदन के हिस्से मुख़्तलिफ़ मक़ामात से जमा होकर जिस्म तैयार होंगे फिर उनमें रूह पड़ जाएगी।

1. नेक काम में ख़र्च करना नीयत के एतिबार से तीन क़िस्म का है, एक नुमाइश के साथ, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 82 पर)**

अअ्नाबिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु लहू फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स-मराति व असाबहुल्-कि-बरु व लहू ज़ुर्रिय्यतुन् ज़ु-अ़फ़ा-उ फ़-असाबहा इअ्सारुन् फ़ीहि नारुन् फ़ह्त-रक़त्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम त-तफ़क्करून (266) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिन् तय्यिबाति मा कसब्तुम व मिम्मा अख़रज्ना लकुम् मिनल्-अर्ज़ि व ला त-यम्म-मुल्-ख़बी-स मिन्हु तुन्फ़िक़ू-न व लस्तुम बि-आख़िज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि, वअ्लमू अन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (267) अश्शैतानु यअ़िदुकुमुल् फ़क्-र व यअ्मुरुकुम बिल्फ़ह्शा-इ वल्लाहु यअ़िदुकुम् मग़्फ़ि-रतम् मिन्हु व फ़ज़्लन्, वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (268) युअ्तिल्-हिक्म-त मंय्यशा-उ व मंय्युअ्तल्-हिक्म-त फ़-क़द् ऊति-य ख़ैरन् कसीरन्, व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्-अल्बाब (269) व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् न-फ़-क़तिन् औ नज़र्तुम् मिन्-नज़्रिन् फ़-इन्नल्ला-ह यअ्लमुहू, व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार (270) इन् तुब्दुस्स-दक़ाति फ़-निअ़िम्मा हि-य व इन् तुख़्फ़ूहा व तुअ्तूहल्फ़ु-क़रा-अ फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम व युकफ़्फ़िरु अ़न्कुम् मिन् सय्यिआतिकुम, वल्लाहु बिमा तअ्मलून ख़बीर (271) लै-स अ़लै-क हुदाहुम् व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़-लिअन्फ़ुसिकुम्, व मा तुन्फ़िक़ू-न इल्लब्तिग़ा-अ वज्हिल्लाहि, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिंय्युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (272) लिल्फ़ु-क़रा-इल्लज़ी-न उह्सिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ला यस्ततीअ़ू-न

نَخِيلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهٗ فِيْهَا مِنْ
كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ فَاَصَابَهَآ
اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ ع
مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا
الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا
فِيْهِ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيْدٌ ۝ اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ
الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ
وَفَضْلًا وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ يُّؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ
وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْرًا كَثِيْرًا وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ
اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ
نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ اِنْ
تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ
فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ
وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ

तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा किया है, और रद्दी (नाकारा) चीज़ की तरफ़ नीयत मत ले जाया करो कि उसमें से ख़र्च करो, हालाँकि तुम कभी उसके लेने वाले नहीं हो मगर देखकर टाल जाओ (तो और बात है)[1] और यक़ीन रखो कि अल्लाह तआला किसी के मोहताज नहीं, तारीफ़ के लायक़ हैं। **(267)** शैतान तुमको मोहताजी से डराता है[2] और तुमको बुरी बात (यानी कन्जूसी) का मश्विरा देता है, और अल्लाह तुमसे वायदा करता है अपनी तरफ़ से गुनाह माफ़ कर देने का और ज़्यादा देने का, और अल्लाह तआला वुसुअ़त वाले हैं, ख़ूब जानने वाले हैं।[3] **(268)** दीन की समझ जिसको चाहते हैं दे देते हैं, और (सच तो यह है कि) जिसको दीन की समझ मिल जाए उसको बड़ी ख़ैर की चीज़ मिल गई, और नसीहत वही लोग क़बूल करते हैं जो अ़क्ल वाले हैं। (यानी जो सही अ़क्ल रखते हैं) **(269)** और तुम लोग जो किसी क़िस्म का ख़र्च करते हो या किसी तरह की नज़्र ''यानी मन्नत'' मानते हो, सो हक़ तआ़ला को यक़ीनन सबकी इत्तिला है, और बेजा काम करने वालों का कोई साथी (और हिमायती) न होगा।[4] **(270)** अगर तुम ज़ाहिर करके दो सदक़ों को तब भी अच्छी बात है, और अगर उनको छुपाओ और फ़क़ीरों को दे दो तो यह छुपाना तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तआ़ला (उसकी बरकत से) तुम्हारे कुछ गुनाह भी दूर कर देंगे। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे किए हुए कामों की ख़ूब ख़बर रखते हैं।[5] **(271)** उन (काफ़िरों) को हिदायत पर ले आना कुछ आपके ज़िम्मे (फ़र्ज़ या वाजिब) नहीं, लेकिन ख़ुदा तआ़ला जिसको चाहें हिदायत पर ले आएँ। और (ऐ मुसलमानो!) जो कुछ तुम ख़र्च करते हो अपने फ़ायदे की ग़रज़ से करते हो, और तुम और किसी ग़रज़ से ख़र्च नहीं करते सिवाय हक़ तआ़ला की ज़ाते पाक की रिज़ा हासिल करने के, और (तथा) जो कुछ माल ख़र्च कर रहे हो यह सब (यानी इसका सवाब) पूरा-पूरा तुमको मिल जाएगा, और तुम्हारे लिए इसमें ज़रा कमी न की जाएगी।[6] **(272)** (सदक़ात) असल हक़ उन ज़रूरतमन्दों का है जो क़ैद हो गए हों अल्लाह की राह में,[7] (और इसी वजह से) वे लोग कहीं मुल्क में चलने-फिरने की (आ़दतन) संभावना नहीं रखते, (और) नावाक़िफ़ उनको मालदार ख़्याल करता है उनके सवाल से बचने के सबब से, (अलबत्ता) तुम उनको उनके तर्ज़ से पहचान सकते हो (कि तंगदस्ती व फ़ाक़े से चेहरे पर असर ज़रूर आ जाता है) वे लोगों से लिपट कर माँगते नहीं फिरते, और जो माल ख़र्च करोगे बेशक हक़ तआ़ला को उसकी ख़ूब इत्तिला है। ◆ **(273)** ❖

जो लोग ख़र्च करते हैं अपने मालों को रात और दिन में, (यानी वक़्त को ख़ास किए बग़ैर) खुले और छुपे तौर

(पृष्ठ 80 का शेष) उसका कुछ सवाब नहीं। दूसरे मामूली दरजे के इख़्लास के साथ, उसका सवाब दस हिस्से मिलता है। तीसरे ज़्यादा इख़्लास यानी उसके दरमियानी या आला दरजे के साथ, उसके लिए इस आयत में वायदा है दस से ज़्यादा सात सौ तक, और आयत ''मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह.....'' में इस सात सौ के वायदे के बाद और ज़्यादा का भी वायदा किया गया है।

2. बर्ताव से तकलीफ़ पहुँचाना यह कि जैसे अपने एहसान की बिना पर उसके साथ अपमान से पेश आए कि इससे दूसरा तकलीफ़ पाता है, और तकलीफ़ पहुँचाना हराम और अ़ज़ाब को वाजिब करने वाला है। एहसान जताना भी इसमें आ गया।

3. नादारी (कुछ पास न होने) की क़ैद इसलिए लगाई कि गुंजाइश होते हुए ज़रूरतमन्द की मदद न करना ख़ुद बुरा है, उसको बेहतर क्यों कहा जाता, अलबत्ता नादारी के वक़्त नरमी से जवाब दे देना और साइल की सख़्ती को टाल देना चूँकि सवाब का सबब है इसलिए इसको ख़ैर फ़रमाया।

4. मालूम होता है कि ख़र्च करने के लिए ईमान के साथ एक शर्त इख़्लास का सही होना भी है, और एहसान जताने और तकलीफ़ पहुँचाने से बाज़ रहना उसके बाक़ी रहने की शर्त है, इसलिए मुनाफ़िक़ और दिखावा करने वाले के ख़र्च करने को बातिल और एहसान जताने और तकलीफ़ पहुँचाने को बातिल करने वाला (यानी ख़ैरात को बेकार और ज़ाया करने वाला) कहा गया, कि उसमें सही होने और बाक़ी रहने की शर्त मौजूद नहीं है।

5. ज़ाहिर बात है कि किसी को अपने लिए यह बात पसन्द नहीं आ सकती। पस जब तुम इस मिसाल के वाक़िए को पसन्द नहीं करते तो नेकियों के बातिल और बेकार करने को कैसे गवारा करते हो?

1. यह उस शख़्स के लिए है जिसके पास उम्दा चीज़ हो और फिर वह बुरी और निकम्मी चीज़ ख़र्च करे। और जिसके पास अच्छी हो ही नहीं वह इस मुमानअ़त (मनाही) से बरी है और उसकी वह बुरी चीज़ मक़बूल है।

2. यानी अगर ख़र्च करोगे या अच्छा माल ख़र्च करोगे तो मोहताज हो जाओगे। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 84 पर)**

ज़र्बन् फ़िल्अर्ज़ि यह्सबुहुमुल्-जाहिलु अग़्निया-अ मिनत्त-अफ़्फ़ुफ़ि तअ्रिफ़ुहुम बिसीमाहुम् ला यस्अलूनन्ना-स इल्हाफ़न्, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम ◆ **(273)** ❖

अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रंव्-व अ़लानि-यतन् फ़-लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(274)** अल्लज़ी-न यअ्कुलूनर्रिबा ला यक़ूमू-न इल्ला कमा यक़ूमुल्लज़ी य-तख़ब्बतुहुश्-शैतानु मिनल्मस्सि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू इन्नमल्- बैअ़ु मिस्लुर्रिबा ✣ व अहल्लल्लाहुल्बै-अ़ व हर्रमर्रिबा, फ़-मन् जा-अहू मौअ़ि-ज़तुम् मिर्रब्बिही फ़न्तहा फ़-लहू मा स-ल-फ़, व अम्रुहू इलल्लाहि, व मन् अ़ा-द फ़-उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(275)** यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्स-दक़ाति, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् असीम **(276)** इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(277)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व ज़रू मा बक़ि-य मिनर्रिबा इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(278)** फ़-इल्लम् तफ़्अलू फ़अ्-ज़नू बि-हर्बिम् मिनल्लाहि व रसूलिही व इन् तुब्तुम् फ़-लकुम् रुऊसु अम्वालिकुम् ला तज़्लिमू-न व ला तुज़्लमून **(279)** व इन् का-न ज़ू अ़ुस्रतिन् फ़-नज़ि-रतुन् इला मैस-रतिन्, व अन्

وَجْهِ اللّٰهِ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ
لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ
تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا
لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ
الْمَسِّ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا وَاَحَلَّ
اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي
الصَّدَقٰتِ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ

पर (यानी हालात को ख़ास किए बग़ैर) सो उन लोगों को उनका सवाब मिलेगा अपने रब के पास, और उनपर कोई ख़तरा नहीं है और न वे ग़मगीन होंगे। **(274)** जो लोग सूद खाते हैं, नहीं खड़े होंगे (क़ियामत में क़ब्रों से) मगर जिस तरह खड़ा होता है ऐसा शख़्स जिसको ख़बूती बना दे लिपट कर, (यानी हैरान व मदहोश) यह (सज़ा) इसलिए (होगी) कि उन लोगों ने कहा था कि बैअ् "यानी तिजारत" भी तो सूद की तरह है, हालाँकि अल्लाह ने बैअ् को हलाल फ़रमाया है और सूद को हराम क़रार दिया है। फिर जिस शख़्स को उसके परवर्दिगार की तरफ़ से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया तो जो कुछ पहले (लेना) हो चुका है वह उसी का रहा, और (बातिन का) मामला उसका ख़ुदा के हवाले रहा। और जो शख़्स फिर लौट जाए 'यानी दोबारा सूदी मामले में मश्ग़ूल हो जाए' तो ये लोग दोज़ख़ में जाएँगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। **(275)** अल्लाह तआला सूद को मिटाते हैं[1] और सदक़ात को बढ़ाते हैं,[2] और अल्लाह पसन्द नहीं करते किसी कुफ़्र करने वाले को (और) किसी गुनाह के काम करने वाले को। **(276)** बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए और (ख़ास तौर पर) नमाज़ की पाबन्दी की और ज़कात दी, उनके लिए उनका सवाब होगा उनके परवर्दिगार के पास, और (आख़िरत में) उनपर कोई ख़तरा नहीं होगा और न वे ग़मगीन होंगे।[3] **(277)** ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो और जो कुछ सूद का बक़ाया है उसको छोड़ दो अगर तुम ईमान वाले हो। **(278)** फिर अगर तुम इसपर अ़मल न करोगे तो इश्तिहार सुन लो जंग का अल्लाह की तरफ़ से और उसके रसूल की तरफ़ से, (यानी तुमपर जिहाद होगा) और अगर तुम तौबा कर लोगे तो तुमको तुम्हारे असल माल मिल जाएँगे, न तुम किसी पर ज़ुल्म करने पाओगे और न तुमपर कोई ज़ुल्म करने पाएगा।[4] **(279)** और अगर तंगदस्त हो तो मोहलत देने का हुक्म है ख़ुशहाली तक। और यह (बात) कि माफ़ ही कर दो और ज़्यादा

(पृष्ठ 82 का शेष) 3. आयत का हासिल यह हुआ कि ऐसे ख़र्च करने में नुक़सान तो बिलकुल नहीं और नफ़ा हर तरह का है कि मग़्फ़िरत भी मिले और फ़ज़्ल भी। पस समझ का तक़ाज़ा यही है कि ऐसी हालत में शैतानी वस्वसों को हरगिज़ क़बूल न करे। और अगर ज़ाहिर में और यक़ीनी तौर पर मोहताजी के असबाब व हालात मौजूद हों तो शरीअ़त ख़ुद ऐसे शख़्स को नफ़्ली सदक़ात व ख़ैरात से रोकती है, और ऐसे शख़्स के ख़र्च न करने को कन्जूसी भी नहीं कह सकते।

4. बेजा काम करने वालों से न सिर्फ़ वे लोग मुराद हैं जो ज़रूरी शर्तों का लिहाज़ नहीं करते बल्कि वे भी मुराद हैं जो अहकाम की मुख़ालफ़त करते हैं, उनको खुले तौर पर वईद सुना दी।

5. यह आयत फ़र्ज़ और नफ़िल सब सदक़ात को शामिल है और सबमें छुपाना ही अफ़ज़ल है, और छुपाने के अफ़ज़ल होने से आयत में मुराद अपनी ज़ात में अफ़ज़ल होना है। पस अगर किसी मक़ाम पर किसी सबब से जैसे तोहमत को ख़त्म करने या इस उम्मीद पर कि लोग मेरी पैरवी करेंगे, वग़ैरह के सबब इज़्हार को तरजीह हो जाए तो यह अपने आपमें अफ़ज़लियत के मनाफ़ी नहीं है। और यह जो कहा 'कुछ गुनाह' तो वजह इसकी यह है कि ऐसी नेकियों से सिर्फ़ छोटे गुनाह माफ़ होते हैं।

6. यानी तुमको अपने बदले से मतलब रखना चाहिए और बदला हर हाल में मिलेगा, फिर तुमको इससे क्या बहस कि हमारा सदक़ा मुसलमान ही को मिले काफ़िर को न मिले। ख़ुलासा यह कि नीयत भी तुम्हारी असल में अपना ही नफ़ा हासिल करने की है, और हक़ीक़त में भी हासिल ख़ास तुम ही को होगा, फिर इसपर नज़र क्यों की जाती है कि यह नफ़ा ख़ास इसी तरीक़े से हासिल किया जाए कि मुसलमान को ही सदक़ा दें काफ़िर को न दें। और जानना चाहिए कि हदीस में जो आया है कि तेरा खाना ख़ास मुत्तक़ी खाया करें तो मुराद उससे दावत का खाना है, और इस आयत में ज़रूरत का खाना मुराद है, पस टकराव और इख़्तिलाफ़ का शुब्हा न किया जाए।

7. यानी दीन की ख़िदमत में। और जानना चाहिए कि हमारे मुल्क में इस आयत के मिस्दाक़ (यानी जिनपर यह फ़िट आती है) सबसे ज़्यादा वे हज़रात हैं जो दीनी उलूम की ख़िदमत और उनको फैलाने में मश्ग़ूल हैं।

1. कभी तो दुनिया ही में सब बर्बाद हो जाता है, वरना आख़िरत में तो यक़ीनी बर्बादी है, क्योंकि वहाँ उसपर अ़ज़ाब होगा।

2. कभी तो दुनिया में भी वरना आख़िरत में तो यक़ीनन बढ़ता है, क्योंकि वहाँ उसपर बहुत-सा सवाब मिलेगा, जैसा कि ऊपर की आयत में मज़्कूर हुआ।

3. ऊपर की आयत में सूद खाने वालों का क़ौल "इन्न-मल् बैअु मिस्लुर्रिबा" **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 86 पर)**

तसद्दक़ू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(280)** वत्तक़ू यौमन् तुर्जअू-न फ़ीहि इलल्लाहि, सुम्-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून **(281)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तदायन्तुम् बिदैनिन् इला अ-जलिम् मुसम्मन् फ़क्तुबूहु, वल्यक्तुब् बैनकुम् कातिबुम् बिल्अ़द्लि व ला यअ्-ब कातिबुन् अंय्यक्तु-ब कमा अ़ल्ल-महुल्लाहु फ़ल्यक्तुब् वल्युम्लि-लिल्लज़ी अ़लैहिल्-हक़्क़ु वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू व ला यब्ख़स् मिन्हु शैअन्, फ़-इन् कानल्लज़ी अ़लैहिल्हक़्क़ु सफ़ीहन् औ ज़अ़ीफ़न् औ ला यस्ततीअु अंय्युमिल्-ल हु-व फ़ल्युम्लिल् वलिय्युहू बिल्अ़द्लि, वस्तश्हिदू शहीदैनि मिर्रिजालिकुम् फ़-इल्लम् यकूना रजुलैनि फ़-रजुलुंव्वम्र-अतानि मिम्मन् तर्ज़ौ-न मिनश्शु-हदा-इ अन् तज़िल्-ल इह्दाहुमा फ़तुज़क्कि-र इह्दाहुमल्-उख़रा, व ला यअ्बश्-शु-हदा-उ इज़ा मा दुअू, व ला तस्अमू अन् तक्तुबूहु सग़ीरन् औ कबीरन् इला अ-जलिही, ज़ालिकुम् अक़्सतु अि़न्दल्लाहि व अक़्वमु लिश्शहा-दति व अद्ना अल्ला तर्ताबू इल्ला अन् तकू-न तिजारतन् हाज़ि-रतन् तुदीरूनहा बैनकुम् फ़लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अल्ला तक्तुबूहा, व अश्हिदू इज़ा तबायअ्तुम् व ला युज़ार्-र कातिबुंव्-व ला शहीदुन्, व इन् तफ़्अ़लू फ़-इन्नहू फ़ुसूक़ुम् बिकुम, वत्तक़ुल्ला-ह, व युअ़ल्लिमुकुमुल्लाहु, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(282)** व इन् कुन्तुम् अ़ला स-फ़रिंव्वलम् तजिदू कातिबन् फ़रिहानुम्

كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۞ فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَأْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَإِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ أَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ
وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۞ وَإِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلٰى مَيْسَرَةٍ ۚ
وَأَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۞ وَاتَّقُوْا يَوْمًا
تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ إِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۞ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ
إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۗ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ
الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ۗ
فَإِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا أَوْ ضَعِيْفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ
أَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۗ وَاسْتَشْهِدُوْا
شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَإِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ
وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدٰىهُمَا
فَتُذَكِّرَ إِحْدٰىهُمَا الْأُخْرٰى ۗ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَآءُ إِذَا مَا دُعُوْا ۗ
وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا أَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا أَوْ كَبِيْرًا إِلٰٓى أَجَلِهٖ ۗ ذٰلِكُمْ
أَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنٰٓى أَلَّا تَرْتَابُوْٓا إِلَّآ

बेहतर है तुम्हारे लिए, अगर तुमको (इसके सवाब की) ख़बर हो।[1] **(280)** और उस दिन से डरो जिसमें तुम अल्लाह तआ़ला की पेशी में लाए जाओगे, फिर हर शख़्स को उसका किया हुआ (बदला) पूरा-पूरा मिलेगा, और उनपर किसी क़िस्म का ज़ुल्म न होगा। **(281)** ❖

ऐ ईमान वालो! जब उधार का मामला करने लगो,[2] एक मुक़र्ररा मीयाद तक (के लिए) तो उसको लिख लिया करो। और यह ज़रूरी है कि तुम्हारे आपस में (जो) कोई लिखने वाला हो (वह) इन्साफ़ के साथ लिखे, और लिखने वाला लिखने से इनकार भी न करे, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उसको (लिखना) सिखला दिया, उसको चाहिए कि लिख दिया करे, और वह शख़्स लिखवा दे जिसके ज़िम्मे हक़ वाजिब हो, और अल्लाह तआ़ला से जो कि उसका परवर्दिगार है डरता रहे, और उसमें से ज़र्रा बराबर (बतलाने में) कमी न करे। फिर जिस शख़्स के ज़िम्मे हक़ वाजिब था वह अगर कम-अक़्ल हो या कमज़ोर बदन वाला हो या ख़ुद लिखने की क़ुदरत न रखता हो,[3] तो उसका कारकुन ठीक-ठीक तौर पर लिखाए। और दो शख़्सों को अपने मर्दों में से गवाह (भी) कर लिया करो,[4] फिर अगर वे दो गवाह मर्द (मयस्सर) न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें (गवाह बना ली जाएँ) ऐसे गवाहों में से जिनको तुम पसन्द करते हो, ताकि उन दोनों औ़रतों में से कोई एक भूल भी जाए तो उनमें की एक दूसरी को याद दिला दे। और गवाह भी इनकार न किया करें जब (गवाह बनने के लिए) बुलाए जाया करें। और तुम उस (क़र्ज़) के (बार-बार) लिखने से उकताया मत करो, चाहे वह (मामला) छोटा हो या बड़ा हो। यह लिख लेना इन्साफ़ को ज़्यादा क़ायम रखने वाला है अल्लाह के नज़दीक और शहादत का ज़्यादा दुरुस्त रखने वाला है और इस बात के लिए ज़्यादा मुनासिब है कि तुम (मामले के मुताल्लिक़) किसी शुब्हा में न पड़ो, मगर यह कि कोई सौदा हाथों-हाथ हो, जिसको आपस में लेते देते हो तो उसके न लिखने में तुमपर कोई इल्ज़ाम नहीं, और (इतना उसमें भी ज़रूर कर लिया करो कि) ख़रीद व बेच के वक़्त गवाह कर लिया करो, और किसी लिखने वाले को तकलीफ़ न दी जाए और न किसी गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो इसमें तुमको गुनाह होगा, और ख़ुदा से डरो और अल्लाह (का तुमपर एहसान है कि) तुमको तालीम फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला सब चीज़ों के जानने वाले हैं।[5] **(282)** और

(पृष्ठ 84 का शेष) उनके कुफ़्र पर दलालत करता है। उसके मुक़ाबिल इस आयत में "आ-मनू" लाया गया। और वहाँ उनकी सूद की बद-अ़मली मज़कूर थी, जिससे उन लोगों का दुनिया की तरफ़ राग़िब होना भी समझ में आता था, यहाँ उनका अच्छे अ़मल करना मुख़्तसर तौर पर "अ़मिलुस्सालिहाति" से और तफ़सीली तौर पर अल्लाह की तरफ़ राग़िब होना "अक़ामुस्सला-त" से, और सूद का माल हासिल करने के बजाय उसके उलट माल ख़र्च करना "आतुज़्ज़का-त" से ज़िक्र हुआ है। और ज़ाहिर है कि इन मुक़ाबलों की रियायत से कलाम में किस क़द्र हुस्न व ख़ूबी आ गई।

4. इस आयत में जो यह फ़रमाया है कि अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हारा असल माल तुम्हें मिलेगा, इससे समझ में आता है कि तौबा न करने की सूरत में असल माल भी न मिलेगा।

1. मुफ़्लिस को मोहलत देना वाजिब है। जब उसको गुंजाइश हो फिर मुतालबे की इजाज़त है।

2. चाहे दाम उधार हो या जो चीज़ ख़रीदनी हो वह उधार हो।

3. जैसे गूँगा है और लिखने वाला उसका इशारा नहीं समझता, या जैसे दूसरे मुल्क का रहने वाला है और दूसरी ज़बान बोलता है और लिखने वाला उसकी बोली नहीं समझता।

4. शरीअ़त में दावे को साबित करने का असल मदार यही गवाह हैं अगरचे दस्तावेज़ न हो, और ख़ाली दस्तावेज़ बग़ैर गवाहों के ऐसे मामलात में हुज्जत और मोतबर नहीं। दस्तावेज़ लिखना सिर्फ़ याददाश्त की आसानी के लिए है कि उसका मज़मून सुनकर तबई तौर पर अक्सर वाक़िआ़ याद आ जाता है।

5. लिखने में तीन फ़ायदे बयान फ़रमाए। अव्वल का हासिल यह है कि एक का हक़ **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 88 पर)**

मक़्बू-ज़तुन्, फ़-इन् अमि-न बअ्ज़ुकुम् बअ्ज़न् फ़ल्युअद्दिल्लज़िअ्तुमि-न अमान-तहू वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू, व ला तक्तुमुश्शहाद-त, व मंय्यक्तुम्हा फ़-इन्नहू आसिमुन् क़ल्बुहू, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न अ़लीम **(283)** ❖

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु, फ़-यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(284)** आ-मनर्रसूलु बिमा उन्ज़ि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मुअ्मिनून, कुल्लुन् आम-न बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही, ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम् मिर्रुसुलिही, व क़ालू समिअ्ना व अ-तअ्ना ग़ुफ़्रान-क रब्बना व इलैकल् मसीर **(285)** ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा, लहा मा क-सबत् व अ़लैहा मक्त-सबत्, रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्-नसीना औ अख़्तअ्ना, रब्बना व ला तह्मिल् अ़लैना इस्रन् कमा हमल्तहू अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिना, रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ताक़-त लना बिही वअ्फ़ु अ़न्ना, वग़्फ़िर् लना, वर्हम्ना, अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अ़लल् क़ौमिल् काफ़िरीन **(286)** ❖

اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا يُضَآرَّ
كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ
عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ فَاِنْ اَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ
رَبَّهٗ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى
الْاَرْضِ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ
اللّٰهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا
وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ
اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا

अगर तुम कहीं सफ़र में हो और (वहाँ) कोई लिखने वाला न पाओ, सो रहन रखने की चीज़ें (हैं) जो क़ब्ज़े में दे दी जाएँ।[1] और अगर एक-दूसरे का एतिबार करता हो तो जिस शख़्स का एतिबार कर लिया गया है (यानी क़र्ज़ लेने वाला) उसको चाहिए कि दूसरे का हक़ (पूरा-पूरा) अदा कर दे और अल्लाह तआ़ला से जो कि उसका परवर्दिगार है डरे। और गवाही को मत छुपाया करो, और जो शख़्स उसको छुपाएगा उसका दिल गुनाहगार होगा, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे किए हुए कामों को ख़ूब जानते हैं।[2] **(283)** ❖

अल्लाह तआ़ला ही की मिल्क हैं सब जो कुछ कि आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और जो बातें तुम्हारे नफ़्सों में हैं उनको अगर तुम ज़ाहिर करोगे या कि छुपाओगे हक़ तआ़ला तुमसे हिसाब लेंगे,[3] फिर (कुफ़्र व शिर्क के अ़लावा) जिसके लिए मन्ज़ूर होगा बख़्श देंगे और जिसको मन्ज़ूर होगा सज़ा देंगे, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं। **(284)** एतिक़ाद रखते हैं रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उस चीज़ का जो उनके पास उनके रब की तरफ़ से नाज़िल की गई है, और मोमिनीन भी सबके-सब अ़क़ीदा रखते हैं अल्लाह के साथ और उसके फ़रिश्तों के साथ और उसकी किताबों के साथ और उसके पैग़म्बरों के साथ कि हम उसके पैग़म्बरों में से किसी में तफ़रीक़ नहीं करते, और उन सबने यूँ कहा कि हमने (आपका इर्शाद) सुना और ख़ुशी से माना, हम आपकी बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे परवर्दिगार, और आप ही की तरफ़ (हम सबको) लौटना है। **(285)** अल्लाह तआ़ला किसी शख़्स को मुकल्लफ़ नहीं बनाता मगर उसी का जो उसकी ताक़त (और इख़्तियार) में हो। उसको सवाब भी उसी का मिलेगा जो इरादे से करे, और उसपर अ़ज़ाब भी उसी का होगा जो इरादे से करे।[4] ऐ हमारे रब! हमपर पकड़ न फ़रमाइए अगर हम भूल जाएँ या चूक जाएँ, ऐ हमारे रब! और हमपर कोई सख़्त हुक्म न भेजिए जैसे हमसे पहले लोगों पर आपने भेजे थे, ऐ हमारे रब! और हमपर कोई ऐसा बोझ (दुनिया या आख़िरत का) न डालिए जिसकी हमको सहार न हो, और दरगुज़र कीजिए हमसे, और बख़्श दीजिए हमको, और रहम कीजिए हमपर, आप हमारे काम बनाने वाले हैं (और काम बनाने वाला तरफ़दार होता है) सो आप हमको काफ़िर लोगों पर ग़ालिब कीजिए।[5] **(286)** ❖

(पृष्ठ 86 का शेष) दूसरे के पास न जाएगा न रहेगा। दूसरे का हासिल यह है कि गवाहों को आसानी होगी। तीसरे का हासिल यह है कि मामला करने वालों का जी साफ़ रहेगा। तीनों फ़ायदों का अलग-अलग होना ज़ाहिर है। और इन फ़ायदों का इस तरह बयान करना क़रीना है लिखने के मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) होने का, इसी तरह गवाह करना भी मुस्तहब है, अलबत्ता लिखने वाले और गवाह को नुक़सान पहुँचाना हराम है, "फ़ुसूक़ुन् बिकुम्" इसका खुला क़रीना है। और यह जो फ़रमाया कि न लिखने में इल्ज़ाम नहीं तो मुराद यह है कि दुनिया का नुक़सान नहीं वरना गुनाह तो किसी मामले के न लिखने में नहीं है।

1. जम्हूर उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि रहन रखना जिस तरह सफ़र में जायज़ है हज़र (वतन और ठहरने की जगह) में भी जायज़ है। यहाँ ज़िक्र करने में सफ़र को ख़ास करने की वजह यह है कि हज़र के मुक़ाबले में सफ़र में इसकी ज़रूरत ज़्यादा पड़ेगी।

मसलाः जो चीज़ रहन रखी जाए उसपर जब तक उसका क़ब्ज़ा न हो जाए जिसके पास वह रखी गई है, वह रहन नहीं होता।

2. शहादत (गवाही) का छुपाना दो तरह से है, एक यह कि बिलकुल बयान न करे, दूसरे यह कि ग़लत-बयानी करे। दोनों में असल वाक़िआ़ छुप गया और दोनों सूरतें हराम हैं। जब किसी हक़दार का हक़ बग़ैर उसकी शहादत के ज़ाया होने लगे और वह दरख़्वास्त भी करे, तो उस वक़्त गवाही देने से इनकार करना हराम है। चूँकि शहादत का देना वाजिब है इसलिए उसपर उज्रत लेना जायज़ नहीं, अलबत्ता आने-जाने का ख़र्च और ज़रूरत के मुताबिक़ खाना-पीना साहिबे मामला के ज़िम्मे है। अगर ज़्यादा आ जाए तो बक़िया वापस कर दे।

3. 'मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम्' से मुराद दिल की इख़्तियारी बातें हैं।

4. यहाँ जो सवाब व अ़ज़ाब का मदार आमाल और मेहनत पर रखा, मुराद इससे सवाब व अ़ज़ाब शुरूआत में है न कि किसी के देने या सबब बनने से।

5. हदीस में है कि ये सब दुआ़एँ क़बूल हुईं।

3 सूरतु आलि इमरान 89

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 15326 अक्षर, 3542 शब्द 200 आयतें और 20 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल्-क़य्यूम (2) नज़्ज़-ल अ़लैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व अन्ज़लत्तौरा-त वल्-इन्जील (3) मिन् क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़-लल् फ़ुर्क़ा-न, इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (4) इन्नल्ला-ह ला यख़्फ़ा अ़लैहि शैउन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ (5) हुवल्लज़ी युसव्विरुकुम् फ़िल्अर्हामि कै-फ़ यशा-उ, ला इला-ह इल्ला हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम (6) हुवल्लज़ी अन्ज़-ल अ़लैकल्-किता-ब मिन्हु आयातुम् मुह्कमातुन् हुन्-न उम्मुल्-किताबि व उ-ख़रु मु-तशाबिहातुन्, फ़-अम्मल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़ैग़ुन् फ़-यत्तबिअू-न मा तशा-ब-ह मिन्हुब्तिग़ा-अल्- फ़ित्नति वब्तिग़ा-अ तअ्वीलिही, व मा यअ्लमु तअ्वी-लहू इल्लल्लाहु ✣ वर्रासिख़ू-न फ़िल्-अ़िल्मि यक़ूलू-न आमन्ना बिही कुल्लुम् मिन् अ़िन्दि रब्बिना व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्अल्बाब (7) रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलूबना बअ़्-द इज़्

تلك الرسل ٣ ٤٦ ال عمرٰن ٣

حملته على الذين من قبلنا ربنا ولا تحملنا ما لا طاقة
لنا به واعف عنا واغفر لنا وارحمنا انت مولىنا فانصرنا
على القوم الكفرين
سورة ال عمرٰن مدنية بسم الله الرحمٰن الرحيم
الٓمٓ الله لا اله الا هو الحي القيوم نزل عليك الكتب
بالحق مصدقا لما بين يديه وانزل التورىة والانجيل
من قبل هدى للناس وانزل الفرقان ان الذين
كفروا بايت الله لهم عذاب شديد والله عزيز ذو
انتقام ان الله لا يخفى عليه شيء في الارض ولا
في السماء هو الذي يصوركم في الارحام كيف يشاء
لا اله الا هو العزيز الحكيم هو الذي انزل عليك الكتب
منه ايت محكمت هن ام الكتب واخر متشبهت
فاما الذين في قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه
ابتغاء الفتنة وابتغاء تاويله وما يعلم تاويله الا
الله والرسخون في العلم يقولون امنا به كل من عند
ربنا وما يذكر الا اولوا الالباب ربنا لا تزغ قلوبنا بعد

منزل ١

✣ व़. लाज़िम

3 सूरः आलि इमरान 89

सूरः आलि इमरान मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 200 आयतें और 20 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़्-लाम्-मीम् **(1)** अल्लाह तआ़ला ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई माबूद बनाने के क़ाबिल नहीं और वह ज़िन्दा (हमेशा रहने वाले) हैं, सब चीज़ों के संभालने वाले हैं।[1] **(2)** अल्लाह तआ़ला ने आपके पास क़ुरआन भेजा है हक़ के साथ इस कैफ़ियत से कि वह तस्दीक़ करता है उन (आसमानी) किताबों की जो उससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं, और (इसी तरह) भेजा था तौरात और इन्जील को **(3)** इससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते, और अल्लाह तआ़ला ने भेजे मोजिज़ात, बेशक जो लोग इनकारी हैं अल्लाह की आयतों के उनके लिए सख़्त सज़ा है, और अल्लाह तआ़ला ग़ल्बे (और क़ुदरत) वाले हैं, (और) बदला लेने वाले हैं। **(4)** बेशक अल्लाह से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है, (न कोई चीज़) ज़मीन में और न (कोई चीज़) आसमान में। **(5)** वह ऐसी ज़ाते पाक है कि तुम्हारी सूरत (व शक्ल) बनाता है रहमों "यानी बच्चेदानियों" में, जिस तरह चाहता है। कोई इबादत के लायक़ नहीं सिवाय उसके, वह ग़ल्बे वाले हैं (और) हिक्मत वाले हैं। **(6)** वह ऐसा है जिसने नाज़िल किया तुमपर किताब को जिसमें का एक हिस्सा वे आयतें हैं जो कि मुराद के इश्तिबाह "यानी पोशीदा और मुश्तबह होने" से महफ़ूज़ हैं।[2] और यही आयतें असली मदार हैं (इस) किताब का,[3] और दूसरी आयतें ऐसी हैं जो कि मुराद में मुश्तबह हैं,[4] सो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे उसके उसी हिस्से के पीछे हो लेते हैं जो मुराद में मुश्तबह है, (दीन में) शोरिश "यानी फ़ितना" ढूँढने की ग़रज़ से, और उसका (ग़लत) मतलब ढूँढने की ग़रज़ से, हालाँकि उनका (सही) मतलब सिवाय हक़ तआ़ला के कोई और नहीं जानता। और जो लोग (दीन के) इल्म में पुख़्तगी रखने वाले (और समझदार) हैं वे यूँ कहते हैं कि हम इसपर (इजमालन् "यानी सरसरी और समझ में न आने के बावजूद" यक़ीन रखते हैं, (ये) सब हमारे परवर्दिगार की तरफ़ से हैं, और नसीहत वही लोग क़बूल करते हैं जो कि अ़क़्ल वाले हैं।[5] **(7)** ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे दिलों को टेढ़ा न कीजिए बाद इसके कि आप हमको हिदायत कर चुके हैं, और हमको अपने पास से (ख़ास) रहमत अ़ता फ़रमाइए, बेशक आप बड़े अ़ता फ़रमाने वाले हैं।[6] **(8)** ऐ हमारे परवर्दिगार! आप बेशक तमाम आदमियों को (मैदाने हश्र में)

---

1. 'हय्यु व क़य्यूम' की सिफ़ात लाने में बातिल माबूदों के माबूद न होने की अ़क़्ली दलील पर इशारा है क्योंकि उनमें ये सिफ़तें नहीं हैं।
2. यानी उनका मतलब ज़ाहिर है।
3. यानी मायने ज़ाहिर न करने वाली आयतों को भी मायने ज़ाहिर करने वाली के मुवाफ़िक़ बनाया जाता है।
4. यानी उनका मतलब पोशीदा है, चाहे मुख़्तसर होने की वजह से, चाहे किसी ज़ाहिर मुराद वाली नस्स से टकराने की वजह से।
5. बाज़ तौहीद के इनकारी लोगों का बाज़ ऐसे कलिमात से जो तौहीद के ख़िलाफ़ वहम में डालने वाले हों, से इस्तिदलाल हो सकता था, चुनाँचे कुछ ईसाइयों ने लफ़्ज़ "रूहुल्लाह" और "कलिमतुल्लाह" से जो कि क़ुरआन में आए हैं, अपने मुद्दआ पर इल्ज़ामी तौर पर इस्तिदलाल किया था। इस आयत में उस शुब्हे का जवाब है। जिसका हासिल यह है कि ऐसे कलिमात से जिनकी मुराद पोशीदा है हुज्जत पकड़ना दुरुस्त नहीं, बल्कि अ़क़ायद का मदार वाज़ेह और खुली नुसूस (दीन के वे अहकाम जो वाज़ेह हैं) हैं, और जिनकी मुराद पोशीदा हो उनपर जबकि उनकी तफ़सीर मालूम न हो इजमालन् ईमान ले आना वाजिब है, ज़्यादा तफ़्तीश की इजाज़त नहीं।
6. यह हक़ परस्तों का दूसरा कमाल ज़िक्र किया गया है, कि बावजूद हक़ तक पहुँचने के उसपर नाज़ाँ और मग़रूर नहीं बल्कि हक़ तआ़ला से हक़ पर जमे रहने की दुआ करते हैं।

हदैतना व हब् लना मिल्लदुन्-क रह्म-तन् इन्न-क अन्तल् वह्हाब **(8)** रब्बना इन्न-क जामिअुन्नासि लियौमिल्-ला रै-ब फ़ीहि, इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल् मीआद **(9)** ❖

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अन्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, व उलाइ-क हुम् वक़ूदुन्नार **(10)** क-दअ्बि आलि फ़िर्औ-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कज़्ज़बू बिआयातिना फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्, वल्लाहु शदीदुल् अिक़ाब **(11)** क़ुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू सतुग़्लबू-न व तुह्शरू-न इला जहन्न-म, व बिअ्सल् मिहाद **(12)** क़द् का-न लकुम् आ-यतुन् फ़ी फ़ि-अतैनिल् त-क़ता, फ़ि-अतुन् तुक़ातिलु फ़ी सबीलिल्लाहि व उख़रा काफ़ि-रतुंय्यरौ-नहुम् मिस्लैहिम् रअ्यल्-अैनि, वल्लाहु युअय्यिदु बिनस्रिही मंय्यशा-उ, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अिब्रतल्-लिउलिल् अब्सार **(13)** ज़ुय्यि-न लिन्नासि हुब्बुश्श-हवाति मिनन्निसा-इ वल्बनी-न वल्-क़नातीरिल्-मुक़न्त-रति मिनज़्ज़-हबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्-ख़ैलिल्-मुसव्व-मति वल्-अन्आमि वल्हर्सि, ज़ालि-क मताअुल् हयातिद्दुन्या वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुल् मआब **(14)** क़ुल् अ-उनब्बिउकुम् बिख़ैरिम् मिन् ज़ालिकुम्, लिल्लज़ीनत्तक़ौ अिन्-द रब्बिहिम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व अज़्वाजुम्-मुतह्ह-रतुंव्-व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि, वल्लाहु बसीरुम् बिल्अिबाद **(15)** अल्लज़ी-न

إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾
رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيعَادَ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَ
لَا أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿١٠﴾
كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾ قُلْ
لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ
وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي
الْأَبْصَارِ ﴿١٣﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ
وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ
وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ عِنْدَهُ
حُسْنُ الْمَآبِ ﴿١٤﴾ قُلْ أَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا
عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَ
أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾

❖ रु. 1/9/9

जमा करने वाले हैं, उस दिन जिसमें ज़रा शक नहीं, बेशक अल्लाह तआला वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करते।[1] (9) ❖

यक़ीनन जो लोग कुफ़्र करते हैं हरगिज़ उनके काम नहीं आ सकते उनके माल (व दौलत) और न उनकी औलाद अल्लाह तआला के मुक़ाबले में ज़र्रा बराबर भी,[2] और ऐसे लोग जहन्नम का ईंधन होंगे। (10) जैसा मामला था फ़िरऔन वालों का और उनसे पहले वाले (काफ़िर) लोगों का, कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा बतलाया इसपर अल्लाह ने उनकी पकड़ फ़रमाई उनके गुनाहों के सबब, और अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (11) आप उन कुफ़्र करने वालों से फ़रमा दीजिए कि जल्द ही तुम (मुसलमानों के हाथ से) मग़लूब किए जाओगे, और (आख़िरत में) जहन्नम की तरफ़ जमा करके ले जाए जाओगे, और वह (जहन्नम) बुरा ठिकाना है।[3] (12) बेशक तुम्हारे लिए बड़ा नमूना है दो गिरोहों (के वाक़िए) में जो कि आपस में एक-दूसरे[4] के मुक़ाबिल हुए थे। एक गिरोह तो अल्लाह की राह में लड़ता था (यानी मुसलमान) और दूसरा गिरोह वे काफ़िर लोग थे, ये काफ़िर अपने को देख रहे थे कि उन (मुसलमानों) से कई हिस्से (ज़्यादा) हैं खुली आँखों देखना, और अल्लाह तआला अपनी इम्दाद से जिसको चाहते हैं क़ुव्वत दे देते हैं, (सो) बेशक इसमें बड़ी इबरत है (समझने) देखने वाले लोगों के लिए।[5] (13) अच्छी मालूम होती है (अक्सर) लोगों को मुहब्बत पसन्दीदा चीज़ों की, (जैसे) औरतें हुईं, बेटे हुए, लगे हुए ढेर हुए सोने और चाँदी के, नम्बर (यानी निशान) लगे हुए घोड़े हुए, (या दूसरे) मवेशी हुए और खेती हुई, (लेकिन) ये सब चीज़ें दुनियावी ज़िन्दगानी में इस्तेमाल करने की हैं, और अन्जामकार की भलाई तो अल्लाह ही के पास है।[6] (14) आप फ़रमा दीजिए क्या मैं तुमको ऐसी चीज़ बतला दूँ जो (बहुत ही ज़्यादा) बेहतर हो इन चीज़ों से, (सो सुनो) ऐसे लोगों के लिए जो (अल्लाह से) डरते हैं, उनके (हक़ीक़ी) मालिक के पास ऐसे-ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे और (उनके लिए) ऐसी बीवियाँ हैं जो साफ़-सुथरी की हुई हैं, और (उनके लिए) रिज़ा और ख़ुशनूदी है अल्लाह तआला की तरफ़ से, और अल्लाह तआला ख़ूब देखते (भालते) हैं बन्दों को। (15) (ये) ऐसे लोग (हैं) जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हम ईमान ले आए, सो आप हमारे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए

---

1. यहाँ तक ज़बान से हुज्जत पूरी करने का बयान था, आगे तलवार से मुक़ाबले का बयान और तलवार का लुक़्मा बनने और मग़लूब होने की वईद है, जो साफ़ तौर पर इस आयत में ज़िक्र की गई हैः 'क़ुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू...' और इससे पहले कि आयत बतौर तम्हीद के है।

2. मुक़ाबले में काम आने के दो मायने हो सकते हैं, एक यह कि अल्लाह तआला की रहमत व इनायत की ज़रूरत न हो, उसके बदले सिर्फ़ माल और औलाद काफ़ी और लाभदायक हो जाए, दूसरे यह कि माल व औलाद अल्लाह तआला के मुक़ाबिल होकर उनके अज़ाब से बचा ले। मुक़ाबले का लफ़्ज़ दोनों जगह बोला जाता है। सो आयत में दोनों की नफ़ी (इनकार) कर दी गई।

3. इस आयत में काफ़िरों के मग़लूब होने की ख़बर दी गई है। आगे उसकी एक काफ़ी नज़ीर बतौर दलील के इर्शाद फ़रमाते हैं।

4. बदर की लड़ाई में।

5. रिवायतों में आया है कि उस दिन मुसलमान तीन सौ तेरह (313) थे और कुफ़्फ़ार एक हज़ार (1000) थे, गोया काफ़िर लोग मुसलमानों से तीन हिस्से थे। इस आयत में उसी ज़्यादा होने को बयान फ़रमाया है, कि कुफ़्फ़ार आँखों से देख रहे थे कि हमारा गिरोह ज़्यादा है मगर फिर भी अन्जाम देख लिया कि मुसलमान ही ग़ालिब रहे।

6. यह जो फ़रमाया कि इन चीज़ों की मुहब्बत ख़ुश्नुमा (अच्छी) मालूम होती है, इसका हासिल मेरे ज़ौक़ में यह है कि मुहब्बत व मैलान अक्सर हालात में फ़ितने का सबब हो जाने की वजह से डर की चीज़ थी मगर अक्सर लोग इसको नुक़सान का सबब नहीं जानते बल्कि इस मैलान को बिना किसी क़ैद के अच्छा समझते हैं। और अल्लाह ही को ज़्यादा इल्म है।

यक़ूलू-न रब्बना इन्नना आमन्ना फ़ग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व क़िना अ़ज़ाबन्नार **(16)** अस्साबिरी-न वस्सादिक़ी-न वल्क़ानिती-न वल्मुन्फ़िक़ी-न वल्मुस्तग़्फ़िरी-न बिल्अस्हार **(17)** शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला-ह इल्ला हु-व वल्मलाइ-कतु व उलुल्-अ़िल्मि क़ा-इमम् बिल्क़िस्ति, ला इला-ह इल्ला हुवल्-अ़ज़ीज़ुल् हकीम ● **(18)** इन्नद्दी-न अ़िन्दल्लाहिल् इस्लामु, व मख़्त-लफ़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्-बअ़्दि मा जा-अहुमुल् अ़िल्मु बग़्यम् बैनहुम, व मंय्यक्फ़ुर् बिआयातिल्लाहि फ़-इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल् हिसाब **(19)** फ़-इन् हाज्जू-क फ़क़ुल् अस्लम्तु वज्हि-य लिल्लाहि व मनित्त-ब-अ़नि, व क़ुल् लिल्लज़ी-न ऊतुल्- किता-ब वल्-उम्मिय्यी-न अ-अस्लम्तुम्, फ़-इन् अस्लमू फ़-क़दिह्तदौ व इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैकल्-बलाग़ु, वल्लाहु बसीरुम् बिल्अ़िबाद **(20)** ❖

इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिआया--तिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-न बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व यक़्तुलू-नल्लज़ी-न यअ्मुरू-न बिल्क़िस्ति मिनन्नासि फ़- बश्शिर्हुम् बि-अ़ज़ाबिन् अलीम **(21)** उलाइ-कल्लज़ी-न हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व मा लहुम् मिन्-नासिरीन **(22)** अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल्-किताबि युद्औ-न इला किताबिल्लाहि लि-यह्कु-म बैनहुम् सुम्-म य-तवल्ला फ़रीक़ुम् मिन्हुम् व हुम् मुअ़्रिज़ून **(23)** ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लन्

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ﴿١٦﴾ الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْقَانِتِينَ وَالْمُنفِقِينَ وَ
الْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ
وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾ إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ
وَمَن يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَإِنْ
حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُل
لِّلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ
اهْتَدَوا ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾
إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ
وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُم
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢١﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٢﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا
نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ
يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن

और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लीजिए।[1] **(16)** (और वे लोग) सब्र करने वाले हैं और सच्चे हैं और (अल्लाह के सामने) आ़जिज़ी करने वाले हैं, और (माल) ख़र्च करने वाले हैं और रात के आख़िरी हिस्से में (उठ-उठकर) गुनाहों की माफ़ी चाहने वाले हैं।[2] **(17)** गवाही दी अल्लाह तआ़ला ने इसकी कि सिवाय उस ज़ात के कोई माबूद होने के लायक़ नहीं और फ़रिश्तों ने भी और इल्म वालों ने भी, और माबूद भी वह इस शान के हैं कि एतिदाल के साथ इन्तिज़ाम रखने वाले हैं,[3] उनके सिवा कोई माबूद होने के लायक़ नहीं, वह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। ● **(18)** बेशक (हक़ और मक़बूल) दीन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो इख़्तिलाफ़ किया (कि इस्लाम को बातिल कहा) तो ऐसी हालत के बाद कि उनको दलील पहुँच चुकी थी सिर्फ़ एक-दूसरे से बढ़ने के सबब से,[4] और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के अहकाम का इनकार करेगा तो इसमें कोई शुब्हा नहीं कि अल्लाह तआ़ला बहुत जल्द उसका हिसाब लेने वाले हैं। **(19)** फिर भी अगर ये लोग आपसे हुज्जतें निकालें तो आप फ़रमा दीजिए कि (तुम मानो या न मानो) मैं तो अपना रुख़ ख़ास अल्लाह की तरफ़ कर चुका और जो मेरी पैरवी करने वाले थे वे भी। और अहले किताब से और अ़रब (के मुश्रिकीन) से कहिए कि क्या तुम भी इस्लाम लाते हो? सो अगर वे लोग इस्लाम ले आएँ तो वे लोग भी राह पर आ जाएँगे, और अगर वे लोग रू-गर्दानी करें तो आपके ज़िम्मे सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह तआ़ला ख़ुद देख (और समझ) लेगें बन्दों को। **(20)** ❖

बेशक जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआ़ला की आयतों के साथ और क़त्ल करते हैं पैग़म्बरों को नाहक़, और क़त्ल करते हैं ऐसे शख़्सों को जो (अफ़आ़ल व अख़्लाक़ के) एतिदाल की तालीम देते हैं, सो ऐसे लोगों को ख़बर सुना दीजिए एक दर्दनाक सज़ा की। **(21)** (और) ये वे लोग हैं कि उनके सब (नेक) आमाल ग़ारत हो गए दुनिया में और आख़िरत में,[5] और (सज़ा के वक़्त) उनका कोई (हिमायती और) मददगार न होगा। **(22)** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) क्या आपने ऐसे लोग नहीं देखे जिनको किताब (तौरात) का एक (काफ़ी) हिस्सा दिया गया,[6] और उसी अल्लाह की किताब की तरफ़ इस ग़रज़ से उनको बुलाया भी जाता है कि वह उनके दरमियान फ़ैसला कर दे, फिर (भी) उनमें से कुछ लोग मुँह मोड़ते हैं बेरुख़ी करते हुए। **(23)** (और) यह इस सबब से है कि वे लोग यूँ कहते हैं कि हमको सिर्फ़ गिनती के थोड़े दिनों तक दोज़ख़ की आग लगेगी, और उनको धोखे में डाल

1. यह जो कहा कि हम ईमान ले आए सो आप हमारे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए, यह इस वजह से है कि बग़ैर ईमान के मग़्फ़िरत नहीं होती। पस हासिल यह हुआ कि कुफ़्र जो मग़्फ़िरत में हमेशा के लिए रुकावट है उसको हम दूर कर चुके अब माफ़ कर दीजिए।
2. रात के आख़िरी हिस्से की तख़्सीस इसलिए है कि उस वक़्त उठने में मशक़्क़त भी है और वह वक़्त क़बूलियत का भी है।
3. "क़ाइमम्-बिल्क़िस्ति" की सिफ़त ग़ालिबन् इसलिए बढ़ा दी कि वह ऐसे नहीं कि सिर्फ़ अपनी ताज़ीम और इबादत ही कराते हों बल्कि वह सबके काम भी बनाते हैं।
4. यानी इस्लाम के हक़ होने में शुब्हा करने की कोई वजह नहीं हुई, बल्कि उनमें दूसरों से बड़ा बनने का माद्दा है और इस्लाम लाने में यह सरदारी जो उनको अब अ़वाम पर हासिल है ख़त्म होती थी, इसलिए इस्लाम को क़बूल नहीं किया बल्कि उल्टा उसको बातिल बतलाने लगे।
5. दुनिया में ग़ारत होना यह कि उनके साथ मुसलमानों जैसा मामला न होगा, और आख़िरत में यह कि उनकी मग़्फ़िरत न होगी।
6. अगर हिदायत के तालिब होते तो वह हिस्सा इस ग़रज़ को पूरा करने के लिए काफ़ी था।

तमस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम् मअ्दूदातिंव्-व ग़र्रहुम् फ़ी दीनिहिम् मा कानू यफ़्तरून **(24)** फ़कै-फ़ इज़ा जमअ्नाहुम् लियौमिल् ला रै-ब फ़ीहि, व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून **(25)** क़ुलिल्लाहुम्-म मालिकल्मुल्कि तुअ्तिल्-मुल्-क मन् तशा-उ व तन्ज़िअुल्मुल्-क मिम्मन् तशा-उ व तुअिज़्ज़ु मन् तशा-उ व तुज़िल्लु मन् तशा-उ, बि-यदिकल्-ख़ैरु, इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(26)** तूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व तुख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्-मय्यिति व तुख़्रिजुल् मय्यि-त मिनल्हय्यि व तर्ज़ुक़ु मन् तशा-उ बिग़ैरि हिसाब **(27)** ला यत्तख़िज़िल्-मुअ्मिनूनल् काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल्- मुअ्मिनी-न व मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क फ़लै-स मिनल्लाहि फ़ी शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन्हुम् तुक़ातन्, व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू, व इलल्लाहिल्-मसीर **(28)** क़ुल् इन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ्लम्हुल्लाहु, व यअ्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(29)** यौ-म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम् मा अ़मिलत् मिन् ख़ैरिम् मुह्ज़रंव्-व मा अ़मिलत् मिन् सूइन् त-वद्दु लौ अन्-न बैनहा व बैनहू अ-मदम् बअ़ीदन्, व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू, वल्लाहु रऊफ़ुम् बिल्अ़िबाद **(30)** ❖

क़ुल् इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला-ह फ़त्तबिअूनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनूबकुम्,

تمسنا النار الا ايامًا معدودت وغرهم في دينهم ما كانوا
يفترون ﴿٢٤﴾ فكيف اذا جمعنهم ليوم لا ريب فيه ووفيت
كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ﴿٢٥﴾ قل اللهم ملك
الملك تؤتي الملك من تشاء وتنزع الملك ممن تشاء و
تعز من تشاء وتذل من تشاء بيدك الخير انك على كل
شيء قدير ﴿٢٦﴾ تولج اليل في النهار وتولج النهار في اليل
وتخرج الحي من الميت وتخرج الميت من الحي وترزق من
تشاء بغير حساب ﴿٢٧﴾ لا يتخذ المؤمنون الكفرين اولياء
من دون المؤمنين ومن يفعل ذلك فليس من الله في
شيء الا ان تتقوا منهم تقىة ويحذركم الله نفسه و
الى الله المصير ﴿٢٨﴾ قل ان تخفوا ما في صدوركم او تبدوه
يعلمه الله ويعلم ما في السموت وما في الارض والله على
كل شيء قدير ﴿٢٩﴾ يوم تجد كل نفس ما عملت من خير
محضرًا وما عملت من سوء تود لو ان بينها وبينه امدًا
بعيدًا ويحذركم الله نفسه والله رءوف بالعباد ﴿٣٠﴾ قل
ان كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله ويغفر لكم ذنوبكم

रखा है उनके दीन के बारे में उनकी घड़ी हुई बातों ने, सो (उनका) क्या (बुरा) हाल होगा। **(24)** जबकि हम उनको उस तारीख़ में जमा कर लेंगे जिस (के आने) में ज़रा-सा शुब्हा नहीं, और (उस तारीख़ में) पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा हर शख़्स को (उस काम का) जो कुछ उसने (दुनिया में) किया था, और उन शख़्सों पर ज़ुल्म न किया जाएगा।[1] **(25)** (ऐ मुहम्मद) आप (अल्लाह से) यूँ कहिए कि ऐ अल्लाह तमाम मुल्क के मालिक! आप मुल्क जिसको चाहें दे देते हैं और जिससे चाहें मुल्क ले लेते हैं, और जिसको चाहें ग़ालिब कर देते हैं, और जिसको चाहें पस्त कर देते हैं, आप ही के इख़्तियार में है सब भलाई, बेशक आप हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं। **(26)** आप रात के हिस्सों को दिन में दाख़िल कर देते हैं, और (बाज़ मौसमों में) दिन (के हिस्सों) को रात में दाख़िल कर देते हैं, और आप जानदार चीज़ को बेजान चीज़ से निकाल लेते हैं, (जैसे अंडे से बच्चा) और बेजान चीज़ को जानदार से निकाल लेते हैं, (जैसे परिन्दे से अंडा) और आप जिसको चाहते हैं बेशुमार रिज़्क़ अ़ता फ़रमाते हैं।[2] **(27)** मुसलमानों को चाहिए कि काफ़िरों को (खुले तौर पर या छुपे तौर पर) दोस्त न बनाएँ,[3] मुसलमानों (की दोस्ती) से आगे बढ़ करके,[4] और जो शख़्स ऐसा (काम) करेगा सो वह शख़्स अल्लाह के साथ (दोस्ती रखने के) किसी शुमार में नहीं, मगर ऐसी सूरत में कि तुम उनसे किसी क़िस्म का (सख़्त) अन्देशा रखते हो, और अल्लाह तआ़ला तुमको अपनी ज़ात से डराता है, और ख़ुदा ही की तरफ़ लौटकर जाना है।[5] **(28)** आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम छुपाकर रखोगे अपने दिल की बात या उसको ज़ाहिर करोगे, अल्लाह तआ़ला उसको (हर हाल में) जानते हैं, और वह सब कुछ जानते हैं जो कुछ आसमनों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुदरत भी मुकम्मल रखते हैं। **(29)** जिस दिन (ऐसा होगा) कि हर शख़्स अपने अच्छे किए हुए कामों को सामने लाया हुआ पाएगा और अपने बुरे किए हुए कामों को भी, (और) इस बात की तमन्ना करेगा कि क्या ख़ूब होता जो उस शख़्स के और उस दिन के दरमियान बहुत लम्बी दूरी (आड़) होती, और ख़ुदा तआ़ला तुमको अपनी (अ़ज़ीमुश्शान) ज़ात से डराते हैं, और अल्लाह तआ़ला बन्दों पर निहायत मेहरबान हैं। **(30)** ❖

1. अगली आयत में उम्मते मुहम्मदिया के काफ़िरों पर ग़ालिब आने की पैशीनगोई (भविष्यवाणी) की तरफ़ तालीमे मुनाजात के उन्वान में इशारा है। जैसा कि शाने नुज़ूल से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रूम व ईरान फ़त्ह हो जाने का वायदा फ़रमाया तो मुनाफ़िक़ लोग और यहूद ने मज़ाक़ उड़ाया और इसे दूर की बात बताया, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।
2. यानी हर तरह की क़ुदरत हासिल है। सो कमज़ोरों को क़ुव्वत व हुकूमत दे देना क्या मुश्किल है। इस दुआ़ में एक क़िस्म का इस्तिदलाल है इसके इम्कान (संभावना) पर, और कुफ़्र के दूर होने का दफ़ा करना है। (यानी जो लोग यह समझते हैं कि कुफ़्र का ज़ोर नहीं टूटेगा सो उनका रद्द है) और ख़ैर की तख़्सीस इसलिए मुनासिब हुई कि यहाँ मक़सूद ख़ैर का माँगना है। जैसे कोई कहे कि नौकर रखना आपके इख़्तियार में होता है, अगरचे नौकर का हटा देना और अलग कर देना भी इख़्तियार में होता है।
3. ऊपर कुफ़्फ़ार की बुराई ज़िक्र हुई थी, इस आयत में उनके साथ दोस्ती करने की मुमानअ़त (मनाही) फ़रमाते हैं।
4. हद से बढ़ना दो सूरत से होता है, एक यह कि मुसलमानों के साथ बिलकुल दोस्ती न रखें, दूसरे यह कि मुसलमानों के साथ-साथ कुफ़्फ़ार से भी दोस्ती रखें, दोनों सूरतें मनाही में दाख़िल हैं।
5. काफ़िरों के साथ तीन क़िस्म के मामले होते हैं, एक यह कि 'मवालात' यानी दोस्ती, नम्बर दो 'मुदारात' यानी ज़ाहिरी तौर पर अच्छे अख़्लाक़ का बर्ताव, नम्बर तीन 'मुवासात' यानी एहसान करना व फ़ायदा पहुँचाना। मवालात तो किसी हाल में जायज़ नहीं और मुदारात तीन हालतों में दुरुस्त है, एक नुक़सान और शर को दफ़ा करने के वास्ते, दूसरे उस काफ़िर की दीनी मस्लहत यानी हिदायत की उम्मीद के वास्ते, तीसरे मेहमान के इक्राम और अदब के लिए। और अपनी मस्लहत और माल व जान के फ़ायदे के लिए दुरुस्त नहीं। और मुवासात का हुक्म यह है कि अहले हरब के साथ नाजायज़ है और ग़ैर-अहले हरब के साथ जायज़।

वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(31)** क़ुल् अतीअुल्ला-ह वर्रसू-ल फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल् काफ़िरीन **(32)** इन्नल्लाहस्तफ़ा आद-म व नूहंव्-व आ-ल इब्राही-म व आ-ल अिम्रा-न अलल् आलमीन **(33)** ज़ुर्रिय्यतम् बअ्ज़ुहा मिम्-बअ्ज़िन्, वल्लाहु समीअुन् अलीम **(34)** इज़् क़ा-लतिम्र-अतु अिम्रा-न रब्बि इन्नी नज़र्तु ल-क मा फ़ी बत्नी मुहर्र-रन् फ़-तक़ब्बल् मिन्नी इन्न-क अन्तस्-समीअुल् अलीम **(35)** फ़-लम्मा व-ज़अत्हा क़ालत् रब्बि इन्नी वज़अ्तुहा उन्सा, वल्लाहु अअ्लमु बिमा व-ज़अत्, व लैसज़्ज़-करु कल्उन्सा व इन्नी सम्मैतुहा मर्य-म व इन्नी उअ़ीज़ुहा बि-क व ज़ुर्रिय्य-तहा मिनश्-शैतानिर्-रजीम **(36)** फ़-तक़ब्ब-लहा रब्बुहा बि-क़बूलिन् ह-सनिंव्-व अम्ब-तहा नबातन् ह-सनंव्-व कफ़्फ़-लहा ज़-करिय्या, कुल्लमा द-ख़-ल अलैहा ज़-करिय्यल्- मिह्रा-ब व-ज-द अिन्दहा रिज़्क़न् क़ा-ल या मर्यमु अन्ना लकि हाज़ा, क़ालत् हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि, इन्नल्ला-ह यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब **(37)** हुनालि-क दआ ज़-करिय्या रब्बहू क़ा-ल रब्बि हब् ली मिल्लदुन्-क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-बतन् इन्न-क समीअुद्दुआ-इ **(38)** फ़नादत्हुल् मलाइ-कतु व हु-व क़ा-इमुंय्युसल्ली फ़िल्-मिहराबि अन्नल्ला-ह युबश्शिरु-क बि-यह्या मुसद्दिक़म् बि-कलिमतिम् मिनल्लाहि व सय्यिदंव्-व हसूरंव्-व नबिय्यम् मिनस्सालिहीन **(39)** क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ؕ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِىْ بَطْنِىْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾
فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ
بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَ
اِنِّىْٓ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا
رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ
كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ
يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ
هَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّىْ فِى الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا
مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِىَ

आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम खुदा तआला से मुहब्बत रखते हो तो तुम लोग मेरी पैरवी करो और खुदा तआला तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे और तुम्हारे सब गुनाहों को माफ़ कर देंगे, और अल्लाह तआला बड़े माफ़ करने वाले, बड़ी इनायत फ़रमाने वाले हैं। **(31)** (और) आप (यह भी) फ़रमा दीजिए कि तुम फ़रमाँबर्दारी किया करो अल्लाह तआला की और उसके रसूल की, फिर (इसपर भी) अगर वे लोग मुँह मोड़ें सो (सुन रखें कि) अल्लाह तआला काफ़िरों से मुहब्बत नहीं करते। **(32)** बेशक अल्लाह तआला ने (नुबुव्वत के लिए) चुन लिया है (हज़रत) आदम को और (हज़रत) नूह को और (हज़रत) इब्राहीम की औलाद (में से कुछ) को और इमरान की औलाद (में से कुछ) को तमाम जहान पर। **(33)** बाज़े उनमें बाज़ों की औलाद हैं;[1] और अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाले हैं ख़ूब जानने वाले हैं। **(34)** जबकि इमरान[2] (मरियम के बाप) की बीवी ने (गर्भ की हालत में) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने मन्नत मानी है आपके लिए इस बच्चे की जो मेरे पेट में है, कि वह आज़ाद रखा जाएगा, सो आप मुझसे (पैदाइश के बाद) क़बूल कर लीजिए, बेशक आप ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। **(35)** फिर जब लड़की को जन्म दिया (हसरत से) कहने लगीं कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने तो वह हमल "यानी गर्भ" लड़की जन्मी, हालाँकि खुदा तआला ज़्यादा जानते हैं उसको जो उन्होंने जन्मी, और वह लड़का (जो उन्होंने चाहा था) इस लड़की के बराबर नहीं, और मैंने इस लड़की का नाम मरियम रखा, और मैं इसको और इसकी औलाद को (अगर कभी औलाद हो) आपकी पनाह में देती हूँ शैतान मर्दूद से। **(36)** पस उन (मरियम अलैहस्सलाम) को उनके रब ने बेहतरीन तौर पर क़बूल फ़रमाया और उम्दा तौर पर परवान चढ़ाया[3] और (हज़रत) ज़करिया को उनका सरपरस्त "यानी अभिभावक" बनाया, (सो) जब कभी ज़करिया (अलैहिस्सलाम) उनके पास उम्दा मकान में तशरीफ़ लाते तो उनके पास कुछ खाने-पीने की चीज़ें पाते (और) यूँ फ़रमाते कि ऐ मरियम! ये चीज़ें तुम्हारे वास्ते कहाँ से आईं, वह कहतीं कि अल्लाह तआला के पास से आईं, बेशक अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं बे-अहलियत रिज़्क़ अता फ़रमाते हैं। **(37)** इस मौक़े पर दुआ की ज़करिया (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब से, अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! इनायत कीजिए मुझको ख़ास अपने पास से कोई अच्छी औलाद, बेशक आप बहुत सुनने वाले हैं दुआ के। **(38)** पस पुकार कर कहा उनसे फ़रिश्तों ने और वह खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे मेहराब में,[4] कि अल्लाह तआला आपको ख़ुशख़बरी देते हैं यहया की जिनके हालात ये होंगे कि वह कलिमतुल्लाह की तस्दीक़ करने वाले होंगे,[5] और मुक़्तदा होंगे, "यानी रहनुमा होंगे और उनकी पैरवी की जाएगी" और अपने नफ़्स को (लज़्ज़तों से) बहुत रोकने वाले होंगे,[6]

---

1. यह जो फ़रमाया कि एक-दूसरे की औलाद है, शायद मक़सूद इससे उन सब हज़रात का इत्तिहाद या ज़ाती शरफ़ के साथ नसब का शरफ़ बयान फ़रमाना हो, या इस बात का जताना हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाप-दादाओं में भी नुबुव्वत रही है, अगर आपको नुबुव्वत मिल गई तो बईद क्या है। वल्लाहु अअ्लम्।

2. अगर यह इमरान हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वालिद हैं तो औलाद से मुराद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम हैं। और अगर यह इमरान हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के वालिद हैं तो औलाद से मुराद हज़रत ईसा बिन मरियम अलैहस्सलाम हैं।

3. यह जो फ़रमाया कि उम्दा तौर पर उनको परवान चढ़ाया तो इसके दो मायने हो सकते हैं, एक यह कि शुरू से इबादत व इताअत में मश्ग़ूल रखा, दूसरे यह कि और बच्चों कि मामूली बढ़ोतरी और फलने-फूलने से उनकी ज़ाहिरी बढ़ोतरी थी।

4. मेहराब से मुराद या तो मस्जिदे बैतुल मक़्दिस का मेहराब है, या मुराद इससे वह मकान है जिसमें हज़रत मरियम अलैहस्सलाम को रखा करते थे, क्योंकि इस जगह मेहराब के मायने उम्दा मकान के हैं।

5. यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत की तस्दीक़ करने वाले होंगे। कलिमतुल्लाह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इसलिए कहते हैं कि वह महज़ खुदा तआला के हुक्म से ख़िलाफ़े आदत बिना बाप के वास्ते के पैदा किए गए।

6. लज़्ज़तों से रोकने में सब जायज़ ख़्वाहिशों से बचना दाख़िल हो गया। अच्छा खाना, अच्छा पहनना, निकाह करना, वग़ैरह-वग़ैरह।

गुलामुंव्-व क़द् ब-ल-ग़नियल् कि-बरु वम्र-अती आ़क़िरुन्, क़ा-ल कज़ालिकल्लाहु यफ़्अ़लु मा यशा-उ **(40)** क़ा-ल रब्बिज्अ़ल्ली आ-यतन्, क़ा-ल आ-यतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स-त अय्यामिन् इल्ला रम्ज़न्, वज़्कुर् रब्ब-क कसीरंव्-व सब्बिह् बिल्-अ़शिय्यि वल्-इब्कार **(41)** ❖

व इज़् क़ालतिल् मलाइ-कतु या मर्यमु इन्नल्लाहस्तफ़ाकि व तह्ह-रकि वस्तफ़ाकि अ़ला निसा-इल् आ़लमीन **(42)** या मर्यमुक़्नुती लिरब्बिकि वस्जुदी वर्कअ़ी मअ़र्राकिअ़ीन **(43)** ज़ालि-क मिन् अम्बा-इल् ग़ैबि नूहीहि इलै-क, व मा कुन्-त लदैहिम इज़् युल्क़ू-न अक़्ला-महुम् अय्युहुम् यक्फ़ुलु मर्य-म व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् यख़्तसिमून **(44)** इज़् क़ालतिल् मलाइ-कतु या मर्यमु इन्नल्ला-ह युबश्शिरुकि बि-कलि-मतिम् मिन्हुस्मुहुल्-मसीहु अ़ीसब्नु मर्य-म वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मिनल् मुक़र्रबीन **(45)** व युकल्लिमुन्ना-स

الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۝ قَالَ
رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۖ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ
اِلَّا رَمْزًا ۖ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝
وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ
وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَ
اسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ
نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ
يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۠ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝ اِذْ قَالَتِ
الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝
وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ قَالَتْ رَبِّ
اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ
يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۖ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝ وَرَسُوْلًا
اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ
اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ

फ़िल्मह्दि व कह्लंव्-व मिनस्सालिहीन **(46)** क़ालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली व-लदुंव्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुन्, क़ा-ल कज़ालिकिल्लाहु यख़्लुक़ु मा यशा-उ, इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून **(47)** व युअ़ल्लिमुहुल्- किता-ब वल्-हिक्म-त वत्तौरा-त वल्-इन्जील **(48)** व रसूलन् इला बनी इस्राई-ल अन्नी क़द् जिअ्तुकुम् बिआ-यतिम्

और नबी भी होंगे और आला दर्जे के सलीक़े वाले होंगे। **(39)** ज़करिया ने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे लड़का किस तरह होगा हालाँकि मुझको बुढ़ापा आ पहुँचा और मेरी बीवी भी बच्चा जनने के क़ाबिल नहीं रही, अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि इसी हालत में लड़का हो जाएगा, (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला जो कुछ इरादा करें कर देते हैं। **(40)** उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ परवर्दिगार! मेरे वास्ते कोई निशानी मुक़र्रर कर दीजिए, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम लोगों से तीन दिन तक बातें न कर सकोगे सिवाय इशारे के, और अपने रब को (दिल से) कस्रत से याद कीजिये और (ज़बान से भी) तसबीह (और पाकी बयान) कीजिये दिन ढले भी और सुबह को भी, (कि इसकी क़ुदरत रहेगी) **(41)** ❖

और (वह वक़्त ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जबकि फ़रिश्तों ने कहा[1] कि ऐ मरियम! बेशक तुमको अल्लाह तआ़ला ने मुन्तख़ब (यानी मक़बूल) फ़रमाया है और पाक बनाया है और तमाम जहान की औ़रतों के मुक़ाबले में तुमको मुन्तख़ब फ़रमाया है।[2] **(42)** ऐ मरियम! फ़रमाँबर्दारी करती रहो अपने परवर्दिगार की और सज्दा किया करो, और रुकूअ़ किया करो उन लोगों के साथ जो रुकू करने वाले हैं। **(43)** ये (क़िस्से) ग़ैब की ख़बरों में से हैं, हम उनकी वह्य भेजते हैं आपके पास और उन लोगों के पास आप न तो उस वक़्त मौजूद थे जबकि वे (परची डालने के तौर पर) अपने-अपने क़लमों को (पानी में) डालते थे कि उन सबमें कौन शख़्स (हज़रत) मरियम (अ़लैहस्सलाम) की ज़िम्मेदारी लें, और न आप उनके पास मौजूद थे जबकि आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे।[3] **(44)** (उस वक़्त को याद करो) जबकि फ़रिश्तों ने (यह भी) कहा कि ऐ मरियम! बेशक अल्लाह तआ़ला तुमको ख़ुशख़बरी देते हैं एक कलिमे की, जो अल्लाह की जानिब से होगा, उसका नाम (व लक़ब) मसीह ईसा बिन मरियम होगा, आबरू वाले होंगे दुनिया में और आख़िरत में और मुक़र्रबीन में से होंगे। **(45)** और अदमियों से कलाम करेंगे गहवारे "यानी पालने" में और बड़ी उम्र में और सलीक़े वाले लोगों में से होंगे। **(46)** (हज़रत) मरियम (अ़लैहस्सलाम) बोलीं, ऐ मेरे परवर्दिगार! किस तरह होगा मेरे बच्चा हालाँकि मुझको किसी बशर ने हाथ नहीं लगाया, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वैसे ही (बिना मर्द के) होगा, (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला जो चाहें पैदा कर देते हैं। जब किसी चीज़ को पूरा करना चाहते हैं तो उसको कह देते हैं कि हो जा, बस वह चीज़ हो जाती है।[4] **(47)** और अल्लाह तआ़ला उनको तालीम फ़रमाएँगे (आसमानी) किताबें और समझ की बातें, (ख़ास तौर पर) तौरात और इन्जील। **(48)** और उनको (तमाम) बनी इसराईल की तरफ़ भेजेंगे (पैग़म्बर बनाकर, वे कहेंगे कि) मैं तुम लोगों के पास (अपनी नुबुव्वत पर) काफ़ी दलील लेकर आया हूँ तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से, वह यह है कि मैं तुम लोगों के लिए गारे से ऐसी शक्ल बनाता

1. फ़रिश्तों का कलाम करना नुबुव्वत की ख़ुसूसियत में से नहीं।

2. लफ़्ज़ "निसा" से जो कि ख़ास है बालिग़ा के साथ, ज़ाहिर में मालूम होता है कि यह कहना फ़रिश्तों का हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम के जवान होने के बाद था, और इस बिना पर "इस्तिफ़ा" (मुन्तख़ब करना और मक़बूल बना लेना) के दो बार लाने की यह वजह बयान की जा सकती है कि पहला "इस्तिफ़ा" बचपन का हो और दूसरा "इस्तिफ़ा" जवानी का हो।

3. शरीअ़ते मुहम्मदिया में हनफ़िया के मस्लक पर क़ुर्आ़ (परची) डालने का यह हुक्म है कि जिन हुक़ूक़ के असबाब शरीअ़त में मालूम व मुतैयन हैं, उनमें क़ुर्आ़ नाजायज़ व जुए के अन्दर दाख़िल है, और जिन हुक़ूक़ के असबाब राय पर छोड़े हुए हों उनमें क़ुर्आ़ जायज़ है।

4. यानी किसी चीज़ के पैदा होने के लिए सिर्फ़ उनका चाहना काफ़ी है, किसी ख़ास वास्ते और सबब की उनको हाजत नहीं।

मिर्रब्बिकुम् अन्नी अख़्लुक़ु लकुम् मिनत्तीनि कहै-अतित्तैरि फ़-अन्फ़ुख़ु फ़ीहि फ़-यकूनु तैरम् बि-इज़्निल्लाहि व उब्रिउल्-अक्म-ह वल्-अब्र-स व उह्यिल्मौता बि-इज़्निल्लाहि व उनब्बिउकुम् बिमा तअ्कुलू-न व मा तद्दख़िरू-न फ़ी बुयूतिकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(49)** व मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व लि-उहिल्-ल लकुम् बअ्ज़ल्लज़ी हुर्रि-म अ़लैकुम् व जिअ्तुकुम् बिआ-यतिम् मिर्रब्बिकुम्, फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीऊन **(50)** इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम **(51)** फ़-लम्मा अ-हस्-स अ़ीसा मिन्हुमुल् कुफ़्-र क़ा-ल मन् अन्सारी इलल्लाहि, क़ालल्-हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि आमन्ना बिल्लाहि वश्हद् बि-अन्ना मुस्लिमून **(52)** रब्बना आमन्ना बिमा अन्ज़ल्-त वत्त-बअ्नर्-रसू-ल फ़क्तुब्ना म-अ़श्शाहिदीन **(53)** व म-करू व म-करल्लाहु, वल्लाहु ख़ैरुल् माकिरीन ▲ **(54)** ❖

इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसा इन्नी मु-तवफ़्फ़ी-क व राफ़िअु-क इलय्-य व मुतह्हिरु-क मिनल्लज़ी-न क-फ़रू व जाअ़िलुल्लज़ीनत्-त-बऊ-क फ़ौक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला यौमिल्- क़ियामति सुम्-म इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़-अह्कुमु बैनकुम् फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून **(55)** फ़-अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-उअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वल्- आख़ि-रति व मा लहुम् मिन्-नासिरीन **(56)** व अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम्

تلك الرسل ٣ — ٥٢ — آل عمران ٣

طيرا باذن الله وابرئ الاكمه والابرص واحي الموتى
باذن الله وانبئكم بما تاكلون وما تدخرون في بيوتكم
ان في ذلك لاية لكم ان كنتم مؤمنين ۝ ومصدقا لما
بين يدي من التورىة ولاحل لكم بعض الذي حرم
عليكم وجئتكم باية من ربكم فاتقوا الله واطيعون ۝
ان الله ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم ۝ فلما
احس عيسى منهم الكفر قال من انصاري الى الله قال
الحواريون نحن انصار الله امنا بالله واشهد بانا مسلمون ۝
ربنا امنا بما انزلت واتبعنا الرسول فاكتبنا مع الشهدين ۝ و
مكروا ومكر الله والله خير الماكرين ۝ اذ قال الله يعيسى اني
متوفيك ورافعك الي ومطهرك من الذين كفروا و
جاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا الى يوم القيمة
ثم الي مرجعكم فاحكم بينكم فيما كنتم فيه تختلفون ۝
فاما الذين كفروا فاعذبهم عذابا شديدا في الدنيا
والاخرة وما لهم من نصرين ۝ واما الذين امنوا وعملوا
الصلحت فيوفيهم اجورهم والله لا يحب الظلمين ۝

منزل ١

हूँ जैसी परिन्दे की शक्ल होती है, फिर उसके अन्दर फूँक मार देता हूँ जिससे वह (जानदार) परिन्दा बन जाता है खुदा के हुक्म से, और मैं अच्छा कर देता हूँ जन्म के अन्धे को, और बर्स (कोढ़) के बीमार को, और ज़िन्दा कर देता हूँ मुर्दों को अल्लाह तआ़ला के हुक्म से,[1] और मैं तुमको बतला देता हूँ जो कुछ अपने घरों में खा (कर) आते हो और जो कुछ रख आते हो, बेशक इनमें (मेरी नुबुव्वत की) काफ़ी दलील है तुम लोगों के लिए, अगर तुम ईमान लाना चाहो। **(49)** और मैं इस तौर पर आया हूँ कि तस्दीक़ करता हूँ उस किताब की जो मुझसे पहले थी यानी तौरात की, और इसलिए आया हूँ कि तुम लोगों के वास्ते कुछ ऐसी चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुमपर हराम कर दी गई थीं, और मैं तुम्हारे पास (नुबुव्वत की) दलील लेकर आया हूँ तुम्हारे परवर्दिगार की ओर से, हासिल यह कि तुम लोग अल्लाह तआ़ला से डरो और मेरा कहना मानो। **(50)** बेशक अल्लाह तआ़ला मेरे भी रब हैं और तुम्हारे भी रब हैं, सो तुम लोग उसकी इबादत करो, बस यह है सीधा रास्ता। **(51)** सो जब (हज़रत) ईसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उनसे इनकार देखा तो आपने फ़रमाया कि कोई ऐसे आदमी भी हैं जो मेरे मददगार हो जाएँ अल्लाह के वास्ते, हवारिय्यीन बोले कि हम हैं अल्लाह (के दीन) के मददगार, हम अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए और आप इसके गवाह रहिए कि हम फ़रमाँबरदार हैं। **(52)** ऐ हमारे परवर्दिगार! हम ईमान ले आए उन चीज़ों (यानी अहकाम) पर जो आपने नाज़िल फ़रमाई और पैरवी इख़्तियार की हमने (इन) रसूल की, सो हमको उन लोगों के साथ लिख दीजिए जो तस्दीक़ करते हैं। **(53)** और उन लोगों ने खुफ़िया तदबीर की[2] और अल्लाह तआ़ला ने खुफ़िया तदबीर फ़रमाई और अल्लाह तआ़ला सब तदबीरें करने वालों से अच्छे हैं।[3] ▲ **(54)** ❖

जबकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः ऐ ईसा (कुछ ग़म न करो) बेशक मैं तुमको वफ़ात देने वाला हूँ[4] और (फ़िलहाल) मैं तुमको अपनी तरफ़ उठाए लेता हूँ[5] और तुमको उन लोगों से पाक करने वाला हूँ जो इनकारी हैं,[6] और जो लोग तुम्हारा कहना मानने वाले हैं उनको ग़ालिब रखने वाला हूँ उन लोगों पर जो कि (तुम्हारे) मुन्किर "यानी इनकार करने वाले" हैं क़ियामत के दिन तक,[7] फिर मेरी तरफ़ होगी सबकी वापसी, सो मैं तुम्हारे दरमियान (अ़मली) फ़ैसला कर दूँगा उन मामलों में जिनमें तुम आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे। **(55)** (तफ़सील फ़ैसले की यह है कि) जो लोग (इन इख़्तिलाफ़ करने वालों में) काफ़िर थे सो उनको सख़्त सज़ा दूँगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी, और उन लोगों का कोई हिमायती (व तरफ़दार) न होगा। **(56)** और जो लोग मोमिन थे और उन्होंने नेक काम किए थे,

---

1. परिन्दे की शक्ल बनाना तस्वीर था जो उस शरीअ़त में जायज़ था। हमारी शरीअ़त में इसका जायज़ होना मन्सूख़ हो गया। और कोढ़ी और जन्म से अन्धे को सही करने की संभावना अगर तबई असबाब से साबित हो जाए तो मोजिज़ा होना इस तौर पर था कि बिना तबई असबाब के सेहत हो जाती थी।
2. चुनाँचे फ़रेब और बहाने से आपको गिरफ़्तार करके सूली देने पर तैयार हो गए।
3. एक और शख़्स को ईसा अ़लैहिस्सलाम की शक्ल का बना दिया और ईसा अ़लैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया जिससे वह महफ़ूज़ रहे और वह हम-शक्ल सूली दिया गया।
4. यानी अपने मुक़र्ररा वक़्त पर तबई मौत से वफ़ात देने वाला हूँ। इससे मक़सूद दुश्मनों से हिफ़ाज़त की खुशख़बरी देनी थी, यह मुक़र्ररा वक़्त उस वक़्त आएगा जब क़ियामत के क़रीबी ज़माने में ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से ज़मीन पर तशरीफ़ लाएँगे, जैसा कि सही हदीसों में आया है।
5. यह वायदा ऊपर आसमान की तरफ़ फ़िलहाल उठा लेने का है। चुनाँचे यह वायदा साथ-के-साथ पूरा किया गया, जिसके पूरा करने की ख़बर सूरः निसा में दी गई हैः 'र-फ़-अ़हुल्लाहु इलैहि' (यानी अल्लाह ने उनको उठा लिया है) **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 104 पर)**

उजूरहुम्, वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (57) ज़ालि-क नत्लूहु अ़लै-क मिनल्-आयाति वज़्ज़िक्रिल् हकीम (58) इन्-न म-स-ल अ़ीसा अ़िन्दल्लाहि क-म-सलि आद-म, ख़-ल-क़हू मिन् तुराबिन् सुम्-म क़ा-ल लहू कुन् फ़-यकून (59) अल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकुम् मिनल्-मुम्तरीन (60) फ़-मन् हाज्ज-क फ़ीहि मिम्-बअ़्दि मा जाअ-क मिनल् अ़िल्मि फ़क़ुल् तआ़लौ नद्अ़ु अब्ना-अना व अब्ना-अकुम् व निसा-अना व निसा-अकुम् व अन्फ़ु-सना व अन्फ़ु-सकुम्, सुम्-म नब्तहिल् फ़-नज्अ़ल्-लअ़्-नतल्लाहि अ़लल्काज़िबीन (61) इन्-न हाज़ा लहुवल् क़-ससुल्-हक़्क़ु व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु, व इन्नल्ला-ह ल-हुवल्- अ़ज़ीज़ुल् हकीम (62) फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिल्मुफ़्सिदीन (63) ❖

कुल् या अह्लल्-किताबि तआ़लौ इला कलि-मतिन् सवा-इम् बैनना व बैनकुम् अल्ला नअ़्बु-द इल्लल्ला-ह व ला नुश्रि-क बिही शैअंव्-व ला यत्तख़ि-ज़ बअ़्ज़ुना बअ़्ज़न् अर्बाबम् मिन् दूनिल्लाहि, फ़-इन् तवल्लौ फ़-क़ूलुश्-हदू बिअन्ना मुस्लिमून (64) या अह्लल्-किताबि लि-म तुहाज्जू-न फ़ी इब्राही-म व मा उन्ज़ि-लतित्तौरातु वल्-इन्जीलु इल्ला मिम्-बअ़्दिही, अ-फ़ला तअ़्क़िलून (65) हा-अन्तुम् हा-उला-इ हाजज्तुम् फ़ीमा लकुम् बिही अ़िल्मुन् फ़लि-म तुहाज्जू-न फ़ी मा लै-स लकुम् बिही अ़िल्मुन्, वल्लाहु यअ़्लमु व अन्तुम् ला तअ़्लमून (66) मा का-न इब्राहीमु यहूदिय्यंव्-व ला नस्रानिय्यंव्-व लाकिन् का-न हनीफ़म् मुस्लिमन्, व मा का-न

ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى
عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾
اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ
مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ
وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ
لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَ
مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى
كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ
شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ
فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ
تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾
مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا
مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ

सो उनको अल्लाह तआ़ला उनके (ईमान और नेक कामों के) सवाब देंगे, और अल्लाह तआ़ला मुहब्बत नहीं रखते ज़ुल्म करने वालों से। **(57)** यह हम आपको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं जो कि (आपकी नुबुव्वत की) दलीलों में से है, और हिक्मत भरे मज़ामीन में से है। **(58)** बेशक अ़जीब हालत (हज़रत) ईसा की अल्लाह तआ़ला के नज़दीक (हज़रत) आदम (अ़लैहिस्सलाम) की अ़जीब हालत की तरह हैं, कि उन (के जिस्मानी ढाँचे) को मिट्टी से बनाया फिर उनको हुक्म दिया कि (जानदार) हो, पस वह (जानदार) हो गये। **(59)** यह वाक़ई अम्र आपके परवर्दिगार की तरफ़ से (बतलाया गया) है, सो आप शुब्हा करने वालों में से न होजिए। **(60)** पस जो शख़्स आपसे ईसा के बारे में (अब भी) हुज्जत करे, आपके पास (क़तई) इल्म आने के बाद तो आप फ़रमा दीजिए कि आ जाओ हम (और तुम) बुला लें अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को, और ख़ुद अपने तनों को और तुम्हारे तनों को, फिर हम (सब मिलकर) ख़ूब दिल से दुआ़ करें, इस तौर पर कि अल्लाह की लानत भेजें उनपर जो (इस बहस में) नाहक़ पर हों।[1] **(61)** बेशक यह (जो कुछ ज़िक्र हुआ) वही है सच्ची बात, और कोई माबूद होने के लायक़ नहीं सिवाय अल्लाह के, और बेशक अल्लाह तआ़ला ही ग़ल्बे वाले, हिक्मत वाले हैं। **(62)** फिर (भी) अगर नाफ़रमानी करें तो बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाले हैं फ़साद वालों को। **(63)** ❖

आप फ़रमा दीजिए कि ऐ अहले किताब आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान (मुसल्लम होने में) बराबर है, (वह यह) कि सिवाय अल्लाह तआ़ला के हम किसी और की इबादत न करें, और अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराएँ, और हममें से कोई किसी दूसरे को रब क़रार न दे ख़ुदा तआ़ला को छोड़कर, फिर अगर वे लोग (हक़ से) मुँह मोड़ें तो तुम लोग कह दो कि तुम (हमारे इस इक़रार के) गवाह रहो कि हम तो मानने वाले हैं। **(64)** ऐ अहले किताब! क्यों हुज्जत करते हो (हज़रत) इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के बारे में? हालाँकि नहीं नाज़िल की गई तौरात और इन्जील मगर उनके (ज़माने के बहुत) बाद, क्या फिर समझते नहीं हो? **(65)** हाँ तुम ऐसे हो कि ऐसी बात में तो हुज्जत कर ही चुके थे जिससे तुम्हें किसी क़द्र तो जानकारी थी, सो ऐसी बात में क्यों हुज्जत करते हो जिससे तुमको बिलकुल जानकारी नहीं, और अल्लाह तआ़ला जानते हैं और तुम नहीं जानते। **(66)** इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) न तो यहूदी थे और न ईसाई थे, लेकिन (अलबत्ता) सीधे तरीक़े वाले (यानी) इस्लाम वाले थे, और मुश्रिकीन में से (भी) न थे। **(67)** बेशक सब आदमियों में ज़्यादा

(पृष्ठ 102 का शेष) अब ज़िन्दा आसमान पर मौजूद हैं। अगरचे पहला वायदा बाद में पूरा होगा लेकिन उसका ज़िक्र पहले है, क्योंकि यह दूसरे वायदे के लिए दलील की तरह है, और दलील रुतबे के तौर पर मुक़द्दम होती है, और "वाव" चूँकि तरतीब के लिए मौज़ू नहीं इसलिए इसको आगे-पीछे करने में कोई इश्काल नहीं।

6. इस वायदे का पूरा करना यह हुआ कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और यहूद के सब बेजा इल्ज़ामों और तोहमतों को जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के ज़िम्मे लगाते थे, उन सबको साफ़ कर दिया।

7. यहाँ फ़रमाँबर्दारी से मुराद ख़ास फ़रमाँबर्दारी है यानी नुबुव्वत का अ़क़ीदा रखना। पस इत्तिबा करने वालों के मिस्दाक़ वे लोग हैं जो आपकी नुबुव्वत के मोतक़िद हैं, सो इसमें ईसाई और मुसलमान दोनों दाख़िल हैं और इनकारियों से मुराद यहूद हैं जो ईसा अ़लैहिस्सलाम की नुबुव्वत के इनकारी थे। पस हासिल यह हुआ कि उम्मते मुहम्मदिया और ईसाई हमेशा यहूद पर ग़ालिब रहेंगे।

1. आयत में 'अपने तन' से मुराद तो ख़ुद बहस करने वाले हैं और 'निसा' से ख़ास बीवी मुराद नहीं बल्कि अपने घर की जो औ़रतें हों जिसमें लड़की भी शामिल है, मुराद हैं। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस वजह से कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा सब औलाद में ज़्यादा अ़ज़ीज़ थीं उनको लाए, इसी तरह 'अबना-अना' से ख़ास हक़ीक़ी औलाद मुराद नहीं, बल्कि औलाद की औलाद को भी आ़म है, और उनको भी जो मजाज़ी तौर पर औलाद कहलाते हों, यानी उर्फ़ में औलाद के जैसे समझे जाते हों, और इस मतलब में नवासे और दामाद भी दाख़िल हैं, चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 106 पर)**

मिनल् मुश्रिकीन (67) इन्-न औलन्नासि बि-इब्राही-म लल्लज़ीनत्त-बअूहु व हाज़न्नबिय्यु वल्लज़ी-न आमनू, वल्लाहु वलिय्युल् मुअ्मिनीन (68) वद्दत्ताइ-फ़तुम् मिन् अह्लिल्-किताबि लौ युज़िल्लू-नकुम, व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम् व मा यश्अुरून (69) या अह्लल्-किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व अन्तुम् तश्हदून (70) या अह्लल्-किताबि लि-म तल्बिसूनल् हक़्-क़ बिल्-बातिलि व तक्तुमूनल्-हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्लमून (71) ❖

व क़ालत्ताइ-फ़तुम् मिन् अह्लिल्-किताबि आमिनू बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल अ़लल्लज़ी-न आमनू वज्हन्नहारि वक्फ़ुरू आख़ि-रहू लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (72) व ला तुअ्मिनू इल्ला लिमन् तबि-अ़ दीनकुम, कुल् इन्नल्हुदा हुदल्लाहि अंय्युअ्ता अ-हदुम् मिस्-ल मा ऊतीतुम् औ युहाज्जूकुम् अ़िन्-द रब्बिकुम्, कुल् इन्नल् फ़ज़्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (73) यख़्तस्सु बिरह्मतिही मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल् अ़ज़ीम (74) व मिन् अह्लिल्-किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बिक़िन्तारिंय्युअद्दिही इलै-क व मिन्हुम् मन् इन् तअ्मन्हु बिदीनारिल् ला युअद्दिही इलै-क इल्ला मा दुम्-त अ़लैहि क़ा-इमन्, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लै-स अ़लैना फ़िल्उम्मिय्यी-न सबीलुन् व यक़ूलू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हुम् यअ्लमून (75) बला मन् औफ़ा बि-अ़ह्दिही वत्तक़ा फ़-इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुत्तक़ीन (76) इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न

لِلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ وَاللّٰهُ وَلِيُّ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ۗ
وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ
اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۗ قُلْ
اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ
اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۗ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ
تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ
لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا
لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

ख़ुसूसियत रखने वाले (हज़रत) इब्राहीम के साथ अलबत्ता वे लोग थे जिन्होंने उनका इत्तिबा "यानी पैरवी" किया था, और यह नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) हैं और ये ईमान वाले। और अल्लाह तआ़ला हिमायती हैं ईमान वालों के। **(68)** दिल से चाहते हैं बाज़े लोग अहले किताब में से इस बात को कि तुमको (दीने हक़ से) गुमराह कर दें, और वे किसी को गुमराह नहीं कर सकते मगर ख़ुद अपने आपको, और इसकी ख़बर नहीं रखते। **(69)** ऐ अहले किताब! क्यों कुफ़्र करते हो अल्लाह तआ़ला की आयतों के साथ? हालाँकि तुम इक़रार करते हो। **(70)** ऐ अहले किताब! क्यों गड्-मड् करते हो वाक़ई (मज़मून यानी नुबुव्वते मुहम्मदिया) को ग़ैर वाक़ई से, और छुपाते हो हक़ीक़ी बात को हालाँकि तुम जानते हो।[1] **(71)** ❖

और बाज़े लोगों ने अहले किताब में से कहा कि ईमान ले आओ उसपर जो नाज़िल किया गया है मुसलमानों पर (यानी कुरआन पर) शुरू दिन में और (फिर) इनकार कर बैठो आख़िर दिन में, (यानी शाम को) क्या ताज्जुब है कि वे फिर जाएँ।[2] **(72)** और (सच्चे दिल से) किसी के रू-ब-रू इक़रार मत करना मगर ऐसे शख़्स के रू-ब-रू जो तुम्हारे दीन की पैरवी करने वाला हो। (ऐ मुहम्मद) आप कह दीजिए कि यक़ीनन हिदायत, हिदायत अल्लाह की है, ऐसी बातें इसलिए करते हो कि किसी और को भी ऐसी चीज़ मिल रही है जैसी तुमको मिली थी, या वे लोग तुमपर ग़ालिब आ जाएँगे तुम्हारे रब के नज़दीक।[3] (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) आप कह दीजिए कि बेशक फ़ज़्ल तो ख़ुदा के क़ब्ज़े में है वह इसको जिसे चाहें अ़ता फ़रमा दें, और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुसअ़त वाले हैं (और) ख़ूब जानने वाले हैं। **(73)** ख़ास कर देते हैं अपनी रहमत (व फ़ज़्ल) के साथ जिसको चाहें, और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं। **(74)** और अहले किताब में से बाज़ा शख़्स ऐसा है कि (ऐ मुख़ातब) अगर तुम उसके पास ढेर-का-ढेर माल भी अमानत का रख दो तो वह (माँगने के साथ ही) उसको तुम्हारे पास ला रखे, और उन्हीं में से बाज़ा वह शख़्स है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार भी अमानत रख दो तो वह भी तुमको अदा न करे, मगर जब तक कि तुम उसके सर पर खड़े रहो, यह (अमामत का अदा न करना) इस सबब से है कि वे लोग कहते हैं कि हम पर ग़ैर अहले किताब के (माल के) बारे में किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं।[4] और वे लोग अल्लाह तआ़ला पर झूठ लगाते हैं और (दिल में) वे भी जानते हैं[5] (कि ख़ियानत करने वाले पर इल्ज़ाम क्यों न होगा)। **(75)** जो

(पृष्ठ 104 का शेष) हज़राते हसन और हुसैन और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को लाए। मुबाहला (किसी इख़्तिलाफ़ी मसले को ख़ुदा पर छोड़ते हुए एक-दूसरे के लिए बद्-दुआ़ करना कि जो झूठा हो वह बर्बाद हो जाए) अब भी हाजत के वक़्त जायज़ और मशरू है। मुबाहले का अन्जाम कहीं खुले अल्फ़ाज़ में तो नज़र से नहीं गुज़रा मगर हदीस में इस क़िस्से के मुताल्लिक़ इतना ज़िक्र है कि अगर वे लोग मुबाहला कर लेते तो उनके घर वाले और माल वग़ैरह सब हलाक हो जाते।

1. दोनों जगह जो 'तश्हदून' और 'ता-लमून' फ़रमाया तो इसकी यह वजह नहीं है कि इक़रार न करने या इल्म न होने की हालत में कुफ़्र जायज़ है। जो चीज़ अपनी ज़ात में बुरी हो वह किसी हाल में जायज़ हो ही नहीं सकती, बल्कि वजह यह है कि इक़रार और इल्म के वक़्त कुफ़्र और ज़्यादा मलामत के क़ाबिल है। ऊपर ज़िक्र किया गया था कि बाज़ अहले किताब मुसलमानों को गुमराह करने की फ़िक्र में रहते हैं, आगे उनकी एक तदबीर का बयान फ़रमाते हैं जिसको मोमिनों को गुमराह करने के लिए उन्होंने तजवीज़ किया था।

2. यानी मुसलमान यह ख़्याल करें कि ये लोग इल्म वाले हैं और बे-तअ़स्सुब भी हैं कि इस्लाम क़बूल कर लिया, इसपर भी जो यह फिर गए तो ज़रूर इस्लाम का ग़ैर-हक़ होना उनको इल्मी दलीलों से साबित हो गया होगा, और ज़रूर उन्होंने इस्लाम में कोई ख़राबी देखी होगी जब ही तो उससे फिर गए।

3. हासिल इल्लत का यह हुआ कि तुमको मुसलमानों से हसद है कि उनको आसमानी किताब क्यों मिल गई, या ये लोग हमपर मज़हबी मुनाज़रे में क्यों ग़ालिब आ जाते हैं। उस हसद की वजह से इस्लाम और मुसलमानों की शान घटाने **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 108 पर)**

बि-अ़ह्दिल्लाहि व ऐमानिहिम् स-मनन् क़लीलन् उलाइ-क ला ख़ला-क़ लहुम् फ़िल्-आख़ि-रति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व ला यन्ज़ुरु इलैहिम् यौमल्-क़ियामति व ला युज़क्कीहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(77)** व इन्-न मिन्हुम् ल-फ़रीक़ंय्यल्वू-न अल्सि-न-तहुम् बिल्किताबि लि-तह्सबूहु मिनल्- किताबि व मा हु-व मिनल्-किताबि व यक़ूलू-न हु-व मिन् अि़न्दिल्लाहि व मा हु-व मिन् अि़न्दिल्लाहि व यक़ूलू-न अ़लल्लाहिल्- कज़ि-ब व हुम् यअ़्लमून **(78)** मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युअ्ति-यहुल्लाहुल् किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त सुम्-म यक़ू-ल लिन्नासि कूनू अि़बादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कूनू रब्बानिय्यी-न बिमा कुन्तुम् तुअ़ल्लिमूनल्-किता-ब व बिमा कुन्तुम् तद्रुसून **(79)** व ला यअ्मु-रकुम् अन् तत्तख़िज़ुल्- मलाइ-क-त वन्नबिय्यी-न अर्बाबन्, अ-यअ्मुरुकुम् बिल्कुफ़्रि बअ़्-द इज़् अन्तुम् मुस्लिमून **(80)** ❖

व इज़् अ-ख़ज़ल्लाहु मीसाक़न्-नबिय्यी-न लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिंव्-व हिक्मतिन् सुम्-म जा-अकुम् रसूलुम् मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़कुम् लतुअ्मिनुन्-न बिही व ल-तन्सुरुन्नहू, क़ा-ल अ-अक़्रर्तुम् व अ-ख़ज़्तुम् अ़ला ज़ालिकुम् इस्री, क़ालू अक़्रर्ना, क़ा-ल फ़श्हदू व अ-न म-अ़कुम् मिनश्शाहिदीन **(81)** फ़-मन् तवल्ला बअ़्-द ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल् फ़ासिक़ून **(82)** अ-फ़ग़ै-र दीनिल्लाहि यब्ग़ू-न व लहू अस्ल-म

يحب المتقين ۝ إن الذين يشترون بعهد الله وأيمانهم
ثمنا قليلا أولئك لا خلاق لهم في الآخرة ولا يكلمهم
الله ولا ينظر إليهم يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم
عذاب أليم ۝ وإن منهم لفريقا يلوون ألسنتهم بالكتب
لتحسبوه من الكتب وما هو من الكتب ويقولون هو
من عند الله وما هو من عند الله ويقولون على الله
الكذب وهم يعلمون ۝ ما كان لبشر أن يؤتيه الله الكتب
والحكم والنبوة ثم يقول للناس كونوا عبادا لي من
دون الله ولكن كونوا ربانيين بما كنتم تعلمون الكتب
وبما كنتم تدرسون ۝ ولا يأمركم أن تتخذوا الملئكة
والنبيين أربابا أيأمركم بالكفر بعد إذ أنتم مسلمون ۝
وإذ أخذ الله ميثاق النبيين لما آتيتكم من كتب وحكمة
ثم جاءكم رسول مصدق لما معكم لتؤمنن به ولتنصرنه
قال ءأقررتم وأخذتم على ذلكم إصري قالوا أقررنا
قال فاشهدوا وأنا معكم من الشهدين ۝ فمن تولى
بعد ذلك فأولئك هم الفسقون ۝ أفغير دين الله يبغون

शख़्स अपने अ़हद को पूरा करे और अल्लाह तआ़ला से डरे तो बेशक अल्लाह तआ़ला महबूब रखते हैं (ऐसे) मुत्तक़ियों को। **(76)** यक़ीनन जो लोग हक़ीर मुआ़वज़ा ले लेते हैं उस अ़हद के मुक़ाबले में जो अल्लाह तआ़ला से (उन्होंने) किया है, और (मुक़ाबले में) अपनी क़सम के, उन लोगों को कुछ हिस्सा आख़िरत में (वहाँ की नेमत का) न मिलेगा, और न ख़ुदा तआ़ला उनसे (नरमी का) कलाम फ़रमाएँगे, और न उनकी तरफ़ (मुहब्बत की नज़र से) देखेंगे क़ियामत के दिन, और न उनको पाक करेंगे, और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। **(77)** और बेशक उनमें से बाज़े ऐसे हैं कि टेढ़ा करते हैं अपनी ज़बानों को किताब (पढ़ने) में, ताकि तुम लोग उस (मिलाई हुई चीज़) को (भी) किताब का हिस्सा समझो, हालाँकि वह किताब का हिस्सा नहीं, और कहते हैं कि यह (लफ़्ज़ या मतलब) ख़ुदा के पास से है हालाँकि वह (किसी तरह) ख़ुदा तआ़ला के पास से नहीं, और अल्लाह तआ़ला पर झूठ बोलते हैं और वह जानते हैं।[1] **(78)** किसी बशर से यह बात नहीं हो सकती कि अल्लाह तआ़ला उसको किताब और समझ और नुबुव्वत अ़ता फ़रमाएँ, फिर वह लोगों से कहने लगे कि मेरे बन्दे बन जाओ ख़ुदा तआ़ला को छोड़कर, वे लेकिन (कहेगा कि) तुम लोग अल्लाह वाले बन जाओ, इस वजह से कि तुम किताब सिखाते हो और इस वजह से कि तुम पढ़ते हो।[2] **(79)** और न यह बात बतलाएगा कि तुम फ़रिश्तों को और नबियों को रब क़रार दे लो, क्या वह तुमको कुफ़्र की बात बतलाएगा? इसके बाद कि तुम मुसलमान हो। **(80)** ❖

और जबकि अल्लाह ने अ़हद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुमको किताब और इल्म दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई पैग़म्बर आए, जो तसदीक़ करने वाला हो उसकी जो तुम्हारे पास है, तो तुम ज़रूर उस रसूल पर एतिक़ाद भी लाना और उसकी तरफ़दारी भी करना। फ़रमाया कि क्या तुमने इक़रार किया और इसपर मेरा अ़हद क़बूल किया? वे बोले हमने इक़रार किया, इरशाद फ़रमाया, तो गवाह रहना और मैं इसपर तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ।[3] **(81)** सो जो शख़्स रू-गरदानी करेगा बाद इसके तो ऐसे ही लोग बेहुक्मी करने वाले हैं। **(82)** क्या फिर अल्लाह के दीन के सिवा और किसी तरीक़े को चाहते हैं, हालाँकि अल्लाह तआ़ला के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों

(पृष्ठ 106 का शेष) और उनको नीचे लाने की कोशिश कर रहे हो।

4. यानी ग़ैर-अहले किताब जैसे क़ुरैश का माल चुरा लेना या छीन लेना सब जायज़ है।

5. जिन बाज़ की अमानत की तारीफ़ की गई है, अगर उन बाज़ से वे लोग मुराद हैं जो अहले किताब में से ईमान ले आए थे, तब तो तारीफ़ में कोई इश्काल नहीं, और अगर ख़ास मोमिन मुराद न हों बल्कि बिना किसी क़ैद के अहले किताब में अमानतदार और ख़ियानत करने वाले दोनों का ज़िक्र करना मक़सूद है तो तारीफ़ अल्लाह के नज़दीक क़बूल होने के एतिबार से नहीं, क्योंकि ईमान के बग़ैर कोई नेक अ़मल मक़बूल नहीं होता, बल्कि तारीफ़ इस एतिबार से है कि अच्छी बात चाहे काफ़िर की हो किसी दर्जे में अच्छी है।

1. मुम्किन है कि लफ़्ज़ी तहरीफ़ (यानी अल्फ़ाज़ में फेर-बदल या कमी ज़्यादती) करते हों, और मुम्किन है कि तफ़सीर ग़लत बयान करते हों। लफ़्ज़ी तहरीफ़ में तो दावा होता है कि यह लफ़्ज़ ही अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और ग़लत तफ़सीर में यह तो नहीं होता लेकिन यह दावा होता है कि यह तफ़सीर शरई क़ायदों से साबित है और शरई क़ायदों का अल्लाह की जानिब से होना ज़ाहिर है। एक सूरत में शक्ल के एतिबार से किताब का हिस्सा होने का दावा होगा, एक सूरत में मायने के एतिबार से किताब का हिस्सा होने का दावा होगा। इस तरह कि यह हिस्सा शरीअ़त से साबित है और हर शरीअ़त से साबित होने वाली बात हक़ीक़त में किताब से साबित है।

2. नबी की तरफ़ से अल्लाह के अ़लावा किसी और की इबादत का हुक्म करना शरअ़न मनफ़ी व मुहाल है।

3. अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से तो इसका अ़हद लिया जाना क़ुरआन मजीद में वाज़ेह है। बाक़ी उनकी उम्मतों से या तो उसी वक़्त लिया गया होगा या अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के ज़रिये से लिया गया हो। और इस अ़हद का मक़ाम या तो अव्वल रूहों की दुनिया हो या सिर्फ़ दुनिया में वह्य से लिया गया हो। अहले किताब को यह अ़हद इसलिए सुनाया कि **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 110 पर)**

मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअंव्-व करूहंव्-व इलैहि युर्जअ़ून **(83)** क़ुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल अ़लैना व मा उन्ज़ि-ल अ़ला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अ़ीसा वन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून **(84)** व मंय्यब्तग़ि ग़ैरल्-इस्लामि दीनन् फ़-लंय्युक़्ब-ल मिन्हु व हु-व फ़िल्-आख़ि-रति मिनल् ख़ासिरीन **(85)** कै-फ़ यह्दिल्लाहु क़ौमन् क-फ़रू बअ़्-द ईमानिहिम् व शहिदू अन्नर्रसू-ल हक़्क़ुंव्-व जा-अहुमुल्बय्यिनातु, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन **(86)** उलाइ-क जज़ाउहुम् अन्-न अ़लैहिम् लअ़्-नतल्लाहि वल्मलाइ-कति वन्नासि अज्मअ़ीन **(87)** ख़ालिदी-न फ़ीहा ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्-अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून **(88)** इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क व अस्लहू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(89)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बअ़्-द ईमानिहिम् सुम्मज़्दादू कुफ़रल्-लन् तुक़्ब-ल तौबतुहुम् व उलाइ-क हुमुज़्ज़ाल्लून **(90)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़-लंय्युक़्ब-ल मिन् अ-हदिहिम् मिल्उल्-अर्ज़ि ज़-हबंव्-व लविफ़्तदा बिही, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुंव्-व मा लहुम् मिन्नासिरीन **(91)** ❖

وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ
يُرْجَعُوْنَ ۝ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ
عَلٰٓي اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ
وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰي وَعِيْسٰي وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۠ لَا نُفَرِّقُ
بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۡ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ
الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ
الْخٰسِرِيْنَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ
وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَاۗءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا
يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ
لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ
لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا
مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ
تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الضَّاۗلُّوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَ
هُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ
افْتَدٰى بِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝

और ज़मीन में हैं, ख़ुशी से और बेइख़्तियारी से, और सब अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएँगे।[1] **(83)** आप फ़रमा दीजिए कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उसपर जो हमारे पास भेजा गया, और उसपर जो इब्राहीम व इसमाईल व इसहाक़ व याक़ूब और याक़ूब की औलाद की तरफ़ भेजा गया, और उसपर भी जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को दिया गया उनके परवर्दिगार की तरफ़ से, इस कैफ़ियत से कि हम उनमें से किसी एक में भी तफ़रीक़ नहीं करते, और हम तो अल्लाह ही के फ़रमाँबर्दार हैं। **(84)** और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को तलब करेगा तो वह उससे मक़बूल न होगा और वह आख़िरत में तबाहकारों में से होगा। **(85)** अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को कैसे हिदायत करेंगे जो काफ़िर हो गए अपने ईमान लाने के बाद, और अपने इस इक़रार के बाद कि रसूल सच्चे हैं, और इसके बाद कि उनको खुली दलीलें पहुँच चुकी थीं, और अल्लाह तआ़ला ऐसे बेढंगे लोगों को हिदायत नहीं करते।[2] **(86)** ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उनपर अल्लाह तआ़ला की भी लानत होती है और फ़रिश्तों की भी और आदमियों की भी सबकी। **(87)** वे हमेशा-हमेशा को उसी में रहेंगे, उनपर से अ़ज़ाब हल्का भी न होने पाएगा और न उनको मोहलत ही दी जाएगी। **(88)** हाँ, मगर जो लोग तौबा कर लें उसके बाद और अपने आपको संवारें।[3] सो बेशक ख़ुदा तआ़ला बख़्श देने वाले, रहमत करने वाले हैं। **(89)** बेशक जो लोग काफ़िर हुए अपने ईमान लाने के बाद, फिर बढ़ते रहे कुफ़्र में,[4] उनकी तौबा हरगिज़ मक़बूल न होगी, और ऐसे लोग पक्के गुमराह हैं। **(90)** बेशक जो लोग काफ़िर हुए और वे मर भी गए कुफ़्र ही की हालत में, सो उनमें से किसी का ज़मीन भर "यानी ज़मीन के बराबर" सोना भी न लिया जाएगा अगरचे मुआ़वज़े में उसको देना भी चाहे, उन लोगों को दर्दनाक सज़ा होगी और उनके कोई हामी भी न होंगे। **(91)** ❖

(पृष्ठ 108 का शेष) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रिसालत दलीलों से साबित है तो लाज़िमी तौर पर वे भी इस अ़हद के मज़मून में दाख़िल हैं, फिर तुमपर यक़ीनन आपकी तस्दीक़ और मदद फ़र्ज़ है, और यही इस्लाम का हासिल है।

1. हासिले मक़ाम यह हुआ कि हक़ तआ़ला के पैदा करने और मौजूद करने के अहकाम के तो सब ताबे हैं, और "बेइख़्तियारी" से यही मुराद है। और बहुत से तशरीई अहकाम की भी इताअ़त करने वाले हैं। और "ख़ुशी से" का मतलब यही है। तो हुक्म की एक क़िस्म तो सब पर ही जारी है और दूसरी क़िस्म को भी बहुतों ने क़बूल कर रखा है, जिससे हाकिम की अ़ज़मत नुमायाँ है। अब बाज़े जो दूसरी क़िस्म में ख़िलाफ़ करते हैं तो क्या कोई और इस अ़ज़मत और शान का है जिसकी मुवाफ़क़त के लिए ये मुख़ालफ़त करते हैं।

2. यह मतलब नहीं कि ऐसों को इस्लाम की तौफ़ीक़ कभी नहीं देते, बल्कि मक़सूद उनके उसी पहले ज़िक्र हुए दावे की नफ़ी करना है, कि वे कहते थे कि हमने जो इस्लाम छोड़कर यह रास्ता इख़्तियार किया है, हमको ख़ुदा ने हिदायत दी है। ख़ुलासा नफ़ी का यह हुआ कि जो शख़्स कुफ़्र का बेढंगा रास्ता इख़्तियार करे वह ख़ुदा की हिदायत पर नहीं, इसलिए वह यह नहीं कह सकता कि मुझको ख़ुदा ने हिदायत दी है, क्योंकि कुफ़्र हिदायत का रास्ता नहीं बल्कि ऐसे लोग यक़ीनन गुमराह हैं।

3. यानी मुनाफ़िक़ाना तौर पर ज़बान से तौबा काफ़ी नहीं।

4. यानी हमेशा कुफ़्र पर रहे ईमान नहीं लाए।

चौथा पारः लन् तनालू

सूरतु आलि इमरान (आयत 92 से 200)

लन् तनालुल्बिर्-र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बू-न, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम **(92)** कुल्लुत्तआ़मि का-न हिल्लल् लि-बनी इस्राई-ल इल्ला मा हर्र-म इस्राईलु अ़ला नफ़्सिही मिन् क़ब्लि अन् तुनज़्ज़लत्तौरातु, क़ुल् फ़अ्तू बित्तौराति फ़त्लूहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(93)** फ़-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल् कज़ि-ब मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून **(94)** क़ुल् स-दक़ल्लाहु फ़त्तबिअ़ू मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल् मुश्रिकीन **(95)** इन्-न अव्व-ल बैतिंव्वुजि-अ़ लिन्नासि लल्लज़ी बि-बक्क-त मुबा-रकवं-व हुदल्-लिल्आ़लमीन **(96)** फ़ीहि आयातुम् बय्यिनातुम् मक़ामु इब्राही-म, व मन् द-ख़-लहू का-न आमिनन्, व लिल्लाहि अ़लन्नासि हिज्जुल्बैति मनिस्तता-अ़ इलैहि सबीलन्, व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़निल् आ़लमीन **(97)** क़ुल् या अह्लल्-किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि वल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा तअ़्मलून **(98)** क़ुल् या अह्लल्-किताबि लि-म तसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आम-न तब्ग़ूनहा अ़ि-वजंव्-व अन्तुम् शु-हदा-उ, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून **(99)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअ़ू फ़रीक़म्

لن تنالوا ٤ ٥٧ ال عمرٰن ٣

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۛ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا
لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ
قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ
ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۟ فَاتَّبِعُوْا
مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّ
اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى
لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ فِيْهِ اٰيٰتٌ ۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ
كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ
اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ
عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَ
مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا
فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

منزل ١

चौथा पारः लन् तनालू

सूरः आलि इमरान (आयत 92 से 200)

तुम कामिल ख़ैर को कभी न हासिल कर सकोगे यहाँ तक कि अपनी प्यारी चीज़ को ख़र्च न करोगे। और जो कुछ भी ख़र्च करोगे अल्लाह तआ़ला उसको ख़ूब जानते हैं।[1] **(92)** सब खाने की चीज़ें तौरात के नाज़िल होने से पहले उसको छोड़कर जिसको याक़ूब (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने नफ़्स पर हराम कर लिया था,[2] बनी इसराईल पर हलाल थीं,[3] फ़रमा दीजिए की फिर तौरात लाओ फिर उसको पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। **(93)** सो जो शख़्स उसके बाद अल्लाह तआ़ला पर झूठ बात की तोहमत लगाए तो ऐसे लोग बड़े बेइन्साफ़ हैं। **(94)** आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला ने सच कह दिया सो तुम मिल्लते इब्राहीम का इत्तिबा करो जिसमें ज़रा टेढ़ नहीं, और वह मुश्रिक भी न थे। **(95)** यक़ीनन वह मकान जो सबसे पहले लोगों के लिए मुक़र्रर किया गया[4] वह मकान है जो कि मक्का में है,[5] जिसकी हालत यह है कि वह बरकत वाला है और दुनिया भर के लोगों का रहनुमा है।[6] **(96)** उसमें खुली निशानियाँ हैं (उनमें से) एक मक़ामे इब्राहीम है,[7] और जो शख़्स उसमें दाख़िल हो जाए वह अमन वाला हो जाता है। और अल्लाह के वास्ते लोगों के ज़िम्मे उस मकान का हज करना है, (यानी) उस शख़्स के ज़िम्मे जो कि ताक़त रखे वहाँ तक पहुँचने की,[8] और जो शख़्स मुनकिर "यानी इनकार करने वाला" हो तो अल्लाह तआ़ला तमाम जहान वालों से ग़नी हैं।[9] **(97)** आप फ़रमा दीजिए कि ऐ अहले किताब! तुम क्यों इनकार करते हो अल्लाह तआ़ला के अहकाम का, हालाँकि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों की इत्तिला रखते हैं। **(98)** आप फ़रमा दीजिए कि ऐ अहले किताब क्यों हटाते हो अल्लाह तआ़ला की राह से ऐसे शख़्स को जो ईमान ला चुका इस तौर पर कि टेढ़ ढूँढ़ते हो उस राह के लिए हालाँकि तुम ख़ुद भी इत्तिला रखते हो, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं। **(99)** ऐ ईमान वालो! अगर तुम कहना मानोगे किसी फ़िर्के का उन लोगों में से जिनको किताब दी गई है तो वे लोग तुमको तुम्हारे ईमान लाने के बाद काफ़िर बना देंगे। **(100)** और तुम कुफ़्र कैसे कर सकते हो हालाँकि तुमको अल्लाह तआ़ला के अहकाम पढ़कर सुनाए जाते हैं, और तुममें अल्लाह के रसूल मौजूद हैं। और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला

---

1. आयत से मालूम हुआ कि सवाब तो हर ख़र्च करने से होता है जो अल्लाह की राह में किया जाए, मगर ज़्यादा सवाब प्यारी और पसन्दीदा चीज़ के ख़र्च करने से होता है।

2. यानी ऊँट का गोश्त। हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को इर्क़ुन्निसा का मर्ज़ था। आपने मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह तआ़ला इससे शिफ़ा दें तो सबमें ज़्यादा जो खाना मुझको महबूब हो उसको छोड़ दूँ। उनको शिफ़ा हो गई और आपको ऊँट का गोश्त सबमें ज़्यादा महबूब था, उसको छोड़ दिया। फिर यही तहरीम (हराम करना) जो मन्नत से हुई थी बनी इसराईल में भी वह्य के हुक्म से रही। और मालूम होता है कि उनकी शरीअ़त में मन्नत से तहरीम भी हो जाती होगी, जिस तरह हमारी शरीअ़त में मुबाह का ईजाब हो जाता है। (यानी एक चीज़ जिसका करना पहले ज़रूरी नहीं था मन्नत मानने से वह वाजिब हो जाती है) मगर तहरीम (यानी किसी चीज़ को हराम करने) की मन्नत जायज़ नहीं, बल्कि उसमें उसके ख़िलाफ़ करना और फिर उस ख़िलाफ़ करने और तोड़ने का कफ़्फ़ारा वाजिब है।

3. 'तौरात के नाज़िल होने से पहले' इस वास्ते फ़रमाया कि तौरात के नाज़िल होने के बाद इन ज़िक्र कि गई हलाल चीज़ों में से भी बहुत-सी चीज़ें हराम हो गई थीं, जिसकी कुछ तफ़सील सूरः अन्आ़म की इस आयत में है: 'व अ़लल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना कुल्-ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन्.......'।

4. सब इबादतगाहों से पहले उसके मुक़र्रर होने से यह भी मालूम हो गया कि बैतुल-मक़्दिस से भी पहले बना है, चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में इसका ख़ुलासा दिया है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 114 पर)**

मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब यरुद्दूकुम् बअ्-द ईमानिकुम् काफ़िरीन **(100)** व कै-फ़ तक्फ़ुरू-न व अन्तुम् तुत्ला अ़लैकुम् आयातुल्लाहि व फ़ीकुम् रसूलुहू, व मंय्यअ्तसिम् बिल्लाहि फ़-क़द् हुदि-य इला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(101)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून **(102)** वअ्तसिमू बि-हब्लिल्लाहि जमीअंव्-व ला तफ़र्रक़ू वज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् कुन्तुम् अअ्दा-अन् फ़-अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिकुम् फ़-अस्बह्तुम् बिनिअ्मतिही इख़्वानन् व कुन्तुम् अ़ला शफ़ा हुफ़्रतिम् मिनन्नारि फ़-अन्क़-ज़कुम् मिन्हा, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तह्तदून **(103)** वल्तकुम् मिन्कुम् उम्मतुंय्यद्अू-न इलल्ख़ैरि व यअ्मुरू-न बिल्मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि, व उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून **(104)** व ला तकूनू कल्लज़ी-न तफ़र्रक़ू वख़्त-लफ़ू मिम्-बअ्दि मा जा-अहुमुल्-बय्यिनातु, व उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(105)** यौ-म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्-व तस्वद्दु वुजूहुन् फ़-अम्मल्लज़ीनस्-वद्दत् वुजूहुहुम्, अ-कफ़र्तुम् बअ्-द ईमानिकुम् फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून **(106)** व अम्मल्लज़ीनब्- -यज़्ज़त् वुजूहुहुम् फ़-फ़ी रह्मतिल्लाहि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(107)** तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि, व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल् लिल्आ़लमीन **(108)** व

لن تنالوا ٤ — ٥٨ — آل عمران ٣

كٰفِرِيْنَ ۝ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَ
فِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا
تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا
وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً
فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ
عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ
يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۟ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ
فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝
تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا

منزل ١

को मज़बूत पकड़ता है तो ज़रूर सीधे रास्ते की हिदायत किया जाता है। (101) ❖

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरा करो डरने का हक़[1] और सिवाय इस्लाम के और किसी हालत पर जान मत देना। (102) और मज़बूत पकड़े रहो अल्लाह तआला के सिलसिले को इस तौर पर कि (तुम सब) आपस में मुत्तफ़िक़ भी रहो, और आपस में ना-इत्तिफ़ाक़ी मत करो, और तुमपर जो अल्लाह तआला का इनाम है उसको याद करो जबकि तुम दुश्मन थे। पस अल्लाह तआला ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी, सो तुम ख़ुदा तआला के इनाम से आपस में भाई-भाई हो गए, और तुम लोग दोज़ख़ के गढ़े के किनारे पर थे[2] सो उससे अल्लाह तआला ने तुम्हारी जान बचाई, इसी तरह अल्लाह तआला तुम लोगों को अपने अहकाम बयान करके बतलाते रहते हैं, ताकि तुम लोग राह पर रहो। (103) और तुममें एक ऐसी जमाअत होना ज़रूरी है जो कि ख़ैर की तरफ़ बुलाया करें और नेक कामों के करने को कहा करें और बुरे कामों से रोका करें, और ऐसे लोग पूरे कामयाब होंगे।[3] (104) और तुम लोग उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने आपस में तफ़रीक़ कर ली और आपस में इख़्तिलाफ़ कर लिया, उनके पास वाज़ेह अहकाम पहुँचने के बाद[4] और उन लोगों के लिए बड़ी सज़ा होगी। (105) उस दिन कि बाज़े चेहरे सफ़ेद हो जाएँगे और बाज़े चेहरे सियाह होंगे, सो जिनके चेहरे सियाह हो गए होंगे उनसे कहा जाएगाः क्या तुम लोग काफ़िर हो गए थे अपने ईमान लाने के बाद? तो सज़ा चखो अपने कुफ़्र के सबब से। (106) और जिनके चेहरे सफ़ेद हो गए होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (107) ये अल्लाह तआला की आयतें हैं, जो सही-सही तौर पर हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और अल्लाह तआला मख़्लूक़ात पर ज़ुल्म करना नहीं चाहते। (108) और अल्लाह ही की मिल्क है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह

(पृष्ठ 112 का शेष) 5. यानी ख़ाना काबा।

6. मतलब यह कि हज वहाँ होता है और जैसे नमाज़ का सवाब हदीस की वज़ाहत के मुताबिक़ वहाँ बहुत ज़्यादा होता है, दीनी बरकत तो यह हुई और जो वहाँ नहीं हैं उनको उस मकान के ज़रिये से नमाज़ का रुख़ मालूम होता है, यह रहनुमाई हुई।

7. मक़ामे इब्राहीम एक पत्थर है जिसपर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा की तामीर की थी, और उस पत्थर में आपके क़दमों का निशान बन गया था। अब वह पत्थर ख़ाना काबा से ज़रा फ़ासले पर एक महफ़ूज़ जगह में रखा है।

8. सबील की तफ़सील हदीस में सफ़र के ख़र्च और सवारी के साथ आई है।

9. दलील का हासिल यह हुआ कि देखो ये शरई अहकाम ख़ाना काबा से मुताल्लिक़ हैं, जिनका मुताल्लिक़ होना दलीलों से साबित है, और ऐसे अहकाम बैतुल-मक़्दिस के मुताल्लिक़ शरीअत में बयान नहीं किए गए, पस ख़ाना काबा की अफ़ज़लियत साबित हो गई।

1. पूरे तौर पर डरने का मतलब यह है कि जिस तरह शिर्क व कुफ़्र से बचे हो, तमाम गुनाहों से भी बचा करो। आयत का मतलब यह है कि मामूली तक़्वे पर इक्तिफ़ा मत करो बल्कि आला और कामिल दर्जे का तक़्वा इख़्तियार करो, जिसमें गुनाहों से बचना भी आ गया।

2. यानी काफ़िर होने की वजह से दोज़ख़ से इतने क़रीब थे कि बस दोज़ख़ में जाने के लिए सिर्फ़ मरने की देर थी।

3. जो शख़्स अच्छाई का हुक्म करने और बुराई से रोकने पर क़ादिर हो, यानी हालात से ग़ालिब गुमान रखता हो कि अगर में अच्छाई का हुक्म करूँगा और बुराई से रोकूँगा तो मुझको कोई ख़ास नुक़सान नहीं पहुँचेगा, तो उसके लिए वाजिब उमूर में अच्छाई का हुक्म करना और बुराई से रोकना वाजिब है, और मुस्तहब उमूर में मुस्तहब है। और जो आदमी इस तरह क़ादिर न हो उसपर यह काम वाजिब उमूर में भी वाजिब नहीं, अलबत्ता अगर हिम्मत करे तो सवाब मिलेगा।

4. आयत में जो तफ़रीक़ व इख़्तिलाफ़ की मज़म्मत (निंदा) है, मुराद इससे वह तफ़रीक़ है जो दीन के उसूल में हो, या वाज़ेह अहकाम में नफ़्सानियत से हो। और जो ग़ैर-वाज़ेह अहकाम में या तो खुली नस्स न होने की वजह से या नुसूस के ज़ाहिरी टकराव की वजह से हो, जिनमें मुताबक़त की वजह वाज़ेह न हो तो ऐसे मसाइल में इख़्तिलाफ़ हो जाना इस आयत में दाख़िल नहीं और बुरा नहीं, बल्कि उम्मते मरहूमा में ऐसा इख़्तिलाफ़ मौजूद है।

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व इलल्लाहि तुर्जअुल् उमूर **(109)** ❖

कुन्तुम् ख़ै-र उम्मतिन् उख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरू-न बिल्मअ्रूफ़ि व तन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व तुअ्मिनू-न बिल्लाहि, व लौ आम-न अह्लुल्-किताबि लका-न ख़ैरल्लहुम, मिन्हुमुल् मुअ्मिनू-न व अक्सरुहुमुल् फ़ासिक़ून **(110)** लंय्यज़ुर्रूकुम् इल्ला अज़न्, व इंय्युक़ातिलूकुम् युवल्लूकुमुल् अद्बा-र, सुम्-म ला युन्सरून **(111)** ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु ऐनमा सुक़िफ़ू इल्ला बि-हब्लिम् मिनल्लाहि व हब्लिम्-मिनन्नासि व बाऊ बि-ग़-ज़बिम् मिनल्लाहि व ज़ुरिबत् अ़लैहिमुल्-मस्क-नतु, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनल्- अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िन्, ज़ालि-क बिमा अ़-सव्-व कानू यअ्तदून **(112)** लैसू सवाअन्, मिन् अह्लिल्-किताबि उम्मतुन् क़ाइ-मतुंय्यत्लू-न आयातिल्लाहि आनाअल्लैलि व हुम् यस्जुदून **(113)** युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व यअ्मुरू-न बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व युसारिअू-न फ़िल्ख़ैराति, व उलाइ-क मिनस्सालिहीन **(114)** व मा यफ्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़-लंय्युक्फ़रूहु, वल्लाहु अ़लीमुम् बिल्- मुत्तक़ीन **(115)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(116)** म-सलु मा युन्फ़िक़ू-न फ़ी

لِلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ
بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۗ وَلَوْ اٰمَنَ
اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۗ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۗ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ
الْاَدْبَارَ ۟ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا
اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ
اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۗ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ
كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ لَيْسُوْا سَوَآءً ۗ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ
يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ۝ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ
يُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَمَا يَفْعَلُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْئًا ۗ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ مَثَلُ مَا

ही की तरफ़ सब मुक़द्दमात रुजू किए जाएँगे। (109) ❖

तुम लोग अच्छी जमाअ़त हो कि वह जमाअ़त लोगों के लिए ज़ाहिर की गई है, तुम लोग नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उनके लिए ज़्यादा अच्छा होता, उनमें से बाज़े तो मुसलमान हैं और ज़्यादा हिस्सा उनमें से काफ़िर हैं।[1] (110) वे तुमको हरगिज़ कोई नुक़सान न पहुँचा सकेंगे मगर ज़रा मामूली सी तकलीफ़,[2] और अगर तुमसे वे लड़ाई और जंग करें तो तुमको पीठ दिखाकर भाग[3] जाएँगे, फिर किसी की तरफ़ से उनकी हिमायत भी न की जाएगी। (111) जमा दी गई उनपर बेक़द्री[4] जहाँ कहीं भी पाए जाएँगे, मगर हाँ! एक तो ऐसे ज़रिये के सबब जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और एक ऐसे ज़रिये से जो आदमियों की तरफ़ से है।[5] और मुस्तहिक़ हो गए ग़ज़बे इलाही के, और जमा दी गई उनपर पस्ती, यह इस वजह से हुआ कि वे लोग इनकारी हो जाते थे अल्लाह के अहकाम के, और क़त्ल कर दिया करते थे पैग़म्बरों को नाहक़, और यह इस वजह से हुआ कि उन लोगों ने इताअ़त न की और दायरे से निकल-निकल जाते थे। (112) ये सब बराबर नहीं, इन अहले किताब में से एक जमाअ़त वह भी है जो क़ायम हैं, अल्लाह तआ़ला की आयतें रात के वक़्तों में पढ़ते हैं और वे नमाज़ भी पढ़ते हैं। (113) अल्लाह पर और क़ियामत वाले दिन पर ईमान रखते हैं और नेक काम बतलाते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं, और ये लोग सलीक़े वाले लोगों में से हैं।[6] (114) और ये लोग जो नेक काम करेंगे उससे महरूम न किए जाएँगे और अल्लाह तआ़ला तक़्वे वालों को ख़ूब जानते हैं। (115) जो लोग काफ़िर हैं हरगिज़ उनके काम न आएँगे उनके माल और न उनकी औलाद अल्लाह तआ़ला के मुक़ाबले में ज़रा भी, और वे लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे हमेशा-हमेशा उसी में रहेंगे। (116) वे जो कुछ ख़र्च करते हैं इस दुनियावी ज़िन्दगानी में उसकी हालत उस हालत जैसी है कि एक हवा हो जिसमें तेज़ सर्दी हो, वह लग जाए ऐसे लोगों की खेती को जिन्होंने अपना नुक़सान कर रखा हो, पस वह उसको बर्बाद कर डाले, और अल्लाह तआ़ला ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वे ख़ुद ही अपने

1. यह ख़िताब तमाम उम्मते मुहम्मदिया को आ़म है। फिर उनमें से सहाबा अव्वल और अशरफ़ मुख़ातबीन हैं।
2. यानी ज़बानी बुरा-भला कहकर दिल दुखाना।
3. यह एक पेशीनगोई है जो इसी तरह ज़ाहिर हुई। चुनाँचे अहले किताब नुबुव्वत के ज़माने में किसी मौक़े पर भी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम पर जो कि मक़ाम की मुनासबत से इस मज़मून के मुख़ातब हैं ग़ालिब न आए, ख़ासकर यहूद जिनकी बुराइयाँ ख़ुसूसियत से इस जगह ज़िक्र की गई हैं।
4. यानी जान की बेअम्नी।
5. अल्लाह की तरफ़ का ज़रिया यह कि कोई किताबी (किताब वाला यानी यहूदी या ईसाई) अल्लाह तआ़ला की इबादत में ऐसा मश्ग़ूल हो कि मुसलमानों से लड़ता-भिड़ता न हो, वह जिहाद में क़त्ल नहीं किया जाता, अगरचे उसकी इबादत आख़िरत में नफ़ा देने वाली न हो। और आदमियों की तरफ़ के ज़रिये से मुराद वह मुआ़हदा व सुलह है जो मुसलमानों के साथ हो जाए। चुनाँचे ज़िम्मी (वह ग़ैर-मुस्लिम जो मुस्लिम हुकूमत में रहे और टैक्स अदा करे, जिसके बदले में मुस्लिम हुकूमत उसकी जान-माल की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करे) व सुलह करने वाला भी मामून है। या किसी क़ौम का उनसे लड़ने का इरादा न करना, जैसा बाज़े ज़मानों में हुआ या होगा। यह अमन भी आदमियों ही की जानिब से है। बाक़ी और किसी को अमन नहीं।
6. आयत का हासिल उन लोगों की तारीफ़ है कि उन्होंने उन सिफ़तों को इख़्तियार किया है जो कि इस उम्मत के ख़ैर होने के असबाब से हैं, इसलिए 'युअ्मिनू-न' और 'यअ्मुरू-न' को तख़्सीस के साथ लाए, जिसकी वजह ख़ैर होने में ख़ुलासा थी, वरना 'क़ा-इमह्' के आ़म होने में ये सब उमूर दाख़िल हो गए थे।

हाज़िहिल् हयातिद्दुन्या क-म-सलि रीहिन् फ़ीहा सिर्रुन् असाबत् हर्-स क़ौमिन् ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़-अह्ल-कत्हु, व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (117) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू बितान-तम् मिन् दूनिकुम् ला यअ्लूनकुम् ख़बालन्, वद्दू मा अ़नित्तुम् क़द् ब-दतिल्- बग़्ज़ा-उ मिन् अफ़्वाहिहिम् व मा तुख़्फ़ी सुदूरुहुम् अक्बरु, क़द् बय्यन्ना लकुमुल्-आयाति इन् कुन्तुम् तअ्क़िलून (118) हा-अन्तुम् उला-इ तुहिब्बूनहुम् व ला युहिब्बूनकुम् व तुअ्मिनू-न बिल्किताबि कुल्लिही व इज़ा लक़ूकुम् क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ अ़ज़्ज़ू अ़लैकुमुल्-अनामि-ल मिनल्-ग़ैज़ि, क़ुल् मूतू बिग़ैज़िकुम्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर (119) इन् तम्सस्कुम् ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् व इन् तुसिब्कुम् सय्यि-अतुंय्यफ़्रहू बिहा, व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू ला यज़ुर्रुकुम् कैदुहुम् शैअन्, इन्नल्ला-ह बिमा यअ्मलू-न मुहीत (120) ❖

व इज़् ग़दौ-त मिन् अह्लि-क तुबव्विउल्-मुअ्मिनी-न मक़ाअि-द लिल्क़िताल, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (121) इज़् हम्मत्ता-इ-फ़तानि मिन्कुम् अन् तफ़्शला वल्लाहु वलिय्युहुमा, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून (122) व लक़द् न-स-रकुमुल्लाहु बि-बद्रिंव्-व अन्तुम् अज़िल्लतुन् फ़त्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (123) इज़् तक़ूलु लिल्- मुअ्मिनी-न अलंय्यक्फ़ि-यकुम् अंय्युमिद्दकुम्

يُنفِقُونَ فِي هَٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ
حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَ
لَٰكِنْ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ
بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَا أَنتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ
وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا
آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ
مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾ إِن
تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا
وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا
يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ
مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾ إِذْ هَمَّت طَّائِفَتَانِ
مِنكُمْ أَن تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا
اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَن يَكْفِيَكُمْ

आपको नुक़सान पहुँचा रहे हैं। **(117)** ऐ ईमान वालो! अपने सिवा किसी को साहिबे ख़ुसूसियत मत बनाओ,[1] वे लोग तुम्हारे साथ फ़साद करने में कोई कसर उठा नहीं रखते, तुम्हारे नुक़सान की तमन्ना रखते हैं, वाक़ई बुग़ज़ उनके मुँह से ज़ाहिर हो पड़ता है, और जिस क़द्र उनके दिलों में है वह तो बहुत कुछ है, हम निशानियाँ तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर चुके, अगर तुम अ़क़्ल रखते हो। **(118)** हाँ, तुम ऐसे हो कि उन लोगों से मुहब्बत रखते हो और ये लोग तुमसे बिलकुल मुहब्बत नहीं रखते, हालाँकि तुम तमाम किताबों पर ईमान रखते हो और ये लोग जो तुमसे मिलते हैं कह देते हैं कि हम ईमान ले आए और जब अलग होते हैं तो तुमपर अपनी उँगलियाँ काट-काट खाते हैं मारे सख़्त गुस्से के,[2] आप कह दीजिए कि तुम मर रहो अपने गुस्से में,[3] बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानते हैं दिलों की बातों को। **(119)** अगर तुमको कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उनके लिए रन्ज का सबब होती है। और अगर तुमको कोई नागवार हालत पेश आती है तो वे उससे ख़ुश होते हैं। और अगर तुम इस्तिक़लाल और तक़्वे के साथ रहो तो उन लोगों की तदबीर तुमको ज़रा भी नुक़सान न पहुँचा सकेगी, बेशक अल्लाह तआ़ला उनके आमाल पर इहाता रखते हैं। **(120)** ◆

और जबकि आप सुबह के वक़्त अपने घर से चले,[4] मुसलमानों को जंग करने के लिए मक़ामात पर जमा रहे थे, और अल्लाह तआ़ला सब सुन रहे थे, सब जान रहे थे। **(121)** जब तुममें से दो जमाअ़तों ने दिल में ख़्याल किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह तो उन दोनों जमाअ़तों का मददगार था, और बस मुसलमानों को तो अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा करना चाहिए।[5] **(122)** और यह बात तहक़ीक़ी है कि हक़ तआ़ला ने बद्र में तुम्हारी मदद फ़रमाई, हालाँकि तुम बेसरोसामान थे, सो अल्लाह तआ़ला से डरते रहा करो, ताकि तुम शुक्र गुज़ार रहो।[6] **(123)** जबकि आप मुसलमानों से (यूँ) फ़रमा रहे थे कि क्या तुमको यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब तुम्हारी इम्दाद

---

1. यहाँ जो ग़ैर-मज़हब वालों से ख़ुसूसियत की मनाही फ़रमाई है उसमें यह भी दाख़िल है कि उनको अपना राज़दार बनाया जाए। और इसमें यह भी दाख़िल है कि अपने ख़ास इन्तिज़ामी मामलात में उनको दख़ल दिया जाए।
2. यह गुस्से की सख़्ती की तरफ़ इशारा है जो मजबूरी के वक़्त हो।
3. मुराद यह है कि अगर तुम मर भी जाओगे तब भी तुम्हारी मुराद पूरी न होगी।
4. यह क़िस्सा ग़ज़वा-ए-उहुद का है।
5. सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम पर ख़ुदा तआ़ला की कैसी इनायत है कि जुर्म के बयान के साथ उनको मददगार होने की ख़ुशख़बरी भी सुना दी, जिसमें माफ़ी का वायदा मफ़हूम होता है। और जुर्म भी कितना हल्का बतलाया कि वापसी नहीं सिर्फ़ कम-हिम्मती, फिर उसका भी मौजूद होना नहीं बल्कि ख़्याल। पस या तो इतना ही सादिर हुआ हो या सादिर हुए कुछ हिस्से को ज़िक्र नहीं फ़रमाया। और पहली शक्ल मान लेने पर नाराज़गी की वजह इन हज़रात का हद दर्जा क़रीब होना है।
6. बदर असल में एक कुएँ का नाम है जो बदर बिन क़ुरैश ने खोदा था। बदर की लड़ाई उसके नज़दीक ही हुई थी।

रब्बुकुम् बि-सलासति आलाफ़िम् मिनल्- मलाइ-कति मुन्ज़लीन **(124)** बला इन् तस्बिरू व तत्तक़ू व यअ्तूकुम् मिन् फ़ौरिहिम् हाज़ा युम्दिद्कुम् रब्बुकुम् बि-ख़म्सति आलाफ़िम् मिनल् मलाइ-कति मुसव्विमीन ◆ **(125)** व मा ज-अ़-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा लकुम् व लि-ततमइन्-न क़ुलूबुकुम् बिही, व मन्नस्रु इल्ला मिन् अ़िन्दिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् हकीम **(126)** लि-यक़्त-अ़ त-रफ़म् मिनल्लज़ी-न क-फ़रू औ यक्बि-तहुम् फ़-यन्क़लिबू ख़ा-इबीन **(127)** लै-स ल-क मिनल् अम्रि शैउन् औ यतू-ब अ़लैहिम् औ युअ़ज़्ज़ि-बहुम् फ़-इन्नहुम् ज़ालिमून **(128)** व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(129)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलुर्रिबा अज़्आफ़म् मुज़ा-अ़-फ़तन् वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(130)** वत्तक़ुन्-नारल्लती उअ़िद्दत् लिल्-काफ़िरीन **(131)** व अतीउल्ला-ह वर्रसू-ल लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(132)** व सारिअू इला मग़्फ़ि-रतिम् मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहस्- समावातु वल्-अर्ज़ु उअ़िद्दत् लिल्मुत्तक़ीन **(133)** अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न फ़िस्सर्रा-इ वज़्ज़र्रा-इ वल्काज़िमीनल्-ग़ै-ज़ वल्आ़फ़ी-न अ़निन्नासि, वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन **(134)** वल्लज़ी-न इज़ा फ़-अ़लू फ़ाहि-शतन् औ ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् ज़-करुल्ला-ह फ़स्तग़्फ़रू लिज़ुनूबिहिम्, व

اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ۝
بَلٰٓى اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ
رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ
اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا
مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ۝ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ
شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ وَ
لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ
يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ
يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ
عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا
فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ

منزل ١

करे तीन हज़ार फ़रिश्तों के साथ जो उतारे जाएँगे।[1] **(124)** हाँ, क्यों नहीं! अगर तुम मुस्तकिल रहोगे और मुत्तक़ी रहोगे, और वे लोग तुमपर एक-दम से आ पहुँचेंगे तो तुम्हारा रब तुम्हारी इम्दाद फ़रमाएगा पाँच हज़ार फ़रिश्तों से जो एक ख़ास वज़ा "यानी शक्ल और हुलिया" बनाए होंगे।[2] ◆ **(125)** और अल्लाह तआला ने (यह इम्दाद) महज़ इसलिए की कि तुम्हारे लिए खुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिलों को क़रार हो जाए, और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, जो कि ज़बरदस्त हैं, हकीम हैं। **(126)** ताकि काफ़िरों में से एक गिरोह को हलाक कर दे या उनको ज़लील व ख़्वार कर दे, फिर वे नाकाम लौट जाएँगे।[3] **(127)** आपको कोई दख़ल नहीं यहाँ तक कि खुदा तआला उनपर या तो मुतवज्जह हो जाएँ या उनको कोई सज़ा दे दें, क्योंकि वे ज़ुल्म भी बड़ा कर रहे हैं। **(128)** और अल्लाह ही कि मिल्क है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, वह जिसको चाहें बख़्श दें और जिसको चाहें अ़ज़ाब दें, और अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत करने वाले, बड़े रहमत करने वाले हैं। **(129)** ❖

ऐ ईमान वालो! सूद मत खाओ (यानी असल से) कई हिस्से ज़ायद (करके न लो), और अल्लाह तआला से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओ।[4] **(130)** और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। **(131)** और खुशी से कहना मानो अल्लाह तआला का और रसूल का, उम्मीद है कि तुम रहम किए जाओगे। **(132)** और मग़्फ़िरत की तरफ़ दौड़ो जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से है,[5] और जन्नत की तरफ़ जिसकी वुस्अ़त ऐसी है जैसे सब आसमान और ज़मीन, वह तैयार की गई है अल्लाह से डरने वालों के लिए। **(133)** ऐसे लोग जो कि ख़र्च करते हैं फ़राग़त में और तंगी में, और गुस्से के ज़ब्त करने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले, और अल्लाह तआला ऐसे नेक काम करने वालों को महबूब रखता है। **(134)** और ऐसे लोग कि जब कोई ऐसा काम कर गुज़रते हैं जिसमें ज़्यादती हो, या अपनी ज़ात पर नुक़सान उठाते हैं तो अल्लाह तआला को याद कर

---

1. मालूम होता है कि बड़े दर्जे के फ़रिश्ते होंगे वरना जो फ़रिश्ते पहले से ज़मीन पर मौजूद थे उनसे भी यह काम लिया जा सकता था।
2. यहाँ इम्दाद की हिक्मत निहायत वज़ाहत के साथ बयान फ़रमाई जिसमें ग़ौर करने से इस मज़मून पर कोई शुब्हा बाक़ी नहीं रहता, क्योंकि हासिल इसका यह हुआ कि उन फ़रिश्तों के नाज़िल होने से असली मक़सद यह था कि मुसलमानों के दिल को सुकून हो।
3. ग़ज़वा-ए-उहुद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दाँत मुबारक शहीद हो गया और चेहरा मुबारक ज़ख़्मी हो गया तो आपने यह फ़रमाया कि ऐसी क़ौम को कैसे फ़लाह होगी जिन्होंने अपने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के साथ ऐसा किया, हालाँकि वह नबी उनको खुदा की तरफ़ बुला रहा है। उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई।
4. यह जो फ़रमायाः 'असल से कई हिस्से ज़ायद करके' यह सूद के हराम होने की क़ैद नहीं, क्योंकि सूद कम हो या ज़्यादा सब हराम है।
5. मतलब यह है कि ऐसे नेक काम अपनाओ जिससे परवर्दिगार तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दें और तुमको जन्नत इनायत हो।

मंय्यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्लल्लाहु व लम् युसिर्रू अ़ला मा फ़-अ़लू व हुम् यअ़्लमून (135) उलाइ-क जज़ाउहुम् मग़्फ़ि-रतुम् मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व निअ़्-म अज्रुल् आ़मिलीन (136) क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिकुम् सु-ननुन् फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल् मुकज़्ज़िबीन (137) हाज़ा बयानुल्-लिन्नासि व हुदंव्-व मौअ़ि-ज़तुल् लिल्मुत्तक़ीन (138) व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल्-अअ़्लौ-न इन् कुन्तुम् मुअ़्मिनीन (139) इंय्यम्सस्कुम् क़र्हुन् फ़-क़द् मस्सल्क़ौ-म क़र्हुम् मिस्लुहू, व तिल्कल्-अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि व लि-यअ़्-लमल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यत्तख़ि-ज़ मिन्कुम् शु-हदा-अ, वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (140) व लियुमह्हिसल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यम्ह-क़ल् काफ़िरीन (141) अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ़्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व यअ़्-लमस्साबिरीन (142) व ल-क़द् कुन्तुम् तमन्नौनल्मौ-त मिन् क़ब्लि अन् तल्क़ौहु फ़-क़द् रऐतुमूहु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (143) ◆

व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु, अ-फ़-इम्मा-त औ क़ुतिलन्-क़लब्तुम् अ़ला अअ़्क़ाबिकुम्, व मंय्यन्क़लिब् अ़ला अ़क़िबैहि फ़-लंय्यज़ुर्रल्ला-ह शैअन्, व स-यज्ज़िल्लाहुश्शाकिरीन (144) व मा का-न लि-नफ़्सिन् अन् तमू-त इल्ला

وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۗ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَ
هُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ جَزَاۤؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى
وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ
الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ
مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۭ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ
وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاۤءَ ۭ وَاللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ
الْكٰفِرِيْنَ ۝ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ
الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝ ع
وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ
اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰي عَقِبَيْهِ
فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَـيْـــًٔا ۭ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ

लेते हैं, फिर अपने गुनाहों की माफ़ी चाहने लगते हैं, और अल्लाह तआ़ला के सिवा और है कौन जो गुनाहों को बख़्शता हो। और वे लोग अपने फ़ेल पर इसरार नहीं करते और वे जानते हैं। **(135)** उन लोगें की जज़ा बख़्शिश है उनके रब की तरफ़ से, और ऐसे बाग़ हैं कि उनके नीचे नहरें चलती होंगी, ये हमेशा-हमेशा उन्हीं में रहेंगे, और यह अच्छा बदला है उन नेक काम करने वालों का।[1] **(136)** तहक़ीक़ कि तुमसे पहले मुख़्तलिफ़ तरीक़े गुज़र चुके हैं तो तुम रू-ए-ज़मीन पर चलो फिरो और देख लो कि अख़ीर अन्जाम झुठलाने वालों का कैसा हुआ। **(137)** यह बयान काफ़ी है तमाम लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है ख़ास खुदा से डरने वालों के लिए। **(138)** और तुम हिम्मत मत हारो और रंज मत करो, और ग़ालिब तुम ही रहोगे अगर तुम पूरे मोमिन रहे। **(139)** अगर तुमको ज़ख़्म पहुँच जाए तो उस क़ौम को भी ऐसा ही ज़ख़्म पहुँच चुका है, और हम इन दिनों को उन लोगों के दरमियान अदलते-बदलते रहा करते हैं, और ताकि अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को जान लें, और तुममें से बाज़ों को गवाह बनाना था, और अल्लाह तआ़ला ज़ुल्म करने वालों से मुहब्बत नहीं रखते। **(140)** और ताकि मैल-कुचैल से साफ़ कर दे ईमान वालों को और मिटा दे काफ़िरों को। **(141)** हाँ, क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि जन्नत में जा दाख़िल होगे हालाँकि अभी अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुममें से जिहाद किया हो और न उनको देखा जो साबित क़दम रहने वाले हों। **(142)** और तुम तो मरने की तमन्ना कर रहे थे मौत के सामने आने से पहले ही,[2] सो उसको तो खुली आँखों देख लिया था। **(143)** ◆

और मुहम्मद सिर्फ़ रसूल ही तो हैं, आपसे पहले और भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके हैं,[3] सो अगर आपका इन्तिक़ाल हो जाए या आप शहीद ही हो जाएँ तो क्या तुम लोग उल्टे फिर जाओगे, और जो शख़्स उल्टा फिर भी जाएगा तो ख़ुदा तआ़ला का कोई नुक़सान न करेगा, और ख़ुदा तआ़ला जल्द ही बदला देगा हक़ पहचानने वाले लोगों

---

1. इन आयतों में दो दर्जों के मुसलमानों का बयान है, एक आला दर्जे के, एक उनसे कम। और खुदा से डरने वालों में सब आ गए, क्योंकि तौबा भी खुदा के डर ही से होती है।

2. इस आयत के नाज़िल होने का सबब और मौक़ा यह है कि पिछले साल बाज़ सहाबा जो बदर में शहीद हुए और उनके बड़े फ़ज़ाइल मालूम हुए तो बाज़ ने तमन्ना की कि काश! हमको भी कोई ऐसा मौक़ा पेश आए कि इस शहादत की दौलत से मुशर्रफ़ हों। (यानी शहीद होने की इज़्ज़त हासिल करें) आख़िर यह उहुद की लड़ाई पेश आई तो पाँव उखड़ गए, इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

3. जब उहुद की जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दाँत मुबारक शहीद हुआ और सर मुबारक ज़ख़्मी हुआ तो उस वक़्त किसी दुश्मन ने पुकार दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) क़त्ल कर दिए गए। मुसलमान लड़ाई बिगड़ जाने से बद-हवास और मुन्तशिर हो ही रहे थे, इस ख़बर से और भी कमर टूट गई। किसी ने यह तजवीज़ किया कि अब कुफ़्फ़ार से अमन ले लेना चाहिए, बाज़े हिम्मत हारकर बैठ रहे और हाथ पाँव छोड़ दिए, बाज़े भाग खड़े हुए, बाज़े मुनाफ़िक़ बोले कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) नहीं रहे तो फिर अपना पहला ही दीन क्यों न इख़्तियार कर लिया जाए, बाज़ ने कहा कि अगर नबी होते तो क़त्ल क्यों होते और बाज़ ने कहा कि अगर आप ही न रहे तो हम रहकर क्या करेंगे, जिसपर आपने जान दी उसपर हमको भी जान दे देनी चाहिए। और अगर आप क़त्ल हो गए तो क्या है, अल्लाह तआ़ला तो क़त्ल नहीं हुए। इस परेशानी में अव्वल आपको हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने देखकर पहचाना और पुकार कर कहा कि ऐ मुसलमानो! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ज़िन्दा और सही-सलामत हैं। ग़रज़ उस वक़्त फिर मुसलमान इकट्ठे हुए, आपने उनको मलामत फ़रमाई। अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! यह ख़बर सुनकर हमारे दिलों में होल बैठ गई इसलिए हमारे पाँव उखड़ गए। इस मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुई।

बि-इज़्निल्लाहि किताबम् मुअज्जलन्, व मंय्युरिद् सवाबद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मंय्युरिद् सवाबल्-आख़ि-रति नुअ्तिही मिन्हा, व स-नज्ज़िश्शाकिरीन **(145)** व क-अय्यिम् मिन् नबिय्यिन् क़ा-त-ल म-अ़हू रिब्बिय्यू-न कसीरुन् फ़मा व-हनू लिमा असाबहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि व मा ज़अुफ़ू व मस्तकानू, वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन **(146)** व मा का-न क़ौलहुम् इल्ला अन् क़ालू रब्बनग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व इस्राफ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ़लल्-क़ौमिल् काफ़िरीन **(147)** फ़-आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्-न सवाबिल्-आख़ि-रति, वल्लाहु युहिब्बुल्-मुह्सिनीन **(148)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअुल्लज़ी-न क-फ़रू यरुद्दूकुम् अ़ला अअ्क़ाबिकुम् फ़-तन्क़लिबू ख़ासिरीन **(149)** बलिल्लाहु मौलाकुम् व हु-व ख़ैरुन्-नासिरीन **(150)** सनुल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब बिमा अश्रकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानन् व मअ्वाहुमुन्नारु, व बिअ्-स मस्वज़्ज़ालिमीन **(151)** व ल-क़द् स-द-क़कुमुल्लाहु वअ्दहू इज़् तहुस्सूनहुम् बि-इज़्निही हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम् व तनाज़अ्तुम् फ़िल्अम्रि व अ़सैतुम् मिम्-बअ्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बू-न, मिन्कुम् मंय्युरीदुद्दुन्या व मिन्कुम् मंय्युरीदुल्-आख़ि-र-त सुम्-म स-र-फ़कुम् अ़न्हुम् लि-यब्तलि-यकुम् व ल-क़द् अ़फ़ा अ़न्कुम्, वल्लाहु ज़ू

لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ
ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ
مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ۞ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِىٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ
رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا
ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۞ وَمَا
كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا
فِىْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۞
فَاٰتٰهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۞ بَلِ اللّٰهُ
مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۞ سَنُلْقِىْ فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَ
مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۞ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ
اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ
تَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ

منزل ١

को। **(144)** और किसी शख़्स को मौत आना मुम्किन नहीं ख़ुदा तआ़ला के हुक्म के बग़ैर, इस तौर से कि उसकी मुक़र्ररा मीयाद लिखी हुई रहती है। और जो शख़्स दुनियावी नतीजा चाहता है तो हम उसको दुनिया का हिस्सा दे देते हैं, और जो शख़्स आख़िरत का नतीजा चाहता है तो हम उसको आख़िरत का हिस्सा देंगे, और हम बहुत जल्द बदला देंगे हक़ पहचानने वालों को। **(145)** और बहुत नबी हो चुके हैं जिनके साथ होकर बहुत अल्लाह वाले लड़े हैं। सो न तो हिम्मत हारी उन्होंने उन मुसीबतों की वजह से जो उनपर अल्लाह की राह में आईं और न उनका ज़ोर घटा, और न वे दबे, और अल्लाह तआ़ला को ऐसे मुस्तक़िल मिज़ाजों से मुहब्बत है। **(146)** और उनकी ज़बान से भी तो इसके सिवा और कुछ नहीं निकला कि उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे गुनाहों को और हमारे कामों में हमारे हद से निकल जाने को बख़्श दीजिए और हमको साबित क़दम रखिए, और हमको काफ़िर लोगों पर ग़ालिब कीजिए। **(147)** सो उनको अल्लाह तआ़ला ने दुनिया का भी बदला दिया और आख़िरत का भी उम्दा बदला (दिया) और अल्लाह तआ़ला को ऐसे नेकी करने वालों से मुहब्बत है। **(148)** ❖

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहना मानोगे तो वे तुमको उल्टा फेर देंगे, फिर तुम नाकाम हो जाओगे। **(149)** बल्कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारा दोस्त है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है।[1] **(150)** हम अभी डाले देते हैं होल काफ़िरों के दिलों में, इसके सबब कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला का शरीक ऐसी चीज़ को ठहराया है जिसपर कोई दलील अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल नहीं फ़रमाई, और उनकी जगह जहन्नम है, और वह बुरी जगह है बेइन्साफ़ों की।[2] **(151)** और यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ने तुमसे अपने वायदे को सच्चा कर दिखाया था, जिस वक़्त कि तुम उन काफ़िरों को हुक्मे ख़ुदावन्दी से क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि तुम ख़ुद ही कमज़ोर हो गए और आपस में हुक्म में इख़्तिलाफ़ करने लगे, और तुम क़हने पर न चले बाद उसके कि तुमको तुम्हारी दिल-पसन्द बात दिखला दी थी। तुममें से बाज़े तो वे शख़्स थे जो दुनिया चाहते थे, और बाज़े तुममें से वे थे जो आख़िरत के तलबगार थे, (इसलिए अल्लाह तआ़ला ने आइन्दा के लिए अपनी इम्दाद को बन्द कर लिया और) फिर तुमको उन (काफ़िरों) से हटा दिया ताकि (ख़ुदा तआ़ला) तुम्हारी आज़माइश फ़रमाए और यक़ीन समझो कि (अल्लाह तआ़ला ने) तुमको माफ़ कर दिया और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं मुसलमानों पर।[3] **(152)** (वह वक़्त याद करो) जबकि तुम चढ़े चले जाते थे और किसी को मुड़कर भी तो न देखते थे, और रसूल तुम्हारे पीछे की ओर से तुमको पुकार

---

1. पस उसी की दोस्ती पर बस करो और उसी को मददगार समझो। दूसरा मुख़ालिफ़ अगर अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ मदद की भी तदबीर बतलाए तो अ़मल मत करो।

2. चुनाँचे इस रोब डालने का ज़ुहूर इस तरह हुआ कि अव्वल तो बावजूद मुसलमानों के शिकस्त खा जाने के मुश्रिकीन बिना किसी ज़ाहिरी सबब के मक्का को लौट गए। फिर जब कुछ रास्ता तय कर चुके तो अपने इस तरह आ जाने पर बहुत अफ़सोस हुआ और फिर मदीने की तरफ़ वापसी का इरादा किया, मगर कुछ ऐसा रोब छाया कि फिर न आ सके और रास्ते में कोई देहाती मिल गया उससे कहा कि हम तुझको इतना माल देंगे तू मुसलमानों को डरा देना। यहाँ वह्य से मालूम हो गया, आप उनका पीछा करते हुए 'हमराउल-असद' तक पहुँचे।

3. इस आयत से सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के हाल पर बड़ी इनायत मालूम हुई कि नाराज़गी में भी कई-कई तसल्लियाँ फ़रमाईं। एक यह कि सज़ा न थी बल्कि इसमें भी तुम्हारी मस्लहत थी, फिर आख़िरत की पकड़ से बेफ़िक्र कर दिया।

फ़ज़्लिन् अ़लल् मुअ्मिनीन **(152)** इज़् तुस्अ़िदू-न व ला तल्वू-न अ़ला अ-हदिंव्-वर्रसूलु यद्अूकुम् फ़ी उख़्राकुम् फ़-असाबकुम् ग़म्मम्-बिग़म्मिल् लिकैला तह्ज़नू अ़ला मा फ़ातकुम् व ला मा असाबकुम, वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ्मलून **(153)** सुम्-म अन्ज़-ल अ़लैकुम् मिम्-बअ्दिल्-ग़म्मि अ-म-नतन् नुआसंय्यग़शा ता-इ-फ़तम् मिन्कुम् व ता-इ-फ़तुन् क़द् अहम्मत्हुम् अन्फ़ुसुहुम् यज़ुन्नू-न बिल्लाहि ग़ैरल्-हक़्क़ि ज़न्नल्-जाहिलिय्यति, यक़ूलू-न हल्-लना मिनल्-अम्रि मिन् शैइन्, क़ुल् इन्नल्-अम्-र कुल्लहू लिल्लाहि, युख़्फ़ू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ला युब्दू-न ल-क, यक़ूलू-न लौ का-न लना मिनल्-अम्रि शैउम् मा क़ुतिल्ना हाहुना, क़ुल् लौ कुन्तुम् फ़ी बुयूतीकुम् ल-ब-रज़ल्लज़ी-न कुति-ब अ़लैहिमुल्क़त्लु इला मज़ाजिअ़िहिम् व लि-यब्तलियल्लाहु मा फ़ी सुदूरिकुम् व लियु-मह्हि-स मा फ़ी क़ुलूबिकुम्, वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर **(154)** इन्नल्लज़ी-न तवल्लौ मिन्कुम् यौमल्-तक़ल् जम्आ़नि इन्नमस्तज़ल्लहुमुश्शैतानु बि-बअ्ज़ि मा क-सबू व ल-क़द् अ़फ़ल्लाहु अ़न्हुम्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् हलीम **(155)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ालू लि-इख़्वानिहिम् इज़ा ज़-रबू फ़िल्अर्ज़ि औ कानू ग़ुज़्ज़ल्-लौ कानू अ़िन्दना मा मातू व मा क़ुतिलू लि-यज्अ़लल्लाहु

لن تنالوا ٤ ٦٤ آل عمران ٣

صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو
فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُونَ عَلَىٰ
أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ
لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ
بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً
نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِّنكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ
أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ
هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ
يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ
لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هَاهُنَا ۗ قُل لَّوْ كُنتُمْ فِي
بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ
وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۖ
وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا

منزل ١

रहे थे, सो ख़ुदा तआला ने तुमको नतीजे और सज़ा में ग़म दिया ग़म देने के सबब से, ताकि तुम ग़मज़दा न हुआ करो, न उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल जाए और न उसपर जो तुमपर मुसीबत पड़े, और अल्लाह तआला सब ख़बर रखते हैं तुम्हारे सब कामों की। **(153)** फिर अल्लाह तआला ने उस ग़म के बाद तुमपर चैन भेजा यानी ऊँघ, कि तुममें से एक जमाअ़त पर तो उसका ग़ल्बा हो रहा था[1] और एक जमाअ़त वह थी कि उनको अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी, वे लोग अल्लाह तआला के साथ ख़िलाफ़े हक़ीक़त ख़्यालात कर रहे थे जो कि महज़ बेवक़ूफ़ी का ख़्याल था। वे यूँ कह रहे थेः क्या हमारा कुछ इख़्तियार चलता है? आप फ़रमा दीजिए कि इख़्तियार तो सब अल्लाह ही का है। वे लोग अपने दिलों में ऐसी बात छुपाकर रखते हैं जिसको आपके सामने ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं कि अगर हमारा कुछ इख़्तियार चलता तो हम यहाँ क़त्ल न किए जाते, आप फ़रमा दीजिए कि तुम लोग घरों में भी रहते तब भी जिन लोगों के लिए क़त्ल होना मुक़द्दर हो चुका है वे लोग उन जगहों की तरफ़ निकल पड़ते जहाँ वे गिरे हैं। और यह (जो कुछ हुआ) इसलिए हुआ ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे बातिन की बात की आज़माइश करे और ताकि तुम्हारे दिलों की बात को साफ़ कर दे, और अल्लाह तआला सब बातिन की बातों को ख़ूब जानते हैं। **(154)** यक़ीनन तुममें से जिन लोगों ने पीठ फेर दी थी जिस दिन कि दोनों जमाअ़तें आपस में आमने-सामने हुईं, इसके सिवा और कोई बात नहीं हुई कि उनको शैतान ने बहका दिया उनके बाज़ आमाल के सबब,[2] और यक़ीन समझो कि अल्लाह तआला ने उनको माफ़ फ़रमा दिया। वाक़ई अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत करने वाले हैं, बड़े इल्म वाले हैं।[3] **(155)** ❖

1. जब कुफ़्फ़ार मैदान से वापस हो गए तो उस वक़्त ग़ैब से मुसलमानों पर ऊँघ ग़ालिब हुई जिससे सब ग़म दूर हो गया।
2. 'बि-बअ़्ज़ि मा क-सबू' से मालूम होता है कि एक गुनाह से दूसरा गुनाह पैदा होता है, जैसा कि एक ताअ़त (यानी नेकी और अच्छाई) से दूसरी ताअ़त की तौफ़ीक़ बढ़ती जाती है।
3. सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के बाज़ मुख़ालिफ़ीन और दुश्मनों ने इस वाक़िए से सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम पर और ख़ुसूसन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर तान किया है और इससे उनके अन्दर ख़िलाफ़त की सलाहियत न होना निकाला है, लेकिन यह महज़ बेकार और बेहूदा बात है। जब अल्लाह तआला ने माफ़ कर दिया तो अब दूसरों को लब हिलाने का क्या हक़ रहा। रहा ख़िलाफ़त का क़िस्सा, सो अहले हक़ के नज़दीक ख़िलाफ़त के लिए मासूम और बेगुनाह होना शर्त नहीं है।

ज़ालि-क हस्र-तन् फ़ी क़ुलूबिहिम्, वल्लाहु युह्यी व युमीतु, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर **(156)** व ल-इन् क़ुतिल्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम् ल-मग़्फ़ि-रतुम् मिनल्लाहि व रह्मतुन् ख़ैरुम् मिम्मा यज्मअून **(157)** व ल-इम्- मुत्तुम् औ क़ुतिल्तुम् ल-इलल्लाहि तुह्शरून **(158)** फ़बिमा रह्मतिम् मिनल्लाहि लिन्-त लहुम् व लौ कुन्-त फ़ज़्ज़न् ग़लीज़ल्क़ल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन् हौलि-क फ़अ्फ़ु अ़न्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुम् व शाविर्हुम् फ़िल्-अम्रि फ़-इज़ा अ़ज़म्-त फ़-तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मु-तवक्किलीन **(159)** इंय्यन्सुर्कुमुल्लाहु फ़ला ग़ालि-ब लकुम् व इंय्यख़्ज़ुल्कुम् फ़-मन् ज़ल्लज़ी यन्सुरुकुम् मिम्-बअ्दिही, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून **(160)** व मा का-न लि-नबिय्यिन् अंय्यग़ुल्-ल, व मंय्यग़्लुल् यअ्ति बिमा ग़ल्-ल यौमल्-क़ियामति सुम्-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून **(161)** अ-फ़ मनित्त-ब-अ़ रिज़्वानल्लाहि क-मम्बा-अ बि-स-ख़तिम् मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर **(162)** हुम् द-रजातुन् अ़िन्दल्लाहि, वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ्मलून **(163)** ल-क़द् मन्नल्लाहु अ़लल् मुअ्मिनी-न इज़् ब-अ़-स फ़ीहिम् रसूलम्-मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अ़लैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्-हिक्म-त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम् मुबीन ● **(164)** अ-व-

فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَّوْ كَانُوا عِندَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا
لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۗ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ وَ
لَئِن مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ۝ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللَّهِ لِنتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانفَضُّوا
مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي
الْأَمْرِ ۖ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ۝
إِن يَنصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۖ وَإِن يَخْذُلْكُمْ فَمَن ذَا الَّذِي
يَنصُرُكُم مِّن بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا
كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَغُلَّ ۚ وَمَن يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَفَمَنِ
اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَن بَاءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۚ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ هُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا
يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना[1] जो कि काफ़िर हैं और कहते हैं अपने भाइयों के बारे में जबकि वे किसी इलाक़े में सफ़र करते हैं,[2] या वे लोग कहीं ग़ाज़ी बनते हैं कि अगर ये लोग हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह तआ़ला इस बात को उनके दिलों में हसरत का पैदा करने वाला कर दें, और जिलाता-मारता तो अल्लाह ही है, और अल्लाह तआ़ला जो कुछ तुम करते हो सब कुछ देख रहे हैं। **(156)** और अगर तुम लोग अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो लाज़िमी तौर पर अल्लाह के पास की मग़फ़िरत और रहमत उन चीज़ों से बेहतर है जिनको ये लोग जमा कर रहे हैं। **(157)** और अगर तुम लोग मर गए या मारे गए तो ज़रूर ही अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे। **(158)** उसके बाद ख़ुदा ही की रहमत के सबब आप उनके साथ नरम रहे।[3] और अगर आप कड़वे मिज़ाज वाले सख़्त तबीयत के होते तो आपके पास से सब मुन्तशिर हो जाते, "यानी अलग और इधर-उधर हो जाते" सो आप उनको माफ़ कर दीजिए और आप उनके लिए इस्तिग़फ़ार कर दीजिए और उनसे ख़ास-ख़ास बातों में मश्विरा लेते रहा कीजिए।[4] फिर जब आप राय पुख़्ता कर लें तो ख़ुदा तआ़ला पर भरोसा कीजिए,[5] बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे भरोसा करने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। **(159)** अगर हक़ तआ़ला तुम्हारा साथ दें तब तो तुमसे कोई नहीं जीत सकता, और अगर तुम्हारा साथ न दें तो उसके बाद ऐसा कौन है जो तुम्हारा साथ दे (और ग़ालिब कर दे)। और ईमान वालों को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखना चाहिए। **(160)** और नबी की यह शान नहीं कि वह ख़ियानत करे। हालाँकि जो शख़्स ख़ियानत करेगा वह शख़्स अपनी ख़ियानत की हुई चीज़ को क़ियामत के दिन हाज़िर करेगा। फिर हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा, और उनपर बिलकुल ज़ुल्म न होगा।[6] **(161)** सो ऐसा शख़्स जो कि अल्लाह की रिज़ा का ताबे हो, क्या वह उस शख़्स के जैसा हो जाएगा जो कि अल्लाह के ग़ज़ब का मुस्तहिक़ हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ हो? और वह जाने की बुरी जगह है। **(162)** ये (जिनका ज़िक्र हुआ) दर्जों में मुख़्तलिफ़ होंगे अल्लाह तआ़ला के यहाँ, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब देखते हैं उनके आमाल को। **(163)** हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों पर एहसान किया जबकि उनमें उन्हीं की जिन्स "यानी नस्ल और जमाअ़त में" से एक ऐसे पैग़म्बर को भेजा कि वह उन लोगों को अल्लाह तआ़ला की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं और उन लोगों की सफ़ाई करते रहते हैं और उनको किताब और समझ की बातें बतलाते रहते हैं, और यक़ीनन ये लोग पहले से खुली ग़लती में थे।[7] ● **(164)** और जब

1. ऊपर मुनाफ़िक़ों का क़ौल नक़ल किया था। चूँकि ऐसे अक़्वाल के सुनने से शुब्हा हो सकता है कि मुसलमानों के दिलों में इस क़िस्म के वस्वसे पैदा होने लगें, इसलिए हक़ तआ़ला इस आयत में मुसलमानों को ऐसे अक़्वाल और ऐसे हालात से मुमानअ़त (मनाही) फ़रमाते हैं।

2. इस सफ़र से दीनी काम के लिए सफ़र करना मुराद है।

3. मिज़ाज की नरमी को रहमत का सबब इसलिए फ़रमाया कि ख़ुश-अख़्लाक़ी इबादत है, और इबादत की तौफ़ीक़ ख़ुदा तआ़ला की रहमत से होती है।

4. यह जो कहा गया है कि ख़ास-ख़ास बातों में मश्विरा लेते रहा कीजिए तो मुराद इनसे वे मामलात हैं जिनमें आप पर वह्य नाज़िल न हुई हो, वरना वह्य के बाद फिर मश्विरों की कोई गुंजाइश नहीं।

5. लफ़्ज़ 'अ़ज़्म' (यानी इरादा) में कोई क़ैद नहीं लगाई। इससे मालूम हुआ कि राय से मुताल्लिक़ इन्तिज़ामी मामलात में कसरते-राय (यानी बहुमत) का ज़ाबता महज़ बेअसल है। वरना यहाँ 'अ़ज़्म' में यह क़ैद होती कि बशर्ते कि आपका अ़ज़्म बहुमत के ख़िलाफ़ न हो। और मश्विरा व अ़ज़्म के बाद जो तवक्कुल का हुक्म फ़रमाया तो इससे साबित हुआ कि तदबीर तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि मश्विरे व इरादे का तदबीर में दाख़िल होना ज़ाहिर है। और जानना चाहिए कि यह तवक्कुल का मर्तबा कि बावजूद तदबीर के एतिक़ादी तौर पर अल्लाह तआ़ला पर एतिमाद रखे, हर मुसलमान के ज़िम्मे फ़र्ज़ है, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 130 पर)**

● निस्फ़ 1/2

लम्मा असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़द् असब्तुम् मिस्लैहा क़ुल्तुम् अन्ना हाज़ा, क़ुल् हु-व मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिकुम्, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(165)** व मा असाबकुम् यौमल्-तक़ल् जम्अ़ानि फ़बि-इज़्निल्लाहि व लि-यअ्-लमल् मुअ्मिनीन **(166)** व लि-यअ्-लमल्लज़ी-न नाफ़क़ू व क़ी-ल लहुम् तआ़लौ क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अविद्फ़अ़ू, क़ालू लौ नअ़्लमु क़ितालल्-लत्त-बअ़्नाकुम, हुम् लिल्कुफ़्रि यौमइज़िन् अक़्रबु मिन्हुम् लिल्-ईमानि यक़ूलू-न बिअफ़्वाहिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम्, वल्लाहु अअ़्लमु बिमा यक्तुमून **(167)** अल्लज़ी-न क़ालू लि-इख़्वानिहिम् व क़-अ़दू लौ अताअ़ूना मा क़ुतिलू, क़ुल् फ़द्रऊ अ़न् अन्फ़ुसिकुमुल्मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(168)** व ला तह्सबन्नल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातन्, बल् अह्याउन् अिन्-द रब्बिहिम् युर्ज़क़ून **(169)** फ़रिही-न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व यस्तब्शिरू-न बिल्लज़ी-न लम् यल्हक़ू बिहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ✣ **(170)** यस्तब्शिरू-न बिनिअ़्मतिम् मिनल्लाहि व फ़ज़्लिंव्-व अन्नल्ला-ह ला युज़ीअ़ु अज्रल् मुअ्मिनीन **(171)** ❖

अल्लज़ीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि मिम्-बअ़्दि मा असाबहुमुल्क़र्हु, लिल्लज़ी-न अह्सनू मिन्हुम् वत्तक़ौ अज्रुन् अ़ज़ीम **(172)** अल्लज़ी-न क़ा-ल लहुमुन्नासु इन्नन्ना-स क़द्

لن تنالوا ٤ ٦٦ آل عمران ٣

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿١٦٤﴾ أَوَلَمَّا
أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ
هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَا
أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾
وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ
يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ مَا لَيْسَ
فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ
وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۗ قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنْفُسِكُمُ
الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾ فَرِحِينَ
بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا
بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾
يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ
أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا
أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾

منزل ١

तुम्हारी ऐसी हार हुई जिससे दो हिस्से तुम जीत चुके थे तो (क्या ऐसे वक़्त में) तुम (यूँ) कहते हो कि यह किधर से हुई, आप फ़रमा दीजिए कि यह (हार ख़ास) तुम्हारी तरफ़ से हुई। बेशक अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है। **(165)** और जो मुसीबत तुमपर पड़ी जिस दिन कि दोनों गिरोह आपस में आमने-सामने हुए सो अल्लाह की मरज़ी से हुई और ताकि अल्लाह तआला मोमिनों को भी देख लें। **(166)** और उन लोगों को भी देख लें जिन्होंने निफ़ाक़ का बर्ताव किया, और उनसे (यूँ) कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ना या दुश्मनों के लिए रोक बन जाना। वे बोले कि अगर हम कोई ढंग की लड़ाई देखते तो ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते। ये (मुनाफ़िक़ लोग) उस दिन कुफ़्र से बहुत ज़्यादा नज़दीक हो गए, उस हालत के मुक़ाबले में कि वे ईमान से नज़दीक थे। ये लोग अपने मुँह से ऐसी बातें करते हैं जो उनके दिल में नहीं, और अल्लाह तआला ख़ूब जानते हैं जो कुछ ये अपने दिल में रखते हैं। **(167)** ये ऐसे लोग हैं कि अपने भाइयों के बारे में बैठे हुए बातें बनाते हैं कि अगर हमारा कहना मानते तो क़त्ल न किए जाते। आप फ़रमा दीजिए कि अच्छा तो अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो।[1] **(168)** और (ऐ मुख़ातब!) जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए गए उनको मुर्दा मत ख़्याल कर बल्कि वे तो ज़िन्दा हैं अपने परवर्दिगार के क़रीबी हैं, उनको रिज़्क़ भी मिलता है। **(169)** वे ख़ुश हैं उस चीज़ से जो उनको अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाई, और जो लोग उनके पास नहीं पहुँचे उनसे पीछे रह गए हैं उनकी भी इस हालत पर वे ख़ुश होते हैं कि उनपर भी किसी तरह का ख़ौफ़ वाक़ेअ़ होने वाला नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। **(170)** वे ख़ुश होते हैं अल्लाह की नेमत व फ़ज़्ल की वजह से, और इस वजह से कि अल्लाह तआला ईमान वालों का अज्र ज़ाया नहीं फ़रमाते।[2] **(171)** ❖

जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के कहने को क़बूल किया उसके बाद कि उनको ज़ख़्म लगा था, उन लोगों में जो नेक और मुत्तक़ी हैं उनके लिए बड़ा सवाब है। **(172)** ये ऐसे लोग हैं कि लोगों ने उनसे कहा कि उन लोगों ने

(पृष्ठ 128 का शेष) और तवक्कुल जो तदबीर को छोड़ देने के मायने में है तो उसमें तफ़सील यह है कि अगर वह तदबीर दीनी है तो उसको छोड़ना बुरा है, और अगर दुनियावी आ़म आ़दत के मुताबिक़ यक़ीनी है तो उसका छोड़ना भी नाजायज़ है, और अगर गुमान और ख़्याल के दर्जे में है तो मज़बूत दिल वाले को जायज़ है, और अगर वहमी है तो उसके छोड़ने का हुक्म दिया गया है।

6. अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का अमीन होना यहाँ दलील से साबित किया गया है।

7. यह जो फ़रमाया गया कि 'उन्हीं की नस्ल और जिन्स से' तो इसमें मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं। बाज़ ने कहा कि उनके नसब से यानी क़ुरैश से, बाज़ ने कहा कि अ़रब से, बाज़ ने कहा कि आदम की औलाद से, और यही आख़िर वाला क़ौल ज़्यादा मुनासिब है, क्योंकि लफ़्ज़ 'मोमिनीन' इस जगह आ़म है और 'अन्फ़ुसिहिम्' की ज़मीर (Pro-noun) इसी तरफ़ लौट रही है, पस आ़म सिफ़त के साथ तफ़सीर करना ज़्यादा मुनासिब है।

1. इस शिकस्त के वाक़िए में जो इताब (नाराज़गी और नागवारी) के बाद सहाबा की जगह-जगह तसल्ली की गई तो इससे नाफ़रमानी करने वाले धोखा न खाएँ कि हमसे जो गुनाह होते हैं उनमें भी अल्लाह की मशिय्यत व हिक्मत होती है फिर ग़म की कोई बात नहीं। बात यह है कि अव्वल तो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ग़लती से ऐसा हुआ, मुख़ालफ़त का इरादा न था। दूसरे उनपर नदामत और ग़म का बेइन्तिहा ग़ल्बा था जो तौबा का आला दर्जा है, इसलिए उनकी तसल्ली की गई। और जो जान-बूझकर गुनाह करे फिर उसपर जुर्रत करे, वह तसल्ली का हक़दार नहीं बल्कि डाँट-डपट और अ़ज़ाब की धमकी का हक़दार है।

2. ऊपर ग़ज़वा-ए-उहुद का क़िस्सा ज़िक्र हो चुका, आगे उसके मुताल्लिक़ एक-दूसरे ग़ज़वे (लड़ाई और जंग) का ज़िक्र है, जो 'ग़जवा-ए-हमराउल-असद' के नाम से मशहूर है। वह यह कि जब कुफ़्फ़ार मैदान से मक्का को वापस हुए तो रास्ते में जाकर इसपर अफ़सोस किया कि हम बाजवूद ग़ालिब आ जाने के नाहक़ लौट आए, सो अब चलकर सबका ख़ात्मा कर दें। अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाल दिया और फिर वे मक्का ही की तरफ़ हो लिए, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 132 पर)**

ज-मअू लकुम् फ़ख़्शौहुम् फ-ज़ादहुम् ईमानंव्-व क़ालू हस्बुनल्लाहु व निअ्‌मल् वकील (173) फ़न्क़-लबू बिनिअ्‌मतिम्- मिनल्लाहि व फ़ज़्लिल्-लम् यम्सस्हुम् सूउंव्-वत्त-बअू रिज़्वानल्लाहि, वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ़ज़ीम (174) इन्नमा ज़ालिकुमुश्शैतानु युख़व्विफ़ु औलिया-अहू फ़ला तख़ाफ़ूहुम् व ख़ाफ़ूनि इन् कुन्तुम् मुअ्‌मिनीन (175) व ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअू-न फ़िल्कुफ़्रि इन्नहुम् लंय्यजुर्रुल्ला-ह शैअन्, युरीदुल्लाहु अल्ला यजूअ़-ल लहुम् हज़्ज़न् फ़िल्-आख़िरति व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (176) इन्नल्लज़ीनश्-त-रवुल्-कुफ़्-र बिल्-ईमानि लंय्यजुर्रुल्ला-ह शैअन् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (177) व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् ख़ैरुल् लिअन्फ़ुसिहिम्, इन्नमा नुम्ली लहुम् लि-यज़्दादू इस्मन् व लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (178) मा कानल्लाहु लि-य-ज़रल् मुअ्‌मिनी-न अ़ला मा अन्तुम् अ़लैहि हत्ता यमीज़ल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि, व मा कानल्लाहु लियुत्लि-अ़कुम् अ़लल्-ग़ैबि व लाकिन्नल्ला-ह यज्तबी मिर्रुसुलिही मंय्यशा-उ फ-आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही व इन् तुअ्‌मिनू व तत्तक़ू फ-लकुम् अज्रुन् अ़ज़ीम (179) व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न यब्ख़लू-न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हु-व ख़ैरल्लहुम्, बल् हु-व शर्रुल्लहुम्, सयुतव्वक़ू-न मा बख़िलू बिही यौमल्-क़ियामति, व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु बिमा

الذين قال لهم الناس إن الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم
فزادهم إيمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوكيل ﴿١٧٣﴾ فانقلبوا بنعمة
من الله وفضل لم يمسسهم سوء واتبعوا رضوان الله
والله ذو فضل عظيم ﴿١٧٤﴾ إنما ذلكم الشيطن يخوف
أولياءه فلا تخافوهم وخافون إن كنتم مؤمنين ﴿١٧٥﴾
ولا يحزنك الذين يسارعون في الكفر إنهم لن يضروا
الله شيئا يريد الله ألا يجعل لهم حظا في الآخرة ولهم
عذاب عظيم ﴿١٧٦﴾ إن الذين اشتروا الكفر بالإيمان لن
يضروا الله شيئا ولهم عذاب أليم ﴿١٧٧﴾ ولا يحسبن الذين
كفروا أنما نملي لهم خير لأنفسهم إنما نملي لهم ليزدادوا
إثما ولهم عذاب مهين ﴿١٧٨﴾ ما كان الله ليذر المؤمنين
على ما أنتم عليه حتى يميز الخبيث من الطيب وما كان
الله ليطلعكم على الغيب ولكن الله يجتبي من رسله
من يشاء فآمنوا بالله ورسله وإن تؤمنوا وتتقوا فلكم
أجر عظيم ﴿١٧٩﴾ ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله
من فضله هو خيرا لهم بل هو شر لهم سيطوقون

तुम्हारे लिए सामान जमा किया है सो तुमको उनसे अन्देशा करना चाहिए, सो उसने उनके ईमान को और ज़्यादा कर दिया और (उन्होंने) कह दिया कि हमको अल्लाह तआ़ला काफ़ी है और वही सब काम सुपुर्द करने के लिए अच्छा है। **(173)** पस ये लोग ख़ुदा की नेमत और फ़ज़्ल से भरे हुए वापस आए कि उनको कोई नागवारी ज़रा भी पेश नहीं आई, और वे लोग अल्लाह की रिज़ा के ताबे रहे, और अल्लाह तआ़ला बड़ा फ़ज़्ल वाला है। **(174)** इससे ज़्यादा कोई बात नहीं कि यह शैतान है कि अपने दोस्तों से डराता है, सो तुम उनसे मत डरना और मुझ ही से डरना अगर तुम ईमान वाले हो।[1] **(175)** और आपके लिए वे लोग ग़म का सबब न होने चाहिएँ जो जल्दी से कुफ़्र में जा पड़ते हैं, यक़ीनन वे लोग अल्लाह तआ़ला को ज़र्रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। अल्लाह तआ़ला को यह मन्ज़ूर है कि आख़िरत में उनको बिलकुल हिस्सा न दे, और उन लोगों को बड़ी सज़ा होगी। **(176)** यक़ीनन जितने लोगों ने ईमान की जगह कुफ़्र को इख़्तियार कर रखा है, ये लोग अल्लाह तआ़ला को ज़र्रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते और उनको दर्दनाक सज़ा होगी। **(177)** और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं वे यह ख़्याल हरगिज़ न करें कि हमारा उनको मोहलत देना उनके लिए बेहतर है, हम उनको सिर्फ़ इसलिए मोहलत दे रहे हैं ताकि जुर्म में उनको और तरक़्क़ी हो जाए और उनको तौहीन भरी सज़ा होगी।[2] **(178)** अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को इस हालत में नहीं रखना चाहते जिसपर तुम अब हो जब तक कि नापाक को पाक से अलग न फ़रमा दें। और अल्लाह तआ़ला ऐसे ग़ैबी उमूर की तुमको इत्तिला नहीं करते वे लेकिन हाँ जिसको ख़ुद चाहें, और वे अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर हैं उनको चुन लेते हैं, पस अब अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान ले आओ,[3] और अगर तुम ईमान ले आओ और परहेज़ रखो तो फिर तुमको बड़ा अज्र मिले। **(179)** और हरगिज़ ख़्याल न करें ऐसे लोग जो ऐसी चीज़ में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह तआ़ला ने उनको अपने फ़ज़्ल से दी है कि यह बात कुछ उनके लिए अच्छी

(पृष्ठ 130 का शेष) लेकिन बाज़ राह चलते लोगों से कह गए कि किसी तदबीर से मुसलमानों के दिलों में हमारा रोब जमा दिया जाए। नबी करीम को वह्य से यह बात मालूम हो गई और आप उनका पीछा करते हुए मक़ाम हमराउल-असद तक पहुँचे। हमराउल-असद मदीने से आठ मील के फ़ासले पर है। वहाँ आपने तीन दिन क़ियाम फ़रमाया। उस मक़ाम पर ताजिरों का एक क़ाफ़िला गुज़रा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे तिजारत का माल ख़रीदा, अल्लाह तआ़ला ने उसमें नफ़ा दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वह नफ़ा साथ में मौजूद मुसलमानों को तक़सीम फ़रमा दिया। आगे आने वाली आयतों में इस क़िस्से की तरफ़ इशारा है।

1. ऊपर मुनाफ़िक़ों की बेवफ़ाई और बुरा चाहने का ज़िक्र था। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुबारक दिल पर उनकी इन हरकतों का रंज हुआ होगा, हक़ तआ़ला आने वाली आयत में आपको तसल्ली देते हैं और उसके साथ ज़िम्न व तहत में तमाम कुफ़्फ़ार के मामले के मुताल्लिक़ चाहे कोई हो आपकी तसल्ली फ़रमाते हैं ताकि आपके दिल पर अब या आइन्दा उनकी और दूसरों की तरफ़ से कभी ज़िद ग़ालिब न हो।

2. इस आयत से कोई यह शुब्हा न करे कि जब अल्लाह तआ़ला ने इसी लिए मोहलत दी है कि और ज़्यादा जुर्म करें तो फिर ज़्यादा जुर्म करने से अज़ाब क्यों होगा? असल सबब छूट देने का सज़ा की ज़्यादती है, लेकिन इस सबब के सबब यानी गुनाह के ज़्यादा करने को जो बन्दे के इख़्तियार से है कलाम में हुस्न पैदा करने के लिए सबब के क़ायम-मक़ाम कर दिया गया।

3. यह जो फ़रमाया कि सब रसूलों पर ईमान लाओ, हालाँकि यह मक़ाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान लाने के ज़िक्र को चाहता है। वजह इसकी यह है कि आप पर भी ईमान जब ही साबित होगा जब सबको माने, क्योंकि एक को झुठलाना सबको झुठलाना है।

तअ्मलू-न ख़बीर **(180)** ❖

ल-क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह फ़क़ीरुंव्-व नह्नु अग़्निया-उ ✣ सनक्तुबु मा क़ालू व क़त्लहुमुल्-अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व नक़ूलु ज़ूक़ू अ़ज़ाबल् हरीक़ **(181)** ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल् लिल्-अ़बीद **(182)** अल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह अ़हि-द इलैना अल्ला नुअ्मि-न लि-रसूलिन् हत्ता यअ्ति-यना बिक़ुर्बानिन् तअ्कुलुहुन्नारु, क़ुल् क़द् जा-अकुम् रुसुलुम् मिन् क़ब्ली बिल्-बय्यिनाति व बिल्लज़ी क़ुल्तुम् फ़लि-म क़तल्तुमूहुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(183)** फ़-इन् कज़्ज़बू-क फ़-क़द् कुज़्ज़ि-ब रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क जाऊ बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि वल्-किताबिल् मुनीर **(184)** कुल्लु नफ़्सिन् ज़ा-इ-क़तुल्मौति, व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ-न उजू-रकुम् यौमल्-क़ियामति, फ़-मन् ज़ुह्ज़ि-ह अ़निन्नारि व उद्ख़िलल्-जन्न-त फ़-क़द् फ़ा-ज़, व मल्हयातुद्-दुन्या इल्ला मताअ़ुल् ग़ुरूर **(185)** लतुब्लवुन्-न फ़ी अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम्, व ल-तस्मअ़ुन्-न मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व मिनल्लज़ी-न अश्रकू अज़न् कसीरन्, व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू फ़-इन्-न ज़ालि-क मिन् अ़ज़्मिल् उमूर **(186)** व इज़् अ-ख़ज़ल्लाहु मिसाक़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब लतु-बय्यिनुन्नहू लिन्नासि व ला तक्तुमूनहू

مَا بَخِلُوا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا
اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ
الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ ۚ
اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى
يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ
قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ
الْمَوْتِ ۗ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ
النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ
الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۗ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى
كَثِيْرًا ۗ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾
وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ

होगी, बल्कि यह बात उनके लिए बहुत ही बुरी है, वे लोग क़ियामत के दिन तौक़ पहना दिए जाएँगे उसका जिसमें उन्होंने बुख़्ल किया था, और आख़िर में आसमान व ज़मीन अल्लाह तआ़ला ही का रह जाएगा, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं।[1] **(180)** ❖

बेशक अल्लाह तआ़ला ने सुन लिया है उन लोगों का क़ौल जिन्होंने (यूँ) कहा कि अल्लाह मुफ़लिस है और हम मालदार हैं। हम उनके कहे हुए को लिख रहे हैं,[2] और उनका नबियों को नाहक़ क़त्ल करना भी, और हम कहेंगे कि चखो आग का अ़ज़ाब। **(181)** यह उन (आमाल) की वजह से है जो तुमने अपने हाथों समेटे हैं, और यह (अमूर साबित ही है) कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाले नहीं। **(182)** वे लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि अल्लाह ने हमको हुक्म फ़रमाया था कि हम किसी पैग़म्बर पर एतिक़ाद न लाएँ जब तक कि हमारे सामने (अल्लाह तआ़ला की नियाज़ व) मन्नत (का मोजिज़ा) ज़ाहिर न करे कि उसको आग खा जाए,[3] आप फ़रमा दीजिए कि यक़ीनन बहुत-से पैग़म्बर मुझसे पहले बहुत-सी दलीलें लेकर आए और (ख़ुद) यह (मोजिज़ा) भी जिसको तुम कह रहे हो, सो तुमने उनको क्यों क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो। **(183)** सो अगर ये लोग आपको झुठलाएँ तो बहुत-से पैग़म्बर जो आपसे पहले गुज़रे हैं झुठलाए जा चुके हैं[4] जो मोजिज़े लेकर आए थे और सहीफ़े और रोशन किताब लेकर।[5] **(184)** हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको तुम्हारा पूरा बदला क़ियामत के दिन ही मिलेगा, तो जो शख़्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया सो वह पूरा कामयाब हुआ। और दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ धोखे का सौदा है।[6] **(185)** अलबत्ता आगे और आज़माए जाओगे अपने मालों में और अपनी जानों में, और अलबत्ता आगे को और सुनोगे बहुत-सी बातें दिल दुखाने वाली उन लोगों से जो तुमसे पहले किताब दिए गए हैं और उन लोगों से जो कि मुश्रिक हैं।[7] और अगर सब्र करोगे और परहेज़ रखोगे तो यह ताकीदी अहकाम में से है।[8] **(186)** और जबकि अल्लाह ने किताब वालों से यह अ़हद लिया कि इस किताब को

1. इस तौक़ पहनाए जाने की कैफ़ियत हदीसे बुख़ारी में आई है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसको ख़ुदा तआ़ला माल दे और वह उसकी ज़कात अदा न करे तो उसका वह माल क़ियामत के दिन एक ज़हरीले साँप की शक्ल बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा और वह उस शख़्स की बाँछें पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ तेरा सरमाया हूँ। फिर हुज़ूरे पाक ने यह आयत पढ़ी।
2. आमाल नामे में दर्ज करा देने में यह हिक्मत है कि आ़दत यही है कि यह मुज्रिम पर ज़्यादा हुज्जत हो जाता है, वरना हक़ तआ़ला को इसकी ज़रूरत नहीं।
3. पहले बाज़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का यह मोजिज़ा हुआ है कि कोई चीज़ जानदार या ग़ैर-जानदार अल्लाह के नाम की निकाल कर किसी मैदान या पहाड़ पर रख दी, ग़ैब से एक आग ज़ाहिर हुई और उस चीज़ को जला दिया।
4. जब औरों को भी झुठलाया जा चुका है तो आपको झुठलाया जाना कोई नई बात नहीं, फिर ग़म क्या।
5. यानी बाज़े सिर्फ़ मोजिज़े लाए, बाज़े छोटी किताबें, बाज़े बड़ी किताबें, जैसे तौरात व इन्जील। चूँकि किताब से बड़ी किताब मुराद है और बड़ी किताब शान और मज़ामीन में ज़्यादा होगी इसलिए उसकी सिफ़त में 'मुनीर' बढ़ाया कि उसमें शान और मज़ामीन दोनों के एतिबार से ज़ाहिर होने के मायने ज़्यादा होंगे।
6. यह जो फ़रमाया कि धोखे का सौदा, तो इससे यह न समझा जाए कि दुनियावी ज़िन्दगी सबके लिए नुक़सानदेह है। तश्बीह देने (यानी समानता ज़ाहिर करने) से मतलब सिर्फ़ यह है कि यह असली मक़सूद बनाने के क़ाबिल नहीं।
7. आज़माने का मतलब यह है कि ऐसे हादसे तुमपर वक़्त-वक़्त पर आया करेंगे, इसको मजाज़ी तौर पर आज़माना कह दिया, वरना अल्लाह तआ़ला आज़माने के हक़ीक़ी मायने से पाक है क्योंकि वह ग़ैब का जानने वाला है।
8. सब्र करने का यह मतलब नहीं कि तदबीर न करो या इन्तिक़ाम के मौक़ों में इन्तिक़ाम न लो, या क़िताल के मौक़ों में क़िताल न करो, बल्कि हादसों में तंगदिल न हो, क्योंकि इसमें तुम्हारे लिए फ़ायदे और मस्लहतें हैं। और तक़्वा यह कि ख़िलाफ़े शरीअ़त बातों और मामलात से बचो, अगरचे तदबीर भी की जाए।

फ़-न-बज़ूहु वरा-अ ज़ुहूरिहिम् वश्तरौ बिही स-मनन् क़लीलन्, फ़-बिअ्-स मा यश्तरून **(187)** ला तह्सबन्नल्लज़ी-न यफ़्रहू-न बिमा अतव्-व युहिब्बू-न अंय्युह्मदू बिमा लम् यफ़्अ़लू फ़ला तह्सबन्नहुम् बि-मफ़ाज़तिम् मिनल्-अ़ज़ाबि व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(188)** व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(189)** ❖

इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल-आयातिल्-लिउलिल् अल्बाब **(190)** अल्लज़ी-न यज़्कुरूनल्ला-ह क़ियामंव्-व क़ुअूदंव्-व अ़ला जुनूबिहिम् व य-तफ़क्करू-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बना मा ख़लक़्-त हाज़ा बातिलन् सुब्हान-क फ़क़िना अ़ज़ाबन्नार **(191)** रब्बना इन्न-क मन् तुद्ख़िलिन्-ना-र फ़-क़द् अख़्ज़ैतहू व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार **(192)** रब्बना इन्नना समिअ़्ना मुनादियंय्युनादी लिल्ईमानि अन् आमिनू बि-रब्बिकुम् फ़-आमन्ना रब्बना फ़ग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर् अ़न्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना मअ़ल् अब्रार **(193)** रब्बना

لن تنالوا ٦٩ ال عمران ٣

وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا
قَلِيْلًا فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ
بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ
بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ فِيْ
خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ
لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۝ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّ
عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝
رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ
مِنْ اَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ
اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا
وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَ
لَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ فَاسْتَجَابَ
لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ
اُنْثٰى بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ

منزل

व आतिना मा व-अ़त्तना अ़ला रुसुलि-क व ला तुख़्ज़िना यौमल्-क़ियामति, इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल् मीआ़द **(194)** फ़स्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला उज़ीअ़ु अ़-म-ल आ़मिलिम् मिन्कुम् मिन् ज़-करिन् औ उन्सा बअ़्ज़ुकुम् मिम्-बअ़्ज़िन् फ़ल्लज़ी-न हाजरू व उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू व क़ुतिलू ल-उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम्

आ़म लोगों के रू-ब-रू ज़ाहिर कर देना और इसको मत छुपाना, सो उन लोगों ने उसको अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उसके मुक़ाबले में कम-हक़ीक़त मुआवज़ा ले लिया। सो बुरी चीज़ है जिसको वे लोग ले रहे हैं। **(187)** जो लोग ऐसे हैं कि अपने (बुरे) किर्दार पर खुश होते हैं और जो (नेक) काम नहीं किया उसपर चाहते हैं कि उनकी तारीफ़ हो सो ऐसे शख़्सों को हरगिज़-हरगिज़ मत ख़्याल करो कि वे ख़ास अन्दाज़ के अ़ज़ाब से बचाव में रहेंगे, (बल्कि) और उनको दर्दनाक सज़ा होगी।[1] **(188)** और अल्लाह ही के लिए है बादशाहत आसमानों की और ज़मीन की, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं।[2] **(189)** ❖

बेशक आसमानों के और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद एक रात और दिन के आने-जाने में दलीलें हैं अ़क़्ल वालों के लिए। **(190)** जिनकी हालत यह है कि वे लोग अल्लाह की याद करते हैं खड़े भी, बैठे भी, लेटे भी, और आसमानों और ज़मीन के पैदा होने में ग़ौर करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने इस को बेकार पैदा नहीं किया।[3] हम आपको पाक समझते हैं सो हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लीजिए। **(191)** ऐ हमारे परवर्दिगार! बेशक आप जिसको दोज़ख़ में दाख़िल करें उसको वाक़ई रुस्वा ही कर दिया, और ऐसे बेइन्साफ़ों का कोई भी साथ देने वाला नहीं। **(192)** ऐ हमारे परवर्दिगार! हमने एक पुकारने वाले को सुना कि वह ईमान लाने के वास्ते ऐलान कर रहे हैं[4] कि तुम अपने परवर्दिगार पर ईमान लाओ, सो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे परवर्दिगार! फिर हमारे गुनाहों को भी माफ़ फ़रमा दीजिए और हमारी बुराइयों को भी हमसे दूर कर दीजिए और हमको नेक लोगों के साथ मौत दीजिए। **(193)** ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको वह चीज़ भी दीजिए जिसका हमसे अपने पैग़म्बरों की मारफ़त आपने वायदा फ़रमाया है, और हमको क़ियामत के दिन रुस्वा न कीजिए,[5] यक़ीनन आप वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करते।[6] **(194)** सो उनके रब ने मन्ज़ूर कर लिया उनकी दरख़्वास्त को इस वजह से कि मैं किसी शख़्स के काम को

1. बुरा किर्दार यही कि हक़ अहकाम को छुपाते थे और जो नेक काम नहीं किया उससे मुराद हक़ का इज़हार है, जिसको वे न करते थे लेकिन दूसरों को यह यक़ीन दिलाना चाहते थे कि हम हक़ को ज़ाहिर करते हैं, ताकि उनका धोखा देना मालूम न हो। चुनाँचे जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के रू-ब-रू भी यहूद ने यह जुर्रत की।

2. पस चूँकि वह हक़ीक़ी बादशाह हैं, सबपर उनका हुक्म मानना ज़रूरी है और नाफ़रमानी जुर्म है। और चूँकि वह क़ादिर हैं इसलिए जुर्म की सज़ा दे सकते हैं। और चूँकि उन्होंने इस सज़ा की ख़बर दी है इसलिए ज़रूर सज़ा देंगे। और चूँकि ये सिफ़तें उनके साथ ख़ास हैं लिहाज़ा उनके सज़ा दिए हुए को कोई बचा नहीं सकता।

3. बल्कि इसमें हिक्मतें रखी हैं, जिनमें एक बड़ी हिक्मत यह है कि इस मख़्लूक़ से ख़ालिक़ तआ़ला के वजूद व तौहीद पर दलील पकड़ी जाए।

4. मुराद इससे मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं वास्ते से या बिला वास्ता।

5. मतलब यह है कि शुरू ही से जन्नत में दाख़िल कर दीजिए।

6. लेकिन हमको यह ख़ौफ़ है कि जिनके लिए वायदा है यानी मोमिन और नेक लोग, कहीं ऐसा न हो कि ख़ुदा न करे हम उन सिफ़ात वाले न रहें जिनपर वायदा है, इसलिए हम आपसे यह दरख़्वास्त करते हैं कि हमको अपने वायदे की चीज़ें दीजिए। यानी हमको ऐसा कर दीजिए और ऐसा ही रखिए जिससे हम वायदे के मुख़ातब व महल हो जाएँ।

सय्यिआतिहिम् व ल-उद्ख़िलन्नहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु सवाबम् मिन् अिन्दिल्लाहि, वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुस्सवाब **(195)** ला यग़ुर्रन्न-क त-क़ल्लुबुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़िल्बिलाद **(196)** मताअुन् क़लीलुन्, सुम्-म मअ्वाहुम् जहन्न-मु, व बिअ्सल् मिहाद **(197)** लाकिनिल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा नुज़ुलम् मिन् अिन्दिल्लाहि, व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुल्-लिल्-अब्रार ▲ **(198)** व इन्-न मिन् अह्लिल्-किताबि ल-मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम् ख़ाशिअी-न लिल्लाहि ला यश्तरू-न बिआयातिल्लाहि स-मनन् क़लीलन्, उलाइ-क लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम्, इन्नल्ला-ह सरीअुल् हिसाब **(199)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्बिरू व साबिरू व राबितू, वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(200)** ❖

دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
ثَوَابًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ
لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ مَتَاعٌ قَلِيلٌ
ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ لَكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا
رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
نُزُلًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ وَإِنَّ
مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ
وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا
وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ
وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَ
نِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ

4 सूरतुन्निसा-इ 92

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 16667 अक्षर, 3720 शब्द, 177 आयतें और 24 रुकूअ़ हैं।

बिास्मल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिंव्-व ख़-ल-क़

जो कि तुममें से काम करने वाला हो अकारत नहीं करता चाहे वह मर्द हो या औरत,[1] तुम आपस में एक-दूसरे के जुज़ "यानी अंग" हो, सो जिन लोगों ने वतन छोड़ा और अपने घरों से निकाले गए[2] और तकलीफ़ें दिए गए मेरी राह में और जिहाद किया और शहीद हो गए, ज़रूर उन लोगों की तमाम ख़ताएँ माफ़ कर दूँगा,[3] और ज़रूर उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बदला मिलेगा अल्लाह तआला के पास से, और अल्लाह ही के पास अच्छा बदला है।[4] **(195)** तुझको उन काफ़िरों का शहरों में चलना-फिरना मुग़ालते में न डाल दे। **(196)** कुछ दिन की बहार है,[5] फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वह बहुत ही बुरी आरामगाह है। **(197)** लेकिन जो लोग ख़ुदा से डरें उनके लिए बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे, यह मेहमानी होगी अल्लाह तआला की तरफ़ से, और जो चीज़ें ख़ुदा तआला के पास हैं वे नेक बन्दों के लिए बहुत ही बेहतर हैं। ▲ **(198)** और यक़ीनन बाज़े लोग किताब वालों में से ऐसे भी ज़रूर हैं जो अल्लाह तआला के साथ एतिक़ाद रखते हैं और इस किताब के साथ भी जो तुम्हारे पास भेजी गई, और उस किताब के साथ जो उनके पास भेजी गई, इस तौर पर कि अल्लाह तआला से डरते हैं अल्लाह तआला की आयात के मुक़ाबले में कम-हक़ीक़त मुआवज़ा नहीं लेते, ऐसे लोगों को उनका नेक बदला मिलेगा उनके परवर्दिगार के पास, इसमें शुब्हा नहीं कि अल्लाह तआला जल्द ही हिसाब कर देंगे। **(199)** ऐ ईमान वालो! ख़ुद सब्र करो और मुक़ाबले में सब्र करो और मुक़ाबले के लिए तैयार रहो। और अल्लाह तआला से डरते रहो ताकि तुम पूरे कामयाब हो।[6] **(200)** ❖

4 सूरः निसा 92

सूरः निसा मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 177 आयतें और 24 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ऐ लोगो! अपने परवर्दिगार से डरो जिसने तुमको एक जानदार से पैदा किया और उस जानदार से उसका जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से बहुत-से मर्द और औरतें फैलाईं,[7] और तुम ख़ुदा तआला से डरो जिसके नाम से एक-दूसरे से मुतालबा किया करते हो, और क़राबत "यानी रिश्तेदारी और नातेदारी" से भी डरो, यक़ीनन अल्लाह तआला तुम सबकी इत्तिला रखते हैं।[8] **(1)** और जिन बच्चों का बाप मर जाए उनके माल उन्हीं को पहुँचाते रहो,

1. दोनों के लिए एक जैसा क़ानून है।
2. यानी कुफ़्फ़ार ने वतन में परेशान किया, बेचारे घर छोड़कर परदेस को निकल खड़े हुए।
3. तमाम ख़ताएँ इसलिए कहा गया कि यहाँ हिजरत व जिहाद और शहादत की फ़ज़ीलत ज़िक्र की गई है और हदीसों से इन आमाल का पिछले तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा होना मालूम होता है।
4. ऊपर की आयत में मुसलमानों की परेशानियों का बयान और उनका नेक अन्जाम ज़िक्र किया गया था, आगे काफ़िरों की ऐश व आराम का बयान और उनका बुरा अन्जाम ज़िक्र किया गया है। ताकि मुसलमानों को अपना अन्जाम सुनकर जो तसल्ली हुई थी अपने दुश्मनों का अन्जाम सुनकर और ज़्यादा तसल्ली हो, और उनके ऐश व आराम की तरफ़ हिर्स, ग़म या गुस्से के तौर पर भी तवज्जोह न करें।
5. क्योंकि मरते ही इसका नाम व निशान भी न रहेगा।
6. क़ामूस में "मुराबतत" और "रिबात" के दो मायने लिखे हैं, एक इस्लामी हुकूमत और काफ़िर हुकूमत के दरमियान सरहद की जगह क़ियाम करना ताकि कुफ़्फ़ार से दारुल-इस्लाम यानी इस्लामी हुकूमत की हिफ़ाज़त रहे, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 140 पर)**

मिन्हा ज़ौजहा व बस्-स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव्- व निसाअन्, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसाअलू-न बिही वल्अर्हा-म, इन्नल्ला-ह का-न अ़लैकुम् रक़ीबा (1) व आतुल्-यतामा अम्वालहुम् व ला त-तबद्दलुल्ख़बी-स बित्तय्यिबि व ला तअ्कुलू अम्वालहुम् इला अम्वालिकुम्, इन्नहू का-न हूबन् कबीरा (2) व इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फ़न्किहू मा ता-ब लकुम् मिनन्निसा-इ मस्ना व सुला-स व रुबा-अ़ फ़-इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तअ़्दिलू फ़वाहि-दतन् औ मा म-लकत् ऐमानुकुम्, ज़ालि-क अद्ना अल्ला तअ़ूलू (3) व आतुन्-निसा-अ सदुक़ातिहिन्-न निह़्ल-तन्, फ़-इन् तिब्-न लकुम् अ़न् शैइम् मिन्हु नफ़्सन् फ़कुलूहु हनीअम्-मरीआ (4) व ला तुअ्तुस्सु-फ़हा-अ अम्वालकुमुल्लती ज-अ़लल्लाहु लकुम् क़ियामंव्-वर्ज़ुक़ूहुम् फ़ीहा वक्सूहुम् व क़ूलू लहुम् क़ौलम् मअ़्रूफ़ा (5) वब्तलुल्-यतामा हत्ता इज़ा ब-लग़ुन्निका-ह फ़-इन् आनस्तुम् मिन्हुम् रुश्दन् फ़द्फ़अ़ू इलैहिम् अम्वालहुम् व ला तअ्कुलूहा इस्राफ़ंव्-व बिदारन् अंय्यक्बरू, व मन् का-न ग़निय्यन् फ़ल्यस्तअ़्फ़िफ़् व मन् का-न फ़क़ीरन् फ़ल्यअ्कुल् बिल्मअ़्रूफ़ि, फ़-इज़ा द-फ़अ़्तुम् इलैहिम् अम्वालहुम् फ़-अश्हिदू अ़लैहिम्, व कफ़ा बिल्लाहि हसीबा (6) लिर्रिजालि नसीबुम्-मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबू-न व लिन्निसा-इ नसीबुम्-मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबू-न मिम्मा क़ल्-ल मिन्हु औ कसु-र, नसीबम् मफ़्रूज़ा (7) व इज़ा ह-ज़रल् क़िस्म-त उलुल्क़ुर्बा वल्-यतामा वल्मसाकीनु फ़र्ज़ुक़ूहुम् मिन्हु व क़ूलू लहुम् क़ौलम्

كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَتَبَدَّلُوا
الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ
حُوبًا كَبِيرًا ۝ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانْكِحُوا
مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ
أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا
تَعُولُوا ۝ وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ
عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَرِيئًا ۝ وَلَا تُؤْتُوا
السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ
فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا
إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ
وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا
عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ
الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ
وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ۝ وَإِذَا

और तुम अच्छी चीज़ से बुरी चीज़ को मत बदलो, और उनके माल मत खाओ अपने मालों (के रहने) तक, ऐसी कार्यवाही करना बड़ा गुनाह है। **(2)** और अगर तुमको इस बात का अन्देशा हो कि तुम यतीम लड़कियों के बारे में इन्साफ़ न कर सकोगे तो और औरतों से जो तुमको पसन्द हों निकाह कर लो, दो-दो औरतों से और तीन-तीन औरतों से और चार-चार औरतों से,[1] पस अगर तुमको इसका अन्देशा हो कि अ़द्ल "यानी इन्साफ़ और बराबरी" न रखोगे तो फिर एक ही बीवी पर बस करो, या जो बाँदी तुम्हारी मिल्क में हो वही सही, इस ज़िक्र हुए मामले में ज़्यादती न होने की ज़्यादा उम्मीद है।[2] **(3)** और तुम लोग बीवियों को उनके महर खुशदिली से दे दिया करो। हाँ, अगर वे बीवियाँ खुशदिली से छोड़ दें तुमको उस महर में का कोई हिस्सा तो तुम उसको खाओ मज़ेदार और खुश्गवार समझ कर। **(4)** और तुम कम-अ़क्लों को अपने वे माल मत दो जिनको अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए ज़िन्दगी का सरमाया बनाया है, और उन मालों में से उनको खिलाते रहो पहनाते रहो और उनसे माकूल बात कहते रहो।[3] **(5)** और तुम यतीमों को आज़मा लिया करो यहाँ तक कि जब वे निकाह को पहुँच जाएँ,[4] फिर अगर उनमें किसी क़द्र तमीज़ देखो[5] तो उनके माल उनके हवाले कर दो,[6] और उन मालों को ज़रूरत से ज़ायद ख़र्च करके और इस ख़्याल से कि ये बालिग़ हो जाएँगे जल्दी-जल्दी उड़ाकर मत खा डालो, और जो शख़्स ज़रूरतमन्द न हो सो वह तो अपने को बिलकुल बचाए, और जो शख़्स ज़रूरतमन्द हो तो वह मुनासिब मिक़्दार "यानी मात्रा" से खा ले, फिर जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो उनपर गवाह भी कर लिया करो, और अल्लाह तआ़ला ही हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।[7] **(6)** मर्दों के लिए भी हिस्सा है उस चीज़ में से जिसको माँ-बाप और बहुत नज़दीक के रिश्तेदार छोड़ जाएँ और औरतों के लिए भी हिस्सा है उस चीज़ में से जिसको माँ-बाप और बहुत नज़दीक के रिश्तेदार छोड़ जाएँ, चाहे वह चीज़ थोड़ी हो या ज़्यादा हो, क़तई हिस्सा।[8] **(7)** और जब (वारिसों में तरके के) तक़सीम होने के

(पृष्ठ 138 का शेष) मैंने यही मायने लिए हैं। दूसरे मायने मुतलक़ अहकाम की पाबन्दी करना। बैज़ावी ने यह मायने भी लिए हैं। और हदीस में नमाज़ के बाद अगली नमाज़ के इन्तिज़ार को "रिबात" फ़रमाया है, इसमें दोनों मायनों की गुंजाइश है। या तो पहले मायने के एतिबार से तश्बीह (उस जैसा होने) के तौर पर इसको "रिबात" फ़रमा दिया कि यह भी नफ़्स व शैतान के मुक़ाबले में तैयार और चौकन्ना रहना है, या दूसरे मायने के एतिबार से हक़ीक़त ही के तौर पर फ़रमा दिया है कि यह इन्तिज़ार खुद पहचान है पाबन्दी और हमेशा करने की, जैसा कि ज़ाहिर है। और अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं।

7. इस आयत में पैदाइश की तीन सूरतों का बयान है। एक तो जानदार का बेजान से पैदा करना, क्योंकि आदम अ़लैहिस्सलाम मिट्टी से पैदा हुए। दूसरे जानदार का जानदार से पैदाइश के आ़म जाने-पहचाने तरीक़े के ख़िलाफ़ पैदा होना, क्योंकि हज़रत हव्वा हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पस्ली से पैदा हुई हैं। और तीसरे जानदार का जानदार से पैदाइश के आ़म और जाने-पहचाने तरीक़े से पैदा होना, जैसे और आदमी आदम और हव्वा से इस वक़्त तक पैदा होते आ रहे हैं। और अपने आपमें अ़जीब होने में और क़ुदरत के सामने अ़जीब न होने में तीनों सूरतें बराबर हैं।

8. ऊपर तक़्वे का हुक्म था और उसके तहत इनसानी और रिश्ते के हुक़ूक़ की रियायत का इर्शाद था, आगे उस तक़्वे के मौक़ों का जो कि ज़िक्र किए हुए हुक़ूक़ हैं, तफ़सील से ज़िक्र फ़रमाते हैं।

1. 'दो-दो, तीन-तीन और चार-चार' अ़रबी ज़बान के क़ायदे के मुताबिक़ यहाँ यह हुक्म मुक़ैयद करने के लिए है, मुतलक़ और आ़म नहीं। इसलिए अगर क़ैद ख़त्म हो गई जैसे चार से ज़्यादा हों तो वहाँ यह गुंजाइश और मुबाह होना बाक़ी न रहेगा।

2. अगर इन्साफ़ और बराबरी न हो सकने का ग़ालिब गुमान हो तो कई औरतों से निकाह करना इस मायने में ममनू (यानी वर्जित) है कि यह शख़्स गुनाहगार होगा, न कि इस मायने में कि निकाह सही न होगा। निकाह यक़ीनन हो जाएगा।

3. यानी उनकी तसल्ली करते रहो कि माल तुम्हारा ही है। तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही की वजह से अभी तुम्हारे हाथ में नहीं दिया, ज़रा समझदार हो जाओगे तो तुम ही को दे दिया जाएगा।

4. यानी बालिग़ हो जाएँ। क्योंकि निकाह की पूरी क़ाबलियत बालिग़ होने से होती है।

5. यानी माल की हिफ़ाज़त व मस्लहतों की रियायत का सलीक़ा और इन्तिज़ाम उनमें पाओ। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 142 पर)**

मअ्रूफ़ा **(8)** वल्यख़्शल्लज़ी-न लौ त-रकू मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्यतन् ज़िआफ़न् ख़ाफ़ू अ़लैहिम् फ़ल्यत्तक़ुल्ला-ह वल्-यक़ूलू क़ौलन् सदीदा **(9)** इन्नल्लज़ी-न यअ्कुलू-न अम्वालल्-यतामा ज़ुल्मन् इन्नमा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम् नारन्, व स-यस्लौ-न सअ़ीरा **(10)** ❖

यूसीकुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम्, लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल्-उन्सयैनि फ़-इन् कुन्-न निसाअन् फ़ौक़स्-नतैनि फ़-लहुन्-न सुलुसा मा त-र-क व इन् कानत् वाहि-दतन् फ़-लहन्निस्फ़ु, व लि-अ-बवैहि लिकुल्लि वाहिदिम्-मिन्हुमस्सुदुसु मिम्मा त-र-क इन् का-न लहू व-लदुन् फ़-इल्लम् यकुल्लहू व-लदुंव्-व वरि-सहू अ-बवाहु फ़-लिउम्मिहिस्सुलुसु फ़-इन् का-न लहू इख़्वतुन् फ़-लिउम्मिहिस्सुदुसु मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्-यूसी बिहा औ दैनिन्, आबाउकुम् व अब्नाउकुम् ला तद्रू-न अय्युहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़्अ़न्, फ़री-ज़तम् मिनल्लाहि, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा **(11)** व लकुम् निस्फ़ु मा त-र-क अज़्वाजुकुम् इल्लम् युकुल्लहुन्-न व-लदुन् फ़-इन् का-न लहुन्-न व-लदुन् फ़-लकुमुर्रुबुअ़ु मिम्मा तरक्-न मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्यूसी-न बिहा औ दैनिन्, व लहुन्नर्रुबुअ़ु मिम्मा तरक्तुम् इल्लम् यकुल्लकुम् व-लदुन् फ़-इन् का-न लकुम् व-लदुन् फ़-लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा तरक्तुम् मिम्-बअ्दि वसिय्यतिन् तूसू-न बिहा औ दैनिन्, व इन् का-न रजुलुंय्यू-रसु कलाल-तन् अविम्र-अतुंव्-व लहू अख़ुन् औ उख़्तुन् फ़-लिकुल्लि

حضر القسمة أولوا القربى واليتمى والمسكين فارزقوهم
منه وقولوا لهم قولا معروفا ۝ وليخش الذين لو تركوا
من خلفهم ذرية ضعفا خافوا عليهم فليتقوا الله
وليقولوا قولا سديدا ۝ إن الذين يأكلون أموال اليتمى
ظلما إنما يأكلون في بطونهم نارا وسيصلون سعيرا ۝
يوصيكم الله في أولادكم للذكر مثل حظ الأنثيين
فإن كن نساء فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك وإن
كانت واحدة فلها النصف ولأبويه لكل واحد منهما
السدس مما ترك إن كان له ولد فإن لم يكن له ولد
وورثه أبواه فلأمه الثلث فإن كان له إخوة فلأمه
السدس من بعد وصية يوصي بها أو دين آباؤكم و
أبناؤكم لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا فريضة من
الله إن الله كان عليما حكيما ۝ ولكم نصف ما ترك
أزواجكم إن لم يكن لهن ولد فإن كان لهن ولد فلكم
الربع مما تركن من بعد وصية يوصين بها أو دين
ولهن الربع مما تركتم إن لم يكن لكم ولد فإن كان

वक़्त (दूर के) रिश्तेदार आ मौजूद हों और यतीम और ग़रीब लोग, तो उनको भी उस (तरके) में से (जिस क़द्र बालिग़ों का है) कुछ दे दो और उनके साथ अच्छे अन्दाज़ से बात करो।[1] **(8)** और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर अपने बाद छोटे-छोटे बच्चे छोड़ जाएँ तो उनकी उनको फ़िक्र हो, सो उन लोगों को चाहिए कि अल्लाह से डरें और मौक़े की बात कहें। **(9)** बेशक जो लोग यतीमों का माल बिना हक़दार होते हुए खाते (बरतते) हैं, और कुछ नहीं अपने पेट में आग भर रहे हैं। और जल्द ही जलती हुई आग में दाख़िल होंगे।[2] **(10)** ❖

अल्लाह तआला तुमको हुक्म देता है तुम्हारी औलाद के बारे में। लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर, और अगर सिर्फ़ लड़कियाँ ही हों अगरचे दो से ज़्यादा हों तो उन लड़कियों को दो तिहाई मिलेगा उस माल का जो कि मूरिस छोड़कर मरा है, और अगर एक ही लड़की हो तो उसको आधा मिलेगा।[3] और माँ-बाप के लिए यानी दोनों में से हर एक के लिए मय्यित के तरके "यानी छोड़े हुए माल व जायदाद" में से छठा हिस्सा है अगर मय्यित के कुछ औलाद हो, और अगर उस मय्यित के कुछ औलाद न हो और उसके माँ-बाप ही उसके वारिस हों तो उसकी माँ का एक तिहाई है, अगर मय्यित के एक से ज़्यादा भाई या बहन हों तो उसकी माँ को छठा हिस्सा मिलेगा (और बाक़ी बाप को मिलेगा) वसीयत निकाल लेने के बाद कि मय्यित उसकी वसीयत कर जाए या क़र्ज़ के बाद,[4] तुम्हारे उसूल व फ़ुरू "यानी बाप-दादा और औलाद व औलाद की औलाद" जो हैं तुम पूरे तौर पर यह नहीं जान सकते हो कि उनमें का कौन-सा शख़्स तुमको नफ़ा पहुँचाने में ज़्यादा नज़दीक है। यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर कर दिया गया, यक़ीनन अल्लाह तआला बड़े इल्म और हिक्मत वाले हैं।[5] **(11)** और तुमको आधा मिलेगा उस तरके का जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़ जाएँ अगर उनके कुछ औलाद न हो। और अगर उनके कुछ औलाद हो तो

(पृष्ठ 140 का शेष) **6.** तमीज़ न होने को "सफ़ह" (यानी कम-अक़्ली) कहते हैं जो माल सुपुर्द करने के लिए रुकावट है, चाहे सलीक़ा न हो चाहे सलीक़ा हो मगर उस सलीक़े से काम न लेता हो। यानी इन्तिज़ाम न करता हो बल्कि माल को उड़ाता हो, दोनों सूरतों में माल अभी न दिया जाएगा।

7. यतीम के हाजतमन्द कारकुन को अपनी लाज़िमी ज़रूरत के मुताबिक़ ख़र्च करना अपनी ख़िदमत करने के हक़ के तौर पर लेना जायज़ है।

8. यहाँ सिर्फ़ मीरास के हिस्सों के हक़दार होने को मुख़्तसर तौर पर बताया है, थोड़ा आगे चलकर वारिसों के हिस्सों की तफ़सील आती है। और नज़दीक के रिश्ते से मतलब यह है कि शरीअ़त में जो तरतीब वारिसों में मुक़र्रर और साबित है उस तरतीब में नज़दीक हो, और ज़ाहिर है कि नज़दीकी दोनों जानिब से होती है। पस इससे लाज़िम आ गया कि जो रिश्तेदार ज़्यादा क़रीब होगा वह मीरास पाएगा।

1. यह हुक्म वाजिब नहीं मुस्तहब (यानी पसन्दीदा) है। और अगर शुरू में वाजिब हुआ हो तो इसका वाजिब होना मन्सूख़ है।

2. जिस तरह यतीम का माल खुद खाना हराम है इसी तरह किसी को खिलाना या देना अगरचे बतौर ख़ैर-ख़ैरात ही के क्यों न हो, यह भी हराम है। और हर नाबालिग़ का हुक्म यही है चाहे वह यतीम न हो।

3. हदीस और अहले-हक़ के इज्मा से इस आयत का हुक्म अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के लिए नहीं। इसी वास्ते हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने 'फ़िदक' (एक गाँव का नाम है जहाँ जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का सरकारी बाग़ था जो आपके ख़लीफ़ाओं को मुन्तक़िल हो गया) वग़ैरह को मीरास में तक़सीम नहीं फ़रमाया।

4. इन दोनों (वसीयत और क़र्ज़) से पहले कफ़न-दफ़न ज़रूरी है। और वसीयत से मुराद वह है जो शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो। जैसे वारिस को वसीयत में कुछ न दे और कफ़न-दफ़न के ख़र्च और क़र्ज़ की अदायगी के बाद जो माल बचे उसके एक तिहाई से ज़ायद की वसीयत न करे वरना वह वसीयत मीरास से मुक़द्दम न होगी। और जानना चाहिए कि क़र्ज़ और वसीयत में क़र्ज़ मुक़द्दम (पहले) है।

5. मीरास का मामला मय्यित की राय पर नहीं रखा गया, बल्कि खुद हक़ तआला ने सब क़ायदे मुक़र्रर फ़रमा दिए।

वाहिदिम् मिन्हुमस्सुदुसु फ़-इन् कानू अक्स-र मिन् ज़ालि-क फ़हुम् शु-रका-उ फ़िस्सुलुसि मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्यूसा बिहा औ दैनिन् ग़ै-र मुज़ार्रिन् वसिय्यतम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़लीमुन् हलीम (12) तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम (13) व मंय्यअ़्सिल्ला-ह व रसूलहू व य-तअ़द्-द हुदू-दहू युद्ख़िल्हु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा व लहू अ़ज़ाबुम् मुहीन (14) ❖

वल्लाती यअ्तीनल्-फ़ाहि-श-त मिन्निसा-इकुम् फ़स्तश्हिदू अ़लैहिन्-न अर्ब-अ़तम् मिन्कुम् फ़-इन् शहिदू फ़-अम्सिकूहुन्-न फ़िल्बुयूति हत्ता य-तवफ़्फ़ाहुन्नल्मौतु औ यज्अ़लल्लाहु लहुन्-न सबीला (15) वल्लज़ानि यअ्तियानिहा मिन्कुम् फ़-आज़ूहुमा फ़-इन् ताबा व अस्लहा फ़-अअ्रिज़ू अ़न्हुमा, इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबर्रहीमा (16) इन्नमत्तौबतु अ़लल्लाहि लिल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सू-अ बि-जहालतिन् सुम्-म यतूबू-न मिन् क़रीबिन् फ़-उलाइ-क यतूबुल्लाहु अ़लैहिम्, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (17) व लैसतित्तौबतु लिल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सय्यिआति हत्ता इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दहुमुल्मौतु क़ा-ल इन्नी तुब्तुल्-आ-न व लल्लज़ी-न यमूतू-न व हुम् कुफ़्फ़ारुन्, उलाइ-क अअ्तद्ना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (18) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला यहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निसा-अ

لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ
امْرَأَةٌ وَّلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِنْ
كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُوصٰى بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَارٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ
وَاللّٰهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿١٢﴾ تِلْكَ حُدُودُ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ۗ وَ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ
حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا ۖ وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٤﴾
وَالّٰتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ
أَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتّٰى
يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٥﴾ وَالَّذَانِ يَأْتِيٰنِهَا
مِنْكُمْ فَآذُوهُمَا ۚ فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۗ إِنَّ اللّٰهَ
كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿١٦﴾ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولٰئِكَ يَتُوبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ

तुमको उनके तरके से एक चौथाई मिलेगा वसीयत निकालने के बाद कि वे उसकी वसीयत कर जाएँ या क़र्ज़ के बाद। और उन बीवियों को चौथाई मिलेगा उस तरके का जिसको तुम छोड़ जाओ अगर तुम्हारे कुछ औलाद न हो, और अगर तुम्हारे कुछ औलाद हो तो उनको तुम्हारे तरके से आठवाँ हिस्सा मिलेगा वसीयत निकालने के बाद कि तुम उसकी वसीयत कर जाओ या क़र्ज़ के बाद। और अगर कोई मय्यित जिसकी मीरास दूसरों को मिलेगी, चाहे वह मय्यित मर्द हो या औरत, ऐसी हो जिसके न उसूल हों न फ़ुरू, "यानी न बाप-दादा की जानिब से कोई हो और न औलाद की जानिब से कोई हो" और उसके एक भाई या एक बहन हो तो उन दोनों में से हर एक को छठा हिस्सा मिलेगा। फिर अगर ये लोग इससे ज़्यादा हों तो वे सब तिहाई में शरीक होंगे वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत कर दी जाए या क़र्ज़ के बाद, शर्त यह है कि किसी को नुक़सान न पहुँचाए, यह हुक्म किया गया है ख़ुदा तआला की तरफ़ से। और अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाले हैं, हलीम हैं।[1] **(12)** ये सब अहकाम जो ज़िक्र हुए ख़ुदावन्दी ज़ाबते हैं, और जो शख़्स अल्लाह और रसूल की पूरी इताअत करेगा अल्लाह तआला उसको ऐसी जन्नतों में दाख़िल कर देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, हमेशा-हमेशा उनमें रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। **(13)** और जो शख़्स अल्लाह तआला और रसूल का कहना न मानेगा और बिलकुल ही उसके ज़ाबतों से मिकल जाएगा उसको आग में दाख़िल कर देंगे, इस तरह से कि वह उसमें हमेशा-हमेशा रहेगा और उसको ऐसी सज़ा होगी जिसमें ज़िल्लत भी है।[2] **(14)** ❖

और जो औरतें बेहयाई का काम करें तुम्हारी बीवियों में से सो तुम लोग उन औरतों पर चार आदमी अपनों में से गवाह कर लो, सो अगर वे गवाही दे दें तो तुम उनको घरों के अन्दर रोक कर रखो यहाँ तक कि मौत उनका ख़ात्मा कर दे या अल्लाह तआला उनके लिए कोई और राह तजवीज़ फ़रमा दें।[3] **(15)** और जो दो शख़्स भी बेहयाई का काम करें तुममें से तो उन दोनों को तकलीफ़ पहुँचाओ, फिर अगर वे दोनों तौबा कर लें और इस्लाह कर लें तो उन दोनों से कुछ तअर्रुज़ "यानी रोक-टोक" न करो, बिला शुब्हा अल्लाह तआला तौबा क़बूल करने वाले हैं, रहमत करने वाले हैं।[4] **(16)** तौबा जिसका क़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है वह तो उन्ही की है जो हिमाक़त से कोई गुनाह कर बैठते हैं,[5] फिर क़रीब ही वक़्त में तौबा कर लेते हैं, सो ऐसों पर तो ख़ुदा तआला तवज्जोह फ़रमाते हैं, और अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाले हैं, हिक्मत वाले हैं। **(17)** और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो गुनाह करते

---

1. अहकाम को बयान करके आगे उनके एतिक़ादी और अमली तौर पर मानने की ताकीद और न मानने पर वईद इर्शाद फ़रमाते हैं।

2. जाहिलियत में जैसे यतीमों और मीरास पाने वालों के मामले में बहुत-सी बेइन्तिज़ामियाँ थीं जिनकी इस्लाह ऊपर की आयतों में ज़िक्र हुई। इसी तरह औरतों के मामले में भी तरह-तरह की बुरी और ख़राब रस्में और बेउन्वानियाँ फैली हुई थीं, आगे 'अर्रिजालु क़व्वामू-न' तक उन मामलात की इस्लाह फ़रमाते हैं, और जो ख़ता व क़ुसूर शरई तौर पर मोतबर हो उसपर तंबीह की इजाज़त देते हैं।

3. वह दूसरा हुक्म बाद में नाज़िल हुआ जिसको जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह ने वह सबील इर्शाद फ़रमा दी है। तुम लोग समझ लो, याद कर लो कि ग़ैर-शादीशुदा के लिये सौ दुर्रे और शादीशुदा के लिये संगसारी (यानी पत्थर मार-मारकर हलाक कर देना) है। (जैसा कि हदीस की मोतबर किताबों में है) पस इस आयत का हुक्म मन्सूख़ है।

4. 'जो दो शख़्स भी' इसमें शादीशुदा और ग़ैर-शादीशुदा औरत, और निकाह वाला और बेनिकाह वाला मर्द सब आ गए। पस चारों का हुक्म बयान हो गया।

5. 'हिमाक़त' की क़ैद वाक़ई है शर्त के तौर पर नहीं, क्योंकि हमेशा गुनाह हिमाक़त ही से होता है।

करहन्, व ला तअ्ज़ुलूहुन्-न लि-तज़्हबू बि-बअ्ज़ि मा आतैतुमूहुन्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यिनतिन् व आशिरूहुन्-न बिल्- मअ्रूफ़ि फ़-इन् करिह्तुमूहुन्-न फ़-असा अन् तक्रहू शैअंव्-व यज्अ़लल्लाहु फ़ीहि ख़ैरन् कसीरा **(19)** व इन् अरत्तुमुस्तिब्दा-ल ज़ौजिम् मका-न ज़ौजिंव्-व आतैतुम् इह्दाहुन्-न क़िन्तारन् फ़ला तअ्ख़ुज़ू मिन्हु शैअन्, अ-तअ्ख़ुज़ूनहू बुह्तानंव्-व इस्मम् मुबीना **(20)** व कै-फ़ तअ्ख़ुज़ूनहू व क़द् अफ़्ज़ा बअ्ज़ुकुम् इला बअ्ज़िंव्-व अख़ज़्-न मिन्कुम् मिसाक़न् ग़लीज़ा **(21)** व ला तन्किहू मा न-क-ह आबाउकुम् मिनन्निसा-इ इल्ला मा क़द् स-ल-फ़, इन्नहू का-न फ़ाहि-शतंव्-व मक़्तन्, व सा-अ सबीला **(22)** ❖

हुर्रिमत् अ़लैकुम् उम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अ-ख़वातुकुम् व अ़म्मातुकुम् व ख़ालातुकुम् व बनातुल्-अख़ि व बनातुल्-उख़्ति व उम्महातु-कुमुल्लाती अर्ज़अ्नकुम् व अ-ख़वातुकुम् मिनर्रज़ा-अ़ति व उम्महातु निसा-इकुम् व रबा-इबुकुमुल्लाती फ़ी हुजूरिकुम् मिन्निसा-इकुमुल्लाती दख़ल्तुम् बिहिन्-न फ़-इल्लम् तकूनू दख़ल्तुम् बिहिन्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् व हला-इलु अब्ना-इकुमुल्लज़ी-न मिन् अस्लाबिकुम् व अन् तज्मअ़ू बैनल्-उख़्तैनि इल्ला मा क़द् स-ल-फ़, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा **(23)**

حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّىْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ
يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ
لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ
وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا
وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿١٩﴾ وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ
زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ
بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾ وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى
بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ
مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ
سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ
وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِىْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ
الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِىْ فِىْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ
الّٰتِىْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ؗ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ؗ
وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ
الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾

रहते हैं यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के सामने मौत ही आ खड़ी हुई[1] तो कहने लगा कि मैं अब तौबा करता हूँ, और न उन लोगों की जिनको कुफ़्र की हालत पर मौत आ जाती है। उन लोगों के लिए हमने एक दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। **(18)** ऐ ईमान वालो! तुमको यह बात हलाल नहीं कि औरतों के (माल या जान के) जबूरन मालिक हो जाओ[2] और उन औरतों को इस ग़रज़ से मुक़ैयद मत करो कि जो कुछ तुम लोगों ने उनको दिया है उसमें का कोई हिस्सा वसूल कर लो, मगर यह कि वे औरतें कोई खुली नामुनासिब और ग़लत हरकत करें। और उन औरतों के साथ ख़ूबी के साथ गुज़रान किया करो। और अगर वे तुमको नापसन्द हों तो मुम्किन है कि तुम एक चीज़ को नापसन्द करो और अल्लाह तआ़ला उसके अन्दर कोई बड़ी ख़ैर रख दे। **(19)** और अगर तुम बजाय एक बीवी के दूसरी बीवी करना चाहो और तुम उस एक को ढेर का ढेर माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ भी मत लो।[3] क्या तुम उसको लेते हो बोहतान रखकर और खुले गुनाह के करने वाले होकर। **(20)** और तुम उसको कैसे लेते हो हालाँकि तुम आपस में एक-दूसरे से बेहिजाबी के साथ मिल चुके हो, और वे औरतें तुमसे एक गाढ़ा इक़रार ले चुकी हैं। **(21)** और तुम उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे बाप (दादा या नाना) ने निकाह किया हो, मगर जो बात गुज़र गई गुज़र गई। बेशक यह (अ़क्ल के एतिबार से भी) बड़ी बेहयाई है और बहुत ही नफ़रत की बात है, और (शरअ़न भी) बुरा तरीक़ा है।[4] **(22)** ❖

तुमपर हराम की गई हैं तुम्हारी माएँ और तुम्हारी बेटियाँ[5] और तुम्हारी बहनें[6] और तुम्हारी फूफियाँ[7] और तुम्हारी ख़ालाएँ[8] और भतीजियाँ और भान्जियाँ[9] और तुम्हारी वे माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया है और तुम्हारी वे बहनें जो दूध पीने की वजह से हैं,[10] और तुम्हारी बीवियों की माएँ[11] और तुम्हारी बीवियों की बेटियाँ[12] जो कि तुम्हारी परवरिश में रहती हैं, उन बीवियों से कि जिनके साथ तुमने सोहबत की हो।[13] और अगर तुमने उन बीवियों से सोहबत न की हो तो तुमको कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे उन बेटों की बीवियाँ जो कि तुम्हारी नस्ल से हों,[14] और यह कि तुम दो बहनों को एक साथ रखो, लेकिन जो पहले हो चुका। बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े बख़्शने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। **(23)**

---

1. मौत के हाज़िर होने का मतलब यह है कि उसे दूसरी दुनिया की चीज़ें नज़र आने लगें।

2. माल का मालिक होना तीन तरह से है। एक यह कि उस औरत का जो हक़ शरई मीरास में है उसको खुद ले लिया जाए, उसको न दिया जाए। दूसरे यह कि उसको निकाह न करने दिया जाए, यहाँ तक कि वह यहीं पर मर जाए, फिर उसका माल ले लें या वह मजबूरन खुद कुछ दे दे। तीसरे यह कि शौहर उसको मजबूर करे कि वह उसको कुछ माल दे तब यह उसको छोड़े। और जान का मालिक होना यह था कि मुर्दे की औरत को मुर्दे के माल की तरह अपनी मीरास समझते थे, इस सूरत में जबर की क़ैद वाक़ई है कि वे ऐसा करते थे। यह नहीं कि औरत अगर राज़ी हो तो वह सचमुच मीरास और मिल्क हो जाएगी।

3. अगर किसी को शुब्हा हो कि हदीस में महर कम मुक़र्रर करने की ताकीद आई है और इस आयत से ज़्यादा का जायज़ होना मालूम होता है, तो उसका जवाब यह है कि यह क़ुरआन से जो जायज़ होने का मफ़्हूम निकल रहा है यह सही हो जाने और लागू होने के मायने में है और हदीस में जायज़ होना मुत्लक़ दुरुस्त होने और मक्रूह न होने की नफ़ी है, पस कुछ टकराव नहीं। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का एक वाक़िए में ज़्यादा महर के जायज़ और दुरुस्त होने को मान लेना इसलिए था कि सुनने वाले उसको हराम न समझने लगें, पस इससे कराहत का न होना साबित नहीं होता, न हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर कोई एतिराज़ लाज़िम आता है।

4. जिस औरत से बाप ने ज़िना किया हो उससे बेटा निकाह नहीं कर सकता। इसी तरह जहाँ-जहाँ निकाह से हराम होना साबित हो जाता है ज़िना से भी हराम हो जाता है।

5. इनमें सब उसूल व फ़ुरू (यानी रिश्ते की जड़ जैसे बाप-दादा की जानिब और शाख़ जैसे औलाद की जानिब) वास्ते से और बिला वास्ता सब दाख़िल हैं।

6. चाहे हक़ीक़ी हों या माँ-शरीक या बाप-शरीक।

7. इसमें बाप की और सब मुज़क्कर (**Male**) उसूल की तीनों क़िस्म की बहनें आ गईं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 148 पर)**

पाँचवाँ पारः वल्-मुह्सनातु

सूरतुन्निसा-इ (आयत 24 से 147)

والمحصنت ٥ ٨٥ النساء ٤

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ
مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ
فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ
بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَمَنْ
لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ
مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ
بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ
اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ
نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ
الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۵﴾
يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۶﴾ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ
عَلَيْكُمْ ۟ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا
عَظِيْمًا ﴿۲۷﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ

منزل١

वल्-मुह्सनातु मिनन्निसा-इ इल्ला मा म-लकत् ऐमानुकुम् किताबल्लाहि अ़लैकुम् व उहिल्-ल लकुम् मा वरा-अ ज़ालिकुम् अन् तब्तग़ू बिअम्वालिकुम् मुह्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न, फ़मस्तम्तअ़तुम् बिही मिन्हुन्-न फ़आतूहुन्-न उजूरहुन्-न फ़री-ज़तन्, व ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा तराज़ैतुम् बिही मिम्-बअ़्दिल् फ़री-ज़ति, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा **(24)** व मल्लम् यस्ततिअ़् मिन्कुम् तौलन् अंय्यन्किहल् मुह्सनातिल्-मुअ़्मिनाति फ़-मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् मिन् फ़-तयातिकुमुल्-मुअ़्मिनाति, वल्लाहु अअ़्लमु बिईमानिकुम्, बअ़्ज़ुकुम् मिम्-बअ़्ज़िन् फ़न्किहूहुन्-न बि-इज़्नि अह्लिहिन्-न व आतूहुन्-न उजूरहुन्-न बिल्मअ़्रूफ़ि मुह्सनातिन् ग़ै-र मुसाफ़िहातिंव्वला मुत्तख़िज़ाति अख़्दानिन् फ़-इज़ा उह्सिन्-न फ़-इन् अतै-न बिफ़ाहि-शतिन् फ़-अ़लैहिन्-न निस्फ़ु मा अ़लल् मुह्सनाति मिनल्-अ़ज़ाबि, ज़ालि-क लिमन् ख़शियल् अ़-न-त मिन्कुम्, व अन् तस्बिरू ख़ैरुल्लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(25)** ❖

युरीदुल्लाहु लि-युबय्यि-न लकुम् व यह्दि-यकुम् सु-ननल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् व

पाँचवाँ पारः वल्-मुह्सनातु

सूरः निसा (आयत 24 से 147)

और वे औ़रतें जो कि शौहर वालियाँ हैं, मगर जो कि तुम्हारी मिल्क में आ जाएँ, अल्लाह तआ़ला ने इन अहकाम को तुमपर फ़र्ज़ कर दिया है।[1] और उन औ़रतों के अ़लावा और औ़रतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं, यानी यह कि तुम उनको अपने मालों के ज़रिये से चाहो,[2] इस तरह से कि तुम बीवी बनाओ, सिर्फ़ मस्ती ही निकालना न हो,[3] फिर जिस तरीक़े से तुमने उन औ़रतों से फ़ायदा उठाया है सो उनको उनके महर दो जो कुछ मुक़र्रर हो चुके हैं। और मुक़र्रर होने के बाद भी जिसपर तुम आपस में रज़ामन्द हो जाओ उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े जानने वाले, बड़े हिक्मत वाले हैं। **(24)** और जो शख़्स तुममें पूरी ताक़त और गुंजाइश न रखता हो आज़ाद मुसलमान औ़रतों से निकाह करने की तो वह अपने आपस की मुसलमान बाँदियों से जो कि तुम लोगों की मिल्क में हैं, निकाह कर ले। और तुम्हारे ईमान की पूरी हालत अल्लाह ही को मालूम है, तुम आपस में एक-दूसरे के बराबर हो। सो उनसे निकाह कर लिया करो उनके मालिकों की इजाज़त से, और उनको उनके महर क़ायदे के मुवाफ़िक़ दे दिया करो, इस तौर पर कि वे निकाह में लाई जाएँ, न तो खुले-आ़म बदकारी करने वाली हों और न छुपे ताल्लुक़ात रखने वाली हों।[4] फिर जब वे बाँदियाँ निकाह में लाई जाएँ, फिर अगर वे बड़ी बेहयाई का काम (ज़िना) करें तो उनपर उस सज़ा से आधी सज़ा होगी जो आज़ाद औ़रतों पर होती है।[5] यह उस शख़्स के लिए है जो तुममें ज़िना का अन्देशा रखता हो,[6] और ज़ब्त करना ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तआ़ला बड़े बख़्शने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। **(25)** ❖

अल्लाह तआ़ला को यह मन्ज़ूर है कि तुमसे बयान कर दे और तुमसे पहले लोगों के हालात तुम्हें बता दे और तुमपर तवज्जोह फ़रमाए, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़े हिक्मत वाले हैं। **(26)** और अल्लाह तआ़ला को

(पृष्ठ 146 का शेष) **8.** इसमें माँ की और सब मुअन्नस **(Female)** उसूल की तीनों क़िस्म की बहनें आ गईं।

9. इसमें तीनों क़िस्म की बहनों की औलाद वास्ते से और बिला वास्ता सब आ गईं।

10. यानी तुमने उनकी हक़ीक़ी या दूध पिलाने वाली माँ का दूध पिया है, या उन्होंने तुम्हारी हक़ीक़ी या दूध पिलाने वाली माँ का दूध पिया है, अगरचे अलग-अलग वक़्तों में पिया हो।

11. इसमें बीवी के सब मुअन्नस उसूल आ गए।

12. इसमें बीवी के सब मुअन्नस फ़ुरू आ गए।

13. किसी औ़रत के साथ निकाह से उसकी वह लड़की जो पहले शौहर से हो हराम नहीं होती, बल्कि जब उस औ़रत से सोहबत हो जाए तब हराम होती है।

14. इसमें सब मुज़क्कर फ़ुरू की बीवियाँ आ गईं। और नस्ल की क़ैद का मतलब यह है कि मुँह-बोले लेपालक जिसको मुतबन्ना कहते हैं, उसकी बीवी हराम नहीं।

1. यहाँ तक उनका बयान था जिनसे निकाह करना हराम है। इसके बाद उनके अ़लावा के निकाह के हलाल होने मय हलाल होने की शर्तों का बयान है।

2. यानी निकाह में महर होना ज़रूरी है।

3. इसके आ़म होने में ज़िना और मुत्आ़ (यानी एक मुद्दते मुक़र्ररा के लिए निकाह कर लेना) सब दाख़िल हो गए।

4. बाँदी के साथ निकाह करने में दो शर्तें लगाई हैं, एक यह कि वह ऐसी औ़रत से निकाह न कर सके जिसमें दो सिफ़तें हों-नम्बर एक आज़ाद होना, नम्बर दो मोमिन होना। दूसरी शर्त यह है कि वह मुसलमान बाँदी हो। इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़दीक इन शर्तों का लिहाज़ रखना अफ़ज़ल है, और अगर इन शर्तों की रियायत किए बग़ैर **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 150 पर)**

यतू-ब अ़लैकुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(26)** वल्लाहु युरीदु अंय्यतू-ब अ़लैकुम्, व युरीदुल्लज़ी-न यत्तबिअू़नश्श-हवाति अन् तमीलू मैलन् अ़ज़ीमा **(27)** युरीदुल्लाहु अंय्युख़फ़्फ़ि-फ़ अ़न्कुम् व ख़ुलिक़ल्-इन्सानु ज़अ़ीफ़ा **(28)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि इल्ला अन् तकू-न तिजा-रतन् अ़न् तराज़िम् मिन्कुम्, व ला तक़्तुलू अन्फ़ु-सकुम्, इन्नल्ला-ह का-न बिकुम् रहीमा **(29)** व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क अ़ुद्वानंव्-व ज़ुल्मन् फ़सौ-फ़ नुस्लीहि नारन्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा **(30)** इन् तज्तनिबू कबा-इ-र मा तुन्हौ-न अ़न्हु नुकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व नुद्ख़िल्कुम् मुद्-ख़लन् करीमा **(31)** व ला त-तमन्नौ मा फ़ज़्ज़लल्लाहु बिही बअ़्ज़कुम् अ़ला बअ़्ज़िन्, लिर्रिजालि नसीबुम् मिम्-मक्त-सबू, व लिन्निसा-इ नसीबुम् मिम्-मक्त-सब्-न, वस्अलुल्ला-ह मिन् फ़ज़्लिही, इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा **(32)** व लिकुल्लिन् जअ़ल्ना मवालि-य मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबू-न, वल्लज़ी-न अ़-क़दत् ऐमानुकुम् फ़-आतूहुम् नसीबहुम्, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा **(33)** ❖

अर्रिजालु क़व्वामू-न अ़लन्निसा-इ बिमा फ़ज़्ज़लल्लाहु बअ़्ज़हुम् अ़ला बअ़्ज़िंव्-व बिमा अन्फ़क़ू मिन् अम्वालिहिम्, फ़स्सालिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल्-लिल्ग़ैबि बिमा हफ़िज़ल्लाहु, वल्लाती तख़ाफ़ू-न नुशूज़हुन्-न फ़-अ़िज़ूहुन्-न वह्जुरूहुन्-न फ़िल्मज़ाजिअ़ि वज़्रिबूहुन्-न

ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ وَ
لَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾ وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ
عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾ اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَاۗىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ
عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا
مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ
مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ۭ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۭ وَسْــَٔلُوا اللّٰهَ
مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا
مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۭ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ
فَاٰتُوْھُمْ نَصِيْبَھُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾
اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَي النِّسَاۗءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَھُمْ عَلٰي
بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۭ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ
لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۭ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَھُنَّ فَعِظُوْھُنَّ
وَاهْجُرُوْھُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْھُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا
عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾ وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ

तो तुम्हारे हाल पर तवज्जोह फ़रमाना मन्ज़ूर है। और जो लोग शहवत परस्त हैं[1] वे यूँ चाहते हैं कि तुम बड़े भारी कजी "यानी टेढ़पन" में पड़ जाओ।[2] **(27)** अल्लाह को तुम्हारे साथ तख़्फ़ीफ़ "यानी कमी और सहूलत करना" मन्ज़ूर है और आदमी कमज़ोर पैदा किया गया है। **(28)** ऐ ईमान वालो! आपस में एक-दूसरे के माल नाहक़ तौर पर मत खाओ, लेकिन कोई तिजारत हो जो आपसी रज़ामन्दी से हो तो हर्ज नहीं, और तुम एक-दूसरे को क़त्ल भी मत करो, बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला तुमपर बड़े मेहरबान हैं। **(29)** और जो शख़्स ऐसा फ़ेल "यानी काम" करेगा इस तौर पर कि हद से गुज़र जाए और इस तौर पर कि ज़ुल्म करे,[3] तो हम जल्द ही उसको[4] आग में दाख़िल करेंगे, और यह (काम) ख़ुदा तआ़ला को आसान है। **(30)** जिन कामों से तुमको मना किया जाता है उनमें जो भारी-भारी काम हैं अगर तुम उनसे बचते रहो तो हम तुम्हारी हल्की और छोटी बुराइयाँ तुमसे दूर फ़रमा देंगे और हम तुमको एक इज़्ज़त वाली जगह में दाख़िल कर देंगे।[5] **(31)** और तुम किसी ऐसे अम्र "यानी मामले और काम" की तमन्ना मत किया करो जिसमें अल्लाह तआ़ला ने बाज़ों को बाज़ों पर फ़ौक़ियत बख़्शी है,[6] मर्दों के लिए उनके आमाल का हिस्सा साबित है और औ़रतों के लिए उनके आमाल का हिस्सा साबित है, और अल्लाह तआ़ला से उसके फ़ज़्ल की दरख़्वास्त किया करो, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। **(32)** और हर ऐसे माल के लिए जिसको माँ-बाप और रिश्तेदार लोग छोड़ जाएँ हमने वारिस मुक़र्रर कर दिए हैं, और जिन लोगों से तुम्हारे अ़हद बंधे हुए हैं उनको उनका हिस्सा दे दो,[7] बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर इत्तिला रखते हैं। **(33)** ❖

मर्द हाकिम हैं औ़रतों पर, इस सबब से कि अल्लाह तआ़ला ने बाज़ों को बाज़ों पर फ़ज़ीलत दी है, और इस सबब से कि मर्दों ने अपने माल ख़र्च किए हैं, सो जो औ़रतें नेक हैं इताअ़त करती हैं, मर्द की ग़ैर मौजूदगी में अल्लाह की हिफ़ाज़त से निगरानी करती हैं, और जो औ़रतें ऐसी हों कि तुमको उनकी बद-दिमाग़ी का अंदेशा हो तो उनको ज़बानी नसीहत करो और उनको उनके लेटने की जगहों में अकेला छोड़ दो, और उनको मारो, फिर अगर वे तुम्हारी इताअ़त करना शुरू कर दें तो उनपर बहाना मत ढूँढो, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी बुलन्दी और बड़ाई

(पृष्ठ 148 का शेष) बाँदी से निकाह किया तो निकाह हो जाएगा लेकिन मक्रूह होगा।

5. वह सज़ा यह है कि उनको पचास दुर्रे लगाए जाएँगे।

6. और जिसको यह अन्देशा न हो उसके लिए मुनासिब नहीं।

1. इब्ने ज़ैद के क़ौल के मुताबिक़ शहवत परस्त लोगों से फ़ासिक़ लोग मुराद हैं, और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के क़ौल के मुताबिक़ ज़िनाकार मुराद हैं। यहाँ शहवत परस्ती की बुराई में मुबाह शहवतों से अलग होना दाख़िल नहीं है।

2. बड़ी भारी कजी (टेढ़ेपन) के दो मतलब हैं। एक यह कि बेख़ौफ़ और निडर होकर हराम कामों को करना, दूसरे यह कि हराम को हलाल समझ लेना। और उसके मुक़ाबले में हल्का टेढ़ापन यह है कि गुनाह को गुनाह समझे और इत्तिफ़ाक़ से गुनाह हो जाए। इस आयत में 'हल्के टेढ़ेपन' (यानी थोड़ी बहुत बेराहरवी) की इजाज़त नहीं है बल्कि उन बदख़्वाहों के हाल का बयान करना है कि वे बड़ी कजी की कोशिश में हैं।

3. "उद्वान" का हासिल यह है कि वह (क़त्ल किया गया) शख़्स हक़ीक़त में क़त्ल का मुस्तहिक़ न हो और उसको क़त्ल किया जाए। और ज़ुल्म का हासिल यह है कि जो क़त्ल का हक़दार न हो उसका क़त्ल हो जाना तीन तरह पर हो सकता है, एक यह कि फ़ेल में ख़ता हुई, यानी जैसे गोली शिकार पर चलाई और वह किसी आदमी को लग गई, दूसरे यह कि क़ाज़ी व हाकिम से फ़ैसला करने में ख़ता हुई, तीसरे यह कि हक़ीक़ते हाल यानी उसका क़त्ल का मुस्तहिक़ न होना मालूम है फिर भी जान-बूझकर उसको क़त्ल कर डाला। पस ज़ुल्म कहने से पहली दो सूरतें ख़ारिज हो जाएँगी कि उनमें यह वईद नहीं।

4. यानी मरने के बाद।

5. गुनाहे कबीरा (यानी बड़े गुनाह) की तारीफ़ में बहुत अक़्वाल हैं। सबसे ज़्यादा जामेअ़ क़ौल वह है जिसको 'रूहुल मआ़नी' में शैख़ुल इस्लाम बारज़ी से नक़ल किया है, कि जिस गुनाह पर कोई वईद हो या सज़ा हो या उसपर लानत आई हो, या उसमें किसी ऐसे ही गुनाह के बराबर ख़राबी हो या ज़्यादा हो जिसपर डाँट-डपट या सज़ा या लानत आई हो, या वह दीन की तौहीन करने के तौर पर सादिर हो, वह कबीरा (यानी बड़ा) है, और उसका मुक़ाबिल सग़ीरा (छोटा) है। और हदीसों में जो अ़दद आया है **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 152 पर)**

फ़-इन् अ-तअ्नकुम् फ़ला तब्ग़ू अ़लैहिन्-न सबीलन्, इन्नल्ला-ह का-न अ़लिय्यन् कबीरा **(34)** व इन् ख़िफ़्तुम् शिक़ा-क़ बैनिहिमा फ़ब्अ़सू ह-कमम् मिन् अह्लिही व ह-कमम् मिन् अह्लिहा इंय्युरीदा इस्लाहंय्युवफ़्फ़िक़िल्लाहु बैनहुमा, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् ख़बीरा **(35)** वअ़्बुदुल्ला-ह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्-वालिदैनि इह्सानंव्-व बि-ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारि ज़िल्-क़ुर्बा वल्जारिल्-जुनुबि वस्साहिबि बिल्-जम्बि वब्निस्सबीलि व मा म-लकत् ऐमानुकुम्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा **(36)**

अल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्-ना-स बिल्-बुख़्लि व यक्तुमू-न मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, व अअ्तद्ना लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्-मुहीना **(37)** वल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् रिआअन्नासि व ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल्-आख़िरि, व मंय्यकुनिश्शैतानु लहू क़रीनन् फ़सा-अ क़रीना **(38)** व माज़ा अ़लैहिम् लौ आमनू बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अन्फ़क़ू मिम्मा र-ज़-क़-हुमुल्लाहु, व कानल्लाहु बिहिम् अ़लीमा **(39)** इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमु मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् व इन् तकु ह-स-नतंय्युज़ाअिफ़्हा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन् अ़ज़ीमा **(40)** फ़कै-फ़ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिम् बि-शहीदिंव्-व जिअ्ना बि-क अ़ला हा-उला-इ शहीदा **(41)** यौमइज़िंय्- यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू व अ़-सवुर्-रसू-ल लौ तुसव्वा बिहिमुल्-अर्ज़ु, व ला यक्तुमूनल्ला-ह हदीसा **(42)** ❖

والمحصنت ٥ ٧٧ النسآء ٤

بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ
يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾
وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى
وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ﴿۳۶﴾ الَّذِيْنَ
يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ﴿۳۷﴾
وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا
فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾ وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ
مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ
بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ؕ﴿۴۱﴾ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ

وقف النبی علیہ السلام

منزل ١

वाले हैं। (34) और अगर तुम ऊपर वालों को उन दोनों मियाँ-बीवी में कशा-कशी का अन्देशा हो तो तुम लोग एक आदमी जो तसफ़िया करने की सलाहियत रखता हो मर्द के ख़ानदान से, और एक आदमी जो तसफ़िया करने की सलाहियत रखता हो औरत के ख़ानदान से भेजो, अगर उन दोनों आदमियों को इस्लाह मन्ज़ूर होगी तो अल्लाह तआला उन मियाँ-बीवी में इत्तिफ़ाक़ फ़रमा देंगे। बेशक अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़े ख़बर वाले हैं। (35) और तुम अल्लाह तआला की इबादत इख़्तियार करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक मत करो और माँ-बाप के साथ अच्छा मामला करो, और रिश्तेदारों के साथ भी और यतीमों के साथ भी और ग़रीब-ग़ुरबा के साथ भी और पास वाले पड़ौसी के साथ भी और दूर वाले पड़ौसी के साथ भी, और साथ रहने और उठने-बैठने वाले के साथ भी,[1] और राहगीर के साथ भी और उनके साथ भी जो तुम्हारे मालिकाना क़ब्ज़े में हैं,[2] बेशक अल्लाह तआला ऐसे शख़्सों से मुहब्बत नहीं रखते जो अपने को बड़ा समझते हों, शेख़ी की बातें करते हों। (36) जो कि बुख़्ल ''यानी कन्जूसी'' करते हों और दूसरे लोगों को भी बुख़्ल की तालीम करते हों, और वे उस चीज़ को छुपाकर रखते हों जो अल्लाह तआला ने उनको अपने फ़ज़्ल से दी है।[3] और हमने ऐसे नाशुक्रों के लिए तौहीन वाली सज़ा तैयार कर रखी है। (37) और जो लोग कि अपने मालों को लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह तआला पर और आख़िरी दिन पर एतिक़ाद नहीं रखते, और शैतान जिसका साथी हो उसका वह बुरा साथी है।[4] (38) और उनपर क्या मुसीबत नाज़िल हो जाएगी अगर वे लोग अल्लाह तआला पर और आख़िरी दिन पर ईमान ले आएँ, और अल्लाह तआला ने जो उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते रहा करें,[5] और अल्लाह तआला उनको ख़ूब जानते हैं। (39) बिला शुब्हा अल्लाह तआला एक ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म न करेंगे, और अगर एक नेकी होगी तो उसको कई गुना कर देंगे और अपने पास से और बड़ा अज्र देंगे।[6] (40) सो उस वक़्त भी क्या हाल होगा जबकि हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह को हाज़िर करेंगे और आपको उन लोगों पर गवाही देने के लिए सामने लाएँगे।[7] (41) उस दिन जिन्होंने कुफ़्र किया होगा और रसूल का कहना न माना होगा वे इस बात की तमन्ना करेंगे कि काश! हम ज़मीन के पैवन्द हो जाएँ, और अल्लाह तआला से किसी बात को छुपा न सकेंगे। (42) ❖

(पृष्ठ 150 का शेष) उससे मक़सूद उसी में महदूद करना नहीं बल्कि वक़्त के तक़ाज़े से उन्हीं का ज़िक्र होगा।

6. जैसे मर्द होना या मर्दों का डबल हिस्सा होना, या उनकी गवाही का कामिल होना वग़ैरह-वग़ैरह।

7. जिन दो शख़्सों में आपस में इस तरह क़ौल व क़रार हो जाए कि हम एक-दूसरे के इस तरह मददगार रहेंगे कि अगर एक शख़्स के ज़िम्मे कोई दियत (यानी जुर्माना, ख़ून-बहा) लाज़िम आई तो दूसरा भी उसको बर्दाश्त करने वाला हो, और जब वह मर जाए तो दूसरा उसकी मीरास ले, तो यह अ़हद 'अ़क़्दे मवालात' है और उनमें से हर शख़्स 'मौलल-मवालात' कहलाता है। यह रस्म अ़रब में इस्लाम से पहले भी थी और शुरू इस्लाम में जब तक कि अक्सर मुसलमानों के रिश्तेदार भी मुसलमान न हुए थे, और इस वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अन्सार व मुहाजिरीन में आपस में 'अ़क़्दे उख़ुव्वत' (यानी भाईचारा) आयोजित फ़रमा दिया था, जिसका असर इसी मवालात का-सा था। उस वक़्त भी इसी पुरानी रस्म के मुवाफ़िक़ हुक्म रहा कि अन्सार व मुहाजिरीन में आपस में मीरास जारी होती थी। फिर जब लोग कसरत से मुसलमान हो गए तो उसमें अव्वल वह तरमीम हुई जो इस आयत में ज़िक्र हुई है, यानी छठा हिस्सा उस 'मौलल मवालात' को और बाक़ी दूसरे वारिसों को दिलाया जाता था। फिर इसके कुछ बाद सूरः अहज़ाब की आयत 'व उलुल् अरहामि बअ़्ज़ुहुम् औला बि-बअ़्ज़िन्' से बिलकुल ही इस 'मौलल मवालात' का हिस्सा मन्सूख़ हो गया।

1. चाहे वह मज्लिस हमेशा की हो जैसे लम्बे सफ़र का साथ और किसी जायज़ काम में शिर्कत, या आरज़ी हो जैसे छोटे सफ़र का साथ या इत्तिफ़ाक़ी जलसे में शिर्कत।

2. ये हुक़ूक़ वाले अगर काफ़िर भी हों तब भी उनके साथ एहसान करे, अलबत्ता मुसलमान का हक़ इस्लाम की वजह से उनसे ज़्यादा होगा।

3. इससे या तो मुराद माल व दौलत है जबकि हिफ़ाज़त की मस्लहत के बग़ैर महज़ बुख़्ल की वजह से कि हुक़ूक़ वाले उम्मीद न करें, छुपाए, या मुराद इल्मे दीन है कि यहूद रिसालत की ख़बरों को छुपाया करते थे, पस बुख़्ल भी आ़म हो जाएगा, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 154 पर)**

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्रबुस्सला-त व अन्तुम् सुकारा हत्ता तअ्लमू मा तक़ूलू-न व ला जुनुबन् इल्ला आ़बिरी सबीलिन् हत्ता तग़्तसिलू, व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू माअन् फ़-तयम्ममू सअ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बिवुजूहिकुम् व ऐदीकुम्, इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ुव्वन् ग़फ़ूरा (43) अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल् किताबि यश्तरूनज़्ज़ला-ल-त व युरीदू-न अन् तज़िल्लुस्सबील (44) वल्लाहु अअ्लमु बि-अअ्दा-इकुम्, व कफ़ा बिल्लाहि वलिय्यंव्-व कफ़ा बिल्लाहि नसीरा (45) मिनल्लज़ी-न हादू युहर्रिफ़ूनल् कलि-म अ़म्मवाज़िअ़िही व यक़ूलू-न समिअ़्ना व अ़सैना वस्मअ् ग़ै-र मुस्मअ़िंव्-व राअ़िना लय्यम् बि-अल्सिनतिहिम् व तअ्नन् फ़िद्दीनि, व लौ अन्नहुम् क़ालू समिअ़्ना व अ-तअ्ना वस्मअ् वन्ज़ुर्ना लका-न ख़ैरल्लहुम् व अक़्व-म व लाकिल्-ल-अ्-नहुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला (46) या अय्युहल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब आमिनू बिमा नज़्ज़ल्ना मुसद्दिक़ल्लिमा म-अ़कुम् मिन् क़ब्लि अन्नत्मि-स वुजूहन् फ़-नरुद्दहा अ़ला अद्बारिहा औ नल्अ़-नहुम् कमा ल-अ़न्ना अस्हाबस्सब्ति, व का-न अम्रुल्लाहि मफ़्अूला (47) इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लिमंय्यशा-उ व मंय्युश्रिक्

اللّٰهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ
سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ
حَتّٰى تَغْتَسِلُوا ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مَرْضٰى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ
مِنْكُمْ مِنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَآءً
فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَاَيْدِيكُمْ ۗ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٤٣﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِينَ اُوتُوا نَصِيبًا
مِنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُونَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيدُونَ اَنْ تَضِلُّوا
السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَ
كَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ
عَنْ مَوَاضِعِهٖ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ
مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ
اَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا
لَهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ
اِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِينَ اُوتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا
لِمَا مَعَكُمْ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ
اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۚ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُولًا ﴿٤٧﴾

ऐ ईमान वालो! तुम नमाज़ के पास भी ऐसी हालत में मत जाओ कि तुम नशे में हो,[1] यहाँ तक कि तुम समझने लगो कि (मुँह से) क्या कहते हो,[2] और नापाकी की हालत में भी तुम्हारे मुसाफ़िर होने की हालत को छोड़कर, यहाँ तक कि ग़ुस्ल कर लो,[3] और अगर तुम बीमार हो[4] या सफ़र की हालत में हो या तुममें से कोई शख़्स इस्तिन्जे से "यानी पेशाब पाख़ाने की ज़रूरत से फ़ारिग़ होकर" आया हो, या तुमने बीवियों से क़ुरबत की हो, फिर तुमको पानी न मिले तो तुम पाक ज़मीन (पर हाथ मारकर उस) से तयम्मुम कर लिया करो, यानी अपने चेहरों और हाथों पर (हाथ) फेर लिया करो,[5] बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला बड़े माफ़ करने वाले, बड़े बख़्शने वाले हैं। **(43)** क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक बड़ा हिस्सा मिला है, वे लोग गुमराही को इख़्तियार कर रहे हैं और (यूँ) चाहते हैं कि तुम राह से बेराह हो जाओ। **(44)** और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानते हैं और अल्लाह तआ़ला काफ़ी रफ़ीक़ है, और अल्लाह तआ़ला काफ़ी हिमायती है। **(45)** ये लोग जो यहूदियों में से हैं क़लाम को उसके मौक़ों से दूसरी तरफ़ फेर देते हैं, और (ये कलिमात) कहते हैं: समिअ्ना व अ़सैना और इस्मअ् ग़ै-र मुस्-मअ् और राअ़िना इस तौर पर कि अपनी ज़बानों को फेर कर और दीन में ताना मारने की नीयत से,[6] और अगर ये लोग (ये कलिमात) कहते, समिअ्ना व अतअ्ना[7] और इस्-मअ् और उन्ज़ुरना[8] तो (यह बात) उनके लिए बेहतर होती और मौक़े की बात थी, मगर उनको ख़ुदा तआ़ला ने उनके कुफ़्र के सबब अपनी रहमत से दूर फेंक दिया, अब वे ईमान न लाएँगे मगर थोड़े-से आदमी।[9] **(46)** ऐ वे लोगो! जो किताब दिए गए हो, तुम उस किताब पर ईमान लाओ जिसको हमने नाज़िल फ़रमाया है, ऐसी हालत पर कि वह सच बतलाती है उस किताब को जो तुम्हारे पास है, इससे पहले-पहले कि हम चेहरों को बिलकुल मिटा डालें और उनको उनकी उल्टी तरफ़ की तरह बना दें, या उनपर हम ऐसी लानत करें जैसी लानत उन हफ़्ते वालों पर की थी, और अल्लाह तआ़ला का हुक्म पूरा ही होकर रहता है। **(47)** बेशक अल्लाह तआ़ला इस बात को न बख़्शेंगे कि उनके साथ किसी को शरीक क़रार दिया जाए और इसके सिवा जितने गुनाह हैं जिसके लिए मन्ज़ूर होगा वे गुनाह बख़्श देंगे। और जो अल्लाह तआ़ला

(पृष्ठ 152 का शेष) जिसमें बख़ील लोग और रिसालत का इनकार करने वाले दोनों आ गए।

4. ऊपर अल्लाह व रसूल और क़ियामत के साथ कुफ़्र और बुख़्ल और दिखावे और तकब्बुर की मज़म्मत (बुराई और निंदा) फ़रमाई है, आगे उनकी उलट सिफ़ात की तरग़ीब देते हैं। पस वह जो पहले गुज़रा यह उसका पूरा करने वाला, बक़िया और आख़िरी हिस्सा है।

5. यानी कुछ भी नुक़सान नहीं हर तरह नफ़ा-ही-नफ़ा है।

6. ऊपर जिन उमूर की तर्ग़ीब थी आगे उनके न करने पर डरावा और धमकी है।

7. यानी जिन लोगों ने दुनिया में ख़ुदाई अहकाम न माने होंगे उनके मुक़द्दमे की पेशी के वक़्त बतौर सरकारी गवाह के अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के बयानात सुने जाएँगे। जो-जो मामलात नबियों की मौजूदगी में पेश आए थे वे सब ज़ाहिर कर देंगे। उस गवाही के बाद उन मुख़ालिफ़ीन पर जुर्म साबित होकर सज़ा दी जाएगी।

1. यानी ऐसी हालत में नमाज़ मत पढ़ो। मतलब यह है कि नमाज़ का अदा करना तो अपने वक़्तों में फ़र्ज़ है और यह हालत नमाज़ अदा करने के मनाफ़ी है, पस नमाज़ के वक़्तों में नशे का इस्तेमाल मत करो, कभी तुम्हारे मुँह से कोई ग़लत कलिमा न निकल जाए।

2. यह हुक्म उस वक़्त था जब शराब हलाल थी, फिर शराब हराम हो गई। न नमाज़ के वक़्त दुरुस्त है न ग़ैर-नमाज़ के वक़्त। पस इस आयत का पहला हिस्सा मन्सूख़ है।

3. नापाकी से ग़ुस्ल करना नमाज़ के सही होने की शर्तों में से है। और यह हुक्म यानी नापाकी के बाद बिना ग़ुस्ल किए नमाज़ पढ़ना उज़्र न होने की हालत में है।

4. जिस बीमारी में पानी के इस्तेमाल से बीमारी के ज़्यादा या लम्बी हो जाने का डर हो उसमें तयम्मुम दुरुस्त है। 'मरज़ा' में ये दोनों सूरतें दाख़िल हैं।

5. तयम्मुम हर ऐसी चीज़ से जायज़ है जो ज़मीन की जिन्स से हो, और ज़मीन की जिन्स वह है **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 156 पर)**

बिल्लाहि फ़-क़दिफ़्तरा इस्मन् अ़ज़ीमा **(48)** अलम् त-र इलल्लज़ी-न युज़क्कू-न अन्फ़ुसहुम, बलिल्लाहु युज़क्की मंय्यशा-उ व ला युज़्लमू-न फ़तीला **(49)** उन्ज़ुर् कै-फ़ यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्- कज़ि-ब, व कफ़ा बिही इस्मम् मुबीना **(50)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल्-किताबि युअ्मिनू-न बिल्-जिब्ति वत्ताग़ूति व यक़ूलू-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू हा-उला-इ अह्दा मिनल्लज़ी-न आमनू सबीला **(51)** उला-इकल्लज़ी-न ल-अ़-नहुमुल्लाहु, व मंय्यल्अ़निल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू नसीरा **(52)** अम् लहुम् नसीबुम् मिनल्-मुल्कि फ़-इज़ल्ला युअ्तूनन्ना-स नक़ीरा **(53)** अम् यह्सुदूनन्ना-स अ़ला मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही फ़-क़द् आतैना आ-ल इब्राहीमल्-किता-ब वल्हिक्म-त व आतैनाहुम् मुल्कन् अ़ज़ीमा **(54)** फ़-मिन्हुम् मन् आम-न बिही व मिन्हुम् मन् सद्-द अ़न्हु, व कफ़ा बि-जहन्न-म सअ़ीरा **(55)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिना सौ-फ़ नुस्लीहिम् नारन्, कुल्लमा नज़िजत् जुलूदुहुम् बद्दल्नाहुम् जुलूदन् ग़ैरहा लि-यज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब, इन्नल्ला-ह का-न अ़ज़ीज़न् हकीमा ◆ **(56)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मुतह्ह-रतुंव्-व नुद्ख़िलुहुम् ज़िल्लन् ज़लीला **(57)** इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तु-अद्दुल् अमानाति इला

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ
يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾ اَلَمْ
تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَ
لَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ
وَكَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾
اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾
اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ
اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾
فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ
سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا
نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ

के साथ शरीक ठहराता है वह बड़े जुर्म का करने वाला हुआ।[1] (48) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने को मुक़द्दस "यानी पाकीज़ा और नेक" बतलाते हैं, बल्कि अल्लाह तआला जिसको चाहें मुक़द्दस बना दें, और उनपर धागे के बराबर भी ज़ुल्म न होगा। (49) तू देख ये लोग अल्लाह तआला पर कैसी झूठी तोहमत लगाते हैं। और यही बात खुला मुज्रिम होने के लिए काफ़ी है। (50) ❖

क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक हिस्सा मिला है, वे बुत और शैतान को मानते हैं[2] और वे लोग काफ़िरों के बारे में कहते हैं कि ये लोग उन मुसलमानों के मुक़ाबले में ज़्यादा सही रास्ते पर हैं। (51) ये लोग वे हैं जिनको ख़ुदा तआला ने मलऊन बना दिया है, और ख़ुदा तआला जिसको मलऊन बना दे उसका कोई हिमायती न पाओगे। (52) हाँ क्या उनके पास कोई हिस्सा है हुकूमत का, सो ऐसी हालत में तो और लोगों को ज़रा-सी चीज़ भी न देते। (53) या दूसरे आदमियों की उन चीज़ों पर जलते हैं जो अल्लाह तआला ने उनको अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाई हैं, सो हमने (हज़रत) इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के ख़ानदान को किताब भी दी है और इल्म भी दिया है, और हमने उनको बड़ी भारी हुकूमत भी दी है।[3] (54) सो उनमें से बाज़े तो उसपर ईमान लाए और बाज़े ऐसे थे कि उससे मुँह फेरे ही रहे, और दोज़ख़ की दहकती हुई आग काफ़ी है।[4] (55) बेशक जो लोग हमारी आयतों के इनकारी हुए हम उनको जल्द ही एक सख़्त आग में दाख़िल करेंगे, जबकि एक दफ़ा उनकी खाल जल चुकेगी तो हम उस पहली खाल की जगह फ़ौरन दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि अ़ज़ाब ही भुगतते रहें।[5] बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। ◆ (56) और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए हम उनको जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। उनके वास्ते

(पृष्ठ 154 का शेष) जो आग में न जले और न गले, लेकिन चूना और राख इससे अलग हैं कि चूना आग में जल जाता है मगर तयम्मुम उससे दुरुस्त है, और राख न जलती है और न गलती है मगर उससे तयम्मुम जायज़ नहीं।

6. नबी का मज़ाक़ उड़ाना और उसको ताना देना, यह दीन का मज़ाक़ उड़ाना और उसको ताना मारना है।

7. जिसके मायने यह हैं कि हमने सुन लिया और मान लिया।

8. 'इस्मअ़' के मायने यह हैं कि आप सुन लीजिए और 'उन्ज़ुरना' के मायने यह हैं कि हमारी मस्लहत पर नज़र फ़रमाइए।

9. यह 'ला युअ्मिनू-न' उन्हीं के बारे में फ़रमाया जो अल्लाह के इल्म में कुफ़्र पर मरने वाले थे। पस नौ-मुस्लिमों के ईमान लाने से कोई शुब्हा नहीं हो सकता। और जो ईमान ले आता है अगर वह किसी वक़्त बेअदबी और नाफ़रमानी भी कर चुका हो, लेकिन जब उससे बाज़ आ गया तो वह ख़त्म हो गई।

1. क़ुरआन व हदीस व इज्मा से यह मसला शरीअ़त की ज़रूरी चीज़ों में से है कि शिर्क और कुफ़्र दोनों बख़्शे नहीं जाएँगे।

2. क्योंकि मुश्रिकीन का दीन बुत-परस्ती और शैतान की पैरवी था, जब ऐसे दीन को अच्छा बतलाया तो बुत और शैतान की तस्दीक़ साफ़ लाज़िम आई।

3. चुनाँचे बनी इसराईल में बहुत से अम्बिया गुज़रे, बाज़ अम्बिया हुकूमत वाले भी हुए जैसे हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम, हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम, उनका बहुत-सी बीवियों वाला होना मालूम व मशहूर है, और ये सब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में हैं। सो जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की औलाद से हैं तो आपको अगर ये नेमतें व इनामात मिल गए तो ताज्जुब की क्या बात है।

4. पस अगर आपकी रिसालत व क़ुरआन पर भी आपके ज़माने के बाज़े लोग ईमान न लाएँ तो रंज की बात नहीं।

5. क्योंकि पहली खाल में जलने के बाद शुब्हा हो सकता था कि शायद उसमें एहसास न रहे इस शुब्हे को दूर करने के लिए यह सुना दिया।

अह्लिहा व इज़ा हकम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुमू बिल्-अ़द्लि, इन्नल्ला-ह निअ़िम्मा यअ़िज़ुकुम् बिही, इन्नल्ला-ह का-न समीअ़म् बसीरा **(58)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअ़ुल्ला-ह व अतीअ़ुर्रसू-ल व उलिल्-अम्रि मिन्कुम् फ़-इन् तनाज़अ़्तुम् फ़ी शैइन् फ़रुद्दूहु इलल्लाहि वर्रसूलि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला **(59)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न यज़्अुमू-न अन्नहुम् आमनू बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क युरीदू-न अंय्य-तहाकमू इलत्ताग़ूति व क़द् उमिरू अंय्यक्फ़ुरू बिही, व युरीदुश्शैतानु अंय्युज़िल्लहुम् ज़लालम् बअ़ीदा **(60)** व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआ़लौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि रऐतल्-मुनाफ़िक़ी-न यसुद्दू-न अ़न्-क सुदूदा **(61)** फ़कै-फ़ इज़ा असाबत्हुम् मुसीबतुम् बिमा क़द्दमत् ऐदीहिम् सुम्-म जाऊ-क यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन् अरद्ना इल्ला इह्सानंव्-व तौफ़ीक़ा **(62)** उलाइ-कल्लज़ी-न यअ्लमुल्लाहु मा फ़ी क़ुलूबिहिम्, फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् व अ़िज़्हुम् व क़ुल्-लहुम् फ़ी अन्फ़ुसिहिम् क़ौलम्-बलीग़ा **(63)** व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला लियुता-अ़ बि-इज़्निल्लाहि, व लौ अन्नहुम् इज़्-ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् जाऊ-क फ़स्तग़फ़रुल्ला-ह वस्तग़फ़-र लहुमुर्रसूलु ल-व-जदुल्ला-ह तव्वाबर्रहीमा **(64)** फ़ला व रब्बि-क ला युअ्मिनू-न हत्ता युहक्किमू-क

والمحصنت ٥ ٨٠ النساء ٤

أَبَدًا ۖ لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُم
بَيْنَ النَّاسِ أَن تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي
شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن
قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا
أَن يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ
الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُم
مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ
إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا
فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ
قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ

منزل ١

उनमें पाक-साफ़ बीवियाँ होंगी और हम उनको बहुत ही घने साए में दाख़िल करेंगे।[1] **(57)** बेशक तुमको अल्लाह तआ़ला इस बात का हुक्म देते हैं कि हक़ वालों को उनके हुक़ूक़ पहुँचा दिया करो,[2] और यह कि जब लोगों का तसफ़िया किया करो तो अ़द्ल "यानी इन्साफ़" से तसफ़िया किया करो, बेशक अल्लाह तआ़ला जिस बात की तुमको नसीहत करते हैं वह बात बहुत अच्छी है,[3] बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनते हैं, ख़ूब देखते हैं। **(58)** ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह तआ़ला का कहना मानो और रसूल का कहना मानो और तुममें जो लोग हुकूमत वाले हैं उनका भी, फिर अगर किसी मामले में तुम आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगो तो उस मामले को अल्लाह और उसके रसूल के हवाले कर दिया करो अगर तुम अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हो। ये उमूर सब बेहतर हैं और इनका अन्जाम अच्छा है। **(59)** ❖

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे उस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो आपकी तरफ़ नाज़िल की गई और उस किताब पर भी जो आपसे पहले नाज़िल की गई, अपने मुक़द्दमे शैतान के पास ले जाना चाहते हैं हालाँकि उनको यह हुक्म हुआ है कि उसको न मानें, और शैतान उनको बहका कर बहुत दूर ले जाना चाहता है। **(60)** और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस हुक्म की तरफ़ जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाया है और रसूल की तरफ़ तो आप मुनाफ़िक़ों की यह हालत देखेंगे कि आपसे किनारा करते हैं। **(61)** फिर कैसी जान को बनती है जब उनपर कोई मुसीबत पड़ती है उनकी उस हरकत की बदौलत जो कुछ वे पहले कर चुके थे, फिर आपके पास आते हैं ख़ुदा की क़स्में खाते हुए कि हमारा और कुछ मक़सूद न था सिवाय इसके कि कोई भलाई निकल आए और आपस में मुवाफ़क़त हो जाए। **(62)** ये वे लोग हैं कि अल्लाह तआ़ला को मालूम है जो कुछ उनके दिलों में है, सो आप उनसे बेतवज्जोही कर जाया कीजिए और उनको नसीहत फ़रमाते रहिए और उनसे उनकी ख़ास ज़ात के मुताल्लिक़ काफ़ी मज़्मून कह दीजिए।[4] **(63)** और हमने तमाम पैग़म्बरों को ख़ास इसी वास्ते भेजा है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म से उनकी इताअ़त की जाए, और अगर जिस वक़्त अपना नुक़सान कर बैठे थे उस वक़्त आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाते, फिर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहते और रसूल भी उनके लिए

---

1. यानी दुनिया का साया न होगा कि ख़ुद साए के अन्दर भी धूप छनती है, वह बिलकुल मिला हुआ होगा।
2. यह हुकूमत वालों को ख़िताब है।
3. वह बात दुनिया के एतिबार से भी बहुत अच्छी है कि उसमें हुकूमत की बक़ा है और आख़िरत के एतिबार से भी कि सवाब और अल्लाह की निकटता का सबब है।
4. इन आयतों में एक क़िस्से की तरफ़ इशारा है। एक मुनाफ़िक़ शख़्स था, बिश्र उसका नाम था। उसका किसी यहूदी से झगड़ा हुआ, यहूदी ने कहाः चल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के पास उनसे फ़ैसला करा लें। मुनाफ़िक़ ने कहा कि क़ाब बिन अशरफ़ के पास चल, यह यहूद का एक सरदार था। ज़ाहिर में यह मालूम होता है कि इस मामले में हक़ पर यहूदी होगा। उसने जाना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम किसी की रियायत न फ़रमाएँगे वहाँ हक़ फ़ैसला होगा, अगरचे मैं आपसे मज़हबी मुख़ालफ़त रखता हूँ। मुनाफ़िक़ क्योंकि बातिल पर था उसने समझा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के यहाँ तो मेरी बात चलेगी नहीं अगरचे मैं ज़ाहिर में मुसलमान हूँ मगर काब बिन अशरफ़ ख़ुद कोई हक़-परस्त नहीं वहाँ मेरा मुक़द्दमा सरसब्ज़ हो जाएगा। फिर आख़िर वे दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ही पास मुक़द्दमा ले गए। आपने यहूदी को ग़ालिब किया, वह मुनाफ़िक़ राज़ी न हुआ। उस यहूदी से कहा कि चलो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास, ग़ालिबन् वह यह समझा होगा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु कुफ़्फ़ार पर सख़्त हैं, इस यहूदी पर सख़्ती फ़रमाएँगे। यहूदी को इत्मीनान था कि अगरचे सख़्त हैं मगर वह सख़्ती हक़-परस्ती ही की वजह से तो है। जब मैं हक़ पर हूँ तो मुझको ही ग़ालिब रखेंगे, इसलिए उसने इनकार नहीं किया। जब वहाँ पहुँचे तो यहूदी ने सारा क़िस्सा बयान कर दिया कि यह मुक़द्दमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के यहाँ से फ़ैसले तक पहुँच चुका है, मगर यह शख़्स (यानी मुनाफ़िक़) उसपर राज़ी नहीं हुआ। आपने उस मुनाफ़िक़ से पूछाः क्या यही बात है? उसने कहा हाँ! हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहाः अच्छा ठहरो आता हूँ, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 160 पर)**

फ़ीमा श-ज-र बैनहुम् सुम्-म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ह-रजम्-मिम्मा क़ज़ै-त व युसल्लिमू तस्लीमा **(65)** व लौ अन्ना कतब्ना अ़लैहिम् अनिक़्तुलू अन्फ़ु-सकुम् अविख़्रुजू मिन् दियारिकुम् मा फ़-अ़लूहु इल्ला क़लीलुम्-मिन्हुम, व लौ अन्नहुम् फ़-अ़लू मा यू-अ़ज़ू-न बिही लका-न ख़ैरल्लहुम् व अशद्-द तस्बीता **(66)** व इज़ल्-लआतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अज्रन् अ़ज़ीमा **(67)** व ल-हदैनाहुम् सिरातम् मुस्तक़ीमा **(68)** व मंय्युतिअ़िल्ला-ह वर्रसू-ल फ़-उलाइ-क मअ़ल्लज़ी-न अन्अ़-मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्-नबिय्यीन वस्सिद्दीक़ी-न वश्शु-हदा-इ वस्सालिही-न व हसु-न उलाइ-क रफ़ीक़ा **(69)** ज़ालिकल्-फ़ज़्लु मिनल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि अ़लीमा **(70)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ख़ुज़ू हिज़्रकुम् फ़न्फ़िरू सुबातिन् अविन्फ़िरू जमीअ़ा **(71)** व इन्-न मिन्कुम् ल-मल्लयुबत्तिअन्-न फ़-इन् असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़ा-ल क़द् अन्अ़-मल्लाहु अ़लय्-य इज़् लम् अकुम् म-अ़हुम् शहीदा **(72)** व ल-इन् असाबकुम् फ़ज़्लुम् मिनल्लाहि ल-यक़ूलन्-न क-अल्लम् तकुम् बैनकुम् व बैनहू मवद्दतुंय्-यालैतनी कुन्तु म-अ़हुम् फ़-अफ़ू-ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा **(73)** फ़ल्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न यश्रूनल्-हयातद्दुन्या बिलआख़ि-रति, व मंय्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-युक़्तल् औ यग़्लिब् फ़सौ-फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा **(74)** व मा

والمحصنت ٥ ٨١ النساء ٤

وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَّلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ
وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا
وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ
ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا
تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوِ
اخْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ
فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾
وَإِذًا لَآتَيْنَاهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٧﴾ وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا
مُسْتَقِيمًا ﴿٦٨﴾ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ
أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ
وَالصَّالِحِينَ ۚ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ﴿٦٩﴾ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ
اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ﴿٧٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ
فَانْفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انْفِرُوا جَمِيعًا ﴿٧١﴾ وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُبَطِّئَنَّ
فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ
أَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا ﴿٧٢﴾ وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ
لَيَقُولَنَّ كَأَنْ لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَا لَيْتَنِي كُنْتُ

منزل

अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहते तो ज़रूर अल्लाह तआ़ला को तौबा का क़बूल करने वाला और रहमत करने वाला पाते। **(64)** फिर क़सम है आपके रब की ये लोग ईमानदार न होंगे जब तक यह बात न हो कि उनके आपस में जो झगड़ा उत्पन्न हो उसमें ये लोग आपसे तसफ़िया कराएँ,[1] फिर आपके उस तसफ़िए से अपने दिलों में तंगी न पाएँ और पूरे तौर पर मान लें।[2] **(65)** और हम अगर लोगों पर यह बात फ़र्ज़ कर देते कि तुम ख़ुदकुशी किया करो या अपने वतन से बे-वतन हो जाया करो तो सिवाय थोड़े से लोगों के इस हुक्म को कोई भी न बजा लाता,[3] और अगर ये लोग जो कुछ उनको नसीहत की जाती है उसपर अ़मल किया करते तो उनके लिए बेहतर होता और ईमान को ज़्यादा पुख़्ता करने वाला होता। **(66)** और इस हालत में हम उनको ख़ास अपने पास से बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाते। **(67)** और हम उनको सीधा रास्ता बतला देते।[4] **(68)** और जो शख़्स अल्लाह और रसूल का कहना मान लेगा तो ऐसे लोग भी उन हज़रात के साथ होंगे जिनपर अल्लाह तआ़ला ने इनाम फ़रमाया, यानी अम्बिया और सिद्दीक़ीन और शहीद लोग और नेक लोग, और ये हज़रात बहुत अच्छे साथी हैं। **(69)** यह फ़ज़्ल है अल्लाह तआ़ला की जानिब से, और अल्लाह तआ़ला काफ़ी जानने वाले हैं।[5] **(70)** ❖

ऐ ईमान वालो! अपनी तो एहतियात रखो,[6] फिर अलग-अलग तौर पर या इकट्ठे तौर पर निकलो। **(71)** और तुम्हारे मजमे में बाज़ा-बाज़ा शख़्स ऐसा है जो हटता है, फिर अगर तुमको कोई हादसा पहुँच गया तो कहता हैः बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुझपर बड़ा फ़ज़्ल किया कि मैं उन लोगों के साथ हाज़िर नहीं हुआ। **(72)** और अगर तुमपर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल हो जाता है तो ऐसे तौर पर कि गोया तुममें और उसमें कुछ ताल्लुक़ ही नहीं, कहता हैः हाय क्या ख़ूब होता कि मैं भी उन लोगों के साथ होता[7] तो मुझको भी बड़ी कामयाबी होती। **(73)** तो हाँ उस शख़्स को चाहिए कि अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़े जो आख़िरत (की ज़िन्दगी) के बदले दुनियावी ज़िन्दगी इख़्तियार किए हुए हैं,[8] और जो शख़्स अल्लाह की राह में लड़ेगा फिर चाहे जान से मारा जाए या ग़ालिब आ जाए तो हम उसको बड़ा अज्र देंगे। **(74)** और तुम्हारे पास क्या उज़्र है कि तुम अल्लाह की राह में जिहाद न करो और कमज़ोरों की ख़ातिर से जिनमें कुछ मर्द हैं और कुछ औ़रतें हैं और कुछ बच्चे हैं जो दुआ़ कर रहे हैं कि

(पृष्ठ 158 का शेष) और घर से एक तलवार लेकर आए और मुनाफ़िक़ का काम तमाम किया, और कहा कि जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़ैसले पर राज़ी न हो उसका यही फ़ैसला है। और बहुत-से मुफ़स्सिरीन ने यह भी लिखा है कि फिर उस मुनाफ़िक़ मक़्तूल के वारिसों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर दावा किया और उस मुनाफ़िक़ के क़ौली व फ़ेली कुफ़्र की तावील की, अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों में असल हक़ीक़त ज़ाहिर फ़रमा दी।

1. और आप न हों तो आपकी शरीअ़त से।

2. फ़ैसल बनाने और दिल में तंगी न होने और मानने के तीन दर्जे हैं। एतिक़ाद से, ज़बान से और अ़मल से। एतिक़ाद से यह कि शरीअ़त के क़ानून को हक़ और फ़ैसले की बुनियाद जानता है और उसमें अ़क़्ल के दर्जे में तंगी नहीं, और इसी दर्जे में उसको तस्लीम करता है। और ज़बान से यह कि इन उमूर का इक़रार करता है कि हक़ इसी तरह है, और अ़मल से यह कि मुक़द्दमा ले भी जाता है और तबई तंगी भी नहीं और उस फ़ैसले के मुवाफ़िक़ कार्रवाई भी कर ली। सो पहला दर्जा तस्दीक़ व ईमान का है, उसका न होना अल्लाह के नज़दीक कुफ़्र है, और मुनाफ़िक़ों में ख़ुद इसी की कमी थी, चुनाँचे तंगी के साथ लफ़्ज़ इनकार इसी की वज़ाहत के लिए ज़ाहिर कर दिया है। और दूसरा दर्जा इक़रार का है, इसका न होना लोगों के नज़दीक कुफ़्र है। तीसरा दर्जा तक़्वे व नेकी का है, इसका न होना फ़िस्क़ है, और तबई तंगी माफ़ है। पस आयत में मुनाफ़िक़ों के ज़िक्र से मुताल्लिक़ होने की वजह से पहला दर्जा मुराद है।

3. उन बहुत थोड़े और गिने-चुने लोगों में तमाम सहाबा व कामिल मोमिनीन दाख़िल हैं।

4. ऊपर अल्लाह व रसूल की इताअ़त पर ख़ास मुख़ातब हज़रात से वायदा था, आगे बतौर क़ायदा कुल्लिया के अल्लाह व रसूल की इताअ़त और फ़रमाँबरदारी पर आ़म वायदा है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 162 पर)**

लकुम् ला तुक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्-विल्दानिल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना अख़्रिज्ना मिन् हाज़िहिल् क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह़्लुहा वज्अ़ल्लना मिल्लदुन्-क वलिय्यंव्-वज्अ़ल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा **(75)** अल्लज़ी-न आमनू युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न क-फ़रू युक़ातिलू-न फ़ी सबीलित्ताग़ूति फ़क़ातिलू औलिया-अश्शैतानि इन्-न कैदश्शैतानि का-न ज़ओफ़ा **(76)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न क़ी-ल लहुम् कुफ़्फ़ू ऐदी-यकुम् व अक़ीमुस्-सला-त व आतुज़्ज़का-त फ़-लम्मा कुति-ब अ़लैहिमुल्-क़ितालु इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यख़्शौनन्ना-स क-ख़श्यतिल्लाहि औ अशद्-द ख़श्य-तन् व क़ालू रब्बना लि-म कतब्-त अ़लैनल्-क़िता-ल लौ ला अख़्ख़र्तना इला अ-जलिन् क़रीबिन्, क़ुल् मताअुद्दुन्या क़लीलुन् वल्-आख़ि-रतु ख़ैरुल्-लि-मनित्तक़ा, व ला तुज़्लमू-न फ़तीला **(77)** ऐ-न मा तकूनू युद्रिक्कुमुल्-मौतु व लौ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम् मुशय्य-दतिन्, व इन् तुसिब्हुम् ह-स-नतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अिन्दिल्लाहि व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अिन्दि-क, क़ुल् कुल्लुम् मिन् अिन्दिल्लाहि, फ़मालि हा-उला-इल्क़ौमि ला यकादू-न यफ़्क़हू-न हदीसा **(78)** मा असाब-क मिन् ह-स-नतिन् फ़मिनल्लाहि व मा असाब-क मिन् सय्यि-अतिन् फ़-मिन्नफ़्सि-क, व अर्सल्ना-क लिन्नासि

مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧٣﴾ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ
يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَن يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٧٤﴾ وَ
مَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ
الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ۚ وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا ۚ
وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾ الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ
فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ
يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا
لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ
قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَ
لَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٧﴾ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ
فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ

ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इस बस्ती से बाहर निकाल जिसके रहने वाले सख़्त ज़ालिम हैं, और हमारे लिए ग़ैब से किसी दोस्त को खड़ा कीजिए, और हमारे लिए ग़ैब से किसी हिमायती को भेजिए।[1] **(75)** जो लोग पक्के ईमानदार हैं वे तो अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, और जो लोग काफ़िर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं, तो तुम शैतान के साथियों से जिहाद करो, हक़ीक़त में शैतानी तदबीर लचर होती है।[2] **(76)** ❖

क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा कि उनको यह कहा गया था कि अपने हाथों को थामे रहो और नमाज़ों की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, फिर जब उनपर जिहाद करना फ़र्ज़ कर दिया गया तो क़िस्सा क्या हुआ कि उनमें से बाज़-बाज़ आदमी लोगों से ऐसा डरने लगे जैसा कोई अल्लाह तआ़ला से डरता हो बल्कि उससे भी ज़्यादा डरना, और (यूँ) कहने लगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने हमपर जिहाद क्यों फ़र्ज़ फ़रमा दिया, हमको और थोड़ी मोहलत की मुद्दत दे दी होती,[3] आप फ़रमा दीजिए कि दुनिया का फ़ायदा महज़ चन्द दिन का है और आख़िरत हर तरह से बेहतर है उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआ़ला की मुख़ालफ़त से बचे, और तुमपर धागे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। **(77)** तुम चाहे कहीं भी हो उसी जगह तुमको मौत आ दबाएगी अगरचे तुम क़लई-चूने के क़िलों में ही हो,[4] और अगर उनको कोई अच्छी हालत पेश आती है[5] तो कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से (इत्तिफ़ाक़न) हो गई, और अगर उनको कोई बुरी हालत पेश आती है तो कहते हैं कि यह आपके सबब से है। आप फ़रमा दीजिए कि सब कुछ अल्लाह ही की तरफ़ से है। तो उन लोगों को क्या हुआ कि बात समझने के पास को भी नहीं निकलते। **(78)** ऐ इनसान! तुझको जो कोई ख़ुशहाली पेश आती है वह महज़ अल्लाह की तरफ़ से है, और जो कोई बदहाली पेश आए वह तेरे ही सबब से है। और हमने आपको तमाम लोगों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा है, और अल्लाह तआ़ला गवाह काफ़ी हैं।[6] **(79)** जिस शख़्स ने रसूल की इताअ़त की उसने अल्लाह तआ़ला की इताअ़त

(पृष्ठ 160 का शेष) **5.** अब जिहाद के अहकाम का ज़िक्र शुरू होता है। यहाँ से छह रुकू तक इसी मज़मून के मुताल्लिक़ अहकाम और तफ़सील बयान होती चली गई है।

6. यानी उनके दाव-घात से भी होशियार रहो और लड़ाई के वक़्त सामान, हथियार, ढाल, तलवार से भी दुरुस्त रहो।

7. यानी जिहाद में जाता।

8. यानी उस शख़्स को अगर बड़ी कामयाबी का शौक़ है तो दिल दुरुस्त करे, हाथ-पाँव हिलाए, मशक़्क़त झेले, तीर व तलवार के सामने सीना तान कर खड़ा हो। देखो बड़ी कामयाबी हाथ आती है कि नहीं।

1. मक्का में ऐसे कमज़ोर मुसलमान रह गए थे कि अपनी जिस्मानी कमज़ोरी और कम-सामानी की वजह से हिजरत न कर सके, फिर काफ़िरों ने भी न जाने दिया और तरह-तरह से उनको सताते थे। चुनाँचे हदीसों व तफ़सीरों में बाज़ों के नाम भी आये हैं। आख़िर हक़ तआ़ला ने उनकी दुआ़ क़बूल फ़रमाई और बाज़ों की रिहाई का तो पहले ही सामान हो गया और फिर मक्का मुकर्रमा फ़त्ह हो गया, जिससे सबको अमन व सम्मान हासिल हो गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनपर हज़रत इताब बिन उसैद को आ़मिल व हाकिम मुक़र्रर फ़रमाया। पस दोस्त व हिमायती का मिस्दाक़ चाहे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कहा जाए और यही अच्छा मालूम होता है, और या हज़रत इताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु को कहा जाए कि उन्होंने अपने हुकूमत के ज़माने में सबको ख़ूब आराम पहुँचाया।

2. ऊपर जिहाद का वाजिब होना और उसके फ़ज़ाइल बयान करके उसकी तरग़ीब थी, आगे दूसरे अन्दाज़ से उसकी तरग़ीब है। यानी जिहाद में बाज़ मुसलमानों के तैयार न होने पर उनकी एक लुत्फ़ भरी शिकायत भी है, जिसकी बिना यह हुई कि मक्का में कुफ़्फ़ार बहुत सताते थे, उस वक़्त बाज़ सहाबा ने जिहाद की इजाज़त इसरार से चाही, मगर उस वक़्त माफ़ करने और दरगुज़र करने का हुक्म था, हिजरत के बाद जब जिहाद का हुक्म नाज़िल हुआ तो तबई तौर पर बाज़ को दुश्वार हुआ, इसपर यह शिकायत फ़रमाई गई। और चूँकि यह बतौर इनकार या हुक्म पर एतिराज़ करने के न था बल्कि कुछ वक़्त तक और इस हुक्म के न आने की महज़ तमन्ना थी इसलिए डाँट-डपट नहीं है महज़ लुत्फ़-भरी शिकायत है।

3. उन हज़रात का यह तमन्नाई क़ौल अगर ज़बान से था तब तो उसके नाफ़रमानी न होने की वजह मालूम **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 164 पर)**

रसूलन्, व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा **(79)** मंय्युतिअ़िर्-रसू-ल फ़-क़द् अताअ़ल्ला-ह व मन् तवल्ला फ़मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् हफ़ीज़ा **(80)** व यक़ूलू-न ताअ़तुन् फ़-इज़ा ब-रज़ू मिन् अ़िन्दि-क बय्य-त ता-इ-फ़तुम् मिन्हुम् ग़ैरल्लज़ी तक़ूलु, वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू-न फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् व तवक्कल् अ़लल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला **(81)** अ-फ़ला य-तदब्बरूनल्-क़ुर्आ-न, व लौ का-न मिन् अ़िन्दि ग़ैरिल्लाहि ल-व-जदू फ़ीहिख़्तिलाफ़न् कसीरा **(82)** व इज़ा जा-अहुम् अम्रुम् मिनल्-अम्नि अविल्ख़ौफ़ि अज़ाअू बिही, व लौ रद्दूहु इलर्रसूलि व इला उलिल्-अम्रि मिन्हुम् ल-अ़लि-महुल्लज़ी-न यस्तम्बितूनहू मिन्हुम्, व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू लत्त-बअ़्तुमुश्शैता-न इल्ला क़लीला **(83)** फ़क़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ला तुकल्लफ़ु इल्ला नफ़्स-क व हर्रिज़िल्-मुअ्मिनी-न अ़सल्लाहु अंय्यकुफ़्-फ़ बअ्सल्लज़ी-न क-फ़रू, वल्लाहु अशद्दु बअ्संव्-व अशद्दु तन्कीला **(84)** मंय्यश्फ़अ् शफ़ा-अ़तन् ह-स-नतंय्यकुल्लहू नसीबुम् मिन्हा व मंय्यश्फ़अ् शफ़ा-अ़तन् सय्यि-अतंय्यकुल्लहू किफ़्लुम् मिन्हा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्-मुक़ीता **(85)** व इज़ा हुय्यीतुम् बि-तहिय्यतिन् फ़हय्यू बि-अह्स-न मिन्हा औ रुद्दूहा, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन्

عِندِ اللّٰهِ ۚ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هٰذِهِ مِنْ عِندِكَ
قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِندِ اللّٰهِ ۖ فَمَالِ هٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ
يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ﴿٧٨﴾ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۖ وَمَا
أَصَابَكَ مِن سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيدًا ﴿٧٩﴾ مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللّٰهَ ۖ
وَمَن تَوَلّٰى فَمَا أَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ﴿٨٠﴾ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ
فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِندِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي
تَقُولُ ۖ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيلًا ﴿٨١﴾ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْاٰنَ ۚ وَلَوْ كَانَ
مِنْ عِندِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ﴿٨٢﴾ وَإِذَا جَاءَهُمْ
أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ
وَإِلٰى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ إِلَّا
قَلِيلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ
الْمُؤْمِنِينَ ۚ عَسَى اللّٰهُ أَن يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَاللّٰهُ
أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُن

की,[1] और जो शख़्स मुँह फेरे "यानी अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी से अपना रुख़ फेर ले" सो हमने आपको उनका निगराँ करके नहीं भेजा। **(80)** और (ये लोग) कहते हैं कि हमारा काम इताअ़त करना है, फिर जब आपके पास से बाहर जाते हैं तो रात के वक़्त मश्विरा करती है इन्हीं की एक जमाअ़त उसके ख़िलाफ़ जो कुछ कि (ज़बान से) कह चुके थे, और अल्लाह तआ़ला लिखते जाते हैं जो कुछ वे रातों को मश्विरा किया करते हैं, सो आप उनकी तरफ़ ध्यान न कीजिए और अल्लाह के हवाले कीजिए और अल्लाह तआ़ला काफ़ी कारसाज़ हैं।[2] **(81)** क्या फिर क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते,[3] और अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें कसरत से फ़र्क़ और इख़्तिलाफ़ पाते।[4] **(82)** और जब उन लोगों को किसी अम्र "यानी मामले और बात" की ख़बर पहुँचती है चाहे अमन हो या ख़ौफ़ तो उसको मश्हूर कर देते हैं। और अगर ये लोग उसको रसूल के और जो उनमें ऐसे मामलात को समझते हैं उनके ऊपर हवाले रखते तो उसको वे हज़रात तो पहचान ही लेते जो उनमें उसकी तहक़ीक़ कर लिया करते हैं। और अगर तुम लोगों पर ख़ुदा तआ़ला का फ़ज़्ल और रहमत न होती तो तुम सबके-सब शैतान के पैरवी करने वाले हो जाते सिवाय थोड़े-से आदमियों के। **(83)** पस आप अल्लाह की राह में क़िताल कीजिए, आपको सिवाय आपके ज़ाती फ़ेल के कोई हुक्म नहीं, और मुसलमानों को तरग़ीब दीजिए, अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि काफ़िरों के जंग के ज़ोर को रोक देंगे। और अल्लाह तआ़ला जंग के ज़ोर में ज़्यादा शदीद हैं और सख़्त सज़ा देते हैं।[5] **(84)** जो शख़्स अच्छी सिफ़ारिश करे[6] उसको उसकी वजह से हिस्सा मिलेगा, और जो शख़्स बुरी सिफ़ारिश करे[7] उसको उसकी वजह से हिस्सा मिलेगा, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाले हैं। **(85)** और जब तुमको कोई (शरीअ़त के मुताबिक़) सलाम करे तो तुम उस (सलाम) से अच्छे अल्फ़ाज़ में

(पृष्ठ 162 का शेष) हो गई। और अगर दिल में बतौर वस्वसे और ख़्याल के था तो वस्वसे और ख़्याल का नाफ़रमानी न होना क़ुरआन करीम व हदीस में आया है, इसलिए कोई इश्काल ही नहीं।

4. ऊपर जिहाद की तरग़ीब में यह ज़िक्र हुआ है कि वक़्त पर मौत नहीं टलती, चाहे जिहाद में जाओ या न जाओ। चूँकि बाज़ मुनाफ़िक़ जिहाद में जाने को मौत में मुअस्सिर (यानी असर करने वाला और सबब) और न जाने को ज़िन्दगी में मुअस्सिर समझते और कहते थे, पस जब कभी जिहाद में क़त्ल व मौत वाक़ेअ़ होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर इल्ज़ाम लगाते कि आप ही के कहने से जिहाद में गए और मौत का शिकार हुए, देखो जिहाद का मौत में असर रखना साबित हो गया। और अगर कभी बावजूद ज़ाहिरी असबाब की कमी के कुफ़्फ़ार पर फ़त्ह होती और उससे दलील पकड़ी जाती कि देखो अगर जिहाद मौत में असर रखता है तो अब वह असर कहाँ गया, तो कहते कि यह सिर्फ़ इत्तिफ़ाक़ी बात अल्लाह की तरफ़ से है। ग़रज़ काम बिगड़ता तो हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर इल्ज़ाम, और संवरता तो इत्तिफ़ाक़ी बात, आगे इसकी तरफ़ इशारा है।

5. जैसे फ़त्ह व कामयाबी।

6. तमाम लोगों में जिन्न और इनसान दोनों आ गए। पस इसमें बयान है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सबके लिए नबी की हैसियत से तशरीफ़ लाने का, जो क़ुरआन व हदीस में और जगह भी मज़कूर व मन्सूस और क़तई अ़क़ीदा है।

1. और जिसने आपकी नाफ़रमानी की उसने ख़ुदा तआ़ला की नाफ़रमानी की।

2. चुनाँचे कभी उनकी शरारत से कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

3. ताकि इसका अल्लाह का कलाम होना वाज़ेह हो जाए।

4. पस यक़ीनन यह ग़ैरुल्लाह का कलाम नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला का कलाम है। हासिले कलाम यह है कि कलामुल्लाह के मोजिज़ा होने के दलाइल में से इसके अन्दाज़े बयान का उम्दा और मौक़े के मुताबिक़ होने के एतिबार से बेमिस्ल होना और इसमें दी गई ख़बरों का जिनपर इत्तिला पाने का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास कोई ज़रिया न था, बिलकुल सही व हक़ीक़त के मुताबिक़ होना है। पस मालूम हुआ कि यह कलाम ख़ालिक़ तआ़ला का है।

5. इस भविष्यवाणी का सामने आना ज़ाहिर है। अगर ख़ास क़ुरैश के कुफ़्फ़ार मुराद हों जब भी और अगर सारी दुनिया के कुफ़्फ़ार मुराद हों जब भी, क्योंकि कुछ ही समय में तमाम हुकूमतें मुसलमानों ने फ़त्ह कर लीं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 166 पर)**

हसीबा ● **(86)** अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्-कि़यामति ला रै-ब फ़ीहि, व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि हदीसा **(87)** ❖

फ़मा लकुम् फ़िल्मुनाफ़िक़ी-न फ़ि-अतैनि वल्लाहु अर्क-सहुम् बिमा क-सबू, अतुरीदू-न अन् तह्दू मन् अज़ल्लल्लाहु, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू सबीला **(88)** वद्दू लौ तक्फ़ुरू-न कमा क-फ़रू फ़-तकूनू-न सवा-अन् फ़ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् औलिया-अ हत्ता युहाजिरू फ़ी सबीलिल्लाहि, फ़-इन् तवल्लौ फ़ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु वजत्तुमूहुम् व ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(89)** इल्लल्लज़ी-न यसिलू-न इला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् औ जाऊकुम् हसिरत् सुदूरुहुम् अंय्युक़ातिलूकुम् औ युक़ातिलू क़ौमहुम्, व लौ शा-अल्लाहु ल-सल्ल-तहुम् अ़लैकुम् फ़-लक़ातलूकुम् फ़-इनिअ़्-त-ज़लूकुम् फ़-लम् युक़ातिलूकुम् व अल्क़ौ इलैकुमुस्स-ल-म फ़मा ज-अ़लल्लाहु लकुम् अ़लैहिम् सबीला **(90)** स-तजिदू-न आ-ख़री-न युरीदू-न अंय्यअ्मनूकुम् व यअ्मनू क़ौमहुम्, कुल्लमा रुद्दू इलल्-फ़ित्नति उर्किसू फ़ीहा फ़-इल्लम् यअ़्-तज़िलूकुम् व युल्क़ू इलैकुमुस्स-ल-म व यकुफ़्फ़ू ऐदि-यहुम् फ़ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम्, व उला-इकुम् जअ़ल्ना लकुम् अ़लैहिम् सुल्तानम् मुबीना **(91)** ❖

والمحصنت ٥ ٨٤ النساء ٤

لَّهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا ۖ وَمَن يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُن لَّهُ كِفْلٌ
مِّنْهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيتًا ﴿٨٥﴾ وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا
بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٨٦﴾
اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ
وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ﴿٨٧﴾ فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ
فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُم بِمَا كَسَبُوا ۚ أَتُرِيدُونَ أَن تَهْدُوا مَنْ
أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿٨٨﴾ وَدُّوا
لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً ۖ فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ
أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ
وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ ۖ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَ
لَا نَصِيرًا ﴿٨٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم
مِّيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا
قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنِ
اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ
اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ﴿٩٠﴾ سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَن
يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا ۚ

منزل ١

सलाम करो या वैसे ही अल्फ़ाज़ कह दो, बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर हिसाब लेंगे।[1] ● (86) अल्लाह ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई माबूद होने के क़ाबिल नहीं, वह ज़रूर तुम सबको जमा करेंगे क़ियामत के दिन में इसमें कोई शुब्हा नहीं, और ख़ुदा तआ़ला से ज़्यादा किसकी बात सच्ची होगी।[2] (87) ❖

फिर तुमको क्या हुआ कि इन मुनाफ़िक़ों के बारे में तुम दो गिरोह हो गए हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने उनको उल्टा फेर दिया उनके (बुरे) अ़मल के सबब,[3] क्या तुम लोग इसका इरादा रखते हो कि ऐसे लोगों को हिदायत करो जिनको अल्लाह तआ़ला ने गुमराही में डाल रखा है,[4] और जिसको अल्लाह तआ़ला गुमराही में डाल दें उसके लिए कोई सबील न पाओगे।[5] (88) वे इस तमन्ना में हैं कि जैसे वे काफ़िर हैं तुम भी काफ़िर बन जाओ, जिसमें तुम और वे सब एक तरह के हो जाओ, सो उनमें से किसी को दोस्त मत बनाना जब तक कि वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें,[6] और अगर वे मुँह फेरें तो उनको पकड़ो और क़त्ल करो जिस जगह उनको पाओ, और न उनमें से किसी को दोस्त बनाओ और न मददगार बनाओ।[7] (89) मगर जो लोग ऐसे हैं जो कि ऐसे लोगों से जा मिलते हैं[8] कि तुम्हारे और उनके दरमियान अ़हद है या खुद तुम्हारे पास इस हालत से आएँ कि उनका दिल तुम्हारे साथ और तथा अपनी क़ौम के साथ लड़ने से मुन्क़बिज़ "यानी नाख़ुश और खिंचा हुआ" हो,[9] और अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो उनको तुमपर मुसल्लत कर देता फिर वे तुमसे लड़ने लगते, फिर अगर वे तुमसे अलग रहें यानी तुमसे न लड़ें और तुमसे सलामत-रवी रखें[10] तो अल्लाह तआ़ला ने तुमको उनपर कोई राह नहीं दी।[11] (90) बाज़े ऐसे भी तुमको ज़रूर मिलेंगे कि वे यह चाहते हैं कि तुमसे भी बेख़ौफ़ होकर रहें और अपनी क़ौम से भी बेख़ौफ़ होकर रहें। जब कभी उनको शरारत की तरफ़ मुतवज्जह किया जाता है तो वे उसमें जा गिरते हैं, सो ये लोग अगर तुमसे किनारा करने वाले न हों और न तुमसे सलामत-रवी रखें और न अपने हाथों को रोकें तो तुम उनको पकड़ो और क़त्ल करो जहाँ कहीं उनको पाओ। और हमने तुमको उनपर साफ़ हुज्जत दी है। (91) ❖

(पृष्ठ 164 का शेष) 6. यानी जिसका तरीक़ा व मक़सद दोनों शरीअ़त के मुताबिक़ हों।

7. यानी जिसका तरीक़ा या ग़रज़ शरीअ़त के मुताबिक़ न हो।

1. अमर (हुक्म देने) के सीग़े से और "हसीब" से इस हुक्म का ज़ाहिर में वाजिब होना मालूम होता है और फ़ुक़हा का यही मज़हब है। यह सलाम के जवाब का वाजिब होना किफ़ाया के तौर पर है। यानी अगर जमाअ़त में से एक ने भी जवाब दे दिया तो सबके ज़िम्मे से उतर जाएगा। असल जवाब वाजिब है, बाक़ी वैसे ही अल्फ़ाज़ या उनसे अच्छे या बाज़ सूरतों में उनसे कम, यह सब इख़्तियार में है।

2. यह तरकीब जैसे ज़्यादा सच्चा होने की इनकारी है ऐसे ही मुहावरे के एतिबार से सच्चा होने में बराबर होने की भी इनकारी है। (यानी अल्लाह तआ़ला से न कोई ज़्यादा सच्चा हो सकता है और न उनके बराबर सच्चा हो सकता है)।

3. वह बुरा अ़मल इस्लाम से फिर कर दारुल-इस्लाम को बावजूद क़ुदरत के छोड़ देना है, जो कि एक तरह से इस्लाम के इक़रार को छोड़ने की वजह से कुफ़्र की निशानी थी। और हक़ीक़त में तो वे पहले भी मुसलमान न हुए थे और इसी वजह से उनको मुनाफ़िक़ कहा।

4. मतलब यह है कि गुमराह को जो मोमिन कहते हो, हालाँकि मोमिन वह है जिसमें ईमान हो, और उनमें इस वक़्त तक ईमान नहीं है तो क्या अब ईमान पैदा करोगे जो उनको मोमिन कह सको, और यह मुहाल है। पस उनका मोमिन व हिदायत वाला होना मुहाल के साथ जुड़ा हुआ है इसलिए उनको मोमिन कहना मुहाल के हुक्म की तरह है।

5. पस उन लोगों को मोमिन न कहना चाहिए।

6. उस वक़्त हिजरत का वह हुक्म था जो अब शहादतैन (यानी अल्लाह के एक माबूद होने और हुज़ूरे पाक के रसूले बरहक़ होने) के इक़रार का है।

7. मतलब यह है कि किसी हालत में उनसे कोई ताल्लुक़ न रखो, न अमन में दोस्ती न ख़ौफ़ में मदद तलब करना, बल्कि बिलकुल अलग-थलग रहो। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 168 पर)**

व मा का-न लिमुअ्मिनिन् अंय्यक़्तु-ल मुअ्मिनन् इल्ला ख़-तअन् व मन् क़-त-ल मुअ्मिनन् ख़-तअन् फ़-तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मिनतिंव्-व दि-यतुम् मुसल्ल-मतुन् इला अह्लिही इल्ला अंय्यस्सद्दक़ू, फ़-इन् का-न मिन् क़ौमिन् अ़दुव्विल्लकुम् व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मि-नतिन्, व इन् का-न मिन् क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मिसाक़ुन् फ़-दि-यतुम् मुसल्ल-मतुन् इला अह्लिही व तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मि-नतिन् फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु-तताबिअ़ैनि तौब-तम् मिनल्लाहि, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(92)** व मंय्यक़्तुल् मुअ्मिनम् मु-तअ़म्मिदन् फ़-जज़ा-उहू जहन्नमु ख़ालिदन् फ़ीहा व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व ल-अ़-नहू व अ-अ़द्-द लहू अ़ज़ाबन् अ़ज़ीमा **(93)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा ज़रब्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-तबय्यनू व ला तक़ूलू लिमन् अल्क़ा इलैकुमुस्सला-म लस्-त मुअ्मिनन् तब्तग़ू-न अ़-रज़ल् हयातिद्दुन्या फ़-अ़िन्दल्लाहि मग़ानिमु कसीरतुन्, कज़ालि-क कुन्तुम् मिन् क़ब्लु फ़-मन्नल्लाहु अ़लैकुम् फ़-तबय्यनू, इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्मलू-न ख़बीरा **(94)** ला यस्तविल् क़ाअ़िदू-न मिनल् मुअ्मिनी-न ग़ैरु उलिज़्ज़-ररि वल्मुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, फ़ज़्ज़-लल्लाहुल्-मुजाहिदी-न बि-अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अ़लल्-क़ाअ़िदी-न द-र-जतन्, व कुल्लंव्-व-अ़दल्लाहुल्-हुस्ना, व

فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ
فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ
عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿٩١﴾ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا
خَطَأً ۚ وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ
لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ وَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ
رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ
تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٢﴾ وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا
مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَ
لَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَمَ
لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ مَغَانِمُ
كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾ لَّا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

और किसी मोमिन की शान नहीं कि वह किसी मोमिन को (पहल करते हुए) क़त्ल करे लेकिन ग़लती से, और जो शख़्स किसी मोमिन को ग़लती से क़त्ल कर दे तो उसपर एक मुसलमान ग़ुलाम या बाँदी का आज़ाद करना है, और ख़ूँ-बहा है जो उसके ख़ानदान वालों के हवाले कर दी जाए मगर यह कि वे लोग माफ़ कर दें।[1] और अगर वह ऐसी क़ौम से हो जो तुम्हारे मुख़ालिफ़ हैं और वह शख़्स ख़ुद मोमिन है तो एक मुसलमान ग़ुलाम या बाँदी का आज़ाद करना, और अगर वह ऐसी क़ौम से हो कि तुममें और उनमें मुआहदा हो तो ख़ूँ-बहा है जो उसके ख़ानदान वालों के हवाले कर दी जाए और एक मुसलमान ग़ुलाम या बाँदी का आज़ाद करना, फिर जिस शख़्स को न मिले तो लगातार दो महीने के रोज़े हैं तौबा के तौर पर, जो अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर हुई है, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। **(92)** और जो शख़्स किसी मुसलमान को जान-बूझकर क़त्ल कर डाले तो उसकी सज़ा जहन्नम है कि हमेशा-हमेशा को उसमें रहना[2] और उसपर अल्लाह तआला ग़ज़बनाक होंगे और उसको अपनी रहमत से दूर कर देंगे, और उसके लिए बड़ी सज़ा का सामान करेंगे।[3] **(93)** ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में सफ़र किया करो तो (हर काम को) तहक़ीक़ (करके किया) करो, और ऐसे शख़्स को जो कि तुम्हारे सामने इताअ़त ज़ाहिर करे[4] दुनियावी ज़िन्दगी के सामान की ख़्वाहिश में यूँ मत कह दिया करो कि तू मुसलमान नहीं, क्योंकि ख़ुदा के पास बहुत ग़नीमत के माल हैं। पहले तुम भी ऐसे ही थे फिर अल्लाह तआला ने तुमपर एहसान किया सो ग़ौर करो, बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे अ़मल की पूरी ख़बर रखते हैं।[5] **(94)** बराबर नहीं वह मुसलमान जो बिना किसी उज़्र के घर में बैठे रहें[6] और वे लोग जो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करें, अल्लाह तआला ने उन लोगों का दर्जा बहुत ज़्यादा बनाया है जो अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं घर में बैठने वालों के मुक़ाबले में, और अल्लाह तआला ने सबसे अच्छे घर का वायदा कर रखा है। और अल्लाह तआला

(पृष्ठ 166 का शेष) **8.** यानी उनसे मुआहदा हो जाता है।

9. न तो अपनी क़ौम के साथ होकर तुमसे लड़ें और न तुम्हारे साथ होकर अपनी क़ौम से लड़ें, बल्कि उनसे भी सुलह रखें और तुमसे भी सुलह रखें।

10. इन सब अल्फ़ाज़ का मतलब यह है कि सुलह से रहें।

11. यानी इजाज़त नहीं दी।

1. इस आयत में 'ख़ता' यानी ग़लती से मुराद 'अन्जाने में' है।

2. लेकिन अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि यह असली सज़ा जारी न होगी बल्कि ईमान की बरकत से आख़िरकार नजात हो जाएगी। तमाम अहले हक़ मुत्तफ़िक़ हैं कि सिवाय कुफ़्र व शिर्क के कोई चीज़ जहन्नम में हमेशा के लिए रहने का सबब नहीं है।

3. ऊपर मोमिन के क़त्ल पर सख़्त वईद फ़रमाई है, आगे फ़रमाते हैं कि शरीअ़त के अहकाम जारी होने में मोमिन के मोमिन होने के लिए सिर्फ़ ज़ाहिरी इस्लाम काफ़ी है। जो शख़्स इस्लाम का इज़हार करे उसके क़त्ल से हाथ खींच लेना वाजिब है। अन्दाज़ों और हालात की निशानियों से बातिन की तफ़तीश करना और इस्लामी अहकाम के जारी करने में उसके सुबूत का मुन्तज़िर रहना जायज़ नहीं।

4. जैसे कलिमा पढ़ना या मुसलमानों के तरीक़े पर सलाम करना।

5. यह हुक्म सफ़र के साथ ख़ास नहीं।

6. यानी जिहाद में न जाएँ।

फ़ज़्ज़-लल्लाहुल् मुजाहिदी-न अ़लल्-क़ाअ़िदी-न अज्रन् अ़ज़ीमा (95) द-रजातिम् मिन्हु व मग़्फ़ि-रतंव्-व रह्म-तन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा (96) ❖

इन्नल्लज़ी-न तवफ़्फ़ाहुमुल् मलाइ-कतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् क़ालू फ़ी-म कुन्तुम्, क़ालू कुन्ना मुस्तज़्अ़फ़ी-न फ़िल्अर्ज़ि, क़ालू अलम् तकुन् अर्ज़ुल्लाहि वासि-अ़तन् फ़तुहाजिरू फ़ीहा, फ़-उलाइ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु, व साअत् मसीरा (97) इल्लल्-मुस्तज़्अ़फ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्विल्दानि ला यस्ततीअ़ू-न ही-लतंव्-व ला यह्तदू-न सबीला (98) फ़-उलाइ-क अ़सल्लाहु अंय्यअ्फ़ु-व अ़न्हुम्, व कानल्लाहु अ़फ़ुव्वन् ग़फ़ूरा (99) व मंय्युहाजिर् फ़ी सबीलिल्लाहि यजिद् फ़िल्अर्ज़ि मुरा-ग़मन् कसीरंव्-व स-अ़तन्, व मंय्यख़्रुज् मिम्-बैतिही मुहाजिरन् इलल्लाहि व रसूलिही सुम्-म युद्रिक्हुल्-मौतु फ़-क़द् व-क़-अ़ अज्रुहू अ़लल्लाहि, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा (100) ❖

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَ
اَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى وَ
فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٩٥﴾ دَرَجٰتٍ
مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ قَالُوْا كُنَّا
مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً
فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾
اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ
عَنْهُمْ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ
مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ
عَلَى اللّٰهِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ
فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ اِنْ خِفْتُمْ
اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾
وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ

व इज़ा ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तक़्सुरू मिनस्सलाति इन् ख़िफ़्तुम् अंय्यफ़्ति-नकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू, इन्नल्-काफ़िरी-न कानू लकुम् अ़दुव्वम्-मुबीना (101) व इज़ा कुन्-त फ़ीहिम् फ़-अक़म्-त लहुमुस्सला-त फ़ल्तक़ुम् ताइ-फ़तुम् मिन्हुम् म-अ़-क वल्यअ्ख़ुज़ू अस्लि-ह-तहुम्, फ़-इज़ा स-जदू फ़ल्यकूनू मिंव्वरा-इकुम् वल्तअ्ति

ने मुजाहिदीन को घर में बैठने वालों के मुक़ाबले में बड़ा अज्रे अ़ज़ीम दिया है। **(95)** यानी बहुत-से दर्जे जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मिलेंगे और मग़्फ़िरत और रहमत[1] और अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।[2] **(96)** ❖

बेशक जब ऐसे लोगों की जान फ़रिश्ते निकालते हैं जिन्होंने अपने आपको गुनाहगार कर रखा था तो वे फ़रिश्ते (उनसे) कहते हैं कि तुम किस काम में थे? वे कहते हैं कि हम सरज़मीन "यानी अपने मुल्क और ख़ित्ते" में महज़ मग़लूब थे। वे कहते हैं: क्या अल्लाह तआ़ला की ज़मीन कुशादा और फैली हुई न थी, तुमको वतन छोड़ करके उसमें चला जाना चाहिए था, सो उन लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और जाने के लिए वह बुरी जगह है। **(97)** लेकिन जो मर्द और औ़रतें और बच्चे क़ादिर न हों कि न कोई तदबीर कर सकते हैं और न रास्ते से वाक़िफ़ हैं। **(98)** सो उनके लिए उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला माफ़ कर दें, और अल्लाह तआ़ला बड़े माफ़ करने वाले, बड़े मग़्फ़िरत करने वाले हैं।[3] **(99)** और जो शख़्स अल्लाह की राह में हिजरत करेगा[4] तो उसको रू-ए-ज़मीन पर जाने की बहुत जगह मिलेगी और बहुत गुंजाइश, और जो शख़्स अपने घर से इस नीयत से निकल खड़ा हो कि अल्लाह और रसूल की तरफ़ हिजरत करूँगा फिर उसको मौत आ पकड़े तब भी उसका सवाब साबित हो गया अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे, और अल्लाह तआ़ला बड़े मग़्फ़िरत करने वाले हैं बड़ी रहमत वाले हैं। **(100)** ❖

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो[5] सो तुमको इसमें कोई गुनाह न होगा (बल्कि ज़रूरी है) कि तुम नमाज़ को कम कर दो,[6] अगर तुमको यह अन्देशा हो कि तुमको काफ़िर लोग परेशान करेंगे, बिला शुब्हा काफ़िर लोग तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।[7] **(101)** और जब आप उनमें तशरीफ़ रखते हों फिर आप उनको नमाज़ पढ़ाना चाहें तो यूँ चाहिए कि उनमें से एक गिरोह तो आपके साथ खड़े हो जाएँ और वे लोग हथियार ले लें, फिर जब ये लोग सज्दा कर चुकें तो ये लोग तुम्हारे पीछे हो जाएँ और दूसरा गिरोह जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी आ जाए और आपके साथ नमाज़ पढ़ लें, और ये लोग भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार ले लें। काफ़िर लोग (यूँ) चाहते हैं कि अगर तुम अपने हथियारों और सामानों से ग़ाफ़िल हो जाओ तो तुमपर एक बार में हमला कर बैठें। और अगर तुमको

---

1. यानी उन अनेक आमाल की वजह से जो कि मुजाहिद से सादिर होते हैं, सवाब के बहुत-से दर्जे ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से मिलेंगे और गुनाहों की मग़्फ़िरत और रहमत भी, यह सब अज्रे अ़ज़ीम की तफ़सील हुई। वे अनेक आमाल सूरः बराअत के आख़िर में ज़िक्र हुए हैं।
2. ऊपर जिहाद के वाजिब होने का हुक्म था आगे हिजरत के वाजिब होने का ज़िक्र है।
3. ऊपर हिजरत के छोड़ने पर डाँट और धमकी थी आगे हिजरत की तरग़ीब और उसपर दोनों जहाँ की नेक-बख़्ती का वायदा है।
4. हिजरत शुरू इस्लाम में फ़र्ज़ थी और फ़र्ज़ियत के साथ वह ज़ाहिर में ज़रूरी शिआ़र और किसी के मुसलमान होने के लिए सुबूत थी, लेकिन उज़्र की हालत में उसकी फ़र्ज़ियत और शिआ़र व पहचान होना ख़त्म हो जाता था, और इस शिआ़र होने की वजह से उससे बिला उज़्र फिरना इस्लाम से फिर जाने की निशानी थी।
5. जिसकी मिक़दार तीन मन्ज़िल हो (यानी 48 मील)।
6. यानी ज़ोहर व अ़सर व इशा के फ़र्ज़ की रक्अ़त चार की जगह दो पढ़ा करो।
7. जो सफ़र तीन मन्ज़िल से कम हो उसमें पूरी नमाज़ पढ़ी जाती है।

ताइ-फ़तुन् उख़्रा लम् युसल्लू फ़ल्युसल्लू म-अ-क वल्यअ्ख़ुज़ू हिज़्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम् वद्दल्लज़ी-न क-फ़रू लौ तग़्फ़ुलू-न अ़न् अस्लि-हतिकुम् व अम्ति-अ़तिकुम् फ़-यमीलू-न अ़लैकुम् मै-लतंव्वाहि-दतन्, व ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् का-न बिकुम् अज़म्-मिम्-म-तरिन् औ कुन्तुम् मर्ज़ा अन् त-ज़अू अस्लि-ह-तकुम् व ख़ुज़ू हिज़्रकुम्, इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम् मुहीना **(102)** फ़-इज़ा क़ज़ैतुमुस्सला-त फ़ज़्कुरुल्ला-ह क़ियामंव्-व क़ुअूदंव्-व अ़ला जुनूबिकुम् फ़-इज़त्मअ्नन्तुम् फ़-अक़ीमुस्सला-त इन्नस्सला-त कानत् अ़लल् मुअ्मिनी-न किताबम् मौक़ूता **(103)** व ला तहिनू फ़िब्तिग़ा-इल्- क़ौमि, इन् तकूनू तअ्लमू-न फ़-इन्नहुम् यअ्लमू-न कमा तअ्लमू-न व तर्जू-न मिनल्लाहि मा ला यर्जू-न, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(104)** ❖

इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्-हक़्क़ि लि-तह्कु-म बैनन्नासि बिमा अराकल्लाहु, व ला तकुल् लिल्-ख़ाइनी-न ख़सीमा **(105)**

वस्तग़्फ़िरिल्ला-ह, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा **(106)** व ला तुजादिल् अ़निल्लज़ी-न यख़्तानू-न अन्फ़ु-सहुम, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न ख़व्वानन् असीमा **(107)** यस्तख़्फ़ू-न मिनन्नासि व ला यस्तख़्फ़ू-न मिनल्लाहि व हु-व म-अ़हुम् इज़् युबय्यितू-न मा ला यर्ज़ा मिनल्क़ौलि, व कानल्लाहु बिमा यअ्मलू-न मुहीता **(108)** हा-अन्तुम् हा-उला-इ

مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوٓا اَسْلِحَتَهُمْ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ
وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا
حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ
اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً وَ
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى
اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۰۲﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا
وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ اِنَّ الصَّلٰوةَ
كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾ وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ
اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ وَتَرْجُوْنَ مِنَ
اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۰۴﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ
الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ وَلَا تَكُنْ
لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿۱۰۵﴾ وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿۱۰۶﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿۱۰۷﴾ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَ
لَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى

منزل ١

बारिश की वजह से तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो तो तुमको इसमें कुछ गुनाह नहीं कि हथियार उतार रखो और अपना बचाव ले लो, बिला शुब्हा अल्लाह ने काफ़िरों के लिए तौहीन भरी सज़ा तैयार कर रखी है।[1] **(102)** फिर जब तुम उस नमाज़ को अदा कर चुको तो अल्लाह तआला की याद में लग जाओ खड़े भी और लेटे भी और बैठे भी,[2] फिर जब तुम मुत्मइन हो जाओ तो नमाज़ को क़ायदे के मुवाफ़िक़ पढ़ने लगो। यक़ीनन नमाज़ मुसलमानों पर फ़र्ज़ है और वक़्त के साथ महदूद है। **(103)** हिम्मत मत हारो उस मुख़ालिफ़ क़ौम का पीछा करने में, अगर तुम तकलीफ़ में हो तो वे भी तो तकलीफ़ के मारे हैं जैसे तुम तकलीफ़ पाए हुए हो, और तुम अल्लाह तआला से ऐसी-ऐसी चीज़ों की उम्मीद रखते हो कि वे लोग उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक्मत वाले हैं। **(104)** ❖

बेशक हमने आपके पास यह नविश्ता "यानी तहरीर और किताब" भेजा है हक़ीक़त के मुवाफ़िक़ ताकि आप इन लोगों के दरमियान उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला करें जो कि अल्लाह तआला ने आपको बतला दिया है, और आप इन ख़ियानत करने वालों की तरफ़दारी (की बात) न कीजिए।[3] **(105)** और आप इस्तिग़फ़ार फ़रमाइए, बिला शुब्हा अल्लाह तआला बड़े मग्फ़िरत करने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। **(106)** और आप उन लोगों की तरफ़ से कोई जवाबदेही की बात न कीजिए जो कि अपना ही नुक़सान कर रहे हैं, बिला शुब्हा अल्लाह तआला ऐसे शख़्स को नहीं चाहते जो बड़ा ख़ियानत करने वाला, बड़ा गुनाह करने वाला हो। **(107)** जिन लोगों की यह कैफ़ियत है कि आदमियों से तो छुपाते हैं और अल्लाह तआला से नहीं शरमाते, हालाँकि वह उस वक़्त उनके पास होता है जबकि वे अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ गुफ़्तगू के मुताल्लिक़ तदबीरें करते हैं, और अल्लाह तआला उनके सब आमाल को अपने घेरे में लिए हुए हैं। **(108)** हाँ, तुम ऐसे हो कि तुमने दुनियावी ज़िन्दगी में तो उनकी तरफ़ से जवाबदेही की

---

1. सलातुल-ख़ौफ़ (यानी ख़ौफ़ की नमाज़) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद भी मुत्तफ़िक़ा तौर पर शरीअ़त में जायज़ है। जैसे आदमी से ख़ौफ़ के वक़्त यह नमाज़ शरीअ़त में जायज़ रखी गई है ऐसे ही अगर किसी शेर या अज़्दहे वग़ैरह का ख़ौफ़ हो और नमाज़ का वक़्त तंग हो तो उस वक़्त भी जायज़ है, ऐन क़िताल (यानी जंग और लड़ाई) के वक़्त नमाज़ को क़ज़ा कर दिया जाएगा।

2. यानी हर हालत में यहाँ तक कि ऐन लड़ाई और जंग के वक़्त भी दिल से भी और अहकाम के इत्तिबा से भी, कि वह भी ज़िक्र है। चुनाँचे क़िताल (यानी जंग और लड़ाई) में शरीअ़त के ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही करना नाजायज़ है। ग़रज़ नमाज़ तो ख़त्म हुई ज़िक्र ख़त्म नहीं होता, नमाज़ में तो कमी हो गई थी लेकिन यह अपनी जगह बरक़रार है।

3. बनू अबीरक़ एक ख़ानदान था, उसमें एक शख़्स बशीर नामी मुनाफ़िक़ था। उसने हज़रत रिफ़ाआ़ की बुख़ारी (यानी बावरची ख़ाने) में नक़ब देकर कुछ आटा और कुछ हथियार जो उसमें रखे थे चुरा लिए। सुबह को पास-पड़ौस में तलाश किया और बाज़ मज़बूत अन्दाज़ों से बशीर पर शुब्हा हुआ। बनू अबीरक़ ने जो कि बशीर के शरीके हाल थे अपने बचाव के लिए हज़रत लबीद का नाम ले दिया। गर्ज़ हज़रत रिफ़ाआ़ ने अपने भतीजे क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजकर इस वाक़िए की इत्तिला दी, आपने तहक़ीक़ का वायदा फ़रमाया। बनू अबीरक़ को जो यह ख़बर हुई तो एक शख़्स असीर नाम का जो उसी ख़ानदान का था सब उसके पास आए और सब मश्विरा करके जमा होकर और साथ में कुछ मौहल्ले वालों को लेकर जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत रिफ़ाआ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शिकायत की, कि बिना गवाहों के एक मुसलमान और दीनदार घराने पर चोरी की तोहमत लगाते हैं। और मक़सद उनका यह था **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 174 पर)**

जादल्तुम् अ़न्हुम् फ़िल्हयातिद्दुन्या, फ़-मंय्युजादिलुल्ला-ह अ़न्हुम् यौमिल्-क़ियामति अम्-मंय्यकूनु अ़लैहिम् वकीला **(109)** व मंय्यअ़्मल् सूअन् औ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्-म यस्तग़्फ़िरिल्ला-ह यजिदिल्ला-ह ग़फ़ूररहीमा **(110)** व मंय्यक्सिब् इस्मन् फ़-इन्नमा यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(111)** व मंय्यक्सिब् ख़ती-अतन् औ इस्मन् सुम-म् यर्मि बिही बरीअन् फ़-क़दिह्त-म-ल बुह्तानंव्-व इस्मम्-मुबीना **(112)** ❖

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क व रह्मतुहू ल-हम्मत्ता-इ-फ़तुम् मिन्हुम् अंय्युज़िल्लू-क, व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम् व मा यज़ुर्रून-क मिन् शैइन्, व अन्ज़लल्लाहु अ़लैकल्-किता-ब वल्हिक्म-त व अ़ल्ल-म-क मा लम् तकुन् तअ़्लमु, व का-न फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क अ़ज़ीमा ▲ **(113)** ला ख़ै-र फ़ी कसीरिम् मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अ-म-र बि-स-द-क़तिन् औ मअ़्रूफ़िन् औ इस्लाहिम् बैनन्नासि, व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालिकब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि फ़सौ-फ़ नुअ़्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा **(114)** व मंय्युशाक़िक़िर्रसू-ल मिम्-बअ़्दि मा तबय्य-न लहुल्हुदा व यत्तबिअ़् ग़ै-र सबीलिल् मुअ़्मिनी-न नुवल्लिही मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्न-म, व साअत् मसीरा **(115)** ❖

इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लि-मंय्यशा-उ, व

والمحصنت ٥ ٨٨ النسآء ٤

مِنَ الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿١٠٨﴾ هٰٓاَنْتُمْ
هٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١٠٩﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ
سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾
وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا
حَكِيْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْۗـــَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗـــــًٔا فَقَدِ
احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ
لَهَمَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَھُمْ
وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ۭ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾
لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىھُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ
اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ۭ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ
اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾ وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ
مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ
اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَمَنْ يُّشْرِكْ

منزل ١

बातें कर लीं, सो अल्लाह तआला के सामने क़ियामत के दिन उनकी तरफ़ से कौन जवाबदेही करेगा, या वह कौन शख़्स होगा जो उनका काम बनाने वाला होगा। **(109)** जो शख़्स कोई बुराई करे या अपनी जान को नुक़सान पहुँचाए, फिर अल्लाह तआला से माफ़ी चाहे तो वह अल्लाह तआला को बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला पाएगा। **(110)** और जो शख़्स कुछ गुनाह का काम करता है तो वह फ़क़त अपनी ज़ात पर उसका असर पहुँचाता है और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक्मत वाले हैं। **(111)** और जो शख़्स कोई छोटा गुनाह करे या बड़ा गुनाह, फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने बड़ा भारी बोहतान और खुला गुनाह अपने ऊपर लादा।[1] **(112)** ❖

और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल व रहमत न हो तो उन लोगों में से एक गिरोह ने तो आपको ग़लती में डाल देने का इरादा कर लिया था,[2] और ग़लती में नहीं डाल सकते लेकिन अपनी जानों को, और आपको ज़र्रा बराबर नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, और अल्लाह तआला ने आप पर किताब और इल्म की बातें नाज़िल फ़रमाईं और आपको वे-वे बातें बतलाई हैं जो आप न जानते थे, और आप पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है। ▲ **(113)** आम लोगों कि अक्सर सरगोशियों "यानी कानाफूसी और चुपके-चुपके बातें करने" में ख़ैर नहीं होती। हाँ, मगर उनकी जो ऐसे हैं कि ख़ैरात की या और किसी नेक काम की[3] या लोगों में आपस में सुधार कर देने की तरग़ीब देते हैं, और जो शख़्स अल्लाह तआला को राज़ी करने के वास्ते यह काम करेगा सो हम उसको जल्द ही बड़ा अज्र अता फ़रमाएँगे। **(114)** और जो शख़्स रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुख़ालफ़त करेगा इसके बाद कि उसको हक़ बात ज़ाहिर हो चुकी थी और मुसलमानों का रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते पर हो लिया तो हम उसको जो कुछ वह करता है करने देंगे और उसको जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और वह जाने की बुरी जगह है। **(115)** ❖

(पृष्ठ 172 का शेष) कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मुक़द्दमे में उनकी तरफ़दारी करें। आपने यह तो नहीं किया लेकिन इतना हुआ कि हज़रत क़तादा जो ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि तुम ऐसे लोगों पर बे-सनद क्यों इल्ज़ाम लगाते हो? उन्होंने आकर अपने चचा (रिफ़ाआ) से कहा। वह अल्लाह पर भरोसा करके ख़ामोश हो गए। इसपर ये अगली आयतें दो रुकू के क़रीब तक नाज़िल हुईं। ग़र्ज़ चोरी साबित हुई और माल बरामद हुआ और मालिक को दिया गया तो बशीर नाखुश होकर इस्लाम से फिर गया और मक्का जाकर मुश्रिकों में जा मिला, इसपर आख़िर की आयतें नाज़िल हुईं: 'व मंय्युशाक़िक़िर्रसू-ल' आख़िर तक।

1. जैसे बशीर ने किया कि खुद तो चोरी की और एक नेक-बख़्त बुज़ुर्ग आदमी लबीद के ज़िम्मे रख दी।
2. लेकिन ख़ुदा के फ़ज़्ल से उनकी लच्छेदार बातों का आप पर कोई असर नहीं हुआ और आइन्दा भी न होगा।
3. नेक काम में जो कि 'मारूफ़' का तर्जुमा है, वे तमाम उमूर आ गए जो नफ़ा देने वाले हों, चाहे दीनी हों या दुनियावी हों, मगर शरीअत के मुताबिक़ यानी जायज़ हों। और अगरचे इसमें सदक़ा भी दाख़िल था लेकिन नफ़्स पर भारी होने की वजह से उसका ज़्यादा एहतिमाम फ़रमाया।

मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम् बअ़ीदा **(116)** इंय्यद्‌ऊ़-न मिन् दूनिही इल्ला इनासन् व इंय्यद्‌ऊ़-न इल्ला शैतानम् मरीदा **(117)** ल-अ़-नहुल्लाहु ✣ व क़ा-ल ल-अत्तख़िज़न्-न मिन् अ़िबादि-क नसीबम् मफ़्रूज़ा **(118)** व ल-उज़िल्लन्नहुम् व ल-उमन्नियन्नहुम् व ल-आमुरन्नहुम् फ़-लयुबत्तिकुन्-न आज़ानल्-अन्आ़मि व ल-आमुरन्नहुम् फ़-लयुग़य्यिरुन्-न ख़ल्क़ल्लाहि, व मंय्यत्तख़िज़िश्शैता-न वलिय्यम् मिन् दूनिल्लाहि फ़-क़द् ख़सि-र ख़ुस्रानम् मुबीना **(119)** यअ़िदुहुम् व युमन्नीहिम्, व मा यअ़िदुहुमुश्शैतानु इल्ला ग़ुरूरा **(120)** उलाइ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु व ला यजिदू-न अ़न्हा महीसा **(121)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, वअ़्दल्लाहि हक़्क़न्, व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि क़ीला **(122)** लै-स बि-अमानिय्यिकुम् व ला अमानिय्यि अह्लिल्-किताबि, मंय्यअ़्मल् सूअंय्-युज्-ज़ बिही व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(123)** व मंय्यअ़्मल् मिनस्सालिहाति मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त व ला युज़्लमू-न नक़ीरा **(124)** व मन् अह्सनु दीनम् मिम्-मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुंव्-वत्त-ब-अ़ मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, वत्त-ख़ज़ल्लाहु इब्राही-म ख़लीला **(125)** व लिल्लाहि मा

والمحصنت ٥ | ٨٩ | النسآء ٤

بالله فقد ضل ضللا بعيدا ۝ ان يدعون من دونه
الا انثا وان يدعون الا شيطنا مريدا ۝ لعنه الله وقال
لاتخذن من عبادك نصيبا مفروضا ۝ ولاضلنهم و
لامنينهم ولامرنهم فليبتكن اذان الانعام ولامرنهم
فليغيرن خلق الله ومن يتخذ الشيطن وليا من دون
الله فقد خسر خسرانا مبينا ۝ يعدهم ويمنيهم وما
يعدهم الشيطن الا غرورا ۝ اولئك ماوىهم جهنم ولا
يجدون عنها محيصا ۝ والذين امنوا وعملوا الصلحت
سندخلهم جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها
ابدا وعد الله حقا ومن اصدق من الله قيلا ۝ ليس
بامانيكم ولا اماني اهل الكتب من يعمل سوءا يجز به و
لا يجد له من دون الله وليا ولا نصيرا ۝ ومن يعمل
من الصلحت من ذكر او انثى وهو مؤمن فاولئك يدخلون
الجنة ولا يظلمون نقيرا ۝ ومن احسن دينا ممن اسلم
وجهه لله وهو محسن واتبع ملة ابرهيم حنيفا واتخذ
الله ابرهيم خليلا ۝ ولله ما في السموت وما في الارض

وقف لازم

منزل ١

✣ व. लाज़िम

बेशक अल्लाह तआ़ला इस बात को न बख़्शेंगे कि उनके साथ किसी को शरीक क़रार दिया जाए और इसके अ़लावा जितने गुनाह हैं जिसके लिए मन्ज़ूर होगा वे गुनाह बख़्श देंगे। और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक ठहराता है वह बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़ा।[1] **(116)** ये लोग ख़ुदा तआ़ला को छोड़कर चन्द ज़नानी चीज़ों की इबादत करते हैं[2] और सिर्फ़ शैतान की इबादत करते हैं जो कि हुक्म से बाहर है। **(117)** जिसको ख़ुदा तआ़ला ने अपनी रहमत से दूर डाल रखा है, और जिसने (यूँ) कहा था कि मैं ज़रूर तेरे बन्दों से अपना (इताअ़त का) मुक़र्रर हिस्सा लूँगा। **(118)** और में उनको गुमराह करूँगा और मैं उनको हवसें दिलाऊँगा, और मैं उनको तालीम दूँगा जिससे वे चौपायों के कानों को तराशा करेंगे, और मैं उनको तालीम दूँगा जिससे वे अल्लाह तआ़ला की बनाई हुई सूरत को बिगाड़ा करेंगे,[3] और जो शख़्स ख़ुदा तआ़ला को छोड़कर शैतान को अपना साथी बना लेगा[4] वह खुले नुक़सान में पड़ जाएगा। **(119)** (शैतान) उन लोगों से वायदा किया करता है और उनको हवसें दिलाता है, और शैतान उनसे सिर्फ़ झूठे वायदे करता है। **(120)** ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और उससे कहीं बचने की जगह न पाएँगे। **(121)** और जो लोग ईमान ले आए और अच्छे काम किए हम उनको जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे कि उनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। ख़ुदा तआ़ला ने वायदा फ़रमाया है (और) सच्चा वायदा (फ़रमाया है) और ख़ुदा तआ़ला से ज़्यादा किसका कहना सही होगा। **(122)** न तुम्हारी तमन्नाओं से काम चलता है और न अहले किताब की तमन्नाओं से, जो शख़्स कोई बुरा काम करेगा वह उसके बदले सज़ा दिया जाएगा और उस शख़्स को ख़ुदा तआ़ला के सिवा न कोई यार मिलेगा न मददगार मिलेगा। **(123)** और जो शख़्स कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औ़रत, शर्त यह है कि मोमिन हो,[5] सो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनपर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। **(124)** और ऐसे शख़्स से ज़्यादा अच्छा किसका दीन होगा जो कि अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ झुका दे[6] और वह मुख़्लिस भी हो[7] और वह मिल्लते इब्राहीम का इत्तिबा करे[8] जिसमें टेढ़ का नाम नहीं, और अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम को अपना ख़ालिस दोस्त बनाया था।[9] **(125)** और अल्लाह तआ़ला ही की

1. चूँकि शिर्क करने वाले ने अल्लाह तआ़ला (जो कि सबका पैदा करने वाला है) की तौहीन की इसलिए ऐसी ही सज़ा का हक़दार होगा। बख़िलाफ़ दूसरे गुनाहों के कि कुछ तो गुमराही हैं मगर तौहीद के ख़िलाफ़ और उससे बईद नहीं इसलिए मग्फ़िरत के क़ाबिल क़रार दिए गए।
2. ज़नानी चीज़ों से मुराद बाज़े बुत हैं जिनके नाम और सूरतें औ़रतों की-सी थीं, और उनको ज़ेवर वग़ैरह भी पहनाते थे।
3. यानी ऐसे शैतान की इताअ़त करते हैं जो एक तो यह कि नाफ़रमान और बाग़ी है, दूसरे नाफ़रमानी और बग़ावत की वजह से मलऊन है, तीसरे इनसान का दुश्मन है जैसा कि उसके अक़्वाल से साफ़ ज़ाहिर है।
4. यानी ख़ुदा तआ़ला की इताअ़त न करेगा बल्कि शैतान की बात मानेगा।
5. यह जो मोमिन की क़ैद लगाई गई इसका मिस्दाक़ हर फ़िर्क़ा नहीं, बल्कि सिर्फ़ वह फ़िर्क़ा है जिसका दीन ख़ुदा तआ़ला के नज़दीक मक़्बूल होने में सबसे अच्छा हो, और ऐसा फ़िर्क़ा सिर्फ़ इस्लाम के मानने वाले हैं, जिसकी दलील यह है कि उनके अन्दर ये सिफ़तें हैं: मुकम्मल फ़रमाँबरदारी, इख़्लास, मिल्लते इब्राहीम (यानी इस्लाम) की पैरवी।
6. यानी फ़रमाँबर्दारी इख़्तियार करे अ़क़ीदों में भी और आमाल में भी।
7. दिल से फ़रमाँबर्दारी इख़्तियार की हो, ख़ाली मस्लहत से दिखावे के तौर पर न हो।
8. मिल्लते इब्राहीमी यानी इस्लाम की पैरवी करे।
9. ख़लील होना आला दर्जे का तक़र्रुब व मक़बूलियत है, और हज़रत जुनदुब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझको भी ख़लील बनाया है जैसा कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को बनाया था।

फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइम् मुहीता **(126)** ❖

व यस्तफ़्तून-क फ़िन्निसा-इ, क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़ीहिन्-न व मा युत्ला अ़लैकुम् फ़िल्-किताबि फ़ी यतामन्निसा-इल्लाती ला तुअ्तूनहुन्-न मा कुति-ब लहुन्-न व तर्ग़बू-न अन् तन्किहूहुन्-न वल्-मुस्तज़्अ़फ़ी-न मिनल्-विल्दानि व अन् तक़ूमू लिल्यतामा बिल्क़िस्ति, व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिही अ़लीमा **(127)** व इनिम्-र-अतुन् ख़ाफ़त् मिम्-बअ़्लिहा नुशूज़न् औ इअ़्राज़न् फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा अंय्युस्लिहा बैनहुमा सुल्हन्, वस्सुल्हु ख़ैरुन्, व उह्ज़ि-रतिल् अन्फ़ुसुश्शुह्-ह, व इन् तुह्सिनू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्मलू-न ख़बीरा **(128)** व लन् तस्ततीअ़ू अन् तअ़्दिलू बैनन्निसा-इ व लौ हरस्तुम् फ़ला तमीलू कुल्लल्-मैलि फ़-त-ज़रूहा कल्-मुअ़ल्ल-क़ति, व इन् तुस्लिहू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूररहीमा **(129)** व इंय्य-तफ़र्रक़ा युग़्निल्लाहु कुल्लम्-मिन् स-अ़तिही, व कानल्लाहु वासिअ़न् हकीमा **(130)** व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व ल-क़द् वस्सैनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व इय्याकुम् अनित्तक़ुल्ला-ह, व इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु ग़निय्यन् हमीदा **(131)** व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला **(132)** इंय्यशअ्

النسآء ٤ ٩٠ والمحصنٰت ٥

وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ۝ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ قُلِ
اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى
النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ
تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَاَنْ تَقُوْمُوْا
لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ
عَلِيْمًا ۝ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ
وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ
النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا
كَالْمُعَلَّقَةِ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝
وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا
حَكِيْمًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ وَاِنْ
تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ
غَنِيًّا حَمِيْدًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَكَفٰى

منزل ١

मिल्क है जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह तआला तमाम चीज़ों को घेरे में लिए हुए हैं।[1] **(126)** ❖

और लोग आपसे औरतों के बारे में हुक्म मालूम करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआला उनके बारे में हुक्म देते हैं और वे आयतें भी जो कुरआन के अन्दर तुमको पढ़कर सुनाई जाया करती हैं, जो कि उन यतीम औरतों के बारे में हैं जिनको जो उनका हक़ मुक़र्रर है नहीं देते हो, और उनके साथ निकाह करने से नफ़रत करते हो, और कमज़ोर बच्चों के बारे में और इस बारे में कि यतीमों की कारगुज़ारी इन्साफ़ के साथ करो, और जो नेक काम करोगे सो बेशक अल्लाह तआला उसको ख़ूब जानते हैं।[2] **(127)** और अगर किसी औरत को अपने शौहर से ज़्यादा आशंका बद-दिमाग़ी या बेपरवाई की हो, सो दोनों को इस बात में कोई गुनाह नहीं कि दोनों आपस में एक ख़ास तरीक़े पर सुलह कर लें, और यह सुलह बेहतर है, और नफ़्सों के अन्दर लालच भरा रहता है, और अगर तुम अच्छा बर्ताव रखो और एहतियात रखो तो बेशक हक़ तआला तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं। **(128)** और तुमसे यह तो कभी न हो सकेगा कि सब बीवियों में बराबरी रखो अगरचे तुम्हारा कितना ही जी चाहे, तो तुम बिलकुल एक ही तरफ़ न ढल जाओ जिससे उसको ऐसा कर दो जैसे कोई अधर में लटकी हो,[3] और अगर सुधार कर लो और एहतियात रखो तो बेशक अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। **(129)** और अगर दोनों मियाँ-बीवी जुदा हो जाएँ तो अल्लाह तआला अपनी वुसुअ़त से हर एक को ज़रूरत से फ़ारिग़ कर देगा, और अल्लाह तआला बड़ी वुसुअ़त वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। **(130)** और अल्लाह तआला की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं,[4] और वाक़ई हमने उन लोगों को भी हुक्म दिया था जिनको तुमसे पहले किताब मिली थी और तुमको भी कि अल्लाह तआला से डरो,[5] और अगर तुम नाशुक्री करोगे[6] तो अल्लाह तआला की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं, और अल्लाह तआला किसी के मोहताज नहीं ख़ुद अपनी ज़ात में तारीफ़ के लायक़ हैं। **(131)** और अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं, और अल्लाह तआला काफ़ी कारसाज़ हैं। **(132)** अगर उनको

1. आयत नम्बर 123 से 126 तक की आयतों का ख़ुलासा यह हुआ कि सिर्फ़ तमन्नाओं से काम नहीं चलता और मुसलमान सिर्फ़ तमन्नाओं पर नहीं हैं बल्कि काम करते हैं। और दूसरे फ़िर्क़े जब इस्लाम न लाए जिसपर सारा काम मौक़ूफ़ है तो बस सिर्फ़ तमन्नाओं पर हुए।
2. मतलब का ख़ुलासा यह हुआ कि जो आयतें इस बारे में पहले आ चुकी हैं जिनको तुम वक़्त-वक़्त पर सुनते रहते हो, वे उन अहकाम के बारे में अब भी अ़मल करने के लिए वाजिब और ज़रूरी हैं, कोई नया हुक्म नहीं दिया जाता।
3. यानी न तो उसके हुक़ूक़ अदा किए जाएँ कि शौहर वाली समझी जाए और न उसको तलाक़ दी जाए कि बेशौहर वाली कही जाए।
4. तो ऐसे मालिक के अहकाम मानना बहुत ही ज़रूरी है।
5. इसको तक़्वा कहते हैं जिसमें तमाम अहकाम की मुवाफ़क़त दाख़िल है।
6. यानी अहकाम की मुख़ालफ़त करोगे।

युज़्हिब्कुम् अय्युहन्नासु व यअ्ति बिआ-ख़री-न, व कानल्लाहु अ़ला ज़ालि-क क़दीरा **(133)** मन् का-न युरीदु सवाबद्दुन्या फ़-अ़िन्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या वल्आख़ि-रति, व कानल्लाहु समीअ़म्-बसीरा **(134)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न बिल्क़िस्ति शु-हदा-अ लिल्लाहि व लौ अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अविल्-वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न इंय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा, फ़ला तत्तबिअ़ुल्-हवा अन् तअ़्दिलू व इन् तल्वू औ तुअ़्रिज़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्मलू-न ख़बीरा **(135)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वल्-किताबिल्लज़ी नज़्ज़-ल अ़ला रसूलिही वल्-किताबिल्-लज़ी अन्ज़-ल मिन् क़ब्लु, व मंय्यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल्यौमिल्-आख़िरि फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-बअ़ीदा **(136)** इन्नल्लज़ी-न आमनू सुम्-म क-फ़रू सुम्-म आमनू सुम्-म क-फ़रू सुम्मज़्-दादू कुफ़्रल्लम् यकुनिल्लाहु लि-यग्फ़ि-र लहुम् व ला लि-यह्दि-यहुम् सबीला **(137)** बश्शिरिल्-मुनाफ़िक़ी-न बिअन्-न लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा **(138)** अल्लज़ी-न यत्तख़िज़ूनल्- काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न, अ-यब्तग़ू-न अ़िन्दहुमुल्-अ़िज़्ज़-त फ़-इन्नल्-अ़िज़्ज़-त लिल्लाहि जमीआ़ **(139)** व क़द् नज़्ज़-ल अ़लैकुम् फ़िल्किताबि अन् इज़ा समिअ़्तुम् आयातिल्लाहि युक्फ़रु बिहा व युस्तह्ज़उ बिहा फ़ला तक़्अ़ुदू म-अ़हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही इन्नकुम्

بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاۗءَ لِلّٰهِ
وَلَوْ عَلٰٓي اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا
اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۣ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ
وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ
نَزَّلَ عَلٰي رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ
يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ
اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ۝ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمَۨا ۝ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ
اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۝ وَقَدْ نَزَّلَ
عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ

मन्ज़ूर हो तो ऐ लोगो! तुम सबको फ़ना कर दें और दूसरों को मौजूद कर दें, और अल्लाह तआ़ला इसपर पूरी क़ुदरत रखते हैं। **(133)** जो शख़्स दुनिया का मुआ़वज़ा चाहता हो तो अल्लाह तआ़ला के पास तो दुनिया और आख़िरत दोनों का मुआ़वज़ा है, और अल्लाह तआ़ला बड़े सुनने वाले, बड़े देखने वाले हैं।[1] **(134)** ❖

ऐ ईमान वालो! इन्साफ़ पर ख़ूब क़ायम रहने वाले, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले रहो, अगरचे अपनी ही ज़ात पर हो[2] या कि माँ-बाप और रिश्तेदारों के मुक़ाबले में हो, वह शख़्स अगर अमीर है तो, और ग़रीब है तो, दोनों के साथ अल्लाह तआ़ला को ज़्यादा ताल्लुक़ है,[3] सो तुम नफ़्स की ख़्वाहिश की पैरवी मत करना, कभी तुम हक़ से हट जाओ, और अगर तुम कज-बयानी "यानी ग़लत और ख़िलाफ़े हक़ीक़त बयान" करोगे या किनारा करो और बचोगे तो बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं। **(135)** ऐ ईमान वालो![4] तुम एतिक़ाद रखो अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ, और उस किताब के साथ जो उसने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाई, और उन किताबों के साथ जो कि पहले नाज़िल हो चुकी हैं। और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला का इनकार करे और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और क़ियामत के दिन का तो वह शख़्स गुमराही में बड़ी दूर जा पड़ा। **(136)** बेशक जो लोग मुसलमान हुए फिर काफ़िर हो गए, फिर मुसलमान हुए फिर काफ़िर हो गए, फिर कुफ़्र में बढ़ते चले गए,[5] अल्लाह तआ़ला ऐसों को हरगिज़ न बख़्शेंगे और न उनको (मन्ज़िले मक़सूद यानी जन्नत का) रास्ता दिखलाएँगे।[6] **(137)** मुनाफ़िक़ों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए इस बात की कि उनके वास्ते बड़ी दर्दनाक सज़ा है। **(138)** जिनकी यह हालत है कि काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं मुसलमानों को छोड़कर। क्या उनके पास इज़्ज़त वाले रहना चाहते हैं, सो ऐज़ाज़ "यानी इज़्ज़त और सम्मान" तो सारा ख़ुदा तआ़ला के क़ब्ज़े में है।[7] **(139)** और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे पास यह फ़रमान भेज चुका है कि जब अल्लाह के अहकाम के साथ मज़ाक़-ठट्ठा और कुफ़्र होता हुआ सुनो तो उन लोगों के पास मत बैठो जब तक कि वे कोई और बात शुरू न कर दें[8] कि उस हालत में तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे,[9] यक़ीनन अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ों को और काफ़िरों को सबको दोज़ख़ में जमा कर देंगे। **(140)** वे ऐसे हैं कि तुमपर मुसीबत पड़ने के मुन्तज़िर रहते हैं, फिर अगर तुम्हारी

---

1. वे सबकी बातों और दरख़्वास्तों को सुनते हैं दुनिया की हों या दीन की, और सबकी नीयतों को देखते हैं। पस आख़िरत के चाहने वालों को सवाब देंगे और दुनिया के चाहने वालों को आख़िरत में महरूम रखेंगे, पस आख़िरत ही की नीयत और दरख़्वास्त करनी चाहिए। अलबत्ता दुनिया की हाजत मुस्तक़िल तौर पर माँगने में हर्ज नहीं, लेकिन इबादत में यह इरादा न करे।
2. इसको इक़रार कहते हैं।
3. यानी गवाही के वक़्त यह ख़्याल न करो कि जिसके मुक़ाबले में हम गवाही दे रहे हैं यह अमीर है, इसको नफ़ा पहुँचाना चाहिए ताकि इससे बेमुरव्वती न हो, या यह कि यह ग़रीब है इसका कैसे नुक़सान कर दें। तुम किसी की अमीरी-ग़रीबी को न देखो, क्योंकि उनसे तुम्हारा ताल्लुक़ जिस क़द्र है वह भी अल्लाह तआ़ला का दिया हुआ है और अल्लाह तआ़ला को जो ताल्लुक़ है वह तुम्हारा दिया हुआ नहीं। फिर जब बावजूद मज़बूत ताल्लुक़ के अल्लाह तआ़ला ने उनकी मस्लहत इसमें रखी है कि हक़ का इज़हार किया जाए तो तुम कमज़ोर ताल्लुक़ पर उनकी एक आरज़ी (यानी अस्थाई) मस्लहत का क्यों ख़्याल करते हो।
4. यानी जो मुख़्तसर तौर पर ईमान लाकर मोमिनों की जमाअ़त में दाख़िल हो चुके हैं।
5. यानी कुफ़्र पर मरते दम तक जमे रहे और क़ायम रहे।
6. क्योंकि मग़्फ़िरत और जन्नत के लिए ईमान पर मौत शर्त है।
7. चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने जल्द ही मुसलमानों के हाथों सबको ज़लील व रुस्वा फ़रमा दिया।
8. यह मज़ाक़-ठट्ठा करने वाले मक्का में मुश्रिकीन थे और मदीने में यहूद तो खुलेआ़म और मुनाफ़िक़ लोग सिर्फ़ ग़रीब व कमज़ोर मुसलमानों के सामने। पस जिस तरह वहाँ मुश्रिकीन के साथ उठना-बैठना ऐसे वक़्त में मना था, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 182 पर)

इज़म्-मिस्लुहुम्, इन्नल्ला-ह जामिअुल्- मुनाफ़िक़ी-न वल्काफ़िरी-न फ़ी जहन्न-म जमीआ (140) अल्लज़ी-न य-तरब्बसू-न बिकुम् फ़-इन् का-न लकुम् फ़त्हुम् मिनल्लाहि क़ालू अलम् नकुम् म-अ़कुम् व इन् का-न लिल्काफ़िरी-न नसीबुन् क़ालू अलम् नस्तह्विज़् अ़लैकुम् व नम्नअ़्कुम् मिनल्- मुअ्मिनी-न, फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति, व लंय्यज्-अ़लल्लाहु लिल्काफ़िरी-न अलल्-मुअ्मिनी-न सबीला (141) ❖

इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न युख़ादिअूनल्ला-ह व हु-व ख़ादिअुहुम् व इज़ा क़ामू इलस्-सलाति क़ामू कुसाला युराऊनन्ना-स व ला यज़्कुरूनल्ला-ह इल्ला क़लीला (142) मुज़ब्ज़बी-न बै-न ज़ालि-क ला इला हा-उला-इ व ला इला हा-उला-इ, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू सबीला (143) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल् मुअ्मिनी-न, अतुरीदू-न अन् तज्अ़लू लिल्लाहि अ़लैकुम् सुल्तानम् मुबीना (144) इन्नल् मुनाफ़िक़ी-न फ़िद्दर्किल्-अस्फ़लि मिनन्नारि व लन् तजि-द लहुम् नसीरा (145) इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू वअ़्त-समू बिल्लाहि व अख़्लसू दीनहुम् लिल्लाहि फ़-उलाइ-क मअ़ल्-मुअ्मिनी-न, व सौ-फ़ युअ्तिल्लाहुल् मुअ्मिनी-न अज्रन् अ़ज़ीमा (146) मा यफ़्अ़लुल्लाहु बि-अ़ज़ाबिकुम् इन् शकर्तुम् व आमन्तुम्, व कानल्लाहु शाकिरन् अ़लीमा (147)

بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ
إِنَّكُمْ إِذًا مِثْلُهُمْ إِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْكٰفِرِينَ فِي جَهَنَّمَ
جَمِيعًا ۝ الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِنَ اللّٰهِ
قَالُوا أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ
نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَنْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۝
إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ يُخٰدِعُونَ اللّٰهَ وَهُوَ خٰدِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى
الصَّلٰوةِ قَامُوا كُسَالٰى يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللّٰهَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝ مُذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذٰلِكَ لَا إِلٰى هٰؤُلَاءِ وَلَا إِلٰى
هٰؤُلَاءِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝ يٰأَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ
أَتُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُبِينًا ۝ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ
فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ۝ إِلَّا الَّذِينَ
تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللّٰهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلّٰهِ فَأُولٰئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ مَا
يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۝

फ़त्ह अल्लाह की तरफ़ से हो गई तो बातें बनाते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे, और अगर काफ़िरों को कुछ हिस्सा मिल गया तो बातें बनाते हैं कि क्या हम तुमपर ग़ालिब न आने लगे थे और क्या हमने तुमको मुसलमानों से बचा नहीं लिया। सो अल्लाह तआ़ला तुम्हारा और उनका क़ियामत में (अ़मली) फ़ैसला फ़रमा देंगे, और (उस फ़ैसले में) अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को हरगिज़ मुसलमानों के मुक़ाबले में ग़ालिब न फ़रमाएँगे। **(141)** ❖

बिला शुब्हा मुनाफ़िक़ लोग चालबाज़ी करते हैं अल्लाह तआ़ला से, हालाँकि अल्लाह तआ़ला उस चाल की सज़ा उनको देने वाले हैं। और जब नमाज़ को खड़े होते हैं तो बहुत ही सुस्ती के साथ खड़े होते हैं[1] सिर्फ़ आदमियों को दिखलाते हैं, और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र भी नहीं करते मगर बहुत ही मुख़्तसर।[2] **(142)** लटक रहे हैं दोनों के दरमियान में, न इधर न उधर,[3] और जिसको अल्लाह तआ़ला गुमराही में डाल दें ऐसे शख़्स के लिए कोई सबील न पाओगे।[4] **(143)** ऐ ईमान वालो! तुम मोमिनों को छोड़कर काफ़िरों को[5] दोस्त मत बनाओ, क्या तुम यूँ चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह तआ़ला की साफ़ हुज्जत क़ायम कर लो।[6] **(144)** बेशक मुनाफ़िक़ लोग दोज़ख़ के सबसे नीचे के तबक़े में जाएँगे, और तू हरगिज़ उनका कोई मददगार न पाएगा।[7] **(145)** लेकिन जो लोग तौबा कर लें और सुधार कर लें और अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखें और अपने दीन को ख़ालिस अल्लाह ही के लिए किया करें, तो ये लोग मोमिनों के साथ होंगे, और मोमिनों को अल्लाह तआ़ला बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाएँगे। **(146)** (और ऐ मुनाफ़िक़ो!) अल्लाह तआ़ला तुमको सज़ा देकर क्या करेंगे अगर तुम शुक्र गुज़ारी करो और ईमान ले आओ, और अल्लाह तआ़ला बड़ी क़द्र करने वाले और ख़ूब जानने वाले हैं। **(147)**

(पृष्ठ 180 का शेष) यहाँ यहूद और मुनाफ़िक़ों के साथ उठने-बैठने से मना किया गया है।

9. अहले बातिल के साथ उठने-बैठने की चन्द सूरतें हैं। अव्वल उनकी कुफ़्र भरी और ख़िलाफ़े इस्लाम बातों और आमाल पर रज़ामन्दी के साथ, यह कुफ़्र है। दूसरे कुफ़्रियात के इज़हार के वक़्त कराहत यानी नागवारी के साथ, मगर बिना किसी उज़्र के, यह फ़िस्क़ है। तीसरे किसी दुनियावी ज़रूरत के वास्ते, यह मुबाह (यानी जायज़ और गुन्जाइश रखता) है। चौथे अहकाम की तब्लीग़ के लिए, यह इबादत है। पाँचवे मजबूरी और बेइख़्तियारी के साथ, इसमें माज़ूर है।

1. जिस सुस्ती की यहाँ मज़म्मत (यानी निंदा) है वह एतिक़ादी सुस्ती है, और जो बावजूद एतिक़ाद सही होने के सुस्ती हो वह इससे ख़ारिज है। फिर अगर किसी उज़्र से हो जैसे बीमारी व थकन या नींद के ग़ल्बे से, तब तो क़ाबिले मलामत भी नहीं। और अगर बिला उज़्र हो तो क़ाबिले मलामत है।

2. यानी सिर्फ़ नमाज़ की सूरत बना लेते हैं जिससे नमाज़ का नाम हो जाए, और ताज्जुब नहीं कि सिर्फ़ उठना-बैठना ही होता हो।

3. ज़ाहिर में मोमिन तो कुफ़्फ़ार से अलग, और बातिन में काफ़िर तो मोमिनों से अलग।

4. मतलब यह कि इन मुनाफ़िक़ों के राह पर आने की उम्मीद मत रखो। इसमें मुनाफ़िक़ों को बुरा-भला कहना और मलामत है और मोमिनों की तसल्ली, कि उनकी शरारतों से रंज न करें।

5. चाहे मुनाफ़िक़ हों चाहे खुले काफ़िर हों।

6. साफ़ हुज्जत यही कि जब हमने मना कर दिया था तो फिर ऐसा क्यों किया।

7. ऊपर मुनाफ़िक़ों की बुराइयों और ख़राबियों का बयान मक़सूद था (अगरचे एक मज़मून के तहत में उनकी सज़ा जहन्नम होने का भी ज़िक्र आ गया था) आगे उनकी सज़ा का बयान मक़सूद है। और चूँकि सज़ा के बयान का असर अपने आपमें यह है कि सही समझ रखने वाले आदमी को ख़ौफ़ पैदा हो जाता है, जो तौबा का सबब हो जाता है। इसलिए तौबा करने वालों का सज़ा से अलग होना और उनके नेक बदले का बयान भी फ़रमा दिया।

छठा पारः ला युहिब्बुल्लाहु

सूरतुन्निसा-इ (आयत 148 से 176)

ला युहिब्बुल्लाहुल्-जह्-र बिस्सू-इ मिनल्-क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलि-म, व कानल्लाहु समीअ़न् अ़लीमा **(148)** इन् तुब्दू ख़ैरन् औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़्फ़ू अ़न् सूइन् फ़-इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ुव्वन् क़दीरा **(149)** इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व रुसुलिही व युरीदू-न अंय्युफ़र्रिक़ू बैनल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलू-न नुअ्मिनु बि-बअ्ज़िंव्-व नक्फ़ुरु बि-बअ्ज़िंव्-व युरीदू-न अंय्यत्तख़िज़ू बै-न ज़ालि-क सबीला **(150)** उलाइ-क हुमुल् काफ़िरू-न हक़्क़न् व अअ्तद्ना लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम् मुहीना **(151)** वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही व लम् युफ़र्रिक़ू बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् उलाइ-क सौ-फ़ युअ्तीहिम् उजूरहुम्, व कानल्लाहु ग़फ़ूररहीमा **(152)** ❖

यस्अलु-क अह्लुल्-किताबि अन् तुनज़्ज़ि-ल अ़लैहिम् किताबम् मिनस्-समा-इ फ़-क़द् स-अलू मूसा अक्ब-र मिन् ज़ालि-क फ़क़ालू अरिनल्ला-ह जह्र-तन् फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्साअि-क़तु बिज़ुल्मिहिम् सुम्मत्त-ख़ज़ुल्- अ़िज्-ल मिम्-बअ्दि मा जाअत्हुमुल् बय्यिनातु फ़-अ़फ़ौना अ़न् ज़ालि-क व आतैना मूसा सुल्तानम् मुबीना **(153)** व रफ़अ्ना फ़ौक़हुमुत्तू-र बिमीसाक़िहिम् व क़ुल्ना लहुमुद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदंव्-व क़ुल्ना लहुम्

لا يحب الله الجهر بالسوء من القول الا من ظلم ۚ و
كان الله سميعا عليما ﴿١٤٨﴾ ان تبدوا خيرا او تخفوه او
تعفوا عن سوء فان الله كان عفوا قديرا ﴿١٤٩﴾ ان الذين
يكفرون بالله ورسله ويريدون ان يفرقوا بين الله و
رسله ويقولون نؤمن ببعض ونكفر ببعض ۙ ويريدون
ان يتخذوا بين ذلك سبيلا ﴿١٥٠﴾ اولئك هم الكفرون
حقا ۚ واعتدنا للكفرين عذابا مهينا ﴿١٥١﴾ والذين امنوا بالله
ورسله ولم يفرقوا بين احد منهم اولئك سوف يؤتيهم
اجورهم ۚ وكان الله غفورا رحيما ﴿١٥٢﴾ يسئلك اهل الكتب
ان تنزل عليهم كتبا من السماء فقد سالوا موسى اكبر
من ذلك فقالوا ارنا الله جهرة فاخذتهم الصعقة بظلمهم ۚ
ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم البينت فعفونا عن
ذلك ۚ واتينا موسى سلطنا مبينا ﴿١٥٣﴾ ورفعنا فوقهم الطور
بميثاقهم وقلنا لهم ادخلوا الباب سجدا وقلنا لهم
لا تعدوا في السبت واخذنا منهم ميثاقا غليظا ﴿١٥٤﴾ فبما
نقضهم ميثاقهم وكفرهم بايت الله وقتلهم الانبياء بغير

छठा पारः ला युहिब्बुल्लाहु

सूरः निसा (आयत 148 से 177)

अल्लाह तआला बुरी बात ज़बान पर लाने को पसन्द नहीं करते सिवाय मज़्लूम के,[1] और अल्लाह तआला ख़ूब सुनते हैं, ख़ूब जानते हैं।[2] **(148)** अगर नेक काम ऐलानिया करो या उसको ख़ुफ़िया करो या किसी बुराई को माफ़ कर दो तो अल्लाह तआला बड़े माफ़ करने वाले हैं, पूरी क़ुदरत वाले हैं। **(149)** जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआला के साथ और उसके रसूलों के साथ और (यूँ) चाहते हैं कि अल्लाह के और उसके रसूलों के दरमियान में फ़र्क़ रखें, और कहते हैं कि हम बाज़ों पर तो ईमान लाते हैं और बाज़ों के इनकारी हैं,[3] और (यूँ) चाहते हैं कि बीच की एक राह तजवीज़ करें **(150)** ऐसे लोग यक़ीनन काफ़िर हैं, और काफ़िरों के लिए हमने तौहीन वाली सज़ा तैयार कर रखी है। **(151)** और जो लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते हैं और उसके सब रसूलों पर भी, और उनमें से किसी में फ़र्क़ नहीं करते, उन लोगों को अल्लाह तआला ज़रूर उनके सवाब देंगे, और अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़े रहमत वाले हैं।[4] **(152)** ◆

आपसे अहले किताब यह दरख़्वास्त करते हैं कि आप उनके पास एक ख़ास तहरीर आसमान से मंगवा दें, सो उन्होंने मूसा से इससे भी बड़ी बात की दरख़्वास्त की थी और (यूँ) कहा था कि हमको अल्लाह तआला को खुल्लम-खुल्ला दिखला दो, उनकी (इस) गुस्ताख़ी के सबब उनपर कड़क बिजली आ पड़ी,[5] फिर उन्होंने गौसाला को तजवीज़ किया था, उसके बाद कि बहुत-सी दलीलें उनको पहुँच चुकी थीं। फिर हमने उनसे दरगुज़र कर दिया था। और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को हमने बहुत बड़ा रोब दिया था। **(153)** और हमने उन लोगों से क़ौल व क़रार लेने के वास्ते तूर पहाड़ को उठाकर उनके ऊपर (लटका हुआ) कर दिया था, और हमने उनको यह हुक्म दिया था कि दरवाज़े में आ़जिज़ी से दाख़िल होना, और हमने उनको यह हुक्म दिया था कि हफ़्ते "यानी शनिवार" के दिन के बारे में हद से मत बढ़ना, और हमने उनसे क़ौल व क़रार बहुत सख़्त लिए। **(154)** सो (हमने उनको सज़ा में

1. यानी मज़्लूम अगर अपने ज़ालिम के बारे में शिकायत बयान करे तो वह गुनाह नहीं।
2. इसमें इशारा है कि मज़्लूम को हक़ीक़त के ख़िलाफ़ कहने की इजाज़त नहीं।
3. इस क़ौल और अक़ीदे से अल्लाह तआला के साथ भी कुफ़्र लाज़िम आ गया और सब रसूलों के साथ भी, क्योंकि अल्लाह तआला ने और हर रसूल ने सब रसूलों को रसूल कहा है, जब बाज़ का इनकार हुआ तो अल्लाह तआला और दूसरे रसूलों को झुठलाना हो गया, जो कि तस्दीक़ और ईमान के ख़िलाफ़ है।
4. बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत को यहूद व ईसाइयों (नसारा) दोनों की शान में कहा है, क्योंकि ईसाई भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नहीं मानते लेकिन मज़मून के गुज़रे हुए और आने वाले हिस्से में यहूद का ज़िक्र होना इसको चाहता है कि आयत का यहूद की शान में होना ज़्यादा अहम है, अगरचे उसके तहत में ईसाई भी लफ़्ज़ के आ़म होने में दाख़िल हो जाएँ।
5. यहूद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से (दुश्मनी के तौर पर) यह दरख़्वास्त की कि हम आपसे जब बैअ़त करें कि हमारे पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक तहरीर (यानी लिखा हुआ) इस मज़मून की आए कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से फ़लाँ यहूदी के नाम यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रसूल हैं, इस तरह हर-हर यहूदी के नाम ये ख़त हों, अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तसल्ली फ़रमाई है कि ये लोग हमेशा से ऐसी जहालतें करते आए हैं, आप रन्जीदा न हों।

ला तअ्दू फ़िस्सब्ति व अख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा (154) फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् व कुफ़्रिहिम् बिआयातिल्लाहि व क़त्लिहिमुल् अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व क़ौलिहिम् क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन्, बल् त-बअ़ल्लाहु अ़लैहा बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला (155) व बिकुफ़्रिहिम् व क़ौलिहिम् अ़ला मर्-य-म बुह्तानन् अ़ज़ीमा (156) व क़ौलिहिम् इन्ना क़तल्नल्-मसी-ह अ़ीसब्-न मर्-य-म रसूलल्लाहि व मा क़-तलूहु व मा स-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम्, व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़ीहि लफ़ी शक्किम् मिन्हु, मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन् इल्लत्तिबाअ़ज़्ज़न्नि व मा क़-तलूहु यक़ीना (157) बर्-र-फ़-अ़हुल्लाहु इलैहि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (158) व इम्-मिन् अह्लिल्-किताबि इल्ला ल-युअ्मिनन्-न बिही क़ब्-ल मौतिही व यौमल्- क़ियामति यकूनु अ़लैहिम् शहीदा (159) फ़-बिज़ुल्मिम्- मिनल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना अ़लैहिम् तय्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम् व बि-सद्दिहिम् अ़न् सबीलिल्लाहि कसीरा (160) व अख़्ज़िहिमुर्रिबा व क़द् नुहू अ़न्हु व अक्लिहिम् अम्वालन्नासि बिल्बातिलि, व अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (161) लाकिनिर्रासिख़ू-न फ़िल्अ़िल्मि मिन्हुम् वल्मुअ्मिनू-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क वल्मुक़ीमीनस्सला-त वल्मुअ्तूनज़्ज़का-त वल्मुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, उलाइ-क सनुअ्तीहिम् अज्रन् अ़ज़ीमा (162) ◆

حَقٍّ وَّقَوۡلِهِمۡ قُلُوۡبُنَا غُلۡفٌ ؕ بَلۡ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيۡهَا بِكُفۡرِهِمۡ
فَلَا يُؤۡمِنُوۡنَ اِلَّا قَلِيۡلًا ۪ وَّبِكُفۡرِهِمۡ وَقَوۡلِهِمۡ عَلٰى مَرۡيَمَ بُهۡتَانًا
عَظِيۡمًا ۙ وَّقَوۡلِهِمۡ اِنَّا قَتَلۡنَا الۡمَسِيۡحَ عِيۡسَى ابۡنَ مَرۡيَمَ رَسُوۡلَ
اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوۡهُ وَمَا صَلَبُوۡهُ وَلٰـكِنۡ شُبِّهَ لَهُمۡ ؕ وَاِنَّ
الَّذِيۡنَ اخۡتَلَفُوۡا فِيۡهِ لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ ؕ مَا لَهُمۡ بِهٖ مِنۡ عِلۡمٍ
اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوۡهُ يَقِيۡنًا ۙ بَلۡ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيۡهِ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيۡزًا حَكِيۡمًا ۝ وَاِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا
لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ ۚ وَيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ يَكُوۡنُ عَلَيۡهِمۡ
شَهِيۡدًا ۚ فَبِظُلۡمٍ مِّنَ الَّذِيۡنَ هَادُوۡا حَرَّمۡنَا عَلَيۡهِمۡ
طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتۡ لَهُمۡ وَبِصَدِّهِمۡ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ كَثِيۡرًا ۙ
وَّاَخۡذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدۡ نُهُوۡا عَنۡهُ وَاَكۡلِهِمۡ اَمۡوَالَ النَّاسِ
بِالۡبَاطِلِ ؕ وَاَعۡتَدۡنَا لِلۡكٰفِرِيۡنَ مِنۡهُمۡ عَذَابًا اَلِيۡمًا ۝ لٰـكِنِ
الرّٰسِخُوۡنَ فِى الۡعِلۡمِ مِنۡهُمۡ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ
اِلَيۡكَ وَمَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِكَ وَالۡمُقِيۡمِيۡنَ الصَّلٰوةَ وَالۡمُؤۡتُوۡنَ
الزَّكٰوةَ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ ؕ اُولٰۤـئِكَ سَنُؤۡتِيۡهِمۡ
اَجۡرًا عَظِيۡمًا ۝ اِنَّاۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ كَمَاۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰى نُوۡحٍ

मुब्तला किया) उनके अ़हद तोड़ने की वजह से और अल्लाह के अहकाम के साथ उनके कुफ़्र की वजह से, और उनके नबियों को नाहक़ क़त्ल करने की वजह से, और उनके इस कहने की वजह से कि हमारे दिल महफ़ूज़ हैं। (महफ़ूज़ नहीं) बल्कि उनके कुफ़्र के सबब उन (दिलों) पर अल्लाह तआ़ला ने बन्द लगा दिया है, सो उनमें ईमान नहीं मगर बहुत मामूली।[1] **(155)** और (उन्हें सज़ा दी) उनके कुफ़्र की वजह से, और (हज़रत) मरियम (अ़लैहस्सलाम) पर उनके बड़ा भारी बोहतान धरने की वजह से। **(156)** और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरियम को जो कि अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं, क़त्ल कर दिया,[2] हालाँकि उन्होंने न उनको क़त्ल किया न उनको सूली पर चढ़ाया, लेकिन उनको धोखा और शुब्हा हो गया। और जो लोग उनके बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं वे ग़लत ख़्याल में हैं, उनके पास इसपर कोई दलील नहीं सिवाय अटकली बातों पर अ़मल करने के, और यक़ीनी बात है कि उन्होंने उनको क़त्ल नहीं किया। **(157)** बल्कि उनको ख़ुदा तआ़ला ने अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह तआ़ला बड़े ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं। **(158)** और कोई शख़्स अहले किताब से नहीं रहता मगर वह ईसा अ़लैहिस्सलाम की अपने मरने से पहले ज़रूर तस्दीक़ कर लेता है, और क़ियामत के दिन वह उनपर गवाही देंगे।[3] **(159)** सो यहूद के इन्ही बड़े-बड़े जुर्मों के सबब हमने बहुत-सी पाकीज़ा चीज़ें जो उनके लिए हलाल थीं उनपर हराम कर दीं,[4] और इस सबब से कि वे बहुत आदमियों के लिए अल्लाह तआ़ला की राह से रुकावट बन जाते थे। **(160)** और इस सबब से कि वे सूद लिया करते थे हालाँकि उनको इससे मना किया गया था, और इस सबब से कि वे लोगों के माल नाहक़ तरीक़े से खा जाते थे। और हमने उन लोगों के लिए जो उनमें से काफ़िर हैं दर्दनाक सज़ा का सामान कर रखा है। **(161)** लेकिन उनमें जो लोग (दीन के) इल्म में पुख़्ता हैं और जो (उनमें) ईमान ले आने वाले हैं, कि इस (किताब) पर भी ईमान लाते हैं जो आपके पास भेजी गई और (उसपर भी ईमान रखते हैं) जो आपसे पहले भेजी गई थी, और जो (उनमें) नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हैं और जो (उनमें) ज़कात देने वाले हैं और जो (उनमें) अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर एतिक़ाद रखने वाले हैं, (सो) ऐसे लोगों को हम (आख़िरत में) ज़रूर बहुत बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाएँगे।[5] **(162)** ❖

1. अ़हद तोड़ने में बाद वाला सारा मज़मून दाख़िल है, लेकिन बुराई और मलामत के ज़्यादा होने की वजह से सब मामलात को अलग-अलग भी बयान फ़रमा दिया कि अल्लाह तआ़ला के साथ उनका मामला यह है कि उनके अहकाम के इनकारी हैं, अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के साथ यह बर्ताव है कि उनको झुठलाने से गुज़रकर उनको क़त्ल करते थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ यह मामला है कि आपके सामने अपने हक़ पर होने के दावेदार हैं, और ये सब कुफ़्र की क़िस्में हैं।

2. ईसा अ़लैहिस्सलाम के नाम के साथ जो रसूलुल्लाह आया है यह यहूद का क़ौल नहीं, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने बढ़ा दिया है कि देखो ऐसे के बारे में ऐसा कहते हैं।

3. ऊपर यहूद की बाज़ शरारतें और कुछ सज़ाएँ लान-तान वग़ैरह जो कि दुनिया में होने वाली और तक्वीनी उमूर से थीं, बयान फ़रमाई हैं, आगे भी उनकी बाज़ शरारतों का ज़िक्र है और साथ में बाज़ सज़ाओं का भी, दुनिया में शरीअ़त के हुक्म के एतिबार से यह कि बाज़ हलाल चीज़ों का हराम होना और आख़िरत के अन्जाम का ज़िक्र कि दर्दनाक अ़ज़ाब है, का बयान है, और चूँकि असल सज़ा यही है इसलिए यहूद के ज़िक्र के शुरू पर भी अ़ज़ाबे मुहीन (यानी तौहीन वाले अ़ज़ाब) के उनवान से इसको फ़रमाया था, पस दोनों तरफ़ में होने से ज़्यादा ताकीद हो गई।

4. जुर्मों की वजह से जो तहरीम (यानी हराम करना) हुई वह तहरीम आ़म थी, अगरचे जुर्मों से बाज़ नेक लोग महफ़ूज़ भी थे, क्योंकि बहुत-सी हिक्मतों के तक़ाज़े से अल्लाह का तरीक़ा यूँ ही जारी है जैसा कि क़ुरआन में इसकी तरफ़ इशारा भी है, "वत्तक़ू फ़ित्न-तल्ला तुसीबन्नल्लज़ी-न मिन्कुम् ख़ास्स-तन्" और हदीस में भी आया है कि बड़ा मुज्रिम वह है जिसके बेज़रूरत सवाल करने से कोई चीज़ सबके लिए हराम हो जाए, यानी वह्य के ज़माने में। और शरीअ़ते मुहम्मदिया में जो चीज़ें हराम हैं वे किसी जिस्मानी या रूहानी नुक़सान की वजह से हराम हैं, कि इस हैसियत से नापाक हैं, पस फ़ायदेमन्द हलाल चीज़ों का **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 188 पर)**

इन्ना औहैना इलै-क कमा औहैना इला नूहिंव्वन्नबिय्यी-न मिम्-बअ्दिही व औहैना इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्अस्बाति व अ़ीसा व अय्यू-ब व यूनु-स व हारू-न व सुलैमा-न व आतैना दावू-द ज़बूरा **(163)** व रुसुलन् क़द् क़सस्नाहुम् अ़लै-क मिन् क़ब्लु व रुसुलल्लम् नक़्सुसहुम् अ़लै-क, व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा **(164)** रुसुलम् मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अ़लल्लाहि हुज्जतुम्-बअ्दर्रुसुलि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा **(165)** लाकिनिल्लाहु यश्हदु बिमा अन्ज़-ल इलै-क अन्ज़-लहू बिअिल्मिही वल्मलाइ-कतु यश्हदू-न व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा **(166)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि क़द् ज़ल्लू ज़लालम् बअ़ीदा **(167)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व ज़-लमू लम् यकुनिल्लाहु लियग़्फ़ि-र लहुम् व ला लियह्दि-यहुम् तरीक़ा **(168)** इल्ला तरी-क़ जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा **(169)** या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुर्रसूलु बिल्हक़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ़आमिनू ख़ैरल्लकुम्, व इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(170)** या अह्लल्- किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् व ला तक़ूलू अ़लल्लाहि इल्लल्-हक़्-क़, इन्नमल्-मसीहु अ़ीसब्नु मर्य-म रसूलुल्लाहि व कलि-मतुहू अल्क़ाहा इला मर्य-म व

وَالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَ
اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَ
هٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللّٰهُ
مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾ رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ
لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾
لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
يَشْهَدُوْنَ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١٦٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿١٦٨﴾
اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ
فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا
فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۚ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى
ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ

हमने आपके पास वह्य भेजी है जैसे नूह के पास भेजी थी, और उनके बाद और पैग़म्बरों के पास, और हमने इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान के पास वह्य भेजी थी, और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी। **(163)** और (ऐसे) पैग़म्बरों को (वह्य वाला बनाया) जिनका हाल हम इससे पहले आपसे बयान कर चुके हैं और ऐसे पैग़म्बरों को जिनका हाल हमने आपसे बयान नहीं किया, और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से अल्लाह तआ़ला ने ख़ास तौर पर कलाम फ़रमाया। **(164)** उन सबको ख़ुशख़बरी देने वाले और ख़ौफ़ सुनाने वाले पैग़म्बर बनाकर इसलिए भेजा ताकि लोगों के पास अल्लाह तआ़ला के सामने उन पैग़म्बरों के बाद कोई उज़्र बाक़ी न रहे, और अल्लाह तआ़ला पूरे ज़ोर वाले हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं।[1] **(165)** लेकिन अल्लाह तआ़ला (इस किताब) के ज़रिये से जिसको आपके पास भेजा है, और भेजा भी अपने इल्मी कमाल के साथ, शहादत दे रहे हैं और फ़रिश्ते तस्दीक़ कर रहे हैं, और अल्लाह ही की शहादत काफ़ी है। **(166)** जो लोग इनकारी हैं और ख़ुदाई दीन से रुकावट होते हैं, बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़े हैं। **(167)** बेशक जो लोग इनकारी हैं और (दूसरों का भी) नुक़सान कर रहे हैं अल्लाह तआ़ला उनको कभी न बख़्शेंगे और न उनको कोई और राह दिखाएँगे **(168)** सिवाय जहन्नम की राह के, इस तरह पर कि उसमें हमेशा-हमेशा रहा करेंगे, और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक यह (सज़ा देना) मामूली बात है।[2] **(169)** ऐ तमाम लोगो! तुम्हारे पास यह रसूल सच्ची बात लेकर तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तशरीफ़ लाए हैं, सो तुम यक़ीन रखो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। और अगर तुम मुनकिर ''यानी इनकार करने वाले'' रहे तो ख़ुदा तआ़ला की मिल्क है यह सब जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में है, और अल्लाह तआ़ला पूरी इत्तिला रखते हैं, कामिल हिक्मत वाले हैं।[3] **(170)** ऐ अहले किताब![4] तुम अपने दीन में हद से मत निकलो और ख़ुदा तआ़ला की शान में ग़लत बात मत कहो,[5] मसीह ईसा इब्ने मरियम तो और कुछ भी नहीं अलबत्ता अल्लाह के रसूल हैं और उसका एक कलिमा हैं, जिसको उसने मरियम

(पृष्ठ 186 का शेष) हराम होना सज़ा व सियासत है और नुक़सानदेह हलाल चीज़ों का हराम होना रहमत व हिफ़ाज़त है।

5. मुराद उनसे ये हज़रात और उनके जैसे हैं, जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु व उसैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु व सअ़लबा रज़ियल्लाहु अ़न्हु और आयत का यही नाज़िल होने का सबब भी है। और आयत में कामिल अज्र को उन पहले ज़िक्र हुए उमूर के साथ जोड़ना मक़सूद है, और जहाँ तक अज्र व मुतलक़ नजात की बात है तो वह सिर्फ़ अ़क़ायदे ज़रूरिया को सही करने से वाबस्ता है।

1. अल्लाह तआ़ला पूरे ज़ोर और इख़्तियार वाले हैं कि रसूलों को भेजे बिना भी सज़ा देते तो तन्हा हक़ीक़ी मालिक होने की वजह से, यह कोई ज़ुल्म न होता, और हक़ीक़त में किसी को उज़्र करने का हक़ भी न होता, लेकिन चूँकि बड़ी हिक्मत वाले भी हैं इसलिए हिक्मत रसूलों के भेजने में यह थी ताकि ज़ाहिरी उज़्र भी न रहे।

2. ऊपर यहूद के शुब्हा का जो कि हुज़ूरे पाक की नुबुव्वत के मुताल्लिक़ था, जवाब और नुबुव्वत का साबित करना, साथ ही इनकार करने वालों के लिए वईद निहायत साफ़ और उम्दा अन्दाज़ से ज़िक्र हो चुकी, आगे आ़म ख़िताब से नुबुव्वत की तस्दीक़ का वाजिब होना बयान फ़रमाते हैं।

3. ऊपर यहूद को ख़िताब था आगे नसारा (यानी ईसाइयों) को ख़िताब है।

4. यानी इन्जील वालो।

5. कि नऊज़ु बिल्लाह (यानी अल्लाह अपनी पनाह में रखे) वह औलाद वाला है, जैसा कि बाज़ कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं, या वह माबूदों के मजमूए का एक हिस्सा हैं, जैसा कि बाज़ कहते थे कि अल्लाह तीन का तीसरा है और बक़िया दो हिस्से एक हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को कहते थे और एक हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम को, जैसा कि आगे आयत में ''व लल्मलाइ-कतुल्-मुक़र्रबून'' के बढ़ाने से मालूम होता है, और बाज़े हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम को, जैसा कि ''इत्तख़िज़ूनी व उम्मि-य'' से मालूम होता है, या वह ऐन मसीह है, जैसा कि बाज़ कहते थे, ''कि ख़ुदा तो बस मसीह इब्ने मरियम है'' ये सब अ़क़ीदे बातिल हैं।

रूहुम्-मिन्हु फ़आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही, व ला तक़ूलू सलासतुन्, इन्तहू ख़ैरल्लकुम्, इन्नमल्लाहु इलाहुंव्वाहिदुन्, सुब्हानहू अंय्यकू-न लहू व-लदुन् ✣ लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला **(171)** ❖

लंय्यस्तन्किफ़ल्-मसीहु अंय्यकू-न अ़ब्दल्-लिल्लाहि व लल्मला-इ-कतुल् मुक़र्रबू-न, व मंय्यस्तन्किफ़् अ़न् अ़िबादतिही व यस्तक्बिर् फ़-सयह्शुरुहुम् इलैहि जमीअ़ा **(172)** फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही व अम्मल्लज़ीनस्-तन्कफ़ू वस्तक्बरू फ़-युअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा **(173)** व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(174)** या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुम् बुर्हानुम् मिर्रब्बिकुम् व अन्ज़ल्ना इलैकुम् नूरम् मुबीना **(175)** फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि वअ़्त-समू बिही फ़-सयुद्ख़िलुहुम् फ़ी रह्मतिम् मिन्हु व फ़ज़्लिंव्-व यह्दीहिम् इलैहि सिरातम् मुस्तक़ीमा **(176)** यस्तफ़्तून-क, क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़िल्-कलालति, इनिम्रुउन् ह-ल-क लै-स लहू व-लदुंव्-व लहू उख़्तुन् फ़-लहा निस्फ़ु मा त-र-क व हु-व यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा व-लदुन्, फ़-इन् का-नतस्नतैनि फ़-लहुमस्- सुलुसानि मिम्मा त-र-क, व इन् कानू इख़्वतर्रिजालंव्-व निसाअन् फ़-लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल् उन्सयैनि, युबय्यिनुल्लाहु लकुम् अन् तज़िल्लू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(177)** ❖

النساء ٤ — ٩٦ — لا يحب الله ٦

مِنْهُ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ اِنْتَهُوْا خَيْرًا
لَّكُمْ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ لَهٗ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝
لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ
الْمُقَرَّبُوْنَ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ
اِلَيْهِ جَمِيْعًا ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ
اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا
وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ
بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِىْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ
وَفَضْلٍ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ يَسْتَفْتُوْنَكَ
قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ
وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ اِنْ لَّمْ يَكُنْ
لَّهَا وَلَدٌ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ وَاِنْ
كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ

منزل ١

तक पहुँचाया था और उसकी तरफ़ से एक जान हैं। सो अल्लाह पर और उसके सब रसूलों पर ईमान लाओ, और (यूँ) मत कहो कि तीन हैं, बाज़ आ जाओ तुम्हारे लिए बेहतर होगा। माबूदे हक़ीक़ी तो एक ही माबूद है, वह औलाद वाला होने से पाक है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद चीज़ें हैं सब उसकी मिल्क हैं, और अल्लाह तआ़ला कारसाज़ होने में काफ़ी हैं। **(171)** ❖

मसीह हरगिज़ ख़ुदा के बन्दे बनने से शर्म नहीं करेंगे और न क़रीबी फ़रिश्ते, और जो शख़्स ख़ुदा तआ़ला की बन्दगी से शर्म करेगा "या बुरा समझेगा" और तकब्बुर करेगा तो ख़ुदा तआ़ला ज़रूर सब लोगों को अपने पास जमा करेंगे। **(172)** फिर जो लोग ईमान लाए होंगे और उन्होंने अच्छे काम किए होंगे तो उनको उनका पूरा सवाब देंगे और उनको अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा देंगे, और जिन लोगों ने शर्म की होगी और तकब्बुर किया होगा तो उनको सख़्त दर्दनाक सज़ा देंगे। **(173)** और वे लोग अल्लाह के अ़लावा किसी और को अपना मददगार हिमायती न पाएँगे।[1] **(174)** ऐ लोगो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक दलील आ चुकी है,[2] और हमने तुम्हारे पास एक साफ़ नूर भेजा है।[3] **(175)** सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने उसको मज़बूत पकड़ा,[4] तो ऐसों को अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में दाख़िल करेंगे और अपने फ़ज़्ल में और अपने तक उनको सीधा रास्ता बता देंगे।[5] **(176)** लोग आपसे हुक्म दरियाफ़्त करते हैं,[6] आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुमको कलाला के बारे में हुक्म देता है।[7] अगर कोई शख़्स मर जाए जिसके औलाद न हो (और न माँ-बाप) और उसके एक (हक़ीक़ी या माँ-शरीक सौतेली) बहन हो तो उसको तमाम तर्के का आधा मिलेगा, और वह शख़्स उस (अपनी बहन) का वारिस होगा, अगर (वह बहन मर जाए और) उसके औलाद न हो, (और माँ-बाप भी न हों)। और अगर (बहनें) दो हों (या ज़्यादा) तो उनको उसके कुल तरके में से दो तिहाई मिलेगें। और अगर (कई वारिस) भाई (बहन) हों मर्द और औ़रत तो एक मर्द को दो औ़रतों के हिस्से के बराबर,[8] अल्लाह तआ़ला तुमसे (दीन की बातें) इसलिए बयान करते हैं कि तुम गुमराही में न पड़ो, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। **(177)** ❖

---

1. ऊपर ईसाइयों के अ़क़ीदों का बातिल होना तथा इक़रार करने वालों की जज़ा और इनकार करने वालों की सज़ा का बयान हो चुका, आगे आ़म ख़िताब से इन मज़ामीन का और इन मज़ामीन के तालीम फ़रमाने वाले रसूल और क़ुरआन का सच्चा होना और तस्दीक़ करने वालों की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाते हैं, जिस तरह यहूद के सामने हुज्जत पेश करने के बाद इसी तरह ख़िताबे आ़म फ़रमाया था। "या अय्युहन्नासु क़द जा-अकुमुर्रसूलु"......

2. वह मुबारक ज़ात है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की।

3. वह क़ुरआन मजीद है।

4. यानी इस्लाम को।

5. हासिल यह है कि इताअ़त की बरकत से इताअ़त पर जमे रहने की तौफ़ीक़ अ़ता होती है।

6. इस आयत के नाज़िल होने का सबब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का फ़त्वा मालूम करना है कि उस वक़्त सिर्फ़ उनकी बहनें वारिस थीं जैसा कि नसई शरीफ़ और लबाब में इब्ने मरदूया से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का सवाल करना भी नक़्ल किया है।

7. कलाला यानी जिसके न औलाद हो न माँ-बाप हों।

8. क्योंकि इस सूरः में यहाँ तक बहुत-से उसूल व अहकाम की तफ़सील है इसलिए आख़िर में एक मुख़्तसर उनवान से पूरी की पूरी तफ़सील को दोबारा याद दिलाकर अपनी मन्नत और एहसान, शरीअ़त के बयान करने में और उन अहकाम में हिक्मत की रियायत ज़िक्र फ़रमा कर सूरः को ख़त्म फ़रमाते हैं।

5 सूरतुल्माइ-दति 112

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 13464 अक्षर, 2842 शब्द 120 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू औफ़ू बिल्-अ़ुक़ूदि, उहिल्लत् लकुम् बहीमतुल्-अन्आ़मि इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम् ग़ै-र मुहिल्लिस्-सैदि व अन्तुम् हुरुमुन्, इन्नल्ला-ह यह्कुमु मा युरीद (1) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहिल्लू शआ़-इरल्लाहि व लश्शह्रल्-हरा-म व लल्-हद्-य व लल्क़लाइ-द व ला आम्मीनल् बैतल्-हरा-म यब्तग़ू-न फ़ज़्लम् मिर्रब्बिहिम् व रिज़्वानन्, व इज़ा हलल्तुम् फ़स्तादू व ला यज्रिमन्नकुम श-नआनु क़ौमिन् अन् सद्दूकुम् अ़निल् मस्जिदिल्-हरामि अन् तअ़्तदू ✣ व तआ़वनू अ़लल्-बिर्रि वत्तक़्वा व ला तआ़वनू अ़लल्-इस्मि वल्-अ़ुद्वानि वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब ◆ (2) हुर्रिमत् अ़लैकुमुल्मैततु वद्दमु व लह्मुल्-ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही वल्मुन्ख़ानि-क़तु वल्मौक़ूज़तु वल्मु-तरद्दियतु वन्नती-हतु व मा अ-कलस्सबुअ़ु इल्ला मा ज़क्कैतुम्, व मा ज़ुबि-ह अ़लन्नुसुबि व अन् तस्तक़्सिमू बिल्अज़्लामि, ज़ालिकुम् फ़िस्क़ुन्, अल्यौ-म य-इसल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् दीनिकुम् फ़ला

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ۚ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۗ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ
الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ
اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ آٰمِّيْنَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۗ وَاِذَا
حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ۗ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ
عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَ
التَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَ
لَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ
وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَاۤ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۫ وَ
مَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ۗ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ۗ
اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَ
اخْشَوْنِ ۗ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ

✣ व. लाज़िम ◆ रुबूअ़ 1/4

5 सूरः मा-इदः 112

सूरः मा-इदः मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 120 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ऐ ईमान वालो! अ़हदों को पूरा करो,[1] तुम्हारे लिए तमाम चौपाए "यानी चार पैरों पर चलने वाले चरने वाले जानवर" (यानी ऊँट, बकरी, गाय) हलाल किए गए हैं,[2] मगर जिनका ज़िक्र आगे आता है, लेकिन शिकार को हलाल मत समझना जिस हालत में कि तुम एहराम में हो। बेशक अल्लाह तआ़ला जो चाहें हुक्म करें। **(1)** ऐ ईमान वालो! खुदा तआ़ला की निशानियों की बेहुर्मती न करो और न हुर्मत वाले महीने की, और न (हरम में) कुरबानी होने वाले जानवर की, और न उन (जानवरों) की जिनके गले में पट्टे पड़े हुए हों, और न उन लोगों की जो कि बैतुल-हराम के इरादे से जा रहे हों, अपने रब के फ़ज़्ल और रज़ामन्दी के तालिब हों। और जिस वक़्त तुम एहराम से बाहर आ जाओ तो शिकार किया करो। और ऐसा न हो कि तुमको किसी क़ौम से, जो इसी सबब से बुग़ज़ है कि उन्होंने तुमको मस्जिदे-हराम से रोक दिया था, वह तुम्हारे लिए इसका सबब हो जाए कि तुम हद से निकल जाओ। और नेकी और परहेज़गारी में एक-दूसरे की मदद किया करो, और गुनाह और "ज़ुल्म व" ज़्यादती में एक-दूसरे की मदद मत करो, और अल्लाह तआ़ला से डरा करो, बेशक अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। ◆ **(2)** तुमपर हराम किए गए हैं मुर्दार[3] और ख़ून और ख़िन्ज़ीर "यानी सुअर" का गोश्त[4] और जो (जानवर) कि अल्लाह के अ़लावा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो, और जो गला घुटने से मर जाए, और जो किसी चोट से मर जाए, और जो गिरकर मर जाए, और जो किसी की टक्कर से मर जाए, और जिसको कोई दरिन्दा खाने लगे लेकिन जिसको ज़िब्ह कर डालो,[5] और जो (जानवर) इबादत गाहों पर ज़िब्ह किया जाए,[6] और यह कि तक़सीम करो तीरों के कुरा डालने के ज़रिये, ये सब गुनाह हैं। आजके दिन ना-उम्मीद हो गये[7] काफ़िर लोग तुम्हारे दीन से,[8] सो उनसे मत डरना और मुझसे डरते रहना,[9] आजके दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया,[10] और मैंने तुमपर अपना इनाम मुकम्मल कर दिया, और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन (बनने के लिए) पसन्द कर लिया,[11] पस जो शख़्स शिद्दत की भूख में बेताब हो जाए शर्त यह है कि किसी गुनाह की तरफ़ उसका मैलान "यानी रुझान" न हो,[12] तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाले हैं, रहमत वाले हैं।[13] **(3)** लोग आपसे पूछते हैं कि क्या-क्या

---

1. ऊपर की सूरः के ख़त्म पर फ़रमाया था कि हम शरीअ़त के अहकाम को तुमसे बयान करते हैं। इस सूरः के शुरू में इसका हुक्म है कि तुम हमारे उन बयान किए हुए शरीअ़त के अहकाम की पूरी-पूरी तामील करो, यह ताल्लुक़ तो दोनों सूरतों के आख़िर और शुरू में है, बाक़ी पूरी सूरतों में भी दोनों के शरीअ़त के अहकाम पर मुश्तमिल होने से ताल्लुक़ ज़ाहिर है, और खुद इस सूरः के हिस्सों में भी एक अ़जीब ताल्लुक़ और मुनासबत है कि इसके पहले की आयत एक तरह से "मतन" (यानी असल इबारत) है। और पूरी सूरत गोया उसकी शरह यानी खुलासा है, क्योंकि लफ़्ज़ "अ़क़ूद" हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के क़ौल के मुताबिक़ शरीअ़त के तमाम अहकाम को आ़म और शामिल है और सूरः में उन्हीं अहकाम की तफ़सील है, पस अव्वलन मुख़्तसर व कुल्ली उनवान से शरीअ़त के अहकाम पर अ़मल का हुक्म फ़रमाते हैं।

2. जैस हिरन, नील-गाय वग़ैरह सिवाय उन मवेशी जानवरों के जो कि शरीअ़त की दूसरी दलीलों हदीस वग़ैरह से ख़ास व अलग हो चुके हैं, जैसे गधा, ख़च्चर वग़ैरह। इन अलग किए हुए जानवरों के सिवा और सब पालतू व जंगली जानवर हलाल हैं सिवाय उनके जिनका ज़िक्र आगे आता है।

3. यानी जो जानवर बावजूद इसके कि उनका ज़िब्ह करना वाजिब है, शरई तौर पर बिना ज़िब्ह किए मर जाए।

4. इसी तरह उसके सब हिस्से और अंग। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 194 पर)

तख़्शौहुम् वख़्शौनि, अल्यौ-म अक्मल्तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अ़लैकुम् निअ़्मती व रज़ीतु लकुमुल्-इस्ला-म दीनन्, फ़-मनिज़्तुर्-र फ़ी मख़्म-सतिन् ग़ै-र मु-तजानिफ़िल्-लिइस्मिन् फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(3)** यस्अलून-क माज़ा उहिल्-ल लहुम् क़ुल् उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु व मा अ़ल्लम्तुम् मिनल्-जवारिहि मुकल्लिबी-न तुअ़ल्लिमूनहुन्-न मिम्मा अ़ल्ल-मकुमुल्लाहु फ़कुलू मिम्मा अम्-सक्-न अ़लैकुम् वज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहि वत्तक़ुल्ला-ह इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्-हिसाब **(4)** अल्यौ-म उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु, व तआ़मुल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब हिल्लुल्लकुम् व तआ़मुकुम् हिल्लुल्लहुम् वल्मुह्सनातु मिनल्-मुअ़्मिनाति वल्मुह्सनातु मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजूरहुन्-न मुह्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न व ला मुत्तख़िज़ी अख़्दानिन्, व मंय्यक्फ़ुर् बिल्ईमानि फ़-क़द् हबि-त अ़-मलुहू व हु-व फ़िल्-आख़िरति मिनल्- ख़ासिरीन **(5)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ुम्तुम् इलस्सलाति फ़ग़्सिलू वुजूहकुम् व ऐदि-यकुम् इलल्-मराफ़िक़ि वम्सहू बिरुऊसिकुम् व अर्जु-लकुम् इलल्कअ़्बैनि, व इन् कुन्तुम् जुनुबन् फ़त्तह्हरू, व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू माअन् फ़-तयम्म-मू सअ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बिवुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु, मा युरीदुल्लाहु लि-यज्अ़-ल अ़लैकुम् मिन् ह-रजिंव्-व लाकिंय्युरीदु लियुतह्हि-रकुम् व लियुतिम्-म

وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ
مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ ۙ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣﴾ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا
أُحِلَّ لَهُمْ ۖ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ
مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۖ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ
عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾ الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۖ وَطَعَامُ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ ۖ وَالْمُحْصَنَاتُ
مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ
وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ
عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِنْ
كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ
جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا
مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ

(जानवर) उनके लिए हलाल किए गए हैं, आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारे लिए कुल हलाल (जानवर) हलाल रखे हैं, और जिन शिकारी जानवरों को तुम तालीम दो और तुम उनको छोड़ो भी, और उनको उस तरीक़े से तालीम दो जो तुमको अल्लाह तआला ने तालीम दिया है, तो ऐसे शिकारी जानवर जिस (शिकार) को तुम्हारे लिए पकड़ें उसको खाओ और उसपर अल्लाह का नाम भी लिया करो, और अल्लाह से डरते रहा करो, बेशक अल्लाह तआला जल्दी हिसाब लेने वाले हैं। **(4)** आज तुम्हारे लिए हलाल चीज़ें हलाल रखी गईं और जो लोग किताब दिए गए हैं उनका खाना (यानी ज़बीहा) तुमको हलाल है, और तुम्हारा खाना (यानी ज़बीहा) उनको हलाल है, और पारसा औरतें भी जो मुसलमान हों, और पारसा औरतें उन लोगों में से भी जो तुमसे पहले किताब दिए गए हैं जबकि तुम उनका मुआवज़ा दे दो,[1] इस तरह से कि तुम बीवी बनाओ, न तो एलानिया बदकारी करो न खुफ़िया ताल्लुक़ात पैदा करो,[2] और जो शख़्स ईमान के साथ कुफ़्र करेगा[3] तो उस शख़्स का अमल ग़ारत हो जाएगा और वह आख़िरत में बिलकुल घाटे में होगा।[4] **(5)** ❖

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ को उठने लगो तो अपने चेहरों को धोओ और अपने हाथों को भी (धोओ) कोहनियों समेत, और अपने सरों पर हाथ फेरो और (धोओ) अपने पैरों को भी टख़्नों समेत,[5] और अगर तुम नापाकी की हालत में हो तो (सारा बदन) पाक करो, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र की हालत में हो, या तुममें से कोई शख़्स इस्तन्जे से आया हो या तुमने बीवियों से नज़दीकी की हो, फिर तुमको पानी न मिले तो तुम पाक ज़मीन से तयम्मुम (कर लिया) करो, यानी अपने चेहरों और हाथों पर हाथ फेर लिया करो इस (ज़मीन पर) से,[6] अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर नहीं कि तुमपर कोई तंगी डालें,[7] लेकिन उसको (यानी अल्लाह तआला को) यह मन्ज़ूर है कि तुमको पाक साफ़ रखे,[8] और यह कि तुमपर अपना इनाम पूरा फ़रमाए ताकि तुम शुक्र अदा करो। **(6)** और

(पृष्ठ 192 का शेष) **5.** यानी "दम घुटने" से, "जिसको दरिन्दा खाने लगे" तक जिनका ज़िक्र है उनमें से जिनको दम निकलने से पहले शरई क़ायदे के मुताबिक़ ज़िब्ह कर डालो वे इस हराम होने के हुक्म से अलग हैं।

6. अगरचे ज़बान से अल्लाह के ग़ैर के लिए नामज़द न करे, क्योंकि हराम होने का दारोमदार बुरी नीयत पर है, इसका ज़ाहिर होना कभी क़ौल से होता है कि नामज़द करे और कभी फ़ेल से होता है कि ऐसे मक़ामात पर ज़िब्ह कराए।

7. आजके दिन से मुराद ख़ास दिन नहीं, बल्कि वह ज़माना मुराद है जिसमें उससे मिला हुआ शुरू व आख़िर का ज़माना भी मुराद है, पस अगर उसके बाद भी किसी हुक्म का नाज़िल होना साबित हो तो मुकम्मल करने यानी अहकाम को मुकम्मल करने पर एतिराज़ लाज़िम नहीं आता।

8. क्योंकि माशा-अल्लाह इस्लाम का ख़ूब फैलाव हो गया।

9. यानी मेरे अहकाम की मुख़ालफ़त मत करना।

10. क़ुव्वत में भी जिससे कुफ़्फ़ार को मायूसी हुई और अहकाम व क़ायदों में भी।

11. यानी क़ियामत तक तुम्हारा यही दिन रहेगा इसको मन्सूख़ करके दूसरा दिन तजवीज़ न किया जाएगा।

12. यानी न ज़रूरत से ज़्यादा खाए और न लज़्ज़त मक़सूद हो।

13. यह आयत जैसा कि इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया, असर के वक़्त जुमा के दिन ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ हिज्जतुल विदाअ में जो दस हिजरी में हुआ था, नाज़िल हुई है और इसके नाज़िल होने के क़रीब तीन महीने के बाद तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िन्दा रहे।

1. यानी महर देना अगरचे शर्त नहीं मगर वाजिब है।

2. ये सब शरीअत के अहकाम हैं जिनपर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

3. जैसे क़तई हलाल के हलाल होने और क़तई हराम के हराम होने का इनकार करेगा।

4. इसलिए हलाल को हलाल समझो और हराम को हराम समझो।

5. ये चार चीज़ें फ़र्ज़ हैं, वुज़ू में बाक़ी चीज़ें मसनून व पसन्दीदा हैं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 196 पर)**

निअ़्म-तहू अ़लैकुम् लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (6) वज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् व मीसाक़हुल्लज़ी वास-क़कुम् बिही इज़् क़ुल्तुम् समिअ़्ना व अतअ़्ना वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर (7) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न लिल्लाहि शु-हदा-अ बिल्क़िस्ति व ला यज्रिमन्नकुम् श-नआनु क़ौमिन् अ़ला अल्ला तअ़्दिलू, इअ़्दिलू, हु-व अक़्रबु लित्तक़्वा वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून (8) व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् अ़ज़ीम (9) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम (10) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् हम्-म क़ौमुन् अंय्यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् फ़-कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम् अ़न्कुम् वत्तक़ुल्ला-ह, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ़्मिनून (11) ❖

व ल-क़द् अ-ख़ज़ल्लाहु मीसा-क़ बनी इस्राई-ल व बअ़स़्ना मिन्हुमुस्नै अ़-श-र नक़ीबन्, व क़ालल्लाहु इन्नी म-अकुम्, ल-इन् अक़म्तुमुस्सला-त व आतैतुमुज़्ज़का-त व आमन्तुम् बिरुसुली व अ़ज़्ज़र्तुमूहुम् व अक़्रज़्तुमुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनल् ल-उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल-उद्ख़िलन्नकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु फ़-मन् क-फ़-र बअ़्-द ज़ालि-क मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल्-ल सवाअस्सबील (12) फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम्

منه ما يريد الله ليجعل عليكم من حرج ولكن يريد
ليطهركم وليتم نعمته عليكم لعلكم تشكرون ۝ و
اذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذي واثقكم به
إذ قلتم سمعنا وأطعنا واتقوا الله إن الله عليم بذات
الصدور ۝ يا أيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء
بالقسط ولا يجرمنكم شنآن قوم على ألا تعدلوا
اعدلوا هو أقرب للتقوى واتقوا الله إن الله خبير
بما تعملون ۝ وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات
لهم مغفرة وأجر عظيم ۝ والذين كفروا وكذبوا بآياتنا
أولئك أصحاب الجحيم ۝ يا أيها الذين آمنوا اذكروا نعمت
الله عليكم إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم فكف
أيديهم عنكم واتقوا الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ۝
ولقد أخذ الله ميثاق بني إسرائيل وبعثنا منهم
اثني عشر نقيبا وقال الله إني معكم لئن أقمتم الصلاة
وآتيتم الزكاة وآمنتم برسلي وعزرتموهم وأقرضتم
الله قرضا حسنا لأكفرن عنكم سيئاتكم ولأدخلنكم

तुम लोग अल्लाह तआ़ला के इनाम को जो तुमपर हुआ है याद करो और उसके उस अ़हद को भी जिसका तुमसे मुआ़हदा किया है, जबकि तुमने कहा था कि हमने सुना और मान लिया, और अल्लाह तआ़ला से डरो बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला दिलों तक की बातों की पूरी ख़बर रखते हैं।[1] **(7)** ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला के लिए पूरी पाबन्दी करने वाले, इन्साफ़ के साथ शहादत अदा करने वाले रहो, और किसी ख़ास क़ौम की दुश्मनी तुम्हारे लिए इसका सबब न हो जाए कि तुम अ़दल "यानी इन्साफ़" न करो। इन्साफ़ किया करो कि वह तक़्वे "यानी परहेज़गारी" से ज़्यादा क़रीब है, और अल्लाह से डरो, बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है।[2] **(8)** अल्लाह तआ़ला ने ऐसे लोगों से जो ईमान ले आए और उन्होंने अच्छे काम किए वायदा किया है कि उनके लिए मग़्फ़िरत और बड़ा सवाब है। **(9)** और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारे अहकाम को झूठा ठहराया ऐसे लोग दोज़ख़ में रहने वाले हैं। **(10)** ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला के इनाम को याद करो जो तुमपर हुआ है, जबकि एक क़ौम फ़िक्र में थी[3] कि तुमपर हाथ डाल दें, सो अल्लाह तआ़ला ने तुमपर उनका क़ाबू न चलने दिया, और अल्लाह तआ़ला से डरो,[4] और ईमान वालों को हक़ तआ़ला ही पर भरोसा रखना चाहिए। **(11)** ❖

और अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल से अ़हद लिया था, और हमने उनमें से बारह सरदार मुक़र्रर किए, और अल्लाह तआ़ला ने (यूँ) फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ की पाबन्दी रखोगे और ज़कात अदा करते रहोगे और मेरे सब रसूलों पर ईमान लाते रहोगे और उनकी मदद करते रहोगे और अल्लाह को अच्छे तौर पर क़र्ज़ देते रहोगे,[5] तो मैं ज़रूर तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दूँगा और ज़रूर तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। और जो शख़्स इसके बाद भी कुफ़्र करेगा तो बेशक वह सही रास्ते से दूर जा पड़ा।[6] **(12)** तो

(पृष्ठ 194 का शेष) **6.** ऊपर पाकी के अहकाम ज़िक्र किए गए हैं जिनमें बन्दों की रियायत, सहूलत और मस्लहत का लिहाज़ है, आगे इस पाकी और रियायत पर एहसान ज़ाहिर फ़रमाते हैं और शुक्र अदा करने की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं।

7. यानी यह मन्ज़ूर है कि तुमपर कोई तंगी न रहे, चुनाँचे ज़िक्र हुए अहकाम में ख़ास तौर पर और शरीअ़त के कुल अहकाम में आ़म तौर पर सहूलत व मस्लहत की रियायत ज़ाहिर है।

8. इसलिए तहारत (यानी पाकी) के क़ायदे और तरीक़े तय किए और किसी एक तरीक़े पर बस नहीं किया कि अगर वह न हो तो तहारत मुम्किन ही न हो।

1. इसलिए जो काम करो उसमें इख़्लास व एतिक़ाद भी होना चाहिए, सिर्फ़ दिखावे के लिए हुक्म मानना काफ़ी नहीं।

2. ऐसी आयत पारः वल्मुह्सनात के आख़िर के क़रीब में भी आ चुकी है। और दोनों में फ़र्क़ यह है कि बेइन्साफ़ी की वजह दो चीज़ें होती हैं, या तो एक फ़रीक़ की रियायत या किसी फ़रीक़ की दुश्मनी, वहाँ पहला सबब ज़िक्र है यहाँ दूसरा सबब। चुनाँचे वहाँ अल्फ़ाज़ "व लौ अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अविल् वालिदैनि वल् अक़्रबी-न इंय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा" और यहाँ लफ़्ज़ "श-नआनु" इसकी साफ़ दलील है, पस इस फ़र्क़ के बाद दोहराना न रहा।

3. यानी क़ुरैश के काफ़िर शुरू इस्लाम में जबकि मुसलमान कमज़ोर थे।

4. शुरू सूरत से यहाँ तक अक्सर आयतों में हक़ तआ़ला से डरने का हुक्म फ़रमाया है, एक जगह लफ़्ज़ "ख़शिय्यत" से बाक़ी जगह लफ़्ज़ "तक़्वा" से। इससे मालूम होता है कि इसको हुक्म मानने में बहुत दख़ल है, चुनाँचे ज़ाहिर भी है।

5. ख़ैर में ख़र्च करने को मजाज़न् (अवास्तविकता के तौर पर) क़र्ज़ इसलिए फ़रमा दिया कि जिस तरह क़र्ज़ का अदा करना लाज़िम होता है उसी तरह अल्लाह तआ़ला इसका बदला ज़रूर देंगे।

6. यहाँ उस शख़्स का हाल बयान नहीं फ़रमाया जो कुफ़्र न करे लेकिन आमाल की पूरी पाबन्दी भी न करे, और क़ुरआन मजीद में अक्सर जगह यही आ़दत है कि इताअ़त में जो कामिल हो और मुख़ालफ़त में जो कामिल हो ज़्यादा ज़िक्र उन्हीं का होता है, वजह यह है कि दोनों तरफ़ वालों के हाल से बीच का हाल अ़क़्लमन्द को ख़ुद अन्दाज़े और क़्यास से मालूम हो जाता है, कि उनकी ऐसी जज़ा होगी, ऐसी सज़ा होगी, फिर हदीसों में तफ़सील मालूम हो गई।

लअ़न्नाहुम् व जअ़ल्ना क़ुलूबहुम् क़ासि-यतन् युहर्रिफ़ूनल्कलि-म अ़म्-मवाज़िअ़िही व नसू हज़्ज़म् मिम्मा ज़ुक्किरू बिही व ला तज़ालु तत्तलिअ़ु अ़ला ख़ाइ-नतिम् मिन्हुम् इल्ला क़लीलम् मिन्हुम् फ़अ़्फ़ु अ़न्हुम् वस्फ़ह्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुह्सिनीन **(13)** व मिनल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा अख़ज़्ना मीसाक़हुम् फ़-नसू हज़्ज़म् मिम्मा ज़ुक्किरू बिही फ़-अग़्रैना बैनहुमुल् अ़दा-व-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल्-क़ियामति, व सौ-फ़ युनब्बिउहुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअ़ून **(14)** या अह्लल्-किताबि क़द् जाअकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् कसीरम्-मिम्मा कुन्तुम् तुख़्फ़ू-न मिनल्-किताबि व यअ़्फ़ू अ़न् कसीरिन्, क़द् जाअकुम् मिनल्लाहि नूरुंव्-व किताबुम् मुबीन **(15)** यह्दी बिहिल्लाहु मनित्त-ब-अ़ रिज़्वानहू सुबुलस्सलामि व युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि बि-इज़्निही व यह्दीहिम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(16)**

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۲﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ
لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ
مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ
عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى
اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ
اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۴﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ
رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾
يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۶﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ
مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ
الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ

ल-क़द् क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्य-म, क़ुल् फ़-मंय्यम्लिकु मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द अंय्युह्लिकल्- मसीहब्-न मर्य-म व उम्म-हू व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न्, व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, यख़्लुक़ु मा यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(17)** व क़ालतिल्-यहूदु वन्नसारा नह्नु

सिर्फ़ उनके अ़हद तोड़ने की वजह से हमने उनको अपनी रहमत से दूर कर दिया, और हमने उनके दिलों को कठोर कर दिया। वे लोग कलाम को उसके मौक़ों से बदलते हैं,[1] और वे लोग जो कुछ उनको नसीहत की गई थी उसमें से एक बड़ा हिस्सा ज़ाया कर बैठे, और आपको आए दिन किसी न किसी (नई) ख़ियानत की इत्तिला होती रहती है[2] जो उनसे सादिर होती है सिवाय उनमें के गिनेचुने चन्द शख़्सों के, सो आप उनको माफ़ कीजिए और उनसे दरगुज़र कीजिए, बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला अच्छा मामला करने वाले लोगों से मुहब्बत करता है।[3] **(13)** और जो लोग कहते हैं कि हम ईसाई हैं, हमने उनसे भी उनका अ़हद लिया था, सो वे भी जो कुछ उनको नसीहत की गई उसमें से अपना एक बड़ा हिस्सा ज़ाया कर बैठे, तो हमने उनमें आपस में क़ियामत तक के लिए बुग़्ज़ और दुश्मनी डाल दी, और उनको अल्लाह तआ़ला उनका किया हुआ जतला देंगे।[4] **(14)** ऐ किताब वालो! तुम्हारे पास हमारे (ये) रसूल आए हैं, किताब में से जिन उमूर को तुम छुपाते हो उनमें से बहुत-सी बातों को तुम्हारे सामने साफ़-साफ़ खोल देते हैं और बहुत-से उमूर को दरगुज़र कर देते हैं। तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रोशन चीज़ आई है और एक स्पष्ट किताब **(15)** कि उसके ज़रिए से अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्सों को जो हक़ की रिज़ा के तालिब हों सलामती की राहें बतलाते हैं, और उनको अपनी तौफ़ीक़ से अन्धेरियों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले आते हैं,[5] और उनको सही रास्ते पर क़ायम रखते हैं।[6] **(16)** बिला शुब्हा वे लोग काफ़िर हैं जो (यूँ) कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ऐन मसीह इब्ने मरियम है। आप (यूँ) पूछिए (कि अगर ऐसा है तो यह बतलाओ) कि अगर अल्लाह तआ़ला हज़रत मसीह इब्ने मरियम को और उनकी माँ को और जितने ज़मीन में हैं उन सबको हलाक करना चाहें तो कोई शख़्स ऐसा है जो ख़ुदा तआ़ला से उनको ज़रा भी बचा सके, और अल्लाह तआ़ला ही के लिए ख़ास है हुकूमत आसमानों पर और ज़मीन पर, और जितनी चीज़ें इन दोनों के दरमियान हैं उनपर, और वह जिस चीज़ को चाहें पैदा कर दें, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है।[7] **(17)** और यहूद व नसारा ''यानी ईसाई'' दावा

---

1. यानी लफ़्ज़ी रद्दोबदल या मायनों में रद्दोबदल करते हैं।
2. नई ख़ियानत यह कि एक बार जैसे रज्म (यानी अगर ज़िना करने वाला शादीशुदा हो तो पत्थरों से हलाक करने) के हुक्म को छुपा लिया। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरियाफ़्त फ़रमाने पर तौरात का एक मज़मून ग़लत बयान कर दिया, जिसपर आयत ''ला तहस-बन्नल्लज़ी-न यफ़रहू-न'' नाज़िल हुई थी, और जैसे हलाल चीज़ों के हराम करने के क़दीमी होने का एक बार ग़लत दावा किया था जिसपर शुरू पारः लन्-तनालू में आयत ''कुल् फ़अ्तू बित्तौराति'' नाज़िल हुई और वे सब ग़लत बयानियाँ जिनकी तफ़सील मय उनके बातिल होने के क़ुरआन मजीद में जगह-जगह मज़कूर है, इसमें दाख़िल हैं, जैसे ''लन् तमस्स-नन्नारु'' और ''लँय्यदख़ुलल् जन्न-त इल्ला मन् का-न हूदन् औ नसारा'' और ''नह्नु अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहू'' और इसी तरह दूसरी ग़लत बयानियाँ।
3. ऊपर यहूद का हाल था आगे कुछ ईसाइयों का हाल बयान फ़रमाते हैं।
4. ऊपर यहूद व ईसाइयों का अलग-अलग ज़िक्र था, आगे दोनों को जमा करके नसीहत का ख़िताब फ़रमाते हैं।
5. क़ुरआन के ज़रिये से सलामती की राहें बतलाना आ़म है लेकिन यहाँ रिज़ा-ए-हक़ के तालिबों को इसलिए ख़ास किया गया कि इससे फ़ायदा वही लोग उठाते हैं।
6. ऊपर आयत ''व मिनल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा'' में ईसाइयों के अ़हद तोड़ने का मुख़्तसर तौर पर बयान था, आगे उनके बाज़ अ़क़ायद को तय किया गया है कि वह तौहीद में ख़लल डालना है।
7. ऊपर यहूद और ईसाइयों के बाज़-बाज़ बुरे आमाल और ख़राबियाँ ज़िक्र की गई थीं आगे उनमें से एक मुश्तरका और मामले और उसके बातिल होने का बयान है, यानी दोनों फ़रीक़ बावजूद कुफ़्र व नाफ़रमानी के अपने अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मुक़र्रब और मक़बूल होने के दावेदार थे।

अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहू, क़ुल् फ़लि-म युअ़ज़्ज़िबुकुम् बिज़ुनूबिकुम्, बल् अन्तुम् ब-शरुम् मिम्-मन् ख़-ल-क़, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व इलैहिल्-मसीर **(18)** या अह्लल्-किताबि क़द् जाअकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् अ़ला फ़त्रतिम् मिनर्रुसुलि अन् तक़ूलू मा जाअना मिम्-बशीरिंव्-व ला नज़ीरिन् फ़-क़द् जा-अकुम् बशीरुंव्-व नज़ीरुन्, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(19)** ❖

व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमिज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् ज-अ़-ल फ़ीकुम् अम्बिया-अ व ज-अ़-लकुम् मुलूकंव्-व आताकुम् मा लम् युअ्ति अ-हदम् मिनल्-आ़लमीन **(20)** या क़ौमिद्ख़ुलुल् अर्ज़ल् मुक़द्द-सतल्लती क-तबल्लाहु लकुम् व ला तर्तद्दू अ़ला अद्बारिकुम् फ़-तन्क़लिबू ख़ासिरीन **(21)** क़ालू या मूसा इन्-न फ़ीहा क़ौमन् जब्बारी-न व इन्ना लन् नद्ख़ु-लहा हत्ता यख़्रुजू मिन्हा फ़-इंय्यख़्रुजू मिन्हा फ़-इन्ना दाख़िलून **(22)** क़ा-ल रजुलानि मिनल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अन्-अ़मल्लाहु अ़लैहिमद्ख़ुलू अ़लैहिमुल्बा-ब फ़-इज़ा दख़ल्तुमूहु फ़-इन्नकुम् ग़ालिबू-न, व अ़लल्लाहि फ़-तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(23)** क़ालू या मूसा इन्ना लन् नद्ख़ु-लहा अ-बदम् मा दामू फ़ीहा

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ
عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ
اَبْنٰۗؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّاۗؤُهٗ ۭ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ
بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَلِلّٰهِ
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۡ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰي فَتْرَةٍ
مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَاۗءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ۡ
فَقَدْ جَاۗءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ ع
عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَاۗءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ڰ وَّاٰتٰىكُمْ
مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ
الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓي اَدْبَارِكُمْ
فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ڰ
وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا
فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ۝ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ

करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं,[1] आप (यह) पूछिए कि (अच्छा तो) फिर तुमको तुम्हारे गुनाहों के बदले अ़ज़ाब क्यों देंगे, बल्कि तुम भी और सब मख़्लूक़ ही की तरह के एक (मामूली) आदमी हो, अल्लाह तआ़ला जिसको चाहेंगे बख़्शेंगे और जिसको चाहेंगे सज़ा देंगे, और अल्लाह तआ़ला ही की है सब हुकूमत आसमानों में भी और ज़मीन में भी और जो कुछ उनके दरमियान में है (उनमें भी)। उसी की (यानी अल्लाह ही की) तरफ़ सबको लौटकर जाना है। **(18)** ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे (ये) रसूल आ पहुँचे जो कि तुमको साफ़-साफ़ बतलाते हैं, ऐसे वक़्त में कि रसूलों का सिलसिला मौक़ूफ़ "यानी रुका हुआ और बन्द" था,[2] ताकि तुम (यूँ न) कहने लगो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला नहीं आया। सो तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले आ चुके हैं, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। **(19)** ❖

और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह तआ़ला के इनाम को जो कि तुमपर हुआ है याद करो, जबकि अल्लाह तआ़ला ने तुममें से बहुत-से पैग़म्बर बनाए और तुमको मुल्क वाला बनाया और तुमको वे चीज़ें दीं जो दुनिया जहान वालों में से किसी को नहीं दीं। **(20)** ऐ मेरी क़ौम! बरकत वाले मुल्क में दाख़िल हो कि इसको अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे हिस्से में लिख दिया, और पीछे वापस मत चलो कि फिर बिलकुल ख़सारे में पड़ जाओगे।[3] **(21)** कहने लगे कि ऐ मूसा! वहाँ तो बड़े-बड़े ज़बरदस्त आदमी हैं, और हम तो वहाँ हरगिज़ क़दम न रखेंगे जब तक कि वे वहाँ से (न) निकल जाएँ, (हाँ) अगर वे वहाँ से (कहीं और) चले जाएँ तो हम बेशक जाने को तैयार हैं। **(22)** उन दो शख़्सों ने जो कि डरने वालों में से थे, जिनपर अल्लाह तआ़ला ने फ़ज़्ल किया था, कहा कि तुम उनपर दरवाज़े तक तो चलो, सो जिस वक़्त तुम दरवाज़े में क़दम रखोगे उसी वक़्त ग़ालिब आ जाओगे, और अल्लाह तआ़ला पर नज़र रखो अगर तुम ईमान रखते हो। **(23)** कहने लगे कि ऐ मूसा! हम तो हरगिज़ कभी भी वहाँ क़दम न रखेंगे जब तक वे लोग वहाँ मौजूद हैं, तो आप और

---

1. मतलब यह मालूम होता है कि हमको इस वजह से कि नबियों की औलाद व नस्ल से हैं दूसरे लोगों की बनिस्बत अगरचे वे हमारे मज़हब के क्यों न हों, अल्लाह तआ़ला के साथ यह ख़ुसूसियत है कि हमसे बावजूद नाफ़रमानियों के भी औरों के बराबर नाख़ुश नहीं होते, जैसे बाप के साथ औलाद को यह ख़ुसूसियत होती है कि अगर वह नाफ़रमानी भी करे तब भी उसके दिल पर वह असर नहीं होता जो किसी ग़ैर-आदमी के उसी की नाफ़रमानी करने से होता है, अल्लाह तआ़ला इसका रद्द फ़रमाते हैं।

2. ईसा अ़लैहिस्सलाम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरमियान जो ज़माना है वह ज़माना "फ़ित्रत" का कहलाता है। इमाम बुख़ारी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया है कि यह ज़माना छह सौ साल का है, और इस दरमियान में कोई नबी नहीं भेजे गए।

3. दुनिया में भी मुल्क के विस्तार से महरूम रहोगे और आख़िरत में भी कि जिहाद के फ़रीज़े को छोड़ने से गुनाहगार होगे।

फ़ज़्हब् अन्-त व रब्बु-क फ़क़ातिला इन्ना हाहुना क़ाअ़िदून **(24)** क़ा-ल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफ़्सी व अख़ी फ़फ़्रुक़् बैनना व बैनल् क़ौमिल् फ़ासिक़ीन **(25)** क़ा-ल फ़-इन्नहा मुहर्र-मतुन् अ़लैहिम् अर्बअ़ी-न स-नतन् यतीहू-न फ़िल्अर्ज़ि, फ़ला तअ्-स अ़लल् क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन **(26)** ❖

वत्लु अ़लैहिम् न-बअब्नै आद-म बिल्हक़्क़ि ✣ इज़् क़र्रबा क़ुर्बानन् फ़तुक़ुब्बि-ल मिन् अ-हदिहिमा व लम् यु-तक़ब्बल् मिनल्-आख़रि, क़ा-ल लअक़्तुलन्न-क, क़ा-ल इन्नमा य-तक़ब्बलुल्लाहु मिनल् मुत्तक़ीन ● **(27)** ल-इम् बसत्-त इलय्-य य-द-क लितक़्तु-लनी मा अ-न बिबासितिंय्-यदि-य इलै-क लिअक़्तु-ल-क इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्- आ़लमीन **(28)** इन्नी उरीदु अन् तबू-अ बि-इस्मी व इस्मि-क फ़-तकू-न मिन् अस्हाबिन्नारि व ज़ालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन **(29)** फ़तव्व-अ़त् लहू नफ़्सुहू क़त्-ल अख़ीहि फ़-क़-त-लहू फ़-अस्ब-ह मिनल् ख़ासिरीन **(30)** फ़-ब-अ़सल्लाहु गुराबंय्यब्हसु फ़िल्अर्ज़ि लियुरि-यहू कै-फ़ युवारी सौअ-त अख़ीहि, क़ा-ल या वै-लता अ-अ़जज़्तु अन् अकू-न मिस्-ल हाज़ल्गुराबि फ़-उवारि-य सौअ-त अख़ी फ़-अस्ब-ह मिनन्नादिमीन **(31)** मिन् अज्लि ज़ालि-क कतब्ना अ़ला बनी इस्राई-ल अन्नहू मन् क़-त-ल नफ़्सम् बिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-कअन्नमा

غَٰلِبُونَ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَتَوَكَّلُوٓا۟ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾ قَالُوا۟
يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَآ أَبَدًا مَّا دَامُوا۟ فِيهَا ۖ فَٱذْهَبْ أَنتَ
وَرَبُّكَ فَقَٰتِلَآ إِنَّا هَٰهُنَا قَٰعِدُونَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّى لَآ أَمْلِكُ
إِلَّا نَفْسِى وَأَخِى ۖ فَٱفْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ ٱلْقَوْمِ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٥﴾
قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۛ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۛ يَتِيهُونَ فِى
ٱلْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾ وَٱتْلُ عَلَيْهِمْ
نَبَأَ ٱبْنَىْ ءَادَمَ بِٱلْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ ٱلْءَاخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ
ٱللَّهُ مِنَ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾ لَئِنۢ بَسَطتَ إِلَىَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِى مَآ
أَنَا۠ بِبَاسِطٍ يَدِىَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ ٱللَّهَ رَبَّ
ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٨﴾ إِنِّىٓ أُرِيدُ أَن تَبُوٓأَ بِإِثْمِى وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ
أَصْحَٰبِ ٱلنَّارِ ۚ وَذَٰلِكَ جَزَٰٓؤُا۟ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَطَوَّعَتْ لَهُۥ نَفْسُهُۥ
قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُۥ فَأَصْبَحَ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٣٠﴾ فَبَعَثَ ٱللَّهُ
غُرَابًا يَبْحَثُ فِى ٱلْأَرْضِ لِيُرِيَهُۥ كَيْفَ يُوَٰرِى سَوْءَةَ أَخِيهِ ۚ
قَالَ يَٰوَيْلَتَىٰٓ أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا ٱلْغُرَابِ فَأُوَٰرِىَ
سَوْءَةَ أَخِى ۖ فَأَصْبَحَ مِنَ ٱلنَّٰدِمِينَ ۛ ﴿٣١﴾ مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ ۛ

आपके अल्लाह मियाँ चले जाइए और दोनों लड़-भिड़ लीजिए, हम तो यहाँ से सरकते नहीं। **(24)** (मूसा) दुआ करने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैं अपनी जान और अपने भाई पर अलबत्ता इख़्तियार रखता हूँ। सो आप हम दोनों के और इस नाफ़रमान क़ौम के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दीजिए। **(25)** इरशाद हुआ कि यह (मुल्क) तो उनके हाथ चालीस साल तक न लगेगा, यूँ ही ज़मीन में सर मारते फिरते रहेंगे।[1] सो आप इस बेहुक्म क़ौम पर ग़म न कीजिए।[2] **(26)** ❖

और आप इन अहले किताब को आदम के दो बेटों का क़िस्सा सही तौर पर पढ़कर सुनाइए, जबकि दोनों ने एक-एक नियाज़ पेश की और उनमें से एक की तो मक़बूल हो गई और दूसरे की मक़बूल न हुई। (वह दूसरा) कहने लगा कि मैं तुझको ज़रूर क़त्ल करूँगा, (उस एक ने) जवाब दिया कि ख़ुदा तआला मुत्तक़ियों का ही अमल कबूल करते हैं। ● **(27)** अगर तू मुझपर मेरे क़त्ल करने के लिए दस्त-दराज़ी करेगा जब भी मैं तुझपर तेरे क़त्ल करने के लिए हरगिज़ दस्त-दराज़ी करने वाला नहीं, मैं तो ख़ुदा परवर्दिगारे आलम से डरता हूँ। **(28)** मैं (यूँ) चाहता हूँ कि तू मेरे गुनाह और अपने गुनाह सब अपने सर रख ले, फिर तू दोज़ख़ियों में शामिल हो जाए, और यही सज़ा होती है ज़ुल्म करने वालों की। **(29)** सो उसके जी ने उसको अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर दिया, फिर उसको क़त्ल ही कर डाला जिससे बड़े नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गया। **(30)** फिर अल्लाह तआला ने एक कौआ भेजा कि वह ज़मीन को खोदता था ताकि उसको तालीम कर दे कि अपने भाई की लाश को किस तरीक़े से छुपाए। कहने लगा कि अफ़सोस मेरी हालत पर! क्या मैं इससे भी गया गुज़रा कि इस कौए ही के बराबर होता और अपने भाई की लाश को छुपा देता, सो बड़ा शर्मिन्दा हुआ।[3] **(31)** इसी वजह से हमने बनी इसराईल पर यह लिख दिया कि जो शख़्स किसी शख़्स को बिना मुआवज़ा दूसरे शख़्स के या बिना किसी फ़साद के (जो ज़मीन में उससे

---

1. चुनाँचे चालीस साल तक ज़मीन के एक महदूद हिस्से में हैरान व परेशान फिरा किए, यहाँ तक कि सब वहाँ ही ख़त्म हो चुके। इस मुद्दत में उनके जो औलाद पैदा हुई उनको रिहाई हासिल हुई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनसे ज़रा मुद्दत पहले हज़रत हारून अलैहिस्सलाम भी उस वादी में जिसे वादी-ए-तीह कहते हैं इन्तिक़ाल फ़रमा गए और हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है पैग़म्बर हुए और उनकी मारफ़त इस नई नस्ल बनी इसराईल को उस मुल्क की फ़त्ह का हुक्म हुआ, चुनाँचे सबने उनके साथ होकर जिहाद किया और फ़त्ह हुई।

2. ऊपर अहले किताब की बहुत-सी बुराइयों में से उनका यह क़ौल नक़ल फ़रमाया था कि "नह्नु अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहू" जिसका मन्शा अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की औलाद में होने पर फ़ख़्र था, हक़ तआला इस घमण्ड के तोड़ने के लिए आगे हाबील व क़ाबील का क़िस्सा बयान फ़रमाते हैं कि आदम अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी बेटे होने में इन मुद्दइयों से बढ़कर दोनों भाई बराबर थे, मगर उनमें भी मक़बूल वही हुआ जो हुक्म का फ़रमाँबरदार रहा, यानी हाबील, और दूसरे ने नाफ़रमानी की तो वह मरदूद हो गया और आदम का बेटा होना कुछ काम न आया।

3. आयत के आख़िर में जो उसका शर्मिन्दा होना ज़िक्र किया गया है, यह शर्मिन्दा होना मुफ़स्सिरीन के क़ौल के मुताबिक़ क़त्ल पर नहीं, ताकि तौबा का शुब्हा हो, बल्कि क़त्ल करने पर जो परेशानियाँ पेश आईं उनपर है, जैसे लाश के दफ़्न में हैरान होना और कौए की तालीम का मोहताज होना और बद-हवास हो जाना, या बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि बदन का काला हो जाना और आदम अलैहिस्सलाम का नाराज़ हो जाना।

कु-तलन्ना-स जमीअ़न् व मन् अह्याहा फ़-कअन्नमा अह्यन्ना-स जमीअ़न्, व ल-क़द् जाअत्हुम् रुसुलुना बिल्बय्यिनाति सुम्-म इन्-न कसीरम् मिन्हुम् बअ़्-द ज़ालि-क फ़िल्अर्ज़ि ल-मुस्रिफ़ून (32) इन्नमा जज़ा-उल्लज़ी-न युहारिबूनल्ला-ह व रसूलहू व यस्औ़-न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् अंय्युक़त्तलू औ युसल्लबू औ तुक़त्त-अ़ ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् मिन् ख़िलाफ़िन् औ युन्फ़ौ मिनल्-अर्ज़ि, ज़ालि-क लहुम् ख़िज़्युन् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्- आख़ि-रति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (33) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिन् क़ब्लि अन् तक़्दिरू अ़लैहिम् फ़अ़्लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (34) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वब्तग़ू इलैहिल् वसी-ल-त व जाहिदू फ़ी सबीलिही लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (35) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़ंव्-व मिस्लहू म-अ़हू लियफ़्तदू बिही मिन् अ़ज़ाबि यौमिल्-क़ियामति मा तुक़ुब्बि-ल मिन्हुम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (36)

المآئدة ٥ ١٠٣ لا يحب الله ٦

كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًاۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ
اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا
فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ
ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ۝ اِنَّمَا
جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ
فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ
مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِى الدُّنْيَا
وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ
اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا
وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ
مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ
وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ؗ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ وَالسَّارِقُ
وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ

منزل

युरीदू-न अंय्यख़्रुजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिन्हा व लहुम् अ़ज़ाबुम् मुक़ीम (37) वस्सारिक़ु वस्सारि-क़तु फ़क़्तअ़ू ऐदि-यहुमा जज़ाअम् बिमा क-सबा नकालम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (38) फ़-मन् ता-ब मिम्-बअ़्दि ज़ुल्मिही व अस्ल-ह फ़-इन्नल्ला-ह यतूबु अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (39) अलम् तअ़्लम् अन्नल्ला-ह लहू

फैला हो) क़त्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम आदमियों को क़त्ल कर डाला। और जो शख़्स किसी शख़्स को बचा ले तो गोया उसने तमाम आदमियों को बचा लिया, और उनके (यानी बनी इसराईल के) पास हमारे बहुत-से पैग़म्बर भी खुले दलाइल लेकर आए, फिर उसके बाद भी उनमें से बहुत-से दुनिया में ज़्यादती करने वाले ही रहे।[1] **(32)** जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं[2] और मुल्क में फ़साद फैलाते फिरते हैं,[3] उनकी यही सज़ा है कि क़त्ल किए जाएँ या सूली दिए जाएँ या उनके हाथ और पाँव मुख़ालिफ़ जानिब से काट दिए जाएँ या ज़मीन पर से निकाल दिए जाएँ। यह उनके लिए दुनिया में सख़्त रुस्वाई है और उनको आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब होगा। **(33)** हाँ मगर जो लोग इससे पहले कि तुम उनको गिरफ़्तार करो तौबा कर लें तो जान लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला बख़्श देंगे, मेहरबानी फ़रमा देंगे।[4] **(34)** ❖

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला से डरो और अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब "यानी निकटता" ढूँढो और अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद किया करो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओगे।[5] **(35)** यक़ीनन जो लोग काफ़िर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया भर की चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ इतनी चीज़ें और भी हों ताकि वे उसको देकर क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से छूट जाएँ तब भी वे चीज़ें उनसे क़बूल न की जाएँगी और उनको दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। **(36)** (इस बात की) ख़्वाहिश करेंगे कि दोज़ख़ से निकल आएँ और वे उससे (कभी) न निकलेंगे और उनको हमेशा का अ़ज़ाब होगा। **(37)** और जो मर्द चोरी करे और जो औ़रत चोरी करे, सो उन दोनों के (दाहिने) हाथ (गट्टे पर से) काट डालो उनके किरदार के बदले में बतौर सज़ा के, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से, और अल्लाह तआ़ला बड़े कुव्वत वाले हैं (जो सज़ा चाहें मुक़र्रर फ़रमाएँ) बड़ी हिक्मत वाले हैं (कि मुनासिब ही सज़ा मुक़र्रर फ़रमाते हैं)।[6] **(38)** फिर जो शख़्स अपनी (इस) ज़्यादती के बाद तौबा करे और (आमाल की) दुरुस्ती रखे तो

---

1. बहुत-से इसलिए फ़रमाया कि बाज़े इताअ़त करने वाले और फ़रमाँबरदार भी थे।

2. ऊपर नाहक़ क़त्ल की जो बिला मुआ़वज़ा किसी शख़्स के क़त्ल या ज़मीन में फ़साद के हो, बुराई व क़बाहत बयान फ़रमाई थी, आगे क़त्ल और उसके तहत आने वाले जैसे हाथ-पैर काटना और सज़ा का जारी करना जो कि हक़ के साथ हो, यानी ज़मीन में फ़साद फैलाने और क़त्ल के बदले में क़त्ल करने के सबब से हो, इसका जायज़ और शरीअ़त में पसन्दीदा होना बयान फ़रमाते हैं, इसलिए पहले राहगीरों से लूटपाट करने वालों का हुक्म फिर चोर का हुक्म मज़कूर होता है, और उसके दरमियान और मज़मून ख़ास मुनासबत की वजह से लाया गया है।

3. मुराद इससे रहज़नी और डकैती है।

4. मतलब यह है कि ऊपर जो सज़ा मज़कूर हुई है वह अल्लाह के हक़ और सज़ा के तौर पर है, जो कि बन्दे के माफ़ करने से माफ़ नहीं होती, क़िसास व बन्दे के हक़ के तौर पर नहीं जो कि बन्दे के माफ़ करने से माफ़ हो जाता है, पस जब गिरफ़्तारी से पहले उन लोगों का तौबा करने वाला होना साबित हो जाए तो सज़ा ख़त्म हो जाएगी जो कि अल्लाह का हक़ था, अलबत्ता बन्दे का हक़ बाक़ी रहेगा। पस अगर माल लिया होगा तो उसका ज़िमान देना पड़ेगा और क़त्ल किया होगा तो उसका क़िसास लिया जाएगा। लेकिन इस ज़िमान व क़िसास के माफ़ करने का हक़ माल वाले और मक़्तूल के वली को हासिल होगा।

5. वह कामयाबी अल्लाह की रज़ामन्दी का हासिल होना और दोज़ख़ से नजात है।

6. माल की कम से कम मिक़्दार जिसमें हाथ काटा जाता है दस दिरम है।

मुल्कुस्समावाति वल्‌अर्ज़ि, युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(40)** या अय्युहर्रसूलु ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअू-न फ़िल्कुफ़्रि मिनल्लज़ी-न क़ालू आमन्ना बिअफ़्वाहिहिम् व लम् तुअ्मिन् क़ुलूबुहुम् व मिनल्लज़ी-न हादू सम्माअू-न लिल्कज़िबि सम्माअू-न लिक़ौमिन् आख़री-न लम् यअ्तू-क, युहर्रिफ़ूनल्-कलि-म मिम्-बअ़्दि मवाज़िअिही यक़ूलू-न इन् ऊतीतुम् हाज़ा फ़ख़ुज़ूहु व इल्लम् तुअ्तौहु फ़ह्ज़रू, व मंय्युरिदिल्लाहु फ़ित्न-तहू फ़-लन् तम्लि-क लहू मिनल्लाहि शैअन्, उला-इकल्लज़ी-न लम् युरिदिल्लाहु अंय्युतह्हि-र क़ुलूबहुम्, लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व लहुम् फ़िल्- आख़ि-रति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(41)** सम्माअू-न लिल्कज़िबि अक्कालू-न लिस्सुह्ति, फ़-इन् जाऊ-क फ़ह्कुम् बैनहुम् औ अअ़्रिज़् अ़न्हुम् व इन् तुअ़्रिज़् अ़न्हुम् फ़-लंय्यज़ुर्रू-क शैअन्, व इन् हकम्-त फ़ह्कुम् बैनहुम् बिल्क़िस्ति, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुक़्सितीन **(42)** व कै-फ़ युहक्किमून-क व अिन्दहुमुत्तौरातु फ़ीहा हुक्मुल्लाहि सुम्-म य-तवल्लौ-न मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क, व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्मिनीन **(43)** ❖

इन्ना अन्ज़ल्नत्तौरा-त फ़ीहा हुदंव्-व नूरुन् यह्कुमु बिहन्नबिय्यूनल्लज़ी-न अस्लमू

فَإِنَّ اللّٰهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ
اللّٰهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ وَيَغْفِرُ
لِمَن يَشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝ يٰٓأَيُّهَا الرَّسُولُ
لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسٰرِعُونَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوٓا
ءَامَنَّا بِأَفْوٰهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِن قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۛ
سَمّٰعُونَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُونَ لِقَوْمٍ ءَاخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ يُحَرِّفُونَ
الْكَلِمَ مِنۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهِۦ ۖ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هٰذَا فَخُذُوهُ
وَإِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ وَمَن يُرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهُۥ فَلَن
تَمْلِكَ لَهُۥ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ أَن يُطَهِّرَ
قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۖ وَلَهُمْ فِى الْءَاخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ سَمّٰعُونَ لِلْكَذِبِ أَكّٰلُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِن جَآءُوكَ
فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِن تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَن
يَضُرُّوكَ شَيْـًٔا ۖ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِندَهُمُ
التَّوْرٰىةُ فِيهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ
أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّآ أَنزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ

बेशक अल्लाह उसपर तवज्जोह फ़रमाएँगे, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। **(39)** क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए (साबित) है हुकूमत सब आसमानों की और ज़मीन की, वह जिसको चाहें सज़ा दें और जिसको चाहें माफ़ कर दें, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है।[1] **(40)** ऐ रसूल! जो लोग कुफ़्र में दौड़-दौड़ गिरते हैं[2] आपको ग़मगीन न करें, (चाहे वे) उन लोगों में (हों) जो अपने मुँह से तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए और उनके दिल यक़ीन नहीं लाए,[3] और (चाहे) उन लोगों में से हों जो यहूदी हैं। ये लोग ग़लत बातों के सुनने के आ़दी हैं, (आपकी बातें) दूसरी क़ौम की ख़ातिर कान धर-धर सुनते हैं। (जिस क़ौम के ये हालात हैं) कि आपके पास नहीं आए, कलाम को बाद इसके कि वह अपने मौक़े पर होता है बदलते रहते हैं। कहते हैं कि अगर तुमको यह (हुक्म) मिले तब तो इसको क़बूल कर लेना और अगर तुमको यह हुक्म न मिले तो एहतियात रखना। और जिसका ख़राब होना ख़ुदा तआ़ला ही को मन्ज़ूर हो[4] तो उसके लिए अल्लाह से तेरा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता। ये लोग ऐसे हैं कि अल्लाह को उनके दिलों का पाक करना मन्ज़ूर नहीं हुआ,[5] उन लोगों के लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी सज़ा है। **(41)** ये लोग ग़लत बातों के सुनने के आ़दी हैं, बड़े हराम खाने वाले हैं, तो अगर ये लोग आपके पास आएँ तो (आप मुख़्तार हैं) चाहे आप उनमें फ़ैसला कर दीजिए या उनको टाल दीजिए, और अगर आप उनको टाल दें तो उनकी मजाल नहीं कि वे आपको ज़रा भी नुक़सान पहुँचा सकें, और अगर आप फ़ैसला करें तो उनमें इन्साफ़ के मुवाफ़िक़ फ़ैसला कीजिए,[6] बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करते हैं।[7] **(42)** और वे आपसे कैसे फ़ैसला कराते हैं हालाँकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म है, फिर उसके बाद हट जाते हैं, और ये लोग हरगिज़ एतिक़ाद वाले नहीं। **(43)** ❖

---

1. सूरः के तीसरे रुकूअ़ से अहले किताब का ज़िक्र चला आ रहा था, दरमियान में थोड़े से और बाज़ मज़ामीन ख़ास-ख़ास मुनासबत से आ गए थे। अब आगे फिर उसी अहले किताब के ज़िक्रे की तरफ़ लौटते हैं, जिनमें यहूद और उन यहूद में जो मुनाफ़िक़ थे, और ईसाई सब दाख़िल हैं, अहले किताब के इन्हीं तीनों फ़िर्क़ों का ज़िक्र मिले-जुले अन्दाज़ में यहाँ से दूर तक यानी पारः के ख़त्म तक चला गया है, फिर सूरः के ख़त्म के क़रीब ख़ास ईसाइयों के मुताल्लिक़ कुछ बयान आएगा।
2. यानी बेतकल्लुफ़ रग़बत से उन बातों को करते हैं।
3. मुराद मुनाफ़िक़ लोग हैं जो कि एक वाक़िए में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे।
4. यह पैदाइशी मन्ज़ूरी उस गुमराह के गुमराही का इरादा करने के बाद होती है।
5. क्योंकि यह इरादा ही नहीं करते इसलिए अल्लाह तआ़ला पैदाइशी पाक करने का अ़मल नहीं फ़रमाते बल्कि उनके गुमराही के इरादे की वजह से पैदाइशी तौर पर उनका ख़राब ही होना मन्ज़ूर है। पस ज़िक्र हुए क़ायदे के मुवाफ़िक़ कोई शख़्स उनको हिदायत नहीं कर सकता। मतलब यह है कि जब ये ख़ुद ख़राब रहने का पुख़्ता इरादा रखते हैं और इरादे के बाद उस फ़ेल की पैदाइश और वजूद में लाना अल्लाह की आ़दत है और अल्लाह को किसी चीज़ को वजूद में लाने से कोई रोक नहीं सकता। फिर उनके राह पर आने की क्या उम्मीद की जाए, इससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ज़्यादा तसल्ली हो सकती है, जिससे कलाम शुरू भी हुआ था। पस कलाम की शुरूआ़त व आख़िर तसल्ली के मज़मून से हुआ। आगे उन आमाल का समरा (नतीजा और फल) बयान फ़रमाते हैं।
6. यानी इस्लामी क़ानून के मुवाफ़िक़।
7. और वह इन्साफ़ अब इस्लामी क़ानून में मुन्हसिर (यानी सीमित और महदूद) हो गया है, पस वही लोग महबूब होंगे जो इस क़ानून के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करेंगे।

लिल्लज़ी-न हादू वर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु बिमस्तुह्फ़िज़ू मिन् किताबिल्लाहि व कानू अ़लैहि शु-हदा-अ फ़ला तख़्शवुन्ना-स वख़्शौनि व ला तश्तरू बिआयाती स-मनन् क़लीलन्, व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुल्काफ़िरून **(44)** व कतब्ना अ़लैहिम् फ़ीहा अन्नन्नफ़्-स बिन्नफ़्सि वल्ऐ़-न बिल्ऐ़नि वल्अन्-फ बिल्अन्फ़ि वल्उज़ु-न बिल्-उज़ुनि वस्सिन्-न बिस्सिन्नि वल्-जुरू-ह क़िसासुन्, फ़-मन् तसद्द-क बिही फ़हु-व कफ़्फ़ारतुल्लहू, व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून **(45)** व क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिअ़ीसब्नि मर्‌य-म मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व आतैनाहुल् इन्जी-ल फ़ीहि हुदंव्-व नूरुंव्-व मुसद्दिक़ल्-लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व हुदंव्-व मौअि-ज़तल् लिल्मुत्तक़ीन **(46)** वल्यह्कुम् अह्लुल्-इन्जीलि बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़ीहि व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुल् फ़ासिक़ून **(47)** व अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनल्-किताबि व मुहैमिनन् अ़लैहि फ़ह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अहुम् अ़म्मा जाअ-क मिनल्-हक़्क़ि, लिकुल्लिन् जअ़ल्ना मिन्कुम् शिर्-अ़तंव्-व मिन्हाजन्, व लौ शाअल्लाहु ल-ज-अ़-लकुम् उम्मतव्- वाहि-दतंव्-व लाकिल्लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम् फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति, इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम्

يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ
وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ
فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا
قَلِيْلًا وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَ
الْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَ
السِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ
كَفَّارَةٌ لَّهٗ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ
فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ

हमने तौरात नाज़िल फ़रमाई थी जिसमें हिदायत थी और वज़ाहत थी, अम्बिया जो कि अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार थे उसके मुवाफ़िक़ यहूद को हुक्म दिया करते थे, और अल्लाह वाले और उलमा भी इस वजह से कि उनको उस अल्लाह की किताब की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया गया था और वे उसके इक़रारी हो गए थे, सो तुम भी लोगों से अन्देशा मत करो और मुझसे डरो और मेरे अहकाम के बदले में मता-ए-क़लील "यानी मामूली फ़ायदा" मत लो, और जो शख़्स अल्लाह के नाज़िल किए हुए के मुवाफ़िक़ हुक्म न करे सो ऐसे लोग बिलकुल काफ़िर हैं। **(44)** और हमने उनपर उसमें यह बात फ़र्ज़ की थी कि जान बदले जान के, और आँख बदले आँख के, और नाक बदले नाक के, और कान बदले कान के, और दाँत बदले दाँत के, और ख़ास ज़ख़्मों का भी बदला है, फिर जो शख़्स उसको माफ़ कर दे तो वह उसके लिए कफ़्फ़ारा हो जाएगा,[1] और जो शख़्स ख़ुदा के नाज़िल किए हुए के मुवाफ़िक़ हुक्म न करे, तो ऐसे लोग बिलकुल सितम कर रहे हैं।[2] **(45)** और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरियम (अ़लैहिमस्सलाम) को इस हालत में भेजा कि वे अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ फ़रमाते थे, और हमने उनको इन्जील दी जिसमें हिदायत थी और वज़ाहत थी और अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ करती थी, और वह (सरासर) हिदायत और नसीहत थी (ख़ुदा से) डरने वालों के लिए। **(46)** और इन्जील वालों को चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ उसमें नाज़िल फ़रमाया है उसके मुवाफ़िक़ हुक्म किया करें, और जो शख़्स ख़ुदा तआला के नाज़िल किए हुए के मुवाफ़िक़ हुक्म न करे तो ऐसे लोग बिलकुल बेहुक्मी करने वाले हैं।[3] **(47)** और हमने (यह) किताब[4] आपके पास भेजी है जो (ख़ुद भी) सच्चाई के साथ मौसूफ़ है और इससे पहले जो किताबें हैं उनकी तस्दीक़ करती है, और उन (किताबों) की मुहाफ़िज़ है, तो उनके आपसी मामलात में इस भेजी हुई (किताब) के मुवाफ़िक़ फ़ैसला फ़रमाया कीजिए, और यह जो सच्ची किताब आपको मिली है इससे दूर होकर उनकी ख़्वाहिशों पर अ़मल दरामद न कीजिए, तुममें से हर एक के लिए हमने (ख़ास) शरीअ़त और (ख़ास) तरीक़ा तजवीज़ किया था। और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो तुम सबको एक ही उम्मत कर देते, लेकिन (ऐसा नहीं किया) ताकि जो दीन तुमको दिया है उसमें तुम सबका इम्तिहान फ़रमाएँ, तो मुफ़ीद बातों की तरफ़ दौड़ो,[5] तुम सबको ख़ुदा ही के पास जाना है, फिर वह तुम सबको जतला देगा, जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे। **(48)** और (हम एक

---

1. यानी माफ़ करना सवाब का सबब है।

2. मसाइलः मसला नम्बर १. क़िसास उस क़त्ल या जुर्म में है जो नाहक़ और जान-भूझकर हो, इसलिए कि हक़ पर क़त्ल करना दुरुस्त है, और ग़लती से किए गए क़त्ल में दियत (यानी ख़ून-बहा) है। **मसला नम्बर २.** जान के बदले जान में आज़ाद व ग़ुलाम, मुसलमान व काफ़िर, ज़िम्मी, मर्द व औ़रत, बड़ा व छोटा, शरीफ़ व रज़ील, बादशाह और रइय्यत सब दाख़िल हैं, अलबत्ता ख़ुद अपने ममलूक ग़ुलाम और अपनी औलाद के क़िसास में न मारा जाना इज्मा व हदीस से साबित है।

3. ऊपर तौरात व इन्जील का अपने-अपने दौर में वाजिबुल-अ़मल होना (जिसपर अ़मल करना वाजिब हो) बयान फ़रमाया है। आगे क़ुरआन मजीद का अपने दौर में जो कि इसके नाज़िल होने के ज़माने से क़ियामत आने तक है, वाजिबुल-अ़मल होना बयान फ़रमाते हैं।

4. यानी क़ुरआन मजीद।

5. यानी उन अ़क़ीदों, आमाल और अहकाम की तरफ़ दौड़ो जिनपर क़ुरआन मुश्तमिल है, यानी क़ुरआन पर ईमान लाकर इसपर चलो।

फ़ीहि तख़्तलिफ़ून **(48)** व अनिह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अहुम् वह्ज़र्हुम् अंय्यफ़्तिनू-क अ़म्बअ़्ज़ि मा अन्ज़लल्लाहु इलै-क, फ़-इन् तवल्लौ फ़अ़्लम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युसीबहुम् बि-बअ़्ज़ि ज़ुनूबिहिम्, व इन्-न कसीरम् मिनन्नासि लफ़ासिक़ून **(49)** अ-फ़हुक्मल् जाहिलिय्यति यब्ग़ू-न, व मन् अह्सनु मिनल्लाहि हुक्मल् लिक़ौमिंय्यूक़िनून **(50)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल् यहू-द वन्नसारा औलिया-अ ✣ बअ़्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ़्ज़िन्, व मंय्य-तवल्लहुम् मिन्कुम् फ़-इन्नहू मिन्हुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्-ज़ालिमीन **(51)** फ़-तरल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुंय्युसारिअ़ू-न फ़ीहिम् यक़ूलू-न नख़्शा अन् तुसीबना दा-इ-रतुन्, फ़-अ़सल्लाहु अंय्यअ्ति-य बिल्फ़त्हि औ अम्रिम् मिन् अ़िन्दिही फ़युस्बिहू अ़ला मा असर्रू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् नादिमीन **(52)** व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू अ-हाउला-इल्लज़ी-न अक़्समू बिल्लाहि जह्-द

المائدة ٥ — ١٠٦ — لا يحب الله ٦

لكل جعلنا منكم شرعة ومنهاجا ولو شاء الله لجعلكم
أمة واحدة ولكن ليبلوكم في ما آتاكم فاستبقوا الخيرات
إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون ﴿٤٨﴾
وأن احكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم و
احذرهم أن يفتنوك عن بعض ما أنزل الله إليك فإن
تولوا فاعلم أنما يريد الله أن يصيبهم ببعض ذنوبهم
وإن كثيرا من الناس لفاسقون ﴿٤٩﴾ أفحكم الجاهلية يبغون
ومن أحسن من الله حكما لقوم يوقنون ﴿٥٠﴾ يا أيها الذين
آمنوا لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء بعضهم أولياء
بعض ومن يتولهم منكم فإنه منهم إن الله لا يهدي
القوم الظالمين ﴿٥١﴾ فترى الذين في قلوبهم مرض يسارعون
فيهم يقولون نخشى أن تصيبنا دائرة فعسى الله أن يأتي
بالفتح أو أمر من عنده فيصبحوا على ما أسروا في أنفسهم
نادمين ﴿٥٢﴾ ويقول الذين آمنوا أهؤلاء الذين أقسموا
بالله جهد أيمانهم إنهم لمعكم حبطت أعمالهم فأصبحوا
خاسرين ﴿٥٣﴾ يا أيها الذين آمنوا من يرتد منكم عن دينه

منزل ٢

ऐमानिहिम् इन्नहुम् ल-म-अ़कुम्, हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़अस्बहू ख़ासिरीन ▲ **(53)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मंय्यर्तद्-द मिन्कुम् अ़न् दीनिही फ़सौ-फ यअ्तिल्लाहु बिक़ौमिंय्-युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनहू अज़िल्लतिन् अ़लल्-मुअ्मिनी-न अअ़िज़्ज़तिन् अ़लल्काफ़िरी-न युजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि व ला यख़ाफ़ू-न लौम-त ला-इमिन्, ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि

बार फिर हुक्म देते हैं कि) आप उनके आपसी मामलात में इस भेजी हुई (किताब) के मुवाफ़िक़ फ़ैसला फ़रमाया कीजिए और उनकी ख़्वाहिशों पर अ़मल दरामद न कीजिए और उनसे (यानी उनकी इस बात से) एहतियात रखिए कि वे आपको खुदा तआ़ला के भेजे हुए किसी हुक्म से भी बिचला दें, फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो (यह) यक़ीन कर लीजिए कि बस खुदा ही को मन्ज़ूर है कि उनके बाज़े जुर्मों पर उनको सज़ा दें, और ज़्यादा आदमी तो बेहुक्म ही (होते) हैं। **(49)** क्या ये लोग ज़माना-ए-जाहिलियत का फ़ैसला चाहते हैं, और फ़ैसला करने में अल्लाह से अच्छा कौन होगा यक़ीन रखने वालों के नज़दीक।[1] **(50)** ❖

ऐ ईमान वालो! तुम यहूद और ईसाइयों को दोस्त मत बनाना। वे एक दूसरे के दोस्त हैं।[2] और जो शख़्स तुममें से उनके साथ दोस्ती करेगा बेशक वह उन्हीं में से होगा। बेशक अल्लाह तआ़ला समझ नहीं देते उन लोगों को जो अपना नुक़सान कर रहे हैं। **(51)** (इसी लिए) तुम ऐसे लोगों को जिनके दिल में मर्ज़ है देखते हो कि दौड़-दौड़कर उनमें घुसते हैं, कहते हैं कि हमको अन्देशा है कि हमपर कोई हादसा पड़ जाए, सो क़रीब ही उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला कामिल फ़त्ह को ज़ाहिर फ़रमा दे या किसी और बात को ख़ास अपनी तरफ़ से,[3] फिर अपने छुपे हुए दिली ख़्यालात पर शर्मिन्दा होंगे।[4] **(52)** और मुसलमान लोग कहेंगेः (अरे) क्या ये वही लोग हैं कि बड़े मुबालग़े से "यानी बढ़-बढ़कर" अल्लाह तआ़ला की क़स्में खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं, इन लोगों की सारी कार्यवाहियाँ ग़ारत गईं, जिससे नाकाम रहे।[5] ▲ **(53)** ऐ ईमान वालो! जो शख़्स तुममें से अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह बहुत जल्दी ऐसी क़ौम पैदा कर देगा जिससे उसको (यानी अल्लाह तआ़ला को) मुहब्बत होगी और उनको उससे (यानी अल्लाह तआ़ला से) मुहब्बत होगी। वे मुसलमानों पर मेहरबान होंगे और काफ़िरों पर तेज़ होंगे, जिहाद करते होंगे अल्लाह की राह में, और वे लोग किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे।[6] यह अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है जिसको चाहें अ़ता फ़रमाएँ, और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुस्अ़त वाले हैं, बड़े इल्म वाले हैं। **(54)** तुम्हारे

1. ऊपर यहूद व ईसाइयों की बद-आमाली और बुराइयाँ मज़कूर हुई हैं और बाज़ मुनाफ़िक़ लोग जो कि ज़ाहिर में इस्लाम के दावेदार थे, उनसे बाज़ वहमी मस्लहतों की बिना पर दोस्ती रखते थे, इसलिए आगे इसी मज़मून की मुनासबत से ईमान वालों को उनके साथ दोस्ती करने से मना फ़रमाते हैं कि जब उन लोगों के ये हालात हैं तो उनका तक़ाज़ा तो यही है कि उनसे मुनाफ़िक़ों की तरह हरगिज़ दोस्ती मत करो, ईमान वालों को मना करने के बाद उन मुनाफ़िक़ों की निन्दा और उन मस्लहतों का बातिल होना और अन्जामकार उनका नदामत यानी शर्मिन्दगी उठाना बतौर पेशीनगोई (यानी भविष्यवाणी) के मज़कूर है।

2. मतलब यह है कि दोस्ती होती है ताल्लुक़ से, सो उनमें आपस में तो ताल्लुक़ है मगर तुममें और उनमें क्या मुनासबत और ताल्लुक़?

3. मतलब यह है कि मुसलमानों की फ़त्ह और मुनाफ़िक़ों की छुपी हालत ज़ाहिर होना दोनों बातें जल्द ही होने वाली हैं।

4. एक शर्मिन्दगी तो अपने ख़्याल की ग़लती पर कि फ़ितरी बात है, दूसरी शर्मिन्दगी अपने निफ़ाक़ पर जिसकी बदौलत आज रुस्वा हुए, 'मा असर्रू' में ये दोनों दाख़िल हैं, और तीसरी शर्मिन्दगी कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती करने पर कि बेकार ही गई और मुसलमानों से भी बुरे बने चूँकि यह दोस्ती 'मा असर्रू' पर मुन्हसिर थी, इसलिए इन दो नदामतों के ज़िक्र से यह तीसरी साफ़ तौर पर ज़िक्र किए बिना ही खुद समझ में आ गई।

5. चुनाँचे यह पेशीनगोई सच्ची हुई, उन मुनाफ़िक़ों की ज़्यादा दोस्ती मदीने के यहूद और मक्का के मुश्रिकीन से थी, मक्का फ़त्ह हो गया और यहूद तबाह व बर्बाद हुए जिसका ज़िक्र कई बार आ चुका है।

6. चुनाँचे बाज़े लोग इस्लाम से फिर गए थे लेकिन खुदा तआ़ला ने अपनी इस पेशीनगोई के मुवाफ़िक़ मुख़्लिस मोमिनों के हाथों हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में उनका ख़ात्मा फ़रमा दिया, बाज़ ने तौबा कर ली थी। बहर हाल इस्लाम को कोई कमज़ोरी या नुक़सान नहीं पहुँचा।

युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम **(54)** इन्नमा वलिय्युकुमुल्लाहु व रसूलुहू वल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् राकिअून **(55)** व मंय्य-तवल्लल्ला-ह व रसूलहू वल्लज़ी-न आमनू फ़-इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुल्-ग़ालिबून **(56)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनकुम् हुज़ुवंव्-व लअिबम् मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् वल्कुफ़्फ़ा-र औलिया-अ वत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(57)** व इज़ा नादैतुम् इलस्सलातित्-त-ख़ज़ूहा हुज़ुवंव्-व लअिबन्, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्क़िलून **(58)** क़ुल् या अह्लल्-किताबि हल् तन्क़िमू-न मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लु व अन्-न अक्स-रकुम् फ़ासिक़ून **(59)** क़ुल् हल् उनब्बिउकुम् बि-शर्रिम् मिन् ज़ालि-क मसू-बतन् अिन्दल्लाहि, मल्ल-अ़-नहुल्लाहु व ग़ज़ि-ब अ़लैहि व ज-अ़-ल मिन्हुमुल् क़ि-र-द-त वल्ख़नाज़ी-र व अ़-बदत्तागू-त, उलाइ-क शर्रुम् मकानंव्-व अज़ल्लु अ़न् सवा-इस्सबील **(60)** व इज़ा जाऊकुम् क़ालू आमन्ना व क़द् द-ख़लू बिल्कुफ़्रि व हुम् क़द् ख़-रजू बिही, वल्लाहु अअ्लमु बिमा कानू यक्तुमून **(61)** व तरा कसीरम् मिन्हुम् युसारिअू-न फ़िल्इस्मि वल्-अ़ुद्वानि व अक्लिहिमुस्सुह्-त, लबिअ्-स मा कानू

لا يحب الله ٦ ١٠٧ المآئدة ٥

فَسَوْفَ يَأْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ
لَوْمَةَ لَآئِمٍ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ
عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ
الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾ ع ٨/١٢
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّ
لَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ
اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَ
غَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ
اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾ وَاِذَا جَآءُوْكُمْ
قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

منزل ٢

दोस्त तो अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वाले लोग हैं जो कि इस हालत से नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं कि उनमें ख़ुशूअ़ "यानी आ़जिज़ी और गिड़गिड़ाना" होता है।[1] (55) और जो शख़्स अल्लाह से दोस्ती रखेगा और उसके रसूल से और ईमान वाले लोगों से, सो अल्लाह का गिरोह बिला शक ग़ालिब है। (56) ❖

ऐ ईमान वालो! जिन लोगों को तुमसे पहले किताब मिल चुकी है, जो ऐसे हैं कि जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रखा है, उनको और दूसरे कुफ़्फ़ार को दोस्त मत बनाओ, और अल्लाह तआ़ला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57) और जब तुम नमाज़ के लिए ऐलान करते हो तो वे लोग उसके साथ हँसी और खेल करते हैं, यह इस सबब से है कि वे लोग ऐसे हैं कि बिलकुल अ़क़्ल नहीं रखते।[2] (58) आप कहिए कि ऐ अहले किताब! तुम हममें कौन-सी बात ऐबदार और बुरी पाते हो, सिवाय इसके कि हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसपर जो हमारे पास भेजी गई है और उसपर जो पहले भेजी जा चुकी है बावजूद इसके कि तुममें अक्सर लोग ईमान से ख़ारिज हैं।[3] (59) आप कहिए कि क्या मैं तुमको ऐसा तरीक़ा बतलाऊँ जो इससे भी ख़ुदा के यहाँ पादाश "यानी नतीजा और बदला" मिलने में ज़्यादा बुरा हो। वह उन शख़्सों का तरीक़ा है जिनको अल्लाह तआ़ला ने दूर कर दिया हो और उनपर ग़ज़ब फ़रमाया हो और उनको बन्दर और सुअर बना दिया हो, और उन्होंने शैतान की परस्तिश की हो, ऐसे लोग मक़ाम के एतिबार से भी बहुत बुरे हैं और सही रास्ते से भी बहुत दूर हैं।[4] (60) और जब ये लोग तुम लोगों के पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए, हालाँकि वे कुफ़्र को ही लेकर आए थे और कुफ़्र को ही लेकर चले गए, और अल्लाह तआ़ला तो ख़ूब जानते हैं जिसको ये छुपाते हैं। (61) और आप उनमें बहुत आदमी ऐसे देखते हैं जो दौड़-दौड़कर गुनाह और ज़ुल्म और हराम खाने पर गिरते हैं, वाक़ई उनके ये काम (बहुत) बुरे हैं। (62) उनको नेक लोग और उलमा गुनाह की बात कहने से और हराम माल खाने से क्यों नहीं

---

1. यानी अक़ायद व अख़्लाक़ और बदनी व माली आमाल सब के जामे हैं।
2. यह इशारा है दो क़िस्सों की तरफ़, एक यह कि जब अज़ान होती और मुसलमान नमाज़ शुरू करते तो यहूद कहते कि यह खड़े होते हैं, ख़ुदा करे कभी खड़ा होना नसीब न हो। और जब उनको रुकूअ़ व सज्दा करते देखते तो हँसते और मज़ाक़ उड़ाते। दूसरा क़िस्सा यह है कि मदीना में एक ईसाई था, जब अज़ान सुनता "अश्हदु अन्-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह" तो कहता "क़द ह-रक़ल् काज़िब" यानी झूठा जल जाए। एक रात ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि वह और उसके घर वाले और बाल बच्चे सब सो रहे थे। कोई ख़ादिम घर में आग लेकर गया, एक चिंगारी गिर पड़ी। वह, उसका घर और घर वाले सब जल गए। यह तो "अल्लज़ी-न ऊतुल् किता-ब" के मिस्दाक़ थे और "अल्-कुफ़्फ़ार" के मिस्दाक़ का एक क़िस्सा यह हुआ था कि रिफ़ाआ़ बिन ज़ैद बिन ताबूत और सुवैद बिन हारिस ने दिखावे के तौर पर इस्लाम का इज़्हार किया था। बाज़े मुसलमान उनसे मिलना-जुलना रखते थे। इन सब वाक़िआ़त पर ये आयतें नाज़िल हुईं।
3. अक्सर इसलिए फ़रमाया कि कुछ न कुछ हर ज़माने में ईमान वाले रहे।
4. जिनसे दोस्ती करने की ऊपर मुमानअ़त फ़रमाई उनमें बाज़े मुनाफ़िक़ थे जो ऊपर भी लफ़्ज़ "अल-कुफ़्फ़ार" में या लफ़्ज़ के आ़म होने में यहूद दाख़िल होकर मज़कूर हैं, आगे उनकी एक ख़ास हालत बयान फ़रमाते हैं।

यअ्मलून **(62)** लौ ला यन्हाहुमुर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु अ़न् क़ौलिहिमुल्-इस्-म व अक्लिहिमुस्सुह्-त, लबिअ्-स मा कानू यस्नअ़ून **(63)** व क़ालतिल्-यहूदु यदुल्लाहि मग़्लूलतुन्, ग़ुल्लत् ऐदीहिम् व लुअ़िनू बिमा क़ालू ✣ बल् यदाहु मब्सूततानि युन्फ़िक़ु कै-फ़ यशा-उ, व ल-यज़ीदन्-न कसीरम् मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन्, व अल्क़ैना बैनहुमुल्-अ़दाव-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल्-क़ियामति, कुल्लमा औक़दू नारल्-लिल्-हर्बि अत्-फ़-अहल्लाहु व यस्औ-न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन्, वल्लाहु ला युहिब्बुल् मुफ़्सिदीन **(64)** व लौ अन्-न अह्लल्-किताबि आमनू वत्तक़ौ ल-कफ़्फ़र्ना अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-अद्ख़ल्नाहुम् जन्नातिन्नअ़ीम **(65)** व लौ अन्नहुम् अक़ामुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम् मिर्रब्बिहिम् ल-अ-कलू मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम्, मिन्हुम् उम्मतुम् मुक़्तसि-दतुन्, व कसीरुम् मिन्हुम् सा-अ मा यअ्मलून **(66)** ❖

لا يحب الله ١٠٨ المائدة ٥

بما كانوا يكتمون ﴿٦١﴾ وترى كثيرا منهم يسارعون في الإثم
والعدوان وأكلهم السحت لبئس ما كانوا يعملون ﴿٦٢﴾ لولا
ينهاهم الربانيون والأحبار عن قولهم الإثم وأكلهم
السحت لبئس ما كانوا يصنعون ﴿٦٣﴾ وقالت اليهود يد الله
مغلولة غلت أيديهم ولعنوا بما قالوا بل يداه مبسوطتان
ينفق كيف يشاء وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك
من ربك طغيانا وكفرا وألقينا بينهم العداوة والبغضاء
إلى يوم القيامة كلما أوقدوا نارا للحرب أطفأها الله
ويسعون في الأرض فسادا والله لا يحب المفسدين ﴿٦٤﴾
ولو أن أهل الكتاب آمنوا واتقوا لكفرنا عنهم سيئاتهم
ولأدخلناهم جنات النعيم ﴿٦٥﴾ ولو أنهم أقاموا التوراة
والإنجيل وما أنزل إليهم من ربهم لأكلوا من فوقهم
ومن تحت أرجلهم منهم أمة مقتصدة وكثير
منهم ساء ما يعملون ﴿٦٦﴾ يا أيها الرسول بلغ ما أنزل إليك
من ربك وإن لم تفعل فما بلغت رسالته والله يعصمك
من الناس إن الله لا يهدي القوم الكافرين ﴿٦٧﴾ قل يا أهل

منزل ٢

या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क व इल्लम् तफ़्अ़ल् फ़मा बल्लग़्-त रिसाल-तहू, वल्लाहु यअ्सिमु-क मिनन्नासि, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन **(67)** क़ुल् या अह्लल्-किताबि लस्तुम् अ़ला शैइन् हत्ता तुक़ीमुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम्, व ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 9/10/13

मना करते, वाक़ई उनकी यह आ़दत बुरी है। **(63)** और यहूद ने कहा कि अल्लाह तआ़ला का हाथ बन्द हो गया है,[1] उन्हीं के हाथ बन्द हैं और अपने इस कहने से ये रहमत से दूर कर दिए गए। बल्कि अल्लाह तआ़ला के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं,[2] जिस तरह चाहते हैं ख़र्च करते हैं।[3] और जो (मज़मून) आपके पास आपके परवर्दिगार की तरफ़ से भेजा जाता है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और कुफ़्र की तरक़्क़ी का सबब हो जाता है, और हमने उनमें आपस में क़ियामत तक दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया। जब कभी लड़ाई की आग भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआ़ला उसको ख़त्म कर देते हैं, और मुल्क में फ़साद "यानी बिगाड़ और ख़राबी" करते फिरते हैं,[4] और अल्लाह फ़साद करने वालों को महबूब नहीं रखते। **(64)** और अगर अहले किताब ईमान ले आते और तक़्वा इख़्तियार करते तो हम ज़रूर उनकी तमाम बुराइयाँ माफ़ कर देते और ज़रूर उनको चैन के बाग़ों में दाख़िल करते। **(65)** और अगर ये लोग तौरात की और इन्जील की और जो (किताब) उनके परवर्दिगार की तरफ़ से उनके पास भेजी गई है उसकी पूरी पाबन्दी करते[5] तो ये लोग अपने ऊपर से और अपने नीचे से ख़ूब फ़राग़त से खाते। उनमें एक जमाअ़त सही रास्ते पर चलने वाली है, और ज़्यादा उनमें ऐसे ही हैं कि उनके किरदार बहुत बुरे हैं। **(66)** ❖

ऐ रसूल! जो-जो कुछ आपके रब की जानिब से आप पर नाज़िल किया गया है आप सब पहुँचा दीजिए, और अगर आप ऐसा न करेंगे तो आपने अल्लाह तआ़ला का एक पैग़ाम भी नहीं पहुँचाया,[6] और अल्लाह तआ़ला आपको लोगों से महफ़ूज़ रखेगा,[7] यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उन काफ़िर लोगों को राह न देंगे। **(67)** आप कहिए कि ऐ अहले

---

1. वजह इस गुस्ताख़ी की यह हुई थी कि पहले यहूद पर रोज़ी की फ़राग़त थी, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और वे आपके साथ दुश्मनी और मुख़ालफ़त से पेश आए तो रोज़ी में तंगी हो गई। इसपर बेहूदा बातें बकने लगे, और बार-बार कहने वाले दो ही शख़्स थे। लेकिन चूँकि और यहूद भी इससे रोकने वाले नहीं हुए बल्कि राज़ी रहे इसलिए औरों को भी इस बात में शरीक फ़रमाया गया।
2. यानी बड़े दाता और करीम हैं।
3. क्योंकि हिक्मत वाले भी हैं इसलिए जिस तरह चाहते हैं ख़र्च करते हैं। पस यहूद पर जो तंगी हुई उसकी वजह हिक्मत है कि उनके कुफ़्र का वबाल उनको चखाना और दिखाना है, न यह कि बुख़्ल इसकी वजह हो।
4. जैसे नौ-मुस्लिमों को बहकाना, लगाई-बुझाई करना, अ़वाम को तौरात के कमी-बेशी किए हुए मज़ामीन सुनाकर इस्लाम से रोकना।
5. यानी उनमें जिस-जिस बात पर अ़मल करने को लिखा है सब पर पूरा अ़मल करते। इसमें रिसालत की तस्दीक़ भी आ गई और इससे तब्दील किए हुए और मन्सूख़ हुए अहकाम निकल गए, क्योंकि उन किताबों का मजमूआ़ उनपर अ़मल करने को नहीं बतलाता बल्कि मना करता है।
6. क्योंकि इस मजमूए का पहुँचाना फ़र्ज़ है तो जैसा कुल के छुपाने से यह फ़र्ज़ छूटता है इसी तरह बाज़ के छुपाने से भी वह फ़र्ज़ छूट जाता है।
7. चुनाँचे यह वायदा इसी तरह सच्चा हुआ कि अगरचे बाज़ लड़ाई और जंगों में आप ज़ख़्मी हुए और यहूद ने नामर्दों की तरह आपको ज़हर दिया, मगर इकट्ठे व मुक़ाबिल होकर कोई क़त्ल व हलाक न कर सका। और इस पेशीनगोई का ज़ाहिर होना आपका मोजिज़ा और नुबुव्वत की दलील है। तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास पहरा दिया जाता था, जब यह आयत नाज़िल हुई तो आपने फ़रमाया कि चले जाओ, अल्लाह तआ़ला ने मेरी हिफ़ाज़त कर ली, यह भी नुबुव्वत की दलील है, क्योंकि ऐसा एतिमाद वह्य के बग़ैर नहीं हो सकता।

उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग्यानंव्-व कुफ़्रन् फ़ला तअ्-स अ़लल् क़ौमिल्-काफ़िरीन (68) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिऊ-न वन्नसारा मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (69) ल-क़द् अख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्राई-ल व अर्सल्ना इलैहिम् रुसुलन्, कुल्लमा जाअहुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुहुम् फ़रीक़न् कज़्ज़बू व फ़रीक़ंय्यक़्तुलून (70) व हसिबू अल्ला तकू-न फ़ित्नतुन् फ़-अ़मू व सम्मू सुम्-म ताबल्लाहु अ़लैहिम् सुम्-म अ़मू व सम्मू कसीरुम्- मिन्हुम्, वल्लाहु बसीरुम् बिमा यअ़्मलून (71) ल-क़द् क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्य-म, व क़ालल्मसीहु या बनी इस्राईलअ़्बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम्, इन्नहू मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् हर्रमल्लाहु अ़लैहिल्- जन्न-त व मअ्वाहुन्नारु, व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार (72) ल-क़द् क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह सालिसु सलासतिन् ✣ व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहुंव्वाहिदुन्, व इल्लम् यन्तहू अ़म्मा यक़ूलू-न ल-यमस्सन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (73) अ-फ़ला यतूबू-न इलल्लाहि व यस्तग़्फ़िरूनहू, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (74) मल्मसीहुब्नु मर्य-म इल्ला रसूलुन्

الكتب لستم على شيء حتى تقيموا التورىة والانجيل و
ما انزل اليكم من ربكم وليزيدن كثيرا منهم ما انزل اليك
من ربك طغيانا وكفرا فلا تاس على القوم الكفرين ﴿٦٨﴾ ان
الذين امنوا والذين هادوا والصابئون والنصرى من
امن بالله واليوم الاخر وعمل صالحا فلا خوف عليهم و
لا هم يحزنون ﴿٦٩﴾ لقد اخذنا ميثاق بني اسراءيل وارسلنا
اليهم رسلا كلما جاءهم رسول بما لا تهوى انفسهم فريقا
كذبوا وفريقا يقتلون ﴿٧٠﴾ وحسبوا الا تكون فتنة فعموا
وصموا ثم تاب الله عليهم ثم عموا وصموا كثير منهم
والله بصير بما يعملون ﴿٧١﴾ لقد كفر الذين قالوا ان الله هو
المسيح ابن مريم وقال المسيح يبني اسراءيل اعبدوا
الله ربي وربكم انه من يشرك بالله فقد حرم الله
عليه الجنة وماوىه النار وما للظلمين من انصار ﴿٧٢﴾
لقد كفر الذين قالوا ان الله ثالث ثلثة وما من اله
الا اله واحد وان لم ينتهوا عما يقولون ليمسن الذين
كفروا منهم عذاب اليم ﴿٧٣﴾ افلا يتوبون الى الله ويستغفرونه

✣ व. लाज़िम

क़िताब! तुम किसी भी (सही) चीज़ पर नहीं,[1] जब तक कि तौरात की और इन्जील की और जो (किताब) तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से भेजी गई है उसकी भी पूरी पाबन्दी न करोगे। और ज़रूर जो (मज़मून) आपके पास आपके रब की तरफ़ से भेजा जाता है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और कुफ़्र की तरक़्क़ी का सबब बन जाता है, तो आप उन काफ़िर लोगों पर ग़म न किया कीजिए।[2] **(68)** यह तहक़ीक़ी बात है कि मुसलमान और यहूदी और साबिईन का फ़िर्क़ा और नसारा में से जो शख़्स यक़ीन रखता हो अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर, और कारगुज़ारी अच्छी करे,[3] ऐसों पर न किसी तरह का अन्देशा है और न वे ग़मगीन होंगे। **(69)** हमने बनी इसराईल से अ़हद लिया[4] और हमने उनके पास (बहुत-से) पैग़म्बर भेजे। जब कभी उनके पास कोई पैग़म्बर वह (हुक्म) लाया जिसको उनका जी न चाहता था तो उन्होंने बाज़ों को झूठा बतलाया और बाज़ों को क़त्ल ही कर डालते थे। **(70)** और (यही) गुमान किया कि कुछ सज़ा न होगी, तो वे (उससे और भी) अन्धे और बहरे बन गए, फिर अल्लाह तआला ने उन पर तवज्जोह फ़रमाई, फिर भी उनमें के बहुत-से अन्धे और बहरे बने रहे, और अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखने वाले हैं। **(71)** बेशक वे लोग काफ़िर हो चुके जिन्होंने (यह) कहा कि अल्लाह तआला ऐन मरियम के बेटे मसीह हैं, हालाँकि मसीह ने खुद फ़रमाया (था) कि ऐ बनी इसराईल! तुम अल्लाह तआला की इबादत करो जो मेरा भी और तुम्हारा भी रब है।[5] बेशक जो शख़्स अल्लाह तआला के साथ शरीक क़रार देगा, सो उसपर अल्लाह तआला जन्नत को हराम कर देगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है, और (ऐसे) ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। **(72)** बिला शुब्हा वे लोग भी काफ़िर हैं जो कहते हैं कि अल्लाह तआला तीन में का एक है, हालाँकि सिवाय एक माबूद के और कोई माबूद नहीं, और अगर ये लोग अपने इन क़ौलों से बाज़ न आए तो जो लोग उनमें काफ़िर रहेंगे उनपर दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। **(73)** क्या फिर भी अल्लाह तआला के सामने तौबा नहीं करते और उससे माफ़ी नहीं चाहते, हालाँकि अल्लाह तआला बड़ी मग़फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत

---

1. क्योंकि ग़ैरे-मक़बूल राह पर होना बेराह होने की तरह है।
2. ऊपर अहले किताब को इस्लाम की तरग़ीब थी, आगे भी एक आम क़ानून से जो कि अहले किताब और ग़ैर-अहले किताब सबको शामिल है, इसी की तरग़ीब है।
3. यानी शरीअ़त के क़ानून के मुवाफ़िक़।
4. यानी तमाम पैग़म्बरों की तस्दीक़ व फ़रमाँबरदारी का अ़हद।
5. इस क़ौल में अपने बन्दा होने की वज़ाहत और स्पष्टता है, फिर उनको माबूद कहना वही बात है कि "मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त"।

क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु, व उम्मुहू सिद्दीक़तुन्, काना यअ्कुलानित्तआ-म, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुबय्यिनु लहुमुल्-आयाति सुम्मन्ज़ुर् अन्ना युअ्फ़कून (75) क़ुल अ-तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला नफ़अ़न्, वल्लाहु हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम (76) क़ुल या अह्लल्-किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् ग़ैरल्-हक़्क़ि व ला तत्तबिअ़ू अह्वा-अ क़ौमिन् क़द् ज़ल्लू मिन् क़ब्लु व अज़ल्लू कसीरंव्-व ज़ल्लू अ़न् सवा-इस्सबील (77) ❖

लुअ़िनल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-बनी इस्राई-ल अ़ला लिसानि दावू-द व अ़ीसब्नि मर्य-म, ज़ालि-क बिमा अ़सौ-व कानू यअ़्तदून (78) कानू ला य-तनाहौ-न अ़म्-मुन्करिन् फ़-अ़लूहु, लबिअ्-स मा कानू यफ़्अ़लून (79) तरा कसीरम्-मिन्हुम् य-तवल्लौन-ल्लज़ी-न क-फ़रू, लबिअ्-स मा क़द्द-मत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु अ़लैहिम् व फ़िल्-अ़ज़ाबि हुम् ख़ालिदून (80) व लौ कानू युअ्मिनू-न बिल्लाहि वन्नबिय्यि व मा उन्ज़ि-ल इलैहि मत्त-ख़ज़ूहुम् औलिया-अ व लाकिन्-न कसीरम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (81) ल-तजिदन्-न अशद्दन्नासि अ़दा-वतल्- लिल्लज़ी-न आमनुल्-यहू-द वल्लज़ी-न अश्रकू व ल-तजिदन्-न अक़्र-बहुम् मवद्दतल्- लिल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा, ज़ालि-क बिअन्-न मिन्हुम् क़िस्सीसी-न व रुह्बानंव्-व अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून (82)

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۚ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ۚ اُنْظُرْ
كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾ قُلْ
اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۚ وَاللّٰهُ
هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ
غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ
اَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۚ
لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ
لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي
الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ
اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾
لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ
وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ۚ
ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

फ़रमाने वाले हैं।[1] **(74)** मरियम के बेटे मसीह कुछ भी नहीं सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं, जिनसे पहले (और) भी पैग़म्बर गुज़र चुके हैं, और उनकी वालिदा सिद्दिक़ा (यानी एक वली बीबी) हैं, दोनों खाना खाया करते थे। देखिए तो हम उनसे कैसी (कैसी) दलीलें बयान कर रहे हैं, फिर देखिए वे उल्टे किधर जा रहे हैं।[2] **(75)** आप फ़रमाइए क्या ख़ुदा के सिवा ऐसे की इबादत करते हो जो कि तुमको न कोई नुक़सान पहुँचाने का इख़्तियार रखता हो और न नफ़ा पहुँचाने का, हालाँकि अल्लाह तआ़ला सब सुनते हैं, सब जानते हैं।[3] **(76)** आप फ़रमाइए कि ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में नाहक़ का ग़ुलू मत करो "यानी हद से मत गुज़रो" और उन लोगों के ख़्यालात पर मत चलो जो पहले (ख़ुद भी) ग़लती में पड़ चुके हैं और बहुतों को ग़लती में डाल चुके हैं, और वे लोग सीधे रास्ते से बहक गए (यानी दूर हो गए) थे। **(77)** ❖

बनी इसराईल में जो लोग काफ़िर थे उनपर लानत की गई थी दाऊद और ईसा इब्ने मरियम की ज़बान से,[4] यह (लानत) इस सबब से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुख़ालफ़त की और हद से निकल गए। **(78)** जो बुरा काम उन्होंने कर रखा था उससे एक-दूसरे को मना न करते थे, वाक़ई उनका फ़ेल (बेशक) बुरा था। **(79)** आप उनमें बहुत आदमी देखेंगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं,[5] जो (काम) उन्होंने आगे के लिए किया है वह बेशक बुरा है कि अल्लाह तआ़ला उनसे नाख़ुश हुआ और ये लोग अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे। **(80)** और अगर ये लोग अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते और पैग़म्बर पर और उस (किताब) पर जो उनके पास भेजी गई तो उन (मुश्रिकीन) को कभी दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें ज़्यादा लोग ईमान से ख़ारिज ही हैं।[6] **(81)** तमाम आदमियों से ज़्यादा मुसलमानों से दुश्मनी रखने वाले आप इन यहूद और इन मुश्रिकों को पाएँगे, और उनमें मुसलमानों के साथ दोस्ती रखने के ज़्यादा क़रीब उन लोगों को पाइएगा जो अपने को ईसाई कहते हैं,[7] यह इस सबब से है कि उनमें बहुत-से (इल्म से दोस्ती रखने वाले) आ़लिम हैं, और बहुत-से दुनिया से बेताल्लुक़ (दुर्वेश), और (यह इस सबब से है कि) ये लोग तकब्बुर करने वाले नहीं हैं।[8] **(82)**

---

1. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के माबूद होने का बातिल होना आ़म मज़मून से बयान फ़रमाया था। आगे एक ख़ास दलील से बयान करते हैं।
2. यह दलील माद्दियात के इस्तिदलाल के एतिबार से "रूहुल्-क़ुदुस" के माबूद होने के बातिल होने के लिए भी काफ़ी है, क्योंकि उनका आना-जाना, चलना-फिरना कि ये सब उमूर माद्दे के ख़्वास से हैं, मुसल्लम हैं, और माद्दियत से मुम्किन होना और उससे माबूद होने का बातिल होना ज़ाहिर है, इसलिए अलग से मुस्तक़िल तौर पर इसका ज़िक्र ज़रूरी नहीं।
3. या तो ये ईसाई जिनका ज़िक्र हुआ ईसा अ़लैहिस्सलाम की पूजा भी करते होंगे या यह कि इबादत में सबसे बड़ा दर्जा माबूद होने के एतिक़ाद का है। जब वे ईसा अ़लैहिस्सलाम के माबूद होने के क़ायल हुए तो यक़ीनन उनकी इबादत की।
4. यानी ज़बूर और इन्जील में काफ़िरों पर लानत लिखी थी, जैसे क़ुरआन मजीद में है "फ़-लअ़्नतुल्लाहि अ़लल् काफ़िरीन" चूँकि ये किताबें हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अ़लैहिमस्सलाम पर नाज़िल हुईं इसलिए यह मज़मून उनकी ज़बान से ज़ाहिर हुआ।
5. मदीना के यहूद और मक्का के मुश्रिकीन में मुसलमानों की दुश्मनी के ताल्लुक़ से जिसका मन्शा कुफ़्र में तनासुब था, आपस में ख़ूब मुवाफ़क़त थी।
6. ज़्यादा का मिस्दाक़ दोनों जगह एक ही है, यानी ग़ैर-मोमिन, और यह क़ैद मोमिनों को अलग निकालने के लिए है।
7. ज़्यादा क़रीब का मतलब यह है कि दोस्त वे भी नहीं मगर दूसरे जिनका ज़िक्र किया गया उनसे ग़नीमत हैं।
8. यह आयत तमाम ज़मानों और तमाम जगहों के ईसाइयों के बारे में नहीं है, बल्कि इससे वे ईसाई मुराद हैं जो उन सिफ़तों से जो सबब और मुसब्बब में मज़कूर हैं मौसूफ़ हों, पस बाज़ चापलूसी करने वालों का दुनियावी ग़रज़ से इसके आ़म होने का दावा करना महज़ अपनी मनमानी और ख़्वाहिश परस्ती है।
तंबीहः मक़सूद आयत में ईसाइयों की तारीफ़ नहीं बल्कि तक़रीर में इन्साफ़ है, और मक़सूद दोस्ती का पूरी तरह नज़दीकी होना नहीं बल्कि इज़ाफ़ी नज़दीकी है।

सातवाँ पारः व इज़ा समिअू

सूरतुल् माइ-दति (आयत 83 से 120)

व इज़ा समिअू मा उन्ज़ि-ल इलर्रसूलि तरा अअ्युनहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अि मिम्मा अ-रफ़ू मिनल्-हक़्क़ि यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़क्तुब्ना मअ़श्शाहिदीन **(83)** व मा लना ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा-अना मिनल्-हक़्क़ि व नत्मअु अंय्युद्ख़ि-लना रब्बुना मअ़ल्- क़ौमिस्सालिहीन **(84)** फ़-असाबहुमुल्लाहु बिमा क़ालू जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ाउल् मुह्सिनीन **(85)** वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल् जहीम **(86)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहर्रिमू तय्यिबाति मा अ-हल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ्तदू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन **(87)** व कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्-वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून **(88)** ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा अ़क़्क़त्तुमुल्-ऐमा-न फ़-कफ़्फ़ारतुहू इत्आमु अ़-श-रति मसाकी-न मिन् औ-सति मा तुत्अिमू-न अह्लीकुम् औ किस्वतुहुम् औ तह्रीरु र-क़-बतिन्, फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन्, ज़ालि-क कफ़्फ़ारतु ऐमानिकुम् इज़ा हलफ़्तुम् वह्फ़ज़ू ऐमानकुम्,

واذا سمعوا ٧ — المآئدة ٥

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَى أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ
مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ
الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝
فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ
بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْمَانَ
فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ذَلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوا
أَيْمَانَكُمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ

منزل

सातवाँ पारः व इज़ा समिऊ

सूरः मा-इदः (आयत 83 से 120)

और जब वे उसको सुनते हैं जो कि रसूल की तरफ़ भेजा गया है तो आप उनकी आँखें आँसुओं से बहती हुई देखते हैं, इस सबब से कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया,[1] (यूँ) कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम मुसलमान हो गए, तो हमको भी उन लोगों के साथ लिख लीजिए जो तस्दीक़ करते हैं। **(83)** और हमारे पास कौन-सा उज़्र है कि हम अल्लाह पर और जो हक़ हमको पहुँचा है उसपर ईमान न लाएँ, और इस बात की उम्मीद रखें कि हमारा रब हमको नेक लोगों के साथ दाख़िल कर देगा। **(84)** सो उनको अल्लाह तआ़ला उनके क़ौल के बदले में ऐसे बाग़ देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, ये उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे, और नेक काम करने वालों की यही जज़ा है। **(85)** और जो लोग काफ़िर रहे और हमारी आयतों को झूठा कहते रहे वे लोग दोज़ख़ वाले हैं।[2] **(86)** ❖

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला ने जो पाक व लज़ीज़ चीज़ें तुम्हारे वास्ते हलाल की हैं[3] उन्हें हराम मत करो, और हदों से आगे मत निकलो, बेशक अल्लाह तआ़ला हद से निकलने वालों को पसन्द नहीं करते। **(87)** और ख़ुदा तआ़ला ने जो चीज़ें तुमको दी हैं उनमें से हलाल पसन्दीदा चीज़ें खाओ और अल्लाह तआ़ला से डरो जिसपर तुम ईमान रखते हो।[4] **(88)** अल्लाह तआ़ला तुम्हारी पकड़ नहीं फ़रमाते तुम्हारी क़स्मों में लग़्व "यानी बेअसर" क़स्म (तोड़ने) पर[5], लेकिन पकड़ इसपर फ़रमाते हैं कि तुम क़स्मों को मज़बूत करो, (फिर तोड़ दो) सो इसका कफ़्फ़ारा दस मोहताजों को खाना देना है दरमियानी दर्जे का जो अपने घर वालों को खाने को दिया करते हो, या उनको कपड़ा देना या एक गर्दन (यानी एक ग़ुलाम या बाँदी) आज़ाद करना।[6] और जिसको यह हासिल न हो तो तीन दिन के रोज़े हैं। यह कफ़्फ़ारा है तुम्हारी क़स्मों का, जबकि तुम क़सम खा लो (फिर तोड़ दो), और अपनी क़स्मों का ख़्याल रखा करो। इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम्हारे वास्ते अपने अहकाम बयान फ़रमाते हैं ताकि तुम शुक्र करो।[7] **(89)** ऐ ईमान वालो! (बात यही है कि) शराब और जुआ और बुत (वग़ैरह) और क़ुर्आ़ के तीर (ये सब) गन्दे शैतानी काम हैं, सो इनसे बिलकुल अलग रहो ताकि तुमको कामयाबी हो। **(90)** शैतान तो यूँ चाहता है कि शराब और जुए के

---

1. मतलब यह कि हक़ को सुनकर मुतास्सिर होते हैं।
2. यहाँ तक तो अहले किताब के मुताल्लिक़ गुफ़्तगू थी, आगे फिर उन अहकाम की तरफ़ वापस आते हैं जिनका कुछ शुरू सूरः में और कुछ दरमियान में भी बयान हुआ है।
3. चाहे खाने की क़िस्म में से हों या पहनने की, या निकाह करने की क़िस्म से हों।
4. यानी हलाल चीज़ का हराम कर लेना अल्लाह की रिज़ा के ख़िलाफ़ है, इससे डरो और इसका जुर्म मत करो।
5. यानी कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं करते।
6. यानी तीनों में से जिसको चाहे इख़्तियार कर ले।
7. 'लग़्व' कहते हैं बेअसर को, इसके दो मायने हैं, एक वह जिसपर गुनाह का असर मुरत्तब न हो, दूसरे वह जिसपर कफ़्फ़ारे का असर मुरत्तब न हो, इस आयत में इसी का ज़िक्र है।

कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(89)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-ख़मूरु वल्मैसिरु वल्अन्साबु वल्अज़्लामु रिज्सुम्-मिन् अ़-मलिश्शैतानि फ़ज्तनिबूहु लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(90)** इन्नमा युरीदुश्शैतानु अंय्यूकि-अ़ बैनकुमुल् अ़दा-व-त वल-बग़्ज़ा-अ फ़िल्ख़म्रि वल्मैसिरि व यसुद्दकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व अ़निस्सलाति फ़-हल् अन्तुम् मुन्तहून **(91)** व अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल वह्ज़रू फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़अ़्लमू अन्नमा अ़ला रसूलिनल् बलाग़ुल् मुबीन **(92)** लै-स अ़लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जुनाहुन् फ़ीमा तअ़िमू इज़ा मत्तक़ौ व आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति सुम्मत्तक़ौ व आमनू सुम्मत्तक़ौ व अह्सनू, वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन **(93)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ल-यब्लुवन्न-कुमुल्लाहु बिशैइम् मिनस्सैदि तनालुहू ऐदीकुम् व रिमाहुकुम् लि-यअ़्-लमल्लाहु मंय्यख़ाफ़ुहू बिल्ग़ैबि फ़-मनिअ़्तदा बअ़्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् अलीम **(94)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्तुलुस्सै-द व अन्तुम् हुरुमुन्, व मन् क़-त-लहू मिन्कुम् मु-तअ़म्मिदन् फ़-जज़ाउम्-मिस्लु मा क़-त-ल मिनन्न-अ़मि यह्कुमु बिही ज़वा अ़द्लिम्-मिन्कुम् हद्यम् बालिग़ल्-कअ़्-बति औ कफ़्फ़ारतुन् तआमु मसाकी-न औ अ़द्लु ज़ालि-क सियामल्-लियज़ू-क़ व बा-ल अम्रिही, अ़फ़ल्लाहु अ़म्मा स-लफ़, व मन् आ़-द फ़-यन्तक़िमुल्लाहु मिन्हु, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम **(95)** उहिल्-ल लकुम् सैदुल्बह्रि व

رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّمَا
يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ
وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ
الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ
فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ
هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا
لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ
اللّٰهُ مِنْهُ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ
مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ

ज़रिए से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और बुग्ज़ पैदा कर दे और अल्लाह तआ़ला की याद से और नमाज़ से तुमको रोक दे। सो अब भी बाज़ (नहीं) आओगे?[1] **(91)** और तुम अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करते रहो और रसूल की इताअ़त करते रहो और एहतियात रखो, और अगर मुँह मोड़ोगे तो यह जान रखो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना था। **(92)** ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जिसको वे खाते-पीते हों, जबकि वे लोग परहेज़ रखते हों और ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ईमान रखते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ख़ूब नेक अ़मल करते हों, और अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक काम करने वालों से मुहब्बत रखते हैं। **(93)** ❖

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला किसी क़द्र शिकार से तुम्हारा इम्तिहान करेगा जिन तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँच सकेंगे, ताकि अल्लाह तआ़ला मालूम करें कि कौन शख़्स उससे बिन देखे डरता है।[2] तो जो शख़्स इसके बाद हद से निकलेगा उसके वास्ते दर्दनाक सज़ा है। **(94)** ऐ ईमान वालो! (जंगली) शिकार को क़त्ल मत करो जबकि तुम एहराम की हालत में हो,[3] और जो शख़्स तुममें से उसको जान-बूझकर क़त्ल करेगा तो उसपर सज़ा और जुर्माना वाजिब होगा, जो कि बराबर होगा उस जानवर के जिसको उसने क़त्ल किया है, जिसका फ़ैसला तुममें से दो मोतबर शख़्स कर दें, (चाहे वह जुर्माना ख़ास चौपायों में से हो) शर्त यह है कि नियाज़ के तौर पर काबा तक पहुँचाई जाए, चाहे कफ़्फ़ारा कि ग़रीबों को खाना दे दिया जाए, चाहे उसके बराबर रोज़े रख लिए जाएँ, ताकि अपने किए की शामत का मज़ा चखे। जो गुज़र गया अल्लाह ने उसको माफ़ कर दिया, और जो शख़्स फिर ऐसी ही हरकत करेगा तो अल्लाह उससे इन्तिक़ाम लेंगे, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं, इन्तिक़ाम ले सकते हैं। **(95)** तुम्हारे लिए दरिया का शिकार पकड़ना और उसका खाना हलाल किया गया है,[4] तुम्हारे फ़ायदा उठाने के वास्ते और मुसाफ़िरों के वास्ते, और ख़ुश्की का शिकार पकड़ना तुम्हारे लिए हराम किया गया, जब तक कि तुम एहराम की हालत में हो, और अल्लाह तआ़ला से डरो जिसके पास जमा किए जाओगे। **(96)** ख़ुदा तआ़ला ने काबा को जो कि

---

1. हासिल यह हुआ कि यह शराब, जुआ, बुत-परस्ती और कुफ़्र के क़रीब इसलिए हैं कि नमाज़ से जो कि ईमान की बड़ी निशानियों और अ़लामतों में से है, रोक बने हुए हैं। जब इस तौर पर ईमान से दूरी हुई तो कुफ़्र से नज़दीकी हुई।

2. इम्तिहान का मतलब यह है कि एहराम की हालत में जंगली जानवरों के शिकार करने को तुमपर हराम करके उन जंगली जानवरों को तुम्हारे आस-पास फिराते रहेंगे। चुनाँचे जंगली जानवर इसी तरह आस-पास लगे फिरते थे। चूँकि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में बहुत-से शिकार के आ़दी थे, इसमें उनकी इताअ़त का इम्तिहान हो रहा था जिसमें वे पूरे उतरे।

3. इसी तरह जबकि वह शिकार हरम में हो, अगरचे शिकारी एहराम में न हो, उसका भी यही हुक्म है।

4. दरियाई जानवर वह है कि जिस तरह पानी उसके रहने की जगह है उसी तरह पानी ही उसके पैदा होने की जगह हो, पस बत्तख़ व मुरग़ाबी वग़ैरह इससे ख़ारिज और ख़ुश्की के शिकार में दाख़िल हैं।

तआ़मुहू मताअ़ल्लकुम् व लिस्सय्या-रति व हुर्रि-म अ़लैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुम्तुम् हुरुमन्, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह्शरून **(96)** ज-अ़लल्लाहुल् कअ़्-बतल् बैतल्-हरा-म क़ियामल् लिन्नासि वश्शह्रल्-हरा-म वल्हद्-य वल्क़लाइ-द, ज़ालि-क लितअ़्लमू अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(97)** इअ़्लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाबि व अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(98)** मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ु, वल्लाहु यअ़्लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून **(99)** क़ुल् ला यस्तविल्-ख़बीसु वत्तय्यिबु व लौ अअ़्ज-ब-क कस्रतुल्-ख़बीसि फ़त्तक़ुल्ला-ह या उलिल्-अल्बाबि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(100)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तस्अलू अ़न् अश्या-अ इन् तुब्-द लकुम् तसुअ्कुम् व इन् तस्अलू अ़न्हा ही-न युनज़्ज़लुल्-क़ुरआनु तुब्-द लकुम्, अ़फ़ल्लाहु अ़न्हा, वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम **(101)** क़द् स-अ-लहा क़ौमुम् मिन् क़ब्लिकुम् सुम्-म अस्बहू बिहा काफ़िरीन **(102)** मा ज-अ़लल्लाहु मिम्-बही-रतिंव्-व ला साइ-बतिंव्-व ला वसीलतिंव्-व ला हामिंव्-व लाकिन्नल्लज़ी-न क-फ़रू यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्- कज़ि-ब, व अक्सरुहुम् ला यअ़्क़िलून **(103)** व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआ़लौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि क़ालू हस्बुना मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ का-न आबाउहुम् ला यअ़्लमू-न शैअंव्-व ला यह्तदून **(104)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अ़लैकुम् अन्फ़ु-सकुम् ला यज़ुर्रुकुम् मन् ज़ल्-ल इज़हतदैतुम्, इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा

حُرُمًا وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَاۗىِٕدَ
ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ
اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ
وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝ قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ
الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔـلُوْا عَنْ اَشْيَاۗءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ
تَسْـَٔـلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۭ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۭ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا
كٰفِرِيْنَ ۝ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَاۗىِٕبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّ
لَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ وَاَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ
قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَاۗءَنَا ۭ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَاۗؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
شَيْـــًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ
مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

❖ रु. 13/7/3

अदब का मकान है लोगों के क़ायम रहने का सबब क़रार दे दिया[1] और इज़्ज़त वाले महीने को भी, और हरम में क़ुरबानी होने वाले जानवरों को भी और उन (जानवरों) को भी जिनके गले में पट्टे हों, यह इसलिए कि तुम इस बात का यक़ीन कर लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला तमाम आसमानों और ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का इल्म रखते हैं। और बेशक अल्लाह तआ़ला सब चीज़ों को ख़ूब जानते हैं। **(97)** तुम यक़ीन जान लो कि अल्लाह तआ़ला सज़ा भी सख़्त देने वाले हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़े मग़्फ़िरत वाले (और) रहमत वाले भी हैं। **(98)** रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पहुँचाना है। और अल्लाह सब जानते हैं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छुपाकर रखते हो। **(99)** आप फ़रमा दीजिए कि नापाक और पाक बराबर नहीं, अगरचे तुझको नापाक की कसरत ''यानी ज़्यादा होना'' ताज्जुब में डालती हो, तो ख़ुदा तआ़ला से डरते रहो ऐ अ़क़्लमन्दो! ताकि तुम कामयाब हो जाओ। **(100)** ❖

ऐ ईमान वालो! ऐसी (फ़ुज़ूल) बातें मत पूछो[2] कि अगर तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हारी नागवारी का सबब हो। और अगर तुम क़ुरआन के नाज़िल होने के ज़माने में (कारामद बातें) पूछो तो तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएँ, वे (गुज़रे हुए सवालात) अल्लाह ने माफ़ कर दिए और अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़े बर्दाश्त करने वाले हैं। **(101)** ऐसी बातें तुमसे पहले और लोगों ने भी पूछी थीं, फिर उन बातों का हक़ न पूरा किया। **(102)** अल्लाह तआ़ला ने न बहीरा को मश्रूअ़ ''यानी जायज़ और मुक़र्रर'' किया है और न सायबा को और न वसीला को और न हामी को, लेकिन जो लोग काफ़िर हैं वे अल्लाह तआ़ला पर झूठ लगाते हैं, और अक्सर (काफ़िर) उनमें के अ़क़्ल नहीं रखते।[3] **(103)** और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआ़ला ने जो अहकाम नाज़िल फ़रमाए हैं उनकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ रुजू करो, तो कहते हैं कि हमको वही काफ़ी है जिसपर हमने अपने बड़ों को देखा है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ समझ रखते हों और न हिदायत रखते हों! **(104)** ऐ ईमान वालो! अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो, तो जो शख़्स गुमराह रहे तो उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं, अल्लाह ही के पास तुम सबको जाना है, फिर वह तुम सबको जतला देंगे जो-जो तुम सब किया करते थे। **(105)** ऐ ईमान वालो! तुम्हारे आपस में दो शख़्सों का वसी ''यानी जिसको वसीयत की गई हो, वसीयत पर अ़मल करने वाला'' होना

1. काबा की दुनियावी मस्लहतों और बरकतों में से बाज़ ये हैं। १. उसका अमन की जगह होना। २. वहाँ हर साल मजमा होना जिसमें माली तरक़्क़ी और क़ौमी इत्तिहाद बहुत सहूलत से मयस्सर हो सकता है। ३. उसके बाक़ी रहने तक दुनिया का बाक़ी रहना, यहाँ तक कि जब कुफ़्फ़ार उसको ढा देंगे तो क़रीब ही क़ियामत आ जाएगी।

2. फ़ुज़ूल की क़ैद इसलिए लगाई कि ज़रूरत की बात पूछने में कोई हर्ज नहीं, जैसे जब बाज़ औ़रतों की इद्दत का हुक्म नाज़िल हुआ और बाज़ का नहीं हुआ और ज़रूरत सबकी पड़ती है। उसको सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा तो बिला नाराज़गी के इस आयत में जवाब नाज़िल हुआः ''वल्लाई यअिस्-न मिनल् महीजि....।

3. बहीरा वह जानवर है जिसका दूध बुतों के नाम कर देते, उसे कोई अपने काम में न लाता, और साइबा वह जानवर है जिसको बुतों के नाम पर छोड़ देते, उससे कोई काम न लेते। जैसे इस मुल्क में बाज़े लोग साँड छोड़ देते हैं। और वसीला वह ऊँटनी है जो पहली बार मादा बच्चा जने, फिर दूसरी बार भी मादा बच्चा दे, दरमियान में नर बच्चा न पैदा हो। उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ देते थे। और हामी वह नर ऊँट है जो एक ख़ास गिन्ती से जुफ़्ती (यानी सोहबत) कर चुका हो, उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ देते। यह सब बातिल, कुफ़्र और शिर्क हैं।

कुन्तुम् तअ़्मलून **(105)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू शहादतु बैनिकुम् इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु हीनल्- वसिय्यतिस्नानि ज़वा अद्लिम् मिन्कुम् औ आख़रानि मिन् ग़ैरिकुम् इन् अन्तुम् ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-असाबत्कुम् मुसीबतुल्मौति, तह्बिसूनहुमा मिम्-बअ़्दिस्सलाति फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि इनिर्तब्तुम् ला नश्तरी बिही स-मनंव्-व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा व ला नक्तुमु शहा-दतल्लाहि इन्ना इज़ल् लमिनल्-आसिमीन **(106)** फ़-इन् अुसि-र अ़ला अन्नहुमस्तहक़्क़ा इस्मन् फ़-आख़रानि यक़ूमानि मक़ा-महुमा मिनल्लज़ीनस्--तहक़्-क़ अ़लैहिमुल्-औलयानि फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि ल-शहादतुना अहक़्क़ु मिन् शहादतिहिमा व मअ़्तदैना इन्ना इज़ल् लमिनज़्ज़ालिमीन **(107)** ज़ालि-क अद्ना अंय्यअ़्तू बिश्शहा-दति अ़ला वज्हिहा औ यख़ाफ़ू अन् तुरद्-द ऐमानुम् बअ़्-द ऐमानिहिम्, वत्तक़ुल्ला-ह वस्मअ़ू, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल् फ़ासिक़ीन **(108)** ❖

यौ-म यज्मअ़ुल्लाहुर्रुसु-ल फ़-यक़ूलु माज़ा उजिब्तुम्, क़ालू ला अ़िल्-म लना, इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब **(109)** इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसब्-न मर्यमज़्कुर् निअ़्मती अ़लै-क व अ़ला वालिदति-क ✣ इज़् अय्यत्तु-क बिरूहिल्क़ुदुसि, तुकल्लिमुन्ना-स फ़िल्मह्दि व कह्लन् व इज़् अ़ल्लम्तुकल्-किता-ब वल्हिक्म-त वत्तौरा-त वल्इन्जी-ल व इज़् तख़्लुक़ु मिनत्तीनि कहै-अतित्तैरि बि-इज़्नी फ़तन्फ़ुख़ु फ़ीहा फ़-तकूनु तैरम् बि-इज़्नी व तुब्रिउल्-अक्म-ह

بما كنتم تعملون ۝ يا أيها الذين آمنوا شهادة بينكم إذا حضر
أحدكم الموت حين الوصية اثنان ذوا عدل منكم أو آخران
من غيركم إن أنتم ضربتم في الأرض فأصابتكم مصيبة
الموت تحبسونهما من بعد الصلاة فيقسمان بالله إن
ارتبتم لا نشتري به ثمنا ولو كان ذا قربى ولا نكتم شهادة
الله إنا إذا لمن الآثمين ۝ فإن عثر على أنهما استحقا إثما
فآخران يقومان مقامهما من الذين استحق عليهم الأوليان
فيقسمان بالله لشهادتنا أحق من شهادتهما وما اعتدينا
إنا إذا لمن الظالمين ۝ ذلك أدنى أن يأتوا بالشهادة على
وجهها أو يخافوا أن ترد أيمان بعد أيمانهم واتقوا الله
واسمعوا والله لا يهدي القوم الفاسقين ۝ يوم يجمع الله
الرسل فيقول ماذا أجبتم قالوا لا علم لنا إنك أنت علام
الغيوب ۝ إذ قال الله يا عيسى ابن مريم اذكر نعمتي عليك و
على والدتك إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس في
المهد وكهلا وإذ علمتك الكتاب والحكمة والتوراة
والإنجيل وإذ تخلق من الطين كهيئة الطير بإذني فتنفخ

मुनासिब है, जबकि तुममें से किसी को मौत आने लगे, जब वसीयत करने का वक़्त हो वे दो शख़्स ऐसे हों कि दीनदार हों और तुममें से हों या ग़ैर क़ौम के दो शख़्स हों, अगर तुम कहीं सफ़र में गए हो फिर तुमपर मौत का वाक़िआ पड़ जाए, अगर तुमको शुब्हा हो तो उन दोनों को बाद नमाज़ के रोक लो, फिर दोनों ख़ुदा की क़सम खाएँ कि हम इस क़सम के बदले कोई नफ़ा नहीं लेना चाहते अगरचे कोई रिश्तेदार भी होता, और अल्लाह की बात को हम छुपाकर न रखेंगे (वरना) हम इस हालत में सख़्त गुनाहगार होंगे। **(106)** फिर अगर इसकी इत्तिला हो कि वे दोनों (वसी) किसी गुनाह के करने वाले हुए हैं तो उन लोगों में से जिनके मुक़ाबले में गुनाह का काम हुआ था और दो शख़्स जो सबमें ज़्यादा क़रीब हैं, जहाँ वे दोनों खड़े हुए थे ये दोनों खड़े हों, फिर दोनों ख़ुदा की क़सम खाएँ कि यक़ीनन हमारी यह क़सम इन दोनों की उस क़सम से ज़्यादा सच्ची और दुरुस्त है और हम ज़रा भी हद से नहीं बढ़े, (वरना) हम इस हालत में सख़्त ज़ालिम होंगे।[1] **(107)** यह बहुत क़रीब ज़रिया है इस बात का कि वे लोग वाक़िए को ठीक तौर पर ज़ाहिर कर दें, या इस बात से डर जाएँ कि उनसे क़स्में लेने के बाद (वारिसों पर) क़स्में मुतवज्जह की जाएँगी। और अल्लाह तआला से डरो और सुनो, और अल्लाह तआला फ़ासिक़ लोगों की रहनुमाई न करेंगे।[2] **(108)** ❖

जिस दिन अल्लाह तआला पैग़म्बरों को (मय उनकी उम्मतों के) जमा करेंगे, फिर इरशाद फ़रमाएँगे कि तुमको (उन उम्मतों की तरफ़ से) क्या जवाब मिला था? वे अ़र्ज़ करेंगे कि (ज़ाहिरी जवाब तो हमें मालूम है, लेकिन उनके दिल की) हमको कुछ ख़बर नहीं, आप बेशक छुपी बातों के जानने वाले हैं।[3] **(109)** जब अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे कि ऐ मरियम के बेटे ईसा! मेरा इनाम याद करो जो तुमपर और तुम्हारी माँ पर (हुआ है)[4] जबकि मैंने तुमको रूहुल-क़ुदुस से ताईद दी। तुम आदमियों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी, और जबकि मैंने तुमको किताबें और समझ की बातें और तौरात और इन्जील तालीम कीं, और जबकि तुम मेरे हुक्म से गारे से एक शक्ल बनाते थे जैसे परिन्दे की शक्ल होती है, फिर तुम उसके अन्दर मेरे हुक्म से फूँक मार देते थे जिससे वह परिन्दा बन जाता था, और तुम मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे जन्म के अन्धे को और कोढ़ के बीमार को, और जबकि तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को निकालकर खड़ा कर लेते थे, और जबकि मैंने बनी इसराईल को तुमसे (यानी तुम्हारे क़त्ल व हलाक करने से) बाज़ रखा जब तुम उनके पास दलीलें लेकर आए थे, फिर उनमें जो काफ़िर थे उन्होंने कहा था कि यह सिवाय खुले जादू के और कुछ भी नहीं। **(110)** और जबकि मैंने हवारियों को हुक्म दिया

1. क्योंकि पराया माल जान-बूझकर बिला इजाज़त ले लेना ज़ुल्म है।
2. ऊपर मुख़्तलिफ़ अहकाम का ज़िक्र हुआ है और दरमियान में उनपर अ़मल करने की तरग़ीब और उनकी मुख़ालफ़त पर डरावा और डाँट बयान फ़रमाई गई है, इसी की ताकीद के लिए अगली आयत में क़ियामत की हौल व हैबत याद दिलाते हैं ताकि इताअ़त का ज़्यादा सबब हो और मुख़ालफ़त से ज़्यादा रोकने वाला हो, और अक्सर क़ुरआन मजीद का यही तरीक़ा है।
3. मतलब यह है कि एक ऐसा दिन होगा और आमाल व हालात की पूछ-गछ होगी, इसलिए तुमको मुख़ालफ़त व नाफ़रमानी से डरते रहना चाहिए।
4. ज़िक्र की गई चीज़ों का हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के लिए इनाम होना तो ज़ाहिर है, लेकिन हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम के हक़ में इनाम होना इस तौर पर है कि इन सब उमूर से आपका नबी होना साबित है, और आपने उनकी पाकीज़गी की ख़बर दी, और नबी की दी हुई ख़बरें सब सच्ची होती हैं। पस उनकी पाकदामनी साबित हो गई और यह बड़ा इनाम है। और वालिदा पर जो इनाम हुआ वह ईसा अ़लैहिस्सलाम को इसलिए याद दिलाया गया कि असल और जड़ पर इनाम होना एक तरह से शाख़ पर भी है, कि वे उसी असल से निकली हुई हैं।

वल्अब्र-स बि-इज़्नी व इज़् तुख़्रिजुल्मौता बि-इज़्नी व इज़् कफ़फ़्तु बनी इस्राई-ल अ़न्-क इज़् जिअ्तहुम् बिल्बय्यिनाति फ़क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन **(110)** व इज़् औहैतु इलल्-हवारिय्यी-न अन् आमिनू बी व बि-रसूली क़ालू आमन्ना वश्हद् बिअन्नना मुस्लिमून **(111)** इज़् क़ालल्-हवारिय्यू-न या अ़ीसब्-न मर्-य-म हल् यस्ततीअु रब्बु-क अंय्युनज़्ज़ि-ल अ़लैना माइ-दतम् मिनस्समा-इ, क़ालत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(112)** क़ालू नुरीदु अन् नअ्कु-ल मिन्हा व तत्मइन्-न क़ुलूबुना व नअ्ल-म अन् क़द् सदक़्तना व नकू-न अ़लैहा मिनश्शाहिदीन ◆ **(113)** क़ा-ल अ़ीसब्नु मर्यमल्लाहुम्-म रब्बना अन्ज़िल् अ़लैना माइ-दतम् मिनस्समा-इ तकूनु लना अ़ीदल् लि-अव्वलिना व आख़िरिना व आयतम्- मिन्-क वर्ज़ुक़्ना व अन्-त ख़ैरुर्राज़िक़ीन **(114)** क़ालल्लाहु इन्नी मुनज़्ज़िलुहा अ़लैकुम् फ़-मंय्यक्फ़ुर् बअ्दु मिन्कुम् फ़-इन्नी उअ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबल्-ला उअ़ज़्ज़िबुहू अ-हदम् मिनल्-आ़लमीन **(115)** ❖

واذا سمعوا ٧ — ١١٥ — المائدة ٥

فيها فتكون طيرا باذني وتبرئ الاكمه والابرص باذني
واذ تخرج الموتى باذني واذ كففت بني اسراءيل عنك اذ
جئتهم بالبينت فقال الذين كفروا منهم ان هذا الا
سحر مبين ﴿١١٠﴾ واذ اوحيت الى الحواريين ان امنوا بي و
برسولي قالوا امنا واشهد باننا مسلمون ﴿١١١﴾ اذ قال
الحواريون يعيسى ابن مريم هل يستطيع ربك ان ينزل
علينا مائدة من السماء قال اتقوا الله ان كنتم مؤمنين ﴿١١٢﴾
قالوا نريد ان ناكل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم ان قد
صدقتنا ونكون عليها من الشهدين ﴿١١٣﴾ قال عيسى ابن مريم
اللهم ربنا انزل علينا مائدة من السماء تكون لنا عيدا
لاولنا واخرنا واية منك وارزقنا وانت خير الرزقين ﴿١١٤﴾
قال الله اني منزلها عليكم فمن يكفر بعد منكم فاني اعذبه
عذابا لا اعذبه احدا من العلمين ﴿١١٥﴾ واذ قال الله يعيسى ابن
مريم ءانت قلت للناس اتخذوني وامي الهين من دون
الله قال سبحنك ما يكون لي ان اقول ما ليس لي بحق ان كنت
قلته فقد علمته تعلم ما في نفسي ولا اعلم ما في نفسك

منزل ٢

व इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसब्-न मर्-य-म अ-अन्-त क़ुल्-त लिन्नासित्तख़िज़ूनी व उम्मि-य इलाहैनि मिन् दूनिल्लाहि, क़ा-ल सुब्हान-क मा यकूनु ली अन् अक़ू-ल मा लै-स ली बिहक़्क़िन्, इन् कुन्तु क़ुल्तुहू फ़-क़द् अ़लिम्तहू तअ्लमु मा फ़ी नफ़्सी व ला अअ्लमु मा फ़ी नफ़्सि-क, इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब **(116)** मा क़ुल्तु लहुम् इल्ला मा अमर्तनी

कि तुम मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ। उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए, आप गवाह रहिए कि हम पूरे फ़रमाँबर्दार हैं। **(111)** (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जबकि हवारियों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ ईसा इब्ने मरियम! क्या आपके रब ऐसा कर सकते हैं कि हमपर आसमान से दस्तरख़्वान (यानी कुछ खाना) नाज़िल फ़रमा दें? आपने फ़रमाया खुदा तआ़ला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो।[1] **(112)** वे बोले, हम यह चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे दिलों को पूरा इत्मीनान हो जाए, और हमारा यह यक़ीन और बढ़ जाए कि आपने हमसे सच बोला है, और हम गवाही देने वालों में से हो जाएँ। ◆ **(113)** ईसा इब्ने मरियम ने दुआ़ की, ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवर्दिगार! हमपर आसमान से दस्तरख़्वान (यानी खाना) नाज़िल फ़रमाइए कि वह हमारे लिए यानी हममें जो अव्वल हैं और जो बाद में हैं सबके लिए ईद (यानी एक खुशी की बात) हो जाए, और आपकी तरफ़ से एक निशान हो जाए, और आप हमको अ़ता फ़रमाइए कि आप सब अ़ता करने वालों से अच्छे हैं। **(114)** हक़ तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि मैं वह खाना तुम लोगों पर नाज़िल करने वाला हूँ, फिर जो शख़्स तुममें से हक़ न पहचानने का जुर्म करेगा तो मैं उसको ऐसी सज़ा दूँगा कि वह सज़ा दुनिया जहान वालों में से किसी को न दूँगा।[2] **(115)** ❖

और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे[3] कि ऐ ईसा इब्ने मरियम! क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि खुदा के अ़लावा मुझको और मेरी माँ को भी दो माबूद क़रार दे लो। (ईसा अ़लैहिस्सलाम) अ़र्ज़ करेंगे कि (तौबा-तौबा मैं) आप (को शरीक से) पाक (समझता हूँ और) हैं, मुझको किसी तरह मुनासिब न था कि मैं ऐसी बात कहता जिस (के कहने) का मुझको कोई हक़ नहीं,[4] अगर मैंने यह कहा होगा तो आपको इसका इल्म होगा, आप तो मेरे दिल के अन्दर की बात भी जानते हैं, और मैं आपके इल्म में जो कुछ है उसको नहीं जानता, तमाम ग़ैबों के जानने वाले आप ही हैं। **(116)** मैंने तो उनसे और कुछ नहीं कहा मगर सिर्फ़ वही जो आपने मुझसे कहने को फ़रमाया था कि तुम अल्लाह की बन्दगी (इख़्तियार) करो, जो मेरा भी रब है और

---

1. मतलब यह है कि तुम ईमान वाले हो इसलिए खुदा से डरो और मोजिज़ात की फ़रमाइश से जो कि बेज़रूरत होने की वजह से अदब के ख़िलाफ़ है, बचो।

2. हक़ न पहचानने का जुर्म करेगा, यानी अ़क़्ली और नक़्ली तौर पर जो हुक़ूक़ वाजिब हैं उनको अदा न करेगा। मजमूआ़ उन हुक़ूक़ का यह था कि उसपर शुक्र किया जाए कि अ़क़्ल के एतिबार से भी वाजिब है और उसमें ख़ियानत न करें और अगले दिन के लिए उठाकर न रखें, चुनाँचे इसका हुक्म होना तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में अ़म्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से नक़ल किया गया है, और उस हदीस में यह भी है कि जो दस्तरख़्वान आसमान से नाज़िल हुआ उसमें रोटी और गोश्त था। और उस हदीस में यह भी है कि उन लोगों ने (यानी उनमें से बाज़ ने) ख़ियानत की और अगले दिन के लिए उठाकर रखा, पस बन्दर और ख़िन्ज़ीर की सूरत में शक्लें बिगड़ गईं।

3. यानी क़ियामत में।

4. न अपने अ़क़ीदे के एतिबार से कि मैं मुवह्हिद (यानी अल्लाह को एक मानने वाला, पक्का सच्चा मुसलमान) हूँ और न हक़ीक़त के एतिबार से कि आप वाहिद हैं।

बिही अनिअ़्बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् व कुन्तु अ़लैहिम् शहीदम् मा दुम्तु फ़ीहिम् फ़-लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्-त अन्तर्रक़ी-ब अ़लैहिम्, व अन्-त अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद **(117)** इन् तुअ़ज़्ज़िब्हुम् फ़-इन्नहुम् अ़िबादु-क व इन् तग़्फ़िर् लहुम् फ़-इन्न-क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(118)** क़ालल्लाहु हाज़ा यौमु यन्फ़अुस्सादिक़ी-न सिद्क़ुहुम्, लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम **(119)** लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा फ़ीहिन्-न, व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(120)** ❖

6 सूरतुल् अन्आमि 55

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 12935 अक्षर 3100 शब्द 165 आयतें, और 20 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ व ज-अ़लज़्-ज़ुलुमाति वन्नू-र, सुम्मल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् यअ़्दिलून **(1)** हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तीनिन् सुम्-म क़ज़ा अ-जलन्, व अ-जलुम् मुसम्मन् अ़िन्दहू सुम्-म अन्तुम् तम्तरून **(2)** व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व फ़िल्अर्ज़ि, यअ़्लमु सिर्रकुम् व जह्रकुम् व यअ़्लमु मा तक्सिबून **(3)** व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ़्रिज़ीन **(4)** फ़-क़द् कज़्ज़बू बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़सौ-फ यअ्तीहिम्

إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ
اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ
فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾ إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ
فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ
صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ۚ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾ لِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

سورة الانعام مكية ... بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ... خمس وستون ومائة آية وعشرون ركوعا

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ
وَالنُّورَ ۖ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم
مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ۖ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُ ۖ ثُمَّ أَنتُمْ
تَمْتَرُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ۖ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ
جَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ﴿٣﴾ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ
فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٥﴾ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ

तुम्हारा भी रब है, और मैं उनपर बा-ख़बर रहा जब तक उनमें रहा, फिर जब आपने मुझको उठा लिया तो आप उनपर मुत्तला रहे, और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। **(117)** अगर आप इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं, और अगर आप इनको माफ़ फ़रमा दें तो आप ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। **(118)** अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाएँगे कि यह वह दिन है कि जो लोग सच्चे थे उनका सच्चा होना उनके काम आएगा, उनको बाग़ मिलेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा-हमेशा को रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और ख़ुश और वे अल्लाह तआ़ला से राज़ी और ख़ुश हैं, यह बड़ी भारी कामयाबी है। **(119)** अल्लाह ही की हुकूमत है आसमानों की और ज़मीन की, और उन चीज़ों की जो उनमें मौजूद हैं, और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। **(120)** ❖

6 सूरः अन्आ़म 55

सूरः अन्आ़म मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 166 आयतें और 20 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[1]तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरियों को और नूर को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग दूसरों को अपने रब के बराबर क़रार देते हैं। **(1)** वह ऐसा है जिसने तुमको मिट्टी से बनाया, फिर एक वक़्त मुक़र्रर किया, और दूसरा मुक़र्ररा वक़्त ख़ास उसी के (यानी अल्लाह ही के) नज़दीक है, फिर भी तुम शक रखते हो। **(2)** और वही है अल्लाह (माबूद बरहक़) आसमानों में भी और ज़मीन में भी, वह तुम्हारे छुपे हालात को भी और ज़ाहिरी हालात को भी जानते हैं, और तुम जो कुछ अ़मल करते हो उसको जानते हैं।[2] **(3)** और उनके पास कोई निशानी भी उनके रब की निशानियों में से नहीं आती, मगर वे उससे मुँह ही मोड़ लेते हैं। **(4)** सो उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बतलाया जबकि वह उनके पास पहुँची। सो जल्दी ही उनको ख़बर मिल जाएगी उस चीज़ की जिसके साथ ये लोग मज़ाक़-ठट्ठा किया करते थे।[3] **(5)** क्या उन्होंने देखा नहीं कि

1. पिछली सूरः के ख़त्म और इस सूरः के आग़ाज़ में तो मुनासबत यह है कि दोनों शिर्क के बातिल करने और तौहीद के साबित करने और उसके दलाइल पर मुश्तमिल हैं, और दोनों में शरीअ़तों पर का बयान किया गया है। अगरचे पिछली सूरः में उसूल की तरह फ़ुरूअ़ यानी अहकाम भी बहुत हैं, चुनाँचे बीस तक उनकी गिन्ती पहुँची है। और इसमें तक़रीबन तमाम सूरः में उसूल ही ज़्यादा हैं और फ़ुरूअ़ बहुत कम हैं, जो कि ज़िक्र की गई गिन्ती के तिहाई या चौथाई से ज़्यादा नहीं। और ख़ुद इस सूरः के हिस्सों में आपस में मुनासबत व ताल्लुक़ यह है कि हासिल सूरः का चन्द उमूर हैं। तौहीद का साबित करना, रिसालत का साबित करना, तौहीद व रिसालत की ताईद के लिए बाज़ अम्बिया के वाक़िआ़त, क़ुरआन का साबित करना, हुज़ूरे पाक के नबी बनाकर भेजने को साबित करना, उनके इनकारियों की क़ौली व फ़ेली दुश्मनी, उन इनकारियों पर वईदें, उन वईदों की ताईद के लिए बाज़ झुठलाने वाली उम्मतों की बर्बादी का हाल, उन इनकारियों से गुफ़्तगू, बहस व हुज्जत, ख़ुद उनके तौर-तरीक़ों व आ़दत की बुराई ज़ाहिर करना, उनके साथ मामला रखने में एनिदाल की तालीम, कि तब्लीग़ में कमी न हो, सख़्ती में शरई हदों से गुज़रना न हो, मेल-जोल में दीन की किसी बात की तरफ़ से चश्मपोशी न हो, दिलजोई या हिदायत की फ़िक्र में मुबालग़ा न हो, उनकी जहालत की रस्मों के मुक़ाबले में बाज़ बुलन्द इस्लामी अख़्लाक़ का बयान, और यह पूरी की पूरी गुफ़्तगू मुश्रिकीन से है, सिर्फ़ दो तीन जगह नुबुव्वत व क़ुरआन के मसले में या चीज़ों के हलाल व हराम होने की बहस में मुनासबत से ज़िम्नन अहले किताब ख़ासकर यहूद की बुराई और कमियों का बयान आ गया है। यह हासिल है सूरः का, और इन सब मज़ामीन में ताल्लुक़ व रब्त का सबब पोशीदा नहीं। पस सबसे पहले तौहीद की आयतें हैं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 232 पर)**

अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (5) अलम् यरौ कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम् मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्नस्समा-अ अ़लैहिम् मिद्रारंव्-व जअ़ल्नल्-अन्हा-र तज्री मिन् तह्तिहिम् फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्-बअ़्दिहिम् क़र्नन् आख़रीन (6) व लौ नज़्ज़ल्ना अ़लै-क किताबन् फ़ी क़िर्तासिन् फ़-ल-मसूहु बिऐदीहिम् लक़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन (7) व क़ालू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि म-लकुन्, व लौ अन्ज़ल्ना म-लकल् लक़ुज़ियल्-अम्रु सुम्-म ला युन्ज़रून (8) व लौ जअ़ल्नाहु म-लकल् ल-जअ़ल्नाहु रजुलंव्-व ल-लबस्ना अ़लैहिम् मा यल्बिसून (9) व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (10) ❖

क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि सुम्मन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल् मुकज़्ज़िबीन (11) क़ुल्-लिमम्-मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि क़ुल्-लिल्लाहि, क-त-ब अ़ला नफ़्सिहिर्रह्म-त, ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्- क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि, अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (12) व लहू मा स-क-न फ़िल्लैलि वन्नहारि, व हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम (13) क़ुल् अग़ैरल्लाहि अत्तख़िज़ु वलिय्यन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि व हु-व युत्अ़िमु व ला युत्अ़मु, क़ुल् इन्नी उमिर्तु अन् अकू-न अव्व-ल मन् अस्ल-म व

واذا سمعوا ٧ ١١٧ الانعام ٦

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ
لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۖ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا
اٰخَرِيْنَ ﴿٦﴾ وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ
لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ﴿٨﴾ وَ
لَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾ قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَهٗ
مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ
اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ
قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ

منزل ٢

हम उनसे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुके हैं, जिनको हमने ज़मीन (यानी दुनिया) में ऐसी कुव्वत दी थी कि तुमको वह कुव्वत नहीं दी, और हमने उनपर ख़ूब बारिशें बरसाईं, और हमने उनके नीचे से नहरें जारी कीं, फिर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला, और उनके बाद दूसरी जमाअतों को पैदा कर दिया।[1] **(6)** और अगर हम काग़ज़ पर लिखी हुई कोई तहरीर आप पर नाज़िल फ़रमाते फिर उसको ये लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी ये काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं, मगर खुला जादू है। **(7)** और ये लोग यूँ कहते हैं कि उनके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया? और अगर हम कोई फ़रिश्ता भेज देते तो सारा क़िस्सा ही ख़त्म हो जाता, फिर उनको ज़रा भी मोहलत न दी जाती। **(8)** और अगर हम उसको फ़रिश्ता तजवीज़ करते तो हम उसको आदमी ही बनाते, और हमारे इस फ़ेल से फिर उनपर वही इश्काल होता जो इश्काल अब कर रहे हैं।[2] **(9)** और वाक़ई आपसे पहले जो पैग़म्बर हुए हैं उनका भी हँसी और मज़ाक़ उड़ाया गया है, फिर जिन लोगों ने उनसे हँसी-मज़ाक़ किया था उनको उस अज़ाब ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। **(10)** ❖

आप फ़रमा दीजिए कि ज़रा ज़मीन में चलो-फिरो, फिर देख लो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ। **(11)** आप कहिए कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है, यह सब किसकी मिल्क है? आप कह दीजिए कि सब अल्लाह ही की मिल्क है, उसने (यानी अल्लाह तआला ने) मेहरबानी फ़रमाना अपने ऊपर लाज़िम फ़रमा लिया है। तुमको खुदा तआला क़ियामत के दिन जमा करेंगे इसमें कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने को ज़ाया कर दिया है सो वे ईमान न लाएँगे। **(12)** और उसी की (यानी अल्लाह ही की मिल्क) है सब जो कुछ रात और दिन में रहते हैं, और वही है बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला। **(13)** आप कहिए कि क्या अल्लाह के सिवा जो कि आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले हैं और जो कि खाने को देते हैं और उनको कोई खाने को नहीं देता, किसी को माबूद क़रार दूँ? आप फ़रमा दीजिए कि मुझको यह हुक्म हुआ है कि सबसे पहले मैं इस्लाम क़बूल करूँ, और तुम मुश्रिकों में से हरगिज़ न होना। **(14)** आप कह दीजिए कि मैं अगर अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। **(15)** जिस शख़्स से उस दिन वह अज़ाब हटाया जाएगा तो उसपर

(पृष्ठ 230 का शेष) **2.** तौहीद तीनों आयतों का मक़सूदे मुश्तरक है। यानी इबादत के लायक़ वह है जिसमें ये सिफ़तें हों कि वह दुनिया जहान का पैदा करने वाला हो, और हाज़िर व ग़ायब का जानने वाला हो। और आख़िर की दो आयतों में नबी करीम को भेजने की ख़बर और उसके मना करने को रद्द करना और किए हुए आमाल पर हिसाब व पूछताछ पर तंबीह भी है, जिससे शिर्क पर वईद साबित हो गई। और दूसरे 'वक़्त' (ग़ालिबन इससे मुराद क़ियामत है) के इल्म को अपने साथ मख़्सूस फ़रमाया, क्योंकि पहले 'वक़्त' (यानी मौत) का अगरचे क़तई इल्म न सही मगर अन्दाज़े के तौर पर निशानियों से मालूम हो जाता है।

3. मुराद इससे वह अज़ाब है जिसकी ख़बर क़ुरआन में सुनकर हँसते थे, जिससे क़ुरआन का झुठलाना लाज़िम आता था। उसकी ख़बर मिलने का मतलब यह है कि जब अज़ाब नाज़िल होगा उसकी ख़बर आँखों से देख लेंगे।

1. मुराद इन हलाक होने वाली जमाअतों से आद व समूद वग़ैरह हैं कि अज़ाब के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से हलाक किए गए।

2. यानी उस फ़रिश्ते को बशर (यानी इनसान) समझकर फिर वही एतिराज़ करते। ग़रज़ फ़रिश्ते के नाज़िल होने से उनका नफ़ा तो कुछ न होता, क्योंकि उनका शक व शुब्हा अपनी जगह बाक़ी रहता, और उनका नुक़सान यह होता कि हलाक कर दिए जाते। इसलिए हमने इस तरह नाज़िल नहीं किया। खुलासा यह हुआ कि हद दर्जा दुश्मनी की वजह से ऐसी बातें मुँह से निकालते थे जो हिदायत और हक़ के वाज़ेह होने का तरीक़ (यानी रास्ता और तरीक़ा) नहीं, और जो उसका तरीक़ा है कि मौजूद आयात व मोजिज़ात में ग़ौर करना, उससे काम नहीं लेते।

ला तकूनन्-न मिनल्मुश्रिकीन (14) क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (15) मंय्युस्रफ़् अ़न्हु यौमइज़िन् फ़-क़द् रहि-महू, व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्मुबीन (16) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व, व इंय्यम्सस्-क बिख़ैरिन् फ़हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (17) व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ-क़ अ़िबादिही, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर (18) क़ुल् अय्यु शैइन् अक्बरु शहा-दतन्, क़ुलिल्लाहु, शहीदुम् बैनी व बैनकुम्, व ऊहि-य इलय्-य हाज़ल् क़ुर्आनु लिउन्ज़ि-रकुम् बिही व मम्-ब-ल-ग़, अइन्नकुम् लतश्हदू-न अन्-न मअ़ल्लाहि आलि-हतन् उख़रा, क़ुल् ला अश्हदु क़ुल् इन्नमा हु-व इलाहुंव्-वाहिदुंव्-व इन्ननी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून ✣ (19) अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल् किता-ब यअ़्रिफ़ूनहू कमा यअ़्रिफ़ू-न अब्ना-अहुम् ✣ अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (20) ❖

व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्-ज़ालिमून (21) व यौ-म नह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू ऐ-न शु-रकाउ- कुमुल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (22) सुम्-म लम् तकुन् फ़ित्नतुहुम् इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन (23) उन्ज़ुर् कै-फ़ क-ज़बू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (24) व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअ़ु इलै-क व जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी

عظيم ﴿١٥﴾ من يصرف عنه يومئذ فقد رحمه ۚ وذلك الفوز
المبين ﴿١٦﴾ وإن يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو ۖ و
إن يمسسك بخير فهو على كل شيء قدير ﴿١٧﴾ وهو القاهر
فوق عباده ۚ وهو الحكيم الخبير ﴿١٨﴾ قل أي شيء أكبر شهادة ۖ
قل الله ۖ شهيد بيني وبينكم ۚ وأوحي إلي هذا القرآن لأنذركم
به ومن بلغ ۚ أئنكم لتشهدون أن مع الله آلهة أخرى ۚ قل
لا أشهد ۚ قل إنما هو إله واحد وإنني بريء مما تشركون ﴿١٩﴾
الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم ۘ الذين
خسروا أنفسهم فهم لا يؤمنون ﴿٢٠﴾ ومن أظلم ممن افترى
على الله كذبا أو كذب بآياته ۗ إنه لا يفلح الظالمون ﴿٢١﴾ ويوم
نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم الذين
كنتم تزعمون ﴿٢٢﴾ ثم لم تكن فتنتهم إلا أن قالوا والله ربنا
ما كنا مشركين ﴿٢٣﴾ انظر كيف كذبوا على أنفسهم ۚ وضل عنهم
ما كانوا يفترون ﴿٢٤﴾ ومنهم من يستمع إليك ۖ وجعلنا على
قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفي آذانهم وقرا ۚ وإن يروا كل
آية لا يؤمنوا بها ۚ حتى إذا جاءوك يجادلونك يقول الذين

अल्लाह तआ़ला ने बड़ा रहम किया और यह खुली कामयाबी है। **(16)** और अगर अल्लाह तआ़ला तुझको कोई तकलीफ़ पहुँचा दें तो उसका दूर करने वाला सिवाय अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं। और अगर तुझको वह (यानी अल्लाह तआ़ला) कोई नफ़ा पहुँचा दें तो वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाले हैं। **(17)** और वही अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब (व बरतर) हैं, और वही बड़ी हिक्मत वाले (और) पूरी ख़बर रखने वाले हैं।[1] **(18)** आप कहिए कि गवाही देने के लिए सबसे बढ़कर चीज़ कौन है? आप कहिए कि मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह तआ़ला गवाह है, और मेरे पास यह कुरआन बतौर वह्य के भेजा गया है ताकि मैं इस कुरआन के ज़रिये से तुमको और जिस-जिसको यह कुरआन पहुँचे उन सबको डराऊँ, क्या तुम सब सचमुच यही गवाही दोगे कि अल्लाह तआ़ला के साथ कुछ और माबूद भी हैं? आप कह दीजिए कि मैं तो गवाही नहीं देता, आप कह दीजिए कि बस वह तो एक ही माबूद है, और बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ। **(19)** जिन लोगों को हमने किताब दी है वे लोग इस (रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को ज़ाया कर लिया है[2] सो वे ईमान न लाएँगे। **(20)** ❖

और उससे ज़्यादा और कौन बेइन्साफ़ होगा जो अल्लाह तआ़ला पर झूठ बोहतान बाँधे या अल्लाह तआ़ला की आयतों को झूठा बतलाए, ऐसे बेइन्साफ़ों को छुटकारा न मिलेगा।[3] **(21)** और (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जिस दिन हम उन तमाम मख़्लूक़ों को जमा करेंगे, फिर हम मुश्रिकों से (वास्ते से या बिला वास्ता सज़ा और झिड़की के तौर पर) कहेंगे कि (बतलाओ) तुम्हारे वे शुरका जिनके माबूद होने का तुम दावा करते थे कहाँ गए? **(22)** फिर उनके शिर्क का अन्जाम इसके सिवा कुछ भी न होगा कि वे यूँ कहेंगे कि अल्लाह की क़सम, अपने परवर्दिगार की, हम मुश्रिक न थे।[4] **(23)** ज़रा देखो तो किस तरह झूठ बोला अपनी जानों पर, और जिन चीज़ों कोतराशा करते थे वे सब उनसे ग़ायब हो गईं।[5] **(24)** और उनमें[6] बाज़े ऐसे हैं कि आपकी तरफ़ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, इससे कि वे उसको समझें[7] और उनके कानों में डाट दे रखी है, और अगर वे लोग तमाम दलीलों को देख लें; उनपर भी ईमान न लाएँ, यहाँ तक कि जब ये लोग आपके पास आते हैं तो आपसे ख़्वाह-मख़्वाह झगड़ते हैं। ये लोग जो काफ़िर हैं यूँ कहते हैं कि यह तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ बे-सनद बाते हैं जो पहलों से चली आ रही हैं। **(25)** और ये लोग उससे औरों को भी रोकते हैं और खुद भी उससे दूर रहते हैं, और

---

1. ऊपर तौहीद व रिसालत के बारे में अलग-अलग कलाम हुआ है, आगे दोनों के बारे में इकट्ठे तौर पर कलाम है। चुनाँचे "अ-इन्नकुम् ल-तश्हदू-न" में तौहीद की बहस है, और "कुलिल्लाहु शहीदुम् बैनी व बैनकुम्" में रिसालत की बहस है। शाने नुज़ूल भी इसका दो वाक़िआत दोनों मसलों के मुताल्लिक़ हैं। चुनाँचे कल्बी ने रिवायत किया है कि मक्का के काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहा कि क्या ख़ुदा तआ़ला को आपके सिवा कोई रसूल नहीं मिला? हम तो नहीं समझते कि आपके दावे की कोई तस्दीक़ कर सकता है? और हमने तो यहूद व नसारा (यानी ईसाइयों) से पूछकर देख लिया है कि उनकी किताबों में आपका ज़िक्र ही नहीं, सो हमको कोई ऐसा शख़्स बतलाइए जो इस बात की गवाही दे कि आप अल्लाह के रसूल हैं। इसपर यह आयत नाज़िल हुई और इब्ने जरीर वग़ैरह ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया है कि नुहाम बिन ज़ैद और क़रूम बिन कअ़ब और बहज़ी बिन अ़म्र आपकी ख़िदमत में आए और कहा कि क्या आपके इल्म में सिवाय अल्लाह तआ़ला के और कोई माबूद नहीं? आपने फ़रमाया कि हक़ीक़त में भी अल्लाह के सिवा और कोई माबूद नहीं, मैं तो यही देकर भेजा गया हूँ और इसी की दावत देता हूँ। इसपर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।
2. यानी अपनी अ़क़्ल को मज़कूरा शहादत पर दलालत करने वाली वुजूहात में सही ग़ौर व फ़िक्र करने से बेकार कर लिया है, चाहे वे अहले किताब हों या ग़ैर-अहले किताब हों।
3. ऊपर कुफ़्फ़ार का फ़लाह न पाना ज़िक्र हुआ है। आगे इस फ़लाह न पाने की कुछ कैफ़ियत ज़िक्र है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 236 पर)**

आज़ानिहिम् वक़रन्, व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल् ला युअ्मिनू बिहा, हत्ता इज़ा जाऊ-क युजादिलून-क यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन **(25)** व हुम् यन्हौ-न अ़न्हु व यन्औ-न अ़न्हु व इंय्युह्लिकू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम् व मा यश्अुरून **(26)** व लौ तरा इज़् वुकिफ़ू अ़लन्नारि फ़क़ालू या-लैतना नुरद्दु व ला नुकज़्ज़ि-ब बिआयाति रब्बिना व नकू-न मिनल् मुअ्मिनीन **(27)** बल् बदा लहुम् मा कानू युख़्फ़ू-न मिन् क़ब्लु, व लौ रुद्दू लआ़दू लिमा नुहू अ़न्हु व इन्नहुम् लकाज़िबून **(28)** व क़ालू इन् हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या व मा नह्नु बिमब्अूसीन **(29)** व लौ तरा इज़् वुकिफ़ू अ़ला रब्बिहिम्, क़ा-ल अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि, क़ालू बला व रब्बिना, क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्- अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून **(30)** ❖

क़द् ख़ासिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि, हत्ता इज़ा जाअत्हुमुस्-सा-अ़तु बग़्-ततन् क़ालू या-हस्र-तना अ़ला मा फ़र्रत्ना फ़ीहा व हुम् यह्मिलू-न औज़ारहुम् अ़ला ज़ुहूरिहिम्, अला सा-अ मा यज़िरून **(31)** व मल्हयातुद्दुन्या इल्ला लअि़बुंव्-व लह्वुन्, व लद्दारुल्- आख़ि-रतु ख़ैरुल् लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(32)** क़द् नअ्लमु इन्नहू ल-यह्ज़ुनुकल्लज़ी यक़ूलू-न फ़-इन्नहुम् ला युकज़्ज़िबून-क व लाकिन्नज़्ज़ालिमी-न बिआयातिल्लाहि यज्हदून **(33)** व ल-क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क फ़-स-बरू अ़ला मा कुज़्ज़िबू व ऊज़ू

واذا سمعوا ٧ ١١٩ الانعام ٦

كفروا ان هذا الا اساطير الاولين ﴿٢٥﴾ وهم ينهون عنه و
ينئون عنه وان يهلكون الا انفسهم وما يشعرون ﴿٢٦﴾ ولو
ترى اذ وقفوا على النار فقالوا يليتنا نرد ولا نكذب بايت
ربنا ونكون من المؤمنين ﴿٢٧﴾ بل بدا لهم ما كانوا يخفون
من قبل ولو ردوا لعادوا لما نهوا عنه وانهم لكذبون ﴿٢٨﴾
وقالوا ان هي الا حياتنا الدنيا وما نحن بمبعوثين ﴿٢٩﴾ ولو
ترى اذ وقفوا على ربهم قال اليس هذا بالحق قالوا بلى و
ربنا قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ﴿٣٠﴾ قد خسر الذين
كذبوا بلقاء الله حتى اذا جاءتهم الساعة بغتة قالوا يحسرتنا
على ما فرطنا فيها وهم يحملون اوزارهم على ظهورهم الا
ساء ما يزرون ﴿٣١﴾ وما الحيوة الدنيا الا لعب ولهو وللدار
الاخرة خير للذين يتقون افلا تعقلون ﴿٣٢﴾ قد نعلم انه ليحزنك
الذي يقولون فانهم لا يكذبونك ولكن الظلمين بايت الله
يجحدون ﴿٣٣﴾ ولقد كذبت رسل من قبلك فصبروا على ما
كذبوا واوذوا حتى اتهم نصرنا ولا مبدل لكلمت الله
ولقد جاءك من نباي المرسلين ﴿٣٤﴾ وان كان كبر عليك

منزل ٢

ये लोग अपने ही को तबाह कर रहे हैं और कुछ ख़बर नहीं रखते। **(26)** और अगर आप (उस वक़्त) देखें जबकि ये दोज़ख़ के पास खड़े किए जाएँगे तो कहेंगेः क्या अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिए जाएँ, और (अगर ऐसा हो जाए तो) हम अपने परवर्दिगार की आयतों को झूठा न बताएँ और हम ईमान वालों में से हो जाएँ। **(27)** बल्कि जिस चीज़ को इससे पहले दबाया करते थे वह उनके सामने आ गई है।[1] और अगर ये लोग फिर वापस भी भेज दिए जाएँ तब भी यह वही काम करें जिससे उनको मना किया गया था, और यक़ीनन ये लोग बिलकुल झूठे हैं।[2] **(28)** और ये कहते हैं कि जीना और कहीं नहीं सिर्फ़ यही फ़िलहाल का जीना है, और हम ज़िन्दा न किए जाएँगे। **(29)** और अगर आप (उस वक़्त) देखें जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे और अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि क्या यह अम्र वाक़ई नहीं है? वह कहेंगे बेशक क़सम अपने रब की! अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा तो अब अपने कुफ़्र के बदले अ़ज़ाब चखो। **(30)** ❖

बेशक़ घाटे में पड़े वे लोग जिन्होंने अल्लाह तआ़ला से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह मुक़र्ररा वक़्त[3] उनपर अचानक आ पहुँचेगा तो कहने लगेंगे कि हाय अफ़सोस हमारी कोताही पर जो इसके बारे में हुई![4] और हालत उनकी यह होगी कि वे अपने बोझ अपनी कमर पर लादे होंगे। ख़ूब सुन लो कि बुरी होगी वह चीज़ जिसको वे लादेंगे। **(31)** और दुनियावी ज़िन्दगानी तो कुछ भी नहीं सिवाय खेल-कूद, सैर-तमाशे और तफ़रीह के,[5] और पिछला घर मुत्तक़ियों के लिए बेहतर है, क्या तुम सोचते समझते नहीं हो! **(32)** हम ख़ूब जानते हैं कि आपको उनकी बातें ग़मगीन करती हैं। सो ये लोग आपको झूठा नहीं कहते, लेकिन ये ज़ालिम तो अल्लाह तआ़ला की आयतों का इनकार करते हैं। **(33)** और बहुत-से पैग़म्बर जो आपसे पहले हुए हैं उनको भी झुठलाया जा चुका है, सो उन्होंने उसपर सब्र ही किया कि उनको झुठलाया गया और उनको तकलीफ़ें पहुँचाई गईं, यहाँ तक कि हमारी मदद उनको पहुँची, और अल्लाह तआ़ला की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और आपके पास बाज़ पैग़म्बरों के बाज़ क़िस्से पहुँच चुके हैं।[6] **(34)** और अगर आपको उनका मुँह मोड़ना नागवार गुज़रता है तो आपको यह ताक़त है कि

(पृष्ठ 234 का शेष) मुश्रिकीन की तो खुले तौर पर, कि मक्का में जो इस सूरः के नाज़िल होने की जगह है और वहाँ मुश्रिकीन ज़्यादा थे, और दूसरे कुफ़्फ़ार की क़ियास के तौर पर, क्योंकि असल इल्लत फ़लाह न होने की यानी कुफ़्र सबमें पाई जाती है।

4. यानी जिसके हक़ होने का आज दावा है उसका अन्जाम यह होगा कि ख़ुद ही उसको बातिल समझने लगेंगे।

5. यानी उनके कोई काम न आएगा।

6. यानी मुश्रिकीन में से।

7. यह जो फ़रमाया कि हमने पर्दे डाल रखे हैं तो यह मिसाल के तौर पर है, अगरचे परिचित पर्दे वग़ैरह न हों। और ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ उसकी निस्बत होने से न तो ये माज़ूर हो सकते हैं न अल्लाह तआ़ला पर कोई इल्ज़ाम आ सकता है, क्योंकि इस पर्दे वग़ैरह का सबब उनका इख़्तियारी तौर पर मुँह मोड़ना है और निस्बत तख़्लीक़ के एतिबार से है।

1. मुराद उस चीज़ से वह अ़ज़ाब है जिसकी वईद कुफ़्र और झुठलाने पर उनको की जाती थी। और दबाने से मुराद इनकार है।

2. ऊपर तौहीद व रिसालत और क़ुरआन के इनकार पर सज़ाओं का बयान था, आगे इनकारे बअ़स (यानी नबी को भेजने का इनकार) और उसकी सज़ा का बयान है।

3. यानी क़ियामत का दिन मय मुक़द्दिमात।

4. अगरचे झुठलाना उनके मरने के वक़्त ही ख़त्म हो जाएगा लेकिन क़ियामत को इसलिए हद क़रार दिया कि उस दिन सब कुछ खुलकर सामने आ जाएगा। और 'साहिबे कश्शाफ़' ने कहा है कि मौत का वक़्त भी क़ियामत के मुक़द्दिमात में से है, इसलिए वह भी क़ियामत के हुक्म में दाख़िल है।

5. ख़ुद दुनियावी ज़िन्दगी को 'लह्व-व-लअ़िब' फ़रमाना मक़सूद नहीं बल्कि इसके उन मश्ग़लों और आमाल को जो कि आख़िरत के लिए नहीं बनाए गए और न आख़िरत के लिए मददगार हैं। तो इस क़ैद से नेक काम और अच्छाइयाँ **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 238 पर)**

हत्ता अताहुम् नस्रुना व ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिल्लाहि व ल-क़द् जाअ-क मिन् न-बइल् मुर्सलीन **(34)** व इन् का-न कबु-र अ़लै-क इअ्राज़ुहुम् फ़-इनिस्-ततअ्-त अन् तब्तगि-य न-फ़क़न् फ़िल्अर्ज़ि औ सुल्लमन् फ़िस्समा-इ फ़-तअ्तियहुम् बिआयतिन्, व लौ शाअल्लाहु ल-ज-म-अ़हुम् अ़लल्हुदा फ़ला तकूनन्-न मिनल् जाहिलीन ● **(35)** इन्नमा यस्तजीबुल्लज़ी-न यस्मअू-न, वल्मौता यब्अ़सुहुमुल्लाहु सुम्-म इलैहि युर्जअू़न **(36)** व क़ालू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नल्ला-ह क़ादिरुन् अ़ला अंय्युनज़्ज़ि-ल आयतंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून **(37)** व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला ताइरिंय्यतीरु बि-जनाहैहि इल्ला उ-ममुन् अम्सालुकुम्, मा फ़र्रत्ना फ़िल्किताबि मिन् शैइन् सुम्-म इला रब्बिहिम् युह्शरून **(38)** वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना सुम्मुंव्-व बुक्मुन् फ़िज़्ज़ुलुमाति, मंय्य-शइल्लाहु युज़्लिल्हु, व मंय्यशअ् यज्अ़ल्हु अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(39)** क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि औ अतत्कुमुस्-सा-अ़तु अग़ैरल्लाहि तद्अू-न इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(40)** बल् इय्याहु तद्अू-न फ़-यक्शिफ़ु मा तद्अू-न इलैहि इन् शा-अ व तन्सौ-न मा तुश्रिकून **(41)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-अख़ज़्नाहुम् बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ लअ़ल्लहुम् य-तज़र्रअू़न **(42)** फ़लौ ला इज़् जाअहुम् बअ्सुना तज़र्रअू व

الأنعام ١٢٠ وإذا سمعوا

إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا
فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ
فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ
وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنَزِّلَ آيَةً وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ
يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُمْ ۚ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ
فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَنْ يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَنْ يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ
أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ
فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ
يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ
وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ
فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا

منزل ٢

ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी ढूँढ लो, फिर कोई मोजिज़ा ले आओ (तो ऐसा करो), और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता तो उन सबको सही रास्ते पर जमा कर देता, सो आप नादानों में से न होइए।[1] ● **(35)** वही लोग क़बूल करते हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह तआ़ला ज़िन्दा करके उठाएँगे फिर वे सब अल्लाह ही की तरफ़ लाए जाएँगे। **(36)** और ये लोग कहते हैं कि उनपर उनके रब की तरफ़ से कोई मोजिज़ा क्यों नाज़िल नहीं किया गया, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआ़ला को बेशक इसपर पूरी क़ुदरत है कि वह मोजिज़ा नाज़िल फ़रमाएँ, लेकिन उनमें अक्सर बेख़बर हैं। **(37)** और जितने क़िस्म के जानदार ज़मीन पर चलने वाले हैं और जितने क़िस्म के परिन्दे (जानवर) हैं कि अपने दोनों बाज़ुओं से उड़ते हैं उनमें कोई क़िस्म ऐसी नहीं जो कि तुम्हारी ही तरह के गिरोह न हों,[2] हमने दफ़्तर (लौहे महफ़ूज़) में कोई चीज़ नहीं छोड़ी (सब कुछ लिख लिया है)। फिर सब अपने परवर्दिगार के पास जमा किए जाएँगे। **(38)** और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं वे तो बहरे और गूँगे हो रहे हैं, तरह-तरह की अंधेरियों में हैं,[3] अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे बेराह कर दें और जिसको चाहें सीधी राह पर लगा दें। **(39)** आप कहिए कि अपना हाल तो बतलाओ कि अगर तुमपर ख़ुदा का कोई अ़ज़ाब आ पड़े या तुमपर क़ियामत ही आ पहुँचे तो क्या ख़ुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे, अगर तुम सच्चे हो? **(40)** बल्कि ख़ास उसी को पुकारने लगो, फिर जिसके लिए तुम पुकारो, अगर वह चाहे तो उसको हटा भी दे, और जिन-जिन को तुम शरीक ठहराते हो उन सबको भूल जाओ।[4] **(41)** ❖

और हमने और ''यानी दूसरी'' उम्मतों की तरफ़ भी जो कि आपसे पहले हो चुकी हैं पैग़म्बर भेजे थे, सो हमने उनको तंगदस्ती और बीमारी से पकड़ा ताकि वे ढीले पड़ जाएँ। **(42)** सो जब उनको हमारी सज़ा पहुँची थी वे ढीले क्यों न पड़े? लेकिन उनके दिल तो सख़्त रहे और शैतान उनके आमाल को उनके ख़्याल में सँवार करके दिखलाता रहा। **(43)** फिर जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिनकी उनको नसीहत की जाती थी तो हमने उनपर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए,[5] यहाँ तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उनको मिली थीं वे ख़ूब इतरा गए तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया, फिर तो वे बिलकुल भौचक्के रह गए। **(44)** फिर ज़ालिम लोगों की जड़ कट गई

(पृष्ठ 236 का शेष) और वे मुबाह काम जो नेक कामों में मददगार हों सब निकल गए, और वे मुबाह काम जो बेफ़ायदा हों और गुनाह व नाफ़रमानी सब दाख़िल रह गए, अगरचे ऐसे मुबाहात यानी जायज़ कामों में गुनाह न हो, लेकिन बेफ़ायदा और बेअसर तो हैं। और 'लह्व' और 'लअ़िब' के मायने अहले लुग़त ने क़रीब-क़रीब बल्कि एक ही लिखे हैं सिर्फ़ एतिबारी फ़र्क़ हो सकता है। वह यह कि बेफ़ायदा काम में मश्ग़ूल होने के दो असर हैं, एक ख़ुद उसकी तरफ़ मुतवज्जह होना, दूसरे उस तवज्जोह की वजह से फ़ायदेमन्द चीज़ों से बेतवज्जोह हो जाना। वह पहले मामले के एतिबार से 'लअ़िब' कहलाता है और दूसरे के एतिबार से 'लह्व'।

6. तसल्ली के मज़मून का हासिल यह हुआ कि ये जो आपको झुठला रहे हैं, ये हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला और उसकी आयतों को झुठला रहे हैं। इस वजह से कि आप अल्लाह की जानिब से अहकाम पहुँचाने वाले हैं, पस देखने में तो आपको झुठलाना है और हक़ीक़त में जान-बूझकर अल्लाह तआ़ला को झुठलाना है।

1. ''फ़ला तकूनन्-न मिनल् जाहिलीन'' नसीहत व मुहब्बत के तौर पर है। चुनाँचे तर्जुमा से ज़ाहिर है। और लफ़्ज़ ''जह्ल'' या ''जहालत'' से तर्जुमा न करना इस वजह से है कि हमारे मुहावरे में ये अल्फ़ाज़ अपमान करने, बेवक़ूफ़ ज़ाहिर करने और डाँटने के लिए इस्तेमाल होते हैं इसलिए बेअदबी का गुमान और वहम पैदा करने वाले हैं।

2. यानी क़ियामत के दिन जमा होने की सिफ़त में।

3. क्योंकि हर कुफ़्र एक ज़ुल्मत यानी अंधेरी है, उनका मुँह मोड़ना जो कि न सुनने और बहरा बनने का हासिल है, एक कुफ़्र है। उनका कुफ़्र भरी बातें बकना जो कि गूँगा होने से मक़सूद है, एक कुफ़्र है। और यह ख़ुद कई मर्तबा होता है इसलिए बहुत-सी ज़ुल्मतें (अंधेरियाँ) हो गईं।

4. पस इसी से समझ लो कि ख़ुदा के सिवा जब कोई क़ादिर व मुख़्तार नहीं तो इबादत का हक़दार भी उसके सिवा कोई नहीं हो सकता।

5. यानी ख़ूब नेमत व दौलत दी।

लाकिन् क़-सत् क़ुलूबुहुम् व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु मा कानू यअ़्मलून **(43)** फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही फ़तह़्ना अ़लैहिम् अब्वा-ब कुल्लि शैइन्, हत्ता इज़ा फ़रिहू बिमा ऊतू अख़ज़्नाहुम् बग़्-ततन् फ़-इज़ा हुम् मुब्लिसून **(44)** फ़क़ुति-अ़ दाबिरुल् क़ौमिल्लज़ी-न ज़-लमू, वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन **(45)** क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अ-ख़ज़ल्लाहु समूअ़कुम् व अब्सारकुम् व ख़-त-म अ़ला क़ुलूबिकुम् मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिही, उन्ज़ुर् कै-फ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति सुम्-म हुम् यस्दिफ़ून **(46)** क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि बग़्-ततन् औ जह्-रतन् हल् युह्लकु इल्लल् क़ौमुज़्ज़ालिमून **(47)** व मा नुर्सिलुल्- मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न फ़-मन् आम-न व अस्ल-ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(48)** वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना यमस्सुहुमुल्-अ़ज़ाबु बिमा कानू यफ़्सुक़ून **(49)** क़ुल् ला अक़ूलु लकुम् अ़िन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ़्लमुल्ग़ै-ब व ला अक़ूलु लकुम् इन्नी म-लकुन् इन् अत्तबिअ़ु इल्ला मा यूहा इलय्-य, क़ुल् हल् यस्तविल्-अअ़्मा वल्बसीरु, अ-फ़ला त-तफ़क्करून **(50)** ❖

व अन्ज़िर् बिहिल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अंय्युह्शरू इला रब्बिहिम् लै-स लहुम् मिन् दूनिही वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअ़ुल् लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून **(51)** व ला तत्रुदिल्लज़ी-न यद्अ़ू-न रब्बहुम्

واذا سمعوا ٧ ١٢١ الانعام ٦

أَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ۚ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللّٰهُ
سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ
يَأْتِيْكُمْ بِهِ ۚ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾
قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ
يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ إِلَّا
مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ
بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّا أَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ
وَلَآ أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ أَقُوْلُ لَكُمْ إِنِّيْ مَلَكٌ ۚ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوْحٰى
إِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۚ أَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَ
أَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ أَنْ يُّحْشَرُوْا إِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۚ مَا عَلَيْكَ
مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ
فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ

ع ٥ ٩ ١١

منزل ٢

और अल्लाह का शुक्र है[1] जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है। **(45)** आप कहिए कि यह बतलाओ कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारी सुनने और देखने की कुव्वत बिलकुल ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो अल्लाह तआला के सिवा और कौन माबूद है कि ये तुमको फिर से दे दे? आप देखिए तो हम किस तरह दलीलों को मुख़्तलिफ़ पहलुओं से पेश कर रहे हैं, फिर (भी) ये मुँह मोड़ते हैं। **(46)** आप कहिए कि यह बतलाओ, अगर तुमपर अल्लाह तआला का अ़ज़ाब आ पड़े चाहे बेख़बरी में या ख़बरदारी में तो क्या सिवाय ज़ालिम लोगों के और भी कोई हलाक किया जाएगा।[2] **(47)** और हम पैग़म्बरों को सिर्फ़ इस वास्ते भेजा करते हैं कि वे ख़ुशख़बरी दें और डराएँ, फिर जो शख़्स ईमान ले आए और दुरुस्ती कर ले, सो उन लोगों को कोई अन्देशा नहीं और न वे ग़मज़दा होंगे। **(48)** और जो लोग हमारी आयतों को झूठा बतलाएँ उनको अ़ज़ाब लगता है, इस वजह से कि वे दायरे से निकलते हैं।[3] **(49)** आप कह दीजिए कि न तो मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मेरे पास[4] ख़ुदा तआला के ख़ज़ाने हैं और न मैं तमाम ग़ैबों को जानता हूँ, और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं तो सिर्फ़ उसकी इत्तिबा कर लेता हूँ जो मेरे पास वह्य आती है।[5] आप कहिए कि अन्धा और देखने वाला कहीं बराबर हो सकता है? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? **(50)** ❖

और ऐसे लोगों को डराइए जो इस बात से अन्देशा रखते हैं[6] कि अपने रब के पास ऐसी हालत से जमा किए जाएँगे कि ग़ैरुल्लाह में से न कोई उनका मददगार होगा और न कोई शफ़ाअ़त करने वाला होगा,[7] इस उम्मीद पर कि वे डर जाएँ। **(51)** और उन लोगों को न निकालिए जो सुबह व शाम अपने परवर्दिगार की इबादत करते हैं, जिससे ख़ास उसकी रज़ामन्दी का इरादा रखते हैं, उनका हिसाब ज़रा भी आपसे मुताल्लिक़ और आपका हिसाब ज़रा भी उनसे मुताल्लिक़ नहीं कि आप उनको निकाल दें, वरना आप नामुनासिब काम करने वालों में हो जाएँगे। **(52)** और

---

1. इसलिए कि ऐसे ज़ालिमों का पाप कटा जिनके होने से नहूसत ही फैलती।

2. यानी वह अ़ज़ाब ज़ुल्म की वजह से होगा, जैसा कि पहली उम्मतों पर भी इसी वजह से हुआ है। सो लाज़िमी तौर पर ज़ालिमों ही के साथ ख़ास होगा और ज़ालिम तुम हो, पस ख़ास तुमपर ही पड़ेगा और मोमिन लोग बचे रहेंगे। सो तुमको सचेत होना चाहिए और यह ख़्याल भी दिल से निकाल देना चाहिए कि अगर मुसीबत आ़म हो तो उसका एहसास कम होता है। (क्योंकि यहाँ अ़ज़ाब आ़म नहीं बल्कि सिर्फ़ ज़ालिमों को होगा)।

3. यानी पैग़म्बरों का असल काम और उसका नतीजा यह है न कि तमाम फ़रमाइशों का पूरा करना। पस इसी क़ायदे के मुवाफ़िक़ यह रसूल भी हैं।

4. यानी मेरी क़ुदरत में।

5. आयत में तीन उमूर की नफ़ी की गई है। ख़ज़ानों पर क़ुदरत, इल्मे ग़ैब और मिल्कियत। मक़सूद इससे कुफ़्फ़ार के एतिराज़ का दूर करना हो सकता है। यानी तुम जो निशानियों के पेश करने से मेरे रसूल होने को झुठलाते हो तो वह बिलकुल बेमानी है, इसलिए कि रिसालत जिसका मैं दलील के साथ दावेदार हूँ कोई मुहाल अम्र नहीं है। किसी अ़जीब व ग़रीब बात और मामले जैसे क़ुदरत, इल्म, मज़कूरा मिल्कियत का तो मैं दावेदार नहीं, जो उसको मुहाल समझकर इनकार करते हो।

6. हश्र के मुताल्लिक़ कुल तीन तरह के आदमी हैं, एक वे जो यक़ीनी तौर पर उसके सुबूत के मोतक़िद हैं, दूसरे वे जो शक में हैं। आयत में इन्हीं दोनों जमाअ़तों का ज़िक्र है। तीसरे वे जो कि यक़ीनी तौर पर इसके इनकारी हैं, और डराना अगरचे उनको भी आ़म है जैसा कि दूसरी आयतों में साफ़ मौजूद है, लेकिन यहाँ मुत्लक़ डराना मुराद नहीं बल्कि वह डराना जिसमें ख़ास एहतिमाम हो। सो यह वहाँ ही होगा जहाँ नफ़ा यक़ीनी हो या नफ़े की उम्मीद हो, जैसा कि पहली और दूसरी क़िस्म का हाल है। बख़िलाफ़ इस तीसरी क़िस्म के कि नफ़े की उम्मीद न होने की वजह से उनको डराना सिर्फ़ हुज्जत पूरा करने के लिए होगा, दुश्मनी की वजह से उनमें तवज्जोह की क़ाबलियत ही नहीं, इसलिए यहाँ पहली दो क़िस्मों की तख़्सीस की गई है जैसा कि बाज़ आयतों में नफ़े के यक़ीनी होने की वजह से सिर्फ़ पहली क़िस्म ही की तख़्सीस भी है।

7. ग़ैर-मोमिनों के लिए शफ़ाअ़त और ग़ैरुल्लाह की तरफ़ से किसी तरह की मदद होने की यहाँ मुत्लक़ तौर पर नफ़ी है। और मोमिनों के लिए अल्लाह का मददगार होना और मक़बूल हज़रात का शफ़ाअ़त करना साबित है।

बिल्‌ग़दाति वल्‌अ़शिय्यि युरीदू-न वज्‌हहू, मा अ़लै-क मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइंव्-व मा मिन् हिसाबि-क अ़लैहिम् मिन् शैइन् फ़-तत्‍रु-दहुम् फ़-तकू-न मिनज़्ज़ालिमीन **(52)** व कज़ालि-क फ़तन्ना बअ़्‌ज़हुम् बिबअ़्‌ज़िल्-लियक़ूलू अ-हाउला-इ मन्नल्लाहु अ़लैहिम् मिम्-बैनिना, अलैसल्लाहु बिअअ़्‌ल-म बिश्शाकिरीन **(53)** व इज़ा जा-अकल्लज़ी-न युअ्‌मिनू-न बिआयातिना फ़क़ुल् सलामुन् अ़लैकुम् क-त-ब रब्बुकुम् अ़ला नफ़्सिहिर्रह्‌म-त अन्नहू मन् अ़मि-ल मिन्कुम् सूअम् बि-जहालतिन् सुम्-म ता-ब मिम्-बअ़्‌दिही व अस्ल-ह फ़-अन्नहू ग़फ़ूरुर्रहीम **(54)** व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लितस्तबी-न सबीलुल्- मुज्‌रिमीन **(55)** ❖

क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ़्‌बुदल्--लज़ी-न तद्‌अू-न मिन् दूनिल्लाहि, क़ुल् ला अत्तबिअ़ु अह्‌वा-अकुम् क़द् ज़लल्तु इज़ंव्-व मा अ-न मिनल् मुह्‌तदीन **(56)** क़ुल् इन्नी अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व कज़्ज़ब्तुम् बिही, मा अ़िन्दी मा तस्तअ़्‌जिलू-न बिही, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, यक़ुस्सुल्हक़्-क़ व हु-व ख़ैरुल्-फ़ासिलीन **(57)** क़ुल् लौ अन्-न अ़िन्दी मा तस्तअ़्‌जिलू-न बिही लक़ुज़ियल्-अम्रु बैनी व बैनकुम्, वल्लाहु अअ़्‌लमु बिज़्ज़ालिमीन **(58)** व अ़िन्दहू मफ़ातिहुल्ग़ैबि ला यअ़्‌लमुहा इल्ला हु-व, व यअ़्‌लमु मा फ़िल्बर्रि वल्बह्‌रि, व मा तस्क़ुतु मिंव्‌-व-र-क़ातिन् इल्ला यअ़्‌लमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमातिल्-अर्ज़ि व ला रत्‌बिंव्-व ला याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीन **(59)** व हुवल्लज़ी य-तवफ़्फ़ाकुम्

الانعام ٦ ١٢٢ واذا سمعوا ٧

لِّيَقُولُوٓا أَهَٰٓؤُلَآءِ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَيْهِم مِّنۢ بَيْنِنَآ ۗ أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِأَعْلَمَ
بِٱلشَّٰكِرِينَ ﴿٥٣﴾ وَإِذَا جَآءَكَ ٱلَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِـَٔايَٰتِنَا فَقُلْ سَلَٰمٌ
عَلَيْكُمْ ۖ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ ٱلرَّحْمَةَ ۖ أَنَّهُۥ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ
سُوٓءًۢا بِجَهَٰلَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنۢ بَعْدِهِۦ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُۥ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾
وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾
قُلْ إِنِّى نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ ٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۚ قُل
لَّآ أَتَّبِعُ أَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَآ أَنَا۠ مِنَ ٱلْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾
قُلْ إِنِّى عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّى وَكَذَّبْتُم بِهِۦ ۚ مَا عِندِى مَا
تَسْتَعْجِلُونَ بِهِۦٓ ۚ إِنِ ٱلْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ ٱلْحَقَّ ۖ وَهُوَ خَيْرُ
ٱلْفَٰصِلِينَ ﴿٥٧﴾ قُل لَّوْ أَنَّ عِندِى مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِۦ لَقُضِىَ ٱلْأَمْرُ
بَيْنِى وَبَيْنَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥٨﴾ وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلْغَيْبِ
لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ
إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِى
كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ ٱلَّذِى يَتَوَفَّىٰكُم بِٱلَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم
بِٱلنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰٓ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ
ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ ٱلْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِۦ ۖ وَ

منزل ٢

इसी तरीक़े पर हमने एक को दूसरे से आज़माइश में डाल रखा है ताकि लोग कहा करें कि क्या ये लोग हैं कि हम सबमें से उनपर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया है? क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह तआ़ला हक़ पहचानने वालों को ख़ूब जानता है? **(53)** और ये लोग जब आपके पास आएँ जो कि हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो यूँ कह दीजिए कि तुमपर सलामती है, तुम्हारे रब ने मेहरबानी फ़रमाना अपने ज़िम्मे मुक़र्रर कर लिया है कि जो शख़्स तुममें से कोई बुरा काम कर बैठे नादानी से फिर वह उसके बाद तौबा कर ले और सुधार रखे तो (अल्लाह तआ़ला की यह शान है कि) वह बड़े मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। **(54)** और इसी तरह हम आयतों की तफ़सील करते रहते हैं और ताकि मुज्रिमों का तरीक़ा ज़ाहिर हो जाए।[1] **(55)** ❖

आप कह दीजिए कि मुझे इससे मना किया गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिनकी तुम लोग अल्लाह को छोड़कर इबादत करते हो। आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारे ख़्यालात की पैरवी न करूँगा, क्योंकि इस हालत में तो मैं बेराह हो जाऊँगा और राह पर चलने वालों में न रहूँगा।[2] **(56)** आप कह दीजिए कि मेरे पास तो मेरे रब की तरफ़ से एक दलील है,[3] और तुम उसको झुठलाते हो, जिस चीज़ का तुम तक़ाज़ा कर रहे हो वह मेरे पास नहीं। हुक्म किसी का नहीं सिवाय अल्लाह तआ़ला के, वह (यानी अल्लाह तआ़ला) हक़ बात को बतला देता है और सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला वही है। **(57)** आप कह दीजिए कि अगर मेरे पास वह चीज़ होती जिसका तुम तक़ाज़ा कर रहे हो तो मेरा और तुम्हारा आपसी क़िस्से का फ़ैसला हो चुका होता, और ज़ालिमों को अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है।[4] **(58)** और उसी के (यानी अल्लाह तआ़ला के) पास हैं ख़ज़ाने तमाम छुपी चीज़ों के, उनको कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह तआ़ला के,[5] और वह तमाम चीज़ों को जानता है जो कुछ ख़ुश्की में हैं और जो कुछ दरियाओं में हैं, और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर वह उसको भी जानता है, और कोई दाना ज़मीन के अन्धेरे वाले हिस्सों में नहीं पड़ता, और न कोई तर और ख़ुश्क चीज़ गिरती है मगर ये सब किताबे-मुबीन में हैं।[6] **(59)** और वह ऐसा है कि रात में तुम्हारी रूह को एक तरह से क़ब्ज़ कर देता है,[7] और जो कुछ दिन में करते हो उसको जानता है, फिर तुमको जगा उठाता है ताकि मुक़र्ररा मीयाद "यानी निश्चित समय" पूरी कर दी जाए, फिर उसी की तरफ़ तुमको जाना है, फिर तुमको बतला देगा जो कुछ तुम किया करते थे। **(60)** ❖

और वही अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब हैं (बरतर हैं) और तुमपर निगरानी रखने वाले भेजते हैं, यहाँ तक कि

---

1. और हक़ व बातिल के वाज़ेह होने से तालिबे हक़ को हक़ का पहचानना आसान हो जाए।
2. इस मज़मून का ज़्यादा ताल्लुक़ तौहीद से था, आगे का मज़मून रिसालत से ज़्यादा मुताल्लिक़ है।
3. यानी क़ुरआन मजीद जो कि मेरा मोजिज़ा है, जिससे मेरी तस्दीक़ होती है।
4. उनके इल्म में जब मुनासिब होगा अ़ज़ाब नाज़िल हो जाएगा, चाहे दुनिया में भी जैसे बद्र वग़ैरह में हलाक किए गए और चाहे आख़िरत में कि दोज़ख़ में जाएँगे। ग़रज़ न मुझको उसकी क़ुदरत है न उसके मुनासिब होने का वक़्त मुझको मालूम है और न इसकी ज़रूरत है।
5. इनमें से जिस चीज़ को जिस वक़्त चाहें ज़ुहूर में ले आते हैं, इन चीज़ों में अ़ज़ाब भी आ गया। मतलब यह है कि और किसी को उन पर क़ुदरत नहीं, और जिस तरह मुकम्मल क़ुदरत उनके साथ ख़ास है उसी तरह मुकम्मल इल्म भी।
6. किताबे-मुबीन यानी लौहे महफ़ूज़ में हर वह चीज़ जो क़ियामत तक होने वाली है लिखी है, और ज़ाहिर है कि बिना इल्म के लिखना मुम्किन नहीं है। पस हासिल यह हुआ कि सब चीज़ें अल्लाह तआ़ला के इल्म के घेरे में हैं। और यह न समझो कि अल्लाह तआ़ला की तमाम मालूमात लौहे महफ़ूज़ ही में मुन्हसिर हैं बल्कि उनकी तो कोई इन्तिहा ही नहीं।
7. "रूहे-नफ़्सानी" तीन पाक रूहों में से है। इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने "अल्लाहु य-तवफ़्फ़ल् अन्फ़ु-स" की तफ़सीर में इसको "नफ़्से तमीज़" फ़रमाया है, और "रूहे हैवानी" को जिसके निकलने से मौत आ जाती है "नफ़्से हयात" फ़रमाया है। क़ुरआन में लफ़्ज़े नफ़्स दोनों को शामिल है, जिस जगह पर जो तफ़सीर मुनासिब होगी वही की जाएगी।

बिल्लैलि व यअ्लमु मा जरह्तुम् बिन्नहारि सुम्-म यब्असुकुम् फ़ीहि लियुक़्ज़ा अ-जलुम् मुसम्मन् सुम्-म इलैहि मर्जिअुकुम् सुम्-म युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (60) ❖

व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ-क़ अिबादिही व युर्सिलु अ़लैकुम् ह-फ़-ज़तन्, हत्ता इज़ा जा-अ अ-ह-दकुमुल्मौतु तवफ़्फ़त्हु रुसुलुना व हुम् ला युफ़र्रितून (61) सुम्-म रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि, अला लहुल्हुक्मु, व हु-व अस्रअुल्-हासिबीन (62) क़ुल् मंय्युनज्जीकुम् मिन् ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि तद्अूनहू तज़र्रुअंव्-व ख़ुफ़्यतन् ल-इन् अन्जाना मिन् हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (63) क़ुलिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्-म अन्तुम् तुश्रिकून (64) क़ुल् हुवल्क़ादिरु अ़ला अंय्यब्अ़-स अ़लैकुम् अ़ज़ाबम् मिन् फ़ौक़िकुम् औ मिन् तह्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बि-सकुम् शि-यअंव्-व युज़ी-क़ बअ्ज़कुम् बअ्-स बअ्ज़िन्, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लअ़ल्लहुम् यफ़्क़हून (65) व कज़्ज़-ब बिही क़ौमु-क व हुवल्हक़्क़ु, क़ुल् लस्तु अ़लैकुम् बि-वकील (66) लिकुल्लि न-बइम् मुस्तक़र्रुंव्-व सौ-फ़ तअ्लमून (67) व इज़ा रएैतल्लज़ी-न यख़ूज़ू-न फ़ी आयातिना फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही, व इम्मा युन्सियन्न-कश्शैतानु फ़ला तक़्अुद् बअ्दज़्ज़िक्रा मअ़ल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (68) व मा अ़लल्लज़ी-न यत्तक़ू-न मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइंव्-व लाकिन् ज़िक्रा लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (69) व ज़रिल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लअ़िबंव्-व लह्वंव्-व ग़र्रत्हुमुल् हयातुद्दुन्या व ज़क्किर् बिही अन् तुब्स-ल

الانعام ٦ | ١٢٣ | واذا سمعوا ٧

يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ
رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا
لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ
ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ
هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ
كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ يَّبْعَثَ
عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ
شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ
لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى
يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ
بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ
مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ
ذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖۗ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

منزل ٢

जब तुममें किसी को मौत आ पहुँचती है, उसकी रूह हमारे भेजे हुए क़ब्ज़ कर लेते हैं, और वे ज़रा भी कोताही नहीं करते।[1] (61) फिर सब अपने हक़ीक़ी मालिक अल्लाह के पास लाए जाएँगे। ख़ूब सुन लो कि फ़ैसला उसी का (यानी अल्लाह ही का) होगा, और वह बहुत जल्द हिसाब ले लेगा। (62) आप कहिए कि वह कौन है जो तुमको ख़ुश्की और दरिया की अंधेरियों से उस हालत में नजात देता है कि तुम उसको पुकारते हो आ़जिज़ी ज़ाहिर करके और चुपके-चुपके, कि अगर आप हमको इनसे नजात दे दें तो हम ज़रूर हक़ पहचानने वालों में से हो जाएँगे। (63) आप कह दीजिए कि ख़ुदा तआ़ला ही तुमको उनसे नजात देता है, और हर ग़म से, तुम फिर भी शिर्क करने लगते हो।[2] (64) आप कहिए कि इसपर भी वही क़ादिर है कि तुमपर कोई अ़ज़ाब तुम्हारे ऊपर से भेज दे,[3] या तुम्हारे पाँव तले से,[4] या कि तुमको गिरोह-गिरोह करके सबको भिड़ा दे, और तुम्हारे एक को दूसरे की लड़ाई चखा दे। आप देखिए तो सही हम किस तरह से मुख़्तलिफ़ पहलुओं से दलीलें बयान करते हैं, शायद वे समझ जाएँ। (65) और आपकी क़ौम उसको झुठलाती है हालाँकि वह यक़ीनी है। आप कह दीजिए कि मैं तुम पर तैनात नहीं किया गया हूँ। (66) हर ख़बर के ज़ाहिर होने का एक वक़्त है, और जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा (कि यह अ़ज़ाब आया)।[5] (67) और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में ऐब ढूँढ रहे हैं तो उन लोगों से किनारा करने वाला हो जा, यहाँ तक कि वे किसी और बात में लग जाएँ। और अगर तुझको शैतान भुला दे[6] तो याद आने के बाद फिर ऐसे ज़ालिम लोगों के पास मत बैठ। (68) और जो लोग एहतियात रखते हैं उनपर उनकी पूछताछ का कोई असर न पहुँचेगा।[7] लेकिन उनके ज़िम्मे नसीहत कर देना है शायद कि वे भी एहतियात करने लगें। (69) और ऐसे लोगों से बिलकुल अलग रह जिन्होंने अपने दीन को लह्व-व-लअि़ब "यानी खेल-तमाशा" बना रखा है, और दुनियावी ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा है, और इस कुरआन के ज़रिये से नसीहत भी करता रह ताकि कोई शख़्स अपने किरदार के सबब इस तरह न फंस जाए कि अल्लाह के अ़लावा कोई न उसका मददगार हो न सिफ़ारिश करने वाला, और (यह कैफ़ियत हो कि) अगर दुनिया भर का मुआ़वज़ा भी दे डाले तब भी उससे न लिया जाए, ये ऐसे ही हैं कि अपने किरदार के सबब फंस गए, उनके लिए पीने के लिए बहुत तेज़ (खोलता हुआ) पानी होगा और दर्दनाक सज़ा होगी अपने कुफ़्र के सबब से।[8] (70) ❖

1. ग़रज़ मौत नहीं टलती। आयत के ज़ाहिर से इस मक़ाम पर तीन क़िस्म के फ़रिश्तों का ज़िक्र है। एक आमाल लिखने वाले जिनका ज़िक्र इस आयत में है, "व इन्-न अ़लैकुम् ल-हाफ़िज़ी-न, किरामन् कातिबीन" दूसरे जान की हिफ़ाज़त करने वाले जिनको नुक़सानात से हिफ़ाज़त करने का हुक्म हो और जब तक हुक्म हो, उनका ज़िक्र इस आयत में है "लहू मुअ़क्क़िबातुम् मिम्बैनि यदैहि" तीसरे जान निकालने वाले। और दूसरी आयत से मालूम होता है कि यह काम मौत के फ़रिश्ते का है। इसलिए उलमा ने रूहुल्-मआ़नी में ज़िक्र हुई इन बाज़ रिवायतों की बिना पर कहा है कि ये मौत के फ़रिश्ते के मददगार हैं। साथ रहने और ताल्लुक़ की वजह से उनकी तरफ़ निस्बत कर दी गई, अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं।

2. ग़रज़ यह कि परेशानी और सख़्ती के वक़्त में तुम्हारे इक़रार से तौहीद का हक़ होना साबित हो जाता है, फिर इनकार कब तवज्जोह के क़ाबिल है।

3. जैसे पत्थर या हवा या तूफ़ानी बारिश।

4. जैसे ज़ल्ज़ला या ग़र्क़ हो जाना।

5. अ़ज़ाब दुनिया और आख़िरत के अ़ज़ाब दोनों को शामिल है, जिसमें जिहाद भी दाख़िल है।

6. यानी ऐसी मज्लिस में बैठने की मनाही याद न रहे।

7. यानी ज़रूरत की वजह से वहाँ जाने वाले गुनाहगार न होंगे।

8. कुछ रिवायतों में आया है कि मुश्रिकीन ने मुसलमानों से इस्लाम को छोड़ने की दरख़्वास्त भी की थी। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 246 पर)

नफ़्सुम्-बिमा क-सबत् लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअुन् व इन् तअ्दिल् कुल्-ल अ़द्लिल्-ला युअ्ख़ज़् मिन्हा, उला-इकल्लज़ी-न उब्सिलू बिमा क-सबू लहुम् शराबुम् मिन् हमीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्फ़ुरून **(70)** ❖

क़ुल् अ-नद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुना व ला यजुर्रुना व नुरद्दु अ़ला अअ्क़ाबिना बअ्-द इज़् हदानल्लाहु कल्लज़िस्-तह्वत्हुश्शयातीनु फ़िल्अर्ज़ि हैरा-न लहू अस्हाबुंय्-यद्अूनहू इलल्-हुदअ्तिना, क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्हुदा, व उमिर्ना लिनुस्लि-म लिरब्बिल् आ़लमीन **(71)** व अन् अक़ीमुस्सला-त वत्तक़ूहु, व हुवल्लज़ी इलैहि तुह्शरून **(72)** व हुवल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, व यौ-म यक़ूलु कुन् फ़-यकून ▲ **(73)** क़ौलुहुल्-हक़्क़ु, व लहुल्मुल्कु यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि, आ़लिमुल्ग़ैबि वश्शहा-दति, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर **(74)** व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लि-अबीहि आज़-र अ-तत्तख़िज़ु अस्नामन् आलि-हतन् इन्नी अरा-क व क़ौम-क फ़ी ज़लालिम् मुबीन **(75)** व कज़ालि-क नुरी इब्राही-म म-लकूतस्समावाति वल्अर्ज़ि व लियकू-न मिनल् मूक़िनीन **(76)** फ़-लम्मा जन्-न अ़लैहिल्लैलु रआ कौ-कबन् क़ा-ल हाज़ा रब्बी फ़-लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल ला उहिब्बुल् आफ़िलीन **(77)** फ़-लम्मा रअल्-क़-म-र बाज़िग़न् क़ा-ल हाज़ा रब्बी फ़-लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल ल-इल्लम् यह्दिनी रब्बी ल-अकूनन्-न मिनल् क़ौमिज़्ज़ाल्लीन **(78)** फ़-लम्मा रअश्शम्-स बाज़ि-ग़तन् क़ा-ल हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बरु फ़-लम्मा अ-फ़लत्

وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ
بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَ
لَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ
الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى
الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِىْۤ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ
يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٧٣﴾ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ؕ
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٤﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ
لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّىْۤ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِىْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ وَكَذٰلِكَ نُرِىْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ
مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّىْ ۚ
فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا
رَبِّىْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِىْ رَبِّىْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّاۤلِّيْنَ ﴿٧٨﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّىْ هٰذَاۤ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ

❖ रु. 8/10/14 ▲ सलासः 3/4

आप कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ की इबादत करें कि वह हमको न नफ़ा पहुँचाए और न हमको नुक़सान पहुँचाए? और क्या हम इसके बाद उल्टे फिर जाएँ कि हमको खुदा तआ़ला ने हिदायत कर दी है? जैसे कोई शख़्स हो कि उसको शैतानों ने कहीं जंगल में बेराह कर दिया हो और वह भटकता फिरता हो,[1] उसके कुछ साथी भी हों कि वे उसको ठीक रास्ते की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ, आप कह दीजिए कि यक़ीनी बात है कि सही रास्ता वह ख़ास अल्लाह ही का रास्ता है, और हमको यह हुक्म हुआ है कि हम परवर्दिगारे आ़लम के पूरे फ़रमाँबर्दार हो जाएँ। **(71)** और यह कि नमाज़ की पाबन्दी करो और उससे डरो, और वही है जिसके पास तुम सब जमा किए जाओगे। **(72)** और वही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को बाक़ायदा पैदा किया, और जिस वक़्त वह (यानी अल्लाह तआ़ला) इतना कह देगा कि (हश्र) हो जा, बस वह हो जाएगा। ▲ **(73)** उसका कहना असरदार है, और जबकि सूर में फूँक मारी जाएगी, सारी हुकूमत ख़ास उसी की होगी, वह छुपी हुई और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है, वही है बड़ी हिक्मत वाला (और) पूरी ख़बर रखने वाला।[2] **(74)** और (वह वक़्त भी याद करने के क़ाबिल है) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से फ़रमाया कि क्या तू बुतों को माबूद क़रार देता है?[3] बेशक मैं तुझको और तेरी सारी क़ौम को खुली ग़लती में देखता हूँ। **(75)** और हमने ऐसे ही तौर पर इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन की मख़्लूक़ात दिखलाईं (ताकि वे आ़रिफ़ हो जाएँ) और ताकि कामिल यक़ीन करने वालों में से हो जाएँ। **(76)** फिर जब उनपर रात का अंधेरा छा गया तो उन्होंने एक सितारा देखा तो फ़रमाया कि यह मेरा रब है, सो जब वह छुप गया तो फ़रमाया कि मैं छुप जाने वालों से मुहब्बत नहीं रखता। **(77)** फिर जब चाँद को चमकता हुआ देखा तो फ़रमाया कि यह मेरा रब है,[4] सो जब वह छुप गया तो आपने फ़रमाया कि अगर मेरा रब मुझको हिदायत न करता रहे तो मैं गुमराह लोगों में शामिल हो जाऊँ। **(78)** फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा[5] तो आपने फ़रमाया कि यह मेरा रब है, यह तो सबसे बड़ा है, सो जब वह छुप गया तो फ़रमायाः ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ।[6] **(79)** मैं यक्सू होकर अपना रुख़ उसकी तरफ़ करता हूँ जिसने

(पृष्ठ 244 का शेष) अगली आयत में इसका जवाब है, ऊपर "ज़िक्रा" और "ज़क्किर" में हुक्म था कि मुश्रिकीन को इस्लाम की तरफ़ बुलाएँ, आगे उनके इस्लाम को छोड़ देने की दावत देने का जवाब है।

1. मिसाल देने में जो शैतानों का राह भुला देना ज़िक्र किया गया है, इससे मालूम हुआ कि शैतान और ख़बीस जिन्न की तरफ़ से कभी-कभी इस क़िस्म का क़ब्ज़ा जमाना और अफ़आ़ल ज़ाहिर हो सकते हैं।

2. ऊपर शिर्क को बातिल करना और तौहीद को साबित करना मज़कूर था, आगे इसी मज़मून की ताईद में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के तौहीद की तरफ़ दावत का क़िस्सा बयान फ़रमाते हैं, और इस वजह से कि अ़रब वाले इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को मानते थे, ज़िक्र किए गए मज़मून की ताईद में ज़्यादा क़ुव्वत हो गई। और इस क़िस्से में रिसालत के मसले की भी ताईद है कि नुबुव्वत कोई ऐसी अ़जीब व ग़रीब चीज़ नहीं है, पहले से भी अम्बिया होते आए हैं।

3. इन आयतों की तफ़सीर से पहले चन्द ज़रूरी उमूर का लिहाज़ रखना तफ़सीर के समझने में मददगार होगा। अव्वल इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के जो हालात क़ुरआन में ज़िक्र हुए हैं उनसे मालूम होता है कि वह बुत-परस्ती भी करती थी और सितारों को भी दुनिया के कामों में तसर्रुफ़ करने वाला जानती थी। पस वह दो तरीक़े पर मुश्रिक थी, बुतों के माबूद होने का एतिक़ाद रखने और सितारों के रब होने का एतिक़ाद रखने से, इसी वास्ते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के मुनाज़रों में दोनों पर कलाम है। दूसरे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम होश सँभालने ही के वक़्त से तौहीद के पहचानने वाले और मुहक़्क़िक़ थे। तीसरे आपकी क़ौम खुदा की भी क़ायल थी या नहीं, दोनों एहतिमाल हैं। (यानी खुदा की क़ायल हो भी सकती है और नहीं भी)।

4. यानी आपने अपनी क़ौम से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि तुम्हारे गुमान के मुवाफ़िक़ यह मेरा और तुम्हारा रब है।

5. चूँकि उस बस्ती में जिसमें बाबिल और हलब भी दाख़िल हैं जो कि इतिहासकारों के मुताबिक इस गुफ़्तगू **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 248 पर)**

का़-ल याक़ौमि इन्नी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून **(79)** इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-तरस्समावाति वल्अर्-ज़ हनीफ़ंव्-व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन **(80)** व हाज्जहू क़ौमुहू, क़ा-ल अतुहाज्जून्नी फ़िल्लाहि व क़द् हदानि, व ला अख़ाफ़ु मा तुश्रिकू-न बिही इल्ला अंय्यशा-अ रब्बी शैअन्, वसि-अ़ रब्बी कुल्-ल शैइन् अ़िल्मन्, अ-फ़ला त-तज़क्करून **(81)** व कै-फ़ अख़ाफ़ु मा अश्रक्तुम् व ला तख़ाफ़ू-न अन्नकुम् अश्रक्तुम् बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही अ़लैकुम् सुल्तानन्, फ़-अय्युल् फ़रीक़ैनि अहक़्क़ु बिल्-अम्नि इन् कुन्तुम् तअ़्लमून ✣ **(82)** अल्लज़ी-न आमनू व लम् यल्बिसू ईमानहुम् बिज़ुल्मिन् उलाइ-क लहुमुल्-अम्नु व हुम् मुह्तदून **(83)** ❖

व तिल्-क हुज्जतुना आतैनाहा इब्राही-म अ़ला क़ौमिही, नर्फ़अ़ु द-रजातिम् मन्- नशा-उ, इन्-न रब्ब-क हकीमुन् अ़लीम **(84)** व वहब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब, कुल्लन् हदैना व नूहन् हदैना मिन् क़ब्लु व मिन् ज़ुर्रिय्यतिही दावू-द व सुलैमा-न व अय्यू-ब व यूसु-फ़ व मूसा व हारू-न, व कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन **(85)** व ज़-करिय्या व यह्या व अ़ीसा व इल्या-स कुल्लुम् मिनस्सालिहीन **(86)** व इस्माअ़ी-ल वल्य-स-अ़ व यूनु-स व लूतन्, व कुल्लन् फ़ज़्ज़ल्ना अ़लल् आलमीन **(87)** व मिन् आबाइहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् व इख़्वानिहिम् वज्तबैनाहुम् व हदैनाहुम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(88)** ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, व लौ अश्रकू ल-हबि-त अ़न्हुम् मा कानू यअ़्मलून **(89)**

افلت قال يقوم اني بريء مما تشركون ۝ اني وجهت وجهي
للذي فطر السموت والارض حنيفا وما انا من المشركين ۝ و
حاجه قومه قال اتحاجوني في الله وقد هدىن ولا اخاف
ما تشركون به الا ان يشاء ربي شيئا وسع ربي كل شيء علما
افلا تتذكرون ۝ وكيف اخاف ما اشركتم ولا تخافون انكم
اشركتم بالله ما لم ينزل به عليكم سلطنا فاي الفريقين
احق بالامن ان كنتم تعلمون ۝ الذين امنوا ولم يلبسوا
ايمانهم بظلم اولئك لهم الامن وهم مهتدون ۝ وتلك
حجتنا اتينها ابرهيم على قومه نرفع درجت من نشاء ان
ربك حكيم عليم ۝ ووهبنا له اسحق ويعقوب كلا هدينا
ونوحا هدينا من قبل ومن ذريته داود وسليمن وايوب
ويوسف وموسى وهرون وكذلك نجزي المحسنين ۝ وزكريا
ويحيى وعيسى والياس كل من الصلحين ۝ واسمعيل واليسع
ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العلمين ۝ ومن ابائهم و
ذريتهم واخوانهم واجتبينهم وهدينهم الى صراط مستقيم ۝
ذلك هدى الله يهدي به من يشاء من عباده ولو اشركوا

आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया, और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। **(80)** और उनसे उनकी क़ौम ने हुज्जत करना शुरू की। फ़रमाया कि क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे हुज्जत करते हो, हालाँकि उसने मुझको तरीक़ा बतला दिया है, और मैं उन चीज़ों से जिनको तुम अल्लाह तआला के साथ शरीक बनाते हो नहीं डरता, लेकिन हाँ अगर मेरा परवर्दिगार ही कोई मामला चाहे, मेरा परवर्दिगार हर चीज़ को अपने इल्म में घेरे हुए है।[1] क्या तुम फिर ख़्याल नहीं करते? **(81)** और मैं उन चीज़ों से कैसे डरूँ जिनको तुमने शरीक बनाया है, हालाँकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह तआला के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ठहराया है जिनपर अल्लाह तआला ने कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई,[2] सो उन दो जमाअतों में से अमन का ज़्यादा हक़दार कौन है? अगर तुम ख़बर रखते हो। **(82)** जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को शिर्क के साथ नहीं मिलाते ऐसों ही के लिए अमन है, और वही राह पर (चल रहे) हैं। **(83)** ❖

और यह हमारी हुज्जत थी जो हमने इब्राहीम को उनकी क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसको चाहते हैं रुतबों में बढ़ा देते हैं, बेशक आपका रब बड़ा हिक्मत वाला, बड़ा इल्म वाला है। **(84)** और हमने उनको (एक बेटा) इसहाक़ और (एक पोता) याक़ूब दिया, हर एक को (हक़ रास्ते की) हमने हिदायत की, और (इब्राहीम से) पहले ज़माने में हमने नूह को हिदायत की, और उन (इब्राहीम) की औलाद में से दाऊद को और सुलैमान को और अय्यूब को और यूसुफ़ को और मूसा को और हारून को (हक़ रास्ते की हिदायत की थी), और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला दिया करते हैं। **(85)** और ज़करिया को और यह्या को और ईसा को और इलियास को (हमने हक़ रास्ते की हिदायत की थी), और ये सब (हज़रात) पूरे शायस्ता "यानी तहज़ीब वाले और अख़्लाक़ व मुरव्वत वाले नेक" लोगों में थे। **(86)** और फिर इसमाईल को और यसअ् को और यूनुस को और लूत को (हक़ रास्ते की हिदायत की थी) और (इनमें से) हर एक को (उन ज़मानों के) तमाम जहान वालों पर हमने (नुबुव्वत से) फ़ज़ीलत दी **(87)** और साथ ही उनके कुछ बाप-दादों को और कुछ औलाद को और कुछ भाइयों को, और हमने उन (सब) को मक़बूल बनाया और हमने उन सबको सही रास्ते की हिदायत की। **(88)** अल्लाह की हिदायत वह यही (दीन) है, अपने बन्दों में से जिसको चाहे इसकी हिदायत करता है, और अगर (थोड़ी देर को मान लें कि) ये हज़रात भी शिर्क करते तो जो कुछ ये (आमाल किया) करते थे उनसे सब बेकार हो जाते। **(89)** ये ऐसे थे कि हमने उन (के मजमूए) को (आसमानी) किताब और हिक्मत (के उलूम) और नुबुव्वत अता की थी, सो अगर

(पृष्ठ 246 का शेष) का मौक़ा था, सितारों की जो मामूल की रफ़्तार है उसके मुताबिक़ यह एक रात में नहीं हो सकता कि चाँद का अपने किनारे से निकलना किसी सय्यारे के छुपने के बाद हो, और फिर सूरज के निकलने से पहले छुप जाए, इसलिए ये तीनों वाक़िए एक रात के नहीं हो सकते, या तो दो रात के हैं या तीन रात के। पस दोनों जगह "फ़लम्मा रआ" में जो "फ़ा" है वह उर्फ़ के एतिबार से मिलाने और एक दूसरे के बाद होने के मायने में है, न कि हक़ीक़ी तौर पर मिलाने के लिए।

6. यानी बराअत ज़ाहिर करता हूँ। यूँ एतिक़ाद के तौर पर तो हमेशा से बेज़ार ही थे।

1. ग़रज़ क़ुदरत और इल्म दोनों उसी के साथ ख़ास हैं, और तुम्हारे माबूद को न क़ुदरत है न इल्म है।

2. मतलब यह कि तुमको डरना चाहिए, फिर उल्टा मुझ ही को डराते हो।

उला-इकल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त फ़-इंय्यक्फ़ुर् बिहा हा-उला-इ फ़-क़द् वक्कल्ना बिहा क़ौमल्लैसू बिहा बिकाफ़िरीन **(90)** उला-इकल्लज़ी-न हदल्लाहु फ़बिहुदाहुमुक़्तदिह्, क़ुल् ला अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन्, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रा लिल्-आ़लमीन **(91)** ❖

لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٨٨ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا
لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ۝٨٩ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ
اقْتَدِهْ ۗ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ۝٩٠
وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ
شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ
هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ
وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ۗ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ
خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٩١ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ۗ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝٩٢ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ
اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ۗ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ
الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا
اَنْفُسَكُمْ ۗ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٩٣ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا

व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही इज़् क़ालू मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला ब-शरिम् मिन् शैइन्, क़ुल् मन् अन्ज़लल्-किताबल्लज़ी जा-अ बिही मूसा नूरंव्-व हुदल्-लिन्नासि तज्अ़लूनहू क़राती-स तुब्दूनहा व तुख़्फ़ू-न कसीरन् व अ़ुल्लिम्तुम् मा लम् तअ़्लमू अन्तुम् व ला आबाउकुम्, क़ुलिल्लाहु सुम्-म ज़र्हुम् फ़ी ख़ौज़िहिम् यल्अ़बून **(92)** व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुम्-मुसद्दिक़ुल्लज़ी बै-न यदैहि व लितुन्ज़ि-र उम्मल्क़ुरा व मन् हौलहा, वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्आख़ि-रति युअ्मिनू-न बिही व हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून **(93)** व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ क़ा-ल ऊहि-य इलय्-य व लम् यू-ह इलैहि शैउंव्-व मन् क़ा-ल स-उन्ज़िलु मिस्-ल मा अन्ज़लल्लाहु, व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न फ़ी ग़-मरातिल्-मौति वल्मलाइ-कतु बासितू ऐदीहिम् अख़्रिजू अन्फ़ु-सकुम्, अल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अ़ज़ाबल्हूनि बिमा कुन्तुम् तक़ूलू-न अ़लल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि व कुन्तुम् अ़न् आयातिही तस्तक्बिरून **(94)** व

ये लोग नुबुव्वत का इनकार करें तो हमने उसके लिए बहुत-से ऐसे लोग मुक़र्रर कर दिए हैं जो उसके इनकारी नहीं हैं। **(90)** ये (हज़रात) ऐसे थे जिनको अल्लाह तआला ने (सब्र की) हिदायत की थी, सो आप भी उन्हीं के तरीक़े पर चलिए। आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस (क़ुरआन की तब्लीग़) पर कोई मुआवज़ा नहीं चाहता, यह क़ुरआन तो तमाम जहान वालों के वास्ते सिर्फ़ एक नसीहत है।[1] **(91)** ❖

और उन लोगों ने अल्लाह तआला की जैसी क़द्र पहचानना वाजिब थी वैसी क़द्र न पहचानी, जबकि यूँ कह दिया कि अल्लाह ने किसी इनसान पर कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की।[2] आप कहिए कि वह किताब किसने नाज़िल की है जिसको मूसा लाए थे? (जिसकी यह कैफ़ियत है) कि वह नूर है और लोगों के लिए हिदायत है, जिसको तुमने अलग-अलग पन्नों में रख छोड़ा है, जिनको ज़ाहिर कर देते हो और बहुत-सी बातों को छुपाते हो।[3] और तुमको बहुत-सी ऐसी बातें तालीम की गईं जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बड़े, आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया है फिर उनको उनके मश्ग़ले में बेहूदगी के साथ लगा रहने दीजिए। **(92)** और यह भी ऐसी ही किताब है जिसको हमने नाज़िल किया है, जो बड़ी बरकत वाली है, अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली है, और ताकि आप मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डराएँ, और जो लोग आख़िरत का यक़ीन रखते हैं ऐसे लोग इसपर ईमान ले आते हैं और वे अपनी नमाज़ की पूरी पाबन्दी करते हैं। **(93)** और उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ तोहमत लगाए, या यूँ कहे कि मुझ पर वह्य आती है, हालाँकि उसके पास किसी भी बात की वह्य नहीं आई, और जो शख़्स (यूँ) कहे कि जैसा कलाम अल्लाह तआला ने नाज़िल किया है इसी तरह का मैं भी लाता हूँ, और अगर आप उस वक़्त देखें जबकि ये ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होंगेः हाँ अपनी जानें निकालो, आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस सबब से कि तुम अल्लाह तआला के ज़िम्मे झूठी बातें बकते थे, और तुम उसकी (यानी अल्लाह तआला की) आयतों से घमण्ड करते थे। **(94)** और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए, जिस तरह हमने तुमको अव्वल बार पैदा किया था और जो कुछ हमने तुमको दिया था उसको अपने पीछे ही छोड़ आए, और हम तो तुम्हारे साथ

---

1. ऊपर तौहीद का मज़्मून मक़सद बनाकर मज़्कूर था अगरचे उसके तहत रिसालत के मसले की भी ताईद थी। आगे रिसालत के मसले को मक़सद बनाकर ज़िक्र किया गया है, और इसके नाज़िल होने का सबब यह हुआ था कि एक यहूदी जिसका नाम मालिक बिन सैफ़ था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कुछ मज़हबी गुफ़्तगू होने लगी तो जोश में आकर इस क़द्र मुबालग़ा किया कि कहने लगा कि किसी इनसान पर अल्लाह तआला ने कोई किताब नाज़िल नहीं की। एक रिवायत में है कि यहूद ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! आसमान से कोई किताब अल्लाह तआला ने नाज़िल नहीं की, इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

2. यह कहना क़द्र न पहचानना इसलिए है कि इससे नुबुव्वत के मसले का इनकार लाज़िम आता है, और नुबुव्वत का इनकार करने वाला अल्लाह तआला को झुठलाता है। और हक़ की तस्दीक़ वाजिब है, पस इसमें वाजिब क़द्र पहचानने में ख़लल डालना हुआ।

3. "तज्अ़लूनहू क़राती-स" से तो यही ज़ाहिर होता है कि हर मज़्मून के पन्ने अलग कर रखे थे, और बाज़ का ऐसा कर लेना कुछ ताज्जुब की बात भी नहीं। और अगर "क़राती-स" से वह मुराद लिया जाए जो पन्नों में है तो मायने यह हो सकते हैं कि अपने ज़ेहन में तौरात के मुख़्तलिफ़ हिस्से तजवीज़ कर रखे थे, जिनमें से बाज़ मज़ामीन को जैसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तारीफ़ व सिफ़ात को छुपाते थे और उसकी और तावीलें कर देते थे, और अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं। मतलब यह कि जिस तौरात कि यह हालत है कि उसको अव्वल तो तुम मानते हो, दूसरे नूर व हिदायत होने की वजह से मानने के क़ाबिल भी है, तीसरे हर वक़्त तुम्हारे इस्तेमाल में है अगरचे वह इस्तेमाल शर्मनाक है, लेकिन उसकी वजह से इनकार की गुन्जाइश तो नहीं रही, चौथे तुम्हारे हक़ में वह बड़ी नेमत और एहसान की चीज़ है, उसी की बदौलत आ़लिम बने बैठे हो, इस हैसियत से भी उसमें इनकार की गुन्जाइश नहीं। यह बताओ कि उसको किसने नाज़िल किया है।

ल-क़द् जिअ्तुमूना फ़ुरादा कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व तरक्तुम् मा ख़व्वल्नाकुम् वरा-अ ज़ुहूरिकुम् व मा नरा म-अ़कुम् शु-फ़आ-अकुमुल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् अन्नहुम् फ़ीकुम् शु-रका-उ, लक़त्त-क़त्त-अ़ बैनकुम् व ज़ल्-ल अ़न्कुम् मा कुन्तुम् तज़्अुमून **(95)** ❖

इन्नल्ला-ह फ़ालिक़ुल्-हब्बि वन्नवा, युख़्रिजुल् हय्-य मिनल्मय्यिति व मुख़्रिजुल्मय्यिति मिनल्-हय्यि, ज़ालिकुमुल्लाहु फ़-अन्ना तुअ्फ़कून **(96)** फ़ालिक़ुल्-इस्बाहि व ज-अ़लल्लै-ल स-कनंव्- वश्शम्-स वल्क़-म-र हुस्बानन्, ज़ालि-क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम **(97)** व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुन्नुजू-म लितह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल्बर्रि वल्बह्रि, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्- यअ्लमून **(98)** व हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिन् फ़मुस्त-क़र्रुंव्-व मुस्तौदअुन्, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यफ़्क़हून **(99)** व हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़-अख़्रज्ना बिही नबा-त कुल्लि शैइन् फ़-अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु हब्बम् मु-तराकिबन् व मिनन्नख़्लि मिन् तल्अ़हा क़िन्वानुन् दानियतुंव्-व जन्नातिम् मिन् अअ्नाबिंव्-वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मुश्तबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिहिन्, उन्ज़ुरू इला स-मरिही इज़ा अस्म-र व यन्अ़िही, इन्-न फ़ी ज़ालिकुम् लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून **(100)** व ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रकाअल्-जिन्-न व ख़-ल-क़हुम् व ख़-रक़ू लहू बनी-न व बनातिम्

واذا سمعوا ٧ — ١٢٧ — الانعام ٦

فرادى كما خلقناكم اول مرة وتركتم ما خولناكم وراء ظهوركم
وما نرى معكم شفعاءكم الذين زعمتم انهم فيكم شركؤا
لقد تقطع بينكم وضل عنكم ما كنتم تزعمون ﴿٩٤﴾ ان الله فالق
الحب والنوى يخرج الحي من الميت ومخرج الميت من الحي
ذلكم الله فانى تؤفكون ﴿٩٥﴾ فالق الاصباح وجعل اليل سكنا
والشمس والقمر حسبانا ذلك تقدير العزيز العليم ﴿٩٦﴾ وهو
الذي جعل لكم النجوم لتهتدوا بها في ظلمت البر والبحر
قد فصلنا الايت لقوم يعلمون ﴿٩٧﴾ وهو الذي انشاكم من
نفس واحدة فمستقر ومستودع قد فصلنا الايت لقوم
يفقهون ﴿٩٨﴾ وهو الذي انزل من السماء ماء فاخرجنا به نبات
كل شيء فاخرجنا منه خضرا نخرج منه حبا متراكبا و
من النخل من طلعها قنوان دانية وجنت من اعناب
والزيتون والرمان مشتبها وغير متشابه انظروا الى ثمره
اذا اثمر وينعه ان في ذلكم لايت لقوم يؤمنون ﴿٩٩﴾ وجعلوا
لله شركاء الجن وخلقهم وخرقوا له بنين وبنت بغير علم
سبحنه وتعلى عما يصفون ﴿١٠٠﴾ بديع السموت والارض انى

منزل ٢

तुम्हारे उन शफ़ाअ़त करने वालों को नहीं देखते जिनके बारे में तुम दावे रखते थे कि वे तुम्हारे मामले में शरीक हैं। वाक़ई तुम्हारा आपस में तो ताल्लुक़ ख़त्म हो गया, और वह तुम्हारा दावा सब तुमसे गया-गुज़रा हुआ।[1] **(95)** ❖

बेशक अल्लाह तआला फाड़ने वाला है दाने और गुठलियों को,[2] वह जानदार (चीज़) को बेजान (चीज़) से निकाल लाता है[3] और वह बेजान (चीज़) को जानदार (चीज़) से निकालने वाला है,[4] अल्लाह यही है।[5] सो तुम कहाँ उल्टे जा रहे हो? **(96)** वह सुबह का निकालने वाला है, और उसने रात को राहत की चीज़ बनाई है, और सूरज और चाँद (की रफ़्तार) को हिसाब से रखा है।[6] यह ठहराई हुई बात है ऐसी ज़ात की जो कि क़ादिर है, बड़े इल्म वाला है। **(97)** और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम्हारे (फ़ायदे के) लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिये से ख़ुश्की और दरिया के अंधेरों में रास्ता मालूम कर सको, बेशक हमने ख़ूब खोल-खोलकर दलीलें बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो ख़बर रखते हैं। **(98)** और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम (सब) को (असल में) एक शख़्स से पैदा किया, फिर एक जगह ज़्यादा रहने की है और एक जगह थोड़ा रहने की है, बेशक हमने ख़ूब खोल-खोलकर दलीलें बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो समझ-बूझ रखते हैं। **(99)** और वह ऐसा है जिसने आसमानों से पानी बरसाया, फिर हमने उसके ज़रिये से हर क़िस्म के पेड़-पोधौं को निकाला, फिर हमने उससे हरी डाली निकाली कि उससे हम ऊपर-तले चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूर के दरख़्तों से यानी उनके गुप्फे में से गुच्छे निकलते हैं, जो (बोझ के मारे) नीचे को लटक जाते हैं, और उसी पानी से हमने अंगूरों के बाग़ और ज़ैतून और अनार के दरख़्त पैदा किए जो कि एक-दूसरे से मिलते-जुलते होते हैं और एक-दूसरे से मिलते-जुलते नहीं होते। ज़रा हर एक के फल को तो देखो जब वह फलता है, और (फिर) उसके पकने को देखो,[7] उनमें (भी तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं उन लोगों के लिए जो ईमान (लाने की फ़िक्र) रखते हैं।[8] **(100)** और उन लोगों ने शैतानों को अल्लाह का शरीक क़रार दे रखा है, हालाँकि उन लोगों को ख़ुदा ने पैदा किया है, और उन लोगों ने अल्लाह के हक़ में बेटे और बेटियाँ बिना सनद तराश रखी हैं,[9] वह उन बातों से पाक और बरतर है जिनको ये लोग बयान करते हैं। **(101)** ❖

1. ऊपर रिसालत के मसले की तहक़ीक़ मय उसके मुताल्लिक़ात के थी, और उससे ऊपर तौहीद का मसला मज़कूर था। आगे फिर तौहीद की तरफ़ वापसी है, और उसके साथ इस्तिदलाल में अपनी नेमतों का ज़िक्र और अपने नेमत देने वाला होने का भी बयान है ताकि शिर्क का फ़ितरी तौर पर बुरा होना भी ज़ाहिर हो जाए।

2. यानी ज़मीन में दबाने के बाद जो दाना या गुठली फूटती है तो यह अल्लाह ही का काम है।

3. जैसे नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) से आदमी पैदा होता है।

4. जैसे आदमी के बदन से नुत्फ़ा (वीर्य की बूँद) ज़ाहिर होता है।

5. जिसकी ऐसी क़ुदरत है।

6. यानी उनकी रफ़्तार मुक़र्रर और एक निज़ाम के तहत (व्यवस्थित) है, जिससे वक़्तों के मुक़र्रर करने और पाबन्दी में सहूलत हो।

7. इन मज़ामीन में एक अ़जीब तरतीब की रियायत रखी गई है। वह यह कि यहाँ कायनात की तीन क़िस्में ज़िक्र की गयी हैं: सिफ़लियात (यानी नीचे की चीज़ें), उलुव्वियात (बुलन्दी की चीज़ें), फ़िज़ाई कायनात। और शुरू किया नीचे की चीज़ों से कि वे हमसे ज़्यादा क़रीब हैं, और फिर उसके दो हिस्से किए, एक पेड़-पौधों का बयान, दूसरे जानदार चीज़ों का बयान, फिर फ़िज़ाई कायनात का ज़िक्र किया जैसे सुबह व रात, फिर बुलन्दी की चीज़ों का ज़िक्र किया जैसे सूरज व चाँद और सितारे। फिर चूँकि नीचे की चीज़ों का ज़्यादा मुशाहदा होता है इसलिए इसको दोबारा लाकर इसपर ख़त्म फ़रमाया कि पहले वे मुख़्तसर तौर पर मज़कूर थे अब तफ़सील से ज़िक्र किए गए। लेकिन तफ़सील की तरतीब में मुख़्तसर बयान का उल्टा कर दिया गया कि जानदारों के बयान को पहले लाया गया और पेड़-पौधों के बयान को बाद में लाया गया।

8. ऊपर तौहीद की दलीलों का ज़िक्र था, आगे वाज़ेह तौर पर तौहीद को साबित करने **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 254 पर)**

बिग़ैरि अिल्मिन्, सुब्हानहू व तआला अम्मा यसिफ़ून **(101)** ❖

बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि, अन्ना यकूनु लहू व-लदुंव्-व लम् तकुल्लहू साहि-बतुन्, व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम **(102)** ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ला इला-ह इल्ला हु-व ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् फ़अ्बुदूहु व हु-व अला कुल्लि शैइंव्-वकील **(103)** ला तुद्रिकुहुल्-अब्सारु व हु-व युद्रिकुल्-अब्सा-र व हुवल् लतीफ़ुल्-ख़बीर **(104)** क़द् जा-अकुम् बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् फ़-मन् अब्स-र फ़लिनफ़्सिही व मन् अमि-य फ़-अलैहा, व मा अ-न अलैकुम् बिहफ़ीज़ **(105)** व कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति व लियक़ूलू दरस्-त व लिनुबय्यि-नहू लिक़ौमिंय्-यअ्लमून **(106)** इत्तबिअ् मा ऊहि-य इलै-क मिर्रब्बि-क ला इला-ह इल्ला हु-व व अअ्रिज़् अनिल् मुश्रिकीन **(107)** व लौ शाअल्लाहु मा अश्रकू, व मा जअ़ल्ना-क अलैहिम् हफ़ीज़न् व मा अन्-त अलैहिम् ब-वकील **(108)** व ला तसुब्बुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़-यसुब्बुल्ला-ह अद्वम्-बिग़ैरि अिल्मिन्, कज़ालि-क ज़य्यन्ना लिकुल्लि उम्मतिन् अ-म-लहुम् सुम्-म इला रब्बिहिम् मर्जिअुहुम् फ़-युनब्बिउहुम् बिमा कानू यअ्मलून **(109)** व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् जाअत्हुम् आयतुल् लयुअ्मिनुन्-न बिहा, क़ुल् इन्नमल्-आयातु अिन्दल्लाहि व मा युश्अिरुकुम् अन्नहा इज़ा जाअत् ला युअ्मिनून **(110)** व नुक़ल्लिबु अफ़्इ-द-तहुम् व अब्सारहुम् कमा लम् युअ्मिनू बिही अव्व-ल मर्रतिंव्-व न-ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून **(111)** ❖

يَكُونُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ ۚ وَهُوَ
بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ
شَیْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ
الْاَبْصَارُ ؗ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝ قَدْ
جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِیَ
فَعَلَيْهَا ؕ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَ
لِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَاۤ اُوْحِیَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَ
لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَاۤ اَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ
ثُمَّ اِلٰی رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَ
اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ
بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَاۤ اِذَا جَآءَتْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ
يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِیْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

वह आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है, उसके (यानी अल्लाह के) औलाद कहाँ हो सकती है? हालाँकि उसकी कोई बीवी तो है नहीं, और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को पैदा किया और वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है। **(102)** यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, तो तुम उसकी इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ है।[1] **(103)** उसको तो किसी की निगाह नहीं घेर सकती और वह सब निगाहों को घेर लेता है, और वही बड़ा बारीक देखने वाला, ख़बर रखने वाला है। **(104)** अब बिला शुब्हा तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से हक़ देखने के ज़राए "यानी साधन" पहुँच चुके हैं, सो जो शख़्स देख लेगा वह अपना फ़ायदा करेगा, और जो शख़्स अन्धा रहेगा वह अपना नुक़सान करेगा, और मैं तुम्हारा निगराँ नहीं हूँ। **(105)** और हम इस तौर पर दलाइल को मुख़्तलिफ़ पहलुओं से बयान करते हैं (ताकि आप सबको पहुँचा दें) और ताकि ये यूँ कहें कि आपने किसी से पढ़ लिया है, और ताकि हम उसको समझदारों के लिए ख़ूब ज़ाहिर कर दें। **(106)** आप ख़ुद इस रास्ते पर चलते रहिए जिसकी वह्य आपके रब की तरफ़ से आपके पास आई है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और मुश्रिकों की तरफ़ ख़्याल न कीजिए। **(107)** और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो ये शिर्क न करते, और हमने आपको उनका निगराँ नहीं बनाया और न आप उनपर मुख़्तार हैं।[2] **(108)** और उनको गाली मत दो जिनकी ये लोग ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते हैं, (यानी उनके माबूदों को क्योंकि) फिर वे जहालत की वजह से हद से गुज़र कर अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी करेंगे, हमने इसी तरह हर तरीक़े वालों को उनका अ़मल पसन्दीदा बना रखा है,[3] फिर अपने रब ही के पास उनको जाना है, सो वह उनको बतला देगा जो कुछ भी वे किया करते थे। **(109)** और उन (इनकार करने वाले) लोगों ने अपनी क़स्मों में बड़ा ज़ोर लगाकर अल्लाह की क़सम खाई कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे ज़रूर ही उसपर ईमान ले आएँगे। आप (जवाब में) कह दीजिए कि निशानियाँ सब ख़ुदा तआला के क़ब्ज़े में हैं, और तुमको इसकी क्या ख़बर (बल्कि हमको ख़बर है) कि वे निशान जिस वक़्त आ जाएँगे, ये लोग जब भी ईमान न लाएँगे।[4] **(110)** और हम भी उनके दिलों और निगाहों को फेर देंगे[5] जैसा कि ये लोग उसपर पहली बार ईमान नहीं लाए और हम उनको उनकी सरकशी में हैरान रहने देंगे। **(111)** ❖

(पृष्ठ 252 का शेष) और शिर्क को बातिल करने का बयान है।

9. जैसे ईसाई लोग हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम को और कुछ यहूदी हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा और अ़रब के मुश्रिक फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ कहते थे।

1. ग़रज़ ख़ालिक़ भी वही, जानने वाला भी वही, वकील भी वही और ये सब उमूर इसका तक़ाज़ा करते हैं कि माबूद भी वही हो।

2. ऊपर के मज़ामीन में मुश्रिकीन के तरीक़े का बातिल होना और साथ ही ज़िक्र हुए मज़ामीन के साथ उसकी तब्लीग़ का हुक्म भी किया गया है। आगे मुश्रिकीन के बातिल माबूदों को बुरा-भला कहने से मुसलमानों को मना फ़रमा कर तब्लीग़े-दीन की हदें क़ायम करते हैं, जिसका हासिल यह है कि ग़ैर-क़ौम से मुनाज़रा करना तो तब्लीग़ का हिस्सा है लेकिन गाली-गलोच और दिल दुखाने वाली बातें उनके हक़ में कहना जिनका वे एहतिराम करते हैं मना है। सबब यह है कि इस तरह वे भी हमारे माबूद या रसूलों और क़ाबिले एहतिराम शख़्सियतों की शान में गुस्ताख़ी करेंगे, तो गोया उसके सबब हम हुए।

★ बुतों को बुरा कहना अपने आपमें जायज़ है मगर जब वह ज़रिया बन जाए एक हराम काम यानी अल्लाह तआ़ला की शान में गुस्ताख़ी का तो वह भी मना और ना-पसन्दीदा हो जाएगा। इससे शरीअ़त का एक क़ायदा साबित हुआ कि जब कोई जायज़ काम या मामला हराम का सबब बन जाए तो वह भी हराम हो जाता है, और क़ुरआन मजीद की बाज़ आयतों में जो बातिल माबूदों की तहक़ीर (अपमान) मज़कूर है वह बुरा-भला कहने के तौर पर नहीं, बल्कि मुनाज़रे में बतौर मक़सद की तहक़ीक़ व इस्तिदलाल और मुख़ालिफ़ पर इल्ज़ाम रखने के लिए है जो मुनाज़रों में इस्तेमाल होता है, और हालात से मुख़ातब को फ़र्क़ **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 256 पर)**

आठवाँ पारः व लौ अन्नना

सूरतुल् अन्आमि (आयत 112 से 166)

व लौ अन्नना नज़्ज़ल्ना इलैहिमुल्-मलाइ-क-त व कल्ल-महुमुल्-मौता व हशर्ना अ़लैहिम् कुल्-ल शैइन् क़ुबुलम् मा कानू लियुअ्मिनू इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु व लाकिन्-न अक्स-रहुम् यज्हलून **(112)** व कज़ालि-क जअ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वन् शयातिनल्-इन्सि वल्जिन्नि यूही बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन् ज़ुख़्रुफ़ल्क़ौलि ग़ुरूरन्, व लौ शा-अ रब्बु-क मा फ़-अ़लूहु फ़-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून **(113)** व लितस्ग़ा इलैहि अफ़्इ-दतुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व लियर्ज़ौहु व लियक़्तरिफ़ू मा हुम् मुक़्तरिफ़ून **(114)** अ-फ़ग़ैरल्लाहि अब्तग़ी ह-कमंव्-व हुवल्लज़ी अन्ज़-ल इलैकुमुल्- किता-ब मुफ़स्सलन्, वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्लमू-न अन्नहू मुनज़्ज़लुम्-मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन **(115)** व तम्मत् कलि-मतु रब्बि-क सिद्क़ंव्-व अ़द्लन्, ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिही व हुवस्समीअुल्-अ़लीम **(116)** व इन् तुतिअ् अक्स-र मन् फ़िल्अर्ज़ि युज़िल्लू-क अ़न् सबीलिल्लाहि, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून **(117)** इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु मंयज़िल्लु अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्लमु बिल्मुह्तदीन **(118)** फ़-कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि इन् कुन्तुम् बिआयातिही

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا
عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوٓا إِلَّآ أَن يَشَآءَ اللَّهُ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا
شَيَٰطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ
الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا
يَفْتَرُونَ ۝ وَلِتَصْغَىٰٓ إِلَيْهِ أَفْـِٔدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْءَاخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ۝ أَفَغَيْرَ
اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِيٓ أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَٰبَ مُفَصَّلًا ۚ
وَالَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ الْكِتَٰبَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ
بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا
وَعَدْلًا ۚ لَّا مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِن
تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِن
يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ
أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ فَكُلُوا
مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِـَٔايَٰتِهِ مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا
لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم

आठवाँ पारः व लौ अन्नना

सूरः अनआ़म (आयत 112 से 166)

और अगर हम उनके पास फ़रिश्तों को भेज देते और उनसे मुर्दे बातें करने लगते और हम (ग़ैब में) मौजूद तमाम चीज़ों को उनके पास उनकी आँखों के सामने लाकर जमा कर देते तब भी ये लोग ईमान न लाते, हाँ अगर ख़ुदा ही चाहे (तो और बात है), लेकिन उनमें से अक्सर लोग जहालत की बातें करते हैं। **(112)** और इसी तरह हमने हर नबी के लिए दुश्मन बहुत-से शैतान पैदा किए, कुछ आदमी और कुछ जिन्न, जिनमें से बाज़े दूसरे बाज़ों को चिकनी-चुपड़ी बातों का वस्वसा डालते रहते थे ताकि उनको धोखे में डाल दें। और अगर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो ये ऐसे काम न कर सकते, सो उन लोगों को और जो कुछ ये बोहतान लगा रहे हैं उसको आप रहने दीजिए। **(113)** और ताकि उसकी तरफ़ उन लोगों के दिल माइल हो जाएँ जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते, और ताकि उसको पसन्द कर लें और ताकि उन उमूर के करने वाले हो जाएँ जिनको वे करते थे। **(114)** तो क्या अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और फ़ैसला करने वाले को तलाश करूँ? हालाँकि वह ऐसा है कि उसने एक कामिल किताब तुम्हारे पास भेज दी है, उसकी हालत यह है कि उसके मज़ामीन ख़ूब साफ़-साफ़ बयान किए गए हैं, और जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इस बात को यक़ीन के साथ जानते हैं कि यह (क़ुरआन) आपके रब की तरफ़ से हक़ के साथ भेजा गया है, सो आप शुब्हा करने वालों में न हों। **(115)** और आपके रब का कलाम हक़ीक़त और एतिदाल के एतिबार से कामिल है, उसके कलाम का कोई बदलने वाला नहीं, और वे ख़ूब सुन रहे हैं, ख़ूब जान रहे हैं। **(116)** और दुनिया में अक्सर लोग ऐसे हैं कि अगर आप उनका कहना मानने लगें तो वे आपको अल्लाह की राह से बेराह कर दें,[1] वे सिर्फ़ बेअसल ख़्यालात पर चलते हैं और बिलकुल ख़्याली बातें करते हैं।[2] **(117)** यक़ीनन आपका रब उसको ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बेराह हो जाता है, और वह उनको भी ख़ूब जानता है जो उसकी राह पर चलते हैं **(118)** सो जिस जानवर पर अल्लाह का नाम लिया जाए उसमें से खाओ[3] अगर तुम उसके अहकाम पर ईमान रखते हो[4] **(119)** और तुमको कौन-सी चीज़ इसका सबब हो

(पृष्ठ 254 का शेष) मालूम हो जाता है कि तहक़ीक़ मक़सूद है या अपमान। अव्वल जायज़ है दूसरा नाजायज़।

3. यानी ऐसे असबाब जमा हो जाते हैं कि उनकी वजह से हर एक को अपना तरीक़ा पसन्द होता है, इससे मालूम हुआ कि यह जहान असल में आज़माइश का है, पस इसमें सज़ा ज़रूरी नहीं।

4. ''लयुअ्मिनुन्-न बिहा'' में कुफ़्फ़ार के क़ौल की नक़ल है और ''इन्नमल् आयातु अिन्दल्लाहि'' में उनका जवाब है, और ''व मा युश्अिरुकुम'' से आख़िर तक मुसलमानों को तंबीह और ख़िताब है। जवाब का हासिल यह है कि रसूल नुबुव्वत के दावेदार हैं और मोजिज़ात इस दावे की दलील हैं और मुद्दई के ज़िम्मे अक़्ली क़ायदे के मुताबिक़ मुतलक़ दलील का क़ायम करना ज़रूरी है, किसी ख़ास दलील का मुतैयन करना ज़रूरी नहीं, इसलिए इन इनकार करने वालों को नई निशानियों के तलब करने का हक़ न था, हाँ पेश की हुई दलीलों पर बहस व सवालात करें तो उसका जवाब ख़ुद या अपने किसी नायब के ज़रिये मुद्दई के ज़िम्मे है, जिसके लिए इस्लाम के हक़ होने का हर मुद्दई अब भी आमादा है।

5. इससे यह शुब्हा न किया जाए कि अल्लाह तआ़ला ही ने उनको ख़राब कर दिया फिर पकड़ व इल्ज़ाम क्यों, इसलिए कि इस फेर देने का सबब उनका मुँह मोड़ना है। यह नहीं कि उनके दिल हक़ की तरफ़ पहले ही से मुतवज्जह हों और फिर फेर दिया गया हो, ख़ुदा की पनाह हरगिज़ ऐसा नहीं, बल्कि तवज्जोह के साथ तो यह वायदा है कि ''वल्लज़ी-न जाहदू फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबु-लना'' (यानी जो हमारे रास्ते में मशक़्क़तें बर्दाश्त करते हैं हम ज़रूर उनको अपने क़ुर्ब व सवाब यानी जन्नत के रास्ते दिखा देंगे)।

1. ''ला तकूनन्-न'' और ''इन तुतिअ्......'' में फ़ेअ़्ल की निस्बत जो रसूलुल्लाह सल्ल. (शेष तफ़सीर पृष्ठ 258 पर)

मुअ्मिनीन **(119)** व मा लकुम् अल्ला तअ्कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि व क़द् फ़स्स-ल लकुम् मा हर्र-म अ़लैकुम् इल्ला मज़्तुरिर्तुम् इलैहि, व इन्-न कसीरल्-लयुज़िल्लू-न बिअह्वाइहिम् बिग़ैरि अ़िल्मिन्, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु बिल्मुअ्तदीन **(120)** व ज़रू ज़ाहिरल्-इस्मि व बाति-नहू, इन्नल्लज़ी-न यक्सिबूनल्-इस्-म सयुज्ज़ौ-न बिमा कानू यक्तरिफ़ून **(121)** व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि अ़लैहि व इन्नहू लफ़िस्क़ुन्, व इन्नश्शयाती-न लयूहू-न इला औलिया-इहिम् लियुजादिलूकुम् व इन् अतअ्तुमूहुम् इन्नकुम् लमुश्रिकून **(122)** ❖

अ-व मन् का-न मैतन् फ़-अह्यैनाहु व जअ़ल्ना लहू नूरंय्यम्शी बिही फ़िन्नासि कमम् म-सलुहू फ़िज़्ज़ुलुमाति लै-स बिख़ारिजिम् मिन्हा, कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिल्काफ़िरी-न मा कानू यअ्मलून **(123)** व कज़ालि-क जअ़ल्ना फ़ी कुल्लि क़र्यतिन् अकाबि-र मुज्रिमीहा लियम्कुरू फ़ीहा, व मा यम्कुरू-न इल्ला बिअन्फ़ुसिहिम् व मा यश्अुरून **(124)** व इज़ा जाअत्हुम् आयतुन् क़ालू लन्-नुअ्मि-न हत्ता नुअ्ता मिस्-ल मा ऊति-य रुसुलुल्लाहि ✣ अल्लाहु अअ्लमु हैसु यज्अ़लु रिसाल-तहू, सयुसीबुल्लज़ी-न अज्रमू सग़ारुन् अ़िन्दल्लाहि व अ़ज़ाबुन् शदीदुम् बिमा कानू यम्कुरून **(125)** फ़मंय्युरिदिल्लाहु अंय्यह्दि-यहू यश्रह् सद्-रहू लिल्इस्लामि व मंय्युरिद् अंय्युज़िल्लहू यज्अ़ल् सद्-रहू ज़य्यिक़न् ह-रजन् कअन्नमा यस्सअ्-अ़दु फ़िस्समा-इ, कज़ालि-क यज्अ़लुल्लाहुर्रिज्-स अ़लल्लज़ी-न ला युअ्मिनून **(126)** व हाज़ा सिरातु रब्बि-क

ولو اننا ٨ — ١٣٠ — الانعام ٦

مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ
بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾
وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ
سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ
اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ۗ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى
اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾
اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِى
النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۗ كَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ
قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ۗ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ
وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى
نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ۘ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ
رِسٰلَتَهٗ ۗ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ
شَدِيْدٌ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ
صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا
حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ۗ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ

منزل ٢

सकती है कि तुम ऐसे जानवर में से न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, हालाँकि अल्लाह तआला ने उन सब जानवरों की तफ़सील बतला दी है जिनको तुमपर हराम किया है, मगर जब तुमको सख़्त ज़रूरत पड़ जाए तो वे भी हलाल हैं, और यह यक़ीनी बात है कि बहुत-से आदमी अपने ग़लत ख़्यालात से बिला किसी सनद के गुमराह करते हैं। इसमें कोई शुब्हा नहीं कि आपका रब हद से निकल जाने वालों को ख़ूब जानता है। **(120)** और तुम ज़ाहिरी गुनाह को भी छोड़ो और बातिनी गुनाह को भी (छोड़ो), बिला शुब्हा जो लोग गुनाह कर रहे हैं उनको उनके किए की जल्द ही सज़ा मिलेगी। **(121)** और उन (जानवरों) में से मत खाओ जिनपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, और यह नाफ़रमानी (की बात) है,[1] और यक़ीनन शयातीन अपने दोस्तों को तालीम कर रहे हैं, ताकि ये तुमसे (बेकार) झगड़ा करें। और अगर (ख़ुदा न करे) तुम उन लोगों की इताअ़त करने लगो तो यक़ीनन तुम मुश्रिक हो जाओ।[2] **(122)** ❖

ऐसा शख़्स जो कि पहले मुर्दा था[3] फिर हमने उसको ज़िन्दा बना दिया,[4] और हमने उसको एक ऐसा नूर दे दिया कि वह उसको लिए हुए आदमियों में चलता फिरता है,[5] क्या उस शख़्स की तरह हो सकता है जिसकी हालत यह है कि वह अंधेरियों में है, उनसे निकलने ही नहीं पाता, इसी तरह काफ़िरों को उनके आमाल अच्छे मालूम हुआ करते हैं।[6] **(123)** और इसी तरह हमने हर बस्ती में वहाँ के रईसों 'यानी बड़े लोगों और सरदारों' ही को जुर्मों का करने वाला बनाया ताकि वे लोग वहाँ शरारतें किया करें,[7] और वे लोग अपने ही साथ शरारत कर रहे हैं[8] और उनको ज़रा ख़बर नहीं। **(124)** और जब उनको कोई आयत पहुँचती है तो यूँ कहते हैं कि हम हरगिज़ ईमान न लाएँगे जब तक कि हमको भी ऐसी ही चीज़ (न) दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी जाती है।[9] उस मौक़े को तो ख़ुदा ही ख़ूब जानता है जहाँ अपना पैग़ाम भेजता है, जल्द ही उन लोगों को जिन्होंने यह जुर्म किया है ख़ुदा के पास पहुँचकर ज़िल्लत पहुँचेगी, और उनकी शरारतों के मुक़ाबले में सख़्त सज़ा। **(125)** सो जिस शख़्स को अल्लाह तआला रास्ते पर डालना चाहते हैं उसके सीने को[10] इस्लाम के लिए खोल देते हैं, और जिसको बेराह रखना चाहते हैं उसके सीने को तंग, बहुत तंग कर देते हैं, जैसे कोई आसमान में चढ़ता हो,[11] इसी तरह अल्लाह ईमान न लाने वालों पर फिटकार डालता है। **(126)**

(पृष्ठ 256 का शेष) की तरफ़ की गई है, इससे सुनाना औरों को मन्ज़ूर है। आपकी तरफ़ निस्बत करने से मुबालग़ा हो **गया कि** जब आपको बावजूद इसके कि इसका इम्कान ही नहीं कि आप ग़ैरुल्लाह की इताअ़त करें, ऐसा कहा गया तो दूसरों की क्या हस्ती है, **जैसा** कि "अब्तग़ी" में भी ज़ाहिरन निस्बत आपकी तरफ़ है और मक़सूद यह है कि तुम किसी और को तलाश करते हो, जिसका सबब **मुनाज़रे में** नर्मी का अन्दाज़ इख़्तियार करना है जो दावत में ज़्यादा मुफ़ीद है।

2. यानी अ़क़ीदों में वे महज़ बेअसल ख़्यालात पर चलते हैं, और गुफ़्तगू में बिलकुल ख़्याली और अन्दाज़े की बातें करते हैं।

3. ऊपर "व इन् तुतिअ्....." में गुमराह लोगों की पैरवी से बिलकुल मना फ़रमाया था, अब एक वाक़िए की ज़रूरत के सबब **एक ख़ास** मामले में पैरवी करने से मना फ़रमाते हैं, और वह ख़ास मामला ज़िब्ह किए गए और ग़ैर-ज़िब्ह किए गए जानवर के हलाल और **हराम होने** का मामला है। और वह वाक़िआ यह है कि कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को यह शुब्हा डालना चाहा कि अल्लाह के मारे हुए जानवर को **तो खाते** नहीं हो और अपने मारे हुए यानी ज़िब्ह किए हुए को खाते हो। बाज़ मुसलमानों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत **में यह** शुब्हा नक़ल किया, उसपर ये आयतें "ल-मुश्रिकून" तक नाज़िल हुई।

4. क्योंकि हलाल को हराम जानना ख़िलाफ़े ईमान है।

1. यानी "मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि अ़लैहि" का खाना नाफ़रमानी है।

2. यानी उनकी इताअ़त ऐसी बुरी चीज़ है कि उसकी तरफ़ ध्यान लगाने से भी बचना चाहिए।

3. यानी गुमराह था।

4. यानी मुसलमान बना दिया।

5. यानी ईमान दे दिया जो हर वक़्त उसके साथ रहता है, जिससे वह सब नुक़सानों **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 260 पर)**

मुस्तक़ीमन्, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यज़्ज़क्करून (127) लहुम् दारुस्सलामि अ़िन्-द रब्बिहिम् व हु-व वलिय्युहुम् बिमा कानू यअ्मलून (128) व यौ-म यह्शुरुहुम् जमीअ़न् या मअ्शरल्-जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम् मिनल्-इन्सि व क़ा-ल औलियाउहुम् मिनल्-इन्सि रब्बनस्तमत-अ़ बअ्ज़ुना बिबअ्ज़िंव्-व बलग़्ना अ-ज-लनल्लज़ी अज्जल्-त लना, क़ालन्नारु मस्वाकुम् ख़ालिदी-न फ़ीहा इल्ला मा शाअल्लाहु, इन्-न रब्ब-क हकीमुन् अ़लीम (129) व कज़ालि-क नुवल्ली बअ्ज़ज़्ज़ालिमी-न बअ्ज़म् बिमा कानू यक्सिबून (130) ❖

या मअ्शरल्-जिन्नि वल्-इन्सि अलम् यअ्तिकुम् रुसुलुम् मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती व युन्ज़िरूनकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा, क़ालू शहिद्ना अ़ला अन्फ़ुसिना व ग़र्रत्हुमुल्-हयातुद्दुन्या व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (131) ज़ालि-क अल्लम् यकुर्रब्बु-क मुह्लिकल्क़ुरा बिज़ुल्मिंव्-व अह्लुहा ग़ाफ़िलून (132) व लिकुल्लिन् द-रजातुम्-मिम्मा अ़मिलू, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ्मलून (133) व रब्बुकल्-ग़निय्यु ज़ुर्रह्मति, इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यस्तख़्लिफ़् मिम्-बअ्दिकुम् मा यशा-उ कमा अन्श-अकुम् मिन् ज़ुर्रिय्यति क़ौमिन् आख़रीन (134) इन्-न मा तू-अ़दू-न लआतिंव्-व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन (135) क़ुल् या क़ौमिअ्मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् फ़सौ-फ़ तअ्लमू-न मन् तकूनु लहू

ولو اننا ١٣١ الانعام

عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ۭ قَدْ
فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ
يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰۗؤُهُمْ
مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ
اَجَّلْتَ لَنَا ۭ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ
بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ
يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ
لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓي اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾ ذٰلِكَ
اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰي بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾
وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾
وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ
بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاۗءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِنَّ مَا
تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا

منزل

और यही आपके रब का सीधा रास्ता है।[1] हमने नसीहत हासिल करने वालों के वास्ते इन आयतों को साफ़-साफ़ बयान कर दिया।[2] **(127)** उन लोगों के वास्ते उनके रब के पास सलामती का घर है, और वह (यानी अल्लाह तआ़ला) उनसे उनके आमाल की वजह से मुहब्बत रखता है। **(128)** और जिस दिन अल्लाह तआ़ला तमाम मख़्लूक़ों को जमा करेंगे (और कहेंगे) ऐ जिन्नात की जमाअ़त! तुमने इनसानों (को गुमराह करने) में बड़ा हिस्सा लिया। जो इनसान उनके साथ ताल्लुक़ रखने वाले थे वे (इक़रार के तौर पर) कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हममें एक ने दूसरे से फ़ायदा हासिल किया था, और हम अपनी इस मुक़र्ररा मीयाद "यानी निश्चित समय" तक आ पहुँचे जो आपने हमारे लिए मुअ़य्यन "यानी निर्धारित" फ़रमाई थी (यानी क़ियामत)। वह (यानी अल्लाह तआ़ला सारे काफ़िर जिन्न और काफ़िर इनसानों से) फ़रमाएँगे कि तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है, जिसमें हमेशा-हमेशा को रहोगे। हाँ अगर ख़ुदा ही को मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है)। बेशक आपका रब बड़ा हिक्मत वाला, बड़ा इल्म वाला है।[3] **(129)** और इसी तरह हम बाज़ कुफ़्फ़ार को बाज़ के क़रीब रखेंगे उनके आमाल के सबब। **(130)** ❖

ऐ जिन्नात और इनसानों की जमाअ़त! क्या तुम्हारे पास तुम्ही में से पैग़म्बर नहीं आए थें? जो तुमसे मेरे अहकाम बयान किया करते थे, और तुमको इस आज के दिन की ख़बर दिया करते थे। वे सब अ़र्ज़ करेंगे कि हम अपने ऊपर (जुर्म का) इक़रार करते हैं, और उनको दुनियावी ज़िन्दगानी ने भूल में डाल रखा है, और ये लोग इक़रार करेंगे कि वे काफ़िर थे। **(131)** यह इस वजह से है कि आपका रब किसी बस्ती वालों को कुफ़्र के सबब ऐसी हालत में हलाक नहीं करता कि उस बस्ती के रहने वाले बेख़बर हों।[4] **(132)** और हर एक के लिए दर्जे हैं उनके आमाल के सबब, और आपका रब उनके आमाल से बेख़बर नहीं है। **(133)** और आपका रब बिलकुल ग़नी है, रहमत वाला है,[5] अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारी जगह आबाद कर दे, जैसा कि तुमको एक-दूसरी क़ौम की नस्ल से पैदा किया है। **(134)** जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह बेशक आने वाली चीज़ है,[6] और तुम आ़जिज़ नहीं कर सकते। **(135)** आप यह फ़रमा दीजिए कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी हालत पर अ़मल करते रहो, मैं भी अ़मल कर रहा हूँ। सो अब जल्दी ही तुमको मालूम हो जाता है कि (उस जहान का) अन्जामकार किसके लिए नफ़ा देने वाला

(पृष्ठ 258 का शेष) जैसे गुमराही वग़ैरह से महफ़ूज़, मामून और बेफ़िक्र है।

6. चुनाँचे इसी वजह से ये मक्का के सरदार लोग जो आपसे बेकार फ़रमाइशें और शुब्हात व झगड़े पेश करते रहते हैं, अपने कुफ़्र को अच्छा ही समझकर उसपर अड़े हुए हैं।

7. जिससे उनका सज़ा का हक़दार होना ख़ूब साबित हो जाए।

8. क्योंकि उसका वबाल तो ख़ुद उनको ही भुगतना पड़ेगा।

9. इस क़ौल का बहुत बड़ा जुर्म होना ज़ाहिर है कि झुठलाने, दुश्मनी, घमण्ड और गुस्ताख़ी सब को शामिल है।

10. यानी दिल को।

11. यानी चढ़ना चाहता हो और चढ़ा नहीं जाता, और जी तंग होता है, और मुसीबत का सामना होता है।

1. यानी इस्लाम।

2. ताकि वे इसके मोजिज़ा होने से इसकी तस्दीक़ करें और फिर इसके मज़ामीन पर अ़मल करके नजात हासिल करें, यही तस्दीक़ व अ़मल सीधा रास्ता है, बख़िलाफ़ उनके जिनको नसीहत हासिल करने की फ़िक्र ही नहीं। उनके वास्ते न यह काफ़ी है न दूसरी दलीलें काफ़ी हैं।

3. इल्म से सबके जराइम मालूम करता है और हिक्मत से मुनासिब सज़ा देता है।

4. इसलिए रसूलों को भेजते हैं ताकि उनको जराइम की इत्तिला हो जाए, फिर जिसको अ़ज़ाब हो उसका हक़दार होने की वजह से हो।

5. वह रसूलों को कुछ इसलिए नहीं भेजता कि नऊज़ु बिल्लाह (अल्लाह की पनाह) वह इबादत का **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 262 पर)**

आक़ि-बतुद्दारि, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून **(136)** व ज-अ़लू लिल्लाहि मिम्मा ज़-र-अ मिनल्-हर्सि वल्-अन्आ़मि नसीबन् फ़क़ालू हाज़ा लिल्लाहि बिज़अ़्मिहिम् व हाज़ा लिशु-रकाइना फ़मा का-न लिशु-रकाइहिम् फ़ला यसिलु इलल्लाहि व मा का-न लिल्लाहि फ़हु-व यसिलु इला शु-रकाइहिम्, सा-अ मा यह्कुमून **(137)** व कज़ालि-क ज़य्य-न लि-कसीरिम्- मिनल्-मुश्रिकी-न क़त्-ल औलादिहिम् शु-रकाउहुम् लियुर्दूहुम् व लियल्बिसू अ़लैहिम् दीनहुम्, व लौ शाअल्लाहु मा फ़-अ़लूहु फ़-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून **(138)** व क़ालू हाज़िही अन्आमुंव्-व हर्सुन् हिज्रुल्ला यत्अ़मुहा इल्ला मन्-नशा-उ बिज़अ़्मिहिम् व अन्आमुन् हुर्रिमत् ज़ुहूरुहा व अन्आ़मुल्ला यज़्कुरूनस्मल्लाहि अ़लैहफ़्तिराअन् अ़लैहि, सयज्ज़ीहिम् बिमा कानू यफ़्तरून **(139)** व क़ालू मा फ़ी बुतूनि हाज़िहिल्-अन्आ़मि ख़ालि-सतुल् लिज़ुकूरिना व मुहर्रमुन् अ़ला अज़्वाजिना व इंय्यकुम् मै-ततन् फ़हुम् फ़ीहि शु-रका-उ, सयज्ज़ीहिम् वस्फ़हुम्, इन्नहू हकीमुन् अ़लीम **(140)** क़द् ख़सिरल्लज़ी-न क़-तलू औलादहुम् स-फ़हम् बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व हर्रमू मा र-ज़-क़हुमुल्लाहुफ़्तिरा-अन् अ़लल्लाहि, क़द् ज़ल्लू व मा कानू मुह्तदीन ◆ **(141)** ❖

व हुवल्लज़ी अन्श-अ जन्नातिम् मअ़्रूशातिंव्-व ग़ै-र मअ़्रूशातिंव्-वन्नख़्-ल वज़्ज़र्-अ

ولو اننا ٨ ١٣٢ الانعام ٦

عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ
مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَ
هٰذَا لِشُرَكَآئِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ وَ
مَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾
وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ
لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا
فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوْا هٰذِهٖ اَنْعَامٌ وَّ
حَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ
ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ
سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ
الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰى اَزْوَاجِنَا وَاِنْ يَّكُنْ
مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ
عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا
مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِيْ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ

منزل ٢

होगा। यह यक़ीनी बात है कि हक़-तल्फ़ी करने वालों को कभी फ़लाह "यानी कामयाबी" न होगी।[1] (136) और (अल्लाह तआला ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं, उन लोगों ने उनमें से कुछ हिस्सा अल्लाह का मुक़र्रर किया और अपने गुमान के मुताबिक़ कहते हैं कि यह तो अल्लाह का है और यह हमारे माबूदों का है, फिर जो चीज़ उनके माबूदों की होती है वह तो अल्लाह की तरफ़ नहीं पहुँचती और जो चीज़ अल्लाह की होती है वह उनके माबूदों की तरफ़ पहुँच जाती है,[2] उन्होंने क्या बुरी तजवीज़ निकाल रखी है। (137) और इसी तरह बहुत-से मुश्रिकों के ख़्याल में उनके माबूदों ने अपनी औलाद के क़त्ल करने को अच्छा और पसन्दीदा बना रखा है ताकि वे उनको बर्बाद करें और ताकि उनके तरीक़े को ख़ल्त-मल्त कर दें।[3] और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो ये ऐसा काम न करते। तो आप उनको और जो कुछ ये ग़लत बातें बना रहे हैं, यूँ ही रहने दीजिए। (138) और वे अपने (बातिल) ख़्याल पर यह भी कहते हैं कि ये (मख़्सूस) मवेशी हैं और (मख़्सूस) खेत हैं, जिनका इस्तेमाल हर शख़्स को जायज़ नहीं, उनको कोई नहीं खा सकता सिवाय उनके जिनको हम चाहें,[4] और कहते हैं कि ये (मख़्सूस) मवेशी हैं जिनपर सवारी या बोझ लादने का काम हराम कर दिया गया है,[5] और (मख़्सूस) मवेशी हैं जिनपर ये लोग अल्लाह का नाम नहीं लेते, (ये सब बातें) सिर्फ़ अल्लाह पर बोहतान बाँधने के तौर पर (कहते) हैं[6] अभी अल्लाह तआला उनको उनके बोहतान बाँधने की सज़ा दिए देता है (139) और वे (यूँ भी) कहते हैं कि जो चीज़ उन मवेशियों के पेट में (से निकलती) है[7] वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है, और अगर वह (पेट का निकला हुआ बच्चा) मुर्दा है तो उस (से नफ़ा उठाने के जायज़ होने) में (मर्द व औरत) सब बराबर हैं,[8] अभी अल्लाह तआला उनको उनकी ग़लत-बयानी की सज़ा दिये देता है। बेशक वह बड़ा हिक्मत वाला है, बड़ा इल्म वाला है।[9] (140) वाक़ई वे लोग ख़राबी में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को महज़ बेवक़ूफ़ी की वजह से बिला किसी सनद के क़त्ल कर डाला, और जो (हलाल) चीज़ें उनको अल्लाह तआला ने खाने-पीने को दी थीं उनको हराम कर लिया महज़ अल्लाह पर तोहमत बाँधने के तौर पर, बेशक ये लोग गुमराही में पड़ गए और कभी राह पर चलने वाले नहीं हुए।[10] ◆ (141) ❖

(पृष्ठ 260 का शेष) मोहताज है, वह तो बिलकुल ग़नी है, बल्कि इसलिए भेजता है कि वह रहमत वाला भी है। अपनी रहमत से रसूलों को भेजा ताकि उनके ज़रिये से लोगों को फ़ायदेमन्द और नुक़सान देने वाली चीज़ें मालूम हो जाएँ, और वे नफ़ा देने वाली चीज़ों से फ़ायदा उठाएँ और नुक़सान देने वाली चीज़ों से महफ़ूज़ रहें, इसमें बन्दों ही का नफ़ा है।

6. यानी क़ियामत व अ़ज़ाब।

1. ऊपर मुश्रिकीन के कुफ़्रिया व शिर्किया एतिक़ादों की जहालतों का बयान था, आगे उनकी बाज़ अ़मली जहालतों का बयान है, जिसका मन्शा शिर्क व कुफ़्र था।

2. ग़ल्ले और फल में से कुछ हिस्सा अल्लाह के नाम का निकालते और कुछ बुतों और जिन्नात के नाम का। फिर अगर इत्तिफ़ाक़ से अल्लाह के हिस्से में से कुछ बुतों के हिस्से में मिल जाता तो उसको मिला रहने देते, और अगर उल्टा हो जाता तो उसको निकाल कर फिर बुतों के हिस्से में मिला देते, और बहाना यह करते कि अल्लाह तो ग़नी है, उसका हिस्सा कम हो जाने से उसको कोई नुक़सान नहीं, और शुरका यानी बुत मोहताज हैं, उनका हिस्सा न घटना चाहिए।

3. ताकि वे हमेशा ग़लती में फँसे रहें।

4. कुछ खेत बुतों के नाम वक़्फ़ कर देते और कहते कि इसके ख़र्च होने की असल जगह मर्द हैं और औरतों को इसमें से कुछ देना हमारी राय पर है, अगर हमारी मरज़ी हो तो कुछ हिस्सा उनको दे सकते हैं वरना वे इसके ख़र्च होने की जगह नहीं। इसी तरह मवेशियों के बारे में भी उनका अ़मल था। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 264 पर)**

मुख़्तलिफ़न् उकुलूहू वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मु-तशाबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिहिन्, कुलू मिन् स-मरिही इज़ा अस्म-र व आतू हक़्क़हू यौ-म हसादिही व ला तुस्रिफ़ू इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्रिफ़ीन **(142)** व मिनल्-अन्‌आमि हमूलतंव्-व फ़र्‌शन्, कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु व ला तत्तबिअू खुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम् मुबीन **(143)** समानिय-त अज़्वाजिन् मिनज़्ज़अ्निस्नैनि व मिनल्-मअ्ज़िस्नैनि, क़ुल् आज़्ज़-करैनि हर्र-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मश्त-मलत् अ़लैहि अर्‌हामुल्- उन्सयैनि, नब्बिऊनी बिअ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(144)** व मिनल् इबिलिस्नैनि व मिनल् ब-क़रिस्नैनि, क़ुल् आज़्ज़-करैनि हर्र-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मश्त-मलत् अ़लैहि अर्‌हामुल्- उन्सयैनि, अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज़् वस्साकुमुल्लाहु बिहाज़ा फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ्तरा अ़लल्लाहि कज़िबल्- लियुज़िल्लन्ना-स बिग़ैरि अ़िल्मिन्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन **(145)** ❖

ولو اننا ٨ ١٣٣ الانعام ٦

وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا
وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ
حَصَادِهٖ ڮ وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ وَمِنَ الْاَنْعَامِ
حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ
اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ
ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ
الْاُنْثَيَيْنِ ۭ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ
مِمَّنِ افْتَرٰي عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ
مُحَرَّمًا عَلٰي طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا
اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَعَلَي
الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ

منزل٢

क़ुल् ला अजिदु फ़ी मा ऊहि-य इलय्-य मुहर्रमन् अ़ला ताअ़िमिंय्यत्-अ़मुहू इल्ला अंय्यकू-न मै-ततन् औ दमम्-मस्फ़ूहन् औ लह्-म ख़िन्ज़ीरिन् फ़-इन्नहू रिज्सुन् औ फ़िस्क़न् उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़-इन्-न रब्ब-क ग़फ़ूरुर्रहीम **(146)** व अ़लल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना कुल्-ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन् व मिनल् ब-क़रि

और वही (अल्लाह पाक) है जिसने बाग़ पैदा किए, वे भी जो टट्टियों "यानी बाँस या सरकन्डों के बने हुए छप्पर व झोंपड़ी" पर चढ़ाए जाते हैं, (जैसे अंगूर) और वे भी जो टट्टियों पर नहीं चढ़ाए जाते, और खजूर के पेड़ और खेती जिनमें खाने की चीज़ें मुख़्तलिफ़ तौर की होती हैं, और आपस में ज़ैतून और अनार (यानी अनार-अनार आपस में और ज़ैतून-ज़ैतून आपस में) एक-दूसरे के जैसे भी होते हैं और (कभी) एक-दूसरे के जैसे नहीं होते, उन सबकी पैदावार खाओ जब वह निकल आए, और उसमें (शरीअ़त की रू से) जो हक़ वाजिब है वह उसके काटने (और तोड़ने) के दिन (ग़रीबों को) दिया करो।[1] और हद से मत गुज़रो, यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को ना-पसन्द करते हैं। **(142)** और मवेशियों में ऊँचे क़द के और छोटे क़द के, जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने तुमको दिया है खाओ, और शैतान के क़दम से क़दम मिलाकर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। **(143)** (और ये मवेशी) आठ नर व मादा (पैदा किए) यानी भेड़ (और दुंबा) में दो क़िस्म (नर व मादा) और बकरी में दो क़िस्म (नर व मादा)। आप (उनसे) कहिए कि क्या अल्लाह तआ़ला ने दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादा को, या उस (बच्चे) को जिसको दोनों मादा (अपने) पेट में लिए हुए हैं! तुम मुझको किसी दलील से तो बतलाओ, अगर तुम सच्चे हो। **(144)** और ऊँट में दो क़िस्म और गाय (भैंस) में दो क़िस्म। आप कहिए कि क्या अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादा को, या उस (बच्चे) को जिसको दोनों मादा (अपने) पेट में लिए हुए हों। क्या तुम उस वक़्त हाज़िर थे जिस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने इस (हराम व हलाल होने) का हुक्म दिया? तो उससे ज़्यादा (और) कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआ़ला पर बिला दलील झूठ तोहमत लगाए? ताकि लोगों को गुमराह करे। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ज़ालिम लोगों को (आख़िरत में जन्नत का) रास्ता न दिखलाएँगे।[2] **(145)** ❖

आप कह दीजिए कि जो कुछ अहकाम वह्य के ज़रिये से मेरे पास आए हैं उनमें तो मैं किसी खाने वाले के लिए कोई हराम (ग़िज़ा) नहीं पाता जो उसको खाए, मगर यह कि वह मुर्दार (जानवर) हो,[3] या बहता हुआ ख़ून हो, या सुअर का गोश्त हो क्योंकि वह बिलकुल नापाक है,[4] या जो (जानवर) शिर्क का ज़रिया हो कि अल्लाह के सिवा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो। फिर जो शख़्स बेताब हो जाए, शर्त यह है कि न तो मज़े का तालिब हो और न (ज़रूरत की मात्रा से) आगे बढ़ने वाला हो तो वाक़ई आपका रब माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।[5] **(146)** और यहूद पर हमने तमाम नाख़ुन वाले जानवर हराम कर दिए थे,

(पृष्ठ 262 का शेष) **5.** जिन जानवरों को बुतों के नाम मख़्सूस करके छोड़ देते थे उनपर सवारी करने और सामान लादने को जायज़ न समझते थे।

6. बोहतान बाँधना इसलिए कि वे इन उमूर को अल्लाह तआ़ला की ख़ुश्नूदी का सबब समझते थे।

7. जैसे दूध या बच्चा।

8. बहीरा और साइबा के ज़िब्ह के वक़्त जो बच्चा पेट में से निकलता, अगर वह ज़िन्दा होता तो उसको ज़िब्ह कर लेते और उसे मर्दों के लिए हलाल और औरतों के लिए हराम समझते। और अगर वह मुर्दा होता तो सबके लिए हलाल समझते। इसी तरह बाज़ जानवरों के दूध को मर्दों के लिए हलाल और औरतों के लिए हराम समझते थे।

9. अब तक जो सज़ा नहीं मिली तो उसकी वजह यह है कि बेशक अल्लाह तआ़ला हिक्मत वाला है, उसने बाज़ हिक्मतों से मोहलत दे रखी है। और अभी सज़ा न देने से कोई यह न समझे कि उसको ख़बर नहीं, क्योंकि वह बड़ा इल्म वाला है, उसको सब ख़बर है।

10. यह गुमराही नई नहीं क्योंकि पहले भी कभी राह पर चलने वाले नहीं हुए। पस इस आयत में उनके गुमराह होने को और ताकीद के साथ बयान किया गया और आयत के आख़िरी हिस्से में उनके बुरे अन्जाम यानी सज़ा होने का ज़िक्र है!

1. इस आयत में जिस शरई हक़ ख़ैर-ख़ैरात का ज़िक्र है उससे उश्र (यानी दसवाँ हिस्सा) मुराद नहीं जो कि ज़मीन की ज़कात है।

2. ऊपर मुश्रिकों के ख़ुद ही हलाल व हराम घड़ लेने के ग़लत और बेबुनियाद होने को बयान फ़रमाया है। आगे भी इसी मज़मून की ताईद है कि जिन जानवरों का बयान हो रहा है उनमें हराम तो फ़लाँ-फ़लाँ चीज़ें हैं, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 266 पर)**

वल्ग़-नमि हर्रम्ना अ़लैहिम् शुहू-महुमा इल्ला मा ह-मलत् ज़ुहूरुहुमा अविल्हवाया औ मख़्त-ल-त बिअ़ज़्मिन्, ज़ालि-क जज़ैनाहुम् बिबग़्यिहिम् व इन्ना लसादिक़ून **(147)** फ़-इन् कज़्ज़बू-क फ़-क़ुर्रब्बुकुम् ज़ू रह्मतिंव्-वासि-अ़तिन् व ला युरद्दु बअ्सुहू अ़निल् क़ौमिल्-मुज्रिमीन **(148)** स-यक़ूलुल्लज़ी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अश्रक्ना व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् शैइन्, कज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् हत्ता ज़ाक़ू बअ्सना, क़ुल हल् अ़िन्दकुम् मिन् अ़िल्मिन् फ़-तुख़्रिजूहु लना इन् तत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् अन्तुम् इल्ला तख़्रुसून **(149)** क़ुल् फ़लिल्लाहिल्- हुज्जतुल्-बालि-ग़तु फ़लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअ़ीन **(150)** क़ुल् हलुम्-म शु-हदा-अकुमुल्लज़ी-न यश्हदू-न अन्नल्ला-ह हर्र-म हाज़ा फ़-इन् शहिदू फ़ला तश्हद् म-अ़हुम् व ला तत्तबिअ् अह्वा-अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्- आख़ि-रति व हुम् बिरब्बिहिम् यअ़्दिलून **(151)** ❖

وَلَوْ أَنَّنَا ١٣٧ الأنعام ٦

حرمنا عليهم شحومهما إلا ما حملت ظهورهما أو الحوايا
أو ما اختلط بعظم ذلك جزينهم ببغيهم وإنا لصدقون
فإن كذبوك فقل ربكم ذو رحمة واسعة ولا يرد بأسه
عن القوم المجرمين سيقول الذين أشركوا لو شاء الله
ما أشركنا ولا آباؤنا ولا حرمنا من شيء كذلك كذب
الذين من قبلهم حتى ذاقوا بأسنا قل هل عندكم من
علم فتخرجوه لنا إن تتبعون إلا الظن وإن أنتم إلا
تخرصون قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهدىكم أجمعين
قل هلم شهداءكم الذين يشهدون أن الله حرم هذا
فإن شهدوا فلا تشهد معهم ولا تتبع أهواء الذين كذبوا
بآياتنا والذين لا يؤمنون بالآخرة وهم بربهم يعدلون
قل تعالوا أتل ما حرم ربكم عليكم ألا تشركوا به شيئا و
بالوالدين إحسانا ولا تقتلوا أولادكم من إملاق نحن
نرزقكم وإياهم ولا تقربوا الفواحش ما ظهر منها وما
بطن ولا تقتلوا النفس التي حرم الله إلا بالحق ذلكم
وصىكم به لعلكم تعقلون ولا تقربوا مال اليتيم إلا

منزل ٢

क़ुल् तआ़लौ अत्लु मा हर्र-म रब्बुकुम् अ़लैकुम् अल्ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्वालिदैनि इह्सानन् व ला तक़्तुलू औलादकुम् मिन् इम्लाक़िन्, नह्नु नर्ज़ुक़ुकुम् व इय्याहुम् व ला तक़्रबुल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न व ला तक़्तुलुन्नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून **(152)** व ला

और गाय और बकरी (के अंगों) में से उन दोनों की चरबियाँ उनपर हमने हराम कर दी थीं, मगर वह जो उनकी पुश्त पर या अंतड़ियों में लगी हो, या जो हड्डी से मिली हो। उनकी शरारत के सबब हमने उनको यह सज़ा दी थी, और हम यक़ीनन सच्चे हैं। **(147)** फिर अगर ये आपको झूठा कहें तो आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारा रब बड़ी विशाल रहमत वाला है[1] और उसका अ़ज़ाब मुज्रिम लोगों से न टलेगा। **(148)** ये मुश्रिक यूँ कहने को हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम किसी चीज़ को हराम कह सकते, इसी तरह जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक कि उन्होंने हमारे अ़ज़ाब का मज़ा चखा।[2] आप कहिए कि क्या तुम्हारे पास कोई दलील है?[3] तो उसको हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम लोग सिर्फ़ ख़्याली बातों पर चलते हो, और तुम बिलकुल अटकल से बातें बनाते हो। **(149)** आप कहिए कि पस पूरी हुज्जत अल्लाह ही की रही, फिर अगर वह चाहता तो तुम सबको राह पर ले आता।[4] **(150)** आप कहिए कि अपने गवाहों को लाओ जो इस बात पर (बाक़ायदा) गवाही दें कि अल्लाह तआ़ला ने इन (ज़िक्र की हुई चीज़ों) को हराम कर दिया है, फिर अगर वे गवाही दे दें तो आप उस गवाही को न सुनें। और (ऐ मुख़ातब!) ऐसे लोगों के बातिल ख़्यालात की पैरवी मत करना जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और वे अपने रब के बराबर दूसरों को ठहराते हैं। **(151)** ❖

आप (उनसे) कहिए कि आओ मैं तुमको वे चीज़ें पढ़कर सुनाऊँ जिनको तुम्हारे रब ने तुमपर हराम फ़रमाया है, वे ये कि (१) अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठहराओ,[5] (२) और माँ-बाप के साथ एहसान किया करो, (३) और अपनी औलाद को बदहाली और तंगी के सबब क़त्ल मत किया करो, हम तुमको और उनको (तयशुदा) रिज़्क़ देंगे, (४) और बेहयाई के जितने तरीक़े हैं उनके पास भी मत जाओ, चाहे वे एलानिया हों या छुपे तौर पर हों, (५) और जिसका ख़ून करना अल्लाह तआ़ला ने हराम कर दिया है उसको क़त्ल मत करो मगर हक़ पर, इसका तुमको ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। **(152)** (६) और

(पृष्ठ 264 का शेष) तुम अपनी तरफ़ से क्यों घड़ते हो। और इसमें उनकी एक दूसरी गुमराही की तरफ़ भी इशारा है, क्योंकि बहते हुए ख़ून और अल्लाह के अ़लावा दूसरे के नाम पर ज़िब्ह किए हुए जानवर के खाने की आ़म आ़दत थी। पस ऊपर हलाल को हराम करने का ज़िक्र था और यह हराम को हलाल करने का ज़िक्र है।

3. यानी जिसका ज़िब्ह करना वाजिब हो और वह शरई तरीक़े पर ज़िब्ह किए बिना मर जाए।

4. सुअर के सब हिस्से और अंग नापाक और हराम हैं, ऐसा नापाक मुकम्मल नापाक कहलाता है।

5. ऊपर जो मज़मून ज़िक्र किया गया था आगे उसके मुताल्लिक़ एक शुब्हा का जवाब है कि खाने-पीने की जिन चीज़ों की बहस जारी है उनमें कुछ चीज़ों को छोड़कर सबको हलाल किया गया है, हालाँकि बाज़ अहले किताब से मालूम हुआ कि बाज़े और जानवर भी हराम हैं। जवाब यह है कि यह हराम होना सिर्फ़ यहूद के लिए एक सबब की वजह से हुआ था जो अब ख़त्म हो गया, पस दावा अपनी जगह पर सही और उसकी ज़िद (यानी उसका उल्टा) अपनी जगह पर ग़लत है।

1. इसलिए बाज़ हिक्मतों से जल्दी पकड़ नहीं फ़रमाते।

2. चाहे दुनिया में जैसा कि अक्सर पिछले कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब नाज़िल हुआ है, या मरने के बाद तो ज़ाहिर ही है। और यह इशारा है इस तरफ़ कि उन लोगों के उन कुफ़्रियात (यानी कुफ़्र भरी बातों और हरकतों) के मुक़ाबले में सिर्फ़ ज़बानी जवाब और मुनाज़रे पर बस न किया जाएगा बल्कि पिछले कुफ़्फ़ार की तरह अ़मली सज़ा भी दी जाएगी। चाहे दुनिया में भी या सिर्फ़ आख़िरत में।

3. यानी इस दावे पर कि किसी अ़मल के सादिर होने की क़ुदरत देना रज़ामन्दी की दलील है।

4. मगर हक़ तआ़ला की बहुत-सी हिक्मतें हैं, किसी को तौफ़ीक़ दी किसी को नहीं दी। अलबत्ता हक़ का इज़हार और इख़्तियार व इरादे का देना सबके लिए आ़म है।

5. पस शरीक ठहराना हराम हुआ।

तक़्रबू मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु-ग़ अशुद्दहू व औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा-न बिल्क़िस्ति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा व इज़ा क़ुल्तुम् फ़अ़्दिलू व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा व बि-अ़ह्दिल्लाहि औफ़ू, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअ़ल्लकुम् तज़क्करून **(153)** व अन्-न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमन् फ़त्तबिअ़ूहु व ला तत्तबिअ़ुस्सुबु-ल फ़-तफ़र्र-क़ बिकुम् अ़न् सबीलिही, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून **(154)** सुम्-म आतैना मूसल्-किता-ब तमामन् अ़लल्लज़ी अह्स-न व तफ़्सीलल्-लिकुल्लि शैइंव्-व रह्म-तल् लअ़ल्लहुम् बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् युअ्मिनून **(155)** ❖

व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुन् फ़त्तबिअ़ूहु वत्तक़ू लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(156)** अन् तक़ूलू इन्नमा उन्ज़िलल्-किताबु अ़ला ताइ-फ़तैनि मिन् क़ब्लिना व इन् कुन्ना अ़न् दिरा-सतिहिम् लग़ाफ़िलीन **(157)** औ तक़ूलू लौ अन्ना उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् फ़-क़द् जाअकुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व रह्मतुन् फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् कज़्ज़-ब बिआयातिल्लहि व स-द-फ़ अ़न्हा, स-नज्ज़िल्लज़ी-न यस्दिफ़ू-न अ़न् आयातिना सूअल्-अ़ज़ाबि बिमा कानू यस्दिफ़ून **(158)** हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-यहुमुल्मलाइ-कतु औ यअ्ति-य रब्बु-क औ यअ्ति-य बअ़्ज़ु आयाति रब्बि-क, यौ-म यअ्ती बअ़्ज़ु आयाति

بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ حَتّٰى یَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَیْلَ وَالْمِیْزَانَ
بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَ
لَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ۙ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا
السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ۝ ثُمَّ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِیْٓ اَحْسَنَ
وَتَفْصِیْلًا لِّكُلِّ شَیْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ
یُؤْمِنُوْنَ ۙ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ۙ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآىِٕفَتَیْنِ مِنْ
قَبْلِنَا ۠ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِیْنَ ۙ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ
اُنْزِلَ عَلَیْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَیِّنَةٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِ
اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۭ سَنَجْزِی الَّذِیْنَ یَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰیٰتِنَا
سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا یَصْدِفُوْنَ ۝ هَلْ یَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ
تَاْتِیَهُمُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ اَوْ یَاْتِیَ رَبُّكَ اَوْ یَاْتِیَ بَعْضُ اٰیٰتِ رَبِّكَ ۭ یَوْمَ
یَاْتِیْ بَعْضُ اٰیٰتِ رَبِّكَ لَا یَنْفَعُ نَفْسًا اِیْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ

यतीम के माल के पास मत जाओ मगर ऐसे तरीक़े से जो कि अच्छा और पसन्दीदा है,[1] यहाँ तक कि वह अपने बालिग़ होने की उम्र को पहुँच जाए, (७) और नाप-तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ़ के साथ, हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देते,[2] (८) और जब तुम बात किया करो तो इन्साफ़ रखा करो, चाहे वह शख़्स[3] रिश्तेदार ही हो, (९) और अल्लाह तआ़ला से जो अ़हद किया करो[4] उसको पूरा किया करो। इन (सब) का तुमको अल्लाह तआ़ला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम याद रखो (और अ़मल करो)। **(153)** और यह कि यह दीन मेरा रास्ता है, जो कि सीधा है, सो इस राह पर चलो और दूसरी राहों पर मत चलो कि वे (राहें) तुमको उसकी (यानी अल्लाह की) राह से जुदा कर देंगी। इसका तुमको अल्लाह तआ़ला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम (इस राह के ख़िलाफ़ करने से) एहतियात रखो। **(154)** फिर हमने मूसा को किताब दी थी, जिससे अ़मल करने वालों पर अच्छी तरह नेमत पूरी हो और सब अहकाम की तफ़सील हो जाए, और रहनुमाई हो और रहमत हो, ताकि वे लोग अपने रब की मुलाक़ात होने पर यक़ीन लाएँ। **(155)** ❖

और यह (क़ुरआन मजीद) एक किताब है जिसको हमने भेजा, बड़ी ख़ैर व बरकत वाली, सो इसका इत्तिबा करो और डरो, ताकि तुम पर रहमत हो। **(156)** कभी तुम लोग यूँ कहने लगते कि किताब तो सिर्फ़ हमसे पहले जो दो फ़िर्क़े थे उनपर नाज़िल हुई थी और हम उनके पढ़ने-पढ़ाने से बिलकुल बेख़बर थे। **(157)** या यूँ कहते कि अगर हमपर कोई किताब नाज़िल होती तो हम उनसे भी ज़्यादा राह पर होते। सो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब के पास से एक वाज़ेह किताब और रहनुमाई का ज़रिया और रहमत आ चुकी है, सो उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो हमारी इन आयतों को झूठा बतलाए और इससे रोके? हम अभी उन लोगों को जो कि हमारी आयतों से रोकते हैं उनके इस रोकने के सबब सख़्त सज़ा देंगे। **(158)** ये लोग सिर्फ़ इस बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ या उनके पास आपका रब आए या आपके रब की कोई बड़ी निशानी आए।[5] जिस दिन आपके रब की यह बड़ी निशानी आ पहुँचेगी, किसी ऐसे शख़्स का ईमान उसके काम न आएगा जो पहले से ईमान नहीं रखता, या उसने अपने ईमान में कोई नेक अ़मल न किया हो, आप फ़रमा दीजिए कि तुम मुन्तज़िर रहो हम भी मुन्तज़िर हैं।[6] **(159)** बेशक जिन लोगों ने अपने दीन को

---

1. जैसे उसके काम में लगाना, उसकी हिफ़ाज़त करना और बाज़ औलिया (सरपरस्तों) और जिनके लिए वसीयत की गई है, उनको उसमें यतीम के लिए तिजारत करने की भी इजाज़त है।
2. फिर उनके अहकाम में कोताही क्यों की जाए।
3. जिसके मुक़ाबले में वह बात कह रहे हो।
4. जैसे क़सम या मन्नत. शर्त यह है कि वह शरीअ़त में जायज़ हो।
5. मतलब यह हुआ कि क्या ईमान लाने में क़ियामत के आने या नज़दीक होने का इन्तिज़ार है।
6. यहाँ तक बयान का ज़्यादा हिस्सा मुशिरकीन के बारे में है, आगे एक आ़म उनवान से दूसरे गुमराहों का हक़ से दूर और वईद (सज़ा की धमकी) का हक़दार होना बयान फ़रमाते हैं, जिसमें सब कुफ़्फ़ार, मुशिरकीन, अहले किताब और ख़्वाहिशों के पीछे चलने वाले और बिद्‌अ़त में मुब्तला लोग वईद के दर्जों के एतिबार से दाख़िल हो गए।
7. यानी दीने हक़ को मुकम्मल तौर पर क़बूल न किया, चाहे सबको छोड़ दिया या बाज़ को, और शिर्क, बिद्‌अ़त और कुफ़्र के तरीक़े इख़्तियार कर लिए।

रब्बि-क ला यन्फ़अु नफ़्सन् ईमानुहा लम् तकुन् आम-नत् मिन् क़ब्लु औ क-सबत् फ़ी ईमानिहा ख़ैरन्, क़ुलिन्तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून **(159)** इन्नल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शि-यअ़ल्लस्-त मिन्हुम् फ़ी शैइन्, इन्नमा अम्रुहुम् इलल्लाहि सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफ़्अ़लून **(160)** मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ़-लहू अ़श्रु अम्सालिहा व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़्लमून **(161)** क़ुल् इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम् मुस्तक़ीम, दीनन् क़ि-य-मम् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् व मा का-न मिनल् मुश्रिकीन **(162)** क़ुल् इन्-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन **(163)** ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिर्तु व अ-न अव्वलुल् मुस्लिमीन **(164)** क़ुल् अग़ैरल्लाहि अब्ग़ी रब्बंव्-व हु-व रब्बु कुल्लि शैइन्, व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् इल्ला अ़लैहा व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्विज़्-र उख़्रा सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून **(165)** व हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् ख़ला-इफ़ल्-अर्ज़ि व र-फ़-अ़ बअ़्ज़कुम् फ़ौ-क़ बअ़्ज़िन् द-रजातिल् लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम्, इन्-न रब्ब-क सरीअ़ुल्- अ़िक़ाबि व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्रहीम ● **(166)** ❖

ولو اننا ١٣٦ الانعام ٦

اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ
انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَ
كَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى
اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ
فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا
مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَ
مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَ
مَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَ
بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ
اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ
اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ
الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ
دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ
وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

منزل ٢

जुदा-जुदा कर दिया[7] और गिरोह-गिरोह बन गए, आपका उनसे कोई ताल्लुक़ नहीं, बस उनका मामला अल्लाह तआला के हवाले है, फिर वह उनको उनका किया हुआ जतला देंगे।[1] (160) जो शख़्स नेक काम करेगा तो उसको उसके दस हिस्से (मिलेंगे) और जो शख़्स बुरा काम करेगा सो उसको उसके बराबर ही सज़ा मिलेगी, और उन लोगों पर ज़ुल्म न होगा।[2] (161) आप कह दीजिए कि मुझको मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बतला दिया है, कि वह एक मज़बूत दीन है, जो इब्राहीम का तरीक़ा है, जिसमें ज़रा भी टेढ़पन नहीं, और वह शिर्क करने वालों में से न थे।[3] (162) आप फ़रमा दीजिए कि यक़ीनन मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना यह सब ख़ालिस अल्लाह तआला ही का है जो सारे जहान का मालिक है। (163) उसका कोई शरीक नहीं, और मुझको इसी का हुक्म हुआ है, और मैं सब मानने वालों से पहला हूँ।[4] (164) आप फ़रमा दीजिए कि क्या मैं ख़ुदा तआला के सिवा किसी और को रब बनाने के लिए तलाश करूँ हालाँकि वह हर चीज़ का मालिक है, और जो शख़्स भी कोई अ़मल करता है वह उसी पर रहता है, और कोई दूसरे का वोझ न उठाएगा। फिर तुम सबको अपने रब के पास जाना होगा, फिर वह तुमको जतला देंगे जिस-जिस चीज़ में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (165) और वह ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाया और एक का दूसरे पर रुतबा बढ़ाया ताकि (ज़ाहिरन्) तुमको उन चीज़ों में आज़माए जो तुमको दी हैं,[5] यक़ीनन आपका रब जल्द सज़ा देने वाला है, और बेशक वह बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला, बड़ी मेहरबानी करने वाला है।[6] ● (166) ❖

1. दुर्रे मन्सूर में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इन गिरोहों से यहूद व नसारा मुराद होना, और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरफ़ूअ़न् विद्अ़ती लोगों का होना और तफ़्सीरे ख़ाज़िन में हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से तमाम मुश्रिकीन इस एतिबार से कि बाज़े बुत-परस्त हैं, बाज़े सितारों को पूजते हैं वग़ैरह, मुराद होना नक़ल किया गया है। चूँकि लफ़्ज़ "फ़र्रक़ू" सबको शामिल हो सकता है इसलिए आ़म मुराद लेना ज़्यादा मुनासिब है। अलबत्ता वईद (सज़ा की धमकी और डाँट) के दर्जे अलग-अलग होंगे। यानी काफ़िरों को हमेशा का अ़ज़ाब होगा और विद्अ़तियों को ईमान के मौजूद होने के सबब बुरे और फ़ासिद अ़क़ायद की सज़ा पाने के बाद नजात होगी।

2. कि कोई नेकी लिखी न जाए या कोई बदी ज़्यादा करके लिख ली जाए।

3. आगे ज़िक्र हुए दीन की किसी क़द्र तफ़सील बयान फ़रमा दी।

4. इसमें दूसरों को एक ख़ास अन्दाज़ के साथ दावत है कि जब नबी भी ईमान लाने का मुकल्लफ़ है तो दूसरे क्यों न होंगे।

5. आज़माना यह कि कौन इन नेमतों की क़द्र करके नेमतों के देने वाले की इताअ़त करता है और कौन बेक़द्री करके इताअ़त नहीं करता। पस बाज़े फ़रमाँबरदार हुए और बाज़े नाफ़रमान हुए, और दोनों के साथ मुनासिब मामला किया जाएगा।

6. पस नाफ़रमानों के लिए सज़ा है और फ़रमाँबरदारों के लिए रहमत है, और नाफ़रमानी से फ़रमाँबरदारी की तरफ़ आने वालों के लिए मग़्फ़िरत है। पस जो मुकल्लफ़ हैं उनके लिए यह ज़रूरी हुआ कि दीने हक़ के मुवाफ़िक़ इताअ़त इख़्तियार करें, बातिल (ग़ैर-हक़) पर अ़मल करने और हक़ की मुख़ालफ़त से बाज़ आएँ।

7 सूरतुल्-अअ्राफ़ि 39

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 14635 अक्षर, 3387 शब्द 206 आयतें और 24 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम्-सॉद् **(1)** किताबुन् उन्ज़ि-ल इलै-क फ़ला यकुन् फ़ी सद्रि-क ह-रजुम् मिन्हु लितुन्ज़ि-र बिही व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन **(2)** इत्तबिअ़ू मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ला तत्तबिअ़ू मिन् दूनिही औलिया-अ, क़लीलम् मा तज़क्करून **(3)** व कम् मिन् क़र्यतिन् अह्लक्नाहा फ़जा-अहा बअ्सुना बयातन् औ हुम् क़ा-इलून **(4)** फ़मा का-न दअ्वाहुम् इज़् जा-अहुम् बअ्सुना इल्ला अन् क़ालू इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन **(5)** फ़-लनस्-अलन्नल्लज़ी-न उर्सि-ल इलैहिम् व ल-नस्-अलन्नल् मुर्सलीन **(6)** फ़- ल-नक़ुस्सन्-न अ़लैहिम् बिअ़िल्मिंव्-व मा कुन्ना ग़ा-इबीन **(7)** वल्वज़्नु यौमइज़िे-निल्हक़्क़ु फ़-मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून **(8)** व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उला-इकल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून **(9)** व ल-क़द् मक्कन्नाकुम् फ़िल्अर्ज़ि व जअ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआ़यि-श, क़लीलम् मा तश्कुरून **(10)** ❖

व ल-क़द् ख़लक़्नाकुम् सुम्-म सव्वर्नाकुम् सुम्-म क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म

ولو اننا ٨ ١٣٧ الاعراف ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِىْ صَدْرِكَ حَرَجٌ
مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ قَلِيْلًا مَّا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ
هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَ
لَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا
غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَ
لَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ لَمْ يَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ قَالَ اَنَا خَيْرٌ
مِّنْهُ خَلَقْتَنِىْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ

منزل ٢

7 सूरः आराफ़ 39

सूरः आराफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 206 आयतें और 24 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-मीम-सॉद।[1] **(1)** यह एक किताब है, जो आपके पास इसलिए भेजी गई है कि आप इसके ज़रिये से डराएँ, सो आपके दिल में इससे बिलकुल तंगी न होनी चाहिए,[2] और यह नसीहत है ईमान वालों के लिए। **(2)** तुम लोग इसका इत्तिबा करो, जो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से आई है,[3] और ख़ुदा तआ़ला को छोड़कर दूसरे रफ़ीक़ों की इत्तिबा मत करो, तुम लोग बहुत ही कम नसीहत मानते हो। **(3)** और बहुत-सी बस्तियों को हमने तबाह कर दिया, और उनपर हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त पहुँचा, या ऐसी हालत में कि वे दोपहर के वक़्त आराम में थे। **(4)** तो जिस वक़्त उनपर हमारा अ़ज़ाब आया उस वक़्त उनके मुँह से सिवाय इसके और कोई बात न निकली थी कि वाक़ई हम ज़ालिम थे।[4] **(5)** फिर हम उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे जिनके पास पैग़म्बर भेजे गए थे, और हम पैग़म्बरों से ज़रूर पूछेंगे।[5] **(6)** फिर हम चूँकि पूरी ख़बर रखते हैं, उनके सामने बयान कर देंगे, और हम कुछ बेख़बर न थे। **(7)** और उस दिन वज़न भी किया जाएगा,[6] फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा सो ऐसे लोग कामयाब होंगे। **(8)** और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा सो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया, इस वजह से कि वे हमारी आयतों की हक़-तल्फ़ी करते थे।[7] **(9)** और बेशक हमने तुमको ज़मीन पर रहने के लिए जगह दी और हमने उसमें तुम्हारे लिए ज़िन्दगानी का सामान पैदा किया, तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।[8] **(10)** ❖

और हमने तुमको पैदा किया, फिर हमने ही तुम्हारी सूरत बनाई, फिर हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया सिवाय शैतान के, वह सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। **(11)** (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया, तू जो सज्दा नहीं करता, तुझको इससे कौन-सी बात रुकावट है, जबकि मैं तुझको हुक्म दे चुका। कहने लगा, मैं इससे बेहतर हूँ, आपने मुझको आग से पैदा किया है और

---

1. पूरी सूरः पर नज़र डालने से मालूम होता है कि इसमें ज़्यादा मज़ामीन मआ़द (यानी आख़िरत) और नुबुव्वत से मुताल्लिक़ हैं।
2. क्योंकि किसी के न मानने से आपके डराने में तो (जो कि असली ग़रज़ है) ख़लल नहीं पड़ता, फिर आप क्यों दिल छोटा करें।
3. इत्तिबा यह कि तस्दीक़ भी करो, अ़मल भी करो।
4. यानी उस वक़्त अपने जुर्म का इक़रार किया जबकि इक़रार का वक़्त गुज़र गया।
5. दोनों सवालों से कुफ़्फ़ार को झिड़कना और मलामत होगी।
6. यानी क़ियामत के दिन।
7. उस तराज़ू में ईमान व कुफ़्र का वज़न किया जाएगा और उस तराज़ू में एक पल्ला ख़ाली रहेगा और एक पल्ले में अगर वह मोमिन है तो ईमान और अगर काफ़िर है तो कुफ़्र रखा जाएगा। जब उस तौल से मोमिन और काफ़िर अलग-अलग हो जाएँगे तो फिर ख़ास मोमिनों के लिए एक पल्ले में उनकी नेकियाँ और दूसरे पल्ले में उनकी बुराइयाँ रखकर उन आमाल का वज़न होगा। और जैसा कि दुर्रे मन्सूर में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया गया है कि अगर नेकियाँ ग़ालिब हुईं तो जन्नत और अगर बुराइयाँ ग़ालिब हुईं तो दोज़ख़, और अगर दोनों बराबर हुईं तो आराफ़ उसके लिए तजवीज़ होगी। फिर चाहे सज़ा से पहले चाहे सज़ा के बाद शफ़ाअ़त से मग़्फ़िरत हो जाएगी।
8. मुराद शुक्र से इताअ़त व फ़रमाँबरदारी है।

❖ रु. 1/10/8

फ़-स-जद् इल्ला इब्ली-स, लम् यकुम् मिनस्साजिदीन **(11)** क़ा-ल मा म-न-अ-क अल्ला तस्जु-द इज़् अमर्तु-क, क़ा-ल अ-न ख़ैरुम्-मिन्हु ख़लक़्तनी मिन् नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन् तीन **(12)** क़ा-ल फ़ह्बित् मिन्हा फ़मा यकूनु ल-क अन् त-तकब्ब-र फ़ीहा फ़ख़्रुज् इन्न-क मिनस्साग़िरीन **(13)** क़ा-ल अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून **(14)** क़ा-ल इन्न-क मिनल् मुन्ज़रीन **(15)** क़ा-ल फ़बिमा अग़्वैतनी ल-अक़्अुदन्-न लहुम् सिरा-तकल् मुस्तक़ीम **(16)** सुम्-म लआतियन्नहुम् मिम्-बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अ़न् ऐमानिहिम् व अ़न् शमा-इलिहिम्, व ला तजिदु अक्स-रहुम् शाकिरीन **(17)** क़ालख़्रुज् मिन्हा मज़्ऊमम्-मद्हूरन्, ल-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् लअम्-लअन्-न जहन्न-म मिन्कुम् अज्मअ़ीन **(18)** व या आदमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकल्जन्न-त फ़-कुला मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्रबा हाज़िहिश्-श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्- ज़ालिमीन **(19)** फ़-वस्व-स लहुमश्- शैतानु लियुब्दि-य लहुमा मा वूरि-य अ़न्हुमा मिन् सौआतिहिमा व क़ा-ल मा नहाकुमा रब्बुकुमा अ़न् हाज़िहिश्श-ज-रति इल्ला अन् तकूना म-लकैनि औ तकूना मिनल्ख़ालिदीन **(20)** व क़ा-स-महुमा इन्नी लकुमा लमिनन्नासिहीन **(21)** फ़दल्लाहुमा बिग़ुरूरिन् फ़-लम्मा ज़ाक़श्श-ज-र-त बदत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव्-रक़िल्-जन्नति, व नादाहुमा रब्बुहुमा अलम् अन्हकुमा अ़न् तिल्कुमश्श-ज-रति व अक़ुल्-लकुमा इन्नश्शैता-न लकुमा अ़दुव्वुम् मुबीन **(22)** क़ाला रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ु-सना

مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ
الصّٰغِرِيْنَ ۝ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ اِنَّكَ
مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۝ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ
وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ۗ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝
قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۗ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ
جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا
مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا
وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ
الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝ وَ
قَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا
ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا
مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۗ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا
الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَا
رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

इसको आपने मिट्टी से पैदा किया। **(12)** (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया, तू आसमान से उतर, तुझको कोई हक़ हासिल नहीं कि तू इसमें (यानी आसमान में रहकर) तकब्बुर करे, सो तू निकल, बेशक तू ज़लीलों में शुमार होने लगा। **(13)** वह कहने लगा कि मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दीजिये। **(14)** (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया कि तुझको मोहलत दी गई।[1] **(15)** वह कहने लगा इस सबब से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं क़सम खाता हूँ कि मैं उनके लिए आपकी सीधी राह पर बैठूँगा। **(16)** फिर उनपर हमला करूँगा, उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी, और उनकी दाहिनी तरफ़ से भी और उनकी बाईं तरफ़ से भी,[2] और आप उनमें ज़्यादातर को एहसान मानने वाला न पाइएगा। **(17)** (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया कि यहाँ से ज़लील व ख़्वार होकर निकल, जो शख़्स उनमें से तेरा कहना मानेगा मैं ज़रूर तुम सबसे[3] जहन्नम को भर दूँगा। **(18)** और (हमने हुक्म दिया कि) ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, फिर जिस जगह से चाहो दोनों आदमी खाओ और उस पेड़ के पास मत जाओ, कभी उन लोगों की गिनती में आ जाओ जिनसे नामुनासिब काम हो जाया करता है। **(19)** फिर शैतान ने उन दोनों के दिलों में वस्वसा डाला, ताकि उनका पर्दे का बदन जो एक-दूसरे से छुपा हुआ था दोनों के सामने बेपर्दा कर दे, और कहने लगा कि तुम्हारे रब ने तुम दोनों को इस पेड़ से और किसी सबब से मना नहीं फ़रमाया, मगर सिर्फ़ इस वजह से कि तुम दोनों कहीं फ़रिश्ते हो जाओ, या कहीं हमेशा ज़िन्दा रहने वालों में से हो जाओ। **(20)** और उन दोनों के सामने क़सम खाई कि यक़ीन जानिए मैं आप दोनों का ख़ैरख़्वाह ''यानी तुम दोनों का भला चाहने वाला'' हूँ। **(21)** सो उन दोनों को फ़रेब से नीचे ले आया,[4] पस उन दोनों ने जब पेड़ को चखा तो दोनों के पर्दे का बदन एक-दूसरे के सामने बेपर्दा हो गया, और दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। और उनके रब ने उनको पुकारा, क्या मैं तुम दोनों को इस पेड़ से मना न कर चुका था, और यह न कह चुका था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? **(22)** दोनों कहने लगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपना बड़ा नुक़सान किया, और अगर आप हमारी मग़्फ़िरत न करेंगे और हमपर रहम न करेंगे तो वाक़ई हमारा बड़ा नुक़सान हो जाएगा। **(23)** (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया कि नीचे ऐसी हालत में जाओ कि तुम आपस में बाज़े दूसरे बाज़ों 'यानी एक-दूसरे' के

---

1. इससे मालूम हुआ कि काफ़िर की दुआ़ भी कभी क़बूल हो जाती है, और इससे अल्लाह के नज़दीक उसका महबूब और सम्मानित होना लाज़िम नहीं आता।

2. यानी उनके बहकाने में ख़ूब कोशिश करूँगा, जिससे वे आपकी इबादत न करने पाएँ।

3. यानी तुझसे और उनसे।

4. नीचे ले आया, हालत और राय के एतिबार से भी और जगह के एतिबार से भी, यहाँ तक कि अपनी बुलन्द राय से उसकी घटिया राय की तरफ़ माइल हो गए, जिससे जन्नत से नीचे की तरफ़ उतारे गए।

व इल्लम् तग़्फ़िर् लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल् ख़ासिरीन **(23)** क़ालह्बितू बअ्‌जुकुम् लि-बअ्‌ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्‌अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्-व मताअुन् इला हीन **(24)** क़ा-ल फ़ीहा तह्यौ-न व फ़ीहा तमूतू-न व मिन्हा तुख़्रजून **(25)** ❖

या बनी आद-म क़द् अन्ज़ल्ना अ़लैकुम् लिबासंय्युवारी सौआतिकुम् वरीशन्, व लिबासुत्तक़्वा ज़ालि-क ख़ैरुन्, ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून **(26)** या बनी आद-म ला यफ़्तिनन्नकुमुश्शैतानु कमा अख़्र-ज अ-बवैकुम् मिनल्जन्नति यन्ज़िअु अ़न्हुमा लिबा-सहुमा लियुरि-यहुमा सौआतिहिमा, इन्नहू यराकुम् हु-व व क़बीलुहू मिन्‌हैसु ला तरौनहुम्, इन्ना जअ़ल्नश्शयाती-न औलिया-अ लिल्लज़ी-न ला युअ्‌मिनून **(27)** व इज़ा फ़-अ़लू फ़ाहि-शतन् क़ालू वजद्‌ना अ़लैहा आबा-अना वल्लाहु अ-म-रना बिहा, क़ुल् इन्नल्ला-ह ला यअ्‌मुरु बिल्फ़ह्शा-इ, अ-तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ्‌लमून **(28)** क़ुल् अ-म-र रब्बी बिल्क़िस्ति, व अक़ीमू वुजूहकुम् अ़िन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-वद्‌अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, कमा ब-द-अकुम् तअ़ूदून **(29)** फ़रीक़न् हदा व फ़रीक़न् हक़्-क़ अ़लैहिमुज़्ज़लालतु, इन्नहुमुत्त-ख़ज़ुश्शयाती-न औलिया-अ मिन् दूनिल्लाहि व यह्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून **(30)** या बनी आद-म ख़ुज़ू ज़ीन-तकुम् अ़िन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू, इन्नहू ला युहिब्बुल् मुस्रिफ़ीन **(31)** ❖

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي
الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ
فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ
لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۚ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ
ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ
الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا
لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۗ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ
اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا
فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۗ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾
قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾
فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۗ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا
الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا
وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ

दुश्मन रहोगे।[1] और तुम्हारे वास्ते ज़मीन में रहने की जगह है और फ़ायदा हासिल करना एक वक़्त तक। **(24)** (और) फ़रमाया कि तुमको वहाँ ही ज़िन्दगी बसर करना है और वहाँ ही मरना है, और उसी में से फिर पैदा होना है।[2] **(25)** ❖

ऐ आदम की औलाद! हमने तुम्हारे लिए लिबास पैदा किया जो कि तुम्हारे पर्दे वाले बदन को भी छुपाता है और ज़ीनत का सबब भी है, और तक़्वे का लिबास यह उससे बढ़कर है,[3] यह अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से है ताकि ये लोग याद रखें।[4] **(26)** ऐ आदम की औलाद! शैतान तुमको किसी ख़राबी में न डाल दे, जैसा कि उसने तुम्हारे दादा-दादी को जन्नत से बाहर करा दिया, (ऐसी हालत से) कि उनका लिबास भी उनसे उतरवा दिया, ताकि उनको उनके पर्दे का बदन दिखाई देने लगे। वह और उसका लश्कर तुमको ऐसे तौर पर देखता है कि तुम उनको नहीं देखते हो, हम शैतानों को उन्हीं लोगों का साथी होने देते हैं जो ईमान नहीं लाते। **(27)** और वे लोग जब कोई फ़ुहश ''यानी ग़लत और बेहूदा'' काम करते हैं[5] तो कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाह तआ़ला ने हमको यही बतलाया है। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला फ़ुहश ''यानी बुरी और बेहूदा'' बात की तालीम नहीं देता, क्या ख़ुदा के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसकी तुम सनद नहीं रखते?[6] **(28)** आप कह दीजिए कि मेरे रब ने हुक्म दिया है इन्साफ़ करने का, और यह कि तुम हर सज्दे के वक़्त अपना रुख़ सीधा रखा करो, और उसकी (यानी अल्लाह की) इबादत इस तौर पर करो कि उस इबादत को ख़ालिस अल्लाह ही के वास्ते रखा करो,[7] जिस तरह तुमको अल्लाह तआ़ला ने शुरू में पैदा किया था उसी तरह फिर तुम दोबारा पैदा होगे। **(29)** बाज़ लोगों को तो अल्लाह ने हिदायत की है और बाज़ पर गुमराही साबित हो चुकी है। उन लोगों ने अल्लाह तआ़ला को छोड़कर शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया,[8] और ख़्याल रखते हैं कि वे राह पर हैं। **(30)** ऐ आदम की औलाद! तुम मस्जिद की हर हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो, और (ख़ूब) खाओ और पियो और हद से मत निकलो, बेशक अल्लाह तआ़ला हद से निकल जाने वालों को पसन्द नहीं करते। **(31)** ❖

1. यानी जन्नत से नीचे ज़मीन पर जाओ।
2. मतलब ''तुमको वहाँ ही ज़िन्दगानी बसर करनी है'' का यह है कि आ़म आ़दत के मुताबिक़ तुम्हारा असली ठिकाना यह होगा, और अगर किसी सबब के पेश आने की वजह से इस आ़दत के ख़िलाफ़ हो जाए तो उसकी नफ़ी (इनकार) नहीं है। पस इससे हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के आसमान पर ज़िन्दा जाने और रहने के इनकार पर दलील पकड़ना ग़लत और बातिल है।
3. क्योंकि इस ज़ाहिरी लिबास का शरई तौर पर पसन्दीदा होना इसी तक़्वे के वाजिब होने की एक क़िस्म है। पस असली मक़सूद जो हर हालत में ज़रूरी है वह यह लिबास है।
4. ऊपर के क़िस्से में शैतान की गुमराही और आदम की औलाद से उसकी दुश्मनी ज़िक्र की गई थी, आगे उसके गुमराह करने और उससे बचने व एहतियात की ताकीद का बयान है।
5. चाहे अ़क़ीदों में से जैसे शिर्क कि बड़ी बेहयाई है, चाहे आमाल में से जैसे तवाफ़ के वक़्त नंगे हो जाना।
6. पैरवी उस मसले में जायज़ है जिसमें पैरवी करने के लिए इजाज़त और शरई सनद हो, जो उसकी शर्तों के जमा होने पर मौक़ूफ़ है। और यहाँ ख़ुद ''क़तई नस्स'' की मुख़ालफ़त से शर्तें ग़ायब हैं, पस ऐसी पैरवी से एहतिजाज (यानी मुख़ालफ़त में आवाज़ उठाना) ख़ुद बातिल हो गया।
7. इन मामूरात (यानी जिन चीज़ों का हुक्म किया गया है) में शरीअ़त के सब उसूल आ गए। ''इन्साफ़ करने'' में बन्दों के हुक़ूक़, ''रुख़ सीधा करने'' में आमाल व अच्छे काम, ''ख़ालिस अल्लाह ही के लिए रखने'' में अक़ायद। मतलब यह कि अल्लाह के तो ये अहकाम हैं, इनको मानो, क्योंकि सिर्फ़ तुमको हुक्म देकर नहीं छोड़ा जाएगा बल्कि एक वक़्त हिसाब-किताब के लिए भी आने वाला है, यानी क़ियामत।
8. यानी अल्लाह तआ़ला की इताअ़त न की और शैतानों की इताअ़त की।

क़ुल् मन् हर्र-म ज़ी-नतल्लाहिल्लती अख़्र-ज लिअ़िबादिही वत्तय्यिबाति मिनर्रिज़्कि, क़ुल् हि-य लिल्लज़ी-न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या ख़ालि-सतंय्यौमल्-क़ियामति, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ़्लमून **(32)** क़ुल् इन्नमा हर्र-म रब्बियल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न वल्इस्-म वल्बग़्-य बिग़ैरिल्हक़्क़ि व अन् तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून **(33)** व लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अ़तंव्-व ला यस्तक़्दिमून **(34)** या बनी आद-म इम्मा यअ्तियन्नकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती फ़-मनित्तक़ा व अस्ल-ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(35)** वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(36)** फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, उलाइ-क यनालुहुम् नसीबुहुम् मिनल्-किताबि, हत्ता इज़ा जाअत्हुम् रुसुलुना य-तवफ़्फ़ौनहुम् क़ालू ऐ-न मा कुन्तुम् तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन **(37)** क़ालद्ख़ुलू फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिकुम् मिनल्-जिन्नि वल्इन्सि फ़िन्नारि, कुल्लमा द-ख़लत् उम्मतुल्ल-अ़नत् उख़्तहा, हत्ता इज़द्दा-रकू फ़ीहा

الَّتِىْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا
ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا
لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ
سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ
اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اُولٰۗىِٕكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ
الْكِتٰبِ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي
اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ
اُخْتَهَا حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا

आप फ़रमाइए कि अल्लाह तआला के पैदा किए हुए कपड़ों को, जिनको उसने अपने बन्दों के वास्ते बनाया है और खाने-पीने की हलाल चीज़ों को किस शख़्स ने हराम किया है?[1] आप यह कह दीजिए कि ये चीज़ें इस तौर पर कि क़ियामत के दिन भी ख़ालिस रहें, दुनियावी ज़िन्दगानी में ख़ालिस ईमान वालों ही के लिए हैं, हम इसी तरह समझदारों के वास्ते तमाम आयतों को साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं। **(32)** आप फ़रमाइए कि अलबत्ता मेरे रब ने हराम किया है तमाम फ़ुहश "यानी गन्दी और बेहूदा" बातों को, उनमें जो खुले तौर पर हों वे भी[2] और उनमें जो छुपे तौर पर हों वे भी,[3] और वह हर गुनाह की बात को और नाहक़ किसी पर ज़ुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक ठहराओ जिसकी अल्लाह तआला ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमाई। और इस बात को कि तुम लोग अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो जिसकी तुम सनद न रखो।[4] **(33)** और हर गिरोह के लिए एक मुक़र्ररा मीयाद है, सो जिस वक़्त उनकी मुक़र्ररा मीयाद आ जाएगी उस वक़्त एक घड़ी न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे।[5] **(34)** ऐ आदम की औलाद![6] अगर तुम्हारे पास पैग़म्बर आएँ जो तुम्ही में से होंगे, जो मेरे अहकाम तुमपर बयान करेंगे, सो जो शख़्स परहेज़ रखे और दुरुस्ती करे,[7] सो उन लोगों पर न कुछ अन्देशा है और न वे ग़मगीन होंगे। **(35)** और जो लोग हमारे इन अहकाम को झूठा बतलाएँगे और इनसे तकब्बुर करेंगे, वे लोग दोज़ख़ वाले होंगे, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। **(36)** सो उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधे[8] या उसकी आयतों को झूठा बतलाए, उन लोगों के नसीब का जो कुछ (लिखा) है वह उनको मिल जाएगा, यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी जान क़ब्ज़ करने आएँगे तो कहेंगे कि वे कहाँ गए जिनकी तुम ख़ुदा को छोड़कर इबादत किया करते थे? वे कहेंगे कि हमसे सब ग़ायब हो गए,[9] और अपने काफ़िर होने का इक़रार करने लगेंगे।[10] **(37)** (अल्लाह) फ़रमाएगा कि जो फ़िर्क़े तुमसे पहले गुज़र चुके हैं जिन्नात में से भी और आदमियों में से भी, उनके साथ तुम भी दोज़ख़ में जाओ। जिस वक़्त भी (काफ़िरों की) कोई जमाअत (दोज़ख़ में) दाख़िल होगी, अपनी जैसी दूसरी जमाअत को लानत करेगी,[11] यहाँ तक कि जब उसमें सब जमा हो जाएँगे तो बाद वाले लोग पहले लोगों के बारे में कहेंगे

---

1. यानी किसी चीज़ को हराम करने के लिए तो उसको हराम करने वाले की ज़रूरत है, वह हराम क़रार देने वाला अल्लाह तआला के सिवा कौन है।

2. जैसे नंगे तवाफ़ करना।

3. जैसे बद्‌कारी।

4. यानी जो हक़ीक़त में हलाल हैं उनको तो तुमने हराम समझा, और जो हक़ीक़त में हराम हैं उनको हलाल समझा, अजीब जहालत में गिरफ़्तार हो। और जिस तरह आयत "क़ुल् अ-म-र रब्बी बिल्क़िस्ति (आख़िर तक)" में तमाम अहकाम दाख़िल हो गए थे उसी तरह यहाँ आयत "इन्नमा हर्र-म (आख़िर तक)" में तमाम वे चीज़ें दाख़िल हैं जिनसे मना किया गया है। "बग्-य" में तो सब मामलात आ गए, और "अन् तुश्रिकू व अन तक़ूलू" में तमाम फ़ासिद और बुरे अक़ायद आ गए, और "इस्-म" में तमाम गुनाह और नाफ़रमानियाँ आ गईं, जिनमें से फ़ुहश गुनाहों को ख़ास तौर पर एहतिमाम के साथ ज़िक्र किया गया।

5. उस मीयाद से पहले सज़ा न होना इसकी दलील नहीं कि हराम कामों पर सज़ा न होगी।

6. ऊपर अक़ीदों व आमाल में शैतान की इत्तिबा व मुवाफ़क़त से मुमानअत फ़रमाई गई थी, अब यह बतलाते हैं कि इस मज़मून का ख़िताब तुमको नया नहीं, बल्कि "आ़लमे अरवाह" (यानी रूहों की दुनिया) में यह अ़हद ले लिया गया था, अब उसी को दोहराया जा रहा है। और इसमें रिसालत और आख़िरत के मसले का सुबूत भी हो गया, जो कि इस सूरत के बड़े मक़ासिद में से है।

7. मुराद यह कि मुकम्मल इत्तिबा करे। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 280 पर)**

जमीअ़न् क़ालत् उख़्राहुम् लिऊलाहुम् रब्बना हा-उला-इ अज़ल्लूना फ़आतिहिम् अ़ज़ाबन् ज़िअ़्फ़म्-मिनन्नारि, क़ा-ल लिकुल्लिन् ज़िअ़्फुंव्-व लाकिल्ला तअ़्लमून **(38)** व क़ालत् ऊलाहुम् लिउख़्राहुम् फ़मा का-न लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्सिबून **(39)** ❖

इन्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा ला तुफ़त्तहु लहुम् अब्वाबुस्समा-इ व ला यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त हत्ता यलिजल्-ज-मलु फ़ी सम्मिल्-ख़ियाति, व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुज्रिमीन **(40)** लहुम् मिन् जहन्न-म मिहादुंव्-व मिन् फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन्, व कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन **(41)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नाति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(42)** व नज़अ़्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु व क़ालुल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा, व मा कुन्ना लिनह्तदि-य लौ ला अन् हदानल्लाहु ल-क़द् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि, व नूदू अन् तिल्कुमुल्-जन्नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून ▲ **(43)** व नादा अस्हाबुल्-जन्नति अस्हाबन्नारि अन् क़द् वजद्ना मा व-अ़-दना रब्बुना हक़्क़न् फ़-हल् वजत्तुम् मा व-अ़-द रब्बुकुम् हक़्क़न्, क़ालू न-अ़म् फ़-अ़ज़्ज़-न मुअज़्ज़िनुम् बैनहुम् अल्लअ़्-नतुल्लाहि अ़लज़्ज़ालिमीन **(44)** अल्लज़ी-न

هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ
السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ
وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ
فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ
غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
هَدٰىنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَقَدْ جَآءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ
حَقًّا قَالُوْا نَعَمْ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا

कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था, सो इनको दोज़ख़ का अ़ज़ाब (हमसे) दोगुना दीजिए। (अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएँगे कि सब ही का दोगुना है, लेकिन (अभी) तुमको ख़बर नहीं। **(38)** और पहले लोग बाद वाले लोगों से कहेंगे कि फिर तुमको हमपर कोई बरतरी नहीं, सो तुम भी अपने किरदार के मुक़ाबले में अ़ज़ाब (का मज़ा) चखते रहो। **(39)** ❖

जो लोग हमारी आयतों को झूठा बतलाते हैं और उन (के मानने) से तकब्बुर करते हैं, उनके लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएँगे, और वे लोग कभी जन्नत में न जाएँगे, जब तक कि ऊँट सूई के नाके के अन्दर से (न) चला जाए,[1] और हम मुज्रिम लोगों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। **(40)** उनके लिए दोज़ख़ (की आग) का बिछौना होगा और उनके ऊपर (उसी का) ओढ़ना होगा, और हम ऐसे ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।[2] **(41)** और जो लोग ईमान लाए[3] और उन्होंने नेक काम किए, हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा कोई काम नहीं बतलाते, ऐसे लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। **(42)** और जो कुछ उनके दिलों में गुबार था हम उसको दूर कर देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे लोग कहेंगे कि अल्लाह का (लाख-लाख) एहसान है जिसने हमको इस मक़ाम तक पहुँचाया, और हमारी कभी रसाई न होती अगर अल्लाह तआ़ला हमको न पहुँचाते,[4] वाक़ई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची बातें लेकर आए थे। और उनसे पुकारकर कहा जाएगा कि तुमको यह जन्नत दी गई है[5] तुम्हारे आमाल के बदले।[6] ▲ **(43)** और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि हमसे जो हमारे रब ने वायदा फ़रमाया था हमने तो उसको हक़ीक़त के मुताबिक़ पाया,[7] सो तुमसे जो तुम्हारे रब ने वायदा किया था तुमने भी उसको हक़ीक़त के मुताबिक़ पाया?[8] वे कहेंगे हाँ, फिर एक पुकारने वाला उन (दोनों) के दरमियान में पुकारेगा कि अल्लाह की मार हो उन ज़ालिमों पर **(44)** जो अल्लाह की राह से मुँह फेरा करते थे, और उसमें कजी ''यानी टेढ़ और कमी'' तलाश करते रहते थे,

(पृष्ठ 278 का शेष) **8.** यानी जो बात ख़ुदा की कही हुई हो उसको बेकही बतला दे।

9. यानी वाक़ई कोई काम न आया।

10. लेकिन उस वक़्त का इक़रार बिलकुल बेकार होगा।

11. यानी आपस में हमदर्दी न होगी। हक़ीक़त के सामने आ जाने की वजह से हर शख़्स दूसरे को बुरी नज़र से देखेगा और बुरा कहेगा।

1. और यह मुहाल है। पस जो चीज़ मुहाल (नामुम्किन) के साथ मश्रूत (जुड़ी हुई) हो वह भी हमेशा के लिए मन्फ़ी (न होने वाली) होगी।

2. यानी हमको कोई दुश्मनी न थी, जैसा किया वैसा भुगता।

3. ऊपर झुठलाने वालों की सज़ा की तफ़सील थी। अब मोमिनों की जज़ा और बदले की तफ़सील है।

4. इसमें यह भी आ गया कि यहाँ तक पहुँचने का जो तरीक़ा था, ईमान व आमाल, वह हमको बतलाया और उसपर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।

5. यह आवाज़ देने वाला एक फ़रिश्ता होगा, जैसा कि दुर्रे मन्सूर में इब्ने अबी हातिम की रिवायत से अबू मुआ़ज़ बसरी से मरफ़ूअ़न् नक़ल किया गया है।

6. ''तुम्हारे आमाल के बदले'' से ज़ाहिर में आमाल का जन्नत में दाख़िल होने का सबब होना मालूम होता है, और हदीस में आया है कि आमाल के सबब कोई जन्नत में न जाएगा बल्कि रहमते इलाही के सबब जाएँगे। असल यह है कि आयत में ज़ाहिरी सबब मुराद है और हदीस में हक़ीक़ी सबब मुराद है। पस ज़ाहिरी के होने और हक़ीक़ी के न होने में कोई टकराव नहीं।

7. कि ईमान और नेक आमाल के इख़्तियार करने से जन्नत देंगे।

8. यानी अब तो अल्लाह तआ़ला व रसूल के सच्चा होने और अपनी गुमराही की हक़ीक़त मालूम हुई।

यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अ़ि-वजन् व हुम् बिल्‌आख़ि-रति काफ़िरून ✣ **(45)** व बैनहुमा हिजाबुन् व अ़लल्-अअ्राफ़ि रिजालुंय्यअ्रिफ़ू-न कुल्लम्-बिसीमाहुम् व नादौ अस्हाबल्-जन्नति अन् सलामुन् अ़लैकुम्, लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मअ़ू-न **(46)** व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ा-अ अस्हाबिन्नारि क़ालू रब्बना ला तज्अ़ल्ना मअ़ल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन **(47)** ❖

व नादा अस्हाबुल्-अअ्राफ़ि रिजालंय्- यअ्रिफ़ूनहुम् बिसीमाहुम् क़ालू मा अग़्ना अ़न्कुम् जम्अ़ुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून **(48)** अहा-उला-इल्लज़ी-न अक़्सम्तुम् ला यनालुहुमुल्लाहु बिरह्मतिन्, उद्ख़ुलुल्- जन्न-त ला ख़ौफ़ुन् अ़लैकुम् व ला अन्तुम् तह्ज़नून **(49)** व नादा अस्हाबुन्नारि अस्हाबल्-जन्नति अन् अफ़ीज़ू अ़लैना मिनल्मा-इ औ मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु, क़ालू इन्नल्ला-ह हर्र-महुमा अ़लल्- काफ़िरीन **(50)** अल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लह्वंव्-व लअ़िबंव्-व ग़र्रत्हुमुल्-हयातुद्दुन्या फ़ल्यौ-म नन्साहुम् कमा नसू लिक़ा-अ यौमिहिम् हाज़ा व मा कानू बिआयातिना यज्हदून **(51)** व ल-क़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अ़ला अ़िल्मिन् हुदंव्-व रह्मतल्- लिक़ौमिंय्- युअ्मिनून **(52)** हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला तअ्वी-लहू, यौ-म यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुल्लज़ी-न नसूहु मिन् क़ब्लु क़द् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि फ़हल्-लना मिन् शु-फ़अ़ा-अ फ़यश्फ़अ़ू लना औ नुरद्दु

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۝ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ
رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ
سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ۝ وَاِذَا صُرِفَتْ
اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ
قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ اَهٰۤؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ
عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ
الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْۤا
اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا
وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ
يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ
بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ
نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ
شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ

और वे लोग आख़िरत का इनकार करने वाले भी थे। **(45)** और उन दोनों के दरमियान एक आड़ होगी,[1] और आराफ़ के ऊपर बहुत-से आदमी होंगे, वे लोग हर एक को उनके निशानों से पहचानेंगे और जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे, अस्सलामु अ़लैकुम। अभी ये (आराफ़ वाले) उसमें (यानी जन्नत में) दाख़िल नहीं हुए होंगे और उसके उम्मीदवार होंगे। **(46)** और जब उनकी निगाहें दोज़ख़ वालों की तरफ़ जा पड़ेंगी तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमको उन ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कीजिए। **(47)** ❖

और आराफ़ "जन्नत और दोज़ख़ के बीच एक जगह" वाले बहुत-से आदमियों को जिनको कि उनके निशानों और अन्दाज़ों से पहचानेंगे, पुकारेंगे। कहेंगे कि तुम्हारी जमाअ़त और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। **(48)** क्या ये वही हैं जिनके बारे में तुम क़स्में खा-खाकर कहा करते थे कि अल्लाह तआ़ला उनपर रहमत न करेगा? (उनको यूँ हुक्म हो गया कि) जाओ जन्नत में, तुमपर न कुछ अन्देशा है और न तुम ग़मज़दा होंगे। **(49)** और दोज़ख़ वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि हमारे ऊपर थोड़ा पानी ही डाल दो, या और ही कुछ दे दो, जो अल्लाह तआ़ला ने तुमको दे रखा है। (जन्नत वाले) कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला ने दोनों चीज़ों की काफ़िरों के लिए बन्दिश कर रखी है। **(50)** जिन्होंने (दुनिया में) अपने दीन को लह्व-व-लअ़िब "यानी खेल-तमाशे की चीज़" बना रखा था, और जिनको दुनियावी ज़िन्दगानी ने धोखे में डाल रखा था, सो हम भी आजके दिन उनका नाम न लेंगे, जैसा कि उन्होंने इस दिन का नाम तक न लिया था, और जैसा कि ये हमारी आयतों का इनकार किया करते थे।[2] **(51)** और हमने उन लोगों के पास एक ऐसी किताब[3] पहुँचा दी है जिसको हमने अपने कामिल इल्म से बहुत ही वाज़ेह करके बयान कर दिया है, (और वह) हिदायत का ज़रिया और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। **(52)** उन लोगों को और किसी बात का इन्तिज़ार नहीं सिर्फ़ उसके आख़िरी नतीजे का इन्तिज़ार है,[4] जिस दिन उसका आख़िरी नतीजा पेश आएगा उस दिन जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे यूँ कहने लगेंगे कि वाक़ई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची-सच्ची बातें लाए थे, सो अब क्या हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला है कि वह हमारी सिफ़ारिश कर दे, या क्या हम फिर वापस भेजे जा सकते हैं ताकि हम लोग उन आमाल के उलट जिनको हम किया करते थे दूसरे आमाल करें? बेशक उन लोगों ने अपने को घाटे में डाल दिया, और ये जो-जो बातें बनाते थे सब गुम हो गईं।[5] **(53)** ❖

1. इसकी ख़ासा यह होगा कि जन्नत का असर दोज़ख़ तक और दोज़ख़ का असर जन्नत तक न जाने देगी।
2. ऊपर जज़ा और सज़ा की तफ़सील बयान की गई है। आगे यह फ़रमाते हैं कि इस खुले बयान का और फिर क़ुरआन के दूसरे मज़ामीन का तक़ाज़ा यह है कि कुफ़्र और मुख़ालफ़त से बाज़ आ जायें। चुनाँचे ईमान वाले इस सआ़दत से मुशर्रफ़ होते भी हैं लेकिन कुफ़्फ़ार और मुख़ालिफ़ीन की सख़्तदिली इस दर्जा बढ़ी हुई है कि वे सज़ा के ज़ाहिर होने से पहले न मानेंगे, लेकिन उस वक़्त मानना काम न आएगा।
3. यानी क़ुरआन।
4. यानी सज़ा का वायदा।
5. ऊपर आख़िरत की तफ़सील थी। चूँकि मुश्रिकीन दोबारा ज़िन्दा होने को दूर की और न होने वाली बात समझते थे, इसलिए आगे अपनी क़ुदरत और कामिल तसर्रुफ़ का बयान फ़रमाते हैं।

फ़नअ्-म-ल ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्-मलु, क़द् ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (53) ❖

इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, युग़्शिल्लैलन्नहा-र यत्लुबुहू हसीसंव्-व वश्शम्-स वल्क़-म-र वन्नुजू-म मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिही, अला लहुल्-ख़ल्क़ु वल्अम्रु, तबा-रकल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन (54) उद्अू रब्बकुम् त-ज़र्रुअ़ंव्-व ख़ुफ़्य-तन्, इन्नहू ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन (55) व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा वद्अूहु ख़ौफ़ंव्-व त-मअन्, इन्-न रह्मतल्लाहि क़रीबुम् मिनल् मुह्सिनीन (56) व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया-ह बुश्रम् बै-न यदै रह्मतिही, हत्ता इज़ा अक़ल्लत् सहाबन् सिक़ालन् सुक़्नाहु लि-ब-लदिम् मय्यितिन् फ़-अन्ज़ल्ना बिहिल्-मा-अ फ़अख़रज्ना बिही मिन् कुल्लिस्स-मराति, कज़ालि-क नुख़्रिजुल्मौता लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (57) वल्ब-लदुत्तय्यिबु यख़रुजु नबातुहू बि-इज़्नि रब्बिही वल्लज़ी ख़बु-स ला यख़्रुजु इल्ला नकिदन्, कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यश्कुरून (58) ❖

ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़क़ा-ल या-क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (59) क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (60) क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी ज़लालतुंव्-व

ولو اننا ۸ ١٤٣ الاعراف ٧

قد خسروا انفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون ﴿٥٣﴾ ان
ربكم الله الذي خلق السموت والارض في ستة ايام ثم
استوى على العرش يغشي اليل النهار يطلبه حثيثا
والشمس والقمر والنجوم مسخرت بامره الا له الخلق و
الامر تبرك الله رب العلمين ﴿٥٤﴾ ادعوا ربكم تضرعا و
خفية انه لا يحب المعتدين ﴿٥٥﴾ ولا تفسدوا في الارض
بعد اصلاحها وادعوه خوفا وطمعا ان رحمت الله
قريب من المحسنين ﴿٥٦﴾ وهو الذي يرسل الريح بشرا
بين يدي رحمته حتى اذا اقلت سحابا ثقالا سقنه
لبلد ميت فانزلنا به الماء فاخرجنا به من كل الثمرت
كذلك نخرج الموتى لعلكم تذكرون ﴿٥٧﴾ والبلد الطيب يخرج
نباته باذن ربه والذي خبث لا يخرج الا نكدا كذلك
نصرف الايت لقوم يشكرون ﴿٥٨﴾ لقد ارسلنا نوحا الى قومه
فقال يقوم اعبدوا الله ما لكم من اله غيره اني اخاف
عليكم عذاب يوم عظيم ﴿٥٩﴾ قال الملا من قومه انا لنرىك
في ضلل مبين ﴿٦٠﴾ قال يقوم ليس بي ضللة ولكني رسول

منزل ٢

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छह दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर क़ायम हुआ,[1] छुपा देता है रात से दिन को,[2] ऐसे तौर पर कि वह रात उस दिन को जल्दी से आ लेती है,[3] और सूरज और चाँद और दूसरे सितारों को पैदा किया, ऐसे तौर पर कि सब उसके हुक्म के ताबे हैं, याद रखो अल्लाह ही के लिए ख़ास है ख़ालिक़ "यानी पैदा करने वाला" होना और हाकिम होना, बड़ी ख़ूबियों से भरे हुए हैं अल्लाह तआला जो तमाम जहान के पालने वाले हैं। **(54)** तुम लोग अपने परवर्दिगार से दुआ किया करो आजिज़ी ज़ाहिर करके भी और चुपके-चुपके भी, (अलबत्ता यह बात) वाक़ई (है कि) अल्लाह तआला उन लोगों को ना-पसन्द करते हैं जो हद से निकल जाएँ।[4] **(55)** और दुनिया में बाद इसके कि इसकी दुरुस्ती कर दी गई है, फ़साद मत फैलाओ, और उसकी (यानी अल्लाह की) इबादत किया करो डरते और उम्मीदवार रहते हुए,[5] बेशक अल्लाह की रहमत नज़्दीक है नेक काम करने वालों से। **(56)** और वह (अल्लाह) ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वे ख़ुश कर देती हैं, यहाँ तक कि जब वे हवाएँ भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उस बादल को किसी सूखी ज़मीन की तरफ़ हाँक ले जाते हैं, फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं, फिर उस पानी से हर क़िस्म के फल निकालते हैं, यूँ ही हम मुर्दों को निकाल खड़ा कर देंगे,[6] ताकि तुम समझो। **(57)** और जो सुथरी सरज़मीन होती है उसकी पैदावार तो ख़ुदा के हुक्म से ख़ूब निकलती है, और जो ख़राब है उसकी पैदावार (अगर निकली भी) तो बहुत कम निकलती है। इसी तरह हम (हमेशा) दलीलों को तरह-तरह से बयान करते रहते हैं, उन लोगों के लिए जो क़द्र करते हैं।[7] **(58)** ❖

हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा, सो उन्होंने फ़रमायाः ऐ मेरी क़ौम! तुम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद होने के लायक़ नहीं, मुझको तुम्हारे लिए एक बड़े (सख़्त) दिन के अज़ाब का अन्देशा है। **(59)** उनकी क़ौम के आबरूदार "यानी समाज के इज़्ज़तदार" लोगों ने कहा कि हम तुमको खुली ग़लती में (मुब्तला) देखते हैं। **(60)** उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! मुझमें तो ज़रा भी ग़लती नहीं लेकिन मैं परवर्दिगारे-आलम का रसूल हूँ। **(61)** तुमको अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही करता हूँ और मैं ख़ुदा की तरफ़ से उन चीज़ों की ख़बर रखता हूँ जिनकी तुमको

1. यानी ज़मीन व आसमान में अहकाम जारी करने लगा।
2. यानी रात के अन्धकार से दिन की रोशनी छुप जाती और ख़त्म हो जाती है।
3. यानी दिन आनन-फ़ानन गुज़रता मालूम होता है, यहाँ तक कि अचानक रात आ जाती है।
4. जैसे वे चीज़ें माँगने लगें जो अक़्ली या शरई तौर पर मुहाल हों, या ऐसी चीज़ों का मुतालबा करने लगें जो आदतन् न पाई जाती हों, या गुनाह की या बेकार चीज़ें माँगने लगें, जैसे ख़ुदाई या नुबुव्वत या फ़रिश्तों पर हुकूमत या बेनिकाह किए औरतों से फ़ायदा हासिल करना, या जन्नत के दाहिनी तरफ़ का सफ़ेद महल और इसी तरह की चीज़ें माँगने लगें, यह सब अदब के ख़िलाफ़ है। हाँ जन्नत और फ़िरदौस की दुआ मतलूब है, इसमें ये फ़ुज़ूल क़ैदें ममनूअ (वर्जित) हैं।
5. यानी इबादत करके न तो नाज़ हो और न मायूसी हो।
6. यानी क़ियामत के दिन।
7. इन आयतों का ख़ुलासा यह है कि जब हक़ तआला के ये ज़ाती व सिफ़ाती कमालात साबित हुए तो इबादत और अपनी हाजत तलब करने में उनके साथ किसी को शरीक मत करो, और उनकी क़ुदरत को सामने रखकर मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने का इनकार मत करो।

लाकिन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्-आलमीन **(61)** उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम् व अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्लमून **(62)** अ-व अजिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम् व लि-तत्तक़ू व लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(63)** फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व अग़्रक़्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, इन्नहुम् कानू क़ौमन् अ़मीन **(64)** ❖

व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन्, क़ा-ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तक़ून **(65)** क़ालल्-म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी सफ़ाहतिंव्-व इन्ना ल-नज़ुन्नु-क मिनल्-काज़िबीन **(66)** क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी सफ़ाहतुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्- आलमीन **(67)** उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अ-न लकुम् नासिहुन् अमीन **(68)** अ-व अ़जिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम्, वज़्कुरू इज़् ज-अ-लकुम् खु-लफ़ा-अ मिम्-बअ़्दि क़ौमि नूहिंव्-व ज़ादकुम् फ़िल्ख़ल्क़ि बस्त-तन् फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(69)** क़ालू अजिअ्तना लिनअ़्बुदल्ला-ह वह्दहू व न-ज़-र मा का-न यअ़्बुदु आबाउना फ़अ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन **(70)** क़ा-ल क़द् व-क़-अ़ अ़लैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुंव्-व ग़-ज़बुन्,

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَ
اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ
هُوْدًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ
فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ
بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾ اُبَلِّغُكُمْ
رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ
ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ۭ وَاذْكُرُوْٓا
اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاۗءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ
بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۗءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا
اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُنَا ۚ
فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ
عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَاۗءٍ

ख़बर नहीं। **(62)** क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक ऐसे शख़्स के ज़रिये जो तुम्हारी ही जिन्स का है कोई नसीहत की बात आ गई, ताकि वह शख़्स तुमको डराए और ताकि तुम डर जाओ, और ताकि तुमपर रहम किया जाए? **(63)** सो वे लोग उनको झुठलाते ही रहे तो हमने उनको (यानी नूह को) और जो लोग उनके साथ कश्ती में थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हमने डुबो दिया, बेशक वे लोग अन्धे हो रहे थे। **(64)** ❖

और हमने आ़द क़ौम की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा,[1] उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, सो क्या तुम नहीं डरते? **(65)** उनकी क़ौम में जो आबरूदार काफ़िर थे उन्होंने कहा कि हम तुमको कम-अ़क़्ली में देखते हैं, और हम बेशक तुमको झूठे लोगों में से समझते हैं।[2] **(66)** उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! मुझमें ज़रा भी कम-अ़क़्ली नहीं, लेकिन मैं परवर्दिगारे-आ़लम का भेजा हुआ पैग़म्बर हूँ। **(67)** तुमको अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैर-ख़्वाह हूँ। **(68)** और क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक शख़्स की मारिफ़त जो तुम्हारी जिन्स का (आदमी) है कोई नसीहत की बात आ गई, ताकि वह शख़्स तुमको डराए? और तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआ़ला ने तुमको नूह की क़ौम के बाद आबाद किया और डील-डोल में तुमको फैलाव (भी) ज़्यादा दिया। सो ख़ुदा तआ़ला की (इन) नेमतों को याद करो[3] ताकि तुमको कामयाबी हो। **(69)** वे कहने लगे कि क्या आप हमारे पास इस वास्ते आए हैं कि हम सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत किया करें और जिनको हमारे बाप-दादा पूजते थे हम उनको छोड़ दें? और हमको जिस अ़ज़ाब की धमकी देते हो उसको हमारे पास मँगवा दो अगर तुम सच्चे हो। **(70)** उन्होंने फ़रमाया कि बस अब तुमपर ख़ुदा की तरफ़ से अ़ज़ाब और ग़ज़ब आया ही चाहता है, क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने (आप ही) ठहरा लिया है। उसकी (यानी उनके माबूद होने की) ख़ुदा तआ़ला ने कोई (नक़ली या अ़क़्ली) दलील नहीं भेजी, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ। **(71)** ग़रज़ हमने उनको और उनके साथियों को अपनी रहमत से बचा लिया,

1. मश्हूर अहले नसब के नज़दीक यही है कि हूद अ़लैहिस्सलाम आ़द क़ौम के नसबी भाई और ख़ुद क़ौमे आ़द से हैं। और कुछ लोगों का ख़्याल है कि वे दूसरी क़ौम के हैं, और "उनके भाई" के मायने "उनके साथी" लेते हैं, अल्लाह ही को ख़ूब मालूम है। और आ़द असल में एक शख़्स का नाम है, फिर उसकी औलाद को भी आ़द कहने लगे, और ये लोग बड़े लम्बे-तड़न्गे और मज़बूत जिस्म के मालिक होते थे। "ज़ा-दकुम् फ़िल् ख़ल्क़ि बस्त-तन्" के यही मायने हैं।

2. यानी (अल्लाह की पनाह) न तौहीद सही मसला है और न अ़ज़ाब का आना सही है।

3. और याद करके एहसान मानो और इताअ़त करो।

अतुजादिलू-ननी फ़ी अस्माइन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा नज़्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन **(71)** फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व क़तअ़्ना दाबिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व मा कानू मुअ्मिनीन **(72)** ❖

व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् ✣ क़ा-ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, क़द् जाअत्कुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम्, हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आ-यतन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्खु-ज़कुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(73)** वज़्कुरू इज़् ज-अ़-लकुम् ख़ु-लफ़ा-अ मिम्-बअ़्दि आ़दिंव्-व बव्व-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि तत्तख़िज़ू-न मिन् सुहूलिहा क़ुसूरंव्-व तन्हितूनल् जिबा-ल बुयूतन् फ़ज़्कुरू आलाअल्लाहि व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन **(74)** क़ालल्-म-लउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लिल्लज़ीनस्-तुज़्अिफ़ू लिमन् आम-न

ولو اننا ٨ ١٤٥ الاعراف ٧

سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ
فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٧١﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ﴿٧٢﴾ وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ
مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ هَٰذِهِ
نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا
بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ
مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُولِهَا
قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ
قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ
أَنَّ صَالِحًا مُرْسَلٌ مِنْ رَبِّهِ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٧٦﴾
فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ
فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ

منزل ٢

मिन्हुम् अ-तअ़्लमू-न अन्-न सालिहम् मुर्सलुम्-मिर्रब्बिही, क़ालू इन्ना बिमा उर्सि-ल बिही मुअ्मिनून **(75)** क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना बिल्लज़ी आमन्तुम् बिही काफ़िरून **(76)** फ़-अ़-क़रुन्नाक़-त व अ़तौ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् व क़ालू या सालिहुअ्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनल्-मुर्सलीन **(77)** फ़-अ-ख़ज़त्हुमुर्रज़्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन **(78)** फ़-तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाल-त रब्बी व नसह्तु लकुम्

और उन लोगों की जड़ (तक) काट दी[1] जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, और वे ईमान लाने वाले न थे। **(72)** ❖

और हमने समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक साफ़ और वाज़ेह दलील आ चुकी है यह ऊँटनी है अल्लाह की, जो तुम्हारे लिए दलील है,[2] सो इसको छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरा करे, और इसको बुराई के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको दर्दनाक अ़ज़ाब आ पकड़े। **(73)** और तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआ़ला ने तुमको आ़द के बाद आबाद किया और तुमको ज़मीन पर रहने के लिए ठिकाना दिया कि नर्म ज़मीन पर महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश-तराशकर उसमें घर बनाते हो, सो ख़ुदा तआ़ला की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ। **(74)** उनकी क़ौम में जो घमण्डी सरदार थे, उन्होंने ग़रीब लोगों से जो कि उनमें से ईमान ले आए थे पूछा कि क्या तुमको इस बात का यक़ीन है कि सालेह अपने रब की तरफ़ से भेजे हुए हैं? उन्होंने कहा कि बेशक हम तो उसपर पूरा यक़ीन रखते हैं जो उनको देकर भेजा गया है। **(75)** वे घमण्डी लोग कहने लगे कि तुम जिस चीज़ पर यक़ीन लाए हुए हो हम तो उसका इनकार करते हैं। **(76)** ग़रज़ उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला और अपने परवर्दिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि ऐ सालेह! जिसकी आप हमको धमकी देते थे उसको मंगवाइए, अगर आप पैग़म्बर हैं। **(77)** पस आ पकड़ा उनको ज़लज़ले ने, सो अपने घरों में औंधे (के औंधे) पड़े रह गए।[3] **(78)** उस वक़्त वह (यानी सालेह अ़लैहिस्सलाम) उनसे मुँह मोड़कर चले और फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी क़ौम! मैंने तो तुमको अपने परवर्दिगार का हुक्म पहुँचा दिया था, और मैंने

---

1. यानी बिलकुल हलाक कर दिया "क़-तअ्ना दाबि-र......" से बाज़ ने कहा है कि उनकी नस्ल बिलकुल ख़त्म हो गई। और बाज़ ने कहा कि कुफ़्फ़ार बिलकुल हलाक हो गए और मोमिनीन बाक़ी रहे, और मुम्किन है कि कुफ़्फ़ार की छोटी औलाद भी रह गई हो, उनकी नस्ल आगे बढ़ी, उनको "दूसरी आ़द" कहते हैं और पहले वालों को "पहली आ़द"। और अ़ज़ाब इस क़ौम का तेज़ आँधी थी जैसा कि कई जगह क़ुरआन में ज़िक्र है। और सूरः फ़ुस्सिलत में जो "साइ़क़ा" (यानी कड़कदार बिजली) आया है उससे मुराद मुत्लक़ अ़ज़ाब है, और सूरः मोमिन में नूह अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से के बाद जो "सुम्-म अन्शअ्ना मिम्बअ्दिहिम क़र्नन् आख़रीन" आया है। जिन्होंने उसकी तफ़सीर क़ौमे आ़द से की है वे इसके क़ायल हैं कि उनपर ज़ोरदार आवाज़ या चीख़ भी आई और तेज़ आँधी भी आई, अल्लाह ही को ज़्यादा और सही इल्म है। और उसका ठिकाना दूसरी आयत में "अह्क़ाफ़" आया है जो मुहम्मद बिन इसहाक़ के क़ौल के मुताबिक़ "अ़म्मान" और "हज़रे-मौत" के दरमियान एक रेगिस्तान है।

2. उन्होंने एक ख़ास मोजिज़े की दरख़्वास्त की कि उस पत्थर में से एक ऊँटनी पैदा हो तो हम ईमान लाएँ। चुनाँचे आपकी दुआ़ से ऐसा ही हुआ कि वह पत्थर फटा और उसके अन्दर से एक बड़ी ऊँटनी निकली।

3. दूसरी आयत में 'सख़्त आवाज़ या चिन्घाड़' यानी फ़रिश्ते के नारे से हलाक होना आया है। बाज़ ने कहा कि ऊपर से चीख़ और चिन्घाड़ और नीचे से ज़ल्ज़ला आया था। और बाज़ ने कहा कि ज़ल्ज़ले से मुराद दिल की वह हरकत है जो सख़्त आवाज़ या चीख़ के ख़ौफ़ से पैदा हुई थी। और जिसने ऊँटनी को क़त्ल किया उसका नाम क़िदार आया है। और दूसरी आयत में उनके रहने का मक़ाम हिज्र आया है जो कि "हिजाज़" और "शाम" के दरमियान एक मक़ाम था। और आयत के ज़ाहिर से मालूम होता है कि सालेह अ़लैहिस्सलाम यहाँ से क़ौम के हलाक होने के बाद तशरीफ़ ले गए। फिर कुछ ने मुल्क शाम की तरफ़ जाना और कुछ ने मक्का को जाना नक़ल किया है।

व लाकिल्ला तुहिब्बूनन्नासिहीन **(79)** व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल्-फ़ाहि-श-त मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम् मिनल्-आ़लमीन **(80)** इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्रिजा-ल शह्व-तम् मिन् दूनिन्निसा-इ, बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून **(81)** व मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजूहुम् मिन् क़र्यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्य-ततह्हरून **(82)** फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्र-अ-तहू कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन **(83)** व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-तरन्, फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुज्रिमीन **(84)** ❖

व इला मद्य-न अख़ाहुम् शुअ़ैबन्, क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, क़द् जाअत्कुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम् फ़-औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा-न व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(85)** व ला तक़्अुदू बिकुल्लि सिरातिन् तूअ़िदू-न व तसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आम-न बिही व तब्ग़ूनहा अ़ि-वजन् वज़्कुरू इज़् कुन्तुम् क़लीलन् फ़-कस्स-रकुम् वन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल् मुफ़्सिदीन **(86)** व इन् का-न ताइ-फ़तुम् मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी उर्सिल्तु बिही व ताइ-फ़तुल्-लम् युअ्मिनू फ़स्बिरू हत्ता यह्कुमल्लाहु बैनना व हु-व ख़ैरुल् हाकिमीन **(87)**

لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ
النّٰصِحِيْنَ ۝ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ
بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً
مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ
يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝
وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝
وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ
بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَ
لَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا
فَكَثَّرَكُمْ ۪ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ
طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا
فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही की, लेकिन तुम लोग ख़ैर-ख़्वाहों को पसन्द ही नहीं करते थे। **(79)** और हमने लूत को भेजा जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया, क्या तुम ऐसा फ़ुहश "यानी गंदा और बुरा" काम करते हो जिसको तुमसे पहले किसी ने दुनिया जहान वालों में से नहीं किया। **(80)** (यानी) तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के साथ ख़्वाहिश पूरी करते हो, बल्कि तुम (इनसानियत की) हद से ही गुज़र गए हो।[1] **(81)** और उनकी क़ौम से कोई जवाब न बन पड़ा सिवाय इसके कि (आपस में) कहने लगे कि इन लोगों को तुम अपनी बस्ती में से निकाल दो, ये लोग बड़े पाक-साफ़ बनते हैं। **(82)** सो हमने उनको (यानी लूत अ़लैहिस्सलाम को) और उनके मुताल्लिक़ीन को बचा लिया सिवाय उनकी बीवी के,[2] कि वह उन्हीं लोगों में रही जो अ़ज़ाब में रह गए थे। **(83)** और हमने उनके ऊपर एक नई तरह की बारिश बरसाई (जो कि पत्थरों की थी)। सो देख तो सही उन मुज्रिमों का अन्जाम कैसा हुआ? **(84)** ❖

और हमने मद्‌यन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा।[3] उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक वाज़ेह और खुली दलील आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो और लोगों का इन चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और रू-ए-ज़मीन में इसके बाद कि उसकी दुरुस्ती कर दी गई, फ़साद मत फैलाओ, यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है, अगर तुम तस्दीक़ करो। **(85)** और तुम सड़कों पर (इस ग़रज़ से) मत बैठा करो कि अल्लाह पर ईमान लाने वालों को धमकियाँ दो और अल्लाह की राह से रोको, और उसमें कजी "यानी टेढ़ और कमी" की तलाश में लगे रहो, और उस हालत को याद करो जबकि तुम कम थे फिर अल्लाह तआ़ला ने तुमको ज़्यादा कर दिया, और देखो कि कैसा अन्जाम हुआ फ़साद करने वालों का। **(86)** और अगर तुममें से बाज़े उस हुक्म पर जिसको देकर मुझे भेजा गया है, ईमान लाए हैं, और बाज़े ईमान नहीं लाए हैं तो ज़रा ठहर जाओ यहाँ तक कि हमारे दरमियान में अल्लाह तआ़ला फ़ैसला किए देते हैं, और वह सब फ़ैसला करने वालों से बेहतर हैं। **(87)**

---

1. "बल अन्तुम" की तफ़सीर का हासिल यह है कि बाज़ गुनाहों में बाप-दादा की पैरवी वग़ैरह से धोखा हो जाता है, इसमें तो यह भी नहीं। और बाज़ आयतों में जो "तज्हलून" (यानी तुम नहीं जानते) आया है उससे यह शुब्हा न हो कि उनको उसकी बुराई मालूम न थी, क्योंकि वहाँ जहालत से मुराद यह नहीं बल्कि मुराद यह है कि तुमको इसका बुरा अन्जाम यानी अ़ज़ाब मालूम नहीं।

2. यह बीवी काफ़िरा थी। जब लूत अ़लैहिस्सलाम को अ़ज़ाब से पहले बस्ती से निकल जाने का हुक्म हुआ, कुछ ने तो कहा है कि यह बीवी साथ नहीं गई, कुछ ने कहा कि साथ चली थी फिर वापस लौटने लगी और हलाक कर दी गई। और लूत अ़लैहिस्सलाम फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास आकर रहने लगे।

3. क़ुरआन में शुऐब अ़लैहिस्सलाम का 'मद्‌यन' और 'ऐका' वालों की तरफ़ नबी बनाकर भेजा जाना और मद्‌यन वालों पर कहीं ज़ोरदार चीख़ और कहीं ज़ल्ज़ले का अ़ज़ाब और ऐका वालों पर सायबान का अ़ज़ाब होना ज़िक्र किया है। बाज़ ने तो दोनों क़ौमों को एक ही कहा है और बाज़ ने अलग-अलग कहा है कि एक क़ौम यानी मद्‌यन वालों के हलाक होने के बाद दूसरों की यानी ऐका वालों की तरफ़ जो कि मद्‌यन के क़रीब रहते थे और निकटता की वजह से उनमें भी कम तौलने-नापने का मर्ज़ मुश्तरक था, नबी बनाकर भेजे गए, और अक्सर का क़ौल यही है। और अ़ज़ाब की क़िस्मों में दो का या तीनों को जमा होना कुछ बईद नहीं। और इन काफ़िरों के हलाक होने के बाद आप मक्का में आकर रहने लगे थे, और वहीं पर आपकी वफ़ात हुई। और मद्‌यन असल में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के एक लड़के का नाम था, फिर उस क़बीले पर जो उनकी औलाद थे या उस शहर पर जो उनकी औलाद के रहने की जगह था, इसको बोला जाने लगा।

नवाँ पारः क़ालल् म-लउ

सूरतुल् अअ्राफ़ि (आयत 88 से 206)

क़ालल् म-लउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लनुख़्रिजन्न-क या-शुअ़ैबु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़-क मिन् क़र्यतिना औ ल-तअूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना, क़ा-ल अ-व लौ कुन्ना कारिहीन **(88)** क़दिफ़्तरैना अ़लल्लाहि कज़िबन् इन् अ़ुद्ना फ़ी मिल्लतिकुम् बअ़्-द इज़् नज्जानल्लाहु मिन्हा, व मा यकूनु लना अन्-नअ़ू-द फ़ीहा इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु रब्बुना, वसि-अ़ रब्बुना कुल्-ल शैइन् अ़िल्मन्, अ़लल्लाहि तवक्कल्ना, रब्बनफ़्तह् बैनना व बै-न क़ौमिना बिल्-हक़्क़ि व अन्-त ख़ैरुल्-फ़ातिहीन **(89)** व क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही ल-इनित्तबअ़्तुम् शुअ़ैबन् इन्नकुम् इज़ल्-लख़ासिरून **(90)** फ़-अ-ख़ज़त्हुमुर्रज्फ़तु फ़अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन **(91)** अल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा, अल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् कानू हुमुल् ख़ासिरीन **(92)** फ़-तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसालाति रब्बी व नसह्तु लकुम् फ़कै-फ़ आसा अ़ला क़ौमिन् काफ़िरीन **(93)** ❖

قال الملا الذين استكبروا من قومه لنخرجنك يشعيب
والذين امنوا معك من قريتنا او لتعودن في ملتنا قال
اولو كنا كارهين ۝ قد افترينا على الله كذبا ان عدنا في
ملتكم بعد اذ نجىنا الله منها وما يكون لنا ان نعود
فيها الا ان يشاء الله ربنا وسع ربنا كل شيء علما
على الله توكلنا ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق و
انت خير الفاتحين ۝ وقال الملا الذين كفروا من قومه لئن
اتبعتم شعيبا انكم اذا لخسرون ۝ فاخذتهم الرجفة
فاصبحوا في دارهم جثمين ۝ الذين كذبوا شعيبا كان
لم يغنوا فيها الذين كذبوا شعيبا كانوا هم الخسرين ۝
فتولى عنهم وقال يقوم لقد ابلغتكم رسلت ربي ونصحت
لكم فكيف اسى على قوم كفرين ۝ وما ارسلنا في قرية
من نبي الا اخذنا اهلها بالباساء والضراء لعلهم
يضرعون ۝ ثم بدلنا مكان السيئة الحسنة حتى عفوا وقالوا
قد مس اباءنا الضراء والسراء فاخذنهم بغتة وهم
لا يشعرون ۝ ولو ان اهل القرى امنوا واتقوا لفتحنا عليهم

व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला अख़ज़्ना अह्लहा बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ लअ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रअ़ून **(94)** सुम्-म बद्दल्ना मकानस्सय्यि-अतिल् ह-स-न-त

नवाँ पारः क़ालल् म-लउ

सूरः आराफ़ (आयत 88 से 206)

उनकी क़ौम के घमण्डी सरदारों ने कहा कि ऐ शुऐब! हम आपको और आपके साथ जो ईमान वाले हैं उनको अपनी बस्ती से निकाल देंगे, या (यह हो कि) तुम हमारे मज़हब में फिर आ जाओ,[1] (शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने) जवाब दिया कि क्या (हम तुम्हारे मज़हब में आ जाएंगे) अगरचे हम उसको (समझ की दलील से) ना-पसन्द और मक्रूह ही समझते हों।[2] **(88)** हम तो अल्लाह पर बड़ी झूठी तोहमत लगाने वाले हो जाएँ अगर (ख़ुदा न करे) हम तुम्हारे मज़हब में आ जाएँ, (ख़ास कर) इसके बाद कि अल्लाह तआ़ला ने हमको उससे नजात दी हो, और हमसे मुम्किन नहीं कि उसमें (यानी तुम्हारे मज़हब में) फिर आ जाएँ, लेकिन हाँ यह कि अल्लाह ही ने जो कि हमारा मालिक है हमारे मुक़द्दर (में) किया हो, हमारे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। हम अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा रखते हैं,[3] ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे और हमारी (इस) क़ौम के बीच हक़ के मुवाफ़िक़ फ़ैसला कर दीजिए, और आप सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाले हैं। **(89)** और उनकी क़ौम के (उन्ही ज़िक्र किए गए) काफ़िर सरदारों ने कहा कि अगर तुम शुऐब की राह पर चलने लगोगे तो बेशक बड़ा नुक़सान उठाओगे। **(90)** पस उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा, सो अपने घर में (औंधे के औंधे) पड़े रह गए। **(91)** जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था (उनकी यह हालत हो गई कि) जैसे उन घरों में कभी बसे ही न थे। जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था वही घाटे में पड़ गए। **(92)** उस वक़्त वह (यानी शुऐब अ़लैहिस्सलाम) उनसे मुँह मोड़कर चले और फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुमको अपने परवर्दिगार के अहकाम पहुँचा दिए थे, और मैंने तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही की, फिर मैं उन काफ़िर लोगों पर क्यों रंज करूँ।[4] **(93)** ❖

और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर यह कि वहाँ के रहने वालों को (झुठलाने पर) हमने मोहताजी और बीमारी में पकड़ा ताकि वे ढीले पड़ जाएँ। **(94)** फिर हमने उस बदहाली की जगह ख़ुशहाली बदल दी, यहाँ तक कि उनको ख़ूब तरक़्क़ी हुई और (उस वक़्त अपनी उल्टी समझ की वजह से) कहने लगे कि हमारे बाप-दादा को भी तंगी और राहत पेश आई थी, तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया और उनको ख़बर भी न थी। **(95)** और अगर उन बस्तियों के रहने वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी "यानी हराम

---

1. यह बात मोमिनों के लिए इसलिए कही कि वे लोग ईमान से पहले उसी कुफ़्र के तरीक़े पर थे। लेकिन शुऐब अ़लैहिस्सलाम के हक़ में बावजूद इसके कि नबियों से कभी कुफ़्र सादिर नहीं होता इसलिए कही कि नबी बनाए जाने से पहले उनके चुप रहने से वे यही समझते थे कि उनका एतिक़ाद भी हम ही जैसा होगा।

2. यानी जब उसके बातिल होने पर दलील क़ायम है तो हम उसको कैसे इख़्तियार कर लें।

3. इससे यह शुब्हा न किया जाए कि उनको अपने ख़ैर पर ख़ात्मे का यक़ीन न था, अम्बिया को यह यक़ीन दिया जाता है। मक़सूद आ़जिज़ी और अपने मालिक को अपने तमाम मामलात सौंपने का इज़्हार करना है जो कि नुबुव्वत के लवाज़िमात में से है।

4. ऊपर जिन क़ौमों का क़िस्सा ज़िक्र हुआ है चूँकि और क़ौमों के भी ऐसे क़िस्से पेश आए हैं, आगे आ़म उनवान से मुख़्तसर तौर पर उन सबकी जुर्म की हालत और जुर्म पर भी शुरू में मोहलत मिलने की और फिर भी न समझने पर सज़ा जारी होने को ज़िक्र किया गया है। और क़िस्से को नक़ल करने के बाद आयत "अ-वलम् यह्दि लहुम्......" से इसके नक़ल करने की ग़रज़ पर जो कि इससे इबरत और सबक़ हासिल करना है, तंबीह फ़रमाई गई है।

हत्ता अफ़ौ व क़ालू क़द् मस्-स आबा-अनज़्ज़र्रा-उ वस्सर्रा-उ फ़-अख़ज़्नाहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (95) व लौ अन्-न अह्लल्कुरा आमनू वत्तकौ ल-फ़तह्ना अ़लैहिम् ब-रकातिम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि व लाकिन् कज़्ज़बू फ़-अख़ज़्नाहुम् बिमा कानू यक्सिबून (96) अ-फ़अमि-न अह्लुल्कुरा अंय्यअ्ति-यहुम् बअ्सुना बयातंव्-व हुम् ना-इमून (97) अ-व अमि-न अह्लुल्कुरा अंय्यअ्ति-यहुम् बअ्सुना ज़ुहंव्वहुम् यल्अ़बून (98) अ-फ़अमिनू मक्रल्लाहि फ़ला यअ्मनु मक्रल्लाहि इल्लल् क़ौमुल्-ख़ासिरून (99) ❖

अ-व लम् यह्दि लिल्लज़ी-न यरिसूनल्-अर्-ज़ मिम्-बअ्दि अह्लिहा अल्लौ नशा-उ असब्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व नत्बअु अ़ला कुलूबिहिम् फ़हुम् ला यस्मअून (100) तिल्कल्कुरा नक़ुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बा-इहा व ल-क़द् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू मिन् क़ब्लु, कज़ालि-क यत्बअुल्लाहु अ़ला क़ुलूबिल् काफ़िरीन (101) व मा वजद्ना लिअक्सरिहिम् मिन् अ़हदिन् व इंव्-वजद्ना अक्स-रहुम् लफ़ासिक़ीन (102) सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ्दिहिम् मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ़-न व म-लइही फ़-ज़-लमू बिहा फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल् मुफ़्सिदीन (103) व क़ा-ल मूसा या फ़िर्औनु इन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (104) हक़ीक़ुन् अ़ला अल्ला अक़ू-ल अ़लल्लाहि इल्लल्हक़्-क़, क़द् जिअ्तुकुम् बिबय्यि-नतिम् मिर्रब्बिकुम् फ़-अर्सिल् मअ़ि-य बनी इस्राईल (105) क़ा-ल इन् कुन्-त

بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ
نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ
يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ
اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا
وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا
مِنْ قَبْلُ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا
لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ
بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ فَظَلَمُوْا
بِهَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ
اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى
اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

कामों से बचते और एहतियात" करते तो हम उनपर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते,[1] लेकिन उन्होंने तो (पैग़म्बरों को) झुठलाया, तो हमने (भी) उनके (बुरे) आमाल की वजह से उनको पकड़ लिया। **(96)** क्या फिर भी उन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गए हैं कि उनपर (भी) हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त आ पड़े, जिस वक़्त वे (पड़े) सोते हों। **(97)** और क्या इन (मौजूदा) बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गए हैं कि उनपर हमारा अ़ज़ाब दिन-दोपहरी आ पड़े, जिस वक़्त कि वे अपने फ़ुज़ूल क़िस्सों में मश्ग़ूल हों।[2] **(98)** हाँ तो क्या अल्लाह की इस (अचानक) पकड़ से बेफ़िक्र हो गए, सो (समझ लो कि) ख़ुदा तआ़ला की पकड़ से सिवाय उनके जिनकी शामत ही आ गई हो और कोई बेफ़िक्र नहीं होता।[3] **(99)** ❖

और इन (गुज़रे हुए) ज़मीन पर रहने वालों के बाद जो लोग (अब) ज़मीन पर उनकी जगह रहते हैं, क्या (इन ज़िक्र हुए वाक़िआ़त ने) उनको यह बात (अभी) नहीं बतलाई कि अगर हम चाहते तो उनको उनके जुर्मों के सबब हलाक कर डालते, और हम उनके दिलों पर बन्द लगाए हुए हैं, इससे वे सुनते नहीं।[4] **(100)** उन (ज़िक्र हुई) बस्तियों के कुछ-कुछ क़िस्से हम आपसे बयान कर रहे हैं, और उन सबके पास उनके पैग़म्बर मोजिज़ात लेकर आए थे, फिर जिस चीज़ को उन्होंने पहली (ही मर्तबा में एक बार) झूठा कह दिया, यह बात न हुई कि फिर उसको मान लेते, अल्लाह तआ़ला इसी तरह काफ़िरों के दिलों पर बन्द लगा देते हैं। **(101)** और ज़्यादातर लोगों में हमने अ़हद को पूरा करना न देखा, और हमने अक्सर लोगों को बेहुक्म ही पाया। **(102)** फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी दलीलें[5] देकर फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा, सो उन लोगों ने उनका हक़ बिलकुल अदा न किया, सो देखिए उन फ़सादियों और बिगाड़ करने वालों का क्या अन्जाम हुआ?[6] **(103)** और मूसा ने फ़रमाया कि ऐ फ़िरऔ़न! मैं रब्बुल्-आ़लमीन की तरफ़ से पैग़म्बर हूँ। **(104)** मेरे लिए (यही) मुनासिब है कि सिवाय सच के ख़ुदा की तरफ़ कोई बात मन्सूब न करूँ, मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बड़ी दलील भी लेकर आया हूँ, सो तू बनी इसराईल को मेरे साथ भेज दे। **(105)** (फ़िरऔ़न ने कहा) अगर आप कोई मोजिज़ा लेकर आए हैं तो उसको पेश कीजिए, अगर आप सच्चे हैं। **(106)** पस आपने (फ़ौरन) अपना अ़सा "यानी लाठी" डाल दिया, सो वह देखते ही देखते साफ़ एक अज़्दहा (बन गया)।[7] **(107)** और अपना हाथ बाहर निकाल लिया, सो वह एकदम सब देखने वालों

---

1. यानी आसमान से बारिश और ज़मीन से पैदावार उनको बरकत के साथ अ़ता फ़रमाते। और अगरचे इस हलाकत से पहले उनको ख़ुशहाली एक हिक्मत के लिए दी, लेकिन उस ख़ुशहाली में इसलिए बरकत न थी कि आख़िर में वह वबाले जान हो गई, उन नेमतों के उलट जो ईमान और इताअ़त के साथ मिलती हैं कि उनमें यह ख़ैर व बरकत होती है कि वे वबाल कभी नहीं होतीं, न दुनिया में न आख़िरत में। हासिल यह है कि अगर वे ईमान व तक़्वा इख़्तियार करते तो उनको भी ये बरकतें देते।
2. मुराद इससे दुनियावी कारोबार हैं।
3. इस आयत से यह बात निकाली गई है कि अल्लाह के अ़ज़ाब से बेख़ौफ़ होना कुफ़्र है, क्योंकि क़ुरआनी मुहावरों में अक्सर "ख़ासिर" (यानी घाटा उठाने वाले) से मुराद काफ़िर होता है।
4. इस बन्द लगाने का सबब उन्हीं का शुरू में कुफ़्र करना है, अल्लाह तआ़ला के क़ौल "त-बअ़ल्लाहु अ़लैहा बिकुफ़्रिहिम्" के सबब।
5. यानी मोजिज़े।
6. यह तो तमाम क़िस्से का मुख़्तसर बयान था, आगे तफ़सील है।
7. 'मुबीन' यानी साफ़ से मालूम होता है कि हक़ीक़त बदल जाती थी, ख़्याली क़िस्सा न था।

जिअ्-त बिआयतिन् फ़अ्ति बिहा इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (106) फ़अल्क़ा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य सुअ्बानुम् मुबीन (107) व न-ज़-अ़ य-दहू फ़-इज़ा हि-य बैज़ा-उ लिन्नाज़िरीन (108) ❖

क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अ़लीम (109) युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् फ़-माज़ा तअ्मुरून (110) क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु व अर्सिल् फ़िल्मदाइनि हाशिरीन (111) यअ्तू-क बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम (112) व जाअस्स-ह-रतु फ़िर्औ-न क़ालू इन्-न लना लअज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल् ग़ालिबीन (113) क़ा-ल न-अ़म् व इन्नकुम् लमिनल् मुक़र्रबीन (114) क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्कि़-य व इम्मा अन्नकू-न नह्नुल्-मुल्क़ीन (115) क़ा-ल अल्क़ू फ़-लम्मा अल्क़ौ स-हरू अअ्युनन्नासि वस्तर्हबूहुम् व जाऊ बिसिह्रिन् अ़ज़ीम (116) व औहैना इला मूसा अन् अल्कि़ अ़सा-क फ़-इज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून (117) फ़-व-क़अ़ल्-हक़्क़ु व ब-त-ल मा कानू यअ्मलून (118) फ़ग़ुलिबू हुनालि-क वन्क़-लबू साग़िरीन (119) व उल्कि़यस्स-ह-रतु साजिदीन (120) क़ालू आमन्ना बिरब्बिल्-आ़लमीन (121) रब्बि मूसा व हारून (122) क़ा-ल फ़िर्औनु आमन्तुम् बिही क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम् इन्-न हाज़ा लमक्रुम्-मकर्तुमूहु फ़िल्मदीनति लितुख़्रिजू मिन्हा अह्लहा फ़सौ-फ़ तअ्लमून (123) ल-उक़त्तिअ़न्-न ऐदियकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िन् सुम्-म ल-उसल्लिबन्नकुम् अज्मअ़ीन (124) क़ालू इन्ना

وَنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيۡضَآءُ لِلنّٰظِرِيۡنَ ۚ قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِ
فِرۡعَوۡنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيۡمٌ ۙ يُّرِيۡدُ اَنۡ يُّخۡرِجَكُمۡ مِّنۡ
اَرۡضِكُمۡ ۚ فَمَاذَا تَاۡمُرُوۡنَ ۚ قَالُوۡۤا اَرۡجِهۡ وَاَخَاهُ وَاَرۡسِلۡ فِي
الۡمَدَآئِنِ حٰشِرِيۡنَ ۙ يَاۡتُوۡكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيۡمٍ ۚ وَجَآءَ السَّحَرَةُ
فِرۡعَوۡنَ قَالُوۡۤا اِنَّ لَنَا لَاَجۡرًا اِنۡ كُنَّا نَحۡنُ الۡغٰلِبِيۡنَ ۚ قَالَ نَعَمۡ
وَاِنَّكُمۡ لَمِنَ الۡمُقَرَّبِيۡنَ ۚ قَالُوۡا يٰمُوۡسٰۤى اِمَّاۤ اَنۡ تُلۡقِيَ وَاِمَّاۤ
اَنۡ نَّكُوۡنَ نَحۡنُ الۡمُلۡقِيۡنَ ۚ قَالَ اَلۡقُوۡا ۚ فَلَمَّاۤ اَلۡقَوۡا سَحَرُوۡۤا اَعۡيُنَ
النَّاسِ وَاسۡتَرۡهَبُوۡهُمۡ وَجَآءُوۡ بِسِحۡرٍ عَظِيۡمٍ ۚ وَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰى
مُوۡسٰۤى اَنۡ اَلۡقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلۡقَفُ مَا يَاۡفِكُوۡنَ ۚ فَوَقَعَ
الۡحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۚ فَغُلِبُوۡا هُنَالِكَ وَانۡقَلَبُوۡا
صٰغِرِيۡنَ ۚ وَاُلۡقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيۡنَ ۙ قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ
رَبِّ مُوۡسٰى وَهٰرُوۡنَ ۚ قَالَ فِرۡعَوۡنُ اٰمَنۡتُمۡ بِهٖ قَبۡلَ اَنۡ
اٰذَنَ لَكُمۡ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكۡرٌ مَّكَرۡتُمُوۡهُ فِي الۡمَدِيۡنَةِ لِتُخۡرِجُوۡا مِنۡهَاۤ
اَهۡلَهَا ۚ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۚ لَاُقَطِّعَنَّ اَيۡدِيَكُمۡ وَاَرۡجُلَكُمۡ
مِّنۡ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۚ قَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا
مُنۡقَلِبُوۡنَ ۚ وَمَا تَنۡقِمُ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنۡ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتۡنَا ؕ

के सामने बहुत चमकता हुआ (हो गया)[1] (108) ❖

फ़िरऔन की क़ौम में जो सरदार "यानी बड़े" लोग थे, उन्होंने कहा कि वाक़ई यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है। (109) (ज़रूर) यह चाहता है कि तुमको तुम्हारे (इस) मुल्क से बाहर कर दे, सो तुम लोग क्या मश्विरा देते हो। (110) उन्होंने कहा कि आप इनको और इनके भाई को थोड़ी मोहलत दीजिए और शहरों में चपरासियों को भेज दीजिए (111) कि वे सब माहिर जादूगरों को आपके पास लाकर हाज़िर कर दें। (112) (चुनाँचे ऐसा ही किया गया) और वे जादूगर फ़िरऔन के पास हाज़िर हुए! कहने लगे कि अगर हम ग़ालिब आए तो क्या हमको कोई (बड़ा) सिला मिलेगा? (113) (फ़िरऔन) ने कहा कि हाँ! (बड़ा इनाम मिलेगा) और (उसके अ़लावा यह कि) तुम क़रीबी और ख़ास लोगों में दाख़िल हो जाओगे। (114) (उन जादूगरों ने) अ़र्ज़ किया, ऐ मूसा! चाहे आप डालिए और या हम ही डालें। (115) (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि (पहले) तुम ही डालो। जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला तो लोगों की नज़र-बन्दी कर दी,[2] और उनपर हैबत ग़ालिब कर दी और एक (तरह का) बड़ा जादू दिखलाया। (116) और हमने मूसा को (वह्य के ज़रिये) हुक्म दिया कि आप अपनी लाठी डाल दीजिए। (सो लाठी का डालना था कि) उसने अचानक (अज़्दहा बनकर) उनके सारे बने-बनाए खेल को निगलना शुरू किया। (117) पस (उस वक़्त) हक़ (का हक़) होना ज़ाहिर हो गया, और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब (आता) जाता रहा। (118) पस वे लोग उस मौक़े पर हार गए और ख़ूब ज़लील हुए। (119) और वे जो जादूगर थे सज्दे में गिर गए। (120) (और पुकार-पुकार कर) कहने लगे कि हम ईमान लाए रब्बुल्-आ़लमीन पर। (121) जो मूसा और हारून का भी रब है।[3] (122) फ़िरऔन कहने लगा कि हाँ तुम उसपर (यानी मूसा पर) ईमान लाए हो इसके बग़ैर ही कि मैं तुमको इजाज़त दूँ, बेशक यह एक कार्रवाई थी जिसपर इस शहर में तुम्हारा अ़मल दरामद हुआ है ताकि तुम सब इस (शहर) के रहने वालों को इससे बाहर निकाल दो, सो (बेहतर है) अब तुमको हक़ीक़त मालूम हुई जाती है। (123) मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूँगा, फिर तुम सबको सूली पर टाँग दूँगा।[4] (124) उन्होंने जवाब दिया कि (कुछ परवाह नहीं) हम मरकर अपने मालिक ही के पास जाएँगे।[5] (125) और तूने हममें कौन-सा ऐब देखा सिवाय इसके कि हम अपने रब के अहकाम पर ईमान ले आए, जब वे (अहकाम) हमारे पास आए। ऐ हमारे रब! हमारे ऊपर सब्र का फ़ैज़ान फ़रमा और हमारी जान इस्लाम की हालत पर निकालिए।[6] (126) ❖

1. "लिन्नाज़िरीन" (यानी देखने वालों के सामने) से कोई नज़रबन्दी का शुब्हा न करे, क्योंकि यह उसकी वाक़ई सफ़ेदी की ताकीद है, जैसे कहा करते हैं कि लोगों ने खुली आँखों देखा।

2. जिससे वे लाठियाँ और रस्सियाँ साँप की शक्ल में लहराती हुई नज़र आने लगीं।

3. "जो मूसा और हारून का भी रब है" इसलिए बढ़ाया कि फ़िरऔन अपने को रब्बे-आला बतलाता था। तो रब्बुल-आ़लमीन का मिस्दाक़ सुनने वाले उसको न समझ जाएँ, इसलिए इसको बढ़ाकर मुराद तय कर दी कि जिसको मूसा व हारून रब कहते हैं।

4. ताकि औरों को इबरत हो।

5. जहाँ हर तरह अमन व राहत है।

6. ताकि उसकी सख़्ती से परेशान होकर कोई बात ईमान के ख़िलाफ़ न हो जाए।

इला रब्बिना मुन्क़लिबून **(125)** व मा तन्क़िमु मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिआयाति रब्बिना लम्मा जाअत्ना, रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना सब्रंव्-व तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन **(126)** ❖

व क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न अ-त-ज़रु मूसा व क़ौमहू लियुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व य-ज़-र-क व आलि-ह-त-क, क़ा-ल सनुक़त्तिलु अब्ना-अहुम् व नस्तह्यी निसा-अहुम् व इन्ना फ़ौक़हुम् क़ाहिरून **(127)** क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिस्तअ़ीनू बिल्लाहि वस्बिरू इन्नल्-अर्-ज़ लिल्लाहि यूरिसुहा मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, वल्आ़क़ि-बतु लिल्मुत्तक़ीन **(128)** क़ालू ऊज़ीना मिन् क़ब्लि अन् तअ्ति-यना व मिम्-बअ्दि मा जिअ्तना, क़ा-ल अ़सा रब्बुकुम् अंय्युह्लि-क अ़दुव्वकुम् व यस्तख़्लि-फ़कुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्मलून **(129)** ❖

व ल-क़द् अख़ज़्ना आ-ल फ़िर्औ-न बिस्सिनी-न व नक़्सिम् मिनस्स-मराति लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून **(130)** फ़-इज़ा जाअत्हुमुल् ह-स-नतु क़ालू लना हाज़िही व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुंय्यत्तय्यरू बिमूसा व मम्-म-अ़हू, अला इन्नमा ताइरुहुम् अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून **(131)** व क़ालू मह्मा तअ्तिना बिही मिन् आयतिल्-लितस्ह-रना बिहा फ़मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन **(132)** फ़-अर्सल्ना अ़लैहिमुत्तूफ़ा-न वल्जरा-द वल्क़ुम्म-ल वज़्ज़फ़ादि-अ़ वद्द-म आयातिम् मुफ़स्सलातिन्, फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम् मुज्रिमीन **(133)** व लम्मा व-क़-अ़ अ़लैहिमुर्रिज्ज़ु क़ालू या मूसद्अु लना रब्ब-क बिमा

قال الملاء ٩ — ١٥٠ — الاعراف ٧

رَبَّنَآ أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَ
يَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ
وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَ
اصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ
الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ
بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ
وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ
اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ
يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا
بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ
وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾
وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا

منزل ٢

और फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा कि क्या आप मूसा और उनकी क़ौम को यूँ ही रहने देंगे कि वे मुल्क में फ़साद करते फिरें,[1] और वे आपको और आपके माबूदों को छोड़े रहें।[2] (फ़िरऔन ने) कहा कि हम अभी उन लोगों के बेटों को क़त्ल करना शुरू कर दें और उनकी औरतों को ज़िन्दा रहने दें, और हमको उनपर हर तरह का ज़ोर है। **(127)** मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ख़ुदा तआ़ला का सहारा रखो और मुस्तक़िल "यानी जमे" रहो, (घबराओ मत) यह ज़मीन अल्लाह तआ़ला की है, अपने बन्दों में से जिसको चाहें इसका मालिक (व हाकिम) बना दें, और अख़ीर कामयाबी उन्हीं (लोगों) की होती है जो ख़ुदा तआ़ला से डरते हैं।[3] **(128)** (क़ौम के लोग) कहने लगे कि हम तो (हमेशा) मुसीबत ही में रहे, आपके तश्रीफ़ लाने से पहले भी और आपके तश्रीफ़ लाने के बाद भी। (मूसा ने) फ़रमाया कि बहुत जल्द अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देंगे, और उनकी जगह तुमको इस ज़मीन का मालिक बना देंगे, फिर तुम्हारे अ़मल का तरीक़ा देखेंगे।[4] **(129)** ❖

और हमने फ़िरऔन वालों को क़हत-साली (अकाल) में मुब्तला किया, और फलों की कम पैदावारी में ताकि वे (हक़ बात को) समझ जाएँ।[5] **(130)** सो जब उनपर ख़ुशहाली आ जाती तो कहते कि यह तो हमारे लिए होना ही चाहिए,[6] और अगर उनको कोई बदहाली पेश आती तो मूसा और उनके साथियों की नहूसत बतलाते। याद रखो कि उनकी नहूसत अल्लाह तआ़ला के इल्म में है,[7] लेकिन उनमें अक्सर लोग नहीं जानते थे। **(131)** और (यूँ) कहते थे (चाहे) कैसी ही अ़जीब बात हमारे सामने लाओ, कि उसके ज़रिये से हमपर जादू चलाओ, (जब भी) हम तुम्हारी बात हरगिज़ न मानेंगे। **(132)** फिर हमने उनपर तूफ़ान भेजा[8] और टिड्डियाँ और घुन का कीड़ा और मेंढ़क और ख़ून, कि ये सब खुले-खुले मोजिज़े थे,[9] सो वे तकब्बुर करते रहे, और वे लोग कुछ थे ही जराइम-पेशा।[10] **(133)** और जब उनपर कोई अ़ज़ाब आता तो (यूँ) कहते कि ऐ मूसा! हमारे लिए अपने रब से दुआ़ कर दीजिए, जिसका उसने आपसे अ़हद कर रखा है। अगर आप इस अ़ज़ाब को हमसे हटा दें तो हम ज़रूर आपके कहने से ईमान ले आएँगे और हम बनी इसराईल को भी (रिहा करके) आपके साथ कर देंगे। **(134)** फिर जब उनसे उस अ़ज़ाब को एक ख़ास वक़्त तक कि उस तक

1. फ़साद यह कि अपना मजमा बढ़ाएँ जिससे अन्जामकार बग़ावत का अन्देशा है।
2. यानी उनके माबूद होने के इनकारी रहें।
3. सो तुम ईमान व तक़्वे पर क़ायम रहो, इन्शा-अल्लाह यह हुकूमत तुम ही को मिल जाएगी, थोड़े दिनों इन्तिज़ार की ज़रूरत है।
4. कि शुक्र, क़द्र और इताअ़त करते हो या बेक़द्री और ग़फ़लत व नाफ़रमानी। इसमें नेक कामों की तरफ़ शौक़ दिलाना और नाफ़रमानी से डराना और ख़ौफ़ दिलाना है।
5. और समझकर क़बूल कर लें।
6. यानी हम अच्छी क़िस्मत वाले हैं। यह हमारी ख़ुशक़िस्मती का असर है। यह न था कि उसको ख़ुदा की नेमत समझकर शुक्र बजा लाते और इताअ़त इख़्तियार करते।
7. यानी उनके कुफ़्र के आमाल तो अल्लाह को मालूम हैं। यह नहूसत उन्हीं आमाल की सज़ा है।
8. बारिश की ज़्यादती।
9. रुकूअ़ के शुरू में ज़िक्र हुए उमूर १. क़हतसाली यानी अकाल २. फलों कि कमी और ये पाँच चीज़ें और लाठी और सफ़ेद चमकता हुआ हाथ मिलकर नौ निशानियाँ कहलाती हैं।
10. क्योंकि इतनी सख़्ती पर भी बाज़ न आते थे।

अहि-द अ़िन्द-क ल-इन् क़शफ़्-त अ़न्नर्रिज्-ज़ लनुअ्मिनन्-न ल-क व लनुर्सिलन्-न म-अ़-क बनी इस्राईल **(134)** फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हुमुर्रिज्-ज़ इला अ-जलिन् हुम् बालिग़ूहु इज़ा हुम् यन्कुसून **(135)** फ़न्तक़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़रक़्नाहुम् फ़िल्यम्मि बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन **(136)** व औरस्नल् क़ौमल्लज़ी-न कानू युस्तज़्-अ़फ़ू-न मशारिक़ल्-अर्ज़ि व मग़ारि-बहल्लती बारक्ना फ़ीहा, व तम्मत् कलि-मतु रब्बिकल्हुस्ना अ़ला बनी इस्राई-ल बिमा स-बरू, व दम्मर्ना मा का-न यस्नअु फ़िर्औनु व क़ौमुहू व मा कानू यअ़्रिशून ◆ **(137)** व जावज़्ना बि-बनी इस्राईलल्-बह्-र फ़-अतौ अ़ला क़ौमिंय्यअ़्कुफ़ू-न अ़ला अस्नामिल्लहुम् क़ालू या मूसज्अ़ल्-लना इलाहन् कमा लहुम् आलि-हतुन्, क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुन् तज्हलून **(138)** इन्-न हाउला-इ मुतब्बरुम् मा हुम् फ़ीहि व बातिलुम् मा कानू यअ़्मलून **(139)** क़ा-ल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहंव्-व हु-व फ़ज़्ज़-लकुम् अ़लल्-आ़लमीन **(140)** व इज़् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ़-न यसूमूनकुम् सूअल्-अ़ज़ाबि युक़त्तिलू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम **(141)** ❖

व वाअ़द्ना मूसा सलासी-न लै-लतंव्-व अत्मम्नाहा बिअ़शिरन् फ़-तम्-म मीक़ातु रब्बिही अर्बअ़ी-न लै-लतन् व क़ा-ल मूसा लिअख़ीहि हारूनख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् व ला तत्तबिअ़् सबीलल्-मुफ़्सिदीन **(142)** व लम्मा जा-अ मूसा लिमीक़ातिना व कल्ल-महू

قال الملأ ٩ | ١٥١ | الاعراف ٧

عهد عندك لئن كشفت عنا الرجز لنؤمنن لك ولنرسلن
معك بني إسرآءيل ﴿١٣٤﴾ فلما كشفنا عنهم الرجز إلى
أجل هم بالغوه إذا هم ينكثون ﴿١٣٥﴾ فانتقمنا منهم فأغرقنهم
في اليم بأنهم كذبوا بآيتنا وكانوا عنها غفلين ﴿١٣٦﴾
وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق الأرض
ومغاربها التي بركنا فيها ۖ وتمت كلمت ربك الحسنى
على بني إسرآءيل بما صبروا ۖ ودمرنا ما كان يصنع
فرعون وقومه وما كانوا يعرشون ﴿١٣٧﴾ وجاوزنا ببني إسرآءيل
البحر فأتوا على قوم يعكفون على أصنام لهم ۚ قالوا
يموسى اجعل لنا إلها كما لهم آلهة ۚ قال إنكم قوم
تجهلون ﴿١٣٨﴾ إن هؤلاء متبر ما هم فيه وبطل ما كانوا يعملون ﴿١٣٩﴾
قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم على العلمين ﴿١٤٠﴾
وإذ أنجينكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب ۚ
يقتلون أبناءكم ويستحيون نساءكم ۚ وفي ذلكم بلاء من
ربكم عظيم ﴿١٤١﴾ وودنا موسى ثلثين ليلة وأتممنها
بعشر فتم ميقات ربه أربعين ليلة ۚ وقال موسى لأخيه

منزل

उनको पहुँचना था हम हटा देते तो वे फ़ौरन ही अ़हद तोड़ने लगते। **(135)** फिर हमने उनसे बदला लिया, यानी उनको दरिया में डुबो दिया, इस सबब से कि वे हमारी आयतों को झुठलाते थे, और उनसे बिलकुल ही लापरवाही बरतते थे। **(136)** और हमने उन लोगों को जो कि बिलकुल कमज़ोर ही शुमार किए जाते थे[1] उस सरज़मीन ''यानी मुल्क'' के पूरब-पश्चिम का[2] मालिक बना दिया, जिसमें हमने बरकत रखी है।[3] और आपके रब का नेक वायदा बनी इसराईल के हक़ में उनके सब्र की वजह से पूरा हो गया, और हमने फ़िरऔ़न को और उसकी क़ौम के तैयार किए और सजाए हुए कारख़ानों को और जो कुछ वे ऊँची-ऊँची इमारतें बनवाते थे, सबको उलट-पलट कर दिया। ◆ **(137)** और हमने बनी इसराईल को दरिया से पार उतार दिया, पस उन लोगों का एक क़ौम पर गुज़र हुआ जो अपने चन्द बुतों को लगे बैठे हैं। कहने लगे कि ऐ मूसा! हमारे लिए भी एक (जिस्म वाला) माबूद ऐसा ही मुक़र्रर कर दीजिए, जैसे उनके ये माबूद हैं। आपने फ़रमाया कि वाक़ई तुम लोगों में बड़ी जहालत है।[4] **(138)** ये लोग जिस काम में लगे हैं यह (अल्लाह की तरफ़ से भी) तबाह किया जाएगा और (अपने आप में भी) उनका यह काम महज़ बेबुनियाद है। **(139)** फ़रमाया कि क्या अल्लाह तआ़ला के सिवा और किसी को तुम्हारा माबूद तजवीज़ कर दूँ? हालाँकि उसने तुमको तमाम दुनिया-जहान वालों पर बरतरी दी है। **(140)** और (वह वक़्त याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔ़न वालों (के जुल्म व तकलीफ़ पहुँचाने) से बचा लिया, जो तुमको बड़ी सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे, तुम्हारे बेटों को (कसूरत से) क़त्ल कर डालते थे और तुम्हारी औ़रतों को (अपनी बेगार और ख़िदमत के लिए) ज़िन्दा छोड़ देते थे। और इस (वाक़िए) में तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से बड़ी भारी आज़माइश थी। **(141)** ❖

और हमने मूसा से तीस रात का वायदा किया, और दस रात को उन (तीस रात) का पूरा करने वाला बनाया, सो उनके परवर्दिगार का वक़्त पूरी चालीस रात हो गया। और मूसा ने अपने भाई हारून से कह दिया था कि मेरे बाद मेरी क़ौम का इन्तिज़ाम रखना[5] और इस्लाह करते रहना और बद-नज़्म ''यानी बिगाड़ व ख़राबी पैदा करने वाले'' लोगों की राय पर अ़मल मत करना। **(142)** और जब मूसा हमारे (मुक़र्ररा) वक़्त

---

1. यानी बनी इसराईल को।
2. यानी तमाम हदों (सीमाओं) का।
3. यानी ज़ाहिरी और बातिनी बरकत। ज़ाहिरी बरकत पैदावार ज़्यादा होने से। और बातिनी बरकत अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के वहाँ रहने और उनके दफ़न होने की जगह होने से।
4. उनकी इस बेहूदा दरख़्वास्त की वजह अ़ल्लामा बग़वी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने यह लिखी है कि उनको तौहीद में शक न हुआ था बल्कि अपनी जहालत से यह समझे कि ग़ायब माबूद की तरफ़ मुतवज्जह होने के लिए अगर किसी सामने मौजूद को ज़रिया बनाया जाए तो यह बात दियानत के मनाफ़ी नहीं है, बल्कि इसमें अल्लाह की ताज़ीम और निकटता ज़्यादा है। और चूँकि यह ख़्याल नक़ल और अ़क़्ल के एतिबार से अपने आप में ग़लत है, इसलिए इसको जहल (मूर्खता) फ़रमाया गया। और अल्लाह को ज़्यादा मालूम है।
5. मूसा अ़लैहिस्सलाम का 'मेरे बाद मेरी क़ौम का इन्तिज़ाम रखना' फ़रमाना इस बिना पर है कि हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम सिर्फ़ नबी थे, हाकिम और सुल्तान न थे। इस सिफ़त में ख़लीफ़ा बनाना मक़सूद है, नुबुव्वत में ख़लीफ़ा बनाना मक़सूद नहीं।

रब्बुहू क़ा-ल रब्बि अरिनी अन्ज़ुर् इलै-क, क़ा-ल लन् तरानी व लाकिनिन्ज़ुर् इलल्-ज-बलि फ़-इनिस्त-क़र्-र मकानहू फ़सौ-फ़ तरानी फ़-लम्मा तजल्ला रब्बुहू लिल्ज-बलि ज-अ़-लहू दक्कंव्-व ख़र्-र मूसा सअ़िक़न् फ़-लम्मा अफ़ा-क़ क़ा-ल सुब्हान-क तुब्तु इलै-क व अ-न अव्वलुल्-मुअ्मिनीन **(143)** क़ा-ल या मूसा इन्निस्तफ़ैतु-क अ़लन्नासि बिरिसालाती व बि-कलामी फ़ख़ुज़् मा आतैतु-क व कुम् मिनश्शाकिरीन **(144)** व कतब्ना लहू फ़िल्-अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम् मौअि़-ज़तंव्-व तफ़्सीलल्-लिकुल्लि शैइन् फ़ख़ुज़्हा बिकुव्वतिंव्वअ्मुर् क़ौम-क यअ्ख़ुज़ू बिअह्सनिहा, सउरीकुम् दारल्-फ़ासिक़ीन **(145)** सअस्रिफ़ु अ़न् आयातियल्लज़ी-न य-तकब्बरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल् ला युअ्मिनू बिहा व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तख़िज़ूहु सबीलन् व इंय्यरौ सबीलल्-ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलन्, ज़ालि-क बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन **(146)** वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल् आख़ि-रति हबितत् अअ़्मालुहुम्, हल युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ़्मलून **(147)** ❖

قال الملاء ١٥٢ الاعراف

هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ
اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ
مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا
وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ
وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى
النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ
الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً
وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا
بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ
الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ
اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ
سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ
اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ

منزل

वत्त-ख़-ज़ क़ौमु मूसा मिम्-बअ़्दिही मिन् हुलिय्यिहिम् अ़िज्लन् ज-सदल्लहू ख़ुवारुन्, अलम् यरौ अन्नहू ला युकल्लिमुहुम् व ला यह्दीहिम् सबीला ✣ इत्त-ख़ज़ूहु व कानू ज़ालिमीन **(148)** व लम्मा सुक़ि-त फ़ी ऐदीहिम् व रऔ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लू क़ालू

❖ रु. 17/6/7 ✣ व. लाज़िम

पर आए और उनके रब ने उनसे (बहुत ही लुत्फ़ और इनायत की) बातें कीं,[1] तो अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको अपना दीदार दिखला दीजिए कि मैं आपको एक नज़र देख लूँ। इरशाद हुआ कि तुम मुझको (दुनिया में) हरगिज़ नहीं देख सकते, लेकिन तुम इस पहाड़ की तरफ़ देखते रहो, सो अगर यह अपनी जगह बरक़रार रहा तो (ख़ैर) तुम भी देख सकोगे।[2] पस उनके रब ने जब पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई तो (तजल्ली ने) उस (पहाड़) के परख़्चे "यानी धज्जियाँ" उड़ा दिए और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े।[3] फिर जब होश में आए तो अ़र्ज़ किया कि बेशक आपकी ज़ात पाकीज़ा (और बुलन्द) है, मैं आपकी जनाब में माज़िरत करता हूँ और सबसे पहले मैं उसपर यक़ीन करता हूँ। **(143)** इरशाद हुआ कि ऐ मूसा! (यही बहुत है कि) मैंने पैग़म्बरी और अपनी गुफ़्तगू से और लोगों पर तुमको इम्तियाज़ दिया है, तो (अब) जो कुछ मैंने तुमको अ़ता किया है उसको लो और शुक्र करो। **(144)** और हमने चन्द तख़्तियों पर हर क़िस्म की (ज़रूरी) नसीहत और (ज़रूरी अहकाम के मुताल्लिक़) हर चीज़ की तफ़सील उनको लिखकर दी, तो उनको कोशिश के साथ (ख़ुद भी) अ़मल में लाओ और अपनी क़ौम को (भी) हुक्म करो कि उनके अच्छे-अच्छे अहकाम पर अ़मल करें, मैं अब बहुत जल्द तुम लोगों को उन बेहुक्मों का मक़ाम दिखलाता हूँ।[4] **(145)** मैं ऐसे लोगों को अपने अहकाम से बरगश्ता "यानी विमुख" ही रखूँगा जो दुनिया में तकब्बुर करते हैं जिसका उनको कोई हक़ हासिल नहीं,[5] और अगर तमाम निशानियाँ देख लें तब भी उनपर ईमान न लाएँ, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा न बनाएँ, और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा बना लें।[6] यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा बतलाया और उनसे ग़ाफ़िल रहे। **(146)** और ये लोग जिन्होंने हमारी आयतों को और क़ियामत के पेश आने को झुठलाया, उनके सब काम ग़ारत गए, उनको वही सज़ा दी जाएगी जो कुछ ये करते थे। **(147)** ❖

और मूसा की क़ौम ने उनके बाद अपने (क़ब्ज़े में मौजूद) ज़ेवरों का एक बछड़ा ठहरा लिया[7] जो कि एक क़ालिब "यानी ढाँचा और साँचा" था जिसमें एक आवाज़ थी। क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे बात तक नहीं करता था, और न उनको कोई राह बतलाता था, उसको उन्होंने (माबूद) क़रार दिया और बड़ा बेढंगा काम किया। **(148)** और जब शर्मिन्दा हुए और मालूम हुआ कि वाक़ई वे लोग गुमराही में पड़ गए तो कहने

---

1. हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से हक़ तआ़ला ने कलाम फ़रमाया, मगर यह कि उसकी हक़ीक़त क्या थी, अल्लाह ही को मालूम है। जिन अ़क़्ली गुमानों की शरीअ़त नफ़ी न करे उन सबके क़ायल होने की गुन्जाइश है, लेकिन बिना दलील यक़ीन का न होना ज़्यादा एहतियात की राह है।

2. मूसा अ़लैहिस्सलाम का दीदार की दरख़्वास्त करना दुनिया में उसके अ़क़्ली तौर पर मुम्किन होने पर, और हक़ तआ़ला का जवाब शरई तौर पर उसकी मुमानअ़त की दलील है। और अहले सुन्नत वल् जमाअ़त (यानी हक़ पर क़ायम जमाअ़त) का यही मज़हब है।

3. मूसा अ़लैहिस्सलाम की बेहोशी उनपर तजल्ली फ़रमाने से न थी, क्योंकि ज़ाहिरन् 'लिल्ज-बलि' के ख़िलाफ़ है, बल्कि पहाड़ की यह हालत देखकर और फिर तजल्ली के मक़ाम यानी पहाड़ के साथ एक तरह से ताल्लुक़ और क़रीब होने से बेहोशी हुई।

4. इसमें ख़ुशख़बरी और वायदा है कि 'मिस्र' या 'शाम' पर जल्द ही क़ब्ज़ा हुआ चाहता है। मक़सूद इससे इताअ़त का शौक़ दिलाना है, कि अल्लाह के अहकाम की इताअ़त की ये बरकतें हैं।

5. क्योंकि अपने को बड़ा समझना उसका हक़ है जो हक़ीक़त में बड़ा हो, और वह एक ख़ुदा की ज़ात है।

6. यानी हक़ के क़ुबूल न करने से फिर दिल सख़्त हो जाता है और बरगश्तगी (विमुखता) इस हद तक पहुँच जाती है।

7. इसका क़िस्सा सूरः 'ता-हा' में है।

ल-इल्लम् यर्हम्ना रब्बुना व यग़्फ़िर् लना ल-नकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन **(149)** व लम्मा र-ज-अ् मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न् क़ा-ल बिअ्-समा ख़लफ़्तुमूनी मिम्-बअ्दी अ-अ़जिल्तुम् अम्-र रब्बिकुम् व अल्क़ल्-अल्वा-ह व अ-ख़-ज़ बिरअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू इलैहि, क़ालब्-न उम्-म इन्नल् क़ौमस्तज़्अफ़ूनी व कादू यक़्तुलू-ननी फ़ला तुश्मित् बियल्-अअ्दा-अ व ला तज्अल्नी मअल् क़ौमिज़्-ज़ालिमीन **(150)** क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व लि-अख़ी व अद्ख़िल्ना फ़ी रह्मति-क व अन्-त अर्हमुर्-राहिमीन **(151)** ❖

इन्नल्लज़ीनत्त-ख़ज़ुल्- अिज्-ल स-यनालुहुम् ग़-ज़बुम् मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िल्-हयातिद्दुन्या, व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुफ़्तरीन **(152)** वल्लज़ी-न अ़मिलुस्सय्यिआति सुम्-म ताबू मिम्-बअ्दिहा व आमनू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम **(153)** व लम्मा स-क-त अ़म्-मूसल्-ग़-ज़बु अ-ख़ज़ल्-अल्वा-ह व फ़ी नुस्ख़ातिहा हुदंव्-व रह्मतुल्-लिल्लज़ी-न हुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून **(154)** वख़्ता-र मूसा क़ौमहू सब्औ़-न रजुलल् लिमीक़ातिना फ़-लम्मा अ-ख़ज़त्हुमुर्रज्-फ़तु क़ा-ल रब्बि लौ शिअ्-त अह्लक्तहुम् मिन् क़ब्लु व इय्या-य, अतुह्लिकुना बिमा फ़-अ़लस्सु-फ़हा-उ मिन्ना इन् हि-य इल्ला फ़ित्नतु-क, तुज़िल्लु बिहा मन् तशा-उ व तह्दी मन् तशा-उ, अन्-त वलिय्युना फ़ग़्फ़िर् लना वर्हम्ना व

قال الملا ٩ ١٥٣ الاعراف ٧

حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ
وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۘ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ۝ وَلَمَّا
سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِن لَّمْ
يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَمَّا رَجَعَ
مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي
مِن بَعْدِي ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ
بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي
وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي
رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ
سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ
نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۝ وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن
بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَلَمَّا
سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا
هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ۝ وَاخْتَارَ مُوسَىٰ
قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ

منزل٢

लगे कि अगर हमारा रब हमपर रहम न करे और हमारा (यह) गुनाह माफ़ न करे तो हम बिलकुल गए गुज़रे।[1] **(149)** और जब मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आए गुस्से और रंज में भरे हुए,[2] तो फ़रमाया तुमने मेरे बाद यह बड़ी नामाकूल हरकत की। क्या अपने रब का हुक्म (आने) से पहले ही तुमने जल्दबाज़ी कर ली? और (जल्दी में) तख़्तियाँ एक तरफ़ रखीं[3] और अपने भाई का सर पकड़कर उनको अपनी तरफ़ घसीटने लगे। (हारून ने) कहा कि ऐ मेरे माँ-जाये (भाई!) इन लोगों ने मुझको बेहक़ीक़त समझा और क़रीब था कि मुझको क़त्ल कर डालें, तो तुम मुझपर (सख़्ती करके) दुश्मनों को मत हँसाओ, और मुझको इन ज़ालिमों के साथ मत शुमार करो। **(150)** (मूसा ने) कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी ख़ता माफ़ फ़रमा दे और मेरे भाई की भी, और हम दोनों को अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमाइए, और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं। **(151)** ❖

बेशक जिन लोगों ने गौसाला-परस्ती की है, उनपर बहुत जल्द उनके रब की तरफ़ से ग़ज़ब और ज़िल्लत इस दुनियावी ज़िन्दगी में ही पड़ेगी, और हम बोहतान बाँधने वालों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। **(152)** और जिन लोगों ने गुनाह के काम किए फिर वे उनके बाद तौबा कर लें और ईमान ले आयें तो तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद गुनाह का माफ़ कर देने वाला, रहमत करने वाला है। **(153)** और जब मूसा का गुस्सा ख़त्म हुआ तो (उन) तख़्तियों को उठा लिया[4] और उनके मज़ामीन में उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते थे हिदायत और रहमत थी। **(154)** और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने सत्तर आदमी अपनी क़ौम में से हमारे

---

1. चुनाँचे ख़ास तरीक़े से उनको तौबा को मुकम्मल करने का हुक्म हुआ, जिसका क़िस्सा सूरः ब-क़रः आयत 'फ़क़्तुलू अन्फ़ु-सकुम्' में गुज़रा है।

2. क्योंकि उनको वह्य से यह मालूम हो गया था।

3. और जल्दी में ऐसे ज़ोर से रखी गईं कि देखने वाले को अगर ग़ौर न करे तो शुब्हा हो कि जैसे किसी ने पटख़ दी हों।

4. मूसा अ़लैहिस्सलाम का गुस्सा अल्लाह के लिए था। उसकी मिसाल 'सुक्र मिनल मुबाह' (यानी जायज़ और हलाल चीज़ से नशे या बेहोशी की कैफ़ियत) जैसी है, जिसमें आदमी मुकल्लफ़ नहीं रहता। उसपर दूसरे शख़्स के गुस्से को जो नफ़्स के वास्ते हो क़ियास नहीं कर सकते बल्कि उसकी हालत 'सुक्र मिनल हराम' (यानी किसी हराम चीज़ से नशे व ख़ुमार की कैफ़ियत) जैसी है, जिसको शरीअ़त में उज़्र क़रार नहीं दिया गया। और फिर आ़दतन् मुम्किन है कि ज़्यादा मश्ग़ूली की वजह से ख़्याल ही न रहा हो कि मेरे हाथ में क्या है, और भाई को पकड़ने और पूछताछ करने के लिए हाथ ख़ाली करना हो, इसलिए तख़्तियों के 'इल्क़ा-ए-अल्वाह' (यानी तख़्तियों को डाल देने) का अ़मल हो गया हो। और बाज़ ने लिखा है कि इल्क़ा के मायने हैं 'जल्दी से रख देना', मजाज़न व तश्बीहन इल्क़ा से ताबीर किया।

अन्-त ख़ैरुल्ग़ाफ़िरीन **(155)** वक्तुब् लना फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल्आख़ि-रति इन्ना हुद्ना इलै-क, क़ा-ल अ़ज़ाबी उसीबु बिही मन् अशा-उ व रह़्मती वसिअ़त् कुल्-ल शैइन्, फ़-सअक्तुबुहा लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न व युअ्तूनज़्ज़का-त वल्लज़ी-न हुम् बिआयातिना युअ्मिनून **(156)** अल्लज़ी-न यत्तबिअूनर्रसूलन्नबिय्यल् उम्मिय्यल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबन् अिन्दहुम् फ़ित्तौराति वल्-इन्जीलि यअ्मुरुहुम् बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हाहुम् अ़निल्-मुन्करि व युहिल्लु लहुमुत्तय्यिबाति व युहर्रिमु अ़लैहिमुल् ख़बाइ-स व य-ज़अु अ़न्हुम् इस्रहुम् वल्अग़्लालल्लती कानत् अ़लैहिम्, फ़ल्लज़ी-न आमनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व न-सरूहु वत्त-बअुन्-नूरल्लज़ी उन्ज़ि-ल म-अ़हू उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून **(157)** ❖

कुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी-अ़निल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ला इला-ह इल्ला हु-व युह़्यी व युमीतु फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहिन्-नबिय्यिल् उम्मिय्यिल्लज़ी युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअूहु लअ़ल्लकुम् तह्तदून **(158)** व मिन् क़ौमि मूसा उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्दिलून **(159)** व क़त्तअ्नाहुमुस्नतै अश्र-त अस्बातन् उ-ममन्, व औहैना इला मूसा इज़िस्तस्क़ाहु क़ौमुहू अनिज़्रिब् बिअ़साकल् ह-ज-र फ़म्ब-जसत् मिन्हुस्नता अ़श्र-त अ़ैनन्, क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम् मश्र-बहुम्, व ज़ल्लल्ना अ़लैहिमुल् ग़मा-म व

رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ۚ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۚ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَ
تَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ۚ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ
الْغٰفِرِيْنَ ۝ وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ
اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ
وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ
النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ
وَالْاِنْجِيْلِ ۫ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ
يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ
اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ
وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ ع
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ۣ الَّذِيْ لَهٗ
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ
وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ

मुक़र्ररा वक़्त (पर लाने) के लिए चुने,[1] सो जब उनको ज़लज़ले (वग़ैरह) ने आ पकड़ा तो (मूसा) अ़र्ज़ करने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! अगर आपको यह मन्ज़ूर होता तो आप इससे पहले ही इनको और मुझको हलाक कर देते, कहीं आप हममें के चन्द बेवकूफ़ों की हरकत पर सबको हलाक कर देंगे? यह सिर्फ़ आपकी तरफ़ से एक इम्तिहान है, और इन (इम्तिहानों) से जिसको आप चाहें गुमराही में डाल दें और जिसको आप चाहें हिदायत पर क़ायम रखें, आप ही तो हमारे ख़बरगीरी करने वाले हैं। हमपर मग़्फ़िरत और रहमत फ़रमाइए, और आप सब माफ़ी देने वालों से ज़्यादा हैं। **(155)** और हम लोगों के नाम दुनिया में भी नेक हालत पर रहना लिख दीजिए और आख़िरत में भी हम आपकी तरफ़ रुजू करते हैं। (अल्लाह तआ़ला) ने फ़रमाया कि मैं अपना अ़ज़ाब तो उसी पर करता हूँ जिसपर चाहता हूँ और मेरी रहमत तमाम चीज़ों को घेरे हुए है। तो वह रहमत उन लोगों के नाम तो ज़रूर ही लिखूँगा जो अल्लाह तआ़ला से डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो कि हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।[2] **(156)** जो लोग ऐसे रसूल नबी उम्मी की इत्तिबा करते हैं जिनको वे लोग अपने पास तौरात व इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, (जिनकी सिफ़त यह भी है) कि वह उनको नेक बातों का हुक्म फ़रमाते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं, और पाकीज़ा चीज़ों को उनके लिए हलाल बतलाते हैं और गन्दी चीज़ों को (बदस्तूर) उनपर हराम फ़रमाते हैं, और उन लोगों पर जो बोझ और तौक़ "यानी बेड़ियाँ" थे उनको दूर करते हैं, सो जो लोग उन (नबी मौसूफ़) पर ईमान लाते हैं और उनकी हिमायत करते हैं और उनकी मदद करते हैं, और उस नूर की इत्तिबा करते हैं जो उनके साथ भेजा गया है,[3] ऐसे लोग पूरी फ़लाह पाने वाले हैं। **(157)** ❖

आप कह दीजिए कि ऐ (दुनिया-जहान के) लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का भेजा हुआ (पैग़म्बर) हूँ जिसकी बादशाही है तमाम आसमानों और ज़मीन में, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है। सो (ऐसे) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके (ऐसे) नबी उम्मी पर (भी) जो कि (खुद) अल्लाह पर और उसके अहकाम पर ईमान रखते हैं,[4] और उन (नबी) की पैरवी करो ताकि तुम सही रास्ते पर आ जाओ। **(158)** और मूसा की क़ौम में एक जमाअ़त ऐसी भी है जो (दीने) हक़ के मुवाफ़िक़ हिदायत करते हैं और उसी के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ भी करते हैं।[5] **(159)** और हमने उनको बारह

1. जब गौसाला का क़िस्सा तमाम हुआ तो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इत्मीनान से तौरात के अहकाम सुनाए। उन लोगों की शुब्हात निकालने की आ़दत थी ही, चुनाँचे उसमें भी शुब्हा निकाला कि हमको यह कैसे मालूम हो कि ये अल्लाह तआ़ला के अहकाम हैं। हमसे अल्लाह तआ़ला खुद कह दें तो यक़ीन किया जाए। आपने हक़ तआ़ला से अ़र्ज़ किया। वहाँ से हुक्म हुआ कि उनमें के कुछ आदमी जिनको ये लोग मोतबर समझते हों चुन करके उनको तूर पहाड़ पर ले आओ, हम उनसे खुद कह देंगे कि ये हमारे अहकाम हैं। और उनके लाने के लिए एक वक़्त तय किया गया।

2. तक़्वा और ज़कात व ईमान में सीमित करना मक़सूद नहीं, हर बाब का एक अ़मल नमूने के तौर पर ज़िक्र फ़रमा दिया। मतलब यह है कि अहकाम की इताअ़त करते हैं, फिर जिस दर्जे की इताअ़त होगी उसी दर्जे की रहमत होगी।

3. इससे क़ुरआन मुराद है।

4. यानी बावजूद इस बड़े रुतबे के उनको अल्लाह पर और सब रसूलों व किताबों पर ईमान से आ़र और शर्म नहीं, तो तुमको अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने से क्यों इनकार है?

5. इससे अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह मुराद हैं। और इससे यह भी मालूम हुआ कि आपकी नुबुव्वत जैसे दलीलों की शहादत से साबित है इसी तरह अहले इल्म की शहादत से भी ताईद पाई हुई है।

अन्ज़ल्ना अ़लैहिमुल् मन्-न वस्सल्वा, कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम्, व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(160)** व इज़् क़ी-ल लहुमुस्कुनू हाज़िहिल्क़र्य-त व कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् व क़ूलू हित्ततुंव्-वद्खुलुल्-बा-ब सुज्जदन् नग़्फ़िर् लकुम् ख़तीआतिकुम्, स-नज़ीदुल्-मुह्सिनीन **(161)** फ़-बद्दलल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रिज्ज़म्- मिनस्-समा-इ बिमा कानू यज़्लिमून **(162)** ❖

वस्अल्हुम् अ़निल्क़र्यतिल्लती कानत् हाज़ि-रतल्- बह्रि ✣ इज़् यअ्दू-न फ़िस्सब्ति इज़् तअ्तीहिम् हीतानुहुम् यौ-म सब्तिहिम् शुर्रअंव्-व यौ-म ला यस्बितू-न ला तअ्तीहिम् कज़ालि-क नब्लूहुम् बिमा कानू यफ़्सुक़ून ● **(163)** व इज़् क़ालत् उम्मतुम्- मिन्हुम् लि-म तअ़िज़ू-न क़ौ-मनिल्लाहु मुह्लिकुहुम् औ मुअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन्, क़ालू मअ्ज़ि-रतन् इला रब्बिकुम् व लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून **(164)** फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही अन्जैनल्लज़ी-न यन्हौ-न अ़निस्सू-इ व अख़ज़्नल्लज़ी-न ज़-लमू बिअ़ज़ाबिम् बईसिम्-बिमा कानू यफ़्सुक़ून **(165)** फ़-लम्मा अ़तौ अ़म्मा नुहू अ़न्हु क़ुल्ना लहुम् कूनू कि-र-दतन् ख़ासिईन **(166)** व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बु-क लयब्अ़-सन्-न अ़लैहिम् इला यौमिल्- क़ियामति मंय्यसूमुहुम्

قال الملا ٩ — ١٦١ — الاعراف ٧

بالحق وبه يعدلون ۝ وقطعنهم اثنتي عشرة اسباطا امما ۚ و
اوحينا الى موسى اذ استسقىه قومه ان اضرب بعصاك
الحجر ۚ فانبجست منه اثنتا عشرة عينا ۚ قد علم كل اناس
مشربهم ۚ وظللنا عليهم الغمام وانزلنا عليهم المن و
السلوى ۚ كلوا من طيبت ما رزقنكم ۚ وما ظلمونا ولكن كانوا
انفسهم يظلمون ۝ واذ قيل لهم اسكنوا هذه القرية وكلوا
منها حيث شئتم وقولوا حطة وادخلوا الباب سجدا نغفر
لكم خطيئتكم ۚ سنزيد المحسنين ۝ فبدل الذين ظلموا منهم
قولا غير الذي قيل لهم فارسلنا عليهم رجزا من السماء
بما كانوا يظلمون ۝ وسئلهم عن القرية التي كانت حاضرة
البحر ۘ اذ يعدون في السبت اذ تاتيهم حيتانهم يوم سبتهم
شرعا ويوم لا يسبتون ۙ لا تاتيهم ۛ كذلك ۛ نبلوهم بما كانوا
يفسقون ۝ واذ قالت امة منهم لم تعظون قوما الله
مهلكهم او معذبهم عذابا شديدا ۭ قالوا معذرة الى ربكم
ولعلهم يتقون ۝ فلما نسوا ما ذكروا به انجينا الذين ينهون
عن السوء واخذنا الذين ظلموا بعذاب بئيس بما كانوا

منزل

ख़ानदानों में बाँट करके सबकी अलग-अलग जमाअ़त मुक़र्रर कर दी।[1] और (एक इनाम यह किया कि) हमने मूसा को हुक्म दिया जबकि उनकी क़ौम ने पानी माँगा कि अपनी लाठी को (फ़लाँ) पत्थर पर मारो, (बस मारने की देर थी) फ़ौरन उससे बारह चश्मे फूट निकले, (चुनाँचे) हर-हर शख़्स ने अपने पानी पीने का मौक़ा "यानी जगह" मालूम कर लिया। और (एक इनाम यह किया कि) हमने उनपर बादल से साया किया, और (एक इनाम यह किया कि) उनको तुरन्जबीन "यानी एक क़िस्म की क़ुदरती शक्र" और बटेरें पहुँचाईं, (और इजाज़त दी कि) खाओ पाक चीज़ों से जो कि हमने तुमको दी हैं, और उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया लेकिन अपना ही नुक़सान करते थे।[2] **(160)** और (वह ज़माना याद करो) जब उनको हुक्म दिया कि तुम लोग उस आबादी में जाकर रहो, और खाओ उससे जिस जगह से तुम्हारा दिल चाहे, और (ज़बान से) कहते जाना कि तौबा है (तौबा है) और (आ़जिज़ी से) झुके-झुके दरवाज़े में दाख़िल होना, हम तुम्हारी (पिछली) ख़ताएँ माफ़ कर देंगे (यह तो सबके लिए होगा और) जो नेक काम करेंगे उनको और भी ज़्यादा देंगे। **(161)** सो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक और कलिमा जो ख़िलाफ़ था उस (कलिमे) के जिसकी उनसे फ़रमाइश की गई थी, (इसपर) हमने उनपर एक आसमानी आफ़त भेजी, इस वजह से कि वे हुक्म को ज़ाया करते थे। **(162)** ❖

और आप इन (अपने ज़माने के यहूदी) लोगों से (तंबीह के तौर पर) उस बस्ती[3] (वालों) का जो कि दरिया-ए-शोर के क़रीब आबाद थे, (उस वक़्त का) हाल पूछिए, जबकि वे हफ़्ता "शनिवार" के बारे में (शरई) हद से निकल रहे थे, जबकि उनके हफ़्ते "शनिवार" के दिन उन (के दरिया) की मछलियाँ ज़ाहिर हो-होकर उनके सामने आती थीं, और जब हफ़्ते "शनिवार" का दिन न होता तो उनके सामने न आती थीं। हम उनकी इस तरह पर (सख़्त) आज़माइश करते थे, इस सबब से कि वे (पहले से) बेहुक्मी किया करते थे। ● **(163)** और (उस वक़्त का हाल पूछिए) जबकि उनमें से एक जमाअ़त ने (यूँ) कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जाते हो जिनको अल्लाह तआ़ला (बिलकुल) हलाक करने वाले हैं या उनको सख़्त सज़ा देने वाले हैं? उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे (और अपने) रब के सामने उज़्र करने के लिए, और (साथ ही) इसलिए कि शायद ये डर जाएँ।[4] **(164)** सो (आख़िर) जब वे उस अम्र "यानी बात और हुक्म" को छोड़े ही रहे जो उनको समझाया जाता था, (यानी न माना) तो हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो उस बुरी बात से मना किया करते थे, और उन लोगों को जो (ज़िक्र हुए हुक्म में) ज़्यादती करते थे एक सख़्त अ़ज़ाब में पकड़ लिया, इस वजह से कि वे नाफ़रमानी किया करते थे। **(165)** (यानी) जिस काम से उनको मना किया गया था

1. और हर एक पर एक सरदार निगरानी के लिए मुक़र्रर कर दिया जिनका ज़िक्र सूरः मा-इदः के रुकूअ़ नम्बर तीन में है, 'व बअ़स्ना मिन्हुमुस्नै अ़-श-र नक़ीबन्'।

2. ये वाक़िआ़त वादी-ए-तीह के हैं। इनकी तफ़सील सूरः ब-क़रः में गुज़र चुकी।

3. उस बस्ती का नाम अक्सर ने ईला लिखा है। समुद्र के क़रीब होने की वजह से ये लोग मछली पकड़ने के शौक़ीन थे।

4. जब नसीहत के असरदार होने की बिलकुल उम्मीद न हो तो नसीहत करना वाजिब नहीं रहता। अगर फिर भी नसीहत करे तो यह बुलन्द हिम्मती है। पस जिस जमाअ़त ने यूँ कहा कि 'तुम क्यों नसीहत किए जाते हो' नाउम्मीद होने की वजह से वाजिब न होने पर अ़मल किया। और जिस जमाअ़त ने यह कहा कि 'तुम्हारे और अपने रब के सामने उज़्र करने के लिए' तो या तो उनको नाउम्मीदी नहीं हुई या बुलन्द हिम्मती वाले पहलू को इख़्तियार किया। ग़रज़ दोनों सही थे और दोनों के नजात पाने को हज़रत इक्रमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने निकाला और साबित किया, और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पसन्द करके उनको इनाम भी दिया।

सूअल्- अ़ज़ाबि, इन्-न रब्ब-क ल-सरीअुल्-अि़क़ाबि व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्रहीम **(167)** व क़त्तअ़्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि उ-ममन् मिन्हुमुस्सालिहू-न व मिन्हुम् दू-न ज़ालि-क व बलौनाहुम् बिल्ह-सनाति वस्सय्यिआति लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून **(168)** फ़-ख़-ल-फ़ मिम्-बअ़्दिहिम् ख़ल्फ़ुंव्वरिसुल्-किता-ब यअ्ख़ुज़ू-न अ़-र-ज़ हाज़ल्-अद्ना व यक़ूलू-न सयुग़्फ़रु लना व इंय्यअ्तिहिम् अ़-रज़ुम् मिस्लुहू यअ्ख़ुज़ूहु, अलम् युअ्ख़ज़् अ़लैहिम् मीसाक़ुल्-किताबि अल्ला यक़ूलू अ़लल्लाहि इल्लल्हक़्-क़ व द-रसू मा फ़ीहि, वद्दारुल् आख़िरतु ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(169)** वल्लज़ी-न युमस्सिकू-न बिल्किताबि व अक़ामुस्-सला-त, इन्ना ला नुज़ीअु अज्रल् मुस्लिहीन **(170)** व इज़् न-तक़्नल् ज-ब-ल फ़ौक़हुम् क-अन्नहू ज़ुल्लतुंव्-व ज़न्नू अन्नहू वाक़िअुम् बिहिम् ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून **(171)** ❖

व इज़् अ-ख़-ज़ रब्बु-क मिम्-बनी आद-म मिन् ज़ुहूरिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम् व अश्ह-दहुम् अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अलस्तु बिरब्बिकुम् क़ालू बला, शहिद्ना अन् तक़ूलू यौमल्-क़ियामति इन्ना

يفسقون ۝ فلما عتوا عن ما نهوا عنه قلنا لهم كونوا قردة
خاسئين ۝ وإذ تأذن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيمة
من يسومهم سوء العذاب إن ربك لسريع العقاب ۖ و
إنه لغفور رحيم ۝ وقطعنهم في الأرض أمما منهم
الصلحون ومنهم دون ذلك وبلونهم بالحسنت والسيات
لعلهم يرجعون ۝ فخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتب
يأخذون عرض هذا الأدنى ويقولون سيغفر لنا وإن
يأتهم عرض مثله يأخذوه ألم يؤخذ عليهم ميثاق
الكتب أن لا يقولوا على الله إلا الحق ودرسوا ما فيه و
الدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ۝ والذين
يمسكون بالكتب وأقاموا الصلوة إنا لا نضيع أجر
المصلحين ۝ وإذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة وظنوا
أنه واقع بهم خذوا ما أتينكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم
تتقون ۝ وإذ أخذ ربك من بني آدم من ظهورهم ذريتهم
وأشهدهم على أنفسهم ألست بربكم قالوا بلى شهدنا
أن تقولوا يوم القيمة إنا كنا عن هذا غفلين ۝

जब वे उसमें हद से निकल गए तो हमने उनको (ग़ज़ब और गुस्से से) कह दिया कि तुम ज़लील बन्दर बन जाओ। **(166)** और (वह वक़्त याद करना चाहिए) जब आपके रब ने (यह बात) बतला दी कि वह उन (यहूद) पर क़ियामत (के क़रीब) तक ऐसे (किसी-न-किसी) शख़्स को ज़रूर मुसल्लत करता रहेगा जो उनको सख़्त सज़ाओं की तकलीफ़ पहुँचाता रहेगा,[1] बेशक आपका रब वाक़ई (जब चाहे) जल्द ही सज़ा दे देता है, और बेशक वह (अगर कोई बाज़ आ जाए तो) बड़ी ही मग़्फ़िरत (और) बड़ी ही रहमत वाला (भी) है **(167)** और हमने दुनिया में उनकी अलग-अलग जमाअ़तें कर दीं, बाज़े उनमें नेक थे और बाज़े उनमें और तरह के थे (यानी बुरे), और हम उनको ख़ुशहालियों (सेहत और मालदारी) और बदहालियों (बीमारी और तंगी) से आज़माते रहे, शायद कि बाज़ आ जाएँ।[2] **(168)** फिर उनके बाद ऐसे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए कि किताब (तौरात) को उनसे हासिल किया, इस ज़लील दुनिया का माल व सामान ले लेते हैं, और (इस गुनाह को मामूली समझकर) कहते हैं कि हमारी ज़रूर मग़्फ़िरत हो जाएगी, हालाँकि अगर उनके पास (फिर) वैसा ही माल व सामान (दीन बेचने के बदले) आने लगे तो उसको ले लेते हैं। क्या उनसे (इस) किताब (के इस मज़मून) का अ़हद नहीं लिया गया कि ख़ुदा की तरफ़ सिवाय हक़ बात के और किसी बात की निस्बत न करें? और उन्होंने उस (किताब) में जो कुछ था उसको पढ़ (भी) लिया, और आख़िरत वाला घर उन लोगों के लिए (इस दुनिया से) बेहतर है जो (इन बुरे अ़क़ीदों और आमाल से) परहेज़ रखते हैं, क्या फिर (ऐ यहूद) तुम नहीं समझते? **(169)** और (उनमें से) जो लोग किताब के पाबन्द हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो अपना सुधार और दुरुस्ती करें सवाब ज़ाया न करेंगे। **(170)** और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जब हमने पहाड़ को उठाकर छत की तरह उनके ऊपर (लटका हुआ) कर दिया और उनको यक़ीन हुआ कि अब उनपर गिरा,[3] (और कहा कि जल्दी) क़बूल करो जो किताब हमने तुमको दी है, (यानी तौरात और) मज़बूती के साथ (क़बूल करो) और याद रखो जो अहकाम उसमें हैं, जिससे उम्मीद है कि तुम मुत्तक़ी बन जाओ। **(171)** ❖

और जबकि आपके रब ने आदम की औलाद की पुश्त से उनकी औलाद को निकाला, और उनसे उन्हीं के मुताल्लिक़ इक़रार लिया[4] कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सबने जवाब दिया कि क्यों नहीं, हम सब (इस हक़ीक़त के) गवाह बनते हैं, ताकि तुम लोग क़ियामत के दिन (यूँ न) कहने लगो कि हम तो इस (तौहीद) से (बिलकुल) बेख़बर थे। **(172)** या (यूँ) कहने लगो कि (असल) शिर्क तो हमारे बड़ों ने किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए, सो क्या उन ग़लत राह (निकालने) वालों के फ़ेल पर आप हमको तबाही में

---

1. यानी ज़िल्लत व रुस्वाई और मातहती। चुनाँचे मुद्दत से यहूदी किसी न किसी हुकूमत के मातहत और नाराज़गी का शिकार ही चले आते हैं।
2. क्योंकि कभी नेकियों से तरग़ीब (यानी शौक़) हो जाती है और कभी बुराइयों से डराना और ख़ौफ़ दिलाना हो जाता है।
3. छत के साथ तश्बीह (उपमा) सर के ऊपर होने में है, लटका हुआ होने में नहीं।
4. यह रूहों के आ़लम में हुए अ़हद का बयान है।

कुन्ना अ़न् हाज़ा ग़ाफ़िलीन **(172)** औ तक़ूलू इन्नमा अश्र-क आबाउना मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम्-मिम्-बअ्दिहिम् अ-फ़तुह्लिकुना बिमा फ़-अ़लल्-मुब्तिलून **(173)** व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून **(174)** वत्लु अ़लैहिम् न-बअल्लज़ी आतैनाहु आयातिना फ़न्स-ल-ख़ मिन्हा फ़-अत्ब-अ़हुश्शैतानु फ़का-न मिनल्-ग़ावीन **(175)** व लौ शिअ्ना ल-रफ़अ्नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख़्ल-द इलल्अर्ज़ि वत्त-ब-अ़ हवाहु फ़-म-सलुहू क-म-सलिल्कल्बि इन् तह्मिल् अ़लैहि यल्हस् औ तत्रुक्हु यल्हस्, ज़ालि-क म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़क़्सुसिल् क़-स-स लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून **(176)** सा-अ म-स-ल-निल्क़ौमुल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व अन्फ़ु-सहुम् कानू यज़्लिमून **(177)** मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्- मुह्तदी व मंय्युज़्लिल् फ़उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(178)** व ल-क़द् ज़रअ्ना लि-जहन्न-म कसीरम् मिनल्-जिन्नि वल्इन्सि लहुम् क़ुलूबुल्-ला यफ़्क़हू-न बिहा व लहुम् अअ्युनुल्-ला युब्सिरू-न बिहा व लहुम् आज़ानुल्-ला यस्मअ़ू-न बिहा, उलाइ-क कल्अन्आमि बल् हुम् अज़ल्लु, उलाइ-क हुमुल्-ग़ाफ़िलून **(179)** व लिल्लाहिल्-अस्माउल्- हुस्ना फ़द्अ़ूहु बिहा व ज़रुल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी अस्माइही, सयुज्ज़ौ-न मा कानू यअ्मलून **(180)** व मिम्-मन् ख़लक़्ना उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्दिलून **(181)** ❖

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْ
بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ
اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝
وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ
هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ
تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ سَآءَ مَثَلَا ۨ الْقَوْمُ
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝ مَنْ يَّهْدِ
اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝
وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ
لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ
لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْغٰفِلُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۡ وَذَرُوا
الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ

डाले देते हैं। **(173)** और हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं, और ताकि वे बाज़ आ जाएँ।[1] **(174)** और उन लोगों को उस शख़्स का हाल पढ़कर सुनाइए कि उसको हमने अपनी आयतें दीं,[2] फिर वह उनसे बिलकुल ही निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लग लिया, सो वह गुमराह लोगों में (दाख़िल) हो गया। **(175)** और अगर हम चाहते तो उसको उन (आयतों) की बदौलत बुलन्द (रुतबे वाला) कर देते,[3] लेकिन वह तो दुनिया की तरफ़ माइल हो गया और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी करने लगा। सो उसकी हालत कुत्ते की सी हो गई कि अगर तू उसपर हमला करे तब भी हाँपे या उसको छोड़ दे तब भी हाँपे। यही हालत (आ़म तौर पर) उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, सो आप उस हाल को बयान कर दीजिए, शायद वे लोग कुछ सोचें। **(176)** (हक़ीक़त में) उन लोगों की (हालत भी) बुरी हालत है, जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं, और (इस झुठलाने से) वे अपना (ही) नुक़सान करते हैं।[4] **(177)** जिसको अल्लाह हिदायत करता है सो हिदायत पाने वाला वही होता है, और जिसको वह गुमराह कर दे, सो ऐसे ही लोग (हमेशा के) घाटे में पड़ जाते हैं। **(178)** और हमने ऐसे बहुत-से जिन्न और इनसान दोज़ख़ के लिए पैदा किए हैं, जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे नहीं समझते, और जिनकी आँखें ऐसी हैं जिनसे नहीं देखते, और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते, ये लोग जानवरों की तरह हैं, बल्कि ये लोग ज़्यादा बेराह हैं, ये लोग ग़ाफ़िल हैं। **(179)** और अच्छे-अच्छे नाम अल्लाह तआ़ला ही के लिए हैं, सो उन (नामों) से अल्लाह तआ़ला ही को पुकारा करो और ऐसे लोगों से ताल्लुक़ भी न रखो जो उसके नामों में ग़लत रास्ता इख़्तियार करते हैं। उन लोगों को उनके किए की ज़रूर सज़ा मिलेगी। **(180)** और हमारी मख़्लूक़ (जिन्न और इनसान) में एक जमाअ़त ऐसी भी है जो हक़ (यानी दीन इस्लाम) के मुवाफ़िक़ हिदायत करते हैं और उसी के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ भी करते हैं।[5] **(181)** ❖

---

1. ऊपर बनी इसराईल के हालात के दरमियान में उनका अल्लाह के अहकाम का मामूर होना और रूहों के आ़लमे अ़हद में तमाम आदमियों का तौहीद के लिए मामूर होने का ज़िक्र मक़सूद बनाकर और इन ज़िक्रशुदा का तौहीद व रिसालत के इनकार से उन किए हुए अ़हदों के ख़िलाफ़ करना ज़िम्नन मज़कूर हुआ था। आगे अहकाम को जानने के बाद उनके ख़िलाफ़ करने वाले की मिसाल बयान फ़रमाते हैं।
2. यानी अहकाम का इल्म दिया।
3. यानी अगर वह उन आयतों पर अ़मल करता जिसका तक़दीर से वाबस्ता होना एक मालूम चीज़ है तो उसकी क़बूलियत का रुतबा बढ़ता।
4. ऊपर गुमराह लोगों की हालत बयान फ़रमाई कि इसके बावजूद कि हिदायत का रास्ता उनपर वाज़ेह हो गया फिर भी मुख़ालफ़त और बैर को नहीं छोड़ते। चूँकि उनके इस बैर और मुख़ालफ़त से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सख़्त ग़म होता था इसलिए आगे आपकी तसल्ली का मज़मून है।
5. ऊपर मुश्रिकों के हक़ में 'उन लोगों को सज़ा ज़रूर मिलेगी' फ़रमाया था। चूँकि वह जज़ा उस वक़्त तक ज़ाहिर न हुई थी, इससे ज़ाहिर न होने का उनको शुब्हा हो सकता था। आगे उसके ज़ाहिर न होने की वजह बयान करके उस शुब्हा को ख़त्म फ़रमाते हैं।

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना सनस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ्लमून **(182)** व उम्ली लहुम् इन्-न कैदी मतीन **(183)** अ-व लम् य-तफ़क्करू मा बिसाहिबिहिम् मिन् जिन्नतिन्, इन् हु-व इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन **(184)** अ-व लम् यन्ज़ुरू फ़ी म-लकूतिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा ख़-लक़ल्लाहु मिन् शैइंव्-व अन् असा अंय्यकू-न क़दिक्त-र-ब अ-जलुहुम् फ़बिअय्यि हदीसिम्-बअ्दहू युअ्मिनून **(185)** मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़ला हादि-य लहू, व य-ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून **(186)** यस्अलून-क अनिस्सा-अति अय्या-न मुर्साहा, क़ुल् इन्नमा अिल्मुहा अिन्-द रब्बी ला युजल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हु-व ✣ सक़ुलत् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, ला तअ्तीकुम् इल्ला बग़्त-तन्, यस्अलून-क कअन्न-क हफ़िय्युन् अन्हा, क़ुल् इन्नमा अिल्मुहा अिन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून **(187)** क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़्अंव्-व ला ज़र्रन् इल्ला मा शाअल्लाहु, लौ कुन्तु अअ्-लमुल्-ग़ै-ब लस्तक्सर्तु मिनल्-ख़ैरि, व मा मस्सनियस्-सू-उ इन् अ-न इल्ला नज़ीरुंव्-व बशीरुल्- लिक़ौमिंय्युअ्मिनून **(188)** ❖

हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिंव्-व ज-अ-ल मिन्हा ज़ौजहा लियस्कु-न इलैहा फ़-लम्मा तग़श्शाहा ह-मलत् हम्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़-मर्रत् बिही फ़-लम्मा अस्-क़लद्-द-अवल्ला-ह रब्बहुमा ल-इन् आतैतना सालिहल् ल-नकूनन्-न मिनश्-शाकिरीन **(189)**

كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾ وَاُمْلِيْ
لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا مَا بِصَاحِبِهِمْ
مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى
اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾
مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۭ
قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾ قُلْ
لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ
اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْۗءُ ۚ
اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ
اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 23/7/13

और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं, हम उनको धीरे-धीरे लिए जा रहे हैं,[1] इस तरह पर कि उनको ख़बर भी नहीं।[2] (182) और उनको मैं मोहलत देता हूँ, इसमें कोई शक नहीं कि मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है।[3] (183) क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर न किया कि उनका जिनसे वास्ता है उनको ज़रा भी जुनून नहीं, वे तो सिर्फ़ एक (अ़ज़ाब से) साफ़-साफ़ डराने वाले हैं।[4] (184) और क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया आसमानों और ज़मीन के आ़लम में, और साथ ही दूसरी चीज़ों में जो अल्लाह तआ़ला ने पैदा की हैं, और इस बात में (भी ग़ौर नहीं किया) कि हो सकता है कि उनकी मुद्दत क़रीब ही आ पहुँची हो? फिर इस (कुरआन) के बाद कौन-सी बात पर ये लोग ईमान लाएँगे।[5] (185) जिसको अल्लाह तआ़ला गुमराह करे उसको कोई राह पर नहीं ला सकता (फिर ग़म करना बेकार है) और अल्लाह तआ़ला उनको उनकी गुमराही में भटकते हुए छोड़ देता है। (186) ये लोग आपसे क़ियामत के मुताल्लिक़ सवाल करते हैं कि वह कब आएगी, आप फ़रमा दीजिए कि उसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है,[6] उसके वक़्त पर उसको सिवाय उसके (यानी अल्लाह के) कोई और ज़ाहिर न करेगा,[7] वह आसमान और ज़मीन में बड़ा भारी (हादसा) होगा, इसलिए कि वह तुमपर बिलकुल अचानक आ पड़ेगी। वे आपसे (इस तरह) पूछते हैं (जैसे) गोया आप उसकी तहक़ीक़ात कर चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि उसका ख़ास इल्म अल्लाह ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।[8] (187) आप कह दीजिए कि मैं ख़ुद अपनी ख़ास ज़ात के लिए किसी नफ़े का इख़्तियार नहीं रखता और न किसी नुक़सान का, मगर इतना ही जितना ख़ुदा तआ़ला ने चाहा हो, और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो मैं बहुत-से मुनाफ़े हासिल कर लिया करता और कोई नुक़सान मुझको हरगिज़ न होता, मैं तो सिर्फ़ (शरई अहकाम बतला कर सवाब की) ख़ुशख़बरी देने वाला और (अ़ज़ाब से) डराने वाला हूँ, उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। (188) ❖

वह (अल्लाह तआ़ला) ऐसा क़ादिर व नेमतें देने वाला) है जिसने तुमको एकमात्र बदन (आदम) से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा (हव्वा अ़लैहस्सलाम को) बनाया, ताकि वह उस (अपने जोड़े) से उन्स हासिल करे। फिर जब मियाँ ने बीवी से क़ुरबत "निकटता" की तो उसको हल्का सा हमल "गर्भ" रह गया, सो वह उसको लिए हुए चलती फिरती रही, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों (मियाँ-बीवी) अल्लाह से जो कि उनका मालिक है दुआ़ करने लगे कि अगर आपने हमको सही (सालिम औलाद) दे दी तो हम ख़ूब शुक्रगुज़ारी करेंगे। (189) सो जब अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों को सही (सालिम औलाद) दे दी तो अल्लाह

1. यानी जहन्नम की तरफ़।
2. और 'ला यअ्लमू-न' के मायने यह हैं कि वे इस मोहलत को अपने तरीक़े के दुरुस्त होने पर गुमान करते हैं, और अल्लाह के यहाँ अपने महबूब व मक़बूल होने पर, हालाँकि वे जहन्नम तक की दूरी को तय कर रहे हैं।
3. हासिल यह कि उनकी शरारतों पर सख़्त सज़ा देना मन्ज़ूर है, इसलिए उसकी यह तदबीर की गई कि यहाँ कामिल पकड़ नहीं फ़रमाई।
4. हासिल यह कि अगर आपकी मजमूई हालत में ग़ौर करें तो आपकी पैग़म्बरी समझ में आ जाए।
5. हासिल यह कि न दीने हक़ तक पहुँचाने वाले यानी दलील की फ़िक्र है। और न इस पहुँचाने वाले के सहायक यानी मौत के ध्यान व ख़्याल का ज़िक्र है।
6. यानी दूसरे किसी को उसकी ख़बर नहीं।
7. और वह ज़ाहिर करना यह होगा कि उसको क़ायम कर देगा। उस वक़्त सबको पूरी ख़बर हो जाएगी।
8. बाज़ उलूम हक़ तआ़ला ने अपने इल्म के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ रखे हैं। अम्बिया को भी तफ़सील के साथ उनकी इत्तिला नहीं दी। इस आयत और मुस्लिम व बुख़ारी में मौजूद उस हदीस जिसमें यह कहा गया है कि उसके बारे में जिससे पूछा जा रहा है वह भी पूछने वाले से ज़्यादा नहीं जानता, से साफ़ मालूम होता है कि यक़ीन व तफ़सील के साथ क़ियामत की इत्तिला आपसे भी पोशीदा थी।

फ़-लम्मा आताहुमा सालिहन् ज-अ़ला लहू शु-रका-अ फ़ीमा आताहुमा फ़-तआ़लल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून **(190)** अयुश्रिकू-न मा ला यख़्लुक़ु शैअंव्-व हुम् युख़्लक़ून **(191)** व ला यस्ततीअ़ू-न लहुम् नस्रंव्-व ला अन्फ़ु-सहुम् यन्सुरून **(192)** व इन् तद्अ़ूहुम् इलल्हुदा ला यत्तबिअ़ूकुम्, सवाउन् अ़लैकुम् अ-दऔ़तुमूहुम् अम् अन्तुम् सामितून **(193)** इन्नल्लज़ी-न तद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि अि़बादुन् अम्सालुकुम् फ़द्अ़ूहुम् फ़ल्यस्तजीबू लकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(194)** अ-लहुम् अर्जुलुंय्यम्शू-न बिहा अम् लहुम् ऐदिंय्यब्तिशू-न बिहा अम् लहुम् अअ़्युनुंय्युब्सिरू-न बिहा अम् लहुम् आज़ानुंय्यस्मअ़ू-न बिहा, क़ुलिद्अ़ू शु-रका-अकुम् सुम्-म कीदूनि फ़ला तुन्ज़िरून **(195)** इन्-न वलिय्यि-यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल्-किता-ब व हु-व य-तवल्लस्सालिहीन **(196)** वल्लज़ी-न तद्अ़ू-न मिन् दूनिही ला यस्ततीअ़ू-न नस्रकुम् व ला अन्फ़ु-सहुम् यन्सुरून **(197)** व इन् तद्अ़ूहुम् इलल्हुदा ला यस्मअ़ू, व तराहुम् यन्ज़ुरू-न इलै-क व हुम् ला युब्सिरून **(198)** ख़ुज़िल्-अ़फ़्-व वअ़्मुर् बिल्अ़ुर्फ़ि व अअ़्रिज़् अ़निल्-जाहिलीन **(199)** व इम्मा यन्ज़ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि, इन्नहू समीअ़ुन् अ़लीम **(200)** इन्नल्लज़ीनत्तक़ौ इज़ा मस्सहुम् ताइ-फ़तुम्-मिनश्शैतानि तज़क्करू फ़-इज़ा हुम् मुब्सिरून **(201)** व इख़्वानुहुम् यमुद्दूनहुम् फ़िल्-ग़य्यि

الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا
فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ
يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ
يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ
سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ
لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ
اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ
فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾ اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ
يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٧﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى
لَا يَسْمَعُوْا وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٩٨﴾
خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿١٩٩﴾ وَاِمَّا
يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ

तआ़ला की दी हुई चीज़ में वे दोनों अल्लाह तआ़ला के शरीक क़रार देने लगे, सो अल्लाह तआ़ला पाक है उनके शिर्क से।[1] (190) क्या ऐसों को शरीक ठहराते हैं जो किसी चीज़ को बना न सकें और वे ख़ुद ही बनाए जाते हों। (191) और वे उनको किसी क़िस्म की मदद (भी) नहीं दे सकते, और वे ख़ुद अपनी भी मदद नहीं कर सकते। (192) और अगर तुम उनको कोई बात बतलाने को पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें।[2] तुम्हारे एतिबार से (दोनों बातें) बराबर हैं, चाहे तुम उनको पुकारो या तुम चुप रहो।[3] (193) वाक़ई तुम ख़ुदा को छोड़कर जिनकी इबादत करते हो वे भी तुम जैसे ही बन्दे हैं, सो तुम उनको पुकारो, फिर उनको चाहिए कि तुम्हारा कहना कर दें अगर तुम सच्चे हो। (194) क्या उनके पाँव हैं जिनसे वे चलते हैं, या उनके हाथ हैं जिनसे वे किसी चीज़ को थाम सकें, या उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते हों, या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों? आप (यह भी) कह दीजिए कि तुम अपने सब शरीकों को बुला लो, फिर मुझे नुक़सान पहुँचाने की तदबीर करो, फिर मुझको बिलकुल भी मोहलत मत दो। (195) यक़ीनन मेरा मददगार अल्लाह तआ़ला है जिसने यह किताब नाज़िल फ़रमाई, और वह (आ़म तौर पर) नेक बन्दों की मदद किया करता है। (196) और तुम जिन लोगों की ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते हो वे तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते, और न वे अपनी मदद कर सकते हैं। (197) और अगर उनको कोई बात बताने को पुकारो तो (उसको) न सुनें, और उनको आप देखते हैं कि (जैसे) वे आपको देख रहे हैं, और वे कुछ भी नहीं देखते।[4] (198) सरसरी बर्ताव को क़बूल कर लिया कीजिए और नेक काम की तालीम कर दिया कीजिए, और जाहिलों से एक किनारे हो जाया कीजिए।[5] (199) और अगर आपको शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा आने लगे तो अल्लाह तआ़ला की पनाह माँग लिया कीजिए,[6] बेशक वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (200) यक़ीनन जो लोग ख़ुदा से डरने वाले हैं, जब उनको शैतान की तरफ़ से कोई ख़तरा आ जाता है तो वे याद में लग जाते हैं, सो एक दम उनकी आँखे खुल जाती हैं। (201) और जो (शैतानों के ताबे या अधीन) हैं वे उनको गुमराही में खींचे

1. यहाँ तक तो हक़ तआ़ला की सिफ़तें ज़िक्र की गई थीं, जिनका तक़ाज़ा यह है कि माबूद होने का हक़दार सिर्फ़ वही है। आगे बातिल और झूठे माबूदों की कमियों और ख़ामियों का ज़िक्र है, जिनसे अच्छी तरह वाज़ेह हो जाता है कि वे माबूद बनने और बनाने के लायक़ नहीं हैं।
2. इसके दो मतलब हो सकते हैं, एक यह कि तुम उनको पुकारो कि वे तुमको कोई बात बतला दें, तो तुम्हारा कहना न करें यानी न बतलाएँ। और दूसरे इससे ज़्यादा यह कि तुम उनको पुकारो कि आओ हम तुमको कुछ बतला दें तो वे तुम्हारे कहने पर न चलें, यानी तुम्हारी बतलाई हुई बात पर अ़मल न कर सकें।
3. ख़ुलासा यह है कि जो काम सबसे ज़्यादा आसान है कि कोई बात बतलाने के लिए पुकारे तो सुन लेना, वे इस से आ़जिज़ हैं, तो जो इससे मुश्किल है कि अपनी हिफ़ाज़त करें। और फिर जो इससे भी ज़्यादा मुश्किल है कि दूसरों की इम्दाद करना, और फिर जो इन सबसे ज़्यादा दुश्वार है कि किसी चीज़ को पैदा करना, इससे तो और भी ज़्यादा आ़जिज़ होंगे। फिर ऐसे आ़जिज़ और मोहताज माबूद बनने के लायक़ कैसे हो सकते हैं?
4. ऊपर जाहिल मुश्रिकीन से एक बहस थी। चूँकि बावजूद इस बहस और दलील देने के भी वे लोग अपनी हद दर्जा दुश्मनी से अपनी जहालत पर अड़े रहते थे जिससे गुस्सा आ जाना स्वभाविक था, इसलिए आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नर्मी का हुक्म है। और गुस्सा आ जाने पर अल्लाह तआ़ला से पनाह माँगने की तालीम है, और उनके गुमराही में फँसे रहने का बयान है। जिससे उनकी तरफ़ से मुकम्मल तौर पर मायूसी हो जाए, ताकि फिर गुस्सा न आए।
5. यानी लोगों के आमाल व अख़्लाक़ की तह और हक़ीक़त तलाश न कीजिए, बल्कि ज़ाहिरी नज़र में सरसरी तौर पर जो काम किसी से अच्छा हो उसको भलाई पर महमूल कीजिए, बातिन का हाल अल्लाह के सुपुर्द कीजिए। हासिल यह कि समाजी ज़िन्दगी में आसानी रखिए, सख़्ती न कीजिए।
6. 'और अगर आपको शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा आने लगे' का मज़मून अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के गुनाहों से महफ़ूज़ रहने के मनाफ़ी और ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि महफ़ूज़ रहने का हासिल यह है कि शैतान गुनाह नहीं करा सकता, यह नहीं कि गुनाह की राय नहीं दे सकता।

सुम्-म ला युक़्सिरून (202) व इज़ा लम् तअ्तिहिम् बिआयतिन् क़ालू लौलज्तबै-तहा, क़ुल् इन्नमा अत्तबिअ़ु मा यूहा इलय्-य मिर्रब्बी हाज़ा बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व रह्मतुल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (203) व इज़ा क़ुरिअल् क़ुरआनु फ़स्तमिअ़ू लहू व अन्सितू लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (204) वज़्कुर् रब्ब-क फ़ी नफ़्सि-क तज़र्रुअ़ंव्-व ख़ी-फ़तंव्-व दूनल्जह्रि मिनल्क़ौलि बिल्ग़ुदुव्वि वल्-आसालि व ला तकुम् मिनल्- ग़ाफ़िलीन (205) इन्नल्लज़ी-न अ़िन्-द रब्बि-क ला यस्तक्बिरू-न अ़न् अ़िबा-दतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून ❑ ▲ (206) ❖

8 सूरतुल्-अन्फ़ालि 88

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5522 अक्षर, 1253 शब्द, 75 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

यस्अलून-क अ़निल्-अन्फ़ालि, क़ुलिल्-अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि फ़त्तक़ुल्ला-ह व अस्लिहू ज़ा-त बैनिकुम् व अतीअ़ुल्ला-ह व रसूलहू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (1) इन्नमल् मुअ्मिनूनल्--लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ा तुलियत् अ़लैहिम् आयातुहू ज़ादत्हुम् ईमानंव्-व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (2) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (3) उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न्, लहुम् द-रजातुन् अ़िन्-द रब्बिहिम् व मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (4) कमा अख़्र-ज-क

قال الملأ ١٦٠ الانفال

تذكروا فاذا هم مبصرون ۝ واخوانهم يمدونهم في
الغي ثم لا يقصرون ۝ واذا لم تاتهم باية قالوا لولا
اجتبيتها قل انما اتبع ما يوحى الي من ربي هذا بصائر
من ربكم وهدى ورحمة لقوم يؤمنون ۝ واذا
قرئ القران فاستمعوا له وانصتوا لعلكم ترحمون ۝
واذكر ربك في نفسك تضرعا وخيفة ودون الجهر من
القول بالغدو والاصال ولا تكن من الغفلين ۝ ان
الذين عند ربك لا يستكبرون عن عبادته ويسبحونه
وله يسجدون ۝

سورة الانفال مدنية ... بسم الله الرحمن الرحيم ...

يسـٔلونك عن الانفال قل الانفال لله والرسول فاتقوا
الله واصلحوا ذات بينكم واطيعوا الله ورسوله ان كنتم
مؤمنين ۝ انما المؤمنون الذين اذا ذكر الله وجلت
قلوبهم واذا تليت عليهم ايته زادتهم ايمانا وعلى ربهم
يتوكلون ۝ الذين يقيمون الصلوة ومما رزقنهم ينفقون ۝
اولئك هم المؤمنون حقا لهم درجت عند ربهم و

منزل

चले जाते हैं, पस वे बाज़ नहीं आते। **(202)** और जब आप कोई मोजिज़ा उनके सामने ज़ाहिर नहीं करते तो वे लोग कहते हैं कि आप यह मोजिज़ा क्यों न लाए? आप फ़रमा दीजिए कि मैं उसकी पैरवी करता हूँ जो मुझपर मेरे रब की तरफ़ से हुक्म भेजा गया है, ये (गोया) तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत-सी दलीलें हैं और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।[1] **(203)** और जब कुरआन पढ़ा जाया करे तो उसकी तरफ़ कान लगा दिया करो और ख़ामोश रहा करो,[2] उम्मीद है कि तुमपर (नई या और ज़्यादा) रहमत हो। **(204)** और (आप हर-हर शख़्स से यह भी कह दीजिए कि ऐ शख़्स!) अपने रब की याद किया कर, अपने दिल में आ़जिज़ी के साथ, और ख़ौफ़ के साथ, और ज़ोर की आवाज़ के मुक़ाबले में कम-आवाज़ के साथ, सुबह और शाम, (यानी हमेशा) और ग़ाफ़िलों में शुमार मत होना।[3] **(205)** यक़ीनन जो (फ़रिश्ते) तेरे रब के नज़दीक (ख़ास और क़रीबी) हैं वे उसकी इबादत से (जिसमें असल अ़क़ायद हैं) तकब्बुर नहीं करते और उसकी पाकी बयान करते हैं, (जो कि ज़बान की नेकी है) और उसको सज्दा करते हैं, (जो कि हाथ-पाँव और जिस्म के अन्य अंगों के आमाल से है)। ❑ ▲ **(206)** ❖

8 सूरः अन्फ़ाल 88

सूरः अन्फ़ाल मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 75 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ये लोग[4] आपसे (ख़ास) ग़नीमतों का हुक्म मालूम करते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि ये ग़नीमतें अल्लाह की हैं और रसूल की हैं, सो तुम अल्लाह से डरो और अपने आपसी ताल्लुक़ात की इस्लाह (भी) करो, और अल्लाह की और उसके रसूल की इताअ़त करो, अगर तुम ईमान वाले हो। **(1)** (क्योंकि) बस ईमान वाले तो ऐसे होते हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र आता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे (आयतें) उनके ईमान को और ज़्यादा (मज़बूत) कर देती हैं, और वे लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं। **(2)** (और) जो कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। **(3)** (बस) सच्चे ईमान वाले ये लोग हैं। उनके लिए बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास और (उनके लिए) मग़्फ़िरत है और इज़्ज़त की रोज़ी। **(4)** जैसा कि आपके रब ने आपके घर (और बस्ती) से मस्लहत के साथ आपको (बद्र की तरफ़) रवाना किया, और मुसलमानों की एक

---

1. जवाब का हासिल यह है कि नुबुव्वत की असली ग़रज़ इस्लाह व सुधार है।

2. ताकि उसका मोजिज़ (यानी इनसानी ताक़त से बाहर) होना और उसकी तालीम की ख़ूबी समझ में आ जाए।

3. अदब का हासिल यह है कि दिल और हैयत में आ़जिज़ी व इन्किसारी और ख़ौफ़ हो, और आवाज़ बहुत ज़्यादा ऊँची न हो। या तो बिलकुल आहिस्ता हो यानी ज़बान की हरकत के साथ और या दरमियानी दर्जे की हो।

4. ऊपर की सूरः में ज़्यादातर मुश्रिकीन की मूर्खता और दुश्मनी और किसी क़द्र अहले किताब के कुफ़्र व फ़साद का ज़िक्र था। इस सूरः में उस जहालत, दुश्मनी और कुफ़्र व फ़साद का उनपर जो दुनिया में वबाल और निकाल (बद्र में मुश्रिकीन पर और अन्य बाज़ वाक़िआ़त में अहले किताब यहूद पर) नाज़िल हुआ उसका बयान है। बद्र का बयान ज़्यादा है और अहले किताब के वाक़िए का कम।

रब्बु-क मिम्-बैति-क बिल्हक़्क़ि व इन्-न फ़रीक़म् मिनल्-मुअ्मिनी-न लकारिहून **(5)** युजादिलून-क फ़िल्हक़्क़ि बअ्-द मा तबय्य-न कअन्नमा युसाक़ू-न इलल्मौति व हुम् यन्ज़ुरून **(6)** व इज़् यअिदुकुमुल्लाहु इह्दत्ताइ-फ़तैनि अन्नहा लकुम् व तवद्दू-न अन्-न ग़ै-र ज़ातिश्शौ-कति तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अंय्युहिक़्क़ल्-हक़्-क़ बिकलिमातिही व यक़्त-अ़ दाबिरल्- काफ़िरीन **(7)** लियुहिक़्क़ल्-हक़्-क़ व युब्तिलल्-बाति-ल व लौ करिहल्-मुज्रिमून **(8)** इज़् तस्तग़ीसू-न रब्बकुम् फ़स्तजा-ब लकुम् अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फ़िम् मिनल्-मलाइ-कति मुर्दिफ़ीन **(9)** व मा ज-अ़-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लितत्मइन्-न बिही क़ुलूबुकुम्, व मन्नस्रु इल्ला मिन् अ़िन्दिल्लाहि, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(10)** ❖

इज़् युग़श्शीकुमुन्नुआ-स अ-म-नतम् मिन्हु व युनज़्ज़िलु अ़लैकुम् मिनस्समा-इ माअल्-लियुतह्हि-रकुम व युज़्हि-ब अ़न्कुम् रिज्ज़श्शैतानि व लियर्बि-त अ़ला क़ुलूबिकुम् व युसब्बि-त बिहिल्-अक़्दाम **(11)** इज़् यूही रब्बु-क इलल्-मलाइ-कति अन्नी म-अ़कुम् फ़-सब्बितुल्लज़ी-न आमनू, सउल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल् अअ्नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्-ल बनान **(12)** ज़ालि-क बिअन्नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशाक़िक़िल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब **(13)** ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्-न लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन्नार **(14)** या

مَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٤﴾ كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ
وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ﴿٥﴾ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ
بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٦﴾
وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ
اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ
بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧﴾ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ
الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨﴾ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ
لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ
اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً
مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَ
يُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ
بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَ

जमाअ़त उसको नागवार समझती थी।[1] **(5)** (और) वे उस मस्लहत (के काम) में इसके बाद कि वह ज़ाहिर हो गया था, (अपने बचाव के लिए) आपसे (मश्विरे के तौर पर) इस तरह झगड़ रहे थे कि जैसे कोई उनको मौत की तरफ़ हाँके लिए जाता है और वे देख रहे हैं। **(6)** और (तुम लोग उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तआ़ला तुमसे उन दो जमाअ़तों में से एक का वायदा करते थे कि वह तुम्हारे हाथ आ जाएगी, और तुम इस तमन्ना में थे कि हथियारों से ख़ाली जमाअ़त (यानी क़ाफ़िला) तुम्हारे हाथ आ जाए, और अल्लाह तआ़ला को यह मन्ज़ूर था कि अपने अहकाम से हक़ का हक़ होना (अ़मली तौर पर) साबित कर दे, और उन काफ़िरों की बुनियाद (और ताक़त) को काट दे।[2] **(7)** ताकि हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना (अ़मली तौर पर) साबित कर दे, अगरचे ये मुज्रिम लोग ना-पसन्द ही करें। **(8)** (उस वक़्त को याद करो) जबकि तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे। फिर उसने (यानी अल्लाह तआ़ला ने) तुम्हारी सुन ली, कि मैं तुमको एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूँगा जो सिलसिलेवार चले आएँगे। **(9)** और अल्लाह तआ़ला ने यह (इम्दाद) सिर्फ़ इस (हिक्मत के) लिए की कि (ग़ल्बे की) ख़ुशख़बरी हो, और ताकि तुम्हारे दिलों को (बेचैनी से) क़रार हो जाए, और (हक़ीक़त में तो) मदद (और ग़ल्बा) सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। **(10)** ❖

(उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तआ़ला तुमपर ऊँघ को तारी कर रहा था अपनी तरफ़ से चैन सुकून देने के लिए, और (उससे पहले) तुमपर आसमान से पानी बरसा रहा था, ताकि उस (पानी) के ज़रिये से तुमको (छोटी-बड़ी नापाकी से) पाक कर दे, और तुमसे शैतानी वस्वसे को दूर कर दे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे, और तुम्हारे पाँव जमा दे।[3] **(11)** (और उस वक़्त को याद करो) जबकि आपका रब (उन) फ़रिश्तों को हुक्म देता था कि मैं तुम्हारा साथी (और मददगार) हूँ, सो (मुझको मददगार समझकर) तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ, मैं अभी काफ़िरों के दिलों में रोब डाले देता हूँ, सो तुम (काफ़िरों की) गर्दनों पर मारो और उनके पोर-पोर को मारो। **(12)** यह (सज़ा) इसलिए है कि उन्होंने अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की, और जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है सो अल्लाह तआ़ला (उसको) सख़्त सज़ा देते हैं। **(13)** (सो) यह (सज़ा) चखो, और (जान लो कि) काफ़िरों के लिए जहन्नम का अ़ज़ाब

---

1. मक्का के ताजिरों का एक छोटा-सा क़ाफ़िला मुल्क शाम से मक्का को चला, जिसके साथ माल व असबाब बहुत था। आपको वह्य से मालूम हुआ, आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को ख़बर दी। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को आदमियों के कम होने और माल के ज़्यादा होने का हाल मालूम होने से ग़नीमत का ख़्याल हुआ और इसी इरादे से मदीना से चले। यह ख़बर जो मक्का पहुँची तो अबू जहल वहाँ के सरदारों और लश्कर के साथ उस क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त के लिए निकला, और क़ाफ़िला समुद्र के किनारे-किनारे हो लिया, और अबू जहल लश्कर के साथ बद्र में आकर ठहरा। उस वक़्त जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वादी-ए-दजरान में तशरीफ़ रखते थे। और आपको यह सारा क़िस्सा वह्य के ज़रिये मालूम हुआ और आपसे अल्लाह पाक का वायदा हुआ कि उन दो गिरोह यानी क़ाफ़िला और लश्कर में से आपको एक गिरोह पर ग़ल्बा होगा। आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मश्विरा किया। चूँकि लश्कर के मुक़ाबले के इरादे से न आए थे इसलिए पूरे तौर पर लड़ाई का सामान भी साथ न था, और साथ ही तादाद भी तीन सौ से कुछ ज़्यादा थी, और कुफ़्फ़ार के लश्कर में एक हज़ार आदमी थे। इसलिए बाज़ हज़रात दुविधा में पड़ गए और अ़र्ज़ किया कि इस लश्कर का मुक़ाबला न कीजिए बल्कि क़ाफ़िले का पीछा करना मुनासिब है। आप रंजीदा हुए तो उस वक़्त हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत मिक़दाद, हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने इताअ़त की तक़रीरें कीं। तब आप बद्र की तरफ़ रवाना हुए।

2. इस ग़ल्बे को बावजूद इसके कि क़ुरैश के तमाम काफ़िर हलाक न हुए थे 'बुनियाद काटना' इसलिए कहा गया कि इस वाक़िए से उनकी क़ुव्वत बिलकुल फ़ना हो गई थी क्योंकि उनके सत्तर बड़े-बड़े सरदार क़त्ल और सत्तर क़ैद हुए थे इस तरह गोया वे सब ही ख़त्म हो गए थे।

3. इसमें एक क़िस्से की तरफ़ इशारा है। जिसका मुख़्तसर बयान यह है कि बद्र में मुश्रिकीन पहले जा पहुँचे थे और पानी पर क़ब्ज़ा कर लिया था। मुसलमान बाद में पहुँचे और एक सूखे रेगिस्तान में उतरे, जहाँ पानी न होने से **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 322 पर)**

अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ज़ह्फ़न् फ़ला तुवल्लूहुमुल्-अद्बार **(15)** व मंय्युवल्लिहिम् यौमइज़िन् दुबु-रहू इल्ला मु-तहर्रिफ़ल् लिक़ितालिन् औ मु-तहय्यिज़न् इला फ़ि-अतिन् फ़-क़द् बा-अ बि-ग़-ज़बिम् मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर **(16)** फ़-लम् तक़्तुलूहुम् व लाकिन्नल्ला-ह क़-त-लहुम् व मा रमै-त इज़् रमै-त व लाकिन्नल्ला-ह रमा व लियुब्लियल्-मुअ्मिनी-न मिन्हु बलाअन् ह-सनन्, इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम **(17)** ज़ालिकुम् व अन्नल्ला-ह मूहिनु कैदिल्-काफ़िरीन **(18)** इन् तस्तफ़्तिहू फ़-क़द् जा-अकुमुल्-फ़त्हु व इन् तन्तहू फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् व इन् तअूदू नअुद् व लन् तुग़्नि-य अ़न्कुम् फ़ि-अतुकुम् शैअंव्-व व लौ कसुरत् व अन्नल्ला-ह मअ़ल्-मुअ्मिनीन **(19)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तवल्लौ अ़न्हु व अन्तुम् तस्मअून **(20)** व ला तकूनू कल्लज़ी-न क़ालू समिअ्ना व हुम् ला यस्मअून **(21)** इन्-न शर्रद्दवाब्बि अि़न्दल्लाहिस्सुम्मुल्-बुक्मुल्लज़ी-न ला यअ्क़िलून **(22)** व लौ अ़लिमल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरल् ल-अस्म-अ़हुम्, व लौ अस्म-अ़हुम् ल-तवल्लौ व हुम् मुअ्रिज़ून **(23)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआकुम् लिमा युह्यीकुम् वअ्लमू अन्नल्ला-ह यहूलु बैनल्-मर्इ व क़ल्बिही व अन्नहू इलैहि तुह्शरून **(24)** वत्तक़ू फ़ित्न-तल्-ला

قال الملاء ٩ ١٦٣ الانفال ٨

رَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۝ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ
يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ
بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝
فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۠ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۭ اِنَّ
اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝
اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ
وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اِنَّ شَرَّ
الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَ
لَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا
وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَ

منزل ٢

(मुक़र्रर ही) है। **(14)** ऐ ईमान वालो! जब तुम (जिहाद में) काफ़िरों से आमने-सामने हो जाओ तो उनसे पुश्त मत फेरना। **(15)** और जो शख़्स उनसे उस मौक़े पर (यानी मुक़ाबले के वक़्त) पुश्त फेरेगा, मगर हाँ जो लड़ाई के लिए पैंतरा बदलता हो या जो अपनी जमाअ़त की तरफ़ पनाह लेने आता हो (वह इससे अलग है, बाक़ी और जो ऐसा करेगा) तो वह अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब में आ जाएगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वह बहुत ही बुरी जगह है।[1] **(16)** सो तुमने उनको क़त्ल नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने (बेशक) उनको क़त्ल किया, और आपने (ख़ाक की मुट्ठी) नहीं फेंकी, जिस वक़्त आपने फेंकी थी, लेकिन अल्लाह ने फेंकी,[2] और ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ़ से उनकी मेहनत का ख़ूब बदला दे, बेशक अल्लाह तआ़ला (उन मोमिनों की बातों के) ख़ूब सुनने वाले (और उनके कामों व हालात के) ख़ूब जानने वाले हैं। **(17)** (एक बात तो) यह हुई और (दूसरी बात) यह (है) कि अल्लाह तआ़ला को काफ़िरों की तदबीर को कमज़ोर करना था। **(18)** अगर तुम लोग फ़ैसला चाहते हो तो वह फ़ैसला तुम्हारे सामने आ मौजूद हुआ, और अगर बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छा है, और अगर तुम फिर (वही काम) करोगे तो हम भी फिर (वही काम) करेंगे और तुम्हारी जमअ़ीयत "यानी जमाअ़त व संगठन" तुम्हारे ज़रा भी काम न आएगी, अगरचे कितनी ही ज़्यादा हो, और वाक़ई बात यह है कि अल्लाह (असल में) ईमान वालों के साथ है। **(19)** ❖

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का कहना मानो और उसके रसूल का, और उस (का कहना मानने) से मुँह मत फेरना, और तुम (एतिक़ाद से) सुन तो लेते ही हो। **(20)** और तुम उन लोगों की तरह मत होना जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया, हालाँकि वे सुनते-सुनाते कुछ नहीं।[3] **(21)** बेशक मख़्लूक़ में सबसे बद्तर अल्लाह के नज़दीक वे लोग हैं जो बहरे हैं, गूँगे हैं, जो कि ज़रा नहीं समझते। **(22)** और अगर अल्लाह तआ़ला उनमें कोई ख़ूबी देखते तो उनको सुनने की तौफ़ीक़ देते, और अगर उनको अब सुना दें तो ज़रूर मुँह फेर लेंगे, बेरुख़ी करते हुए। **(23)** ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल के कहने पर अ़मल किया करो,

(पृष्ठ 320 का शेष) प्यास की भी शिद्दत थी और नमाज़ के वक़्त वुज़ू और गुस्ल से भी आ़जिज़ थे। और तयम्मुम का हुक्म उस वक़्त तक नाज़िल न हुआ था। उधर रेगिस्तान में चलना-फिरना मुसीबत कि उसमें पाँव धँसे जाते थे। इन हालात से दिल सख़्त परेशान हुआ, ऊपर से शैतान ने वस्वसा डालना शुरू किया कि अगर तुम अल्लाह के यहाँ मक़बूल व मदद-याफ़्ता होते तो इस परेशानी में क्यों मुब्तला होते। हक़ तआ़ला ने अव्वल रहमत की बारिश नाज़िल फ़रमाई, जिससे पानी की बहुतात हो गई, पिया भी, वुज़ू व गुस्ल भी किया और उससे रेत जम गया और धसन जाती रही। उसके उलट काफ़िर नर्म ज़मीन में थे, वहाँ कीचड़ हो गई, जिससे चलने-फिरने में दिक़्क़त होने लगी। ग़रज़ सब वस्वसे और परेशानियाँ ख़त्म हो गईं। उसके बाद उनपर ऊँघ का ग़ल्बा हुआ जिससे पूरी राहत हो गई और सब बेचैनी जाती रही। इस आयत में इन्ही वाक़िआ़त की तरफ़ इशारा है।

1. जिहाद से भागना हराम है। हाँ अगर काफ़िर दोगुने से ज़्यादा हों तो जायज़ है। और जब वे दोगुने से ज़्यादा न हों तब भी दो सूरतें जायज़ होने की हैं जिनको आयत में अलग कर दिया है, एक यह कि धोखा देने को सामने से भागा हो, ताकि सामने वाला ग़ा हो जाए, फिर अचानक उसपर लौटकर हमला करे। दूसरे यह कि असली मक़सद भागना न हो बल्कि ख़ाली हाथ होने या किसी और सबब से अपनी जमाअ़त में इस ग़रज़ से आ मिला कि उनसे ताक़त और मदद हासिल करे, फिर जाकर मुक़ाबला करे।
2. इसमें भी एक क़िस्से की तरफ़ इशारा है। वह यह कि आपने बद्र के दिन एक मुट्ठी कंकरियों की उठाकर काफ़िरों की तरफ़ फेंकी, जिसके रेज़े सबकी आँखों में जा गिरे और उनको शिकस्त हुई। मुट्ठी ख़ाक फेंकने का क़िस्सा कई बार हुआ, बद्र में, उहुद में, हुनैन में, लेकिन यहाँ मज़मून के रब्त से बद्र का मुराद लेना ज़्यादा मुनासिब है।
3. मतलब यह कि एतिक़ाद से सुनने का फ़ायदा अ़मल है। जब अ़मल न हुआ तो यह ऐसा ही है कि जैसे एतिक़ाद के साथ सुना ही नहीं।

तुसीबन्नल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्कुम् ख़ास्स-तन् वअ़्लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब **(25)** वज़्कुरू इज़् अन्तुम् क़लीलुम् मुस्तज़्अ़फ़ू-न फ़िल्अर्ज़ि तख़ाफ़ू-न अंय्य-तख़त्त-फ़कुमुन्नासु फ़आवाकुम् व अय्य-दकुम् बिनस्रिही व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(26)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तख़ूनुल्ला-ह वर्रसू-ल व तख़ूनू अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ़्लमून **(27)** वअ़्लमू अन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्नतुंव्-व अन्नल्ला-ह अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम **(28)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तत्तक़ुल्ला-ह यज्अ़ल्लकुम् फ़ुर्क़ानंव्-व युकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम **(29)** व इज़् यम्कुरु बिकल्लज़ी-न क-फ़रू लियुस्बितू-क औ यक़्तुलू-क औ युख़्रिजू-क, व यम्कुरू-न व यम्कुरुल्लाहु, वल्लाहु ख़ैरुल्-माकिरीन **(30)** व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना क़ालू क़द् समिअ़्ना लौ नशा-उ लक़ुल्ना मिस्-ल हाज़ा इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन **(31)** व इज़् क़ालुल्लाहुम्-म इन् का-न हाज़ा हुवल्-हक़्-क़ मिन् अ़िन्दि-क फ़अम्तिर् अ़लैना हिजा-रतम् मिनस्समा-इ अविअ्तिना बिअ़ज़ाबिन् अलीम **(32)** व मा कानल्लाहु लियुअ़ज़्ज़ि-बहुम् व अन्-त फ़ीहिम्, व मा कानल्लाहु मुअ़ज़्ज़ि-बहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून **(33)** व मा लहुम् अल्-ला

قال الملاء ۱۶۳ الانفال

لِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً
لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۵﴾ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ
فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَ
اَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۶﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا
اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ
اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۹﴾ وَ
اِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۗ
وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۳۰﴾ وَاِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ
اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ
هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ

منزل ۲

❖ रु. 3/9/17

जबकि रसूल तुमको तुम्हारी ज़िन्दगी देने वाली चीज़ की तरफ़ बुलाते हों,[1] और जान लो कि अल्लाह तआला आड़ बन जाया करता है आदमी के और उसके दिल के दरमियान में,[2] और बेशक तुम सबको ख़ुदा ही के पास जमा होना है। **(24)** और तुम ऐसे वबाल से बचो कि जो ख़ास उन्हीं लोगों पर न पड़ेगा जो तुममें से उन गुनाहों के करने वाले हुए हैं,[3] और यह जान लो कि अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। **(25)** और उस हालत को याद करो जबकि तुम थोड़े से थे,[4] सरज़मीन में कमज़ोर शुमार किए जाते थे,[5] और इस अन्देशे में रहते थे कि तुमको (मुख़ालिफ़) लोग नोच-खसोट न लें। सो (ऐसी हालत में) अल्लाह ने तुमको (मदीना में) रहने को जगह दी, और तुमको अपनी मदद से कुव्वत दी, और तुमको अच्छी-अच्छी चीज़ें (खाने को) अ़ता फ़रमाईं, ताकि तुम शुक्र करो। **(26)** ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल के हुकूक़ में ख़लल मत डालो, और अपनी हिफ़ाज़त के क़ाबिल चीज़ों में ख़लल मत डालो, और तुम तो (उसका नुक़सानदेह होना) जानते हो। **(27)** और तुम (इस बात को) जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान की चीज़ है, और (इस बात को भी जान रखो कि) अल्लाह तआला के पास बड़ा भारी अज्र (मौजूद) है। **(28)** ❖

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे, वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको एक फ़ैसले की चीज़ देगा और तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर देगा, और तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाला है। **(29)** और (उस वाक़िए का भी ज़िक्र कीजिए) जबकि काफ़िर लोग आपके बारे में (बड़ी-बड़ी) तदबीरें सोच रहे थे कि (आया) क़ैद कर लें या आपको क़त्ल कर डालें या आपको वतन से निकाल दें, और वे तो अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह (पाक) अपनी तदबीरें कर रहे थे, और सबसे ज़्यादा मज़बूत तदबीर वाला अल्लाह है। **(30)** और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया, अगर हम इरादा करें तो इसके बराबर हम भी कहकर ले आएँ, ये तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ बे-सनद बातें हैं, जो पहलों से (नक़ल होती हुई) चली आ रही हैं। **(31)** और जबकि उन लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह! अगर यह (क़ुरआन) वाक़ई आपकी तरफ़ से है, तो हमपर आसमान से पत्थर बरसाइए, या हमपर (और) कोई दर्दनाक अ़ज़ाब भेज दीजिए। **(32)** और अल्लाह तआला ऐसा न करेंगे कि उनमें आपके होते हुए उनको (ऐसा) अ़ज़ाब दें, और (यह कि) अल्लाह तआला उनको (ऐसा) अ़ज़ाब न देंगे, जिस हालत में कि वे

---

1. तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उब्बी बिन कअ़ब को पुकारा और वह नमाज़ में थे, तो उनके उज़्र पर आपने उनको यह आयत याद दिलाई। मालूम होता है कि 'इस्तजीबू' अपने आ़म होने की वजह से इस सूरत को भी शामिल है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम किसी को पुकारें तो जवाब देना वाजिब है। और अपने मुतलक़ और आ़म होने से इस सूरत को भी शामिल है कि यह शख़्स नमाज़ में मश्गूल तो नमाज़ में ही जवाब देना वाजिब है।

2. दो रास्तों में से एक रास्ता यह कि मोमिन के दिल में नेकी की बरकत से कुफ़्र व नाफ़रमानी को नहीं आने देता। दूसरा रास्ता यह कि काफ़िर के दिल में मुख़ालफ़त की नहूसत से ईमान व नेकी को नहीं आने देता। इससे मालूम हुआ कि इताअ़त व फ़रमाँबरदारी पर हमेशा जमे रहना बड़ी फ़ायदे की चीज़ है और मुख़ालफ़त पर अड़े रहना बड़ी नुक़सान देनी वाली चीज़ है।

3. बल्कि उन गुनाहों को देखकर जिन्होंने मुदाहनत (यानी निगाह बचाई और रोक-टोक नहीं) की है वे भी उसमें शरीक होंगे।

4. यानी हिजरत से पहले।

5. यानी मक्का में।

युअ़ज़्ज़ि-बहुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दू-न अ़निल् मस्जिदिल्-हरामि व मा कानू औलिया-अहू, इन् औलिया-उहू इल्लल्-मुत्तक़ू-न व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ़्लमून (34) व मा का-न सलातुहुम् अ़िन्दल्-बैति इल्ला मुकाअंव्-व तस्दि-यतन्, फ़ज़ूक़ुल्- अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (35) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् लि-यसुद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि, फ़-सयुन्फ़िक़ूनहा सुम्-म तकूनु अ़लैहिम् हस्-रतन् सुम्-म युग़्लबू-न, वल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म युह्शरून (36) लि-यमीज़ल्लाहुल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि व यज्अ़लल् ख़बी-स बअ़्ज़हू अ़ला बअ़्ज़िन् फ़-यर्कु-महू जमीअ़न् फ़-यज्अ़-लहू फ़ी जहन्न-म, उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (37) ❖

क़ुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यन्तहू युग़्फ़र् लहुम् मा क़द् स-ल-फ़, व इंय्यअ़ूदू फ़-क़द् मज़त् सुन्नतुल्-अव्वलीन (38) व क़ातिलूहुम् हत्ता ला तकू-न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि फ़-इनिन्तहौ फ़-इन्नल्ला-ह बिमा यअ़्मलू-न बसीर (39) व इन् तवल्लौ फ़अ़्लमू अन्नल्ला-ह मौलाकुम्, निअ़्मल्-मौला व निअ़्मन्-नसीर (40)

اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ
فِيْهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ
اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ۚ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّ
تَصْدِيَةً ۚ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۚ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ۝ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ
مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ
جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ
وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَاتِلُوْهُمْ
حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ
انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ تَوَلَّوْا
فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

इस्तिग़फ़ार भी करते रहते हैं।[1] **(33)** और (फिर) उनका क्या हक़ बनता है कि उनको अल्लाह तआला (बिलकुल ही मामूली) सज़ा भी न दे, हालाँकि वे लोग मस्जिदे-हराम से रोकते हैं,[2] हालाँकि वे लोग इस मस्जिद के मुतवल्ली (बनने के भी लायक़) नहीं। उसके मुतवल्ली (बनने के लायक़) तो सिवाय मुत्तक़ी लोगों के और कोई भी नहीं, लेकिन उनमें अक्सर लोग (अपनी नालायक़ी) का इल्म भी नहीं रखते।[3] **(34)** और उनकी नमाज़ ख़ाना काबा के पास सिर्फ़ यह थी, सीटियाँ बजाना और तालियाँ बजाना,[4] सो इस अ़ज़ाब का मज़ा चखो,[5] अपने कुफ़्र के सबब।[6] **(35)** बेशक ये काफ़िर लोग अपने मालों को इसलिए ख़र्च कर रहे हैं कि अल्लाह तआला की राह से रोकें,[7] सो ये लोग अपने माल ख़र्च करते ही रहेंगे (मगर) फिर वे माल उनके हक़ में हसरत का सबब हो जाएँगे, फिर (आख़िर) मग़लूब हो जाएँगे, और काफ़िर लोगों को दोज़ख़ की तरफ़ जमा किया जाएगा। **(36)** ताकि अल्लाह तआला नापाक (लोगों) को पाक (लोगों) से अलग कर दे और (उनसे अलग करके) नापाकों को एक-दूसरे से मिला दे यानी उन सबको एक जगह कर दे, फिर उन सबको जहन्नम में डाल दे, ऐसे ही लोग पूरे ख़सारे "यानी घाटे" में हैं। **(37)** ❖

आप उन काफ़िरों से कह दीजिए कि अगर ये लोग (अपने कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँगे तो उनके सारे गुनाह जो (इस्लाम से) पहले हो चुके हैं सब माफ़ कर दिए जाएँगे। और अगर अपनी वही (कुफ़्र की) आदत जारी रखेंगे तो (सुना दीजिए कि) पहले गुज़रे (काफ़िरों के हक़) में (हमारा) क़ानून नाफ़िज़ हो चुका है।[8] **(38)** और तुम उन (अ़रब के काफ़िरों) से इस हद तक लड़ो कि उनमें अ़क़ीदे की ख़राबी (यानी शिर्क) न रहे, और दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो जाए।[9] फिर अगर ये (कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखते हैं।[10] **(39)** और अगर मुँह मोड़ें तो यक़ीन रखो कि अल्लाह तआला तुम्हारा रफ़ीक़ है, वह बहुत अच्छा रफ़ीक़ है और बहुत अच्छा मददगार है।[11] **(40)**

---

1. मतलब यह कि ज़बरदस्त सज़ाओं से दो चीज़ें रुकावट हैं, एक हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मक्का में या दुनिया में तशरीफ़ रखना, और दूसरा लोगों का अपने तवाफ़ वग़ैरह में यह कहना 'ग़ुफ़रान-क ग़ुफ़रान-क' जो कि हिजरत के बाद और वफ़ात के बाद भी बाक़ी था।
2. यानी मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह शरीफ़) में जाने, उसमें नमाज़ पढ़ने और उसमें तवाफ़ करने से रोकते हैं।
3. चाहे इल्म ही न हो या यह कि जब उस इल्म पर अ़मल न किया तो वह भी इल्म न होने की तरह है।
4. यानी बजाय नमाज़ के उनकी ये नामाक़ूल हरकतें होती थीं।
5. चुनाँचे अनेक लड़ाइयों में यह सज़ा सामने आई।
6. यहाँ तक तो उन लोगों की बातों और जिस्मानी आमाल का ज़िक्र था, आगे उनके माली आमाल का बयान है।
7. चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुक़ाबले और मुख़ालफ़त के सामान जमा करने में ज़ाहिर है कि जो ख़र्च होता था उसमें यही ग़रज़ थी।
8. यानी दुनिया में हलाकत और आख़िरत में अ़ज़ाब।
9. किसी के दीन का ख़ालिस तौर पर अल्लाह ही के लिए हो जाना मौक़ूफ़ है इस्लाम के क़बूल करने पर। तो हासिल यह हुआ कि शिर्क छोड़कर इस्लाम इख़्तियार करें। खुलासा यह कि अगर इस्लाम न लाएँ तो उनसे लड़ो जब तक कि इस्लाम न लाएँ। क्योंकि अ़रब के काफ़िरों से जिज़्या (टैक्स) नहीं लिया जाता।
10. यानी अगर कुफ़्र से बाज़ आ जाएँ तो उनके ज़ाहिरी इस्लाम को क़बूल करो, दिल का हाल मत टटोलो। अगर ये दिल से ईमान न लाएँगे तो अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखते हैं, वह ख़ुद समझ लेंगे, तुमको क्या?
11. ऊपर आयत 'व क़ातिलूहुम्......' में लड़ने और जंग करने का हुक्म था। चूँकि कभी लड़ाई और जंग में ग़नीमत भी हासिल होती है इसलिए आगे उसका हुक्म बयान फ़रमाते हैं।

दसवाँ पारः वअ़्लमू

सूरतुल् अन्फ़ालि (आयत 41 से 75)

वअ़्लमू अन्नमा ग़निम्तुम् मिन् शैइन् फ़-अन्-न लिल्लाहि ख़ुमु-सहू व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्-सबीलि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि व मा अन्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना यौमल्फ़ुर्क़ानि यौमल्-तक़ल्जम्आ़नि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(41)** इज़् अन्तुम् बिल्अ़ुद्वतिद्दुन्या व हुम् बिल्अ़ुद्वतिल्-क़ुस्वा वर्रक्बु अस्फ़-ल मिन्कुम्, व लौ तवाअ़त्तुम् लख़्त-लफ़्तुम् फ़िल्मीआ़दि व लाकिल्- लियक़्ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्अ़ूलल्-लियह्लि-क मन् ह-ल-क अ़म्बय्यि-नतिंव्-व यह्या मन् हय्-य अ़म्बय्यि-नतिन्, व इन्नल्ला-ह ल-समीअ़ुन् अ़लीम **(42)** इज़् युरीकहुमुल्लाहु फ़ी मनामि-क क़लीलन्, व लौ अराकहुम् कसीरल् ल-फ़शिल्तुम् व ल-तनाज़अ़्तुम् फ़िल्-अम्रि व लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म, इन्नहू अ़लीमुम्- बिज़ातिस्सुदूर **(43)** व इज़् युरीकुमूहुम् इज़िल्तक़ैतुम् फ़ी अअ़्युनिकुम् क़लीलंव्-व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी अअ़्युनिहिम् लि-यक़्ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्अ़ूलन्, व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल्-उमूर **(44)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुम् फ़ि-अतन् फ़स्बुतू वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(45)** व अतीअ़ुल्ला-ह व रसूलहू व ला तनाज़अ़ू फ़-तफ़्शलू व

الانفال ٨ ١٦٥ واعلموا ١٠

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ
وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ اِنْ
كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾ اِذْ اَنْتُمْ
بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ
مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ
اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَّ
يَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ اِذْ
يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَ
لَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا
وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا وَ
اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً
فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ

منزل ٢

दसवाँ पारः वअ़्लमू

सूरः अन्फ़ाल (आयत 41 से 75)

और (इस बात को) जान लो कि जो चीज़ (काफ़िरों) से ग़नीमत के तौर पर तुमको हासिल हो तो (उसका हुक्म यह है कि) कुल का पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह का और उसके रसूल का है, और (एक हिस्सा) आपके रिश्तेदारों का है, और (एक हिस्सा) यतीमों का है, और (एक हिस्सा) ग़रीबों का है, और (एक हिस्सा) मुसाफ़िरों का है, अगर तुम अल्लाह पर यक़ीन रखते हो और उस चीज़ पर जिसको हमने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर फ़ैसले के दिन,[1] जिस दिन कि (मोमिनों व काफ़िरों की) दोनों जमाअ़तें आपस में आमने-सामने हुई थीं, नाज़िल फ़रमाया था।[2] और अल्लाह तआ़ला (ही) हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं। **(41)** (यह वह वक़्त था कि) जब तुम (उस मैदान के) इधर वाले किनारे पर थे और वे लोग (यानी काफ़िर उस मैदान के) उधर वाले किनारे पर थे,[3] और वह (क़ुरैश का) क़ाफ़िला तुमसे नीचे की तरफ़ (बचा हुआ) था,[4] और अगर तुम (और वे) कोई बात ठहराते तो ज़रूर उस ठहराने के बारे में तुममें इख़्तिलाफ़ होता, लेकिन ताकि जो बात अल्लाह को करना मन्ज़ूर थी उसको पूरा कर दे, यानी ताकि जिसको बर्बाद (गुमराह) होना है वह निशान आने के बाद बर्बाद हो, और जिसको ज़िन्दा (हिदायत-याफ़्ता) होना है वह (भी) निशान आने के बाद ज़िन्दा हो,[5] और बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। **(42)** (वह वक़्त भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जब अल्लाह ने आपके ख़्वाब में आपको वे लोग कम दिखलाए और अगर अल्लाह आपको वे लोग ज़्यादा दिखा देते तो तुम्हारी हिम्मतें हार जातीं, और इस मामले में तुममें आपस में झगड़ा (व इख़्तिलाफ़) हो जाता, लेकिन (तय करने और ठहराने के बारे में) अल्लाह ने (उस कम-हिम्मती और इख़्तिलाफ़ से) बचा लिया, बेशक वह दिलों की बात को ख़ूब जानता है। **(43)** और (उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तुमको जबकि तुम आमने-सामने हुए, वे लोग तुम्हारी नज़र में कम करके दिखला रहे थे और (इसी तरह) उनकी निगाह में तुमको कम करके दिखला रहे थे, ताकि जो बात अल्लाह को करनी मन्ज़ूर थी उसको पूरा कर दे,[6] और सब मुक़द्दमे ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाए जाएँगे। **(44)** ❖

ऐ ईमान वालो! जब तुमको (जिहाद में) किसी जमाअ़त से मुक़ाबले का इत्तिफ़ाक़ हुआ करे तो (इन आदाब का लिहाज़ रखो) (१) साबित क़दम रहो (२) और अल्लाह तआ़ला का ख़ूब कसरत से ज़िक्र करो उम्मीद है कि तुम कामयाब हो। **(45)** (३) और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त (का लिहाज़) किया

---

1. फ़ैसले के दिन से मुराद बद्र का दिन है। क्योंकि उसमें अ़मली तौर पर हक़ व बातिल का फ़ैसला वाज़ेह हो गया।
2. मुराद इससे फ़रिश्तों के वास्ते से ग़ैबी इम्दाद है। यानी अगर हम पर और हमारी ग़ैबी इनायतों पर यक़ीन रखते हो तो इस हुक्म को जान लो और अ़मल करो। यह इसलिए बढ़ा दिया कि पाँचवाँ हिस्सा निकालना भारी न हो, और समझ लें कि यह सारी ग़नीमत अल्लाह ही की इम्दाद से तो हाथ आई, फिर अगर हमको एक पाँचवाँ हिस्सा न मिला तो क्या हुआ, वे चार पाँचवे हिस्से भी तो हमारी क़ुदरत से ख़ारिज थे, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की क़ुदरत से हासिल हुए।
3. इधर वाले से मुराद मदीना से नज़दीक की जगह और उधर वाले से मुराद मदीना से दूर की जगह है।
4. यानी समुद्र के किनारे-किनारे जा रहा था।
5. मतलब यह कि अल्लाह को लड़ाई होना मन्ज़ूर था, ताकि एक ख़ास तरीक़े से इस्लाम का हक़ होना ज़ाहिर हो जाए, कि तादाद और सामान की इस कमी पर भी मुसलमान ग़ालिब आए जो कि आ़म आ़दत के ख़िलाफ़ है। जिससे मालूम हुआ कि इस्लाम हक़ है। पस इससे अल्लाह की हुज्जत मुकम्मल हो गई। उसके बाद जो गुमराह होगा वह हक़ के वाज़ेह होने के बाद होगा, जिसमें अ़ज़ाब का पूरा हक़दार होना हो गया और उज़्र की गुन्जाइश ही न रही। इसी तरह जिसको हिदायत होना होगा **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 330 पर)**

तज़्ह-ब रीहुकुम् वस्बिरू, इन्नल्ला-ह मअ़स्साबिरीन **(46)** व ला तकूनू कल्लज़ी-न ख़-रजू मिन् दियारिहिम् ब-तरंव्-व रिआअन्नासि व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि, वल्लाहु बिमा यअ़्मलू-न मुहीत **(47)** व इज़् ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ़्मालहुम् व क़ा-ल ला ग़ालि-ब लकुमुल्यौ-म मिनन्नासि व इन्नी जारुल्लकुम् फ़-लम्मा तरा-अतिल्-फ़ि-अतानि न-क-स अ़ला अ़क़िबैहि व क़ा-ल इन्नी बरीउम् मिन्कुम् इन्नी अरा मा ला तरौ-न इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह, वल्लाहु शदीदुल्-अ़िक़ाब **(48)** ❖

इज़् यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् ग़र्-र हा-उला-इ दीनुहुम्, व मंय्य-तवक्कल् अ़लल्लाहि फ़-इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(49)** व लौ तरा इज़् य-तवफ़्फ़ल्लज़ी-न क-फ़रुल्मालाइ-कतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व अद्बारहुम् व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-हरीक़ **(50)** ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद **(51)** कदअ्बि आलि फ़िर्औ़-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, क-फ़रू बिआयातिल्लाहि फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् शदीदुल्-अ़िक़ाब **(52)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह लम् यकु मुग़य्यिरन् निअ़्-मतन् अन्अ़-महा अ़ला क़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम् व अन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम **(53)** कदअ्बि आलि फ़िर्औ़-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् कज़्ज़बू बिआयाति रब्बिहिम्

دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ
اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ
جَارٌ لَّكُمْ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ
اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ
وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ
كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ وَذُوْقُوْا
عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ
بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ

❖ रु. 6/4/2

करो। (४) और झगड़ा मत करो, (न अपने इमाम से और न आपस में) वरना कम-हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। (५) सब्र करो बेशक अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ हैं। **(46)** (६) और उन (काफ़िर) लोगों के जैसे मत होना कि जो (इसी बद्र के वाक़िए में) अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को (अपनी शान) दिखलाते हुए निकले और लोगों को अल्लाह के रास्ते (दीन) से रोकते थे, और अल्लाह तआ़ला उनके आमाल को (अपने इल्म के) घेरे में लिए हुए है। **(47)** और (उस वक़्त का ज़िक्र कीजिए) जबकि शैतान ने उन (कुफ़्फ़ार) को उनके आमाल अच्छे करके दिखलाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुमपर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारा हामी हूँ। फिर जब (काफ़िरों और मुसलमानों की) दोनों जमाअ़तें एक-दूसरे के आमने-सामने हुईं तो वह उल्टे पाँव भागा और (यह) कहा कि मेरा तुमसे कोई वास्ता नहीं, मैं उन चीज़ों को देख रहा हूँ जो तुमको नज़र नहीं आतीं (यानी फ़रिश्ते), मैं तो ख़ुदा से डरता हूँ और अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाले हैं।[1] **(48)** ❖

(और वह वक़्त भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है कि) जब मुनाफ़िक़ लोग[2] और जिनके दिलों में (शक की) बीमारी थी[3] (यूँ) कहते थे कि इन (मुसलमान) लोगों को उनके दीन ने भूल में डाल रखा है। और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करता है तो बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले (भी) हैं।[4] **(49)** और अगर आप (उस वक़्त का वाक़िआ़) देखें जबकि फ़रिश्ते इन (मौजूदा) काफ़िरों की जान क़ब्ज़ करते जाते हैं (और) उनके मुँह पर और उनकी पीठ पर मारते जाते हैं, और (यह कहते जाते हैं कि अभी क्या है आगे चलकर) आग की सज़ा झेलना। **(50)** यह (अ़ज़ाब) उन (कुफ़्रिया आमाल) की वजह से है जो तुमने अपने हाथों समेटे हैं और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआ़ला बन्दों पर ज़ुल्म करने वाले नहीं।[5] **(51)** (उनकी हालत ऐसी है) जैसी फ़िरऔ़न वालों की, और उनसे पहले के (काफ़िर) लोगों की हालत (थी) कि उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया, सो ख़ुदा तआ़ला ने उनके (उन) गुनाहों पर उनको पकड़ लिया, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी क़ुव्वत वाले, सख़्त सज़ा देने वाले हैं।[6] **(52)** यह बात[7] इस सबब से है कि अल्लाह तआ़ला किसी ऐसी नेमत को जो किसी क़ौम को अ़ता फ़रमाई हो, नहीं बदलते जब तक कि वही लोग अपने ज़ाती आमाल को नहीं बदल डालते,[8] और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआ़ला बड़े सुनने वाले, बड़े जानने वाले हैं। **(53)** (उनकी हालत) फ़िरऔ़न वालों और उनसे पहले वालों की-सी हालत (है) कि उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, उसपर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फ़िरऔ़न

(पृष्ठ 328 का शेष) वह हक़ को क़बूल कर लेगा। हिक्मत का ख़ुलासा यह हुआ कि हक़ वाज़ेह हो जाए।

6. रिवायतों में है कि उस दिन मुसलमान तीन सौ तेरह (313) और कुफ़्फ़ार एक हज़ार थे। मगर फिर भी मुसलमान ही ग़ालिब रहे। इससे हर इन्साफ़-पसन्द समझदार नतीजा निकाल सकता है कि जब अल्लाह तआ़ला अपने दीन को ग़ालिब करना चाहता है तो कुफ़्फ़ार की कसरत और माल व दौलत उसको रोक नहीं सकती। हक़ तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में कुफ़्फ़ार की तादाद कम करके दिखलाई थी ताकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहावा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ख़्वाब बयान करें तो उनमें मुक़ाबले की जुर्रत बढ़े। फिर जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए तो भी मुसलमानों को काफ़िर कम तादाद में ही दिखाई दिए। अगर ऐसा न होता तो मुसलमानों में अपने ख़ाली हाथ और वेसामान होने की वजह से लड़ाई करने या न करने के बारे में राय का इख़्तिलाफ़ होता और शायद जंग की नौबत न आती, लेकिन लड़ाई हुई और ख़ुदा-ए-क़दीर ने बद्र में फ़त्ह की बदौलत इस्लाम की तरक़्क़ी की राहें खोल दीं।

1. चूँकि विना ईमान के ख़ाली ख़ौफ़ मक़बूल नहीं इसलिए शैतान का ख़ुदा से डरना अगर हक़ीक़त भी हो तो इसपर कुछ शुब्हा और इश्काल नहीं किया जा सकता।
2. मदीना वालों में से।
3. बाज़ मक्का वाले (यानी क़ुरैश) मुसलमानों का ख़ाली हाथ और बेसामानी के साथ काफ़िरों के मुक़ाबले में आ जाना देखकर कहने लगे।
4. ग़रज़ ज़ाहिरी सामान होने या न होने पर दारोमदार नहीं, क़ुदरत रखने वाला कोई और ही है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 332 पर)**

फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग्रक्ना आ-ल फ़िर्औ-न व कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन (54) इन्-न शर्रद्दवाब्बि अिन्दल्लाहिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़हुम् ला युअ्मिनून (55) अल्लज़ी-न आहत्-त मिन्हुम् सुम्-म यन्क़ुज़ू-न अह्-दहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिंव्-व हुम् ला यत्तक़ून (56) फ़-इम्मा तस्क़फ़न्नहुम् फ़िल्हर्बि फ़-शर्रिद् बिहिम् मन् ख़ल्फ़हुम् लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (57) व इम्मा तख़ाफ़न्-न मिन् क़ौमिन् ख़ियान-तन् फ़म्बिज़् इलैहिम् अ़ला सवाइन्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-ख़ाइनीन (58) ❖

व ला यह्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू स-बक़ू, इन्नहुम् ला युअ्जिज़ून (59) व अअिद्दू लहुम् मस्त-तअ्तुम् मिन् क़ुव्वतिंव्-व मिर्रिबातिल्ख़ैलि तुर्हिबू-न बिही अ़दुव्वल्लाहि व अ़दुव्वकुम् व आख़री-न मिन् दूनिहिम् ला तअ्लमूनहुम् अल्लाहु यअ्लमुहुम्, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़ी सबीलिल्लाहि युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (60) व इन् ज-नहू लिस्सल्मि फ़ज्नह् लहा व तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअुल्-अ़लीम (61) व इंय्युरीदू अंय्यख़्दअू-क फ़-इन्-न हस्ब-कल्लाहु हुवल्लज़ी अय्य-द-क बिनस्रिही व बिल्मुअ्मिनीन (62) व अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिहिम्, लौ अन्फ़क़्-त मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म्-मा अल्लफ़्-त बै-न क़ुलूबिहिम् व लाकिन्नल्ला-ह अल्ल-फ़ बैनहुम्, इन्नहू अ़ज़ीज़ुन् हकीम (63) या अय्युहन्नबिय्यु हस्बुकल्लाहु व मनित्त-ब-अ़-क मिनल्

واعلموا ١٠ ١٦٧ الانفال ٨

وكل كانوا ظلمين ﴿٥٤﴾ ان شر الدواب عند الله الذين
كفروا فهم لا يؤمنون ﴿٥٥﴾ الذين عاهدت منهم ثم ينقضون
عهدهم في كل مرة وهم لا يتقون ﴿٥٦﴾ فاما تثقفنهم
في الحرب فشرد بهم من خلفهم لعلهم يذكرون ﴿٥٧﴾
واما تخافن من قوم خيانة فانبذ اليهم على
سواء ان الله لا يحب الخائنين ﴿٥٨﴾ ولا يحسبن الذين
كفروا سبقوا انهم لا يعجزون ﴿٥٩﴾ واعدوا لهم ما استطعتم
من قوة ومن رباط الخيل ترهبون به عدو الله وعدوكم
واخرين من دونهم لا تعلمونهم الله يعلمهم وما
تنفقوا من شيء في سبيل الله يوف اليكم وانتم
لا تظلمون ﴿٦٠﴾ وان جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على
الله انه هو السميع العليم ﴿٦١﴾ وان يريدوا ان يخدعوك
فان حسبك الله هو الذي ايدك بنصره وبالمؤمنين ﴿٦٢﴾
والف بين قلوبهم لو انفقت ما في الارض جميعا
ما الفت بين قلوبهم ولكن الله الف بينهم انه عزيز
حكيم ﴿٦٣﴾ يايها النبي حسبك الله ومن اتبعك من المؤمنين ﴿٦٤﴾

منزل ٢

वालों को ग़र्क़ कर दिया, और वे सब ज़ालिम थे। **(54)** बिला शुब्हा मख़्लूक़ में सबसे बुरे अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ये काफ़िर लोग हैं, तो ये ईमान न लाएँगे।[1] **(55)** जिनकी यह कैफ़ियत है कि आप उनसे (कई बार) अ़हद ले चुके हैं (मगर) फ़िर (भी) वे हर बार अपना अ़हद तोड़ डालते हैं, और वे (अ़हद तोड़ने से) डरते नहीं।[2] **(56)** सो अगर आप लड़ाई में उन लोगों पर क़ाबू पाएँ तो उन (पर हमला करके उस) के ज़रिये से और लोगों को जो कि उनके अ़लावा हैं मुन्तशिर "यानी तित्तर-बित्तर" कर दीजिए, ताकि वे लोग समझ जाएँ। **(57)** और अगर आपको किसी क़ौम से ख़ियानत (यानी अ़हद तोड़ने) का अन्देशा हो तो आप (वह अ़हद) उनको इस तरह वापस कर दीजिए कि (आप और वे उस इत्तिला में) बराबर हो जाएँ,[3] बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ियानत करने वालों को पसन्द नहीं करते। **(58)** ❖

और काफ़िर लोग अपने को यह ख़्याल न करें कि वे बच गए, यक़ीनन वे लोग (ख़ुदा तआ़ला को) आजिज़ नहीं कर सकते। **(59)** और उन (काफ़िरों) के लिए जिस क़द्र हो सके तुमसे क़ुव्वत (यानी हथियार) से और पले हुए घोड़ों से, सामान दुरुस्त रखो, कि उसके ज़रिये से तुम उनपर (अपना) रोब जमाए रखो जो कि (कुफ़्र की वजह से) अल्लाह के दुश्मन हैं और तुम्हारे दुश्मन हैं, और उनके अ़लावा दूसरों पर भी जिनको तुम (ख़ास और मुतैयन तौर पर) नहीं जानते, उनको अल्लाह ही जानता है, और अल्लाह की राह में जो कुछ भी ख़र्च करोगे वह तुमको पूरा-पूरा दे दिया जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ कमी न होगी।[4] **(60)** और अगर वे (काफ़िर) सुलह की तरफ़ झुकें तो आप भी उस तरफ़ झुक जाइए और अल्लाह पर भरोसा रखिए, बिला शुब्हा वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। **(61)** और अगर वे लोग आपको धोखा देना चाहें तो अल्लाह तआ़ला आपके लिए काफ़ी हैं, वह वही है जिसने आपको अपनी (ग़ैबी) इम्दाद (फ़रिश्तों) से और (ज़ाहिरी इम्दाद) मुसलमानों से क़ुव्वत दी **(62)** और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया,[5] अगर आप दुनिया भर का माल ख़र्च करते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें आपस में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, बेशक वह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। **(63)** ऐ नबी! आपके लिए अल्लाह तआ़ला काफ़ी है, और जिन मोमिनों ने आपकी पैरवी की है (वे काफ़ी हैं)। **(64)** ❖

(पृष्ठ 330 का शेष) **5.** सो अल्लाह तआ़ला ने बेजुर्म सज़ा नहीं दी।

6. उनके मुक़ाबले में कोई ऐसी क़ुव्वत नहीं रखता कि उनके अ़ज़ाब को हटा सके।

7. यानी यह कि बिना जुर्म के हम सज़ा नहीं देते।

8. इन मौजूदा काफ़िरों ने अपनी यह हालत बदली कि उनमें बावजूद कुफ़्र के, पहले ईमान लाने की इस्तेदाद (क़ाबलियत) क़रीब थी। इनकार व मुख़ालफ़त करके उसको दूर कर डाला। पस हमने अपनी ढील देने की नेमत को जो पहले से उनको हासिल थी पकड़-धकड़ से बदल दिया। उसकी वजह यह हुई कि उन्होंने ज़िक्र किए गए तरीक़े से क़ाबलियत के क़रीब होने की नेमत को बदल डाला।

1. 'ये ईमान न लाएँगे' फ़रमाना उन्हीं के एतिबार से है जो अल्लाह के इल्म में आख़िर तक काफ़िर रहने वाले थे।

2. इस आयत के नाज़िल होने का सबब यहूद बनी क़ुरैज़ा का अ़हद तोड़ना है कि उन्होंने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़हद किया था कि हम आपके मुख़ालिफ़ों को मदद न देंगे, और फिर ग़ज़वा-ए-अह्ज़ाब में मुश्रिकीन को मदद दी। और भी कई बार ऐसा हो चुका था। हर बार कह देते थे कि हम भूल गए, फिर ताज़ा अ़हद करते थे, फिर ऐसा ही करते थे। इसपर इन आयतों में आपको उनसे जंग और लड़ाई करने का हुक्म हुआ।

3. यानी इस तरह उस अ़हद के बाक़ी न रहने की इत्तिला कर दीजिए। बिना ऐसी इत्तिला के लड़ना ख़ियानत है।

4. हदीस में तीर चलाने की मश्क़ और घोड़ों के रखने और घुड़-सवारी सीखने की बड़ी फ़ज़ीलत आई है। अब बन्दूक़ और तोप तीर के क़ायम मक़ाम है। और अ़मूमन क़ुव्वत में यह सब और वर्ज़िश यानी कसरत भी दाख़िल है।

5. ज़ाहिर है कि अगर आपस में इत्तिफ़ाक़ न हो तो कोई काम ख़ास कर दीन की मदद मिलकर नहीं कर सकते।

मुअ्मिनीन (64) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु हर्रिज़िल्-मुअ्मिनी-न अ़लल्-क़िताल, इंय्यकुम्-मिन्कुम् अिश्रू-न साबिरू-न यग़्लिबू मि-अतैनि व इंय्यकुम्-मिन्कुम् मि-अतुंय्यग़्लिबू अल्फ़म्-मिनल्लज़ी-न क-फ़रू बिअन्नहुम् क़ौमुल्-ला यफ़्क़हून (65) अल्आ-न ख़फ़्फ़-फ़ल्लाहु अ़न्कुम् व अ़लि-म अन्-न फ़ीकुम् ज़अ्फ़न्, फ़-इंय्यकुम्-मिन्कुम् मि-अतुन् साबि-रतुंय्यग़्लिबू मि-अतैनि व इंय्यकुम्-मिन्कुम् अल्फ़ुंय्-यग़्लिबू अल्फ़ैनि बि-इज़्निल्लाहि, वल्लाहु मअ़स्-साबिरीन (66) मा का-न लि-नबिय्यिन् अंय्यकू-न लहू अस्रा हत्ता युस्ख़ि-न फ़िल्अर्ज़ि, तुरीदू-न अ़-रज़द्-दुन्या वल्लाहु युरीदुल् आख़ि-र-त, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (67) लौ ला किताबुम्-मिनल्लाहि स-ब-क़ लमस्सकुम् फ़ीमा अख़ज़्तुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (68) फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् तय्यिबंव्- वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (69) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिमन् फ़ी ऐदीकुम् मिनल्- अस्रा इंय्यअ्-लमिल्लाहु फ़ी क़ुलूबिकुम् ख़ैरंय्युअ्तिकुम् ख़ैरम् मिम्मा उख़ि-ज़ मिन्कुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (70) व इंय्युरीदू ख़ियान-त-क फ़-क़द् ख़ानुल्ला-ह मिन् क़ब्लु फ़-अम्क-न मिन्हुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (71) इन्नल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾
اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ
مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
اَلْفٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۶۶﴾
مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ ؕ
تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖۗ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۷﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَاۤ
اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۶۸﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ
وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۶۹﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ
لِّمَنْ فِيْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ
خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۷۰﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ
مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ

ऐ पैग़म्बर! आप मोमिनों को जिहाद की तरग़ीब दीजिए, अगर तुममें के बीस आदमी साबित क़दम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे, और (इसी तरह) तुममें के सौ आदमी हों तो एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब आ जाएँगे।[1] इस वजह से कि वे ऐसे लोग हैं जो (दीन को) कुछ नहीं समझते। **(65)** अब अल्लाह ने तुमपर तख़्फ़ीफ़ ''यानी कमी और नरमी'' कर दी और मालूम कर लिया कि तुममें हिम्मत की कमी है, सो अगर तुममें के सौ आदमी साबित क़दम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे, और अगर तुममें के हज़ार होंगे तो दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से ग़ालिब आ जाएँगे, और अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ हैं। **(66)** नबी (की शान) के लायक़ नहीं कि उनके क़ैदी (बाक़ी) रहें (बल्कि क़त्ल कर दिए जाएँ) जब तक कि वह ज़मीन में अच्छी तरह (काफ़िरों का) ख़ून न बहा लें।[2] तुम तो दुनिया का माल व असबाब चाहते हो और अल्लाह तआ़ला आख़िरत (की मस्लहत) को चाहते हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़े ज़बरदस्त हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं। **(67)** अगर ख़ुदा तआ़ला का एक लिखा हुआ (मुक़द्दर) न हो चुकता तो जो मामला तुमने इख़्तियार किया है उसके बारे में तुमपर कोई बड़ी सज़ा आ पड़ती। **(68)** सो जो कुछ तुमने लिया है उसको हलाल पाक (समझकर) खाओ और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े बख़्शने वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। **(69)** ❖

ऐ पैग़म्बर! आपके क़ब्ज़े में जो क़ैदी हैं, आप उनसे फ़रमा दीजिए कि अगर अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे दिल में ईमान मालूम होगा तो जो कुछ (फ़िदये में) तुमसे लिया गया है (दुनिया में) उससे बेहतर तुमको दे देगा, और (आख़िरत में) तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। **(70)** और अगर (फ़र्ज़ कर लो) ये लोग आपके साथ ख़ियानत करने (यानी अ़हद तोड़ने) का इरादा रखते हों तो (कुछ फ़िक्र न कीजिए) इससे पहले उन्होंने अल्लाह के साथ ख़ियानत की थी, फिर अल्लाह तआ़ला ने उनको गिरफ़्तार करा दिया, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। **(71)** बेशक जो लोग

---

1. अगरचे यहाँ ख़बर देने का सीग़ा इस्तेमाल किया है कि इतने आदमी इतनों पर ग़ालिब आ जाएँगे लेकिन मक़सूद ख़बर नहीं बल्कि उम्मीद और हुक्म है। यानी जमे रहना वाजिब है और भागना हराम है, और ख़बर के उनवान से ताबीर करने में बतौर किनाए के मुबालग़ा व ताकीद है, जिसका हासिल यह है कि जैसे ग़ल्बे की ख़बर यक़ीनी होने पर जमे रहना वाजिब होना चाहिए उसी तरह अब भी वाजिब है।

2. इन आयतों के नाज़िल होने का सबब यह है कि बद्र में सत्तर काफ़िर पकड़े हुए आए तो आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से उनके बारे में मश्विरा किया। बाज़ ने मश्विरा दिया कि उनको क़त्ल कर देना चाहिए, बाज़ ने कहा कि उनसे कुछ माल लेकर छोड़ देना चाहिए। आप पर वह्य नाज़िल हुई कि इन सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से फ़रमा दीजिए कि तुमको इख़्तियार दिया जाता है, चाहे उनको क़त्ल कर दो चाहे उनसे फ़िदया लेकर छोड़ दो, मगर इस सूरत में अगले साल सत्तर आदमी शहीद होंगे। ग़रज़ अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की यही राय हुई कि ख़ैर हम शहीद हो जाएँगे, इस वक़्त उनको फ़िदया लेकर छोड़ दिया जाए, शायद ये मुसलमान हो जाएँ और इस वक़्त मुसलमानों को माली मदद मिले। आपने भी अपनी रहम-दिली की वजह से इस राय को पसन्द फ़रमाया। चुनाँचे चन्द लोगों को छोड़कर कि वे तो क़त्ल किए गए, जैसे उक़बा, नज़र और तअ़्मा, बाक़ी सब क़ैदियों से फ़िदया लेकर छोड़ दिया गया। सिर्फ़ हज़रत अबुलआ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु को कि वह भी उस वक़्त उनमें थे, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की मरज़ी से बिना कुछ लिए हुए छोड़ दिया। इसको शरीअ़त की इस्तिलाह में 'मन्न' कहते हैं। इसपर ये आयतें 'मा का-न लि नबिय्यिन्' से 'अ़ज़ाबुन अ़ज़ीम' तक नाज़िल हुईं। इन आयतों से सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को इस फ़िदए के हलाल व हराम होने में शुब्हा हो गया तो आयत 'फ़कुलू......आख़िर तक' नाज़िल हुई। चूँकि बाज़े क़ैदी फ़िदया देने के बाद मुसलमान हो गए थे, जैसे हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह और उन्होंने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से फ़िदया देने की वजह से अपने मुफ़लिस हो जाने की शिकायत की, इसपर आयत 'या अय्युहन्नबिय्यु कुल लिमन् फ़ी ऐदीकुम्..... नाज़िल हुई। इस क़िस्से का बाक़ी और आख़िरी हिस्सा यह है कि उसके बाद बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने आपको रोते हुए देखा। पूछा तो आपने फ़रमाया कि अ़ज़ाब के आसार बहुत क़रीब आ गए थे मगर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल हुआ कि नाज़िल नहीं हुआ।

आववू-व न-सरू उलाइ-क बअ्‌ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्‌ज़िन्, वल्लज़ी-न आमनू व लम् युहाजिरू मा लकुम् मिंव्वला-यतिहिम् मिन् शैइन् हत्ता युहाजिरू व इनिस्तन्सरूकुम् फ़िद्दीन फ़-अ़लैकुमुन्नस्रु इल्ला अ़ला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन्, वल्लाहु बिमा तअ्‌मलू-न बसीर **(72)** वल्लज़ी-न क-फ़रू बअ्‌ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्‌ज़िन्, इल्ला तफ़्अ़लूहु तकुन् फ़ित्नतुन् फ़िल्अर्ज़ि व फ़सादुन् कबीर **(73)** वल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आववू-व न-सरू उलाइ-क हुमुल्-मुअ्‌मिनू-न हक़्क़न्, लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम **(74)** वल्लज़ी-न आमनू मिम्-बअ्‌दु व हाजरू व जाहदू म-अ़कुम् फ़-उलाइ-क मिन्कुम्, व उलुल्-अर्हामि बअ्‌ज़ुहुम् औला बिबअ्‌ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ◆ **(75)** ❖

اللهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ
شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ
النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۷۲﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ
اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿۷۳﴾ وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ
اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ
رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۴﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ
فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۷۵﴾

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱﴾
فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ
مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ

9 सूरतुत्तौ-बति 113

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 11360 अक्षर, 2537 शब्द 129 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

बराअतुम्-मिनल्लाहि व रसूलिही इलल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनल् मुश्रिकीन **(1)** फ़सीहू फ़िल्अर्ज़ि अर्ब-अ़-त अश्हुरिंव्वअ्‌लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्‌जिज़िल्लाहि व अन्नल्ला-ह मुख़्ज़िल्-काफ़िरीन **(2)** व अज़ानुम् मिनल्लाहि व रसूलिही इलन्नासि यौमल्-हज्जिल्-अक्बरि

ईमान लाए उन्होंने हिजरत भी की और अपने माल और जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी किया, और जिन लोगों ने रहने को जगह दी और मदद की ये लोग आपस में एक-दूसरे के वारिस होंगे, और जो लोग ईमान तो लाए और हिजरत नहीं की, तुम्हारा उनसे मीरास का कोई ताल्लुक़ नहीं,[1] जब तक कि वे हिजरत न करें, और अगर वे तुमसे दीन के काम में मदद चाहें तो तुम्हारे ज़िम्मे मदद करना (वाजिब) है, मगर उस क़ौम के मुक़ाबले में (नहीं) कि तुममें और उनमें आपस में (सुलह का) अ़हद हो, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों को देखते हैं। **(72)** और जो लोग काफ़िर हैं वे आपस में एक-दूसरे के वारिस हैं, अगर इस (ऊपर ज़िक्र हुए हुक्म) पर अ़मल न करोगे तो दुनिया में बड़ा फ़ितना और बड़ा फ़साद फैलेगा। **(73)** और जो लोग (अव्वल) मुसलमान हुए और उन्होंने (नबी की हिजरत के ज़माने में) हिजरत की, और अल्लाह की राह में जिहाद (भी) करते रहे, और जिन लोगों ने (उन हिजरत करने वालों को) अपने यहाँ ठहराया और (उनकी) मदद की, ये लोग ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं, उनके लिए (आख़िरत में बड़ी) मग़्फ़िरत और (जन्नत में बड़ी) इ़ज़्ज़त वाली रोज़ी है। **(74)** और जो लोग (नबी के हिजरत के ज़माने के) बाद के ज़माने में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया,[2] सो ये लोग (अगरचे फ़ज़ीलत में तुम्हारे बराबर नहीं लेकिन फिर भी) तुम्हारी ही गिन्ती में हैं, और जो लोग रिश्तेदार हैं किताबुल्लाह में एक-दूसरे (की मीरास) के ज़्यादा हक़दार हैं, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं।[3] ◆ **(75)** ❖

9 सूरः तौबा 113

सूरः तौबा[4] मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 129 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

अल्लाह की तरफ़ से और उसके रसूल की तरफ़ से, उन मुश्रिकीन (के अ़हद) से अलग होना है जिनसे तुमने (बिना मुद्दत तय किए हुए) अ़हद कर रखा था। **(1)** सो तुम लोग इस सरज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और (यह भी) जान रखो कि तुम ख़ुदा तआ़ला को आ़जिज़ नहीं कर सकते, और यह (भी जान रखो) कि बेशक अल्लाह तआ़ला (आख़िरत में) काफ़िरों को रुस्वा करेंगे। **(2)** और अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से बड़े हज की तारीख़ों में आ़म लोगों के सामने ऐलान (किया जाता) है कि अल्लाह तआ़ला और उसका रसूल दोनों अलग होते हैं उन मुश्रिकीन (को अमन देने) से। फिर अगर तुम (कुफ़्र से) तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुमने (इस्लाम से) मुँह मोड़ा तो यह समझ रखो कि तुम ख़ुदा तआ़ला को

1. यानी न तुम उनके वारिस न वे तुम्हारे वारिस।
2. यानी काम तो सब किए मगर बाद में।
3. इसलिए हर वक़्त की मस्लहत के मुनासिब हुक्म मुक़र्रर फ़रमाते हैं।
4. इस सूरः में चन्द ग़ज़वात (यानी लड़ाइयाँ और जंगें) और चन्द वाक़िआ़त जो कि ग़ज़वात ही के हुक्म में हैं, वे ज़िक्र किए गए हैं, जैसे अ़रब के क़बीलों से अ़हद ख़त्म करने का ऐलान, मक्का की फ़त्ह, ग़ज़वा-ए-हुनैन, हरम शरीफ़ से काफ़िरों का निकालना, ग़ज़वा-ए-तबूक और उन्हीं आयतों के ज़िम्न में ताबे बनाकर हिजरत का वाक़िआ़।

अन्नल्ला-ह बरीउम् मिनल्-मुश्रिकी-न व रसूलुहू, फ़-इन् तुब्तुम् फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् व इन् तवल्लैतुम् फ़अ़्लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ़्जिज़िल्लाहि, व बश्शिरिल्लज़ी-न क-फ़रू बि-अ़ज़ाबिन् अलीम **(3)** इल्लल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनल्-मुश्रिकी-न सुम्-म लम् यन्क़ुसूकुम् शैअंव्-व लम् युज़ाहिरू अ़लैकुम् अ-हदन् फ़-अतिम्मू इलैहिम् अ़ह्-दहुम् इला मुद्दतिहिम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुत्तक़ीन **(4)** फ़-इज़न्स-लख़ल् अश्हुरुल्-हुरुमु फ़क़्तुलुल्-मुश्रिकी-न हैसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वह्सुरूहुम् वक़्अुदू लहुम् कुल्-ल मर्सदिन् फ़-इन् ताबू व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़-ख़ल्लू सबीलहुम्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(5)** व इन् अ-हदुम् मिनल् मुश्रिकीनस्तजार-क फ़-अजिर्हु हत्ता यस्म-अ़ कलामल्लाहि सुम्-म अब्लिग़्हु मअ्म-नहू, ज़ालि-क बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ़्लमून **(6)** ❖

कै-फ यकूनु लिल्मुश्रिकी-न अ़ह्दुन् अ़िन्दल्लाहि व अ़िन्-द रसूलिही इल्लल्लज़ी-न आ़हत्तुम् अ़िन्दल् मस्जिदिल्-हरामि फ़मस्तक़ामू लकुम् फ़स्तक़ीमू लहुम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुत्तक़ीन **(7)** कै-फ व इंय्यज़्हरू अ़लैकुम् ला यर्क़ुबू फ़ीकुम् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन्, युर्ज़ूनकुम् बिअफ़्वाहिहिम् व तअ्बा क़ुलूबुहुम् व अक्सरुहुम् फ़ासिक़ून **(8)** इश्तरौ बिआयातिल्लाहि स-मनन् क़लीलन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिही, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ़्मलून **(9)** ला यर्क़ुबू-न फ़ी मुअ्मिनिन् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन्, व उलाइ-क हुमुल्

مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِن تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِن
تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝٣ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ
ثُمَّ لَمْ يَنقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا
إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝٤
فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ
وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِن
تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝٥ وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ
فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ۝٦ كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ
اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِينَ ۝٧ كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ
إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَ
أَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ۝٨ اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا

ع

आ़जिज़ नहीं कर सकोगे, और उन काफ़िरों को एक दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। **(3)** (हाँ) मगर वे मुश्रिकीन (इससे अलग हैं) जिनसे तुमने अ़हद लिया, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ ज़रा कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की, सो उनके मुआ़हदे को उनकी (मुक़र्ररा) मुद्दत तक पूरा करो, वाक़ई अल्लाह तआ़ला (अ़हद के ख़िलाफ़ करने से) एहतियात रखने वालों को पसन्द करते हैं। **(4)** सो जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएँ तो (उस वक़्त) उन मुश्रिकों को जहाँ पाओ वहाँ मारो, और पकड़ो और बाँधो, और दाव-घात के मौक़ों में उनकी ताक में बैठो,[1] फिर अगर वे (कुफ़्र से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात देने लगें तो उनका रास्ता छोड़ दो, वाक़ई अल्लाह तआ़ला बड़ी मग्फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत करने वाले हैं। **(5)** और अगर मुश्रिकों में से कोई शख़्स आपसे पनाह का तालिब हो तो आप उसको पनाह दीजिए, ताकि वह अल्लाह का कलाम सुन ले,[2] फिर उसको उसकी अमन की जगह पहुँचा दीजिए,[3] यह (हुक्म) इस सबब से है कि वे ऐसे लोग हैं कि पूरी ख़बर नहीं रखते।[4] **(6)** ❖

उन (क़ुरैश के) मुश्रिकों का अ़हद अल्लाह तआ़ला के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक कैसे (रियायत के क़ाबिल) रहेगा[5] मगर जिन लोगों से तुमने मस्जिदे-हराम के नज़दीक अ़हद लिया है,[6] सो जब तक ये लोग तुमसे सीधी तरह रहें, तुम भी उनसे सीधी तरह रहो,[7] बेशक अल्लाह तआ़ला (अ़हद के ख़िलाफ़ करने से) एहतियात रखने वालों को पसन्द करते हैं।[8] **(7)** कैसे (उनका अ़हद रियायत के क़ाबिल रहेगा) हालाँकि (उनकी हालत यह है कि) अगर वे तुमपर कहीं ग़ल्बा पा जायें तो तुम्हारे बारे में न रिश्तेदारी का ख़्याल करें और न क़ौल व क़रार का। ये लोग तुमको अपनी ज़बानी बातों से राज़ी कर रहे हैं, और उनके दिल (उन बातों को) नहीं मानते, और उनमें ज़्यादा आदमी शरीर हैं। **(8)** उन्होंने अल्लाह के अहकाम के बदले (दुनिया की) बाक़ी न रहने वाली मताअ़ ''यानी सामान और फ़ायदे'' को इख़्तियार कर रखा है, सो ये लोग उसके

---

1. यानी लड़ाई में जो-जो होता है सबकी इजाज़त है।
2. मुराद दीने हक़ के मुतलक़ दलाइल हैं।
3. यानी पहुँचने दीजिए ताकि वे सोच-समझकर अपनी राय क़ायम करे।
4. इसलिए किसी क़द्र मोहलत देना ज़रूरी है।
5. क्योंकि रियायत तो उस अ़हद की होती है जिसको दूसरा शख़्स ख़ुद न तोड़े, वरना रियायत बाक़ी नहीं रहती। मतलब यह कि जब ये लोग ख़ुद अ़हद को तोड़ेंगे तो उस वक़्त इस तरफ़ से भी रियायत न होगी।
6. यानी उनसे उम्मीद है कि ये अ़हद को क़ायम रखेंगे।
7. यानी जब तक ये लोग अ़हद न तोड़ें तुम भी उनसे किए हुए अ़हद की मुद्दत पूरी करो। चुनाँचे बराअत यानी उनसे अलग हो जाने के हुक्म के नाज़िल होने के वक़्त इस मुद्दत में नौ महीने बाक़ी रहे थे, और उनके अ़हद न तोड़ने की वजह से उनकी यह मुद्दत पूरी की गई।
8. पस तुम भी एहतियात रखने से अल्लाह तआ़ला के महबूब हो जाओगे।

मुअ़्तदून (10) फ़-इन् ताबू व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़-इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि, व नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ़्लमून (11) व इन्न-कसू ऐमानहुम् मिम्-बअ़्दि अ़ह्दिहिम् व त-अ़नू फ़ी दीनिकुम् फ़क़ातिलू अ-इम्मतल्-कुफ़्रि इन्नहुम् ला ऐमा-न लहुम् लअ़ल्लहुम् यन्तहून (12) अला तुक़ातिलू-न क़ौमन् न-कसू ऐमानहुम् व हम्मू बि-इख़राजिर्रसूलि व हुम् ब-दऊकुम् अव्व-ल मर्रतिन्, अतख़्शौनहुम् फ़ल्लाहु अहक़्क़ु अन् तख़्शौहु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (13) क़ातिलूहुम् युअ़ज़्ज़िब्हुमुल्लाहु बिऐदीकुम् व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अ़लैहिम् व यश्फ़ि सुदू-र क़ौमिम्-मुअ्मिनीन (14) व युज़्हिब् ग़ै-ज़ क़ुलूबिहिम्, व यतूबुल्लाहु अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (15) अम् हसिब्तुम् अन् तुतरकू व लम्मा यअ़्-लमिल्ला--हुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व लम् यत्तख़िज़ू मिन् दूनिल्लाहि व ला रसूलिही व लल्मुअ्मिनी-न वली-जतन्, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून (16) ❖

واعلموا ١٠ ١٧١ التوبة ٩

عَنْ سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُونَ
فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾ فَإِنْ
تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ
وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾ وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ
مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ
إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ﴿١٢﴾ أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا
نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ
مَرَّةٍ ۚ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾
قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَ
يَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ
وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٥﴾ أَمْ
حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ
وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ
وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ
أَنْ يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۚ
أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ إِنَّمَا

منزل ٢

मा का-न लिल्मुश्रिकी-न अंय्यअ़्मुरू मसाजिदल्लाहि शाहिदी-न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् बिल्कुफ़्रि, उलाइ-क हबितत् अअ़्मालुहुम् व फ़िन्नारि हुम् ख़ालिदून (17) इन्नमा यअ़्मुरु मसाजिदल्लाहि मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त

(यानी अल्लाह तआ़ला के) रास्ते से हटे हुए हैं, (और) यक़ीनन उनका यह अ़मल बहुत ही बुरा है। **(9)** ये लोग किसी मुसलमान के बारे में (भी) न रिश्तेदारी का पास करें और न क़ौल व क़रार का, और ये लोग बहुत ही ज़्यादती कर रहे हैं। **(10)** सो अगर ये लोग (कुफ़्र से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात देने लगें तो वे तुम्हारे दीनी भाई हो जाएँगे,[1] और हम समझदार लोगों के लिए अहकाम को ख़ूब तफ़सील से बयान करते हैं। **(11)** और अगर वे लोग अ़हद करने के बाद अपनी क़स्मों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन (इस्लाम) पर ताना मारें तो तुम लोग इस इरादे से कि ये बाज़ आ जाएँ, उन कुफ़्र के पेशवाओं से (ख़ूब) लड़ो, क्योंकि (इस सूरत की) क़स्में बाक़ी नहीं रहीं। **(12)** तुम ऐसे लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी क़स्मों को तोड़ डाला, और रसूल को वतन से निकालने की तजवीज़ की, और उन्होंने तुमसे पहले ख़ुद छेड़ निकाली,[2] क्या उनसे (लड़ने से) तुम डरते हो? सो अल्लाह तआ़ला इस बात के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि तुम उनसे डरो, अगर तुम ईमान रखते हो। **(13)** उनसे लड़ो, अल्लाह तआ़ला (का वायदा है कि) उनको तुम्हारे हाथों सज़ा देगा और उनको ज़लील (व रुस्वा) करेगा, और तुमको उनपर ग़ालिब करेगा, और बहुत-से मुसलमानों के दिलों को शिफ़ा देगा। **(14)** और उनके दिलों के ग़ैज़ (व ग़ज़ब) को दूर करेगा, और जिसपर मन्ज़ूर होगा अल्लाह तआ़ला तवज्जोह (भी) फ़रमाएगा,[3] और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। **(15)** क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि तुम यूँ ही छोड़ दिए जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह तआ़ला ने (ज़ाहिरी तौर पर) उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुममें से (ऐसे मौक़े पर) जिहाद किया हो, और अल्लाह और रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को ख़ुसूसी दोस्त न बनाया हो,[4] और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है।[5] **(16)** ❖

मुश्रिकों में यह क़ाबलियत ही नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जिस हालत में कि वे ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र (की बातों) का इक़रार कर रहे हैं। उन लोगों के सब आमाल बेकार हैं[6] और दोज़ख़ में वे लोग हमेशा रहेंगे। **(17)** हाँ अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना उन लोगों का काम है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाएँ और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और सिवाय अल्लाह के किसी से

1. यानी उनके अ़हद तोड़ने वग़ैरह पर बिलकुल नज़र न होगी, चाहे उन्होंने कुछ ही किया हो।

2. यानी तुम्हारी तरफ़ से अ़हद को पूरा करने में कोई कमी नहीं हुई, उन्होंने बैठे-बिठाए ख़ुद एक शोशा छोड़ा। पस ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो।

3. यानी मुसलमान होने की तौफ़ीक़ देगा। चुनाँचे मक्का फ़त्ह होने के दिन बाज़े लड़े और ज़लील व मक़्तूल हुए और बाज़े मुसलमान हो गए।

4. जिसके ज़ाहिर होने का अच्छा ज़रिया ऐसे मौक़े का जिहाद है जहाँ मुक़ाबला अपने रिश्तेदारों और क़रीबी लोगों से हो कि इसमें पूरा इम्तिहान हो जाता है कि कौन अल्लाह को चाहता है और कौन बिरादरी को।

5. ऊपर मुश्रिकीन की बुराइयाँ ज़िक्र की गई थीं। चूँकि उनको अपने बाज़ आमाल जैसे मस्जिदे-हराम की ख़िदमत और हाजियों को पानी पिलाने वग़ैरह पर गर्व था, इसलिए आगे पिछले मज़मून को मुकम्मल करने के लिए उनके इस फ़ख़्र और गर्व का इन चन्द आयतों में जवाब देते हैं। और इसी के ज़िम्न में मुसलमानों के एक इख़्तिलाफ़ी मसले का जिसमें उस वक़्त कलाम हुआ था कि ईमान के बाद सबसे अफ़ज़ल अ़मल आया मस्जिदे-हराम की तामीर और हाजियों को पानी पिलाना है या जिहाद, आयत 'अ-जअ़ल्तुम्……' में जवाब देते हैं।

6. इस वजह से कि उनकी क़बूलियत की शर्त नहीं पाई जाती।

व लम् यख़्-श इल्लल्ला-ह, फ़-अ़सा उलाइ-क अंय्यकूनू मिनल् मुह्तदीन (18) अ-जअ़ल्तुम् सिक़ा-यतल्-हाज्जि व अ़िमा-रतल् मस्जिदिल्-हरामि कमन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व जाह-द फ़ी सबीलिल्लाहि, ला यस्तवू-न अ़िन्दल्लाहि, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन ✣ (19)

अल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अअ्-ज़मु द-र-जतन् अ़िन्दल्लाहि, व उलाइ-क हुमुल् फ़ाइज़ून (20) युबश्शिरुहुम् रब्बुहुम् बिरह्मतिम् मिन्हु व रिज़्वानिंव्-व जन्नातिल्-लहुम् फ़ीहा नअ़ीमुम्-मुक़ीम (21) ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, इन्नल्ला-ह अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम (22) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू आबा-अकुम् व इख़्वानकुम् औलिया-अ इनिस्त-हब्बुल्-कुफ़्-र अ़लल्-ईमानि, व मंय्य-तवल्लहुम् मिन्कुम् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (23) क़ुल् इन् का-न आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम् व अ़शीरतुकुम् व अम्वालु-निक़्त-रफ़्तुमूहा व तिजारतुन् तख़्शौ-न कसादहा व मसाकिनु तर्ज़ौनहा अहब्-ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन् फ़ी सबीलिही फ़-तरब्बसू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (24) ❖

يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰۤى اُولٰۤئِكَ
اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۞ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۞ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ
اللّٰهِ وَاُولٰۤئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۞ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ
مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۞ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۞ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا
الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰۤئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ۞ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَ
اَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ
تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 3/8/9

न डरें, सो ऐसे लोगों के मुताल्लिक़ उम्मीद (यानी वायदा) है कि अपने मक़सूद तक पहुँच जाएँगे। **(18)** क्या तुम लोगों ने हाजियों के पानी पिलाने को और मस्जिदे-हराम के आबाद रखने को उस शख़्स (के अ़मल) के बराबर क़रार दे लिया जो कि अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया हो, और उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया हो, ये लोग अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं, और जो लोग बेइन्साफ़ हैं[1] अल्लाह तआ़ला उनको समझ नहीं देता। **(19)** जो लोग ईमान लाए और (अल्लाह के वास्ते) उन्होंने वतन छोड़ा और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद किया, वे दर्जे में अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़े हैं, और यही लोग पूरे कामयाव हैं। **(20)** उनका रब उनको ख़ुशख़बरी देता है अपनी तरफ़ से बड़ी रहमत और बड़ी रज़ामन्दी और (जन्नत के) ऐसे वाग़ों की, कि उनके लिए उन (बाग़ों) में हमेशा रहने वाली नेमत होगी। **(21)** (और) उनमें ये हमेशा-हमेशा को रहेंगे। वेशक अल्लाह तआ़ला के पास बड़ा अज्र है।[2] **(22)** ऐ ईमान वालो! अपने बापों को, अपने भाइयों को (अपना) रफ़ीक़ "यानी साथी और दोस्त" मत बनाओ, अगर वे लोग कुफ़्र को ईमान के मुक़ावले में (ऐसा) अ़ज़ीज़ रखें (कि उनके ईमान लाने की उम्मीद न रहे), और जो शख़्स तुममें से उनके साथ दोस्ती और दिली ताल्लुक़ रखेगा सो ऐसे लोग बड़े नाफ़रमान हैं।[3] **(23)** आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा कुन्बा और वे माल जो तुमने कमाए हैं, और वह तिजारत जिसमें निकासी न होने का तुमको अन्देशा हो, और वे घर जिनको तुम पसन्द करते हो, तुमको अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा प्यारे हों[4] तो तुम इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला (हिजरत न करने की सज़ा का) अपना हुक्म भेज दें, और अल्लाह तआ़ला बेहुक्मी करने वालों को उनके मक़सूद तक नहीं पहुँचाता।[5] **(24)** ❖

1. मुराद मुश्रिक हैं।

2. ऊपर हिजरत का ज़िक्र था जिसमें वतन और रिश्तेदारों व कुन्बे वालों और अपने माल व जायदाद से ताल्लुक़ ख़त्म करना पड़ता है, जो कि तवई तौर पर नागवार मालूम होता है, जो कभी हिजरत न करने का सबब हो सकता है। इसलिए आगे उन ताल्लुक़ात के ग़ालिब होने की मज़म्मत (निंदा) फ़रमाते हैं।

3. मतलब यह कि हिजरत से बड़ी रुकावट उन लोगों का ताल्लुक़ है और ख़ुद वही जायज़ नहीं, फिर हिजरत में क्या दुश्वारी है।

4. इन चीज़ों का ज़्यादा प्यारा होना जो बुरा है। मुराद इससे वह मोहब्बत है जो अल्लाह और रसूल के अहकाम पर अ़मल करने से रोक दे। तवीयत का जो मैलान होता है वह मुराद नहीं।

5. यानी उनका मक़सूद उन चीज़ों से फ़ायदा हासिल करना था, वह बहुत जल्द उनकी उम्मीद के ख़िलाफ़ मौत से ख़त्म हो जाता है।

ल-क़द् न-स-रकुमुल्लाहु फ़ी मवाति-न कसीरतिंव्-व यौ-म हुनैनिन् इज़् अअ्-जबत्कुम् कस्-रतुकुम् फ़-लम् तुग्नि अ़न्कुम् शैअंव्-व ज़ाक़त् अ़लैकुमुल् अर्ज़ु बिमा रहुबत् सुम्-म वल्लैतुम् मुद्बिरीन (25) सुम्-म अन्ज़लल्लाहु सकीन-तहू अ़ला रसूलिही व अ़लल्-मुअ्मिनी-न व अन्ज़-ल जुनूदल्लम् तरौहा व अ़ज़्ज़बल्लज़ी-न क-फ़रू, व ज़ालि-क जज़ाउल्-काफ़िरीन (26) सुम्-म यतूबुल्लाहु मिम्-बअ्दि ज़ालि-क अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (27) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-मुश्रिकू-न न-जसुन् फ़ला यक़्रबुल् मस्जिदल्-हरा-म बअ्-द आ़मिहिम् हाज़ा व इन् ख़िफ़्तुम् अ़ै-ल-तन् फ़सौ-फ़ युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन् शा-अ, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् हकीम (28) क़ातिलुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्यौमिल्-आख़िरि व ला युहर्रिमू-न मा हर्रमल्लाहु व रसूलुहू व ला यदीनू-न दीनल्-हक़्क़ि मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब हत्ता युअ्तुल् जिज़्य-त अंय्यदिंव्-व हुम् साग़िरून (29) ❖

واعلموا ١٠ — ١٧٣ — التوبة ٩

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ
مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ
تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۭ وَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ
عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖٓ اِنْ شَاۗءَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ حَتّٰي يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ
ابْنُ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوْٓا

منزل ٢

व क़ालतिल्-यहूदु अ़ुज़ैरु-निब्नुल्लाहि व क़ालतिन्नसारल्-मसीहुब्नुल्लाहि, ज़ालि-क क़ौलुहुम् बिअफ़्वाहिहिम् युज़ाहिऊ-न क़ौलल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु, क़ात-लहुमुल्लाहु अन्ना युअ्फ़कून (30) इत्त-ख़ज़ू अह्बारहुम् व रुह्बानहुम् अर्बाबम् मिन् दूनिल्लाहि

तुमको ख़ुदा तआ़ला ने (लड़ाई के) बहुत-से मौक़ों में (काफ़िरों पर) ग़ल्बा दिया, और हुनैन के दिन भी,[1] जबकि तुमको अपने मजमे के ज़्यादा होने से ग़र्रा "यानी एक तरह का उस मजमे पर फ़ख़्र" हो गया था, फिर वह ज़्यादती तुम्हारे लिए कुछ कारामद न हुई, और तुमपर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंगी करने लगी, फिर (आख़िर) तुम पीठ देकर भाग खड़े हुए। **(25)** फिर (उसके बाद) अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (के दिल) पर और दूसरे मोमिनों (के दिलों) पर अपनी (तरफ़ से) तसल्ली नाज़िल फ़रमाई,[2] और (मदद के लिए) ऐसे लश्कर नाज़िल फ़रमाए जिनको तुमने नहीं देखा और काफ़िरों को सज़ा दी, और यह काफ़िरों की (दुनिया में) सज़ा है। **(26)** फिर (उसके बाद) ख़ुदा तआ़ला जिसको चाहें तौबा नसीब कर दें, और अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत करने वाले हैं। **(27)** ऐ ईमान वालो! मुश्रिक लोग (अपने गन्दे और नापाक अ़क़ीदों की वजह से) बिलकुल नापाक हैं, सो ये लोग इस साल के बाद मस्जिदे-हराम के पास न आने पाएँ, और अगर तुमको तंगदस्ती का अन्देशा हो तो (ख़ुदा पर भरोसा रखो) ख़ुदा तुमको अपने फ़ज़्ल से अगर चाहेगा (उनका) मोहताज न रखेगा, बेशक अल्लाह ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। **(28)** अहले किताब जो कि न ख़ुदा पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं और न क़ियामत के दिन पर, और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं जिनको ख़ुदा तआ़ला ने और उसके रसूल ने हराम बतलाया है, और न सच्चे दीन (इस्लाम) को क़बूल करते हैं, उनसे यहाँ तक लड़ो कि वे मातहत होकर और रअ़िय्यत बनकर जिज़या "यानी इस्लामी हुकूमत में रहने का टैक्स" देना मन्ज़ूर करें। **(29)** ❖

और यहूद (में से बाज़) ने कहा कि उज़ैर ख़ुदा के बेटे हैं, और ईसाइयों (में से अक्सर) ने कहा कि मसीह ख़ुदा के बेटे हैं, यह उनका क़ौल है, उनके मुँह से कहने का,[3] यह भी उन लोगों जैसी बातें करने लगे जो इनसे पहले काफ़िर हो चुके हैं,[4] ख़ुदा इनको ग़ारत करे, ये किधर उल्टे जा रहे हैं। **(30)** उन्होंने ख़ुदा को

---

1. हुनैन मक्का और ताइफ़ के दरमियान एक मक़ाम है, यहाँ क़बीला 'हवाज़न' और 'सक़ीफ़' से मक्का फ़त्ह होने के दो हफ़्ते बाद लड़ाई हुई थी। मुसलमान बारह हज़ार थे और मुश्रिकीन चार हज़ार। बाज़ मुसलमान अपना मजमा देखकर ऐसे तौर पर कि उससे नाज़ और ग़ुरूर टपकता था, कहने लगे कि हम आज किसी तरह मग़लूब नहीं हो सकते। चुनाँचे शुरू के मुक़ाबले में काफ़िरों को शिकस्त हुई। बाज़े मुसलमान ग़नीमत के माल व सामान को जमा करने लगे, उस वक़्त कुफ़्फ़ार टूट पड़े और वे तीर चलाने में बड़े माहिर थे। मुसलमानों पर तीर बरसाने शुरू किए। इस घबराहट में मुसलमानों के पाँव उखड़ गए। सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चन्द सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ मैदान में रह गए। आपने हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मुसलमानों को आवाज़ दिलवाई। फिर सब लौटकर दोबारा काफ़िरों से मुक़ाबला करने लगे और आसमान से फ़रिश्तों की मदद आई। आख़िर काफ़िर भागे और बहुत-से क़त्ल हुए। फिर उन क़बीलों के बहुत-से आदमी आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम ले आए और आपने उनके अहल व अ़याल (घर वाले और बाल-बच्चे) जो पकड़े गए थे सब उनको वापस कर दिए।

2. यह जो फ़रमाया कि रसूल पर तसल्ली नाज़िल फ़रमाई, मुराद इससे मुतलक़ तसल्ली नहीं, वह तो आपको बल्कि उन सहाबा को भी जो आपके साथ रह गए थे हासिल थी, और वे इसी वजह से साबित क़दम रहे, बल्कि मुराद इससे ख़ास तसल्ली है जिससे ग़ल्बे की उम्मीद क़रीब हो गई।

3. जिसका हक़ीक़त में कहीं नाम व निशान नहीं।

4. मुराद अ़रब के मुश्रिक हैं जो फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ कहते थे।

वल्मसीहब्-न मर्-य-म व मा उमिरू इल्ला लियअ़्बुदू इलाहंव्वाहिदन् ला इला-ह इल्ला हु-व, सुब्हानहू अ़म्मा युश्रिकून **(31)** युरीदू-न अंय्युत्फ़िऊ नूरल्लाहि बिअफ़्वाहिहिम् व यअ्बल्लाहु इल्ला अंय्युतिम्-म नूरहू व लौ करिहल् काफ़िरून **(32)** हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल् मुश्रिकून ● **(33)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न कसीरम् मिनल् अह्बारि वर्रुह्बानि ल-यअ्कुलू-न अम्वालन्नासि बिल्बातिलि व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि, वल्लज़ी-न यक्निज़ूनज़्ज़-ह-ब वल्-फ़िज़्ज़-त व ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम **(34)** यौ-म युह्मा अ़लैहा फ़ी नारि जहन्न-म फ़तुक्वा बिहा जिबाहुहुम् व जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम्, हाज़ा मा कनज़्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम् फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्निज़ून **(35)** इन्-न अ़िद्द-तश्शुहूरि अ़िन्दल्लाहिस्ना अ़-श-र शहरन् फ़ी किताबिल्लाहि यौ-म ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ मिन्हा अर्ब-अ़तुन् हुरुमुन्, ज़ालिकद्दीनुल्-क़य्यिमु फ़ला तज़्लिमू फ़ीहिन्-न अन्फ़ु-सकुम्, व क़ातिलुल् मुश्रिकी-न काफ़्फ़-तन् कमा युक़ातिलूनकुम् काफ़्फ़-तन्, वअ़्लमू अन्नल्ला-ह मअ़ल्मुत्तक़ीन **(36)** इन्नमन्नसी-उ ज़ियादतुन् फ़िल्कुफ़्रि युज़ल्लु बिहिल्लज़ी-न क-फ़रू युहिल्लूनहू आ़मंव्-व युहर्रिमूनहू आ़मल्-लियुवातिऊ अ़िद्द-त मा हर्रमल्लाहु फ़युहिल्लू मा हर्रमल्लाहु, ज़ुय्यि-न लहुम्

التوبة ٩ ١٧٤ واعلموا ١٠

اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ
مَرْيَمَ ۚ وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوْۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ
سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ
بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝
هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ
عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا
اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ
بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى
بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ
فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا
عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَاۤ
اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ
اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَاۤفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۤفَّةً ؕ
وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّمَا النَّسِيْۤءُ زِيَادَةٌ فِي

छोड़कर अपने आ़लिमों और बुजुर्ग हस्तियों को (इताअ़त के एतिबार से) रब बना रखा है,[1] और मसीह इब्ने मरियम को भी, हालाँकि उनको सिर्फ़ यह हुक्म किया गया है कि फ़क़त एक (बरहक़) माबूद की इबादत करें जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह उनके शिर्क से पाक है। **(31)** वे लोग (यूँ) चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने मुँह से बुझा दें,[2] हालाँकि अल्लाह तआ़ला अपने नूर को कमाल तक पहुँचाए बग़ैर नहीं मानेगा, चाहे काफ़िर लोग कैसे ही नाखुश हों। **(32)** (चुनाँचे) वह (अल्लाह) ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी कुरआन) और सच्चा दीन[3] देकर भेजा है, ताकि उसको (बक़िया) तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, चाहे मुश्रिक कैसे ही नाखुश हों।[4] ● **(33)** ऐ ईमान वालो! अक्सर अह्बार और रुह्बान[5] लोगों के माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं,[6] और अल्लाह की राह से रोकते हैं, और (हद दर्जा हिर्स से) जो लोग सोना-चाँदी जमा करके रखते हैं और उनको अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, सो आप उनको एक बड़ी दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। **(34)** जो कि उस दिन ज़ाहिर होगी कि उनको (पहले) दोज़ख़ की आग में तपाया जाएगा, फिर उनसे उनकी पेशानियों "यानी माथों" और उनकी करवटों और उनकी पुश्तों को दाग़ दिया जायेगा। यह है वह जिसको तुमने अपने वास्ते जमा करके रखा, सो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो। **(35)** यक़ीनन महीनों की गिनती (जो कि) अल्लाह की किताब में अल्लाह के नज़दीक (मोतबर हैं,) बारह महीने (चाँद के) हैं, जिस दिन उसने (यानी अल्लाह तआ़ला ने) आसमान और ज़मीन पैदा किए थे (उसी दिन से, और) उनमें चार ख़ास महीने अदब के हैं,[7] यही (जो ज़िक्र किया गया) दीने मुस्तक़ीम है[8] सो तुम सब उन (महीनों) के बारे में (दीन के ख़िलाफ़ करके) अपना नुक़सान मत करना, और उन मुश्रिकों से सबसे लड़ना जैसा कि वे तुम सबसे लड़ते हैं, और (यह) जान रखो कि अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ियों का साथी है।[9] **(36)** यह हटा देना कुफ़्र में और तरक़्क़ी है जिससे कुफ़्फ़ार गुमराह किए जाते हैं कि

1. यानी हलाल व हराम में उनकी इताअ़त अल्लाह की इताअ़त की तरह करते हैं कि शरीअ़त के हुक्म पर उनके क़ौल को तरजीह देते हैं, और ऐसी फ़रमाँबरदारी एक तरह से इबादत ही है। पस इस हिसाब से वे उनकी इबादत करते हैं।

2. यानी मुँह से रद्द व एतिराज़ की बातें इस ग़रज़ से करते हैं कि दीने हक़ को फ़रोग़ और तरक़्क़ी न हो।

3. यानी इस्लाम।

4. मुकम्मल करना दलीलों से साबित करने और क़ुव्वत देने के मायने में तो इस्लाम के लिए हर ज़माने में आ़म है, और यही मुक़ाबिल है 'इतफ़ा' का जो कि रद्द के मायने में है, और तफ़सीर के सही होने के लिए काफ़ी है। और हुकूमत का मिलना मश्रूत है अहले दीन के तक़्वे व सुधार के साथ। और बक़िया तमाम दीनों का मिटना हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में होगा।

5. यानी यहूद और ईसाइयों के आ़लिम और बुजुर्ग हज़रात।

6. यानी हक़ अहकाम को छुपाकर अ़वाम की मरज़ी के मुवाफ़िक़ फ़तवे देकर उनसे नज़राने लेते है।

7. यानी ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब।

8. यानी इन महीनों का बारह होना और चार का तख़्सीस के साथ हराम महीने होना।

9. आयत में मक़सूद उस हिसाब को बातिल करना है जिससे शरई अहकाम में ख़लल पड़ने या ग़लती होने लगे। अलबत्ता चूँकि शरई अहकाम का मदार चाँद के हिसाब पर है इसलिए उसकी हिफ़ाज़त फ़र्ज़े किफ़ाया है। पस अगर सारी उम्मत दूसरी इस्तिलाह को अपना मामूल बना ले जिससे चाँद का हिसाब ज़ाया हो जाए तो सब गुनाहगार होंगे। और अगर वह महफ़ूज़ रहे तो दूसरे हिसाब का इस्तेमाल भी मुबाह और जायज़ है, लेकिन बुजुर्गों के तरीक़े और मामूल के ख़िलाफ़ ज़रूर है। और चाँद के हिसाब का बरतना उसके फ़र्ज़े किफ़ाया होने की वजह से ज़रूरी, अफ़ज़ल और बेहतर है।

सू-उ अअ़्मालिहिम्, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन **(37)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मा लकुम् इज़ा क़ी-ल लकुमुन्फ़िरू **फ़ी सबीलिल्लाहि**स्साक़ल्तुम् इलल्-अर्ज़ि, अ-रज़ीतुम् बिल्हयातिद्दुन्या मिनल्-आख़िरति **फ़मा मताअ़ुल्**-हयातिद्दुन्या फ़िल्आख़िरति इल्ला क़लील **(38)** इल्ला तन्फ़िरू युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमंव्-व यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् व ला तज़ुर्रूहु शैअन्, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(39)** इल्ला तन्सुरूहू फ़-क़द् न-सरहुल्लाहु इज़् अख़्र-जहुल्लज़ी-न क-फ़रू सानियस्नैनी इज़् हुमा फ़िल्ग़ारि इज़् यक़ूलु लिसाहिबिही ला तह्ज़न् इन्नल्ला-ह म-अ़ना फ़-अन्ज़-लल्लाहु सकीन-तहू अ़लैहि व अय्य-दहू बिजुनूदिल्लम् तरौहा व ज-अ़-ल कलि-मतल्लज़ी-न क-फ़रुस्सुफ़्ला, व कलि-मतुल्लाहि हियल्-अ़ुल्या, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(40)** इन्फ़िरू ख़िफ़ाफ़ंव्-व सिक़ालंव्-व जाहिदू बिअम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबीलिल्लाहि, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून **(41)** लौ का-न अ़-रज़न् क़रीबंव्-व स-फ़रन् क़ासिदल्लत्तबअ़ू-क व लाकिम्-बअ़ुदत् अ़लैहिमुश्शुक़्क़तु, व स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लविस्त-तअ़्ना ल-ख़रज्ना म-अ़कुम् युह्लिकू-न अन्फ़ु-सहुम् वल्लाहु यअ़्लमु इन्नहुम् लकाज़िबून **(42)** ❖

अफ़ल्लाहु अ़न्-क लि-म अज़िन्-त लहुम् हत्ता य-तबय्य-न लकल्लज़ी-न स-द-क़ू व

الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ
عَامًا لِيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۚ زُيِّنَ
لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ۚ أَرَضِيتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ
فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّا تَنْفِرُوا
يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ
شَيْئًا ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ
اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ
إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنْزَلَ اللَّهُ
سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ
الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾ انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ
عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِنْ بَعُدَتْ
عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا

वे इस (हराम महीने) को किसी साल (नफ़्सानी ग़रज़ से) हलाल कर लेते हैं, और किसी साल (जब कोई ग़रज़ न हो) हराम समझते हैं, ताकि अल्लाह तआ़ला ने जो (महीने) हराम किए हैं (सिर्फ़) उनकी गिनती पूरी कर लें, फिर अल्लाह के हराम किए हुए (महीने) को हलाल कर लेते हैं। उनके बुरे आमाल उनको अच्छे मालूम होते हैं, और अल्लाह तआ़ला ऐसे काफ़िरों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता।[1] **(37)** ❖

ऐ ईमान वालो! तुम लोगों को क्या हुआ कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम ज़मीन को लगे जाते हो? क्या तुमने आख़िरत के बदले दुनियावी ज़िन्दगी पर क़नाअ़त कर ली? सो दुनियावी ज़िन्दगी से फ़ायदा हासिल करना तो आख़िरत के मुक़ाबले में (कुछ भी नहीं) बहुत कम है। **(38)** अगर तुम न निकलोगे तो वह (यानी अल्लाह तआ़ला) तुमको सख़्त सज़ा देगा (यानी तुमको हलाक कर देगा) और तुम्हारे बदले दूसरी क़ौम को पैदा कर देगा (और उनसे अपना काम लेगा) और तुम अल्लाह (के दीन) को कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकोगे, और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है। **(39)** अगर तुम लोग उनकी (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की) मदद न करोगे तो अल्लाह तआ़ला आपकी मदद उस वक़्त कर चुका है जबकि आपको काफ़िरों ने वतन से निकाल दिया था, जबकि दो आदमियों में से एक आप थे जिस वक़्त कि दोनों ग़ार में थे, जबकि आप अपने हमराही से फ़रमा रहे थे कि तुम (कुछ) ग़म न करो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है। सो अल्लाह तआ़ला ने आप (के दिल) पर अपनी तसल्ली नाज़िल फ़रमाई और आपको ऐसे लश्करों से कुव्वत दी जिनको तुमने नहीं देखा, और अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों की बात (और तदबीर) नीची कर दी, (कि वे नाकाम रहे) और अल्लाह ही का बोल-बाला रहा, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। **(40)** निकल पड़ो (चाहे) थोड़े सामान से (हो) और (चाहे) ज़्यादा सामान से (हो) और अल्लाह तआ़ला की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम यक़ीन रखते हो (तो देर मत करो)। **(41)** अगर कुछ हाथ के हाथ मिलने वाला होता और सफ़र भी मामूली-सा होता तो ये (मुनाफ़िक़) लोग आपके साथ हो लेते, लेकिन उनको तो सफ़र की दूरी ही दूर-दराज़ मालूम होने लगी। और अभी खुदा की क़स्में खा जाएँगे कि अगर हमारे बस की बात होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते, ये लोग (झूठ बोल-बोलकर) अपने आपको तबाह कर रहे हैं, और अल्लाह तआ़ला जानता है कि ये लोग यक़ीनन झूठे हैं। **(42)** ❖

1. यहाँ से तबूक की लड़ाई का बयान है। तबूक मुल्क शाम में एक मक़ाम है। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक्का के फ़त्ह और हुनैन की लड़ाई वग़ैरह से फ़ारिग़ हुए तो आपको ख़बर हुई कि रूम का बादशाह मदीना पर फ़ौज भेजना चाहता है, और वह फ़ौज तबूक में जमा की जाएगी। आपने खुद ही मुक़ाबले के लिए सफ़र का इरादा फ़रमाया और मुसलमानों में इसका आ़म ऐलान कर दिया। चूँकि वह ज़माना गर्मी की शिद्दत का था और मुसलमानों के पास सामान बहुत कम था, और सफ़र भी बहुत लम्बा था, इसलिए इस लड़ाई में जाना बड़ी हिम्मत का काम था। इसलिए इन आयतें में उसकी बहुत तरग़ीब दी गई है। और चूँकि मुनाफ़िक़ लोग ईमान व इख़्लास न होने की वजह से उसमें तरह-तरह के वहाने सामने लाए और उनकी तरह-तरह की ख़बासतें ज़ाहिर हुईं, इसलिये इन आयतों में उनपर भी बहुत लानत मलामत हुई है। ग़रज़ आप उस मक़ाम तबूक तक तशरीफ़ लेजाकर ईसाइयों के लश्कर के मुन्तज़िर रहे, मगर वे ऐसे मरऊब हुए कि उनका हौसला जाता रहा, और आप वहाँ एक मुद्दत तक ठहरकर ख़ैर व आ़फ़ियत के साथ मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले आए। यह वाक़िआ़ रजब सन् नौ हिजरी में हुआ।

तअ्-लमल् काज़िबीन **(43)** ला यस्तअ्ज़िनुकल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि अंय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, वल्लाहु अ़लीमुम् बिल्मुत्तक़ीन **(44)** इन्नमा यस्तअ्ज़िनुकल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि वर्ताबत् क़ुलूबुहुम् फ़हुम् फ़ी रैबिहिम् य-तरद्ददून **(45)** व लौ अरादुल्-ख़ुरू-ज ल-अअ़द्दू लहू अ़ुद्दतंव्-व लाकिन् करिहल्लाहुम्बिआ़-सहुम् फ़-सब्ब-तहुम् व क़ीलक़्अुदू मअ़ल् क़ाअ़िदीन **(46)** लौ ख़-रजू फ़ीकुम् मा ज़ादूकुम इल्ला ख़बालंव्-व ल-औज़अ़ू ख़िलालकुम् यब्ग़ूनकुमुल् फ़ित्न-त व फ़ीकुम् सम्माअ़ू-न लहुम्, वल्लाहुम् अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन **(47)**

ल-क़दिब्त-ग़वुल् फ़ित्न-त मिन् क़ब्लु व क़ल्लबू ल-कल् उमू-र हत्ता जाअल्-हक़्क़ु व ज़्-ह-र अम्रुल्लाहि व हुम् कारिहून **(48)** व मिन्हुम् मंय्यक़ूलुअ्ज़ल्ली व ला तफ़्तिन्नी, अला फ़िल्-फ़ित्नति स-क़तू, व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम् बिल्काफ़िरीन **(49)** इन् तुसिब्-क ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् व इन् तुसिब्-क मुसीबतुंय्यक़ूलू क़द् अख़ज़्ना अम्-रना मिन् क़ब्लु व य-तवल्लौ व हुम् फ़रिहून **(50)** क़ुल् लंय्युसीबना इल्ला मा क-तबल्लाहु लना हु-व मौलाना व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून **(51)** क़ुल् हल् तरब्बसू-न बिना इल्ला इह्दल् हुस्-नयैनि, व नह्नु न-तरब्बसु बिकुम् अंय्युसी-बकुमुल्लाहु बिअ़ज़ाबिम् मिन् अ़िन्दिही औ

مَعَكُمْ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ
عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ
يَتَرَدَّدُوْنَ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ
كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ
لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ
يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
بِالظّٰلِمِيْنَ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ
حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا وَ
اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ بِالْكٰفِرِيْنَ اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ
وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَا اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ
وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ

अल्लाह तआ़ला ने आपको माफ़ (तो) कर दिया (लेकिन) आपने उनको (ऐसी जल्दी) इजाज़त क्यों देदी थी? जब तक कि आपके सामने सच्चे लोग ज़ाहिर न हो जाते, और आप झूठों को मालूम न कर लेते। **(43)** जो लोग अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं वे अपने माल और जान से जिहाद करने के बारे में आपसे रुख़्सत न माँगेंगे, (बल्कि वे हुक्म के साथ दौड़ पड़ेंगे), और अल्लाह तआ़ला (उन) मुत्तक़ियों को ख़ूब जानता है। **(44)** अलबत्ता वे लोग (जिहाद में न जाने की) आपसे रुख़्सत माँगते हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और उनके दिल शक में पड़े हैं, सो वे अपने शक्कों में पड़े हुए हैरान हैं। **(45)** और अगर वे लोग (लड़ाई में) चलने का इरादा करते तो उसका कुछ सामान तो दुरुस्त करते, लेकिन (ख़ैर हुई) अल्लाह तआ़ला ने उनके जाने को पसन्द नहीं किया, इसलिए उनको तौफ़ीक़ नहीं दी और (तक्वीनी हुक्म की वजह से यूँ) कह दिया गया कि अपाहिज लोगों के साथ तुम भी यहाँ ही धरे रहो। **(46)** अगर ये लोग तुम्हारे साथ शामिल होकर जाते तो सिवाय इसके कि और दोगुना फ़साद करते और क्या होता, और तुम्हारे बीच फ़ितना डालने की फ़िक्र में दौड़े-दौड़े फिरते,[1] और (अब भी) तुममें उनके कुछ जासूस (मौजूद) हैं, और (उन) ज़ालिमों को अल्लाह तआ़ला ख़ूब समझेगा। **(47)** उन्होंने तो पहले भी फ़ितना खड़ा करने की फ़िक्र की थी,[2] और आपके लिए कार्रवाइयों की उलट-फेर करते ही रहे, यहाँ तक कि हक़ (का वायदा) आ गया, और (उसका आना यह कि) अल्लाह का हुक्म ग़ालिब रहा, और उनको नागवार ही गुज़रता रहा।[3] **(48)** और उन (ख़िलाफ़ करने वाले मुनाफ़िक़ों) में बाज़ा शख़्स वह है जो कहता है कि मुझको इजाज़त दीजिए और मुझको ख़राबी में न डालिए। ख़ूब समझ लो कि ये लोग ख़राबी में तो पड़ ही चुके, और यक़ीनन (आख़िरत में) दोज़ख़ उन काफ़िरों को घेरेगी।[4] **(49)** अगर आपको कोई अच्छी हालत पेश आती है तो वह उनके लिए ग़म का सबब होती है, और अगर आप पर कोई हादसा आ पड़ता है तो (ख़ुश होकर) कहते हैं कि हमने तो (इसी लिए) पहले से अपना एहतियात (का पहलू) इख़्तियार कर लिया था, और वे ख़ुश होते हुए वापस चले जाते हैं। **(50)** आप फ़रमा दीजिए कि हमपर कोई हादसा नहीं पड़ सकता मगर वही जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़द्दर फ़रमाया है, वह हमारा मालिक है, और सब मुसलमानों को अपने सब काम अल्लाह ही के सुपुर्द रखने चाहिएँ।[5] **(51)** आप फ़रमा दीजिए कि तुम तो हमारे हक़ में दो बेहतरियों में से एक बेहतरी ही

---

1. यानी लगाई-बुझाई करके आपस में फूट डलवाते और झूठी ख़बरें उड़ाकर परेशान करते, दुश्मन का रोब तुम्हारे दिलों में डालने की कोशिश करते, इसलिए उनका न जाना ही अच्छा हुआ।

2. यानी जंगे उहुद वग़ैरह में।

3. ऊपर मुनाफ़िक़ों के मुश्तरका हालात का बयान था। आगे कई आयतों में जो लफ़्ज़ 'मिन्हुम्' से शुरू हुई हैं, बाज़ के मख़्सूस हालात और अक़्वाल (बातें) और दरमियान में मुश्तरका हालात भी ज़िक्र किए गए हैं।

4. उस शख़्स का नाम 'जद बिन क़ैस' था। उसने यह बहाना बनाया था कि मैं औरतों पर फ़िदा हो जाता हूँ और रूमियों की औरतें हसीन ज़्यादा हैं। जाने में मेरा दीनी नुक़सान है, इसलिए रुख़्सत का इच्छुक हूँ।

5. हासिल यह है कि अल्लाह मालिक और हाकिम हैं। हाकिम होने की हैसियत से उनको हर तसर्रुफ़ का इख़्तियार है, इसलिए हम राज़ी हैं।

बिऐदीना फ़-तरब्बसू इन्ना म-अ़कुम् मु-तरब्बिसून (52) क़ुल् अन्फ़िक़ू तौअ़न् औ करहल्-लंय्यु-तक़ब्ब-ल मिन्कुम्, इन्नकुम् कुन्तुम् क़ौमन् फ़ासिक़ीन (53) व मा म-न-अ़हुम् अन् तुक़्ब-ल मिन्हुम् न-फ़क़ातुहुम् इल्ला अन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व बि-रसूलिही व ला यअ्तूनस्सला-त इल्ला व हुम् कुसाला व ला युन्फ़िक़ू-न इल्ला व हुम् कारिहून (54) फ़ला तुअ़्जिब्-क अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम्, इन्नमा यरीदुल्लाहु लियुअ़ज़्ज़ि-बहुम् बिहा फ़िल्हयातिद्दुन्या व तज़्ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (55) व यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन्नहुम् लमिन्कुम्, व मा हुम् मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् क़ौमुंय्यफ़रक़ून (56) लौ यजिदू-न मल्ज-अन् औ मग़ारातिन् औ मुद्द-ख़ालल्-लवल्लौ इलैहि व हुम् यज्महून (57) व मिन्हुम् मंय्यल्मिज़ु-क फ़िस्स-दक़ाति फ़-इन् उअ़्तू मिन्हा रज़ू व इल्लम् युअ्तौ मिन्हा इज़ा हुम् यस्-ख़तून (58) व लौ अन्नहुम् रज़ू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहू व क़ालू हस्बुनल्लाहु सयुअ्तीनल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू इन्ना इलल्लाहि राग़िबून (59) ❖

واعلموا ١٧٧ التوبة ٩

لنا هو مولىنا وعلى الله فليتوكل المؤمنون ۝ قل هل
تربصون بنا الا احدى الحسنيين ونحن نتربص بكم
ان يصيبكم الله بعذاب من عنده او بايدينا فتربصوا
انا معكم متربصون ۝ قل انفقوا طوعا او كرها لن يتقبل
منكم انكم كنتم قوما فسقين ۝ وما منعهم ان تقبل
منهم نفقتهم الا انهم كفروا بالله وبرسوله ولا يأتون
الصلوة الا وهم كسالى ولا ينفقون الا وهم كرهون ۝
فلا تعجبك اموالهم ولا اولادهم انما يريد الله
ليعذبهم بها في الحيوة الدنيا وتزهق انفسهم وهم
كفرون ۝ ويحلفون بالله انهم لمنكم وما هم منكم
ولكنهم قوم يفرقون ۝ لو يجدون ملجا او مغرت
او مدخلا لولوا اليه وهم يجمحون ۝ ومنهم من
يلمزك في الصدقت فان اعطوا منها رضوا وان لم
يعطوا منها اذا هم يسخطون ۝ ولو انهم رضوا ما اتىهم
الله ورسوله وقالوا حسبنا الله سيؤتينا الله من فضله
ورسوله انا الى الله رغبون ۝ انما الصدقت للفقراء

منزل ٢

इन्नमस्स-दक़ातु लिल्फ़ु-क़रा-इ वल्मसाकीनि वल्आ़मिली-न अ़लैहा वल्मुअल्ल-फ़ति क़ुलूबुहुम् व फ़िर्रिक़ाबि वल्ग़ारिमी-न व फ़ी सबीलिल्लाहि वब्निस्सबीलि, फ़री-ज़तम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (60) व मिन्हुमुल्लज़ी-न युअ्ज़ूनन्नबिय्-य व यक़ूलू-न

के मुन्तज़िर रहते हो, और हम तुम्हारे हक़ में इसके मुन्तज़िर रहा करते हैं कि अल्लाह तआ़ला तुमपर कोई अ़ज़ाब भेजेगा, (चाहे) अपनी तरफ़ से (दुनिया या आख़िरत में) या हमारे हाथों से। सो तुम (अपने तौर पर) इन्तिज़ार करो (और) हम तुम्हारे साथ (अपने तौर पर) इन्तिज़ार में हैं।[1] **(52)** आप फ़रमा दीजिए कि तुम (चाहे) ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, तुम किसी तरह (ख़ुदा के नज़दीक) मक़बूल नहीं, (क्योंकि) बेशक तुम हुक्म के ख़िलाफ़ करने वाले लोग हो। **(53)** और उनकी (ख़ैर) ख़ैरात क़बूल होने से और कोई चीज़ इसके अ़लावा रुकावट नहीं कि उन्होंने अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और वे लोग नमाज़ नहीं पढ़ते मगर हारे जी से, और ख़र्च नहीं करते मगर नागवारी के साथ। **(54)** सो उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तआ़ला को सिर्फ़ यह मन्ज़ूर है कि इन (ज़िक्र की हुई) चीज़ों की वजह से दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) उनको अ़ज़ाब में गिरफ़्तार रखे और उनकी जान कुफ़्र ही की हालत में निकल जाए। **(55)** और ये (मुनाफ़िक़) लोग अल्लाह तआ़ला की क़स्में खाते हैं कि वे तुममें के हैं।[2] हालाँकि (हक़ीक़त में) वे तुममें के नहीं, लेकिन (बात यह है कि) वे डरपोक लोग हैं। **(56)** उन लोगों को अगर कोई पनाह मिल जाती, या ग़ार या कोई घुस-बैठने की ज़रा जगह (मिल जाती) तो ये ज़रूर मुँह उठाकर उधर चल देते (और ईमान का इज़्हार न करते)। **(57)** और उनमें बाज़ वे लोग हैं जो सदक़ों (को तक़सीम करने) के बारे में आप पर ताना मारते हैं। सो अगर उन (सदक़ों) में से (उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़) उनको मिल जाता है तो वे राज़ी हो जाते हैं, और अगर उन (सदक़ों) में से उनको (उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़) नहीं मिलता तो वे नाराज़ हो जाते हैं।[3] **(58)** और (उनके लिए बेहतर होता) अगर वे लोग उसपर राज़ी रहते जो कुछ उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने दिया था, और (यूँ) कहते कि हमको अल्लाह काफ़ी है, आइन्दा अल्लाह अपने फ़ज़्ल से हमको (और) देगा, और उसके रसूल देंगे, हम (शुरू से) अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब हैं। **(59)** ❖

---

1. हासिल यह कि अल्लाह तआ़ला हिक्मत वाले हैं, इस मुसीबत में भी हमारे फ़ायदे का ख़्याल करते हैं, इसलिए हम हर हाल में फ़ायदे में हैं, बख़िलाफ़ तुम्हारे कि तुम्हारी ख़ुशहाली का अन्जाम भी वबाल और निकाल है, अगर दुनिया में नहीं तो आख़िरत में ज़रूर है।

2. यानी मुसलमान हैं।

3. इससे मालूम होता है कि उनके एतिराज़ और हर्फ़गीरी का असल मन्शा महज़ दुनियावी लालच और ख़ुद-ग़रज़ी है। पस ऐसे एतिराज़ का बातिल होना ज़ाहिर है।

हु-व उज़ुनुन्, क़ुल् उज़ुनु ख़ैरिल्लकुम् युअ्मिनु बिल्लाहि व युअ्मिनु लिल्मुअ्मिनी-न व रह्मतुल् लिल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम्, वल्लज़ी-न युअ्ज़ू-न रसूलल्लाहि लहुम् अज़ाबुन् अलीम (61) यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम् वल्लाहु व रसूलुहू अहक़्क़ु अंय्युर्ज़ूहु इन् कानू मुअ्मिनीन ▲ (62) अलम् यअ्लमू अन्नहू मंय्युहादिदिल्ला-ह व रसूलहू फ़-अन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदन् फ़ीहा, ज़ालिकल् ख़िज़्युल्-अज़ीम (63) यह्ज़रुल् मुनाफ़िक़ू-न अन् तुनज़्ज़-ल अ़लैहिम् सूरतुन् तुनब्बिउहुम् बिमा फ़ी क़ुलूबिहिम्, क़ुलिस्तह्ज़िऊ इन्नल्ला-ह मुख़्रिजुम् मा तह्ज़रून (64) व ल-इन् सअल्तहुम् ल-यक़ूलुन्-न इन्नमा कुन्ना नख़ूज़ु व नल्अ़बु, क़ुल् अबिल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िऊन (65) ला तअ्तज़िरू क़द् कफ़र्तुम् बअ्-द ईमानिकुम्, इन्नअ्फ़ु अ़न् ताइ-फ़तिम् मिन्कुम् नुअ़ज़्ज़िब् ताइ-फ़तम् बिअन्नहुम् कानू मुज्रिमीन (66) ❖

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً مِّنَ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَ
يَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ
لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ
لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ
الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ
قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾
وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ
اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ
كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ
نُعَذِّبْ طَاىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَ
الْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ

अल्मुनाफ़िक़ू-न वल्मुनाफ़िक़ातु बअ्ज़ुहुम् मिम्-बअ्ज़िन् ✣ यअ्मुरू-न बिल्मुन्करि व यन्हौ-न अ़निल्-मअ्रूफ़ि व यक़्बिज़ू-न ऐदि-यहुम्, नसुल्ला-ह फ़-नसि-यहुम्, इन्नल्-

सदक़ात तो सिर्फ़ ग़रीबों का हक़ है और मोहताजों का,[1] और जो कार्यकरता उन सदक़ात पर मुतैयन हैं,[2] और जिनकी दिलजोई करना (मन्ज़ूर) है,[3] और गुलामों की गर्दन छुड़ाने में,[4] और क़र्ज़दारों के क़र्ज़े में, और जिहाद में, और मुसाफ़िरों में, यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से (मुक़र्रर) है,[5] और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले (और) बड़ी हिक्मत वाले हैं। **(60)** और उन (मुनाफ़िक़ों) में से बाज़े ऐसे हैं कि नबी को तकलीफ़ें पहुँचाते हैं और कहते हैं कि आप हर बात कान देकर "यानी तवज्जोह से" सुन लेते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि (वह नबी) कान देकर "यानी तवज्जोह से" तो वही बात सुनते हैं जो तुम्हारे हक़ में ख़ैर (ही ख़ैर) है कि वे अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों का यक़ीन करते हैं, और आप उन लोगों के हाल पर मेहरबानी फ़रमाते हैं जो तुममें ईमान का इज़्हार करते हैं, और जो लोग अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ें पहुँचाते हैं उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी। **(61)** ये लोग तुम्हारे सामने अल्लाह तआ़ला की (झूठी) क़स्में खाते हैं ताकि तुमको राज़ी कर लें, (जिसमें माल व जान महफ़ूज़ रहे) हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक़ रखते हैं, कि अगर ये लोग सच्चे मुसलमान हैं तो उसको राज़ी करें। ▲ **(62)** क्या उनको ख़बर नहीं कि जो शख़्स अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करेगा (जैसा कि ये लोग कर रहे हैं) तो (यह बात तय हो चुकी है कि) ऐसे शख़्स को दोज़ख़ की आग (इस तौर पर) नसीब होगी (कि) वह उसमें हमेशा रहेगा, यह बड़ी रुस्वाई है। **(63)** मुनाफ़िक़ लोग (तबई तौर पर) इससे अन्देशा करते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरः (मिसाल के तौर पर, या आयत) नाज़िल (न) हो जाए जो उनको उन (मुनाफ़िक़ों) के दिल के हाल की इत्तिला दे दे। आप फ़रमा दीजिए कि अच्छा तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला उस चीज़ को ज़ाहिर करके रहेगा जिस (के इज़्हार) से तुम अन्देशा करते थे। **(64)** और अगर आप उनसे पूछिए तो कह देंगे कि हम तो बस मज़ाक़ और दिल्लगी कर रहे थे। आप (उनसे) कह दीजिएगा कि क्या अल्लाह के साथ और उसकी आयतों के साथ और उसके रसूल के साथ तुम हँसी करते थे? **(65)** तुम अब (यह बेहुदा) उज़्र मत करो, तुम तो अपने को मोमिन कहकर कुफ़्र करने लगे, अगर हम तुममें से बाज़ को छोड़ भी दें फिर भी बाज़ को तो (ज़रूर ही) सज़ा देंगे, इस वजह से कि वे (इल्मे-अज़ली में) मुज्रिम थे।[6] **(66)** ❖

---

1. फ़क़ीर के मायने हैं जिसके पास कुछ न हो। मिस्कीन के मायने हैं जिसके पास निसाब (यानी माल की इतनी मात्रा जिसपर ज़कात वाजिब हो जाती है) से कम हो।

2. मुसलमान होना और अपनी बुनियादी असली ज़रूरतों से ज़ायद निसाब के बक़्द्र का मालिक व क़ाबिज़ न होना सबमें शर्त है, सिवाय ज़कात को वसूल करने और कार्यकरताओं के जो मुसलमान बादशाह की तरफ़ से मुक़र्रर हों कि उनको बावजूद ग़नी (यानी मालदार) होने के भी इस ज़कात में से उज़रत के तौर पर देना जायज़ है। बाक़ी तमाम क़िस्मों में उक्त क़ैद (यानी मुसलमान होना और शरई तौर पर मालदार न होना) शर्त है।

3. दिलजोई के लिए जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में ज़कात दी जाती थी, चाहे वे मुसलमान न हों मगर उनके मुसलमान होने की उम्मीद हो या सिर्फ़ उनके शर व फ़ितने से बचने के लिए। और या मुसलमान हों मगर ग़रीब न हों सिर्फ़ उनको इस्लाम से मुहब्बत पैदा करने के लिए। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के वक़्त में उनके इसका हक़दार न होने पर सबकी राय एक हो गई, जो पहले हुक्म के मन्सूख़ यानी ख़त्म हो जाने की निशानी है।

4. गर्दन छुड़ाने का मतलब यह है कि किसी गुलाम को उसके आक़ा ने कह दिया हो कि इतना रुपया दे दे तो तू आज़ाद है। उस गुलाम को ज़कात दी जाए ताकि वह अपने आक़ा को रुपया देकर आज़ाद हो जाए।

5. ज़कात के ख़र्च होने की सब जगहों में यह शर्त है कि जिनको ज़कात दी जाए उनको मालिक बना दिया जाए, बिना मालिक बनाए ज़कात अदा न होगी।

6. दीन के साथ जान-बूझकर हँसी-ठट्ठा करना चाहे बद-एतिक़ादी से हो या बिना बद-एतिक़ादी के हो, कुफ़्र है। और अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ हँसी-ठट्ठा करना, तीनों का एक ही हुक्म है। (कि वह आदमी काफ़िर हो जाता है)।

मुनाफ़िक़ी-न हुमुल्-फ़ासिक़ून **(67)** व-अ़दल्लाहुल् मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्कुफ़्फ़ा-र ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, हि-य हस्बुहुम् व ल-अ-नहुमुल्लाहु व लहुम् अज़ाबुम् मुक़ीम **(68)** कल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् कानू अशद्-द मिन्कुम् क़ुव्वतंव्-व अक्स-र अम्वालंव्-व औलादन्, फ़स्तम्तअ़ू बि-ख़लाक़िहिम् फ़स्तम्तअ़्तुम् बि-ख़लाक़िकुम् कमस्तम्त-अ़ल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् बि-ख़लाक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कल्लज़ी ख़ाज़ू, उलाइ-क हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(69)** अलम् यअ्तिहिम् न-बउल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द व क़ौमि इब्राही-म व अस्हाबि मद्य-न वल्मुअ्तफ़िकाति, अततहुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानल्लाहु लि-यज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू

التوبة ٩ ١٦٩ واعلموا ١٠

يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ
فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ
وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ
وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ
وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ڏ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ
وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَالْمُؤْمِنُوْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

منزل

अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(70)** वल्मुअ्मिनू-न वल्मुअ्मिनातु बअ्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्ज़िन् ✣ यअ्मुरू-न बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व युतीअ़ूनल्ला-ह व रसूलहू, उलाइ-क स-यर्हमुहुमुल्लाहु, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(71)** व-अ़दल्लाहुल् मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न

✣ व. लाज़िम

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें सब एक तरह के हैं, कि बुरी बात (यानी कुफ़्र और इस्लाम की मुख़ालफ़त) की तालीम देते हैं और अच्छी बात (यानी ईमान व नबी-ए-करीम की पैरवी) से मना करते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने ख़ुदा का ख़्याल न किया, तो ख़ुदा ने उनका ख़्याल न किया,[1] बेशक ये मुनाफ़िक़ बड़े ही सरकश हैं। **(67)** अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और (खुलेआ़म) कुफ़्र करने वालों से दोज़ख़ की आग का अ़हद कर रखा है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे। वह उनके लिए काफ़ी (सज़ा) है, और अल्लाह तआ़ला उनको अपनी रहमत से दूर कर देगा, और उनको हमेशा का अ़ज़ाब होगा। **(68)** (ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम्हारी हालत उन लोगों की-सी है जो तुमसे पहले हो चुके हैं, जो कुव्वत में तुमसे ज़बरदस्त और माल व औलाद की कसरत में तुमसे भी ज़्यादा थे, तो उन्होंने अपने (दुनियावी) हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया, सो तुमने भी अपने (दुनियावी) हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया, जैसा कि तुमसे पहले लोगों ने अपने हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया था। और तुम भी (बुरी बातों में) ऐसे ही घुसे जैसे वे घुसे थे, और उन लोगों के (अच्छे) आमाल दुनिया व आख़िरत में बेकार गए,[2] और वे लोग बड़े नुक़सान में हैं। **(69)** क्या उन लोगों को उन (के अ़ज़ाब व हलाक होने) की ख़बर नहीं पहुँची जो उनसे पहले हुए हैं, जैसे क़ौमे नूह और आ़द और समूद और इब्राहीम की क़ौम और मद्‌यन वाले और उल्टी हुई बस्तियाँ, कि उनके पास उनके पैग़म्बर (हक़ की) साफ़ निशानियाँ लेकर आए (लेकिन न मानने से बर्बाद हुए)। सो (इस बर्बादी में) अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन वे ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।[3] **(70)** और मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें आपस में एक-दूसरे के (दीनी) साथी हैं, नेक बातों की तालीम देते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानते हैं। उन लोगों पर ज़रूर अल्लाह तआ़ला रहमत करेगा, बेशक अल्लाह तआ़ला (पूरी तरह) क़ादिर है, हिक्मत वाला है। **(71)** और अल्लाह तआ़ला ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों से ऐसे बाग़ों का वायदा कर रखा है जिनके नीचे से नहरें चलती होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, और नफ़ीस मकानों का जो कि उन हमेशा रहने वाले बाग़ों में होंगे, और (इन नेमतों के साथ) अल्लाह तआ़ला की

1. यानी उन्होंने इताअ़त न की। अल्लाह तआ़ला ने उनपर अपनी ख़ास रहमत न की।

2. क्योंकि दुनिया में उन आमाल पर सवाब की ख़ुशख़बरी नहीं और आख़िरत में सवाब नहीं।

3. ऊपर मुनाफ़िक़ों की ख़सलतें, बुराइयाँ और नालायक़ियाँ ज़िक्र की गई थीं, आगे मज़मून की और ज़्यादा वज़ाहत के लिए इस कहावत पर नज़र रखते हुए कि चीज़ें अपनी ज़िद और मुख़ालिफ़ चीज़ों से पहचानी जाती हैं, मोमिनों की बाज़ ख़ूबियों और अच्छाइयों का बयान है।

फ़ीहा व मसाकि-न तय्यि-बतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन्, व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि अक्बरु, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (72) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम्, व मअ्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ्सल् मसीर (73) यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि मा क़ालू, व ल-क़द् क़ालू कलि-मतल्कुफ़्रि व क-फ़रू बअ्-द इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम् यनालू व मा न-क़मू इल्ला अन् अ़ग्नाहुमुल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही फ़-इंय्यतूबू यकु ख़ैरल्लहुम् व इंय्य-तवल्लौ युअ़ज़्ज़िबहु--मुल्लाहु अ़ज़ाबन् अलीमन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि मिंव्वलिय्यिंव्वला नसीर (74) व मिन्हुम् मन् आ़-हदल्ला-ह ल-इन् आताना मिन् फ़ज़्लिही लनस्सद्-द-क़न्-न व ल-नकूनन्-न मिनस्सालिहीन (75) फ़-लम्मा आताहुम् मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू बिही व त-वल्लौ व हुम् मुअ्रिज़ून (76) फ़-अअ्क़-बहुम् निफ़ाक़न् फ़ी क़ुलूबिहिम् इला यौमि यल्क़ौनहू बिमा अख़्लफ़ुल्ला-ह मा व-अ़दूहु व बिमा कानू यक्ज़िबून (77) अलम् यअ्लमू अन्नल्ला-ह यअ्लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला-ह अ़ल्लामुल् ग़ुयूब (78) अल्लज़ी-न यल्मिज़ूनल् मुत्तव्विअ़ी-न मिनल् मुअ्मिनी-न फ़िस्स-दक़ाति वल्लज़ी-न ला यजिदू-न इल्ला जुह्दहुम् फ़-यस्ख़रू-न मिन्हुम्, सख़िरल्लाहु मिन्हुम् व लहुम्

جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها ومسكن
طيبة في جنت عدن ورضوان من الله اكبر ذلك
هو الفوز العظيم ۞ يايها النبي جاهد الكفار
والمنفقين واغلظ عليهم وماوىهم جهنم وبئس
المصير ۞ يحلفون بالله ما قالوا ولقد قالوا كلمة
الكفر وكفروا بعد اسلامهم وهموا بما لم ينالوا
وما نقموا الا ان اغنىهم الله ورسوله من فضله
فان يتوبوا يك خيرا لهم وان يتولوا يعذبهم الله
عذابا اليما في الدنيا والاخرة وما لهم في الارض
من ولي ولا نصير ۞ ومنهم من عهد الله لئن
اتىنا من فضله لنصدقن ولنكونن من الصلحين ۞
فلما اتىهم من فضله بخلوا به وتولوا وهم
معرضون ۞ فاعقبهم نفاقا في قلوبهم الى يوم يلقونه
بما اخلفوا الله ما وعدوه وبما كانوا يكذبون ۞ الم
يعلموا ان الله يعلم سرهم ونجوىهم وان الله علام
الغيوب ۞ الذين يلمزون المطوعين من المؤمنين

ع ١٥

منزل ٢

रज़ामन्दी सब (नेमतों) से बड़ी चीज़ है, यह (ज़िक्र हुई जज़ा) बड़ी कामयाबी है। **(72)** ❖

ऐ नबी! कुफ़्फ़ार (से तलवार के साथ) और मुनाफ़िक़ों से (ज़बानी) जिहाद कीजिए, और उनपर सख़्ती कीजिए। (ये दुनिया में तो इसके हक़दार हैं) और (आख़िरत में) इनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरी जगह है।[1] **(73)** वे लोग अल्लाह की क़स्में खा जाते हैं कि हमने (फ़लानी बात) नहीं कही, हालाँकि यक़ीनन उन्होंने कुफ़्र की बात कही थी, और (वह बात कहकर) अपने (ज़ाहिरी) इस्लाम के बाद (ज़ाहिर में भी) काफ़िर हो गए, और उन्होंने ऐसी बात का इरादा किया था जो उनके हाथ न लगी, और यह उन्होंने सिर्फ़ इस बात का बदला दिया है कि उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने अल्लाह के रिज़्क़ से मालदार कर दिया, सो अगर (इसके बाद भी) तौबा करें तो उनके लिए (दोनों जहान में) बेहतर होगा। और अगर मुँह मोड़ा तो अल्लाह तआ़ला उनको दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा देगा, और उनका दुनिया में न कोई यार है और न मददगार।[2] **(74)** और उन (मुनाफ़िक़ों) में बाज़ आदमी ऐसे हैं कि ख़ुदा तआ़ला से अ़हद करते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला हमको अपने फ़ज़्ल से (बहुत-सा माल) अ़ता फ़रमा दे तो हम ख़ूब ख़ैरात करें, और हम (उसके ज़रिए से) ख़ूब नेक-नेक काम किया करें। **(75)** सो जब अल्लाह तआ़ला ने उनको अपने फ़ज़्ल से (बहुत-सा माल) दे दिया तो वे उसमें बुख़्ल करने लगे (कि ज़कात न दी) और (इताअ़त से) मुँह मोड़ने लगे, और वे मुँह फेरने के आ़दी हैं। **(76)** सो अल्लाह तआ़ला ने उसकी सज़ा में उनके दिलों में निफ़ाक़ (क़ायम) कर दिया (जो) ख़ुदा के पास जाने के दिन तक (रहेगा) इस सबब से कि उन्होंने ख़ुदा तआ़ला से अपने वायदे में ख़िलाफ़ किया और इस सबब से कि वे (उस वायदे में शुरू ही से) झूठ बोलते थे। **(77)** क्या उनको ख़बर नहीं? कि अल्लाह तआ़ला को उनके दिल का राज़ और उनकी सरगोशी "यानी कानाफूसी" सब मालूम है, और यह कि अल्लाह तआ़ला तमाम ग़ैब की बातों को ख़ूब जानते हैं।[3] **(78)** ये (मुनाफ़िक़ लोग) ऐसे हैं कि नफ़्ली सदक़ा देने वाले मुसलमानों पर सदक़ात के बारे में ताना मारते हैं, और (ख़ासकर) उन लोगों पर (और

---

1. अगली आयत के मुताल्लिक़ क़िस्सा यह है कि तबूक से वापसी में चन्द मुनाफ़िक़ों ने जिनकी तादाद बारह तक नक़्ल की गई है, एक रात सलाह की कि फ़लाँ घाटी में से आपकी सवारी गुज़रेगी तो सब मिलकर आपको ढकेल दें, फिर क़त्ल कर दें। ग़रज़ सब अपना मुँह लपेटकर जमा होकर उस जगह आ पहुँचे, मगर आपने देखकर डाँटा और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु व हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अ़न्हु साथ थे, उन्होंने हटाया, मगर पहचाने नहीं गए। आपको वह्य से मालूम हुआ, आपने मन्ज़िल पर पहुँचकर उन लोगों को बुलाकर पूछा कि तुमने ऐसा-ऐसा इरादा किया था। वे सब क़स्में खा गए कि न मश्विरा हुआ न इरादा हुआ। उनमें से बाज़ के साथ आपने ख़ास तौर पर माली इम्दाद भी फ़रमाई थी जैसे जिलास। इस क़िस्से में यह आयत नाज़िल हुई और इसके नाज़िल होने के बाद जिलास ने इख़्लास और सच्चे दिल से इस्लाम क़बूल किया।

2. सालबा बिन हातिब नाम के एक शख़्स ने आपसे माल के ज़्यादा होने की दुआ़ कराई। आपने समझाया कि मस्लहत नहीं। उसने कहा कि मैं नेक कामों में ख़र्च किया करूँगा। ग़रज़ आपकी दुआ़ से वह मालदार हो गया। जब ज़कात का वक़्त आया तो कहने लगा कि इसमें (यानी ज़कात में) और जिज़्ये (यानी टैक्स में) क्या फ़र्क़ है, और ज़कात न दी। इसपर अगली आयत नाज़िल हुई।

3. इन आयतों के नाज़िल होने की ख़बर सुनकर सालबा ज़कात लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे तेरी ज़कात लेने से मना फ़रमा दिया है। उसने बहुत हाय-तौबा की। फिर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त में ज़कात लाया, आपने भी क़बूल न की। इसी तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने भी क़बूल न की, यहाँ तक कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में वह मर गया।

अ़ज़ाबुन् अलीम (79) इस्तग़्फ़िर् लहुम् औ ला तस्तग़्फ़िर् लहुम्, इन् तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्‌अ़ी-न मर्रतन् फ़-लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम्, ज़ालि-क बिअन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (80) ❖

फ़रिहल् मुख़ल्लफ़ू-न बिमक़्अ़दिहिम् ख़िला-फ़ रसूलिल्लाहि व करिहू अंय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि व क़ालू ला तन्फ़िरू फ़िल्हर्रि, क़ुल् नारु जहन्न-म अशद्दु हर्रन्, लौ कानू यफ़्क़हून (81) फ़ल्यज़्हकू क़लीलंव् वल्यब्कू कसीरन् जज़ाअम्-बिमा कानू यक्सिबून (82) फ़-इर्र-ज-अ़कल्लाहु इला ताइ-फ़तिम् मिन्हुम् फ़स्तअ्ज़नू-क लिल्ख़ुरूजि फ़क़ुल्-लन् तख़्रुजू मअि़-य अ-बदंव्-व लन् तुक़ातिलू मअि़-य अ़दुव्वन्, इन्नकुम् रज़ीतुम् बिल्क़ुअ़ूदि अव्व-ल मर्रतिन् फ़क़्अ़ुदू मअ़ल् ख़ालिफ़ीन (83) व ला तुसल्लि अ़ला अ-हदिम् मिन्हुम् मा-त अ-बदंव्-व ला तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही,

التوبة ٩ | ١٨١ | واعلموا ١٠

فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ
مِنْهُمْ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ
اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ
يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ
خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ
اَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا
كَثِيْرًا جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى
طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا
مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ
بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى
اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ
وَاَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا
وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ

منزل ٢

इन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फ़ासिक़ून (84) व ला तुअ्जिब-क अम्वालुहुम् व औलादुहुम्, इन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युअ़ज़्ज़ि-बहुम् बिहा फ़िद्दुन्या व तज़्ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (85) व इज़ा उन्ज़िलत् सूरतुन् अन् आमिनू बिल्लाहि व जाहिदू म-अ़ रसूलिहिस्तअ्ज़-न-क उलुत्तौलि मिन्हुम् व क़ालू ज़र्ना नकुम् मअ़ल् क़ाअ़िदीन (86)

ज़्यादा) जिनको सिवाय मेहनत (व मज़दूरी की आमदनी) के और कुछ मयस्सर नहीं होता, यानी उनसे मज़ाक़-ठट्ठा करते हैं, अल्लाह उनको इस मज़ाक़ उड़ाने का तो ख़ास बदला देगा,[1] और (मुतलक़ ताना मारने का यह बदला मिलेगा ही कि) उनके लिए (आख़िरत में) दर्दनाक सज़ा होगी। **(79)** आप चाहे उन (मुनाफ़िक़ों) के लिए इस्तिग़फ़ार करें या उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार भी इस्तिग़फ़ार करेंगे तब भी अल्लाह तआ़ला उनको न बख़्शेगा, यह इस वजह से है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और अल्लाह तआ़ला ऐसे सरकश लोगों को हिदायत नहीं किया करता। **(80)** ❖

ये पीछे रह जाने वाले ख़ुश हो गए, अल्लाह के रसूल के (जाने के) बाद अपने बैठे रहने पर, और उनको अल्लाह तआ़ला की राह में अपने माल और जान के साथ जिहाद करना नागवार हुआ, और (दूसरों को भी) कहने लगे कि तुम गर्मी में मत निकलो। आप कह दीजिए कि जहन्नम की आग (इससे भी) ज़्यादा गर्म है, क्या ख़ूब होता अगर वे समझते। **(81)** सो थोड़े (दिनों दुनिया में) हँस लें, और बहुत (दिनों आख़िरत में) रोते रहें,[2] उन कामों के बदले में जो कुछ (कुफ़्र, निफ़ाक़ और ख़िलाफ़त) किया करते थे। **(82)** तो अगर ख़ुदा तआ़ला आपको (इस सफ़र से मदीना को सही-सालिम) उनके किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाए, फिर ये लोग (किसी जिहाद में) चलने की इजाज़त माँगें तो आप (यूँ) कह दीजिए कि तुम कभी भी मेरे साथ न चलोगे, और न मेरे साथ होकर किसी (दीन के) दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहले भी बैठे रहने को पसन्द किया था, तो उन लोगों के साथ बैठे रहो जो (वाक़ई) पीछे रह जाने के लायक़ ही हैं। **(83)** और उनमें कोई मर जाए तो उस (के जनाज़े) पर कभी नमाज़ न पढ़िए और न (दफ़न के लिए) उसकी क़ब्र पर खड़े होइए, क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है और वे कुफ़्र ही की हालत में मरे हैं।[3] **(84)** और उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तआ़ला को सिर्फ़ यह मन्ज़ूर है कि इन (ज़िक्र हुई चीज़ों) की वजह से उनको दुनिया में (भी) अ़ज़ाब में गिरफ़्तार रखे और उनका दम कुफ़्र ही की हालत में निकल जाए।[4] **(85)** और जब कभी क़ुरआन का कोई टुकड़ा (इस मज़मून में) नाज़िल किया जाता है कि तुम

---

1. मज़ाक़ उड़ाने से चूँकि ज़्यादा दिल दुखता है इसलिए इसकी जगहों और सज़ा को ख़ास तौर पर ज़िक्र किया गया।

2. यानी हँसना थोड़े दिनों का है फिर रोना हमेशा-हमेशा का। अगरचे यहाँ इस तरह का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है जैसे हुक्म दिया जा रहा हो, मगर मक़सद इससे ख़बर देना है।

3. बुख़ारी व मुस्लिम में इस आयत का शाने नुज़ूल इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से यह नक़ल किया है कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ मर गया तो उसके बेटे ने जो कि सहाबी (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दरख़्वासत की कि अपना मुबारक कुर्ता दे दीजिए कि उसमें उसको कफ़नाया जाए। आपने दे दिया। फिर दरख़्वास्त की कि उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ दीजिए। आप पढ़ने खड़े हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आपका दामन पकड़ लिया और अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप इसकी नमाज़ पढ़ते हैं, हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने आपको मुनाफ़िक़ों की नमाज़ पढ़ने को मना फ़रमाया है। यानी 'आप उन मुनाफ़िक़ों के लिए इस्तिग़फ़ार करें या न करें......इस आयत में' आपने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआ़ला ने इख़्तियार दिया है (मना नहीं किया) ग़रज़ आपने नमाज़ पढ़ी। उसपर यह आयत नाज़िल हुई। फिर कभी आपने मुनाफ़िक़ों के जनाज़े पर नमाज़ नहीं पढ़ी।

मसलाः काफ़िर के जनाज़े पर नमाज़ और उसके लिए इस्तिग़फ़ार या उसके कफ़न-दफ़न में शिर्कत जायज़ नहीं।

4. ऊपर तबूक की लड़ाई के मुताल्लिक़ मुनाफ़िक़ों के पीछे रह जाने और झूठे बहाने बनाकर इजाज़त माँगने का बयान था। आगे उनकी यह मुस्तक़िल आदत होना कि हर लड़ाई में उनकी यह हालत है। और उनके मुक़ाबले में ईमान वालों की जाँबाज़ी और उसकी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाते हैं।

रज़ू बिअंय्यकूनू मअ़ल् ख़्वालिफ़ि व तुबि-अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून **(87)** लाकिनिर्रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, व उलाइ-क लहुमुल्-ख़ैरातु व उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून **(88)** अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(89)** ❖

व जाअल् मुअ़ज़्ज़िरू-न मिनल्-अअ़्राबि लियुअ्ज़-न लहुम् व क़-अ़दल्लज़ी-न क-ज़बुल्ला-ह व रसूलहू, सयुसीबुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(90)** लै-स अ़लज़्ज़ु-अ़फ़ा-इ व ला अ़लल्- मर्ज़ा व ला अ़लल्लज़ी-न ला यजिदू-न मा युन्फ़िक़ू-न ह-रजुन् इज़ा न-सहू लिल्लाहि व रसूलिही, मा अ़लल् मुह़्सिनी-न मिन् सबीलिन्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(91)** व ला अ़लल्लज़ी-न इज़ा मा अतौ-क लितह़्मि-लहुम् क़ुल्-त ला अजिदु मा अह़्मिलुकुम् अ़लैहि तवल्लौ व अअ़्युनुहुम् तफ़ीज़ु मिनद्- दम्अ़ि ह-ज़नन् अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून **(92)** इन्नमस्सबीलु अ़लल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनून-क व हुम् अग़्निया-उ रज़ू बिअंय्यकूनू मअ़ल् ख़्वालिफ़ि व त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यअ़्लमून **(93)**

واعلموا ۱۰ ١٨٢ التوبة ٩

امنوا بالله وجاهدوا مع رسوله استاذنك اولوا الطول
منهم وقالوا ذرنا نكن مع القعدين ۝ رضوا بان يكونوا
مع الخوالف وطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون ۝
لكن الرسول والذين امنوا معه جاهدوا باموالهم
وانفسهم واولئك لهم الخيرت واولئك هم المفلحون ۝
اعد الله لهم جنت تجري من تحتها الانهر خلدين
فيها ذلك الفوز العظيم ۝ وجاء المعذرون من الاعراب
ليؤذن لهم وقعد الذين كذبوا الله ورسوله سيصيب
الذين كفروا منهم عذاب اليم ۝ ليس على الضعفاء
ولا على المرضى ولا على الذين لا يجدون ما ينفقون
حرج اذا نصحوا لله ورسوله ما على المحسنين من
سبيل والله غفور رحيم ۝ ولا على الذين اذا ما اتوك
لتحملهم قلت لا اجد ما احملكم عليه تولوا واعينهم
تفيض من الدمع حزنا الا يجدوا ما ينفقون ۝ انما
السبيل على الذين يستاذنونك وهم اغنياء رضوا بان
يكونوا مع الخوالف وطبع الله على قلوبهم فهم لا يعلمون ۝

منزل ٢

(दिल के ख़ुलूस से) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो, तो उनमें के ताक़त वाले आपसे रुख़्सत "यानी न जाने के लिए छुट्टी" माँगते हैं,[1] और कहते हैं, हमको इजाज़त दीजिए कि हम भी यहाँ ठहरने वालों के साथ रह जाएँ। **(86)** वे लोग (निहायत बेग़ैरती के साथ) घर में बैठी औ़रतों के साथ रहने पर राज़ी हो गए और उनके दिलों पर मोहर लग गई, जिससे वे (ग़ैरत या बेग़ैरती को) समझते ही नहीं। **(87)** (हाँ) लेकिन रसूल और आपके साथ में जो मुसलमान हैं उन्होंने (इस हुक्म को माना और) अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिए सारी ख़ूबिया हैं, और यही लोग कामयाब हैं। **(88)** अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं, वे उनमें हमेशा को रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। **(89)** ❖

और कुछ बहाना बनाने वाले लोग देहातियों में से आए ताकि उनको (घर रहने की) इजाज़त मिल जाए, और (उन देहातियों में से) जिन्होंने ख़ुदा से और उसके रसूल से (ईमान के दावे में) बिलकुल ही झूठ बोला था, वे बिलकुल ही बैठ रहे, उनमें से जो (आख़िर तक) काफ़िर रहेंगे उनको दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।[2] **(90)** कम ताक़त लोगों पर कोई गुनाह नहीं, और न बीमारों पर, और न उन लोगों पर जिनको ख़र्च करने को मयस्सर नहीं, जबकि ये लोग अल्लाह और रसूल के साथ (दूसरे अहकाम में) ख़ुलूस रखें, (उन) नेक काम करने वालों पर किसी क़िस्म का इल्ज़ाम (आ़यद) नहीं, और अल्लाह पाक बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।[3] **(91)** और न उन लोगों पर (कोई गुनाह और इल्ज़ाम है) कि जिस वक़्त वे आपके पास इस वास्ते आते हैं कि आप उनको कोई सवारी दे दें और आप (उनसे) कह देते हैं कि मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं जिसपर मैं तुमको सवार कर दूँ, तो वे (नाकाम) इस हालत से वापस चले जाते हैं कि उनकी आँखों से आँसू बहते होते हैं, इस ग़म में कि (अफ़सोस) उनको ख़र्च करने को कुछ भी मयस्सर नहीं। **(92)** पस इल्ज़ाम (और पकड़) तो सिर्फ़ उन लोगों पर है जो बावजूद सामान (और ताक़त) वाले होने के (घर रहने की) इजाज़त चाहते हैं, वे लोग (निहायत बेशर्मी से) घर में बैठी औ़रतों के साथ रहने पर राज़ी हो गए, और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी, जिससे वे (गुनाह व सवाब को) जानते ही नहीं।[4] **(93)**

---

1. 'ताक़त वालों' के ज़िक्र से ख़ास करना मक़सूद नहीं, बल्कि जो ताक़त वाले नहीं यानी इसकी ताक़त व हिम्मत नहीं रखते उनका हाल इससे और भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि जब ताक़त वालों का यह हाल है तो बेताक़तों और कमज़ोरों का तो ज़रूर ही होगा।

2. यूँ तो ईमान के दावे में सब ही मुनाफ़िक़ीन झूठे थे, मगर जो उज़्र करने आए थे उन्होंने अपने दावे को दिखावे में तो निभाया और बाज़े ऐसे घमण्डी और बेबाक थे जिन्होंने ज़ाहिरी तौर पर भी न निभाया। वे जैसे दिल में झूठे थे ज़ाहिर में भी उनका झूठ खुल गया।

3. अगर ये लोग अपनी जानकारी में माज़ूर हों और अपनी तरफ़ से ख़ुलूस व इताअ़त में कोशिशें करें और हक़ीक़त में कुछ कमी रह जाए तो माफ़ कर देंगे।

4. ऊपर उन मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र था जिन्होंने रवानगी के वक़्त उज़्र घड़े थे। आगे उनका ज़िक्र है जिन्होंने वापसी के वक़्त बहाने बनाए थे। ये अगली आयतें वापसी से पहले नाज़िल हुईं, जिनमें फ़ानी ग़रज़ों और मख़्लूक़ की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए उनकी बहानेबाज़ी के मुताल्लिक़ 'यअ़्तज़िरू-न' (यानी ये लोग तुम सबके सामने उज़्र पेश करेंगे) में पेशीनगोई है। और 'क़ुल् ला तअ़्तज़िरू' और 'फ़-अअ़्रिज़ू' (यानी 'आप सबकी तरफ़ से साफ़ कह दीजिए कि ये उज़्र मत पेश करो', और 'तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो') में इस उज़्र के वक़्त उनके साथ क़ौल व अ़मल के एतिबार से बर्ताव की तालीम है, और साथ-साथ अ़ज़ाब की वईदें यानी धमकियाँ उनको सुनाई गई हैं।

ग्यारहवाँ पारः यअ़्तज़िरू-न

सूरतुत्तौ-बति (आयत 94 से 129)

यअ़्तज़िरू-न इलैकुम् इज़ा र-जअ़्तुम् इलैहिम्, क़ुल्-ला तअ़्तज़िरू लन्नुअ्मि-न लकुम् क़द् नब्ब-अनल्लाहु मिन् अख़्बारिकुम्, व स-यरल्लाहु अ़-म-लकुम् व रसूलुहू सुम्-म तुरद्दू-न इला आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून **(94)** स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् इज़न्क़लब्तुम् इलैहिम् लितुअ़्रिज़ू अ़न्हुम्, फ़-अअ़्रिज़ू अ़न्हुम्, इन्नहुम् रिज्सुंव्-व मअ्वाहुम् जहन्नमु जज़ाअम् बिमा कानू यक्सिबून **(95)** यह्लिफ़ू-न लकुम् लितरज़ौ अ़न्हुम् फ़-इन् तरज़ौ अ़न्हुम् फ़-इन्नल्ला-ह ला यरज़ा अ़निल् क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन **(96)** अल्अअ़्राबु अशद्दु कुफ़्रंव्-व निफ़ाक़ंव्-व अज्दरु अल्ला यअ़्लमू हुदू-द मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला रसूलिही, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(97)** व मिनल्- अअ़्राबि मंय्यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु मग़्रमंव्-व य-तरब्बसु बिकुमुद्दवाइ-र, अ़लैहिम् दाइ-रतुस्सौ-इ, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम **(98)** व मिनल्-अअ़्राबि मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु क़ुरुबातिन् अ़िन्दल्लाहि व स-लवातिर्रसूलि, अला इन्नहा क़ुर्-बतुल्लहुम् सयुद्ख़िलुहुमुल्लाहु फ़ी रह्मतिही, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(99)** ❖

वस्साबिक़ूनल् अव्वलू-न मिनल्मुहाजिरी-न वल्अन्सारि वल्लज़ीनत्त-बअ़ूहुम् बि-इह्सानिर्-

يعتذرون ١١ — ١٨٣ — التوبة ٩

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ۚ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا
لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللّٰهُ
عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا
انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۚ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۚ اِنَّهُمْ
رِجْسٌ ۫ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۞ يَحْلِفُوْنَ
لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى
عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۞ اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ
اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۞ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ
بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ۗ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۞
وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا
يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ۗ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۗ
سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ وَالسّٰبِقُوْنَ
الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ
رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

منزل ٢

❖ रु. 12/10/1

ग्यारहवाँ पारः यअ्तज़िरू-न

सूरः तौबा (आयत 94 से 129)

ये लोग तुम्हारे (सबके) सामने उज़्र पेश करेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे। (सो ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) आप (सबकी तरफ़ से साफ़) कह दीजिए कि (यह) उज़्र पेश मत करो, हम कभी तुमको सच्चा न समझेंगे, अल्लाह तआ़ला हमको तुम्हारी (असली हालत की) ख़बर दे चुके हैं। और आगे भी अल्लाह तआ़ला और उसका रसूल तुम्हारी कारगुज़ारी देख लेंगे। फिर ऐसे के पास लौटाए जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सबका जानने वाला है। फिर वह तुमको बतला देगा जो-जो कुछ तुम करते थे। **(94)** (हाँ) वे अब तुम्हारे सामने अल्लाह की क़स्में खा जाएँगे (कि हम माज़ूर थे) जब तुम उनके पास वापस जाओगे, ताकि तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो। सो तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो, वे लोग बिलकुल गन्दे हैं, और (अख़ीर में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, उन कामों के बदले में जो कुछ वे (निफ़ाक़ व मुख़ालिफ़त वग़ैरह) किया करते थे। **(95)** ये इसलिए क़स्में खाएँगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ। सो अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओ तो (उनको क्या नफ़ा, क्योंकि) अल्लाह तआ़ला तो ऐसे शरीर लोगों से राज़ी नहीं होता।[1] **(96)** (उन मुनाफ़िक़ों में जो) देहाती लोग (हैं वे) कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त लोग हैं, और उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको उन अहकाम का इल्म न हो जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाए हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। **(97)** और उन देहातियों में से बाज़-बाज़ ऐसा है कि जो कुछ वह ख़र्च करता है उसको जुर्माना समझता है, और तुम मुसलमानों के वास्ते (ज़माने की) गर्दिशों का मुन्तज़िर रहता है, बुरा वक़्त उन ही (मुनाफ़िक़ों) पर (पड़ने वाला) है,[2] और अल्लाह तआ़ला सुनते हैं, जानते हैं। **(98)** और बाज़े देहात वाले ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं, और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह के पास क़ुर्ब "यानी निकटता" हासिल होने का ज़रिया और रसूल की दुआ़ का ज़रिया बनाते हैं,[3] याद रखो कि (उनका) यह (ख़र्च करना) बेशक उनके लिए निकटता का सबब है, ज़रूर उनको अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में दाख़िल कर लेंगे, अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। **(99)** ❖

और जो मुहाजिरीन और अन्सार (ईमान लाने में सबसे) पहले और मुक़द्दम हैं, और (बक़िया उम्मत में) जितने इख़्लास के साथ उनके पैरोकार हैं, अल्लाह उन सबसे राज़ी हुआ और वे सब उससे (यानी अल्लाह से) राज़ी हुए,[4] और उसने (यानी अल्लाह ने) उनके लिए ऐसे बाग़ मुहैया कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) यह बड़ी कामयाबी है। **(100)** और कुछ तुम्हारे आस-पास वाले

---

1. उज़्र करने और हलफ़ उठाने में उनकी दो ग़रज़ें बयान फ़रमाईं, मुँह मोड़ना और रिज़ा। और उसके मुताल्लिक़ तीन हुक्म फ़रमाए, एक 'उज़्र पेश मत करो' दूसरा 'उनको उनकी हालत पर छोड़ दो' तीसरा 'रिज़ा हासिल न होना' जो 'फ़-इन तरज़ौ......' से समझ में आता है।
2. चुनाँचे फ़ुतूहात की वुसअ़त हुई, कुफ़्फ़ार ज़लील हुए, उनकी सारी हसरतें दिल ही दिल में रह गईं और तमाम उम्र रंज व ख़ौफ़ में कटी।
3. क्योंकि आपकी आ़दते शरीफ़ा थी कि ऐसे मौक़ों पर ख़र्च करने वाले को दुआ़ देते थे, जैसा कि हदीसों में है।
4. 'वस्साबिक़ूनल् अव्वलून' में सब मुहाजिरीन व अन्सार आ गए। और 'अल्लज़ीनत्त-बऊहुम्' में बक़िया मोमिनीन, जिनमें पहला दर्जा तो उनका है जो सहाबा हैं, चाहे मुहाजिर व अन्सार न हों, क्योंकि अख़ीर में हिजरत फ़र्ज़ न थी, मुसलमान होकर अपने-अपने घर रहने की इजाज़त थी। और दूसरा दर्जा इस्तिलाही मायने में ताबिईन का है, फिर सहाबा और ताबिईन के अ़लावा का, फिर ख़ुद इस आख़िरी दर्जे में भी अलग-अलग दर्जे हैं कि तब्-ए-ताबिईन फ़ज़ीलत में औरों से मुक़द्दम हैं, जिस तरह सहाबा में मुहाजिरीन व अन्सार दूसरे सहाबा से अफ़ज़ल हैं।

रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु व अ-अ़द्-द लहुम् जन्नातिन् तज्री तह्-तहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (100) व मिम्-मन् हौलकुम् मिनल्-अअ़्राबि मुनाफ़िक़ू-न, व मिन् अह्लिल्-मदीनति म-रदू अ़लन्निफ़ाक़ि, ला तअ़्लमुहुम्, नह्नु नअ़्लमुहुम्, सनुअ़ज़्ज़िबुहुम् मर्रतैनि सुम्-म युरद्दू-न इला अ़ज़ाबिन् अ़ज़ीम (101) व आख़रूनअ़्-त-रफ़ू बिज़ुनूबिहिम् ख़-लतू अ़-मलन् सालिहंव्-व आख़-र सय्यिअन्, अ़सल्लाहु अंय्यतू-ब अ़लैहिम्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (102) ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम् स-द-क़तन् तुतह्हिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अ़लैहिम्, इन्-न सलात-क स-कनुल्लहुम्, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (103) अलम् यअ़्लमू अन्नल्ला-ह हु-व यक़्बलुत्तौब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ्ख़ुज़ुस्स-दक़ाति व अन्नल्ला-ह हुवत्-तव्वाबुर्रहीम (104) व क़ुलिअ़्मलू फ़-स-यरल्लाहु अ़-म-लकुम् व रसूलुहू वल्-मुअ्मिनू-न, व सतुरद्दू-न इला आ़लिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (105) व आख़रू-न मुर्जौ-न लिअम्रिल्लाहि इम्मा युअ़ज़्ज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अ़लैहिम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (106) वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मस्जिदन् ज़िरारंव्-व कुफ़्रंव्-व तफ़्रीक़म्-बैनल्मुअ्मिनी-न व इर्सादल्-लिमन् हा-रबल्ला-ह व रसूलहू मिन् क़ब्लु, व ल-यह्लिफ़ुन्-न इन् अरद्ना इल्लल्-हुस्ना, वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम्

يعتذرون ١١ ١٨٤ التوبة ٩

تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَ
مِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ
مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ
مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۝ وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا
بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللّٰهُ اَنْ
يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً
تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ
لَّهُمْ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝
وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَ
سَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا
وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۝ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ

منزل ٢

देहातियों में और कुछ मदीना वालों में ऐसे मुनाफ़िक़ हैं, कि निफ़ाक़ की आख़िरी हद को पहुँचे हुए हैं, कि आप (भी) उनको नहीं जानते (कि ये मुनाफ़िक़ हैं, बस) उनको हम ही जानते हैं। हम उनको (यानी मुनाफ़िक़ों को आख़िरत से पहले भी) दोहरी सज़ा देंगे, (एक निफ़ाक़ की दूसरे निफ़ाक़ में हद से बढ़ने की) फिर (आख़िरत में) वे बड़े भारी अ़ज़ाब की तरफ़ भेजे जाएँगे।[1] **(101)** और कुछ और लोग हैं जो अपनी ख़ता के इक़रारी हो गए। जिन्होंने मिले-जुले अ़मल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे, (सो) अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि उन (के हाल) पर रहमत के साथ तवज्जोह फ़रमाएँ, (यानी तौबा क़बूल कर लें) बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी मग्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। **(102)** आप उनके मालों में से सदक़ा (जिसको ये लाए हैं) ले लीजिए, जिसके (लेने के) ज़रिये से आप उनको (गुनाह के आसार से) पाक व साफ़ कर देंगे।[2] और उनके लिए दुआ़ कीजिए, बेशक आपकी दुआ़ उनके लिए (दिल के) इत्मीनान का सबब है, और अल्लाह तआ़ला (उनके मान लेने को) ख़ूब सुनते हैं (और उनकी शर्मिन्दगी को) ख़ूब जानते हैं। **(103)** क्या उनको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआ़ला ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और वही सदक़ों को क़बूल फ़रमाता है, (और क्या उनको ख़बर नहीं कि) अल्लाह तआ़ला ही तौबा क़बूल करने (की सिफ़त में, और) रहमत करने (की सिफ़त) में कामिल हैं। **(104`** और आप कह दीजिए कि (जो चाहो) अ़मल किए जाओ, सो अभी देखे लेता है अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले तुम्हारे अ़मल को, और ज़रूर तुमको ऐसे के पास जाना है जो तमाम छुपी और खुली चीज़ों को जानने वाला है। सो वह तुमको तुम्हारा सब किया हुआ बतला देगा। **(105)** और कुछ और लोग हैं जिनका मामला ख़ुदा का हुक्म आने तक मुल्तवी ''यानी स्थगित'' है कि उनको सज़ा देगा या उनकी तौबा क़बूल कर लेगा, और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। **(106)** और (बाज़े ऐसे हैं कि) जिन्होंने (इन ग़रज़ों के लिए) मस्जिद बनाई है कि (इस्लाम को) नुक़सान पहुँचाएँ और (उसमें बैठ-बैठकर) कुफ़्र की बातें करें, और ईमान वालों में फूट डालें,[3] और उस शख़्स के ठहरने का सामान करें जो पहले से ही ख़ुदा और रसूल का मुख़ालिफ़ है।[4] और क़स्में खा जाएँगे कि सिवाय भलाई के हमारी और कुछ

---

1. उनको और मुनाफ़िक़ों से बढ़ा हुआ इसलिए फ़रमाया कि निफ़ाक़ के निफ़ाक़ होने का मदार छुपाना है, और इसमें वे ऐसे बढ़े हुए हैं कि बावजूद यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ज़हानत, समझ और अ़क़्ल में तमाम जहान से ज़्यादा मुकम्मल हैं, मगर उन्होंने आपको भी पता न चलने दिया।

2. इसी लिए उनकी तौबा क़बूल की और अपनी रहमत से माल क़बूल करने और उनके लिए दुआ़ करने का हुक्म फ़रमाया। पस आइन्दा भी ख़ता या गुनाहों के हो जाने पर तौबा कर लिया करें और अगर तौफ़ीक़ हो तो ख़ैर-ख़ैरात भी किया करें। अगर कोई यह सवाल करे कि जब तौबा से गुनाह माफ़ हो गया तो सदक़े के पाक-साफ़ करने वाला होने के क्या मायने? जवाब इसका यह है कि तौबा से गुनाह तो माफ़ हो जाता है लेकिन कभी-कभी उसका अँधकार और मैल का असर बाक़ी रह जाता है, और अगरचे उसपर पकड़ नहीं लेकिन उससे आइन्दा और गुनाहों के पैदा होने का अन्देशा होता है। पस सदक़े से ख़ुसूसन और दूसरे नेक आमाल से अ़मूमन यह अँधकार और मैल ख़त्म हो जाता है।

3. इस क़िस्से का ख़ुलासा यह है कि शहर मदीना के क़रीब एक मौहल्ला है, क़ुबा उसका नाम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए तो अव्वल इसी मौहल्ले में ठहरे, फिर शहर में तशरीफ़ ले आए थे। तो वहाँ ठहरने के ज़माने में जिस जगह आप नमाज़ पढ़ते थे वहाँ उस मौहल्ले के मोमिनीन मुख़लिसीन ने एक मस्जिद बनाई थी और उसमें नमाज़ पढ़ा करते थे। मुनाफ़िक़ों में आपस में यह सलाह ठहरी कि एक मकान मस्जिद के नाम से अलग बनाया जाए और उसमें सब जमा होकर इस्लाम को नुक़सान पहुँचाने के मश्विरे किया करें। ग़रज़ मस्जिद की शक्ल पर वह मकान तैयार हुआ तो आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त की कि आप वहाँ चलकर नमाज़ पढ़ लीजिए तो फिर वहाँ जमाअ़त होने लगे। आपने वायदा कर लिया कि तबूक से वापस आकर उसमें नमाज़ पढ़ूँगा। अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों में आपको असल हक़ीक़त की इत्तिला कर दी और वहाँ नमाज़ पढ़ने की ग़रज़ से जाने से मना फ़रमा दिया। चुनाँचे आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को भेजकर उसको आग लगवा दी और गिरवा दिया। उस मस्जिद का लक़ब मस्जिदे-ज़रार मशहूर है, इस वजह से कि वह ज़रर यानी नुक़सान का सबब थी।

4. मुराद अबू आ़मिर राहिब है।

लकाज़िबून **(107)** ला तक़ुम् फ़ीहि अ-बदन्, ल-मस्जिदुन् उस्सि-स अ़लत्तक़्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अ-हक़्क़ु अन् तक़ू-म फ़ीहि, फ़ीहि रिजालुंय्युहिब्बू-न अंय्यत-तह्हरू, वल्लाहु युहिब्बुल् मुत्तह्हिरीन **(108)** अ-फ़-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला तक़्वा मिनल्लाहि व रिज़्वानिन् ख़ैरुन् अम्-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ़न्हा-र बिही फ़ी नारि जहन्न-म, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्-ज़ालिमीन **(109)** ला यज़ालु बुन्यानु-हुमुल्लज़ी बनौ री-बतन् फ़ी क़ुलूबिहिम् इल्ला अन् त-क़त्त-अ़ क़ुलूबुहुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(110)** ❖

इन्नल्लाहश्तरा मिनल्मुअ्मिनी-न अन्फ़ु-सहुम् व अम्वालहुम् बिअन्-न लहुमुल्जन्न-त, युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-यक़्तुलू-न व युक़्तलू-न, वअ़्दन् अ़लैहि हक़्क़न् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि वल्क़ुर्आनि, व मन् औफ़ा बि-अ़ह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबैअ़िकुमुल्लज़ी बायअ़्तुम् बिही, व ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(111)** अत्ता-इबूनल्- आ़बिदूनल्-हामिदूनस्-सा-इहूनर्-राकिअ़ूनस्-साजिदूनल्-आमिरू-न बिल्मअ़्रूफ़ि वन्नाहू-न अ़निल्मुन्करि वल्हाफ़िज़ू-न लिहुदूदिल्लाहि, व बश्शिरिल् मुअ्मिनीन **(112)** मा का-न लिन्नबिय्यि वल्लज़ी-न आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरू लिल्मुश्रिकी-न व लौ कानू उली क़ुर्बा मिम्-बअ़्दि मा तबय्य-न लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुल्-जहीम **(113)** व मा कानस्तिग़्फ़ारु इब्राही-म लिअबीहि इल्ला अ़म्-मौअ़ि-दतिंव् व-अ़-दहा इय्याहु फ़-लम्मा तबय्य-न लहू अन्नहू अ़दुव्वुल्-लिल्लाहि त-बर्र-अ मिन्हु, इन्-न इब्राही-म ल-अव्वाहुन्

اول يوم احق ان تقوم فيه فيه رجال يحبون ان يتطهروا
والله يحب المطهرين ۝ افمن اسس بنيانه على تقوى
من الله ورضوان خير ام من اسس بنيانه على شفا
جرف هار فانهار به في نار جهنم والله لا يهدي القوم
الظلمين ۝ لا يزال بنيانهم الذي بنوا ريبة في قلوبهم
الا ان تقطع قلوبهم والله عليم حكيم ۝ ان الله اشترى
من المؤمنين انفسهم واموالهم بان لهم الجنة
يقاتلون في سبيل الله فيقتلون ويقتلون وعدا عليه
حقا في التورىة والانجيل والقران ومن اوفى بعهده من
الله فاستبشروا ببيعكم الذي بايعتم به وذلك هو الفوز
العظيم ۝ التائبون العبدون الحمدون السائحون الركعون
السجدون الامرون بالمعروف والناهون عن المنكر و
الحفظون لحدود الله وبشر المؤمنين ۝ ما كان للنبي و
الذين امنوا ان يستغفروا للمشركين ولو كانوا اولي قربى
من بعد ما تبين لهم انهم اصحب الجحيم ۝ وما كان استغفار
ابرهيم لابيه الا عن موعدة وعدها اياه فلما تبين له

नीयत नहीं, और अल्लाह गवाह है कि वे बिलकुल झूठे हैं। **(107)** आप उसमें कभी (नमाज़ के लिए) खड़े न हों, अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अव्वल दिन से तक़्वे पर रखी गई है। (मुराद मस्जिदे कुबा है) वह (वाक़ई) इस लायक़ है कि आप उसमें (नमाज़ के लिए) खड़े हों।[1] उसमें ऐसे आदमी हैं कि वे ख़ूब पाक होने को पसन्द करते हैं, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब पाक होने वालों को पसन्द करता है। **(108)** फिर क्या ऐसा शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत (यानी मस्जिद) की बुनियाद अल्लाह तआ़ला से डरने पर और उसकी की रिज़ा पर रखी हो, या वह शख़्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी घाटी (यानी गुफा) के किनारे पर रखी हो जो कि गिरने ही को हो, फिर वह (इमारत) उस (बनाने वाले) को लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़े, और अल्लाह तआ़ला ऐसे ज़ालिमों को (दीन की) समझ नहीं देता। **(109)** उनकी (यह) इमारत जो उन्होंने बनाई है (हमेशा) उनके दिलों में (काँटा-सा) खटकती रहेगी, (हाँ) मगर उनके (वे) दिल ही (अगर) फ़ना हो जाएँ तो ख़ैर,[2] और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं।[3] **(110)** ❖

बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों से उनकी जानों और उनके मालों को इस बात के बदले ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी। वे लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, (जिसमें) क़त्ल करते हैं और क़त्ल किए जाते हैं,[4] इसपर च्चा वायदा (किया गया) है तौरात में (भी) और इन्जील में (भी) और क़ुरआन में (भी) और (यह मुसल्लम है कि) अल्लाह से ज़्यादा अपने अ़हद को कौन पूरा करने वाला है। तो तुम लोग अपने इस बेचने पर जिसका तुमने उससे (यानी अल्लाह पाक से) मामला ठहराया है ख़ुशी मनाओ,[5] और यह बड़ी कामयाबी है। **(111)** वे ऐसे हैं जो (गुनाहों से) तौबा करने वाले हैं (और अल्लाह की) इबादत करने वाले (और) तारीफ़ करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकूअ़ करने वाले, (और) सज्दा करने वाले, नेक बातों की तालीम करने वाले, और बुरी बातों से रोकने वाले, और अल्लाह की हदों का (यानी उसके अहकाम का) ख़्याल रखने वाले (हैं), और ऐसे मोमिनीन कि (जिनमें जिहाद और ये सिफ़तें हैं) आप ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।[6] **(112)** पैग़म्बर को और दूसरे मुसलमानों को जायज़ नहीं कि मुश्रिकों के लिए मग्फ़िरत की दुआ़ माँगें, अगरचे वे रिश्तेदार ही (क्यों न) हों, इस (बात) के उनपर ज़ाहिर हो जाने के बाद कि ये लोग दोज़ख़ी हैं।[7] **(113)** और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मग्फ़िरत की दुआ़ माँगना, वह (भी) सिर्फ़ वायदे के सबब था, जो उन्होंने उससे वायदा कर लिया था। फिर जब उनपर यह बात ज़ाहिर हो गई कि वह ख़ुदा का दुश्मन है (यानी काफ़िर

---

1. चुनाँचे कभी-कभी आप वहाँ तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ते।
2. 'मगर यह कि उनके वे दिल ही फ़ना हो जाएँ' का यह मतलब नहीं कि मौत आने या फ़ना होने के बाद राहत हो जाएगी, बल्कि यह मुहावरों में किनाया है हमेशा की हसरत में रहने का।
3. ऊपर जिहाद में पीछे हट जाने वालों की मज़म्मत (निंदा) थी, आगे मुजाहिदीन की फ़ज़ीलत, फिर उनमें से ख़ास कामिलीन की, जिनमें इसके साथ दूसरी ईमानी सिफ़तें भी हों, उनकी तारीफ़ ज़िक्र की गई है।
4. यानी वह बैअ़ (सौदा) जिहाद करना है, चाहे उसमें क़ातिल होने की नौबत आए या मक़्तूल होने की।
5. क्योंकि इस बैअ़ पर तुमको ज़िक्र हुए वायदे के मुताबिक़ जन्नत मिलेगी।
6. इन सिफ़तों की क़ैद लगाने का यह मतलब नहीं कि बिना इन सिफ़तों के जिहाद का सवाब नहीं मिलता। बल्कि मतलब यह है कि इन सबके इकट्ठा होने से सवाब और फ़ज़ीलत में और ज़्यादती और क़ुव्वत हो जाती है, ताकि ख़ाली जिहाद पर न बैठ जाएँ, बल्कि इन इबादतों को भी हमेशा बजा लाएँ।
7. वजह इस मना करने की यह हुई कि अबू तालिब की वफ़ात के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मुझको मनाही न होगी उनके लिए इस्तिग़फ़ार करूँगा। इसपर और मुसलमानों ने भी अपने मुश्रिक होने की हालत में मौत पाए हुए रिश्तेदारों के लिए इस्तिग़फ़ार शुरू किया, तो इस आयत में इसकी मनाही आई। बाज़ को शुब्हा हुआ कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने भी तो अपने बाप के लिए इस्तिग़फ़ार फ़रमाया था, इसपर अगली आयत में जवाब नाज़िल हुआ।

हलीम **(114)** व मा कानल्लाहु लियुज़िल्-ल क़ौमम् बअ्-द इज़् हदाहुम् हत्ता युबय्यि-न लहुम् मा यत्तक़ू-न, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(115)** इन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, युह्यी व युमीतु, व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(116)** ल-क़त्ताबल्लाहु अ़लन्नबिय्यि वल्मुहाजिरी-न वल्अन्सारिल्लज़ीनत्- त-बअ़ूहु फ़ी सा-अ़तिल्-उ़स्रति मिम्- बअ़्दि मा का-द यज़ीग़ु क़ुलूबु फ़रीक़िम् मिन्हुम् सुम्-म ता-ब अ़लैहिम्, इन्नहू बिहिम् रऊफ़ुर्रहीम **(117)** व अ़लस्-सला-सतिल्लज़ी-न ख़ुल्लिफ़ू हत्ता इज़ा ज़ाक़त् अ़लैहिमुल्-अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाक़त् अ़लैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अल्ला मल्ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि, सुम्-म ता-ब अ़लैहिम् लि-यतूबू, इन्नल्ला-ह हुवत्तव्वाबुर्रहीम **(118)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व कूनू मअ़स्सादिक़ीन **(119)** मा का-न लिअह्लिल्-मदीनति व मन् हौ-लहुम् मिनल्- अअ़्राबि अंय्य-तख़ल्लफ़ू अ़र्रसूलिल्लाहि व ला यर्ग़बू बिअन्फ़ुसिहिम् अ़न् नफ़्सिही, ज़ालि-क बिअन्नहुम् ला युसीबुहुम् ज़्-मउंव्-व ला न-सबुंव्-व ला मख़्म-सतुन् फ़ी सबीलिल्लाहि व ला य-तऊ-न मौतिअंय्यग़ीज़ुल्-कुफ़्फ़ा-र व ला यनालू-न मिन् अ़दुव्विन्-नैलन् इल्ला कुति-ब लहुम् बिही अ़-मलुन् सालिहुन्, इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन **(120)** व ला युन्फ़िक़ू-न न-फ़-क़तन् सग़ी-रतंव्- व ला कबी-रतंव्-व ला यक़्तअू-न वादियन् इल्ला कुति-ब लहुम्

اِنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾
لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ
مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ
الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ
وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ
اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ مَا كَانَ
لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا
عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ
نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ

होकर मरा) तो वह उससे बिलकुल बेताल्लुक़ हो गए, वाक़ई इब्राहीम बड़े रहम मिज़ाज वाले, तबीयत के हलीम थे। **(114)** और अल्लाह तआ़ला ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे जब तक कि उन चीज़ों को साफ़-साफ़ न बतला दे जिनसे वे बचते रहें। बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। **(115)** (और) बेशक अल्लाह ही की हुकूमत है, आसमानों और ज़मीन की, वही जिलाता है और मारता है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवा न कोई यार है और न मददगार। **(116)** अल्लाह ने पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हाल) पर तवज्जोह फ़रमाई,[1] और मुहाजिरीन और अन्सार (के हाल) पर भी,[2] जिन्होंने (ऐसी) तंगी के वक़्त में पैग़म्बर का साथ दिया,[3] इसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिलों में कुछ हलचल हो चली थी, फिर उसने (यानी अल्लाह ने) उन (के हाल) पर तवज्जोह फ़रमाई। बेशक अल्लाह उन सबपर बहुत ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान है। **(117)** और उन तीन शख़्सों (के हाल) पर भी (तवज्जोह फ़रमाई) जिनका मामला मुल्तवी "यानी स्थगित" छोड़ दिया गया था, यहाँ तक कि जब (उनकी परेशानी की यह नोबत पहुँची कि) ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के उनपर तंगी करने लगी और वे ख़ुद अपनी जान से तंग आ गए, और उन्होंने समझ लिया कि ख़ुदा (की गिरफ़्त) से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाय इसके कि उसी की तरफ़ रुजू किया जाए। (उस वक़्त वे ख़ास तवज्जोह के क़ाबिल हुए), फिर उन (के हाल) पर (भी ख़ास) तवज्जोह फ़रमाई, ताकि वे (आइन्दा भी) रुजू (रहा) करें, बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत तवज्जोह फ़रमाने वाले, बड़े रहम करने वाले हैं।[4] **(118)** ❖

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और (अ़मल में) सच्चों के साथ रहो। **(119)** मदीना के रहने वालों को और जो देहाती उनके आस-पास में (रहते) हैं उनको यह मुनासिब न था कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का साथ न दें, और न यह (चाहिए था) कि अपनी जान को उनकी जान से ज़्यादा प्यारा समझें। (और) यह (साथ जाने का ज़रूरी होना) इस सबब से है कि उनको (यानी रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ जाने वालों को) अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो थकान पहुँची और जो भूख लगी और जो चलना चले, जो काफ़िरों के लिए नाराज़गी और गुस्से का सबब हुआ हो, और दुश्मनों की जो कुछ ख़बर ली, उन सबपर उनके नाम एक-एक नेक काम लिखा गया (अगर ये साथ जाते तो इनके नाम भी लिखा जाता), यक़ीनन अल्लाह तआ़ला मुख़्लिसीन का अज्र ज़ाया नहीं करते। **(120)** और (यह भी कि) जो कुछ छोटा-बड़ा उन्होंने ख़र्च किया और जितने मैदान उनको तय करने पड़े, यह सब भी उनके नाम (नेकियों में)

---

1. कि आपको नुबुव्वत, जिहाद की इमामत और तमाम ख़ूबियाँ अ़ता फ़रमाईं।

2. कि उनको ऐसी मशक़्क़त के जिहाद में साबित क़दम रखा।

3. तबूक की लड़ाई के ज़माने को 'तंगी का वक़्त' इस वास्ते फ़रमाया कि सख़्त गर्मी का वक़्त था, सफ़र लम्बा था, मुक़ाबला तर्बियत-याफ़्ता लश्कर से था, सवारी की बहुत कमी थी। खाने-पीने के सामान की कमी इस क़द्र थी कि एक-एक छुआरा दो-दो शख़्सों में तक़सीम होता था। बाज़ दफ़ा एक छुआरे को एक के बाद एक कई-कई आदमी चूसते थे, सवारी के ऊँट ज़िब्ह करने पड़े, उनकी अंतड़ियों को निचोड़कर पीना पड़ा।

4. किसी शख़्स को उसके शरीअ़त के ख़िलाफ़ कोई काम करने पर यह सज़ा देना कि उससे सलाम व कलाम बँद कर दें, यह जायज़ है। और हदीसों में जो मनाही आई है कि तीन दिन से ज़्यादा बातचीत बन्द न करें मुराद उससे वह है जिसका सबब कोई दुनियावी रंज हो।

लियज्ज़ि-यहुमुल्लाहु अह्स-न मा कानू यअ्मलून **(121)** व मा कानल्-मुअ्मिनू-न लियन्फ़िरू काफ़्फ़-तन्, फ़लौ ला न-फ़-र मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम् मिन्हुम् ताइ-फ़तुल् लि-य-तफ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्ज़िरू क़ौमहुम् इज़ा र-जअू इलैहिम् लअ़ल्लहुम् यह्ज़रून **(122)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ातिलुल्लज़ी-न यलूनकुम् मिनल्कुफ़्फ़ारि वल्यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्ज़-तन्, वअ्लमू अन्नल्ला-ह मअल्मुत्तक़ीन ◆ **(123)** व इज़ा मा उन्ज़िलत् सूरतुन् फ़-मिन्हुम् मंय्यक़ूलु अय्युकुम् ज़ादत्हु हाज़िही ईमानन् फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़ज़ादत्हुम् ईमानंव्-व हुम् यस्तब्शिरून **(124)** व अम्मल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् फ़ज़ादत्हुम् रिज्सन् इला रिज्सिहिम् व मातू व हुम् काफ़िरून **(125)** अ-वला यरौ-न अन्नहुम् युफ़्तनू-न फ़ी कुल्लि आ़मिम्-मर्र-तन् औ मर्रतैनि सुम्-म ला यतूबू-न व ला हुम् यज़्ज़क्करून **(126)** व इज़ा मा उन्ज़िलत् सूरतुन् न-ज़-र बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन्, हल् यराकुम् मिन् अ-हदिन् सुम्मन्स-रफ़ू, स-रफ़ल्लाहु क़ुलूबहुम् बिअन्नहुम् क़ौमुल् ला यफ़्क़हून **(127)** ल-क़द् जा-अकुम् रसूलुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अ़ज़ीज़ुन् अ़लैहि मा अ़नित्तुम् हरीसुन् अ़लैकुम् बिल्मुअ्मिनी-न रऊफ़ुर्रहीम **(128)** फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल् हस्बियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, अ़लैहि तवक्कल्तु व हु-व रब्बुल् अ़र्शिल्-अ़ज़ीम **(129)** ❖

يعتذرون ١١ — ١٨٧ — التوبة ٩

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً
وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا
نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَ
لِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ
غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا
وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً
اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ
سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ
انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾
لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ
حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا

منزل ٢

लिखा गया ताकि अल्लाह उनको उनके (उन सब) कामों का अच्छे-से-अच्छा बदला दे।[1] **(121)** और (हमेशा के लिये) मुसलमानों को यह (भी) न चाहिए कि (जिहाद के लिये) सब-के-सब (ही) निकल खड़े हों। सो ऐसा क्यों न किया जाए कि उनकी हर बड़ी जमाअ़त में से एक छोटी जमाअ़त (जिहाद में) जाया करे ताकि बाक़ी रहने वाले लोग दीन की समझ-बूझ हासिल करते रहें, और ताकि ये लोग अपनी (उस) क़ौम को जबकि वे उनके पास वापस आएँ, डराएँ। ताकि वे (उनसे दीन की बातें सुनकर बुरे कामों से) एहतियात रखें।[2] **(122)** ❖

ऐ ईमान वालो! उन कुफ़्फ़ार से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास (रहते) हैं,[3] और उनको तुम्हारे अन्दर सख़्ती पाना चाहिए,[4] और यह यक़ीन रखो कि अल्लाह की (इम्दाद) मुत्तक़ी लोगों के साथ है। ◆ **(123)** (पस उनसे डरो मत) और जब कोई (नई) सूरः नाज़िल की जाती है तो उन (मुनाफ़िक़ों) में से बाज़ ऐसे हैं जो (ग़रीब मुसलमानों से मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर) कहते हैं कि (कहो) इस (सूरः) ने तुममें से किसके ईमान में तरक़्क़ी दी। सो (सुनो) जो लोग ईमान वाले हैं उस (सूरः) ने उनके (तो) ईमान में तरक़्क़ी दी है और वे (उस तरक़्क़ी के पाने से) ख़ुश हो रहे हैं। **(124)** और जिनके दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है, उस (सूरः) ने उनमें उनकी (पहली) गन्दगी के साथ और (नई) गन्दगी बढ़ा दी, और वे कुफ़्र ही की हालत में मर गए।[5] **(125)** और क्या उनको नहीं दिखाई देता कि ये लोग हर साल में एक बार या दो बार किसी न किसी आफ़त में फँसे रहते हैं (मगर) फिर भी (अपनी बुरी हरकतों से) बाज़ नहीं आते, और न वे कुछ समझते हैं (जिससे आइन्दा बाज़ आने की उम्मीद हो)। **(126)** और जब कोई (नई) सूरः नाज़िल की जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं (और इशारे से बातें करते हैं) कि तुमको कोई (मुसलमान) देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। (ये लोग हुज़ूरे पाक की मज्लिस से क्या फिरे) ख़ुदा तआ़ला ने उनका दिल (ही ईमान से) फेर दिया है, इस वजह से कि वे बिलकुल बे-समझ लोग हैं (कि अपने नफ़े से भागते हैं)। **(127)** (ऐ लोगो!) तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाए हैं जो तुम्हारी जिन्स (बशर) से हैं, जिनको तुम्हारी नुक़सान की बात निहायत भारी गुज़रती है,[6] जो तुम्हारे फ़ायदे के बड़े इच्छुक रहते हैं, (यह हालत तो सबके साथ है, ख़ास तौर पर) ईमान वालों के साथ बड़े ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान हैं। **(128)** फिर अगर ये मुँह मोड़ें तो आप कह दीजिए (मेरा क्या नुक़सान है) कि मेरे लिए (तो) अल्लाह (हिफ़ाज़त करने वाला और मदद करने वाला) काफ़ी है, उसके सिवा कोई माबूद होने के लायक़ नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और वह बड़े भारी अ़र्श का मालिक है। **(129)** ❖

---

1. ऊपर जो पीछे रह जाने वालों के बारे में मलामत के मज़ामीन नाज़िल हुए उससे आइन्दा के लिए शुब्हा हो सकता था कि हमेशा के लिए सबके ज़िम्मे जिहाद में जाना ज़रूरी होगा, इसलिए आगे हर शख़्स के जाने का फ़र्ज़ न होना बयान फ़रमाते हैं।
2. बाक़ी बचे लोगों के रह जाने में जो मस्लहतें हैं उनमें से एक बड़ी मस्लहत को जो कि दीनी मस्लहत है, ज़िक्र फ़रमा दिया। इसके अ़लावा दुनिया की भी मस्लहतें हैं जो ज़ाहिर होने की वजह से ज़िक्र की मोहताज नहीं। जैसे सबके चले जाने में ख़ुद दारुल-इस्लाम का क़ब्ज़े से निकल जाना भी मुम्किन है।
3. ऊपर चन्द आयतों में जिहाद की तरग़ीब थी, अब उसकी तरतीब मय उसके मुताल्लिक़ चन्द चीज़ों के ज़िक्र है। हासिल तरतीब का ज़ाहिर है कि अव्वल पास वालों से निबटना चाहिए, फिर बक़िया में जो सबसे पास के हों, और इसी पर आगे क़ियास कर लिया जाए। और इस तरतीब के ख़िलाफ़ में जो ख़राबियाँ हैं वे ज़ाहिर हैं, चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो अपने इख़्तियार से ग़ज़वात (लड़ाइयाँ) फ़रमाए और सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने भी, सबमें यही तरतीब अपनाई है।
4. यानी जिहाद के वक़्त भी मज़बूत रहना चाहिए। और वैसे भी सुलह के ज़माने को छोड़कर उनसे ढीलापन न बरतना चाहिए।
5. यानी जो उनमें मर चुके वे काफ़िर मरे और जो इसी ज़िद व हठ पर रहेंगे, वे काफ़िर मरेंगे। जवाब का हासिल यह है कि क़ुरआन में ईमान को तरक़्क़ी देने की बेशक ख़ासियत है लेकिन जगह और मक़ाम में क़ाबलियत भी तो हो। और अगर पहले से गन्दगी जड़ जमाए हुए है तो और भी उसकी जड़ मज़बूत हो जाएगी। जैसे बारिश कि हर जगह एक-सी होती है, लेकिन उसी बारिश से किसी जगह फूल-फल और ख़ूबसूरत पौधे पैदा होते हैं और उसी बारिश से दूसरी जगह काँटे और झाड़-झन्काड़ पैदा होते हैं। इसमें क़ुसूर बारिश का नहीं बल्कि क़ुसूर उस ज़मीन और जगह की क़ाबलियत का है।
6. यानी चाहते हैं कि तुमको कोई नुक़सान न पहुँचे।

10 सूरतु यूनुस 51

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7733 अक्षर, 1861 शब्द, 109 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, तिल्-क आयातुल् किताबिल्-हकीम (1) अका-न लिन्नासि अ्-जबन् अन् औहैना इला रजुलिम्-मिन्हुम् अन् अन्ज़िरिन्ना-स व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू अन्-न लहुम् क़-द-म सिद्‌क़िन् अि़न्-द रब्बिहिम् क़ालल्-काफ़िरू-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुम्-मुबीन (2) इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि युदब्बिरुल्-अम्-र, मा मिन् शफ़ीअि़न् इल्ला मिम्-बअ़्दि इज़्निही, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़अ़्बुदूहु, अ-फ़ला तज़क्करून (3) इलैहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न्, वअ़्दल्लाहि हक़्क़न्, इन्नहू यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू लियज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति बिल्क़िस्ति, वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् शराबुम्-मिन् हमीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून (4) हुवल्लज़ी ज-अ़लश्शम्-स ज़ियाअंव्-वल्क़-म-र नूरंव्-व क़द्-द-रहू मनाज़ि-ल लितअ़्लमू अ़-ददस्सिनी-न वल्हिसा-ब, मा ख़-लक़ल्लाहु ज़ालि-क इल्ला बिल्हक़्क़ि युफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ़्लमून (5) इन्-न फ़िख़्तिलाफ़िल्लैलि

يونس ١٠ ١٨٨ يعتذرون ١١

فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ

الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ تِسْعٌ وَّمِائَةُ اٰيَاتٍ وَّاَحَدَ عَشَرَ رُكُوْعًا

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ

اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ

اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ

اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ

الْاَمْرَ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ

فَاعْبُدُوْهُ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا وَعْدَ اللّٰهِ

حَقًّا اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ

حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٤﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ

الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ

السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا

منزل ٣

10 सूरः यूनुस 51

सूरः यूनुस मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 109 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ये हिक्मत से भरी किताब (यानी कुरआन) की आयतें हैं।[1] **(1)** क्या उन (मक्का के) लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हमने उनमें से एक शख़्स के पास वह्य भेज दी कि (ख़ुदा तआ़ला के अहकाम के ख़िलाफ़ करने पर) सब आदमियों को डराइए, और जो ईमान ले आएँ उनको यह ख़ुशख़बरी सुनाइए कि उनके रब के पास (पहुँचकर) उनको पूरा मर्तबा मिलेगा। काफ़िर कहने लगे (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) कि यह शख़्स तो बिला शुब्हा खुला जादूगर है। **(2)** बेशक तुम्हारा (हक़ीक़ी) रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को छह दिन (की मात्रा) में पैदा कर दिया, फिर अ़र्श (यानी तख़्ते शाही) पर क़ायम हुआ,[2] वह हर काम की (मुनासिब) तदबीर करता है, (उसके सामने) कोई सिफ़ारिश करने वाला (सिफ़ारिश) नहीं (कर सकता) बिना उसकी इजाज़त के। ऐसा अल्लाह तुम्हारा (हक़ीक़ी) रब है, सो तुम उसकी इबादत करो (और शिर्क मत करो), क्या तुम (इन दलीलों के सुनने के बाद) फिर भी नहीं समझते। **(3)** तुम सबको उसी के (यानी अल्लाह ही के) पास जाना है, अल्लाह ने (इसका) सच्चा वायदा कर रखा है। बेशक वही पहली बार भी पैदा करता है, फिर (क़ियामत में) वही दोबारा भी पैदा करेगा, ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, इन्साफ़ के साथ (पूरा-पूरा) बदला दे। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके वास्ते (आख़िरत में) पीने को खौलता हुआ पानी मिलेगा और दर्दनाक अ़ज़ाब होगा, उनके कुफ़्र की वजह से। **(4)** वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चाँद को (भी) नूरानी बनाया, और उस (की चाल) के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं, ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो।[3] अल्लाह तआ़ला ने ये चीज़ें बेफ़ायदा पैदा नहीं कीं। वह ये दलीलें उन लोगों को साफ़-साफ़ बतला रहे हैं जो समझ रखते हैं।[4] **(5)** बेशक रात और दिन के एक के बाद एक के आने में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उन सबमें उन लोगों के वास्ते (तौहीद की) दलीलें हैं जो डर मानते हैं। **(6)** जिन लोगों को हमारे

---

1. इस पूरी सूरः का हासिल चन्द मज़ामीन हैं। अव्वल तौहीद का साबित करना, दूसरे रिसालत का साबित करना, तीसरे क़ुरआन का साबित करना, चौथे आख़िरत का साबित करना, पाँचवे बाज़ वाक़िआ़त के ज़रिये तंबीह करना। और अव्वल के तहत में शिर्क को बातिल करना, और दूसरे के तहत में उसके मुताल्लिक़ बाज़ शुब्हात का जवाब, और तीसरे के तहत में उसके यानी आख़िरत के झुठलाने पर रद्द करना, और चौथे के तहत में बदले व सज़ा और दुनिया के फ़ना होने का बयान, और पाँचवे के तहत में बाज़ शुब्हात का जवाब और आपकी तसल्ली के मज़ामीन ज़िक्र हैं। और ये सब मज़ामीन कुफ़्फ़ार के साथ मुक़ाबला और मुनाज़रा हैं। और पहली सूरः में भी उनसे मुक़ाबला था, अगरचे वहाँ तलवार से था और यहाँ ज़बान से है, और वहाँ काफ़िरों के मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों से था और यहाँ सिर्फ़ मुश्रिकीन से है। चुनाँचे आयतों में ग़ौर करने से ये सब बातें ज़ाहिर हो सकती हैं। इस तक़रीर से दोनों सूरः में भी और इस सूरः के हिस्सों में एक दूसरे के साथ भी मुनासबत व ताल्लुक़ ज़ाहिर हो गया।
2. यानी ज़मीन व आसमान में अहकाम जारी करने लगा।
3. मन्ज़िल से मुराद वह दूरी है जिसको कोई सितारा दिन-रात में तय कर ले, चाहे वह दूरी ख़ला (यानी ख़ाली जगह) हो या मला (यानी भरी हुई जगह) हो। और इस मायने के एतिबार से सूरज भी मन्ज़िलों वाला है, लेकिन चूँकि चाँद की चाल सूरज के मुक़ाबले में तेज़ है और उसका मन्ज़िलों को तय करना महसूस है। इसलिए उसके साथ मन्ज़िलों में चलने की तख़्सीस मुनासिब हुई, और इस एतिबार से चाँद की उन्तीस या तीस मन्ज़िलें हुईं। मगर चूँकि अट्ठाईस रात से ज़्यादा नज़र नहीं आता **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 376 पर)**

वन्नहारि व मा ख़-लक़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल् लिक़ौमिंय्यत्तक़ून (6) इन्नल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना व रज़ू बिल्हयातिद्दुन्या वत्म-अन्नू बिहा वल्लज़ी-न हुम् अ़न् आयातिना ग़ाफ़िलून (7) उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारु बिमा कानू यक्सिबून (8) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति यह्दीहिम् रब्बुहुम् बिईमानिहिम् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (9) दअ्वाहुम् फ़ीहा सुब्हान-कल्लाहुम्-म व तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलामुन् व आख़िरु दअ्वाहुम् अनिल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन (10) ❖

व लौ युअ़ज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश्-शर्रस्तिअ्जा-लहुम् बिल्ख़ैरि लक़ुज़ि-य इलैहिम् अ-जलुहुम्, फ़-न-ज़रुल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून (11) व इज़ा मस्सल् इन्सानज़्-ज़ुर्रु दआ़ना लिजम्बिही औ क़ाअ़िदन् औ क़ाइमन् फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हु ज़ुर्-रहू मर्-र क-अल्लम् यद्अुना इला ज़ुर्रिम्-मस्सहू, कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिल्मुस्रिफ़ी-न मा कानू यअ्मलून (12) व ल-क़द् अह्लक्नल्-क़ुरू-न मिन् क़ब्लिकुम् लम्मा ज़-लमू व जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व मा कानू लियुअ्मिनू, कज़ालि-क नज्ज़िल् क़ौमल्-मुज्रिमीन (13) सुम्-म जअ़ल्नाकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्अर्ज़ि मिम्-बअ्दिहिम् लिनन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्मलून (14) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अनअ्ति बिक़ुर्आनिन् ग़ैरि हाज़ा औ बद्दिल्हु, क़ुल् मा यकूनु ली अन् उबद्दि-लहू मिन् तिल्क़ा-इ

يونس ١٠ ١٨٩ يعتذرون ١١

خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦ اِنَّ
الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا
بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ
فِيْهَا سَلٰمٌ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ ع
وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ
اَجَلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١
وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ كَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٢ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا
لِيُؤْمِنُوْا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٣ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ
خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝١٤ وَاِذَا
تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ

منزل ٣

पास आने का खटका नहीं है और वे दुनियावी ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए हैं (आख़िरत की तलब बिलकुल नहीं करते) और उसमें जी लगा बैठे हैं (आइन्दा की कुछ ख़बर नहीं), और जो लोग हमारी आयतों से बिलकुल ग़ाफ़िल हैं, **(7)** ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से दोज़ख़ है। **(8)** (और) यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, उनका रब उनके मोमिन होने की वजह से उनके मक़सद (यानी जन्नत) तक पहुँचा देगा। उनके (ठिकाने के) नीचे नहरें जारी होंगी, चैन के बाग़ों में। **(9)** उनके मुँह से यह बात निकलेगी कि सुब्हानल्लाह! और उनका आपस में सलाम उसमें यह होगा, अस्सलामु अ़लैकुम! और उनकी (उस वक़्त की उन बातों में) आख़िरी बात यह होगी, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।[1] **(10)** ❖

और अगर अल्लाह तआ़ला लोगों पर (उनके जल्दी मचाने के मुवाफ़िक़) जल्दी से नुक़सान डाल दिया करता, जिस तरह वे फ़ायदे के लिए जल्दी मचाते हैं तो उनका (अ़ज़ाब का) वायदा कभी का पूरा हो चुका होता। सो (इसलिए) हम उन लोगों को जिनको हमारे पास आने का खटका नहीं है, उनके हाल पर (बिना अ़ज़ाब चन्द दिन) छोड़े रखते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें।[2] **(11)** और जब इनसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारने लगता है, लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी,[3] फिर जब हम उसकी वह तकलीफ़ उससे हटा देते हैं तो फिर अपनी पहली हालत पर आ जाता है कि गोया जो तकलीफ़ उसको पहुँची थी उसके (हटाने) के लिए कभी हमको पुकारा ही न था। उन हद से निकलने वालों के (बुरे) आमाल उनको इसी तरह अच्छे मालूम होते हैं (जिस तरह हमने अभी बयान किया है)। **(12)** और हमने तुमसे पहले बहुत-से गिरोहों को (तरह-तरह के अ़ज़ाब से) हलाक कर दिया है, जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया (यानी कुफ़्र व शिर्क) हालाँकि उनके पास उनके पैग़म्बर दलीलें लेकर आए, और वे (अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी के सबब) ऐसे कब थे कि ईमान ले आते, हम मुजरिम लोगों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (जैसा कि हमने अभी बयान किया है)। **(13)** फिर उनके बाद दुनिया में उनकी जगह हमने तुमको आबाद किया ताकि ज़ाहिरी तौर पर हम देख लें कि तुम किस तरह काम करते हो। **(14)** और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिलकुल साफ़-साफ़ हैं तो ये लोग जिनको हमारे पास आने का खटका नहीं है, (आपसे यूँ) कहते हैं कि इसके

(पृष्ठ 374 का शेष) इसलिए अट्ठाईस मन्ज़िलें उसकी मश्हूर हैं। और अगरचे सूरज व चाँद दोनों सालों की गिनती करने और हिसाब के आलात (यन्त्रों) में से हैं लेकिन सूरज का चक्कर एक साल में पूरा होने की वजह से ज़्यादा मुनासिब यह है कि सालों की गिनती को सूरज के मुताल्लिक़ किया जाए और उससे छोटे हिसाब को चाँद के मुताल्लिक़ किया जाए, और इसी वास्ते हिसाब का लफ़्ज़ बढ़ाया गया, ख़ास करने के बाद अ़मूमियत पैदा करने के लिए।

4. यूँ तो दलाइल उन लोगों के लिए भी बयान किए गए हैं जो इल्म और तक़्वे वाले नहीं, मगर यह ख़ास करना इसलिए है कि इन दलाइल से फ़ायदा अहले इल्म और मुत्तक़ी लोग ही उठाते हैं।

1. ऊपर 'उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारु' (यानी ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से दोज़ख़ है) में कुफ़्फ़ार का आख़िरत में अ़ज़ाब में होना बयान फ़रमाया है। ऐसे मज़ामीन पर काफ़िर झुठलाने की ग़रज़ से कहा करते कि हम तो अ़ज़ाब को हक़ जब समझें कि हमपर यहाँ दुनिया ही में अ़ज़ाब नाज़िल हो जाए, और उसके बाद अ़ज़ाब नाज़िल न होने से आख़िरत में अ़ज़ाब न होने का जो शुब्हा हो सकता था, आगे उसका जवाब इर्शाद होता है।

2. जो शर और फ़साद ज़ाहिर होता है उसमें किसी ख़ास शख़्स या आ़म मस्लहत के एतिबार से कोई ख़ैर छुपी होती है। और जिस ख़ैर में देर और ताख़ीर होती है इसी तरह उसमें कोई शर और बुराई छुपी होती है, तो शर का ज़ाहिर होना हक़ीक़त में ख़ैर का आना है, और उस ख़ैर का ज़ाहिर न होना हक़ीक़त में शर और बुराई का ज़ाहिर न होना है।

3. ऊपर तौहीद का ज़िक्र हुआ है, यहाँ शिर्क का बातिल होना एक ख़ास अन्दाज़ पर बयान फ़रमाते हैं। वह यह कि मुसीबत में ख़ुद मुश्रिक लोग भी ख़ुदा के सिवा सबको छोड़ बैठते हैं। पस शिर्क हक़ीक़त में जिस तरह बातिल है उसी तरह उसके मानने वालों के तरीक़ा-ए-अ़मल से भी वह लचर साबित होता है।

नफ़्सी इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम **(15)** क़ुल् लौ शा-अल्लाहु मा तलौतुहू अ़लैकुम् व ला अद्राकुम् बिही फ़-क़द् लबिस्तु फ़ीकुम् अ़ुमुरम्-मिन् क़ब्लिही, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(16)** फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल् मुज्रिमून **(17)** व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अुहुम् व यक़ूलू-न हा-उला-इ शु-फ़आउना अ़िन्दल्लाहि, क़ुल् अतुनब्बिऊनल्ला-ह बिमा ला यअ्लमु फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून **(18)** व मा कानन्नासु इल्ला उम्मतंव्वाहि-दतन् फ़ख़्त-लफ़ू, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् फ़ीमा फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(19)** व यक़ूलू-न लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही फ़क़ुल् इन्नमल्-ग़ैबु लिल्लाहि फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन **(20)** ❖

يعتذرون ١١ ١٩٠ يونس ١٠

بقرانٍ غير هذا او بدله قل ما يكون لي ان ابدله من
تلقائ نفسي ان اتبع الا ما يوحى الي اني اخاف ان
عصيت ربي عذاب يوم عظيم ﴿١٥﴾ قل لو شاء الله ما تلوته
عليكم ولا ادرىكم به فقد لبثت فيكم عمرا من قبله
افلا تعقلون ﴿١٦﴾ فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا او
كذب بايته انه لا يفلح المجرمون ﴿١٧﴾ ويعبدون من دون
الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم ويقولون هؤلاء شفعاؤنا
عند الله قل اتنبئون الله بما لا يعلم في السموت ولا في
الارض سبحنه وتعلى عما يشركون ﴿١٨﴾ وما كان الناس
الا امة واحدة فاختلفوا ولولا كلمة سبقت من ربك
لقضي بينهم فيما فيه يختلفون ﴿١٩﴾ ويقولون لولا انزل
عليه اية من ربه فقل انما الغيب لله فانتظروا اني معكم
من المنتظرين ﴿٢٠﴾ واذا اذقنا الناس رحمة من بعد ضراء
مستهم اذا لهم مكر في اياتنا قل الله اسرع مكرا ان
رسلنا يكتبون ما تمكرون ﴿٢١﴾ هو الذي يسيركم في البر والبحر
حتى اذا كنتم في الفلك وجرين بهم بريح طيبة وفرحوا بها

منزل ٣

व इज़ा अज़क़्नन्ना-स रह्म-तम् मिम्-बअ्दि ज़र्रा-अ मस्सत्हुम् इज़ा लहुम् मक्रुन् फ़ी आयातिना, क़ुलिल्लाहु अस्रअ़ु मक्रन्, इन्-न रुसुलना यक्तुबू-न मा तम्कुरून **(21)** हुवल्लज़ी युसय्यिरुकुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि, हत्ता इज़ा कुन्तुम् फ़िल्फ़ुल्कि व जरै-न बिहिम् बिरीहिन् तय्यि-बतिंव्-व फ़रिहू बिहा जाअत्हा रीहुन् आसिफ़ुंव्-व जा-अहुमुल्-मौजु मिन्

सिवा कोई (पूरा) दूसरा क़ुरआन (ही) लाइए, या (कम-से-कम) इसमें कुछ तरमीम कर दीजिए। आप (यूँ) कह दीजिए कि मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी तरफ़ से इसमें तरमीम कर दूँ। बस मैं तो उसी का इत्तिबा करूँगा जो मेरे पास वह्य के ज़रिये से पहुँचा है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं एक बड़े भारी दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा रखता हूँ। **(15)** आप (यूँ) कह दीजिए कि अगर ख़ुदा तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो न तो मैं तुमको यह (कलाम) पढ़कर सुनाता, और न वह (यानी अल्लाह तआ़ला) तुमको इसकी इत्तिला देता,[1] क्योंकि इससे पहले भी तो मैं उम्र के एक बड़े हिस्से तक तुममें रह चुका हूँ। फिर क्या तुम इतनी अ़क़्ल नहीं रखते?[2] **(16)** सो उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झूठा बतला दे। यक़ीनन ऐसे मुजिरमों को हरगिज़ फ़लाह न होगी, (बल्कि हमेशा के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे)। **(17)** और ये लोग अल्लाह (की तौहीद) को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको नुक़सान पहुँचा सकें और न उनको नफ़ा पहुँचा सकें। और कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिश करने वाले हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम ख़ुदा तआ़ला को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो जो ख़ुदा तआ़ला को मालूम नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से। **(18)** और तमाम आदमी एक ही तरीक़े के थे,[3] फिर (अपनी ग़लत राय से) उन्होंने इख़्तिलाफ़ पैदा कर लिया। और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले तय हो चुकी है तो जिस चीज़ में ये लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उनका क़तई फ़ैसला (दुनिया ही में) हो चुका होता। **(19)** और ये लोग (यूँ) कहते हैं कि उनके रब की तरफ़ से उनपर कोई मोजिज़ा क्यों नाज़िल नहीं हुआ?[4] सो आप फ़रमा दीजिए कि ग़ैब की ख़बर सिर्फ़ ख़ुदा को है (मुझको नहीं), सो तुम भी मुन्तज़िर रहो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।[5] **(20)** ❖

और जब हम लोगों को इसके बाद कि उनपर कोई मुसीबत पड़ चुकी हो, किसी नेमत का मज़ा चखा देते हैं तो फ़ौरन ही हमारी आयतों के बारे में शरारत करने लगते हैं,[6] आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला (इस शरारत की) सज़ा बहुत जल्द देगा। यक़ीनन हमारे भेजे हुए (यानी फ़रिश्ते) तुम्हारी सब शरारतों को लिख रहे हैं। **(21)** वह (अल्लाह) ऐसा है कि तुमको ख़ुश्की और दरिया में लिए-लिए फिरता है,[7] यहाँ तक कि कई बार जब तुम कश्ती में सवार होते हो और वे (कश्तियाँ) लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के ज़रिये से लेकर चलती हैं और वे लोग उन (की रफ़्तार) से ख़ुश होते हैं, (उस हालत में अचानक) उनपर (मुख़ालिफ़) हवा का एक झोंका आता है, और हर तरफ़ से उनपर लहरें (उठी चली) आती हैं, और वे समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे, (उस

---

1. पस जब मैं तुमको सुना रहा हूँ और मेरे ज़रिये से तुमको इत्तिला हो रही है तो इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला को इस मोजिज़ (यानी आ़जिज़ कर देने वाले और इनसानी ताक़त से बाहर) कलाम का सुनवाना और इत्तिला करना मन्ज़ूर हुआ। और सुनाना और इत्तिला देना बिना वह्य के इस वजह मुम्किन नहीं कि यह कलाम इनसानी ताक़त से बाहर है। इससे मालूम हुआ कि वह वह्य अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह का कलाम है।

2. यानी अगर यह मेरा कलाम है तो या तो इतनी मुद्दत तक एक जुम्ला भी इस तरह का न निकला, और या एक दम इतनी बड़ी बात बना ली, यह तो बिलकुल अ़क़्ल के ख़िलाफ़ है। इसके मोजिज़ा होने के सुबूत में 'फ़-क़द लबिस्तु फ़ीकुम......' से दलील पकड़ना नीचे के दर्जे पर उतरकर है, यानी इस्तिदलाल यह है कि 'इस जैसी कोई सूरः लाकर दिखाओ' और इसमें कोई दूर का एहतिमाल निकालना कि शायद आ़म लोग इसपर क़ादिर न हों, आप क़ादिर हों। इस एहतिमाल और शुब्हा पर यह जवाब दिया है कि अचानक ऐसे आला तर्ज़ का इतना बड़ा कलाम पेश कर देना ख़िलाफ़े आ़दत (यानी आ़म इनसानों के मामूल और ताक़त से बाहर) है, और मोजिज़ा होने में ख़िलाफ़े आ़दत (यानी आ़म इनसानों के मामूल और ताक़त से बाहर होने) पर ही मदार होता है।

3. यानी सब मुसलमान थे, क्योंकि आदम अ़लैहिस्सलाम मुसलमान और ख़ुदा को मानने वाले थे। बहुत मुद्दत तक उनकी औलाद उन ही के तरीक़े पर रही। पस सब मुसलमान (मुवह्हिद) रहे। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 380 पर)**

कुल्लि मकानिंव्-व ज़न्नू अन्नहुम् उही-त बिहिम् द-अ़वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, ल-इन् अन्जैतना मिन् हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन **(22)** फ़-लम्मा अन्जाहुम् इज़ा हुम् यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, या अय्युहन्नासु इन्नमा बग़्युकुम् अ़ला अन्फ़ुसिकुम् मताअ़ल् हयातिद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअ़ुकुम् फ़नुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून **(23)**

इन्नमा म-सलुल्-हयातिद्दुन्या कमा-इन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा-इ फ़ख़्त-ल-त बिही नबातुल्-अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्नासु वल्-अन्आ़मु, हत्ता इज़ा अ-ख़-ज़तिल्-अर्-ज़ु ज़ुख़्रु-फ़हा वज़्ज़य्यनत् व ज़न्-न अह्लुहा अन्नहुम् क़ादिरू-न अ़लैहा अताहा अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़-जअ़ल्नाहा हसीदन् क-अल्लम् तग़्-न बिल्अम्सि, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्- आयाति लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून **(24)** वल्लाहु यद्अू इला दारिस्सलामि, व यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्- मुस्तक़ीम **(25)** लिल्लज़ी-न अह्सनुल्- हुस्ना व ज़िया-दतुन्, व ला यर्हक़ु वुजू-हहुम् क़-तरुंव्-व ला ज़िल्लतुन्, उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(26)** वल्लज़ी-न क-सबुस्सय्यिआति जज़ा-उ सय्यि-अतिम् बिमिस्लिहा व तर्हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, मा लहुम् मिनल्लाहि मिन् आ़सिमिन् क-अन्नमा उग़्शियत् वुजूहुहुम् क़ि-तअ़म् मिनल्लैलि मुज़्लिमन्, उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(27)** व यौ-म नह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म

يعتذرون ١١ — ١٩١ — يونس ١٠

جَآءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا
اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا
مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۲۲﴾ فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ
فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ مَّتَاعَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۳﴾
اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ
نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ
الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ
اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ
بِالْاَمْسِ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا
اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۵﴾ لِلَّذِيْنَ
اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ
جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
عَاصِمٍ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ

منزل ٣

वक़्त) ख़ालिस एतिक़ाद करके सब अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, (कि ऐ अल्लाह) अगर आप हमको इस (मुसीबत) से बचा लें तो हम ज़रूर हक़ को पहचानने वाले (तौहीद के इक़रारी) बन जाएँ। **(22)** फिर जब अल्लाह तआ़ला उनको (उस तबाही से) बचा लेता है तो फ़ौरन ही वे (चारों तरफ़) ज़मीन में नाहक़ की सरकशी करने लगते हैं।[1] ऐ लोगो! (सुन लो) यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए वबाले (जान) होने वाली है, (बस) दुनियावी ज़िन्दगी में (उससे थोड़ा-सा) फ़ायदा उठा रहे हो, फिर हमारे पास तुम सबको आना है, फिर हम तुम्हारा किया हुआ सब कुछ तुमको जतला देंगे (और उसकी सज़ा देंगे)।[2] **(23)** बस दुनियावी ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस (पानी) से ज़मीन के पेड़-पौधे जिनको आदमी और चौपाए खाते हैं ख़ूब घने होकर निकले, यहाँ तक कि जब वह ज़मीन अपनी रौनक़ का (पूरा हिस्सा) ले चुकी और उसकी ख़ूब ज़ेबाइश "यानी सँवरना" हो गई[3] और उसके मालिकों ने समझ लिया कि अब हम इसपर बिलकुल क़ाबिज़ हो चुके, तो (ऐसी हालत में) दिन में या रात में हमारी तरफ़ से कोई हादसा आ पड़ा (जैसे पाला या सूखा या और कुछ) सो हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया गोया कल वह (यहाँ) मौजूद ही न थी। हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान करते हैं, ऐसे लोगों के लिए जो सोचते हैं। **(24)** और अल्लाह तआ़ला दारुल-बक़ा "यानी आख़िरत" की तरफ़ तुमको बुलाता है, और जिसको चाहता है सही रास्ते (पर चलने) की तौफ़ीक़ दे देता है। **(25)** जिन लोगों ने नेकी की है उनके वास्ते ख़ूबी (जन्नत) है, और उसपर यह भी कि (ख़ुदा का दीदार) भी, और उनके चेहरों पर न (ग़म की) कदूरत छाएगी और न ज़िल्लत, ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। **(26)** और जिन लोगों ने बुरे काम किए[4] उनकी बदी की सज़ा उसके बराबर मिलेगी, और उनको ज़िल्लत घेर लेगी, उनको अल्लाह तआ़ला (के अ़ज़ाब) से कोई न बचा सकेगा। (उनके चेहरों की कदूरत की ऐसी हालत होगी कि) गोया उनके चेहरों पर अन्धेरी रात के परत-के-परत लपेट दिए गए हैं। ये लोग दोज़ख़ (में रहने) वाले हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे।[5] **(27)** और (वह दिन भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जिस दिन हम उन सब (मख़्लूक़ात) को (क़ियामत के मैदान में) जमा

(पृष्ठ 378 का शेष) **4.** यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर।

5. ख़ुलासा यह कि इन चीज़ों को रिसालत के मन्सब या उसके मुताल्लिक़ात से कोई ताल्लुक़ नहीं। मैं नहीं जानता न मुझको कोई दख़ल, असल मक़सूद के साबित करने के लिए अलबत्ता हर वक़्त तैयार हूँ और साबित भी कर चुका हूँ।

6. यानी उनसे किनारा करते हैं और उनके साथ झुठलाने और हँसी उड़ाने से पेश आते हैं, और एतिराज़ व बैर के तौर पर दूसरे मोजिज़ों की फ़रमाइश करते हैं, और गुज़री मुसीबत से सबक़ हासिल नहीं करते। पस एतिराज़ का सबब अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुई आयतों से मुँह मोड़ना है और इस मुँह मोड़ने की वजह ऐश व मस्ती में मश्ग़ूलियत है।

7. यानी जिन आलात (यन्त्रों) व असबाब से तुम चलते-फिरते हो, वे सब अल्लाह ही के दिए हुए हैं।

1. यानी वही शिर्क और नाफ़रमानी।

2. ऊपर 'या अय्युहन्नासु इन्नमा बग़्युकुम.....' में फ़रमाया था कि दुनिया में कुफ़्र और नाफ़रमानी के साथ तुम्हारी यह कामयाबी चन्द दिन की है, फिर आख़िरत में इसकी सज़ा भुगतना है। आगे दुनिया का फ़ानी होना और आख़िरत की जज़ा व सज़ा का बाक़ी होना मय जज़ा व सज़ा की तफ़सील और उसके हक़दारों के ज़िक्र की गई है।

3. यानी हरियाली से अच्छी मालूम होने लगी।

4. यानी शिर्क व कुफ़्र किया।

5. ऊपर मुशिरकों के हक़ में फ़रमाया था 'उनको अल्लाह के अ़ज़ाब से कोई बचा न सकेगा' इसलिए कि वे लोग अपने माबूदों को अपना शफ़ाअ़त करने वाला कहते थे। आगे उन माबूदों का उन इबादत करने वालों से क़ियामत में बेताल्लुक़ी ज़ाहिर करना, जिसके लिए नफ़ा न होना लाज़िम है, बयान फ़रमाते हैं।

नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू मकानकुम् अन्तुम् व शु-रकाउकुम् फ़-ज़य्यल्ना बैनहुम् व क़ा-ल शु-रकाउहुम् मा कुन्तुम् इय्याना तअ़्बुदून **(28)** फ़-कफ़ा बिल्लाहि शहीदम् बैनना व बैनकुम् इन् कुन्ना अ़न् अ़िबादतिकुम् लग़ाफ़िलीन **(29)** हुनालि-क तब्लू कुल्लु नफ़्सिम् मा अस्ल-फ़त् व रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून ● **(30)** ❖

क़ुल् मंय्यरज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि अम्-मंय्यम्लिकुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र व मंय्युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व मंय्युदब्बिरुल्-अम्-र, फ़-स-यक़ूलूनल्लाहु फ़क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून **(31)** फ़ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल्-हक़्क़ु फ़-माज़ा बअ़्दल्-हक़्क़ि इल्लज़्ज़लालु फ़-अन्ना तुस्रफ़ून **(32)** कज़ालि-क हक़्क़त् कलि-मतु रब्बि-क अ़लल्लज़ी-न फ़-सक़ू अन्नहुम् ला युअ्मिनून **(33)** क़ुल् हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू, क़ुलिल्लाहु यब्दउल्ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू फ़-अन्ना तुअ्फ़कून **(34)** क़ुल् हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यह्दी इलल्-हक़्क़ि, क़ुलिल्लाहु यह्दी लिल्हक़्क़ि, अ-फ़मंय्यह्दी इलल्हक़्क़ि अ-हक़्क़ु अंय्युत्त-ब-अ़ अम्-मल्ला यहिद्दी इल्ला अंय्युह्दा फ़मा लकुम्, कै-फ़ तह्कुमून **(35)** व मा यत्तबिअ़ु अक्सरुहुम् इल्ला ज़न्नन्, इन्नज़्ज़न्-न ला युग़्नी मिनल्-हक़्क़ि शैअन्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा यफ़्अ़लून **(36)** व

يونس ١٠ ١٩٢ يعتذرون ١١

نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ
وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا
كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ
يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ
الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ فَقُلْ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا
الضَّلٰلُ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى
الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ
مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ
قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ
اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾
وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ

منزل ٣

करेंगे, फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी जगह ठहरो। फिर हम उन (इबादत करने वालों और उनके माबूदों) के दरमियान में फूट डालेंगे, और उनके वे शुरका (उनसे ख़िताब करके) कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। **(28)** सो हमारे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह काफ़ी गवाह है[1] कि हमको तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न थी।[2] **(29)** उस मक़ाम पर हर शख़्स अपने अगले किए हुए कामों का इम्तिहान कर लेगा, और ये लोग अल्लाह (के अ़ज़ाब) की तरफ़ जो उनका मालिके हक़ीक़ी है लौटाए जाएँगे[3] और जो कुछ (माबूद) उन्होंने घड़ रखे थे सब उनसे ग़ायब (और गुम) हो जाएँगे। (कोई भी तो काम न आएगा) ● **(30)** ❖

आप (उन मुश्रिकों से) कहिए कि (बतलाओ) वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन में रिज़्क़ पहुँचाता है,[4] या (यह बतलाओ कि) वह कौन है जो (तुम्हारे) कानों और आँखों पर पूरा इख़्तियार रखता है। और वह कौन है जो जानदार (चीज़) को बेजान (चीज़ से) निकालता है, और बेजान (चीज़) को जानदार से निकालता है, और वह कौन है जो तमाम कामों की तदबीर करता है? सो (इन सवालों के जवाब में) वे (ज़रूर यही) कहेंगे (कि इन सब क़ामों का करने वाला) अल्लाह (है), तो उनसे कहिए कि फिर (शिर्क से) क्यों परहेज़ नहीं करते। **(31)** सो यह है अल्लाह जो तुम्हारा हक़ीक़ी रब है, (और जब हक़ मामला साबित हो गया) फिर हक़ (मामले) के बाद और क्या रह गया, सिवाय गुमराही के,[5] फिर (हक़ को छोड़कर बातिल की तरफ़) कहाँ फिरे जाते हो।[6] **(32)** इसी तरह आपके रब की यह (तक़दीरी) बात कि ये ईमान न लाएँगे, तमाम नाफ़रमान (सरकश) लोगों के हक़ में साबित हो चुकी है। **(33)** आप (उनसे यूँ भी) कहिए कि क्या तुम्हारे (तजवीज़ किए हुए) शरीकों में कोई ऐसा है जो पहली बार भी मख़्लूक़ को पैदा करे, फिर (क़ियामत में) दोबारा भी पैदा करे। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला ही पहली बार भी पैदा करता है, फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा, सो फिर तुम (हक़ से) कहाँ फिरे जाते हो। **(34)** (और) आप (उनसे यूँ भी) कहिए कि क्या तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि (अम्रे) हक़ का रास्ता बतलाता हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही (अम्रे) हक़ का रास्ता (भी) बतलाता है।[7] तो फिर आया जो शख़्स हक़ (मामले) का रास्ता बतलाता हो वह ज़्यादा इत्तिबा के लायक़ है या वह शख़्स जिसको बिना बतलाए ख़ुद ही रास्ता न सूझे। तो (ऐ मुश्रिको!) तुमको क्या हो गया, तुम कैसी तजवीज़ें करते हो। **(35)** और उनमें से अक्सर लोग सिर्फ़ बेअसल ख़्यालात पर चल रहे हैं, (और) यक़ीनन बेअसल ख़्यालात हक़ (मामले) से मुस्तग़नी करने (या उसके साबित करने) में ज़रा भी मुफ़ीद नहीं। (ख़ैर) ये जो कुछ कर रहे हैं यक़ीनन अल्लाह को सब ख़बर है, (वक़्त पर सज़ा देगा)। **(36)** और यह

---

1. अगर किसी को शुब्हा हो कि क्या बुत भी बोलेंगे तो जवाब यह है कि यह नामुम्किन नहीं।

2. उनका ग़ाफ़िल होना उनकी इबादत से ज़ाहिर है, इस वास्ते कि बुतों को ऐसा शऊर ज़ाहिर है कि यहाँ नहीं है। और अगर दूसरे माबूदों जैसे फ़रिश्ते वग़ैरह को भी आ़म मुराद लिया जाए तो भी ग़ाफ़िल होना सही है, क्योंकि फ़रिश्तों वग़ैरह का इल्म सब कुछ घेरने वाला नहीं है, और सब अपने-अपने काम में लगे हुए हैं।

3. यहाँ अल्लाह तआ़ला को काफ़िरों का मौला फ़रमा देना मालिक होने के मायने के एतिबार से है। और 'ला मौला लहुम' में नफ़ी करना मददगार और चाहने वाले के एतिबार से है।

4. यानी आसमान से बारिश बरसाता और ज़मीन से पेड़-पौधे पैदा करता है, जिससे तुम्हारा रिज़्क़ तैयार होता है।

5. यानी जो चीज़ हक़ की ज़िद और उलट होगी वह गुमराही है, और तौहीद का हक़ होना साबित हो गया। पस शिर्क यक़ीनन गुमराही है।

6. आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तसल्ली है कि आप उन लोगों की बातिल-परस्ती पर ग़मज़दा हुआ करते थे।

7. चुनाँचे उसने अ़क़्ल दी, नबियों को भेजा, बख़िलाफ़ शैतानों के कि अव्वल तो वे उन अफ़आ़ल (यानी कामों) पर क़ादिर नहीं, और सिर्फ़ तालीम जिसकी क़ुदरत उनको दी गई है वे उसको गुमराह करने और बहकाने में ख़र्च करते हैं।

मा का-न हाज़ल्- क़ुरआनु अंय्युफ़्तरा मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै-न यदैहि व तफ़्सीलल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल्-आ़लमीन **(37)** अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् फ़अ्तू बिसूरतिम्-मिस्लिही वद्अू मनिस्त-तअ्तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(38)** बल् कज़्ज़बू बिमा लम् युहीतू बिअ़िल्मिही व लम्मा यअ्तिहिम् तअ्वीलुहू, कज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुज़्ज़ालिमीन **(39)** व मिन्हुम् मंय्युअ्मिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअ्मिनु बिही, व रब्बु-क अअ्लमु बिल्मुफ़्सिदीन **(40)** ❖

व इन् कज़्ज़बू-क फ़क़ुल्-ली अ़-मली व लकुम् अ़-मलुकुम् अन्तुम् बरीऊ-न मिम्मा अअ्मलु व अ-न बरीउम्-मिम्मा तअ्मलून **(41)** व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअू-न इलै-क, अ-फ़-अन्-त तुस्मिअुस्सुम्-म व लौ कानू ला यअ्क़िलून **(42)** व मिन्हुम् मंय्यन्ज़ुरु इलै-क, अ-फ़अन्-त तह्दिल्-अुम्-य व लौ कानू ला युब्सिरून **(43)** इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमुन्ना-स शैअंव्-व लाकिन्नन्-ना-स अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(44)** व यौ-म यह्शुरुहुम् क-अल्लम् यल्बसू इल्ला सा-अ़तम् मिनन्नहारि य-तआ़रफ़ू-न बैनहुम्, क़द् ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि व मा कानू मुह्तदीन **(45)** व इम्मा नुरियन्न-क बअ्ज़ल्लज़ी नअ़िदुहुम् औ न-तवफ़्फ़-यन्न-क फ़-इलैना मर्जिअुहुम् सुम्मल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा यफ़अ़लून **(46)** व लिकुल्लि उम्मतिर्रसूलुन् फ़-इज़ा

يونس ١٠ ١٩٣ يعتذرون ١١

يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ
وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا
بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ
وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِنْ
كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ
وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ اَفَاَنْتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ
اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ
النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ
كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ قَدْ
خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِمَّا
نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ
ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ فَاِذَا

منزل ٣

क़ुरआन अल्लाह के सिवा किसी और का घड़ा हुआ नहीं है, (कि उनसे सादिर हुआ हो) बल्कि यह तो उन (किताबों) की तस्दीक़ (करने वाला) है जो इससे पहले (नाज़िल) हो चुकी हैं। और किताब (यानी अल्लाह के ज़रूरी अहकाम) की तफ़सील (बयान करने वाला) है, (और) इसमें कोई (बात) शक (व शुब्हा की) नहीं कि (वह) रब्बुल आ़लमीन की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है। **(37)** क्या ये लोग (यूँ) कहते हैं कि आपने इसको घड़ लिया है, आप कह दीजिए कि फिर तुम इसके जैसी एक ही सूरः (बना) लाओ, और (अकेले नहीं बल्कि) जिन-जिनको अल्लाह के सिवा बुला सको (उनको मदद के लिए) बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।[1] **(38)** बल्कि ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसके (यानी उसके सही और ग़ैर-सही होने) को अपने इल्मी घेरे में नहीं लाए। "यानी उन्हें ख़ुद उसके बारे में कुछ इल्म नहीं" और अभी उनको इस (क़ुरआन के झुठलाने) का आख़िरी नतीजा नहीं मिला। जो लोग (उनसे पहले) हुए हैं इसी तरह उन्होंने भी (हक़ चीज़ों को) झुठलाया था,[2] सो देख लीजिए कि उन ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ, (इसी तरह उनका होगा)। **(39)** और उनमें से बाज़े ऐसे हैं जो इस (क़ुरआन) पर ईमान ले आएँगे और बाज़े ऐसे हैं कि इसपर ईमान न लाएँगे, और आपका रब (उन) मुफ़सिदों को ख़ूब जानता है। **(40)** ❖

और अगर इन दलीलों के बाद भी आपको झुठलाते रहे तो (बस आख़िरी बात यह) कह दीजिए कि (अच्छा साहिब) मेरा किया हुआ मुझको (मिलेगा) और तुम्हारा किया हुआ तुमको (मिलेगा)। तुम मेरे किए हुए के जवाबदेह नहीं हो, और मैं तुम्हारे किए हुए का जवाबदेह नहीं हूँ। **(41)** और (आप उनके ईमान की उम्मीद छोड़ दीजिए, क्योंकि) उनमें (अगरचे) बाज़ ऐसे भी हैं जो (ज़ाहिर में) आपकी तरफ़ कान लगा-लगा बैठते हैं, क्या आप बहरों को सुना (कर उनके मानने का इन्तिज़ार कर) रहे हैं, चाहे उनको समझ भी न हो। **(42)** और (इसी तरह) उनमें बाज़ ऐसे हैं कि (ज़ाहिर में) आपको (मोजिज़ात व कमालात के साथ) देख रहे हैं, तो फिर क्या आप अन्धों को रास्ता दिखलाना चाहते हैं चाहे उनको बसीरत "यानी अ़क्ल व समझ" भी न हो। **(43)** (यह) यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता, लेकिन लोग ख़ुद ही अपने आपको तबाह करते हैं।[3] **(44)** और (उनको) वह दिन (याद दिलाइए) जिसमें अल्लाह तआ़ला उनको (इस कैफ़ियत से) जमा करेगा[4] कि (वे ऐसा समझेंगे) जैसे वे (दुनिया या बरज़ख़ में) सारे दिन की एक आध-घड़ी रहे होंगे[5] और आपस में एक-दूसरे को पहचानेंगे (भी और) वाक़ई (उस वक़्त सख़्त) ख़सारे में पड़े वे लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया, और वे (दुनिया में भी) हिदायत पाने वाले न थे। **(45)** और जिस (अ़ज़ाब) का उनसे हम वायदा कर रहे हैं, उसमें से कुछ थोड़ा-सा (अ़ज़ाब) अगर हम आपको दिखला दें,[6] या (उसके नाज़िल होने से पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें। सो हमारे पास तो उनको आना

1. यानी अल्लाह की पनाह अगर मैंने तैयार कर लिया है तो तुम भी तैयार कर लाओ।

2. 'लम युहीतू' का मतलब यह है कि आदमी जिस मामले में कलाम करे पहले उसकी तहक़ीक़ तो कर ले, तहक़ीक़ के बाद जो कलाम करना हो करे।

3. यानी ख़ुद ही दी हुई क़ाबलियत को ज़ाया कर देते हैं और उससे काम नहीं लेते।

4. ऊपर आयत 'कज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन क़ब्लिहिम......' और आयत 'रब्बु-क अअ्लमु......' में कुफ़्र व झुठलाने पर अ़ज़ाब की वईद फ़रमाई है। आगे उस अ़ज़ाब के दुनिया में वाक़े न होने से वे कुफ़्फ़ार जो शुब्हात करते थे, उनका जवाब आख़िरत की तहक़ीक़ के ज़िम्न में (अंतर्गत) बतलाते हैं। जिसका हासिल यह है कि दुनिया में चाहे कभी ज़ाहिर हो जाए लेकिन असली वक़्त उसका हश्र के दिन है, इसी लिए दुनिया में उसके सिर्फ़ बाज़ शोबे ज़ाहिर होते हैं, यानी मामूली हिस्से ही ज़ाहिर होते हैं, पूरे तौर पर नहीं, जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया 'बअ्ज़ल्लज़ी' और कामिल तौर पर उसी वक़्त होगा, जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया 'व लौ अन्-न लिकुल्लि नफ़्सिन्' पस दुनिया में ज़ाहिर न होना न नुक़सानदेह है और न मेरे इख़्तियार में है, जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 386 पर)**

जा-अ रसूलुहुम् क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून **(47)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(48)** क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी ज़र्रंव्-व ला नफ़्अन् इल्ला मा शा-अल्लाहु, लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन्, इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अतंव्-व ला यस्तक़्दिमून **(49)** क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुहू बयातन् औ नहारम् माज़ा यस्तअ्जिलु मिन्हुल् मुज्रिमून **(50)** अ-सुम्-म इज़ा मा व-क़-अ़ आमन्तुम् बिही, आल्आ-न व क़द् कुन्तुम् बिही तस्तअ्जिलून **(51)** सुम्-म क़ी-ल लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-ख़ुल्दि हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून **(52)** व यस्तम्बिऊन-क अ-हक़्क़ुन् हु-व, क़ुल् ई व रब्बी इन्नहू ल-हक़्क़ुन्, व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन **(53)** ❖

व लौ अन्-न लिकुल्लि नफ़्सिन् ज़-लमत् मा फ़िल्अर्ज़ि लफ़्त-दत् बिही, व अ-सर्रुन्नदाम-त लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून **(54)** अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, अला इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून **(55)** हु-व युह्यी व युमीतु व इलैहि तुर्जअून **(56)** या अय्युहन्नासु क़द् जाअत्कुम् मौअि-ज़तुम्-मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सुदूरि व हुदंव्-व रह्मतुल्-लिल्मुअ्मिनीन **(57)** क़ुल् बिफ़ज़्लिल्लाहि व बिरह्मतिही फ़बिज़ालि-क फ़ल्यफ़्रहू,

جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (47) وَ
يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (48) قُلْ لَّآ اَمْلِكُ
لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ اِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ (49) قُلْ
اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ
الْمُجْرِمُوْنَ (50) اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ آٰلْئٰنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ
تَسْتَعْجِلُوْنَ (51) ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ
هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ (52) وَيَسْتَنْۢبِئُوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ
قُلْ اِيْ وَرَبِّيْ اِنَّهٗ لَحَقٌّ وَمَا اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (53) وَلَوْ اَنَّ
لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ وَاَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ (54) اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَلَآ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (55) هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ
وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (56) يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (57)
قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا

(ही) है, फिर (सबको मालूम है कि) अल्लाह तआ़ला उनके सब कामों की इत्तिला रखता ही है। **(46)** और हर-हर उम्मत के लिए एक हुक्म पहुँचाने वाला (हुआ) है। सो जब वह उनका रसूल (उनके पास) आ चुकता है (और अहकाम पहुँचा देता है, तो उसके बाद) उनका फ़ैसला इन्साफ़ के साथ किया जाता है, और उनपर (ज़रा भी) ज़ुल्म नहीं किया जाता।[1] **(47)** और ये लोग कहते हैं कि (ऐ नबी और ऐ मुसलमानो!) यह (अज़ाब का) वायदा कब (ज़ाहिर) होगा, अगर तुम सच्चे हो (तो ज़ाहिर क्यों नहीं करा देते)। **(48)** आप फ़रमा दीजिए कि मैं (ख़ुद) अपनी ज़ाते ख़ास के लिए तो किसी नफ़े (के हासिल करने का) और किसी नुक़सान (के दूर करने) का इख़्तियार रखता ही नहीं, मगर जितना (इख़्तियार) ख़ुदा को मन्ज़ूर हो।[2] हर उम्मत के (अ़ज़ाब के) लिए (अल्लाह के नज़दीक) एक तय वक़्त है, (सो) जब उनका वह तय किया हुआ वक़्त आ पहुँचता है तो (उस वक़्त) एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं और न आगे सरक सकते हैं।[3] **(49)** आप (उसके मुताल्लिक़) फ़रमा दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अगर तुमपर उसका (यानी ख़ुदा का) अ़ज़ाब रात को आ पड़े, या दिन को, तो (यह बतलाओ कि) उस (अ़ज़ाब) में कौन-सी चीज़ ऐसी है कि मुज्रिम लोग उसको जल्दी माँग रहे हैं।[4] **(50)** क्या फिर जब वो (मुक़र्ररा आर तयशुदा वायदा) आ ही पड़ेगा (उस वक़्त) उसकी तस्दीक़ करोगे? हाँ अब (माना) हालाँकि (पहले से) तुम (झुठलाने के इरादे से) उसकी जल्दी (मचाया) करते थे। **(51)** फिर ज़ालिमों (यानी मुश्रिकों) से कहा जाएगा कि हमेशा का अ़ज़ाब चखो, तुमको तो तुम्हारे ही किए का बदला मिला है। **(52)** और वे (इन्तिहाई ताज्जुब व इनकार से आपसे) पूछते हैं कि क्या वह (अ़ज़ाब) वाक़ई (कोई चीज़) है, आप फ़रमा दीजिए कि हाँ क़सम है मेरे रब की, वह वाक़ई (चीज़) है, और तुम किसी तरह उसे (यानी ख़ुदा को) आ़जिज़ नहीं कर सकते (कि वह अ़ज़ाब देना चाहे और तुम बच जाओ)। **(53)** ❖

और अगर हर-हर मुश्रिक शख़्स के पास इतना (माल) हो कि सारी ज़मीन में भर जाए तब भी उसको देकर अपनी जान बचाने लगे। और जब अ़ज़ाब देखेंगे तो (और फ़ज़ीहत के ख़ौफ़ से) शर्मिन्दगी को (अपने दिल ही में) छुपाकर रखेंगे और उनका फ़ैसला इन्साफ़ के साथ होगा, और उनपर (ज़रा भी) ज़ुल्म न होगा। **(54)** याद रखो कि जितनी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं, सब अल्लाह ही की (मिल्क) हैं। याद रखो कि अल्लाह का वायदा सच्चा है, (पस क़ियामत ज़रूर आएगी) लेकिन बहुत-से आदमी यक़ीन ही नहीं करते। **(55)** वही जान डालता है, वही जान निकालता है,[5] और तुम सब उसी के पास लाए जाओगे, (और हिसाब किताब होगा)। **(56)** ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से (एक ऐसी चीज़) आई है जो (बुरे कामों से रोकने के लिए) नसीहत (है) और दिलों में जो (बुरे कामों से) रोग (हो जाते हैं) उनके लिए शिफ़ा है, और रहनुमाई करने वाली है, और रहमत (और सवाब का ज़रिया) है, (और ये सब बरकतें) ईमान वालों के लिए हैं। **(57)** आप (उनसे) कह दीजिए कि (जब क़ुरआन ऐसी चीज़ है) पस लोगों को ख़ुदा के इस इनाम और रहमत पर ख़ुश होना चाहिए। वह इस (दुनिया) से कहीं बेहतर है, जिसको वे जमा कर रहे हैं।[6] **(58)**

(पृष्ठ 384 का शेष) 'क़ुल ला अम्लिकु' और न तुम्हारे लिए मस्लहत है क्योंकि फ़ौरन आ जाने में ईमान की मोहलत भी ख़त्म हो जाएगी, जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया 'मा ज़ा यस्तअ्जिलु……'।

5. चूँकि वह दिन लम्बा भी होगा और सख़्त भी होगा, इसलिए दुनिया और बरज़ख़ (यानी मौत और क़ियामत के दरमियान के ज़माने) की मुद्दत और तकलीफ़ सब भूलकर ऐसा समझेंगे कि वह ज़माना बहुत जल्द गुज़र गया।

6. यानी अगर आपकी ज़िन्दगी में उनपर वह नाज़िल हो जाए। ग़रज़ यह कि दुनिया में सज़ा हो या न हो मगर असली मौक़े पर ज़रूर होगी।

1. वह फ़ैसला यही है कि न मानने वालों को हमेशा के अ़ज़ाब में मुब्तला किया जाता है।

2. पस जब अपने नफ़े व नुक़सान का मालिक नहीं तो दूसरे के नफ़े व नुक़सान का तू क्योंकर मालिक होगा? पस अ़ज़ाब का लाना मेरे इख़्तियार में नहीं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 388 पर)**

हु-व ख़ैरुम्-मिम्मा यज्मअून **(58)** क़ुल् अ-रऐतुम् मा अन्ज़लल्लाहु लकुम् मिर्रिज़्किन् फ़-जअ़ल्तुम् मिन्हु हरामंव्-व हलालन्, क़ुल् आल्लाहु अज़ि-न लकुम् अम् अ़लल्लाहि तफ़्तरून **(59)** व मा ज़न्नुल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून **(60)** ❖

व मा तकूनु फ़ी शअ्निंव्-व मा तत्लू मिन्हु मिन् क़ुरआनिंव्-व ला तअ्मलू-न मिन् अ़-मलिन् इल्ला कुन्ना अ़लैकुम् शुहूदन् इज़् तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि, व मा यअ्ज़ुबु अ़र्रब्बि-क मिम्-मिस्क़ालि ज़र्रतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ व ला अस्ग़-र मिन् ज़ालि-क व ला अक्ब-र इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीन **(61)** अला इन्-न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(62)** अल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून **(63)** लहुमुल्बुश्रा फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्-आख़िरति, ला तब्दी-ल लि-कलिमातिल्लाहि, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(64)** व ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम ✣ इन्नल्-अिज़्ज़-त लिल्लाहि जमीअ़न्, हुवस्समीअुल्-अ़लीम **(65)** अला इन्-न लिल्लाहि मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि, व मा यत्तबिअुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि शु-रका-अ, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून **(66)** हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क

يونس ١٠ ١٩٥ يعتذرون ١١

يجمعون ﴿٥٨﴾ قل أرءيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم
منه حراما وحلالا قل ءالله أذن لكم أم على الله تفترون ﴿٥٩﴾ و
ما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم القيمة إن
الله لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون ﴿٦٠﴾ وما
تكون في شأن وما تتلوا منه من قرءان ولا تعملون من
عمل إلا كنا عليكم شهودا إذ تفيضون فيه وما يعزب
عن ربك من مثقال ذرة في الأرض ولا في السماء ولا
أصغر من ذلك ولا أكبر إلا في كتب مبين ﴿٦١﴾ ألا إن أولياء
الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون ﴿٦٢﴾ الذين ءامنوا وكانوا
يتقون ﴿٦٣﴾ لهم البشرى في الحيوة الدنيا وفي الأخرة لا
تبديل لكلمت الله ذلك هو الفوز العظيم ﴿٦٤﴾ ولا يحزنك
قولهم إن العزة لله جميعا هو السميع العليم ﴿٦٥﴾ ألا إن لله
من في السموت ومن في الأرض وما يتبع الذين يدعون
من دون الله شركاء إن يتبعون إلا الظن وإن هم إلا
يخرصون ﴿٦٦﴾ هو الذي جعل لكم اليل لتسكنوا فيه والنهار
مبصرا إن في ذلك لأيت لقوم يسمعون ﴿٦٧﴾ قالوا اتخذ الله

منزل ٣

❖ रु. 6/7/11 ✣ व. लाज़िम

आप (उनसे) कह दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अल्लाह ने तुम्हारे (फ़ायदा उठाने के) लिए जो कुछ रिज़्क़ भेजा था, फिर तुमने (अपनी घड़त से) उसका कुछ हिस्सा हराम और कुछ हिस्सा हलाल क़रार दे लिया। आप (उनसे) पूछिए कि क्या तुमको ख़ुदा ने हुक्म दिया है या (सिर्फ़) अल्लाह पर (अपनी तरफ़ से) बोहतान ही बाँधते हो? **(59)** और जो लोग अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधते हैं, उनका क़ियामत के बारे में क्या गुमान है,[1] वाक़ई लोगों पर अल्लाह का बड़ा ही फ़ज़्ल है,[2] लेकिन अक्सर (आदमी) उनमें से बेक़द्र हैं (वरना तौबा कर लेते)। **(60)** ❖

और आप (चाहे) किसी हाल में हों, और उन्ही हालात में से यह कि आप कहीं से क़ुरआन पढ़ते हों और (इसी तरह और लोग भी जितने हों) तुम जो काम करते हो हमको सबकी ख़बर रहती है, जब तुम उस काम को करना शुरू करते हो, और आपके रब (के इल्म) से कोई चीज़ ज़र्रा बराबर भी ग़ायब नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में, (बल्कि सब उसके इल्म में हाज़िर हैं) और न कोई चीज़ इस (ज़िक्र हुई मिक़दार) से छोटी है और न कोई चीज़ (उससे) बड़ी है, मगर यह सब (अल्लाह तआ़ला के इल्म में होने की वजह से) किताबे मुबीन (यानी लौहे महफ़ूज़) में (लिखा हुआ) है। **(61)** याद रखो कि अल्लाह के दोस्तों पर न कोई अन्देशे (वाला वाक़िआ पड़ने वाला) है और न वे (किसी मतलूब के जाते रहने पर) ग़मज़दा होते हैं।[3] **(62)** वे (अल्लाह के दोस्त) हैं जो ईमान लाए और (गुनाहों से) परहेज़ रखते हैं।[4] **(63)** उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ख़ौफ़ व रंज से बचने की) ख़ुशख़बरी है, (और) अल्लाह की बातों में (यानी वायदों में) कुछ फ़र्क़ नहीं (हुआ करता), यह (ख़ुशख़बरी जो ज़िक्र हुई) बड़ी कामयाबी है। **(64)** और आपको उनकी बातें ग़म में न डालें, पूरी तरह ग़ल्बा (और क़ुदरत भी) ख़ुदा ही के लिए (साबित) है,[5] वह (उनकी बातें) सुनता है (और उनकी हालत) जानता है, (वह आपका बदला उनसे ख़ुद ले लेगा)। **(65)** याद रखो कि जितने कुछ आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं (यानी जिन्नात, इनसान और फ़रिश्ते) ये सब अल्लाह तआ़ला ही की (मिल्क में) हैं।[6] और जो लोग अल्लाह तआ़ला को छोड़कर दूसरे शरीकों की इबादत कर रहे हैं, (ख़ुदा जाने) किस चीज़ की इत्तिबा कर रहे हैं? महज़ बे-सनद ख़्याल की पैरवी कर रहे हैं, और महज़ ख़्याली बातें कर रहे हैं। **(66)** वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन भी (इस तौर पर बनाया कि रोशन होने की वजह से) देखने-भालने का ज़रिया है। इस (के बनाने) में उन लोगों के लिए (तौहीद) की दलीलें हैं जो (ग़ौर व फ़िक्र के साथ इन मज़ामीन को)

(पृष्ठ 386 का शेष) **3.** इसी तरह तुम्हारे अ़ज़ाब का वक़्त भी तय है, उस वक़्त वह ज़ाहिर हो जाएगा।

4. यानी अ़ज़ाब तो सख़्त चीज़ और पनाह माँगने की चीज़ है, न कि जल्दी माँगने की चीज़।

5. पस दोबारा पैदा करना उसको क्या मुश्किल है।

6. क्योंकि दुनिया का नफ़ा मामूली और फ़ानी, और क़ुरआन का नफ़ा बहुत ज़्यादा और बाक़ी है।

1. यानी जो बिलकुल डरते नहीं, क्या यह समझते हैं कि क़ियामत नहीं आएगी, या आएगी मगर हमसे पूछगछ न होगी।

2. कि साथ के साथ सज़ा नहीं देता, बल्कि तौबा के लिए मोहलत दे रखी है।

3. यानी अल्लाह तआ़ला उनको ख़ौफ़नाक और ग़म्नाक हादसों से बचाता है। ख़ौफ़ से हक़ का ख़ौफ़ और ग़म से आख़िरत का ग़म मुराद नहीं है, बल्कि दुनियावी ख़ौफ़ व ग़म की नफ़ी मुराद है जिसका एहतिमाल दुश्मनों की मुख़ालफ़त से हो सकता है, वह कामिल मोमिनों को नहीं होता। हर वक़्त उनका अल्लाह पर एतिमाद होता है। हर वाक़िए की हिक्मत का एतिक़ाद रखते हैं, उसमें मस्लहत समझते हैं।

4. यानी ईमान और तक़्वे से अल्लाह की निकटता नसीब होती है।

5. वह अपनी क़ुदरत से वायदे के मुताबिक़ आपकी हिफ़ाज़त करेगा।

6. उसकी हिफ़ाज़त या बदले को कोई नहीं रोक सकता, पस हर एतिबार से तसल्ली रखना चाहिए।

लआयातिल् लिक़ौमिंय्यस्मअून **(67)** क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व-लदन् सुब्हानहू, हुवल्-ग़निय्यु, लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि इन् अिन्दकुम् मिन् सुल्तानिम्-बिहाज़ा, अ-तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून **(68)** क़ुल् इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब ला युफ़्लिहून **(69)** मताअुन् फ़िद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअुहुम् सुम्-म नुज़ीक़ुहुमुल्-अ़ज़ाबश्शदी-द बिमा कानू यक्फ़ुरून ▲ **(70)** ❖

वत्लु अ़लैहिम न-ब-अ नूहिन् ✣ इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही या क़ौमि इन् का-न कबु-र अ़लैकुम् मक़ामी व तज़्कीरी बिआयातिल्लाहि फ़-अ़लल्लाहि तवक्कल्तु फ़-अज्मिअू अम्रकुम् व शु-रका-अकुम् सुम्-म ला यकुन् अम्रुकुम् अ़लैकुम् ग़ुम्म-तन् सुम्मक़्ज़ू इलय्-य व ला तुन्ज़िरून **(71)** फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़मा सअल्तुकुम् मिन् अज्रिन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व उमिरतु अन् अकू-न मिनल्-मुस्लिमीन **(72)** फ़-कज़्ज़बूहु फ़-नज्जैनाहु व मम्-म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व जअ़ल्नाहुम् ख़लाइ-फ़ व अग़्रक़्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्- मुन्ज़रीन **(73)** सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ्दिही रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू बिही मिन् क़ब्लु, कज़ालि-क नत्बअु अ़ला क़ुलूबिल्- मुअ्तदीन **(74)** सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ्दिहिम् मूसा व हारू-न

يعتذرون ١١ — ١٩٦ — يونس ١٠

وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ هُوَ الْغَنِيُّ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ اِنْ
عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾
قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾
مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ
الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ
لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ
اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي
الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهٖ
رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا
كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ
بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ

منزل ٣

सुनते हैं। **(67)** वे कहते हैं (अल्लाह की पनाह) कि अल्लाह औलाद रखता है? सुब्हानल्लाह! (कैसी सख़्त बात कही) वह तो किसी का मोहताज नहीं (और सब उसके मोहताज हैं)। उसी की (मिल्क) है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। तुम्हारे पास (सिवाय बेहूदा दावे के) इस (दावे) पर कोई दलील (भी) नहीं, (तो) क्या अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम (किसी दलील से) इल्म नहीं रखते। **(68)** आप कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह तआ़ला पर झूठ घड़ते हैं, (जैसे मुश्रिक लोग) वे (कभी) कामयाब न होंगे। **(69)** (यह) दुनिया में (चन्द दिनों का) थोड़ा-सा ऐश है, (जो बहुत जल्द ख़त्म हुआ जाता है) फिर (मरकर) हमारे (ही) पास उनको आना है, फिर (आख़िरत में) हम उनको उनके कुफ़्र के बदले सख़्त सज़ा (का मज़ा) चखा देंगे। ▲ **(70)** ❖

और आप उनको नूह (अ़लैहिस्सलाम) का क़िस्सा पढ़कर सुनाइए, (जो कि उस वक़्त सामने आया था) जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! अगर तुमको (नसीहत व भलाई की बात कहने की हालत में) मेरा रहना और अहकामे ख़ुदावन्दी की नसीहत करना भारी (और नागवार) मालूम होता है तो मेरा तो ख़ुदा ही पर भरोसा है, सो तुम (मुझको नुक़सान पहुँचाने के मुताल्लिक़) अपनी तदबीर (जो कुछ कर सको) अपने शरीकों के साथ (यानी बुतों) के पुख़्ता कर लो,[1] फिर तुम्हारी (वह) तदबीर तुम्हारी घुटन (और दिल की तंगी) का सबब न (होनी चाहिए),[2] फिर मेरे साथ (जो कुछ करना है) कर गुज़रो, और मुझको (बिलकुल) मोहलत न दो।[3] **(71)** फिर भी अगर तुम मुँह ही मोड़े जाओ तो यह (समझो कि) मैंने तुमसे (इस तब्लीग़ पर) कोई मुआ़वज़ा तो नहीं माँगा, (और मैं तुमसे क्यों माँगता, क्योंकि) मेरा मुआ़वज़ा तो (करम के वायदे के मुताबिक़) सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है।[4] और (चूँकि) मुझको हुक्म किया गया है कि मैं इताअ़त करने वालों में रहूँ **(72)** सो (बावजूद इस वाज़ेह नसीहत के भी) वे लोग उनको झुठलाते रहे, पस (उनपर तूफ़ान का अ़ज़ाब मुसल्लत हुआ और) हमने (उस अ़ज़ाब से) उनको और जो उनके साथ कश्ती में थे उनको नजात दी और उनको आबाद किया। और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको (उस तूफ़ान में) ग़र्क़ कर दिया। सो देखना चाहिए उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ जो (अल्लाह के अ़ज़ाब) से डराए जा चुके थे।[5] **(73)** फिर उन (नूह अ़लैहिस्सलाम) के बाद हमने और रसूलों को उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजा, सो वे उनके पास मोजिज़े लेकर आए (मगर) फिर (भी उनकी ज़िद और हट की यह कैफ़ियत थी कि) जिस चीज़ को उन्होंने अव्वल (बारी में एक बार) झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उसको मान लेते, (और जैसे ये दिल के सख़्त थे) हम (अल्लाह तआ़ला) इसी तरह काफ़िरों के दिल पर बन्द लगा देते हैं। **(74)** फिर इन (ज़िक्र हुए) पैग़म्बरों के बाद हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और हारून (अ़लैहिस्सलाम) को फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास अपने मोजिज़े (लाठी और चमकता हुआ हाथ) देकर भेजा, सो उन्होंने (दावे के साथ ही उनकी तस्दीक़ करने से) तकब्बुर किया, और वे लोग अपराधों के आ़दी थे (इसलिए इताअ़त न की)। **(75)** फिर जब (दावे

---

1. यानी तुम और तुम्हारे माबूद सारे मिलकर मुझको नुक़सान पहुँचाने में अपना अरमान पूरा कर लो।

2. यानी अक्सर ख़ुफ़िया तदबीर से तबीयत घुटा करती है। सो ख़ुफ़िया तदबीर की ज़रूरत नहीं, जो कुछ तदबीर करो दिल खोलकर ऐलानिया करो। मेरा न लिहाज़-पास करो और न मेरे चले जाने और निकल जाने का अन्देशा करो, क्योंकि इतने आदमियों के पहरे में से एक आदमी का निकल जाना भी नामुम्किन है, फिर ख़ुफ़िया रखने की क्या ज़रूरत है।

3. हासिल यह कि मैं तुम्हारी इन बातों से न डरता हूँ और न तब्लीग़ से रुक सकता हूँ।

4. ग़रज़ न तुमसे डरता हूँ न कुछ इच्छा रखता हूँ।

5. यानी बेख़बरी में हलाक नहीं किए गए, पहले कह दिया, समझा दिया। न माना, सज़ा पाई।

इला फ़िरऔ़-न व म-लइही बिआयातिना फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम्-मुज्रिमीन (75) फ़-लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु मिन् अ़िन्दिना क़ालू इन्-न हाज़ा लसिह्रुम्-मुबीन (76) क़ा-ल मूसा अ-तक़ूलू-न लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अकुम्, असिह्रुन् हाज़ा, व ला युफ़्लिहुस्साहिरून (77) क़ालू अजिअ्-तना लितल्फ़ि-तना अ़म्मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना व तकू-न लकुमल्-किब्रिया-उ फ़िल्अर्ज़ि, व मा नह्नु लकुमा बिमुअ्मिनीन (78) व क़ा-ल फ़िरऔ़नुअ्तूनी बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम (79) फ़-लम्मा जाअस्स-ह-रतु क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम्-मुल्क़ून (80) फ़-लम्मा अल्क़ौ क़ा-ल मूसा मा जिअ्तुम् बिहिस्-सिह्रु, इन्नल्ला-ह सयुब्तिलुहू, इन्नल्ला-ह ला युस्लिहु अ़-मलल्-मुफ़्सिदीन (81) व युहिक़्क़ुल्लाहुल्-हक़्-क़ बि-कलिमातिही व लौ करिहल्-मुज्रिमून (82) ❖

फ़मा आम-न लिमूसा इल्ला ज़ुर्रिय्यतुम्-मिन् क़ौमिही अ़ला ख़ौफ़िम् मिन् फ़िरऔ़-न व म-लइहिम् अंय्यफ़्ति-नहुम्, व इन्-न फ़िरऔ़-न

مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧٦ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ
لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝٧٧ قَالُوْٓا
اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ
فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٧٨ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ
بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝٧٩ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا
مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝٨٠ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ
السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٨١
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨٢ ع فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى
اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ
اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ
الْمُسْرِفِيْنَ ۝٨٣ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ
فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝٨٤ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٨٥ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ
مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝٨٦ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨٧ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ

लआलिन् फ़िल्अर्ज़ि व इन्नहू लमिनल् मुस्रिफ़ीन (83) व क़ा-ल मूसा या क़ौमि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि फ़-अ़लैहि तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (84) फ़क़ालू अ़लल्लाहि तवक्कल्ना रब्बना ला तज्अ़ल्ना फ़ित्नतल् लिल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन (85) व नज्जिना बिरह्मति-क मिनल् क़ौमिल्-काफ़िरीन (86) व औहैना इला मूसा व अख़ीहि अन् तबव्वआ लिक़ौमिकुमा बिमिस्-र बुयूतंव्वज्अ़लू बुयू-तकुम् क़िब्लतंव्-व अक़ीमुस्सला-त, व बश्शिरिल्-

के बाद) उनको हमारे पास से (मूसा अ़लैहिस्सलाम की नुबुव्वत पर) सही दलील पहुँची[1] तो वे लोग कहने लगे कि यक़ीनन यह खुला जादू है। **(76)** मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमायाः क्या तुम इस सही दलील के बारे में जबकि वह तुम्हारे पास पहुँची, (ऐसी बात) कहते हो (कि यह जादू है)। क्या यह जादू है? और (हालाँकि) जादूगर कामयाब नहीं हुआ करते।[2] **(77)** वे लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमको उस तरीक़े से हटा दो जिसपर हमने अपने बुज़ुर्गों को देखा है, और (इसलिए आए हो कि) तुम दोनों को दुनिया में रियासत (और सरदारी) मिल जाए, और (तुम अच्छी तरह समझ लो) हम तुम दोनों को कभी न मानेंगे। **(78)** और फ़िरऔ़न ने (अपने सरदारों से) कहा कि मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को (जो हमारे मुल्क में हैं) हाज़िर करो। **(79)** (चुनाँचे जमा किए गए) सो जब वे आए (और मूसा अ़लैहिस्सलाम से मुक़ाबला हुआ तो) मूसा ने उनसे फ़रमाया कि डालो जो कुछ तुमको (मैदान में) डालना है। **(80)** सो जब उन्होंने (अपना जादू का सामान) डाला तो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम (बनाकर) लाए हो, जादू (यह) है,[3] यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला इस (जादू) को अभी दरहम-बरहम "यानी उलट-पलट" किए देता है, (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता।[4] **(81)** और अल्लाह तआ़ला हक़ (यानी सही दलील और मोजिज़े) को अपने वायदों के मुवाफ़िक़ साबित कर देता है, चाहे मुज्रिम (और काफ़िर) लोग (कैसा ही) नागवार समझें। **(82)** ❖

पस (जब लाठी का मोजिज़ा ज़ाहिर हुआ तो) मूसा अ़लैहिस्सलाम पर (शुरू-शुरू में) उनकी क़ौम में से सिर्फ़ थोड़े-से आदमी ईमान लाए, वे भी फ़िरऔ़न से और अपने हाकिमों से डरते-डरते, कि कहीं (ज़ाहिर होने पर) उनको तकलीफ़ (न) पहुँचाये, और (हक़ीक़त में उनका डरना बेजा न था) क्योंकि फ़िरऔ़न उस मुल्क में ज़ोर (हुकूमत) रखता था, और यह (बात भी थी) कि वह (इन्साफ़) की हद से बाहर हो जाता था। **(83)** और मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम (सच्चे दिल से) अल्लाह पर ईमान रखते हो तो (सोच-विचार मत करो बल्कि) उसी पर तवक्कुल करो, अगर तुम (उसकी) इताअ़त करने वाले हो।[5] **(84)** उन्होंने (जवाब में) अ़र्ज़ किया कि हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया। ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इन ज़ालिमों की मश्क़ का तख़्ता "यानी निशाना" न बना। **(85)** और हमको अपनी रहमत के सदक़े में इन काफ़िरों से नजात दे।[6] **(86)** और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और उनके भाई (हारून अ़लैहिस्सलाम) के पास वह्य भेजी कि तुम दोनों अपने उन लोगों के लिए (बदस्तूर) मिस्र में घर बरक़रार रखो, (और नमाज़ के वक़्त में) तुम सब अपने उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह क़रार दे लो। और (यह ज़रूरी है कि) नमाज़ के पाबन्द रहो। और (ऐ मूसा!) आप मुसलमानों को ख़ुशख़बरी दे दें।[7] **(87)** और मूसा ने (दुआ में) अ़र्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! (हमको यह बात मालूम हो गई कि) आपने फ़िरऔ़न को और उसके सरदारों को दुनियावी

1. मुराद इससे मोजिज़ा है।
2. यानी जादूगर जबकि नुबुव्वत का दावा करें तो ख़िलाफ़े आ़दत उमूर के इज़हार में कामयाब नहीं हुआ करते।
3. न वह जिसको फ़िरऔ़न वाले जादू कहते हैं।
4. यानी ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता जो मोजिज़े के साथ मुक़ाबले से पेश आएँ।
5. तवक्कुल (यानी भरोसे) के लिए यह लाज़िम है कि मख़्लूक़ पर नज़र न रहे, न लालच के एतिबार से और न डरकर। पस यह दुआ के ख़िलाफ़ नहीं।
6. यानी जब तक हमपर उनकी हुकूमत मुक़द्दर है ज़ुल्म न करने पाएँ, और फिर उनकी हुकूमत ही के दायरे से निकाल दीजिए।
7. कि यह मुसीबत ख़त्म हो जाएगी।

मुअ्मिनीन **(87)** व क़ा-ल मूसा रब्बना इन्न-क आतै-त फ़िरऔ-न व म-ल-अहू ज़ीनतंव्-व अम्वालन् फ़िल्हयातिद्दुन्या रब्बना लियुज़िल्लू अ़न् सबीलि-क रब्बनत्मिस् अ़ला अम्वालिहिम् वश्दुद् अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़ला युअ्मिनू हत्ता य-रवुल् अ़ज़ाबल्-अलीम **(88)** क़ा-ल क़द् उजीबद्-दअ्वतुकुमा फ़स्तक़ीमा व ला तत्तबिआ़न्नि सबीलल्लज़ी-न ला यअ्लमून **(89)** व जावज़्ना बि-बनी इस्राईलल्-बह्-र फ़अत्ब-अ़हुम् फ़िर्औनु व जुनूदुहू बग्यंव्-व अ़द्वन्, हत्ता इज़ा अद्-र-कहुल्-ग़-रक़ु क़ा-ल आमन्तु अन्नहू ला इला-ह इल्लल्लज़ी आ-मनत् बिही बनू इस्राई-ल व अ-न मिनल्-मुस्लिमीन **(90)** आल्आ-न व क़द् अ़सै-त क़ब्लु व कुन्-त मिनल्-मुफ़्सिदीन **(91)** फ़ल्यौ-म नुनज्जी-क बि-ब-दनि-क लितकू-न लिमन् ख़ल्फ़-क आयतन्, व इन्-न कसीरम् मिनन्नासि अ़न् आयातिना लग़ाफ़िलून **(92)** ❖

व ल-क़द् बव्वअ्ना बनी इस्राई-ल मुबव्व-अ सिद्क़िंव्-व रज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति फ़मख़्त-लफ़ू हत्ता जा-अहुमुल्-अ़िल्मु, इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(93)** फ़-इन् कुन्-त फ़ी शक्किम् मिम्मा अन्ज़ल्ना इलै-क फ़स्अलिल्लज़ी-न यक़्रऊनल्-किता-ब मिन् क़ब्लि-क ल-क़द् जा-अकल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन **(94)** व ला तकूनन्-न मिनल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि फ़-तकू-न मिनल्ख़ासिरीन **(95)** इन्नल्लज़ी-न हक़्क़त् अ़लैहिम् कलि-मतु

ملأه زينة وأموالا في الحيوة الدنيا ربنا ليضلوا عن
سبيلك ربنا اطمس على أموالهم واشدد على قلوبهم
فلا يؤمنوا حتى يروا العذاب الأليم ۝ قال قد أجيبت
دعوتكما فاستقيما ولا تتبعان سبيل الذين لا يعلمون ۝
وجاوزنا ببني إسراءيل البحر فأتبعهم فرعون وجنوده
بغيا وعدوا حتى إذا أدركه الغرق قال آمنت أنه لا إله
إلا الذي آمنت به بنوا إسراءيل وأنا من المسلمين ۝
آلئن وقد عصيت قبل وكنت من المفسدين ۝ فاليوم
ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك آية وإن كثيرا من
الناس عن آيتنا لغفلون ۝ ولقد بوأنا بني إسراءيل مبوأ
صدق ورزقنهم من الطيبت فما اختلفوا حتى جاءهم
العلم إن ربك يقضي بينهم يوم القيمة فيما كانوا
فيه يختلفون ۝ فإن كنت في شك مما أنزلنا إليك فسئل
الذين يقرءون الكتب من قبلك لقد جاءك الحق من
ربك فلا تكونن من الممترين ۝ ولا تكونن من الذين
كذبوا بآيت الله فتكون من الخسرين ۝ إن الذين حقت

ज़िन्दगी में ठाट-बाट के सामान और तरह-तरह के माल ऐ हमारे रब! इसी वास्ते दिए हैं कि वे (लोगों को) आपकी राह से गुमराह करें। ऐ हमारे रब! उनके मालों को तबाह व बर्बाद कर दीजिए और उनके दिलों को (ज़्यादा) सख़्त कर दीजिए (जिससे हलाकत के हक़दार हो जाएँ) सो ये ईमान न लाने पाएँ यहाँ तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब (के हक़दार होकर उस) को देख लें। **(88)** (हक़ तआ़ला ने) फ़रमाया कि तुम दोनों की दुआ़ क़बूल कर ली गई, सो तुम अपने मन्सबी काम (यानी तब्लीग़ पर) साबित क़दम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जिनको इल्म नहीं।[1] **(89)** और हमने बनी इसराईल को (उस) दरिया से पार कर दिया,[2] फिर उनके पीछे-पीछे फ़िरऔ़न अपने लश्कर के साथ ज़ुल्म और ज़्यादती के इरादे से (दरिया में) चला, यहाँ तक कि जब डूबने लगा (और अ़ज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आने लगे) तो (घबराकर) कहने लगा कि मैं ईमान लाता हूँ कि सिवाय उसके कि जिसपर बनी इसराईल ईमान लाए हैं, कोई माबूद नहीं, और मैं मुसलमानों में दाख़िल होता हूँ। **(90)** (जवाब दिया गया कि) अब (ईमान लाता है) और (अ़ज़ाब के देखने से) पहले सरकशी करता रहा, और फ़सादियों में दाख़िल रहा। अब नजात चाहता है। **(91)** सो (जो तू नजात चाहता है उसके बजाय) आज हम तेरे बदन (यानी तेरी लाश को, पानी में नीचे बैठ जाने से) नजात देंगे, ताकि तू उनके लिए (इबरत का) निशान हो जो तेरे बाद (मौजूद) हैं।[3] और हक़ीक़त यह है कि (फिर भी) बहुत-से आदमी हमारी (ऐसी-ऐसी) निशानियों से (यानी इबरतों से) ग़ाफ़िल हैं, (और अल्लाह के अहकाम की मुख़ालफ़त से नहीं डरते)। **(92)** ❖

और हमने (फ़िरऔ़न को ग़र्क़ करने के बाद) बनी इसराईल को बहुत अच्छा ठिकाना रहने को दिया,[4] और हमने उनको नफ़ीस और पाक चीज़ें (बाग़ात और चश्मों वग़ैरह से) खाने को दीं। सो उन्होंने (जहालत की वजह से) इख़्तिलाफ़ नहीं किया, यहाँ तक कि उनके पास (अहकाम का) इल्म पहुँच गया। यक़ीनी बात है कि आपका रब उन (इख़्तिलाफ़ करने वालों) के दरमियान क़ियामत के दिन उन मामलात में (अ़मली) फ़ैसला करेगा जिनमें वे इख़्तिलाफ़ किया करते थे। **(93)** फिर अगर मान लीजिए आप इस (किताब) की तरफ़ से शक (व शुब्हा) में हों जिसको हमने आपके पास भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछ लीजिए जो आपसे पहले (की) किताबों को पढ़ते हैं, (मुराद तौरात व इन्जील हैं, तो वे क़ुरआन को सच बतलाएँगे)। बेशक आपके पास आपके रब की तरफ़ से सच्ची किताब आई है, आप हरगिज़ शक करने वालों में न हों। **(94)** और न (शक करने वालों से बढ़कर) उन लोगों में से हों जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की आयतों को झुठलाया, कहीं आप (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) तबाह न हो जाएँ।[5] **(95)** यक़ीनन जिन लोगों के हक़ में आपके रब की (यह

---

1. यानी जिनको हमारे वायदे के सच्चे होने का, या देरी में हिक्मत होने का, या तब्लीग़ के ज़रूरी होने का इल्म नहीं।

2. जब अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न को हलाक करना चाहा तो मूसा अ़लैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि बनी इसराईल को मिस्र से बाहर निकाल ले जाइए। चुनाँचे वह सबको लेकर चले और रास्ते में दरिया-ए-शोर (यानी नमकीन पानी का दरिया) रुकावट बना और मूसा अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ से उसमें रास्ता पैदा हो गया।

3. उसकी लाश के बचा लेने को और पानी पर तैर आने को नजात फ़रमाना मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर उसको मायूस कर देने के लिए है कि ऐसी नजात होगी जो तेरे लिए ज़्यादा रुस्वाई का सबब है।

4. 'मुबव्व-अ सिद्क़िन्' की तफ़सीर 'मिस्र' व 'शाम' के साथ दुर्रे मन्सूर में मन्क़ूल है।

5. ज़ाहिर में ख़िताब आपको है मगर ख़िताब का मक़सद दूसरों को है। और आयत के नाज़िल होने के वक़्त आपने ख़िताब में अपने को मक़सूद न होने को इन लफ़्ज़ों से ज़ाहिर फ़रमा दिया कि 'न मैं किसी शक में हूँ और न सवाल करता हूँ।'

रब्बि-क ला युअ्मिनून **(96)** व लौ जाअत्हुम् कुल्लु आयतिन् हत्ता य-रवुल् अ़ज़ाबल्-अलीम **(97)** फ़लौ ला कानत् क़र्यतुन् आम-नत् फ़-न-फ़-अ़हा ईमानुहा इल्ला क़ौ-म यूनु-स, लम्मा आमनू कशफ़्ना अ़न्हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्हयातिद्दुन्या व मत्तअ्नाहुम् इला हीन **(98)** व लौ शा-अ रब्बु-क लआम-न मन् फ़िल्अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअ़न्, अ-फ़अन्-त तुक्रिहुन्ना-स हत्ता यकूनू मुअ्मिनीन **(99)** व मा का-न लिनफ़्सिन् अन् तुअ्मि-न इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व यज्अ़लुर्रिज्-स अ़लल्लज़ी-न ला यअ्क़िलून **(100)** क़ुलिन्ज़ुरू माज़ा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मा तुग्निल्-आयातु वन्नुज़ुरु अ़न् क़ौमिल् ला युअ्मिनून **(101)** फ़-हल् यन्तज़िरू-न इल्ला मिस्-ल अय्यामिल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिहिम्, क़ुल् फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन **(102)** सुम्-म नुनज्जी रुसु-लना वल्लज़ी-न आमनू कज़ालि-क हक़्क़न् अ़लैना नुन्जिल्-मुअ्मिनीन **(103)** ❖

क़ुल् या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी शक्किम् मिन् दीनी फ़ला अअ्बुदुल्लज़ी-न तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् अअ्बुदुल्लाहल्लज़ी य-तवफ़्फ़ाकुम् व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन **(104)** व अन् अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनि हनीफ़न् व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन **(105)** व ला तद्अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अु-क व ला यज़ुर्रु-क फ़-इन् फ़अ़ल्-त फ़-इन्न-क इज़म् मिनज़्ज़ालिमीन **(106)** व

عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ
حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ
فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾
وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۚ اَفَاَنْتَ
تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ
تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ
لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَا
تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ
يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ
فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖ
وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ

ع ١٥

तक़्दीरी) बात (कि ईमान न लाएँगे) साबित हो चुकी है वे (कभी) ईमान न लाएँगे। **(96)** चाहे उनके पास (हक़ के सुबूत की) तमाम दलीलें पहुँच जाएँ, जब तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब को न देख लें, (मगर उस वक़्त ईमान फ़ायदेमन्द नहीं होता)। **(97)** चुनाँचे (अ़ज़ाब शुदा बस्तियों में से) कोई बस्ती ईमान न लाई, कि ईमान लाना उसको फ़ायदेमन्द होता, हाँ मगर यूनुस (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम। जब वे ईमान ले आए तो हमने रुस्वाई के अ़ज़ाब को दुनियावी ज़िन्दगी में उनपर से टाल दिया, और उनको एक ख़ास वक़्त (यानी मौत के वक़्त) तक (ख़ैर व ख़ूबी के साथ) ऐश "यानी चैन व सुकून" दिया।[1] **(98)** और उन क़ौमों और बस्तियों की क्या तख़्सीस है?) अगर आपका रब चाहता तो तमाम रू-ए-ज़मीन के लोग सबके सब ईमान ले आते,[2] सो (जब यह बात है तो) क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती कर सकते हैं जिससे वे ईमान ही ले आएँ। **(99)** हालाँकि किसी शख़्स का ईमान बिना खुदा के हुक्म (यानी उसकी मरज़ी) के मुम्किन नहीं, और वह (यानी अल्लाह तआ़ला) बेअ़क़्ल लोगों पर (कुफ़्र की) गंदगी डाल देता है। आप कह दीजिए कि तुम ग़ौर करो। **(100)** (और देखो) कि क्या-क्या चीज़ें हैं आसमानों और ज़मीन में।[3] और जो लोग (दुश्मनी के तौर पर) ईमान नहीं लाते, उनको दलीलें और धमकियाँ कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचातीं, (यह बयान हुआ उनके बैर का), **(101)** सो वे लोग (जैसा कि उनके हाल से ज़ाहिर है) सिर्फ़ उन लोगों के जैसे वाक़िआ़त का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं।[4] आप फ़रमा दीजिए कि अच्छा तो तुम (तो उसके) इन्तिज़ार में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ (उसके) इन्तिज़ार करने वालों में हूँ। **(102)** फिर हम (उस अ़ज़ाब से) अपने पैग़म्बरों को और ईमान वालों को बचा लेते थे, (जिस तरह हमने उन मोमिनों को नजात दी थी) हम इसी तरह सब ईमान वालों को नजात दिया करते हैं। यह (वायदे के मुताबिक़) हमारे ज़िम्मे है।[5] **(103)** ❖

आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से शक (और शुब्हा) में हो तो मैं उन माबूदों की इबादत नहीं करता खुदा के अ़लावा जिनकी तुम इबादत करते हो, लेकिन हाँ उस माबूद की इबादत करता हूँ जो तुम (यानी तुम्हारी जान) को क़ब्ज़ करता है, और मुझको (अल्लाह की तरफ़ से) यह हुक्म हुआ है कि मैं ईमान लाने वालों में से हूँ। **(104)** और यह कि अपने आपको इस (ज़िक्र हुए) दीन (और ख़ालिस तौहीद) की तरफ़ इस तरह मुतवज्जह रखना कि और सब तरीक़ों से अलग हो जाऊँ, और (मुझको यह हुक्म हुआ है कि) कभी मुश्रिक मत बनना। **(105)** और (यह हुक्म हुआ है कि) खुदा (की तौहीद) को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत मत करना जो तुझको न (इबादत करने की हालत में) कोई नफ़ा पहुँचा सके और न (इबादत छोड़ देने की हालत में) कोई नुक़सान पहुँचा सके। फिर अगर (मान लो) तुमने ऐसा किया (यानी अल्लाह के अ़लावा किसी और की इबादत की) तो तुम उस हालत में (अल्लाह का) हक़ ज़ाया करने वालों में

---

1. यूनुस अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के क़िस्से का खुलासा यह है कि उनके ईमान न लाने पर अल्लाह की वह्य के मुताबिक़ यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने उनको अ़ज़ाब की ख़बर दी और खुद चले गए। जब बताए हुए वक़्त पर अ़ज़ाब के आसार शुरू हुए तो तमाम क़ौम ने हक़ तआ़ला के सामने रोना और गिड़गिड़ाना शुरू किया और ईमान ले आए और वह अ़ज़ाब टल गया।

2. मगर बाज़ हिक्मतों की वजह से यह न चाहा, इसलिए सब ईमान न लाए।

3. यानी उनमें ग़ौर करने से तौहीद की अ़क़्ली दलील हासिल होगी।

4. यानी बावजूद दलीलों और वईदों के जो ईमान नहीं लाते तो उनकी हालत उस शख़्स के जैसी है जो ऐसे अ़ज़ाब का मुन्तज़िर हो जो कि पहली क़ौमों पर आया था।

5. पस इसी तरह अगर इन काफ़िरों पर कोई मुसीबत पड़ी तो मुसलमान उससे महफ़ूज़ रहेंगे, चाहे दुनिया में चाहे आख़िरत में।

इंय्यम्सस्कल्लाहु बिजुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व व इंय्युरिद्-क बिख़ैरिन् फ़ला राद्-द लिफ़ज़्लिही, युसीबु बिही मंय्यशा-उ मिन् अिबादिही, व हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम **(107)** क़ुल् या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम् फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अलैहा, व मा अ-न अलैकुम् बि-वकील **(108)** वत्तबिअ् मा यूहा इलै-क वस्बिर् हत्ता यह्कुमल्लाहु व हु-व ख़ैरुल्-हाकिमीन **(109)** ❖

11 सूरतु हूदिन् 52

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7924 अक्षर, 1936 शब्द 123 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, किताबुन् उह्किमत् आयातुहू सुम्-म फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् ख़बीर **(1)** अल्-ला तअ्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्ननी लकुम् मिन्हु नज़ीरुंव्-व बशीर **(2)** व अनिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युमत्तिअ्कुम् मताअ़न् ह-सनन् इला अ-जलिम्-मुसम्मंव्-व युअ्ति कुल्-ल ज़ी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू, व इन् तवल्लौ फ़-इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् कबीर **(3)** इलल्लाहि मर्जिअुकुम् व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर **(4)** अला इन्नहुम् यस्नू-न सुदू-रहुम् लियस्तख़्फ़ू मिन्हु, अला ही-न यस्तग़्शू-न सियाबहुम् यअ्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्लिनू-न इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर **(5)**

دون الله ما لا ينفعك ولا يضرك فإن فعلت فإنك إذا من
الظلمين ﴿١٠٦﴾ وإن يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو وإن
يردك بخير فلا راد لفضله يصيب به من يشاء من عباده
وهو الغفور الرحيم ﴿١٠٧﴾ قل يأيها الناس قد جاءكم الحق من
ربكم فمن اهتدى فإنما يهتدي لنفسه ومن ضل
فإنما يضل عليها وما أنا عليكم بوكيل ﴿١٠٨﴾ واتبع ما يوحى
إليك واصبر حتى يحكم الله وهو خير الحكمين ﴿١٠٩﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

الر كتب أحكمت آيته ثم فصلت من لدن حكيم خبير ﴿١﴾
ألا تعبدوا إلا الله إنني لكم منه نذير وبشير ﴿٢﴾ وأن
استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يمتعكم متاعا حسنا
إلى أجل مسمى ويؤت كل ذي فضل فضله وإن
تولوا فإني أخاف عليكم عذاب يوم كبير ﴿٣﴾ إلى الله
مرجعكم وهو على كل شيء قدير ﴿٤﴾ ألا إنهم يثنون
صدورهم ليستخفوا منه ألا حين يستغشون ثيابهم
يعلم ما يسرون وما يعلنون إنه عليم بذات الصدور ﴿٥﴾

से हो जाओगे। (106) और (मुझसे यह कहा गया है कि) अगर तुमको अल्लाह तआ़ला कोई तकलीफ़ पहुँचाए तो सिवाय उसके और कोई उसका दूर करने वाला नहीं है, और अगर वह तुमको कोई राहत पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला नहीं, (बल्कि) वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिसपर चाहे मुतवज्जह फ़रमाए, और वह बड़ी मग़्फ़िरत वाले (और) रहमत वाले हैं।[1] (107) आप (यह भी) कह दीजिए[2] कि ऐ लोगो! तुम्हारे पास (दीने) हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से (दलील के साथ) पहुँच चुका है, सो (उसके पहुँच जाने के बाद) जो शख़्स सही रास्ते पर आ जाएगा सो वह अपने (नफ़े के) वास्ते सही रास्ते पर आएगा। और जो शख़्स (अब भी) बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना (यानी उसका वबाल भी) उसी पर पड़ेगा, और मैं तुमपर (कुछ बतौर ज़िम्मेदारी के) मुसल्लत नहीं किया गया। (108) और आप उसकी पैरवी करते रहिए जो कुछ आपके पास वह्य भेजी जाती है, और (उनके कुफ़्र व तकलीफ़ पहुँचाने पर) सब्र कीजिए, यहाँ तक कि अल्लाह (उनका) फ़ैसला कर देंगे, और वह सब फ़ैसला करने वालों में अच्छे (फ़ैसला करने वाले) हैं। (109) ❖

11 सूरः हूद 52

सूरः हूद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 123 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-रा, (के मायने तो अल्लाह को मालूम हैं)। यह (कुरआन) एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें (दलीलों से) मज़बूत की गई हैं, (फिर उसी के साथ) साफ़-साफ़ (भी) बयान की गई हैं। (वह किताब ऐसी है कि) एक बाख़बर हकीम (यानी अल्लाह तआ़ला) की तरफ़ से (है)। (1) यह कि अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी की इबादत मत करो, मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ से (ईमान न लाने पर अ़ज़ाब से) डराने वाला, और (ईमान लाने पर सवाब की) खुशख़बरी देने वाला हूँ। (2) और यह (भी है) कि तुम लोग अपने गुनाह (शिर्क व कुफ़्र वग़ैरह) अपने रब से माफ़ कराओ, फिर (ईमान लाकर) उसकी तरफ़ (इबादत से) मुतवज्जह रहो, वह तुमको मुक़र्ररा वक़्त (यानी मौत के वक़्त) तक (दुनिया में) खुशऐशी "यानी अच्छी पुरसुकून ज़िन्दगी" देगा,[3] और (आख़िरत में) हर ज़्यादा अ़मल करने वाले को ज़्यादा सवाब देगा। और अगर (ईमान लाने से) तुम लोग मुँह (ही) मोड़ते रहे तो मुझको (उस सूरत में) तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है। (3) तुम (सब) को अल्लाह ही के पास जाना है, और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। (4) याद रखो कि वे लोग अपने सीनों को दोहरा किए देते हैं, (और ऊपर से कपड़ा लपेट लेते हैं) ताकि (अपनी बातें) उससे (यानी खुदा से) छुपा सकें।[4] याद रखो कि वे लोग जिस वक़्त (दोहरे होकर) अपने कपड़े (अपने ऊपर) लपेटते हैं, वह (उस वक़्त भी) सब जानता है, जो कुछ चुपके-चुपके (बातें) करते हैं और जो कुछ (बातें) वे ज़ाहिर करते हैं, (क्योंकि) यक़ीनन वह (तो) दिलों के अन्दर की बातें जानता है। (5)

---

1. खुलासा यह कि मेरा दीन तो यह है जिसमें किसी को शक न होना चाहिए। और कुफ़्फ़ार इसके बावजूद कि इनकारी थे फिर शक क्यों फ़रमाया? इसमें इशारा इस तरफ़ है कि इस दीन में तो शक भी न होना चाहिए, कहाँ यह कि इनकार और झुठलाना।
2. मतलब यह कि आप अपने ज़ाती और सुपुर्द किए हुए काम में लगे रहिए, उनकी फ़िक्र न कीजिए।
3. 'खुश-ऐशी' से मुराद वह है जिस्को 'आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतन्' और 'लनुह्यियन्नहू हयातन् तय्यिब-तन्' में ज़िक्र फ़रमाया है।
4. यानी इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जो बातें करते हैं तो इस अन्दाज़ से करते हैं कि किसी को ख़बर न हो जाए। और जिसको एतिक़ाद होगा कि खुदा को ज़रूर ख़बर होती है और आपका साहिबे-वह्य (वह्य वाला) होना दलीलों से साबित है, तो वह छुपाने की यह तदबीर कभी न करेगा। पस यह तदबीर करना गोया कि इसपर दलालत करता है कि अल्लाह से पोशीदा रहने की कोशिश की जा रही है।

बारहवाँ पारः व मा मिन् दाब्बतिन्

सूरतु हूदिन् (आयत 6 से 123)

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अ़लल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ़्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौद-अ़हा, कुल्लुन् फ़ी किताबिम् मुबीन **(6)** व हुवल्लज़ी ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व का-न अ़र्शुहू अ़लल्मा-इ लि-यब्लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़-मलन्, व ल-इन् क़ुल्-त इन्नकुम् मब्अ़ूसू-न मिम्-बअ़्दिल्- मौति ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्- मुबीन **(7)** व ल-इन् अख़्ख़ार्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ा-ब इला उम्मतिम् मअ़्दूदतिल्- ल-यक़ूलुन्-न मा यह्बिसुहू, अला यौ-म यअ्तीहिम् लै-स मस्रूफ़न् अ़न्हुम् व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(8)** ❖

व ल-इन् अज़क़्नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्म-तन् सुम्-म न-ज़अ़्नाहा मिन्हु इन्नहू ल-यऊसुन् कफ़ूर **(9)** व ल-इन् अज़क़्नाहु नअ़्मा-अ बअ़्-द ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न ज़-हबस्सय्यिआतु अ़न्नी, इन्नू ल-फ़रिहुन् फ़ख़ूर **(10)** इल्लल्लज़ी-न स-बरू व अ़मिलुस्सालिहाति, उलाइ-क लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर **(11)** फ़-लअ़ल्ल-क तारिकुम् बअ़्-ज़ मा यूहा इलै-क व ज़ाइक़ुम् बिही सद्रु-क अंय्यक़ूलू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि कन्ज़ुन् औ जा-अ म-अ़हू म-लकुन्, इन्नमा अन्-त नज़ीरुन्, वल्लाहु अ़ला

وما من دآبة ١٢ ٢٠١ هود ١١

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ
مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ
لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتَ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ
بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٧﴾
وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا
يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ
نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ﴿٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ
مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ﴿١٠﴾ إِلَّا الَّذِينَ
صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١١﴾
فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ
يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۚ
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٢﴾ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا
بِعَشْرِ سُوَرٍ مِثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ
اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٣﴾ فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا

منزل ٣

बारहवाँ पारः व मा मिन् दाब्बतिन्

सूरः हूद (आयत 6 से 123)

और कोई (रिज़्क़ खाने वाला) जानवर रू-ए-ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं कि उसकी रोज़ी अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे न हो, और वह हर एक की ज़्यादा रहने की जगह को और चन्द दिन रहने की जगह को जानता है। सब चीज़ें किताबे मुबीन (यानी लौहे महफ़ूज़) में (भी दर्ज और मुक़र्रर) हैं। **(6)** और वह (अल्लाह) ऐसा है कि सब आसमान और ज़मीन को छह दिन (की मिक़दार) में पैदा किया, और (उस वक़्त) उसका अ़र्श पानी पर था, ताकि तुमको आज़माए कि (देखें) तुममें अच्छा अ़मल करने वाला कौन है।[1] और अगर आप (लोगों से) कहते हैं कि यक़ीनन तुम लोग मरने के बाद (क़ियामत के दिन दोबारा) ज़िन्दा किए जाओगे तो (उनमें) जो लोग काफ़िर हैं वे (क़ुरआन के बारे में, जिसमें क़ियामत में ज़िन्दा होकर उठने की ख़बर है) कहते हैं कि यह तो बिलकुल खुला जादू है।[2] **(7)** और अगर थोड़े दिनों तक (मुराद दुनियावी ज़िन्दगी है) हम उनसे (वायदा किए गए) अ़ज़ाब को मुल्तवी "यानी स्थगित" रखते हैं, (कि इसमें हिक्मतें हैं) तो (बतौर इनकार व मज़ाक़ उड़ाने के) कहने लगते हैं कि उस (अ़ज़ाब) को कौन-सी चीज़ रोक रही है?[3] याद रखो जिस दिन (मुक़र्ररा वक़्त पर) वह (अ़ज़ाब) उनपर आ पड़ेगा तो फिर (किसी के) टाले न टलेगा, और जिस (अ़ज़ाब) के साथ यह हँसी-ठट्ठा कर रहे थे वह उनको आ घेरेगा।[4] **(8)** ❖

और अगर हम इनसान को अपनी मेहरबानी का मज़ा चखाकर उससे छीन लेते हैं तो वह नाउम्मीद और नाशुक्र हो जाता है। **(9)** और अगर उसको किसी तकलीफ़ के बाद जो कि उसपर आ पड़ी हो किसी नेमत का मज़ा चखा दें, तो कहने लगता है कि मेरा सब दुख-दर्द रुख़्सत हुआ, (अब कभी न होगा) पस वह इतराने लगता है, शैख़ी बघारने लगता है। **(10)** मगर जो लोग मुस्तक़िल मिज़ाज हैं और नेक काम करते हैं,[5] (वे ऐसे नहीं होते)[6] ऐसे लोगों के लिए बड़ी मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र है।[7] **(11)** सो शायद आप (तंग होकर) उन (अहकाम) में से जो कि आपके पास वह्य के ज़रिये से भेजे जाते हैं, बाज़ को (कि वह तब्लीग़ है) छोड़ देना चाहते हैं,[8] और आपका दिल इस बात से तंग होता है कि वे कहते हैं कि (अगर यह नबी हैं तो) इनपर कोई ख़ज़ाना क्यों नाज़िल नहीं हुआ, या उनके साथ कोई फ़रिश्ता (जो हमसे भी बात-चीत करता) क्यों नहीं आया?[9] आप तो (उन कुफ़्फ़ार के एतिबार से) सिर्फ़ डराने वाले हैं,[10] और हर चीज़ पर पूरा इख़्तियार रखने वाला (तो) अल्लाह ही है।[11] **(12)** क्या (उसके मुताल्लिक़ यूँ) कहते हैं (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) कि आपने उसको (अपनी तरफ़ से) खुद बना लिया है? आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि अगर (यह मेरा बनाया हुआ है) तो (अच्छा) तुम भी इस जैसी दस सूरतें (जो तुम्हारी) बनाई हुई (हों) ले आओ, और (अपनी मदद

---

1. मतलब यह कि ज़मीन व आसमान को पैदा किया। तुम्हारी ज़रूरतें और फ़ायदे उसमें पैदा किए, ताकि तुम उनको देखकर तौहीद पर दलील पकड़ो, और उनसे फ़ायदा उठाकर नेमत देने वाले का शुक्र और ख़िदमत यानी नेक अ़मल बजा लाओ। सो बाज़ ने ऐसा किया, बाज़ ने न किया।

2. जादू इसलिए कहते हैं कि वह बातिल होता है मगर असर करने वाला, इसी तरह 'अल्लाह अपनी पनाह में रखे' क़ुरआन को बातिल समझते थे, लेकिन इसके मज़ामीन का असरदार होना भी ख़ूब देखते थे। इस मजमूए पर यह हुक्म किया। अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे।

3. यानी अगर अ़ज़ाब कोई चीज़ होती तो अब तक हो चुकता, जब नहीं हुआ तो मालूम हुआ कि कुछ भी नहीं।

4. मतलब यह कि बावजूद हक़दार होने के यह देरी इसलिए है कि बाज़ हिक्मतों से उसका वक़्त तय है, फिर उस वक़्त सारी कसर निकल जाएगी।

5. मुराद इससे मोमिन लोग हैं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 402 पर)**

कुल्लि शैइंव्-वकील (12) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् फ़अ्तू बिअ़श्रि सु-वरिम्-मिस्लिही मुफ़्त-रयातिंव्वद्अू मनिस्त-तअ़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (13) फ़-इल्लम् यस्तजीबू लकुम् फ़अ़्लमू अन्नमा उन्ज़ि-ल बिअ़िल्मिल्लाहि व अल्ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (14) मन् का-न युरीदुल्-हयातद्दुन्या व ज़ीन-तहा नुवफ़्फ़ि इलैहिम् अअ़्मालहुम् फ़ीहा व हुम् फ़ीहा ला युब्ख़सून (15) उलाइ-कल्लज़ी-न लै-स लहुम् फ़िल्-आख़िरति इल्लन्नारु व हबि-त मा स-नअ़ू फ़ीहा व बातिलुम्-मा कानू यअ़्मलून (16) अ-फ़-मन् का-न अ़ला बय्यिनतिम् मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाहिदुम् मिन्हु व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव्-व रह्मतन्, उलाइ-क युअ्मिनू-न बिही, व मंय्यक्फ़ुर् बिही मिनल् अह्ज़ाबि फ़न्नारु मौअ़िदुहू फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम् मिन्हु, इन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (17) व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन्, उलाइ-क युअ़्रज़ू-न अ़ला रब्बिहिम् व यक़ूलुल्-अश्हादु हा-उलाइल्लज़ी-न क-ज़बू अ़ला रब्बिहिम् अला लअ़्नतुल्लाहि अ़लज़्ज़ालिमीन (18) अल्लज़ी-न यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अ़ि-वजन्, व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (19) उलाइ-क लम् यकूनू मुअ़्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा का-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ ⁘ युज़ा-अ़फ़ु लहुमुल् अ़ज़ाबु, मा कानू यस्ततीअ़ूनस्सम्-अ़ व मा कानू युब्सिरून (20) उलाइ-कल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (21) ला ज-र-म अन्नहुम्

اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ
فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾
اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ
قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ۗ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۗ وَ
مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ
مِّنْهُ ۚ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۗ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ
عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ
اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۗ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾ اُولٰٓئِكَ لَمْ
يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۗ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَ
مَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ

وقف لازم

⁘ व. लाज़िम

के लिए) जिन-जिन को अल्लाह के अ़लावा बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। **(13)** फिर ये (काफ़िर लोग) अगर तुम लोगों का कहना (कि इसके जैसा बना लाओ) न कर सकें तो तुम (उनसे कह दो कि अब तो) यक़ीन कर लो कि (यह क़ुरआन) अल्लाह ही के इल्म (और क़ुदरत) से उतरा है, और यह भी (यक़ीन कर लो) कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं।[1] तो फिर अब भी मुसलमान होते हो (या नहीं)? **(14)** जो शख़्स (अपने अच्छे आमाल से) महज़ दुनियावी ज़िन्दगी (के फ़ायदों) और इसकी रौनक़ (को हासिल करना) चाहता है, तो हम उन लोगों के (उन) आमाल (का बदला) उनको इस (दुनिया) ही में पूरे तौर से भुगता देते हैं, और उनके लिए (दुनिया) में कुछ कमी नहीं होती।[2] **(15)** ये ऐसे लोग हैं कि उनके लिए आख़िरत में सिवाय दोज़ख़ के और कुछ (सवाब वग़ैरह) नहीं, और उन्होंने इस (दुनिया) में जो कुछ किया था वह (आख़िरत में सब-का-सब) नाकारा (साबित) होगा, और (हक़ीक़त में तो) जो कुछ कर रहे हैं वह अब भी बेअसर है।[3] **(16)** क्या (क़ुरआन का इनकार करने वाला ऐसे शख़्स की बराबरी कर सकता है) जो क़ुरआन पर (क़ायम हो?) जो कि उसके रब की तरफ़ से (आया) है, और इस (क़ुरआन) के साथ एक गवाह तो इसी में (मौजूद) है,[4] और एक इससे पहले (यानी) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की किताब है, जो (अहकाम बतलाने के एतिबार से) इमाम है और रहमत है।[5] ऐसे लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान रखते हैं। और (दूसरे) फ़िर्क़ों में से जो शख़्स इस (क़ुरआन) का इनकार करेगा तो दोज़ख़ उसके वायदे की जगह है, (काफ़िर का यही हाल है) सो (ऐ मुख़ातब!) तुम क़ुरआन की तरफ़ से शक में मत पड़ना, इसमें कोई शक व शुब्हा नहीं कि वह सच्ची (किताब) है, तुम्हारे रब के पास से (आई है) लेकिन (बावजूद इन दलीलों के ग़ज़ब है कि) बहुत-से आदमी ईमान नहीं लाते। **(17)** और ऐसे शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है जो अल्लाह तआ़ला पर झूठ बाँधे?[6] ऐसे लोग (क़ियामत के दिन) अपने रब के सामने पेश किए जाएँगे और (आमाल के) गवाह (फ़रिश्ते सबके सामने यूँ) कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के मुताल्लिक़ झूठी बातें लगाई थीं, (सब) सुन लो कि ऐसे ज़ालिमों पर ख़ुदा की (ज़्यादा) लानत है। **(18)** जो कि (अपने कुफ़्र व ज़ुल्म के साथ) दूसरों को भी ख़ुदा की राह (यानी दीन) से रोकते थे, और उस (राह) में टेढ़ (और शुब्हात) निकालने की तलाश (और फ़िक्र) में रहा करते थे, (ताकि दूसरों को गुमराह करें) और वे आख़िरत के भी इनकारी थे। **(19)** ये लोग (तमाम) ज़मीन (के तख़्ते) पर (भी) ख़ुदा तआ़ला को आ़जिज़ नहीं कर सकते थे, और न उनका ख़ुदा के सिवा कोई मददगार हुआ, (कि गिरफ़्तारी के बाद छुड़ा लेता), ऐसों को (औरों से) दोगुनी सज़ा होगी,[7] ये लोग न सुन सकते थे और न (हद से बढ़ी हुई दुश्मनी की वजह से राहे हक़ को) देखते थे। **(20)** ये वे लोग हैं जो अपने आपको

(पृष्ठ 400 का शेष) 6. वे नेमत के ख़त्म हो जाने के वक़्त सब्र से काम लेते हैं और नेमत के देने के वक़्त शुक्र व फ़रमाँबर्दारी बजा लाते हैं जो कि नेक आमाल का हासिल है।

7. ख़ुलासा यह कि मोमिनों के अ़लावा अक्सर आदमी ऐसे ही हैं कि ज़रा-सी देर में निडर हो जाएँ, ज़रा-सी देर में नाउम्मीद हो जाएँ। इसलिए ये लोग अ़ज़ाब में देरी होने के सबब बेख़ौफ़ और इनकारी हो गए।

8. यानी क्या ऐसा मुम्किन है कि आप तब्लीग़ छोड़ दें, सो ज़ाहिर है कि ऐसा इरादा तो आप कर नहीं सकते, फिर तंगदिल होने से क्या फ़ायदा।

9. सो ऐसी बातों से आप तंग न हों।

10. यानी आप पैग़म्बर हैं जिसके लिए मुतलक़ मोजिज़े की ज़रूरत है, न कि फ़रमाइशी मोजिज़े की।

11. इन मोजिज़ों का ज़ाहिर करना आपके इख़्तियार से बाहर है, फिर उसकी फ़िक्र और इस फ़िक्र से तंगी क्यों हो, और चूंकि पैग़म्बर के लिए मुतलक़ मोजिज़े की ज़रूरत है और आपका बड़ा मोजिज़ा क़ुरआन है, तो इसको न मानने की क्या वजह?

1. क्योंकि माबूद, माबूद होने की सिफ़तों में कामिल होता है। फिर अगर कोई और होता तो उसको क़ुदरत भी पूरी होती और उस क़ुदरत से वह तुम लोगों की मदद करता कि तुम उसका बदल ले आते, लेकिन जब तुम इससे आ़जिज़ हो तो **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 404 पर)**

फ़िल्-आख़िरति हुमुल्-अख़्सरून **(22)** इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व अख़्बतू इला रब्बिहिम् उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(23)** म-सलुल्-फ़रीक़ैनि कल्-अअ़्मा वल्-असम्मि वल्बसीरि वस्समीअ़ि, हल् यस्तवियानि म-सलन्, अ-फ़ला तज़क्करून **(24)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही इन्नी लकुम् नज़ीरुम् मुबीन **(25)** अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अलीम **(26)** फ़क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा नरा-क इल्ला ब-शरम् मिस्-लना व मा नराकत्त-ब-अ़-क इल्लल्लज़ी-न हुम् अराज़िलुना बादियर्-रअ़्यि व मा नरा लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिम्-बल् नज़ुन्नुकुम् काज़िबीन **(27)** क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी रह़्म-तम्-मिन् अ़िन्दिही फ़-अ़ुम्मियत् अ़लैकुम्, अनुल्ज़िमुकुमूहा व अन्तुम् लहा कारिहून **(28)** व या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अ़लैहि मालन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व मा अ-न बितारिदिल्लज़ी-न आमनू, इन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्हलून **(29)** व या क़ौमि मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् तरत्तुहुम्, अ-फ़ला तज़क्करून **(30)** व ला अक़ूलु लकुम् अ़िन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ़्लमुल्-ग़ै-ब व ला अक़ूलु इन्नी म-लकुंव्-व ला अक़ूलु लिल्लज़ी-न तज़्दरी अअ़्युनुकुम् लंय्युअ़्ति-यहुमुल्लाहु ख़ैरन्, अल्लाहु अअ़्लमु बिमा फ़ी अन्फ़ुसिहिम् इन्नी

الأخسرون ﴿٢٢﴾ إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأخبتوا
إلى ربهم أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون ﴿٢٣﴾ مثل
الفريقين كالأعمى والأصم والبصير والسميع هل يستويان
مثلا أفلا تذكرون ﴿٢٤﴾ ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه إني لكم
نذير مبين ﴿٢٥﴾ أن لا تعبدوا إلا الله إني أخاف عليكم عذاب
يوم أليم ﴿٢٦﴾ فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما نراك إلا
بشرا مثلنا وما نراك اتبعك إلا الذين هم أراذلنا بادي
الرأي وما نرى لكم علينا من فضل بل نظنكم كاذبين ﴿٢٧﴾
قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي وآتاني
رحمة من عنده فعميت عليكم أنلزمكموها وأنتم لها
كارهون ﴿٢٨﴾ ويا قوم لا أسألكم عليه مالا إن أجري إلا على
الله وما أنا بطارد الذين آمنوا إنهم ملاقو ربهم ولكني
أراكم قوما تجهلون ﴿٢٩﴾ ويا قوم من ينصرني من الله إن
طردتهم أفلا تذكرون ﴿٣٠﴾ ولا أقول لكم عندي خزائن
الله ولا أعلم الغيب ولا أقول إني ملك ولا أقول للذين
تزدري أعينكم لن يؤتيهم الله خيرا الله أعلم بما في

बर्बाद कर बैठे, और जो (माबूद) उन्होंने घड़ रखे थे (आज) उनसे सब ग़ायब (और गुम) हो गए, (कोई भी तो काम न आया)। **(21)** पस लाज़िमी बात है कि आख़िरत में ज़्यादा ख़सारा "यानी घाटा" पाने वाले यही लोग होंगे।[1] **(22)** बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे-अच्छे काम किए और दिल से अपने रब की तरफ़ झुके,[2] ऐसे लोग जन्नत वाले हैं, और वे उसमें हमेशा रहा करेंगे।[3] **(23)** दोनों फ़रीक़ (जिनका ज़िक्र हुआ यानी मोमिन व काफ़िर) की हालत ऐसी है जैसे एक शख़्स हो अन्धा भी और बहरा भी, और एक शख़्स हो कि देखता भी हो और सुनता भी हो, (जिसको समझना बहुत आसान है)। क्या ये दोनों शख़्स हालत में बराबर हैं?[4] क्या तुम (इस फ़र्क़ को) समझते नहीं?[5] **(24)** ❖

और हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम के पास रसूल बनाकर (यह पैग़ाम देकर) भेजा कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत मत करना। **(25)** मैं तुमको (अल्लाह के अ़लावा किसी और की इबादत करने की सूरत में) साफ़-साफ़ डराता हूँ, मैं तुम्हारे हक़ में एक बड़े तकलीफ़ देने वाले दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा करता हूँ। **(26)** सो उनकी क़ौम में जो काफ़िर सरदार थे, वे (जवाब में) कहने लगे कि हम तो तुमको अपने ही जैसा आदमी देखते हैं, और तुम्हारी पैरवी उन्हीं लोगों ने की है जो हममें बिलकुल कम दर्जे के और हक़ीर हैं, (जिनकी अ़क़्ल अक्सर कम होती है, फिर वह पैरवी भी महज़) सरसरी राय से (हुई है) और हम तुम लोगों में (यानी तुममें और मुसलमानों में) कोई बात अपने से ज़्यादा भी नहीं पाते, बल्कि हम तुमको (बिलकुल) झूठा समझते हैं। **(27)** (हज़रत नूह ने) फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! भला यह तो बतलाओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर (क़ायम) हूँ, (जिससे मेरी नुबुव्वत साबित होती है) और उसने मुझको अपने पास से रहमत (यानी नुबुव्वत) अ़ता फ़रमाई हो, फिर वह (नुबुव्वत या उसकी हुज्जत) तुमको न सूझती हो, तो (मैं क्या करूँ, मजबूर हूँ) क्या हम इस (दावे या दलील) को तुम्हारे गले मढ़ दें, और तुम उससे नफ़रत किए चले जाओ।[6] **(28)** और (इतनी बात और भी फ़रमाई कि) ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कुछ माल नहीं माँगता, मेरा मुआ़वज़ा तो सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मैं तो इन ईमान वालों को निकालता नहीं (क्योंकि) ये लोग अपने रब के पास (इज़्ज़त व मक़बूलियत के साथ) जाने वाले हैं, लेकिन वाक़ई मैं तुम लोगों को देखता हूँ कि (ख़्वाह-मख़्वाह) की जहालत कर रहे हो, (और बेढंगी बातें कर रहे हो)। **(29)** और ऐ मेरी क़ौम! (मान लो) अगर मैं उनको निकाल भी दूँ तो (यह बतलाओ) मुझको ख़ुदा की पकड़ से कौन बचा लेगा। क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते?[7] **(30)** और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के (तमाम) ख़ज़ाने हैं, और न मैं (यह कहता हूँ कि मैं) तमाम ग़ैब की बातें जानता हूँ, और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और जो लोग तुम्हारी निगाहों में हक़ीर हों, मैं उनके मुताल्लिक़ (तुम्हारी तरह) यह नहीं कह सकता कि अल्लाह हरगिज़ उनको सवाब न देगा, उनके दिल में जो कुछ हो उसको अल्लाह ही ख़ूब जानता है, मैं तो (अगर ऐसी बात कह दूँ तो) उस सूरत में सितम ही कर दूँ।[8] **(31)** वे लोग कहने लगे कि ऐ नूह! तुम

(पृष्ठ 402 का शेष) तौहीद और रिसालत दोनों साबित हो गईं।

2. यानी दुनिया ही में उन आमाल के बदले में उनको नेकनामी, सेहत, ज़िन्दगी की फ़राग़त, माल व औलाद की ज़्यादती वग़ैरह देदी जाती हैं।

3. इस आयत का यह मतलब नहीं कि कुफ़्फ़ार की नीयत दुनिया के अ़लावा कुछ नहीं होती, बल्कि उनमें जो ऐसे होते हैं कि उनकी नीयत सिवाय दुनिया के कुछ भी न हो, इस आयत में उनका बयान है।

4. यानी उसका आ़जिज़ कर देने वाला होना, जो कि अ़क़्ली दलील है।

5. यह दलील नक़्ली है। ग़रज़ क़ुरआन के सच्चा व सही होने के लिए दोनों दलीलें मौजूद हैं।

6. यानी उसकी तौहीद का, उसके रसूल की रिसालत का और उसके कलाम यानी क़ुरआन का इनकार करे।

7. एक अपने काफ़िर होने की, एक दूसरों को काफ़िर बनाने की कोशिश करने की।

1. यह तो अन्जाम होगा काफ़िरों का, आगे मुसलमानों का अन्जाम ज़िक्र किया गया है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 406 पर)**

इज़ल्-लमिनज़्ज़ालिमीन **(31)** क़ालू या नूहु क़द् जादल्तना फ़-अक्सर्-त जिदालना फ़अ्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन **(32)** क़ा-ल इन्नमा यअ्तीकुम् बिहिल्लाहु इन् शा-अ व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन **(33)** व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्स-ह लकुम् इन् कानल्लाहु युरीदु अंय्युग्वि-यकुम्, हु-व रब्बुकुम्, व इलैहि तुर्जअून **(34)** अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् इनिफ़्तरैतुहू फ़-अ़लय्-य इज्रामी व अ-न बरीउम्-मिम्मा तुज्रिमून **(35)** ❖

व ऊहि-य इला नूहिन् अन्नहू लंय्युअ्मि-न मिन् क़ौमि-क इल्ला मन् क़द् आम-न फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यफ़्अ़लून **(36)** वस्नअ़िल्-फ़ुल्-क बिअअ्युनिना व वह्यिना व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू इन्नहुम् मुग़्रक़ून **(37)** व यस्-नअुल्फ़ुल्-क, व कुल्लमा मर्-र अ़लैहि म-लउम्मिन् क़ौमिही सख़िरू मिन्हु, क़ा-ल इन् तस्ख़रू मिन्ना फ़-इन्ना नस्ख़रु मिन्कुम् कमा तस्ख़रून **(38)** फ़सौ-फ़ तअ्लमू-न मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ाबुम् मुक़ीम **(39)** हत्ता इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु क़ुल्नह्मिल् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्-ल-क इल्ला मन् स-ब-क़ अ़लैहिल्-क़ौलु व मन् आम-न, व मा आम-न म-अ़हू इल्ला क़लील **(40)** व क़ालर्-कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन्-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्रहीम **(41)** व हि-य तज्री बिहिम् फ़ी मौजिन् कल्जिबालि, व नादा नूहु-निब्नहू व

هود ١١ — ٢٠٤ — وما من دابة ١٢

أَنفُسِهِمْ ۖ إِنِّي إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالُوا يَا نُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا
فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٢﴾
قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ اللَّهُ إِن شَاءَ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾ وَ
لَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ اللَّهُ
يُرِيدُ أَن يُغْوِيَكُمْ ۚ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ يَقُولُونَ
افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا
تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾ وَأُوحِيَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَن يُؤْمِنَ مِن قَوْمِكَ
إِلَّا مَن قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ
الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ
إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن
قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنكُمْ
كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ
وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ
التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ
إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۚ وَمَا آمَنَ مَعَهُ
إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا

منزل ٣

❖ रु. 3/11/3

हमसे बहस कर चुके, फिर बहस भी बहुत कर चुके, सो (अब हम बहस-वहस नहीं करते) जिस चीज़ से तुम हमको धमकाया करते हो (कि अज़ाब आ जाएगा) वह हमारे सामने ले आओ, अगर तुम सच्चे हो। **(32)** उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उसको तुम्हारे सामने लाएगा, बशर्तेकि उसको मन्ज़ूर हो, और (उस वक़्त फिर) तुम उसको आजिज़ न कर सकोगे। **(33)** और मेरी ख़ैर-ख़्वाही तुम्हारे काम नहीं आ सकती, चाहे मैं तुम्हारी (कैसी ही) ख़ैर-ख़्वाही करना चाहूँ, जबकि अल्लाह ही को तुम्हारा गुमराह करना मन्ज़ूर हो,[1] वही तुम्हारा मालिक है और उसी के पास तुमको जाना है। **(34)** क्या ये लोग कहते हैं कि उन्होंने (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने, अल्लाह अपनी पनाह में रखे) यह (क़ुरआन) घड़ लिया है। आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि अगर (मान लो कि) मैंने घड़ा होगा तो मेरा (यह) जुर्म मुझपर आयद होगा और तुम मेरे जुर्म से बरी रहोगे, और मैं तुम्हारे इस जुर्म से बरी रहूँगा।[2] **(35)** ❖

और नूह (अ़लैहिस्सलाम) के पास वह्य भेजी गई कि सिवाय उनके जो (इस वक़्त तक) ईमान ला चुके हैं, और कोई (नया शख़्स) तुम्हारी क़ौम में से ईमान न लाएगा, सो जो कुछ ये लोग (कुफ़्र, तकलीफ़ देना और हँसी मज़ाक़) कर रहे हैं। **(36)** इसपर कुछ ग़म न करो। और तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म से कश्ती तैयार कर लो,[3] और मुझसे काफ़िरों के बारे में कुछ गुफ़्तगू मत करना, वे सब ग़र्क़ किए जाएँगे।[4] **(37)** और वे कश्ती तैयार करने लगे, और जब कभी उनकी क़ौम के किसी गिरोह के सरदार का उनपर गुज़र होता तो उनसे हँसी करते। आप फ़रमाते कि अगर तुम हमपर हँसते हो तो हम तुमपर हँसते हैं, जैसा कि तुम (हमपर) हँसते हो।[5] **(38)** सो अभी तुमको मालूम हुआ जाता है कि वह कौन-सा शख़्स है जिसपर ऐसा अ़ज़ाब आया चाहता है जो उसको रुस्वा कर देगा, और उसपर हमेशा का अ़ज़ाब नाज़िल होगा। **(39)** यहाँ तक कि जब हमारा (अ़ज़ाब का) हुक्म (क़रीब) आ पहुँचा और तन्दूर (यानी ज़मीन से पानी) उबलना शुरू हुआ, हमने (नूह से) फ़रमाया कि हर एक (क़िस्म) में से (एक-एक नर और एक-एक मादा यानी) एक जोड़ा, यानी दो अ़दद उसपर चढ़ा लो,[6] और अपने घर वालों को भी, उसको छोड़कर जिसपर हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है, और दूसरे ईमान वालों को भी (सवार कर लो) और सिवाय थोड़े से आदमियों के उनके साथ (यानी उनपर) कोई ईमान न लाया था। **(40)** और (नूह ने) फ़रमाया कि इस कश्ती में सवार हो जाओ, इसका

(पृष्ठ 404 का शेष) 2. यानी फ़रमाँबरदारी और आजिज़ी दिल में पैदा की।

3. यह दोनों के अन्जाम का फ़र्क़ बयान हो गया। आगे मौजूदा फ़र्क़ की मिसाल है जिसपर अन्जाम का फ़र्क़ मुरत्तब होता है।

4. यही हालत काफ़िर और मुसलमान की है कि पहला हिदायत से बहुत दूर है और दूसरा हिदायत से मौसूफ़ है। यानी हिदायत पाए हुए है।

5. यानी इसमें तरद्दुद की गुन्जाइश ही नहीं, बिलकुल ज़ाहिर है।

6. मतलब यह कि तुम्हारा यह कहना कि जी को नहीं लगती, महज़ यह समझना है कि नुबुव्वत और बशरीयत एक जगह जमा नहीं हो सकते, जबकि तुम्हारे इस तरह का अक़ीदा रखने की तुम्हारे पास कोई दलील नहीं, और मेरे पास इन दोनों के जमा होने की दलील मौजूद है, यानी मोजिज़ा वग़ैरह, न कि किसी की पैरवी। इससे इसका जवाब भी हो गया कि उनकी इत्तिबा हुज्जत नहीं, लेकिन दलील से नतीजा निकालना ग़ौर व फ़िक्र पर मौक़ूफ़ है, तुम ग़ौर व फ़िक्र करते नहीं। और यह मेरे बस से बाहर है।

7. इस तक़रीर में उनके तमाम शुब्हात का जवाब हो गया, लेकिन आगे उन सब जवाबों का पूरा करने वाला हिस्सा है। यानी जब मेरी नुबुव्वत दलील से साबित है तो अव्वल तो दलील के सामने किसी चीज़ का बईद होना कोई चीज़ नहीं, फिर यह कि वह बईद भी नहीं, अलबत्ता अगर मैं किसी अ़जीब व ग़रीब मामले का दावा करता तो इनकार व मुहाल समझना भी कोई बईद न था, अगरचे दलील के बाद वह भी सुने जाने के क़ाबिल नहीं। अलबत्ता अगर दलील भी नामुम्किन मालूम होती हो तो फिर वाजिब है, लेकिन मैं तो किसी ऐसे अ़जीब मामले का दावा नहीं करता।

8. क्योंकि बेदलील दावा करना गुनाह की बात है।

1. मतलब यह कि जब तुम ही अपनी बदक़िस्मती से अपने लिए नफ़ा हासिल करना और नुक़सान से न बचना चाहो तो मेरे चाहने से क्या होता है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 408 पर)**

का-न फ़ी मअ़्ज़िलिंय्-या बुनय्यर्-कब् म-अ़ना व ला तकुम् म-अ़ल्- काफ़िरीन **(42)** क़ा-ल स-आवी इला ज-बलिंय्यअ़्सिमुनी मिनल्मा-इ, क़ा-ल ला आ़सिमल्यौ-म मिन् अम्रिल्लाहि इल्ला मर्रहि-म व हा-ल बैनहुमल्-मौजु फ़का-न मिनल्- मुग़्रक़ीन **(43)** व क़ी-ल या अर्ज़ुब्लई मा-अकि व या समा-उ अक़्लिई व ग़ीज़ल्-मा-उ व क़ुज़ियल्-अम्रु वस्तवत् अ़लल्-जूदिय्यि व क़ी-ल बुअ़्दल् लिल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन ◆ **(44)** व नादा नूहुर्-रब्बहू फ़क़ा-ल रब्बि इन्नब्नी मिन् अह़्ली व इन्-न वअ़्द-कल्-हक़्क़ु व अन्-त अह़्कमुल्-हाकिमीन **(45)** क़ा-ल या नूहु इन्नहू लै-स मिन् अह़्लि-क इन्नहू अ़-मलुन् ग़ैरु सालिहिन् फ़ला तस्अल्नि मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन्, इन्नी अअ़िज़ु-क अन् तकू-न मिनल्- जाहिलीन **(46)** क़ा-ल रब्बि इन्नी अऊज़ु बि-क अन् अस्अ-ल-क मा लै-स ली बिही अ़िल्मुन्, व इल्ला तग़्फ़िर् ली व तर्हम्नी अकुम् मिनल्-ख़ासिरीन **(47)** क़ी-ल या नूहुह्बित् बिसलामिम्-मिन्ना व ब-रकातिन् अ़लै-क व अ़ला उ-ममिम् मिम्-मम्म-अ़-क, व उ-ममुन् सनुमत्तिअ़ुहुम् सुम्-म यमस्सुहुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम **(48)** तिल्-क मिन् अम्बाइल्-ग़ैबि नूहीहा इलै-क मा कुन्-त तअ़्लमुहा अन्-त व ला क़ौमु-क मिन् क़ब्लि हाज़ा, फ़स्बिर्, इन्नल् आ़क़ि-ब-त लिल्मुत्तक़ीन **(49)** ❖

هود ١١ — ٢٠٥ — وما من دآبة ١٢

إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ
وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَا بُنَيَّ ارْكَب مَّعَنَا
وَلَا تَكُن مَّعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَآوِي إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِي
مِنَ الْمَاءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَن رَّحِمَ
وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ﴿٤٣﴾ وَقِيلَ يَا أَرْضُ
ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَا سَمَاءُ أَقْلِعِي وَغِيضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ
وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾ وَ
نَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ
الْحَقُّ وَأَنتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يَا نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ
إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ
إِنِّي أَعِظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ
أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُن مِّنَ
الْخَاسِرِينَ ﴿٤٧﴾ قِيلَ يَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ
مِّمَّن مَّعَكَ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ
مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ
مِن قَبْلِ هَٰذَا فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾ وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ

منزل ٣

चलना और ठहरना अल्लाह ही के नाम से है, यक़ीनन मेरा रब मग़्फ़िरत करने वाला (है), रहीम है। **(41)** और वह कश्ती उनको लेकर पहाड़ जैसी लहरों में चलने लगी, और नूह ने अपने (एक सगे या सौतेले) बेटे को पुकारा, और वह अलग मक़ाम पर था,[1] कि ऐ मेरे (प्यारे) बेटे! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ मत हो।[2] **(42)** वह कहने लगा कि मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह ले लूँगा जो मुझको पानी से बचा लेगा, (नूह ने) फ़रमाया कि आज अल्लाह के हुक्म (यानी क़हर से) कोई बचाने वाला नहीं, लेकिन जिसपर वही रहम करे, और दोनों के बीच में एक मौज "यानी लहर" आड़ हो गई, पस वह भी दूसरे काफ़िरों की तरह ग़र्क़ हो गया। **(43)** और हुक्म हो गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल जा, और ऐ आसमान थम जा, और पानी घट गया और क़िस्सा ख़त्म हुआ, और वह (कश्ती) जूदी पर आ ठहरी, और कह दिया गया कि काफ़िर लोग रहमत से दूर।[3] ◆ **(44)** और नूह ने अपने रब को पुकारा और अ़र्ज़ किया कि मेरा यह बेटा मेरे घर वालों में से है, और आपका वायदा बिलकुल सच्चा है, और आप हाकिमों के हाकिम हैं।[4] **(45)** (अल्लाह तआ़ला ने) इरशाद फ़रमाया कि ऐ नूह! यह शख़्स तुम्हारे घर वालों में से नहीं, यह तबाहकार है। सो मुझसे ऐसी चीज़ की दरख़्वास्त मत करो जिसकी तुमको ख़बर नहीं, मैं तुमको नसीहत करता हूँ कि तुम नादान न बन जाओ। **(46)** उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैं इस (बात) से आपकी पनाह माँगता हूँ कि आपसे ऐसे मामले की दरख़्वास्त करूँ जिसकी मुझको ख़बर न हो, और अगर आप मेरी मग़्फ़िरत न फ़रमाएँगे और मुझपर रहम न फ़रमाएँगे तो मैं बिलकुल ही तबाह हो जाऊँगा। **(47)** कहा गया कि ऐ नूह! उतरो हमारी तरफ़ से सलाम और बरकतें लेकर जो तुमपर नाज़िल होंगी, और उन जमाअ़तों पर जो कि तुम्हारे साथ हैं, और बहुत-सी ऐसी जमाअ़तें भी होंगी कि उनको हम चन्द दिन की ऐश देंगे, फिर उनपर हमारी तरफ़ से सख़्त सज़ा वाक़ेअ़ होगी।[5] **(48)** यह क़िस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जिसको हम वह्य के ज़रिये से आपको पहुँचाते हैं, इसको इससे पहले न आप जानते थे और न आपकी क़ौम,[6] सो सब्र कीजिए, यक़ीनन नेक अन्जाम होना

(पृष्ठ 406 का शेष) **2.** यह आख़िरी दर्जे का जवाब है। और असल जवाब वह है कि इस झूठ का झूठ होना साबित कर दिया जाए, जैसा कि इसी सूरः के दूसरे रुकूअ़ में जवाब दिया है, कि आप कह दीजिए कि तुम इस जैसी दस सूरतें बना लाओ लेकिन जो शख़्स दलील में न बहस कर सके और न तसलीम करे, अख़ीर दर्जे में यही कहा जाता है कि ख़ैर भाई जैसा मैंने किया होगा, मैं भुगतूँगा, और जैसा तुम कर रहे हो तुम भुगतोगे।

3. यानी तुम उस तूफ़ान से बचने के लिए कश्ती तैयार कर लो, कि उसके ज़रिये से तुम और ईमान वाले महफ़ूज़ रहोगे।

4. यानी उनके लिए यह क़तई तौर पर तजवीज़ हो चुका है तो उनकी सिफ़ारिश बेकार होगी।

5. कि अ़ज़ाब ऐसा नज़दीक आ पहुँचा है और तुमको हँसी सूझ रही है। हम इसपर हँसते हैं।

6. हर क़िस्म के जानवरों में से जो कि इनसान के कारामद हैं, और पानी में ज़िन्दा नहीं रह सकते।

1. उसका नाम किनआ़न था, वह बावजूद तंबीह के ईमान न लाया और ईमान न लाने की वजह से कश्ती में सवार न किया गया था।

2. यानी कुफ़्र को छोड़ दे ताकि ग़र्क़ होने से बच जाए।

3. इससे मालूम हुआ कि तूफ़ान का पानी पहाड़ से ऊँचा था, और क़िस्सा ख़त्म होने में सब बातें आ गईं, नूह अ़लैहिस्सलाम की नजात, काफ़िरों का ग़र्क़ होना और तूफ़ान का ख़त्म हो जाना। और 'काफ़िर लोग रहमत से दूर' शायद इसलिए फ़रमाया गया हो कि इबरत ताज़ा हो जाए कि कुफ़्र का यह वबाल है, ताकि आइन्दा आने वाले इससे बचे रहें।

4. इस गुज़ारिश का खुलासा उसके मोमिन होने के लिए दुआ़ थी।

5. नूह अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से को ख़त्म करके क़िस्से के फ़ायदों में से दो फ़ायदे बयान फ़रमाते हैं, अव्वल मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत पर दलालत करना, दूसरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तसल्ली देना।

6. इस एतिबार से ग़ैब था और सिवाय वह्य के इल्म के दूसरे सब असबाब यक़ीनन नापैद हैं, पस साबित हो गया कि आपको वह्य के ज़रिये से मालूम हुआ है, और यही नुबुव्वत है। लेकिन ये लोग नुबुव्वत के साबित होने के बाद भी आपसे मुख़ालफ़त करते हैं।

व इला आदिन् अख़ाहुम् हूदन्, का़-ल या कौ़मिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, इन् अन्तुम् इल्ला मुफ़्तरून **(50)** या कौ़मि ला अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लज़ी फ़-त-रनी, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(51)** व या कौ़मिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युर्सिलिस्समा-अ अ़लैकुम् मिद्रारंव्-व यज़िद्कुम् क़ुव्व-तन् इला क़ुव्वतिकुम् व ला त-तवल्लौ मुज्रिमीन **(52)** का़लू या हूदु मा जिअ्तना बि-बय्यि-नतिंव्-व मा नह्नु बितारिकी आलि-हतिना अ़न् कौ़लि-क व मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन **(53)** इन्नक़ूलु इल्लअ्-तरा-क बअ्ज़ु आलि-हतिना बिसूइन्, का़-ल इन्नी उश्हिदुल्ला-ह वश्हदू अन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्रिकून **(54)** मिन् दूनिही फ़कीदूनी जमीअ़न् सुम्-म ला तुन्ज़िरून **(55)** इन्नी तवक्कल्तु अ़लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम्, मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व आख़िज़ुम् बिनासि-यतिहा, इन्-न रब्बी अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(56)** फ़-इन् तवल्लौ फ़-क़द् अब्लग़्तुकुम् मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम्, व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी कौ़मन् ग़ैरकुम् व ला तज़ुर्रूनहू शैअन्, इन्-न रब्बी अ़ला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ **(57)** व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना हूदंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व नज्जैनाहुम् मिन् अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ **(58)** व तिल्-क आ़दुन् ज-हदू बिआयाति रब्बिहिम् व अ़सौ रुसु-लहू वत्त-बअ़ू अम्-र कुल्लि जब्बारिन् अ़नीद **(59)** व उत्बिअ़ू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या

هود ١١ ٢٠٦ وما من دابة ١٢

هُودًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥٓ ۖ إِنْ أَنتُمْ
إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ يَٰقَوْمِ لَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى
ٱلَّذِى فَطَرَنِىٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾ وَيَٰقَوْمِ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ ثُمَّ
تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ
قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا۟ مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا۟ يَٰهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا
نَحْنُ بِتَارِكِىٓ ءَالِهَتِنَا عَن قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾
إِن نَّقُولُ إِلَّا ٱعْتَرَىٰكَ بَعْضُ ءَالِهَتِنَا بِسُوٓءٍ ۗ قَالَ إِنِّىٓ أُشْهِدُ
ٱللَّهَ وَٱشْهَدُوٓا۟ أَنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِن دُونِهِۦ ۖ فَكِيدُونِى
جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ﴿٥٥﴾ إِنِّى تَوَكَّلْتُ عَلَى ٱللَّهِ رَبِّى وَرَبِّكُم ۚ
مَّا مِن دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ ءَاخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَآ ۚ إِنَّ رَبِّى عَلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾
فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّآ أُرْسِلْتُ بِهِۦٓ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّى
قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُۥ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ رَبِّى عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ
حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾ وَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَٰهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا۟
بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا۟ رُسُلَهُۥ وَٱتَّبَعُوٓا۟ أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾
وَأُتْبِعُوا۟ فِى هَٰذِهِ ٱلدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۗ أَلَآ إِنَّ عَادًا

منزل

मुत्तक़ियों के लिए है। **(49)** ❖

और हमने आ़द की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (होने के क़ाबिल) नहीं, तुम (इस बुत-परस्ती के एतिक़ाद में) बिलकुल झूठ घड़ने वाले हो। **(50)** ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कुछ मुआ़वज़ा नहीं माँगता, मेरा मुआ़वज़ा तो सिर्फ़ उस (अल्लाह) के ज़िम्मे है जिसने मुझको पैदा किया, फिर क्या तुम नहीं समझते।[1] **(51)** और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपने गुनाह अपने रब से माफ़ कराओ, फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो,[2] वह तुम पर ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुमको और क़ुव्वत देकर तुम्हारी क़ुव्वत में तरक़्क़ी कर देगा, और मुज्रिम रहकर मुँह मत फेरो। **(52)** उन लोगों ने जवाब दिया कि ऐ हूद! आपने हमारे सामने कोई दलील तो पेश नहीं की, और हम आपके कहने से तो अपने माबूदों को छोड़ने वाले नहीं, और हम किसी तरह आपका यक़ीन करने वाले नहीं। **(53)** हमारा क़ौल तो यह है कि हमारे माबूदों में से किसी ने आपको किसी ख़राबी में मुब्तला कर दिया है। (हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मैं (ऐलानिया) अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी (सुन लो और) गवाह रहो कि मैं उन चीज़ों से बेज़ार हूँ जिनको तुम ख़ुदा के सिवा शरीक क़रार देते हो। **(54)** सो तुम सब मिलकर मेरे साथ दाव-घात कर लो, फिर मुझको ज़रा भी मोहलत न दो। **(55)** मैंने अल्लाह पर भरोसा कर लिया है, जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है, जितने (रू-ए-ज़मीन पर) चलने वाले हैं सबकी चोटी उसने पकड़ रखी है।[3] यक़ीनन मेरा रब सीधे रास्ते पर है।[4] **(56)** फिर अगर तुम फिरे रहोगे तो मैं तो जो पैग़ाम देकर मुझको भेजा गया है, वह तुमको पहुँचा चुका हूँ और तुम्हारी जगह मेरा रब दूसरे लोगों को (ज़मीन में आबाद कर) देगा और उसका तुम कुछ नुक़सान नहीं कर रहे हो, यक़ीनन मेरा रब हर चीज़ की हिफ़ाज़त और देखभाल करता है। **(57)** और जब (अ़ज़ाब के लिए) हमारा हुक्म पहुँचा तो हमने हूद को और जो उनके साथ ईमान-वाले थे, उनको अपनी इनायत से बचा लिया, और उनको एक सख़्त अ़ज़ाब से बचा लिया। **(58)** और यह (क़ौम) आ़द थी जिन्होंने अपने रब की आयतों का इनकार किया[5] और उसके रसूल का कहना न माना,[6] और मुकम्मल तौर पर ऐसे लोगों के कहने पर चलते रहे जो ज़ालिम (और) ज़िद्दी थे। **(59)** और इस दुनिया में भी लानत उनके साथ-साथ रही और क़ियामत के दिन भी।[7] ख़ूब सुन लो (क़ौमे) आ़द ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो रहमत से दूरी हुई आ़द को जो कि हूद की क़ौम थी। **(60)** ❖

---

1. नुबुव्वत को सही ठहराने वाली दलील मौजूद है और नुबुव्वत के सही होने में रुकावट यानी खुद-ग़रज़ी है ही नहीं, फिर नुबुव्वत में शुब्हा करने की क्या वजह?
2. यानी नेक अ़मल करो।
3. यानी सब उसके क़ब्ज़े में हैं, उसके हुक्म के बिना कोई कान नहीं हिला सकता।
4. पस तुम भी इस सही रास्ते को इख़्तियार करो, ताकि मक़बूल व क़रीबी हो जाओ।
5. यानी दलाइल और अहकाम का इनकार किया।
6. यह जो फ़रमाया कि आ़द ने रसूलों का कहना नहीं माना, हालाँकि उनके पास सिर्फ़ हूद अ़लैहिस्सलाम का तशरीफ़ लाना साबित है। वजह इसकी यह है कि पैग़म्बर तौहीद के मसले में सब मुत्तफ़िक़ हैं। जब हूद अ़लैहिस्सलाम का कहना न माना तो जितने पैग़म्बर उनसे पहले हो गुज़रे थे, बल्कि जो आइन्दा भी हुए उन सब ही की मुख़ालफ़त हुई।
7. चुनाँचे दुनिया में इसका असर हलाक करने का अ़ज़ाब था और आख़िरत में हमेशा का अ़ज़ाब होगा।

लअ्न-तंव्-व यौमल्-क़ियामति, अला इन्-न आ़दन् क-फ़रू रब्बहुम्, अला बुअ्दल् लिआ़दिन् क़ौमि हूद **(60)** ❖

व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् ✣ क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, हु-व अन्श-अकुम् मिनल्अर्ज़ि वस्तअ्म-रकुम् फ़ीहा फ़स्तग़्फ़िरूहु सुम्-म तूबू इलैहि, इन्-न रब्बी क़रीबुम् मुजीब **(61)** क़ालू या सालिहु क़द् कुन्-त फ़ीना मर्जुव्वन् क़ब्-ल हाज़ा अतन्हाना अन्-नअ्बु-द मा यअ्बुदु आबाउना व इन्नना लफ़ी शक्किम् मिम्मा तद्अूना इलैहि मुरीब **(62)** क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह्म-तन् फ़-मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् अ़सैतुहू, फ़मा तज़ीदू-ननी ग़ै-र तख़्सीर **(63)** व या क़ौमि हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आयतन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्खु-ज़कुम् अ़ज़ाबुन् क़रीब **(64)** फ़-अ़-क़रूहा फ़क़ा-ल तमत्तअू फ़ी दारिकुम् सलास-त अय्यामिन्, ज़ालि-क वअ्दुन् ग़ैरु मक्ज़ूब **(65)** फ़-लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना सालिहंव्- वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व मिन् ख़िज़्यि यौमिइज़िन्, इन्-न रब्ब-क हुवल् क़विय्युल्- अ़ज़ीज़ **(66)** व अ-ख़ज़ल्लज़ी-न ज़-लमुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन **(67)** कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा, अला इन्-न समू-द क-फ़रू रब्बहुम्, अला बुअ्दल् लि-समूद **(68)** ❖

وما من دآبة ١٢ — ٢٠٧ — هود ١١

كفروا ربهم ألا بعدا لعاد قوم هود ﴿٦٠﴾ وإلى ثمود أخاهم
صالحا قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره هو أنشأكم
من الأرض واستعمركم فيها فاستغفروه ثم توبوا إليه
إن ربي قريب مجيب ﴿٦١﴾ قالوا يا صالح قد كنت فينا مرجوا قبل
هذا أتنهانا أن نعبد ما يعبد آباؤنا وإننا لفي شك مما تدعونا
إليه مريب ﴿٦٢﴾ قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من
ربي وآتاني منه رحمة فمن ينصرني من الله إن عصيته
فما تزيدونني غير تخسير ﴿٦٣﴾ ويا قوم هذه ناقة الله لكم آية
فذروها تأكل في أرض الله ولا تمسوها بسوء فيأخذكم
عذاب قريب ﴿٦٤﴾ فعقروها فقال تمتعوا في داركم ثلاثة
أيام ذلك وعد غير مكذوب ﴿٦٥﴾ فلما جاء أمرنا نجينا صالحا
والذين آمنوا معه برحمة منا ومن خزي يومئذ إن
ربك هو القوي العزيز ﴿٦٦﴾ وأخذ الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا
في ديارهم جاثمين ﴿٦٧﴾ كأن لم يغنوا فيها ألا إن ثمود
كفروا ربهم ألا بعدا لثمود ﴿٦٨﴾ ولقد جاءت رسلنا إبراهيم
بالبشرى قالوا سلاما قال سلام فما لبث أن جاء بعجل

منزل

❖ रु. 5/11/5 ✣ व. लाज़िम

❖ रु. 6/8/6

और हमने समूद के पास उनके भाई सालेह को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। उसने तुमको ज़मीन (के माद्दे) से पैदा किया और उसने तुमको इसमें आबाद किया, तो तुम अपने गुनाह उससे माफ़ कराओ (यानी ईमान लाओ) फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो, बेशक मेरा रब क़रीब है, क़बूल करने वाला है। **(61)** वे लोग कहने लगे कि ऐ सालेह! तुम तो इससे पहले हममें होनहार थे, क्या तुम हमको उन चीज़ों की इबादत से मना करते हो जिनकी इबादत हमारे बड़े करते आए हैं, और जिस (दीन) की तरफ़ तुम हमको बुला रहे हो वाक़ई हम तो उसकी तरफ़ से बड़े शुब्हा में हैं। जिसने हमको फ़िक्र में डाल रखा है। **(62)** आपने फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! (भला) यह तो बताओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर हूँ और उसने मुझको अपनी तरफ़ से रहमत (यानी नुबुव्वत) अ़ता फ़रमाई हो, सो अगर मैं उसका कहना न मानूँ तो फिर मुझको ख़ुदा से कौन बचा लेगा, तुम तो सरासर मेरा नुक़सान ही कर रहे हो।[1] **(63)** और ऐ मेरी क़ौम! (तुम जो मोजिज़ा चाहते थे, सो) यह ऊँटनी है अल्लाह की जो तुम्हारे लिए दलील है। सो इसको छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरा करे, और इसको बुराई के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको फ़ौरी अ़ज़ाब आ पकड़े। **(64)** सो उन्होंने उसको मार डाला, तो (सालेह अ़लैहि. ने) फ़रमाया कि तुम अपने घरों में तीन दिन और बसर कर लो। और यह ऐसा वायदा है जिसमें ज़रा झूठ नहीं। **(65)** सो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने सालेह को और जो उनके साथ ईमान वाले थे उनको अपनी इनायत से बचा लिया। और उस दिन की बड़ी रुस्वाई से (बचा लिया), बेशक आपका रब ही बड़ी कुव्वत वाला, ग़ल्बे वाला है।[2] **(66)** और उन ज़ालिमों को एक नारा "यानी ज़ोर की चीख़" ने आ दबाया,[3] जिससे वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए, जैसे कभी उन घरों में बसे ही न थे। **(67)** ख़ूब सुन लो समूद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो रहमत से समूद को दूरी हुई। **(68)** ❖

और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर आए और उन्होंने सलाम किया। उन्होंने

---

1. यानी अगर ख़ुदा न करे क़बूल कर लूँ तो सिवाय नुक़सान के और क्या हाथ आए।
2. जिसको चाहे सज़ा दे, जिसको चाहे बचा ले।
3. वह जिबराईल अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ थी।

व ल-क़द् जाअत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा क़ालू सलामन्, क़ा-ल सलामुन् फ़मा लबि-स अन् जा-अ बिअिज्लिन् हनीज़ **(69)** फ़-लम्मा रआ ऐदि-यहुम् ला तसिलु इलैहि नकि-रहुम् व औज-स मिन्हुम् ख़ीफ़-तन्, क़ालू ला तख़फ् इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमि लूत **(70)** वम्र-अतुहू क़ाइ-मतुन् फ़-ज़हिकत् फ़-बश्शर्नाहा बि-इस्हा-क़ व मिंव्वरा-इ इस्हा-क़ यअ्क़ूब **(71)** क़ालत् या वैलता अ-अलिदु व अ-न अ़जूज़ुंव्-व हाज़ा बअ्ली शैख़न्, इन्-न हाज़ा लशैउन् अ़जीब **(72)** क़ालू अतअ्जबी-न मिन् अम्रिल्लाहि रह्मतुल्लाहि व ब-रकातुहू अ़लैकुम् अह्लल्बैति, इन्नहू हमीदुम्-मजीद **(73)** फ़-लम्मा ज़-ह-ब अ़न् इब्राहीमर्-रौअु व जाअत्हुल्-बुश्रा युजादिलुना फ़ी क़ौमि लूत **(74)** इन्-न इब्राही-म ल-हलीमुन् अव्वाहुम् मुनीब **(75)** या इब्राहीमु अअ्रिज़् अ़न् हाज़ा इन्नहू क़द् जा-अ अम्रु रब्बि-क व इन्नहुम् आतीहिम् अ़ज़ाबुन् ग़ैरु मर्दूद **(76)** व लम्मा जाअत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़र्अंव्-व क़ा-ल हाज़ा यौमुन् अ़सीब **(77)** व जा-अहू क़ौमुहू युह्रअू-न इलैहि, व मिन् क़ब्लु कानू यअ्मलूनस्-सय्यिआति, क़ा-ल या क़ौमि हा-उला-इ बनाती हुन्-न अत्हरु लकुम् फ़त्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ूनि फ़ी ज़ैफ़ी, अलै-स मिन्कुम् रजुलुर्रशीद **(78)** क़ालू ल-क़द् अ़लिम्-त मा लना फ़ी बनाति-क मिन् हक़्क़िन् व इन्न-क ल-तअ्लमु मा नुरीद **(79)** क़ा-ल लौ अन्-न ली बिकुम् क़ुव्वतन् औ आवी इला रुक्निन् शदीद **(80)** क़ालू या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बि-क

ومامن دابة ١٢ ٢٠٨ هود ١١

حَنِيذٍ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا رَاٰ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيفَةً ۚ قَالُوا لَا تَخَفْ اِنَّا اُرْسِلْنَا اِلٰى قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ
قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوبَ ﴿٧١﴾
قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوزٌ وَّهٰذَا بَعْلِى شَيْخًا ۗ اِنَّ هٰذَا
لَشَىْءٌ عَجِيبٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوٓا اَتَعْجَبِينَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ
بَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ۗ اِنَّهٗ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ
عَنْ اِبْرٰهِيمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِى قَوْمِ
لُوطٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيمَ لَحَلِيمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيبٌ ﴿٧٥﴾ يٰٓاِبْرٰهِيمُ اَعْرِضْ
عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيهِمْ عَذَابٌ
غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِىٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ
بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُونَ
اِلَيْهِ ۖ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّاٰتِ ۗ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ
بَنَاتِى هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُونِ فِى ضَيْفِى ۗ
اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِى
بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِى بِكُمْ
قُوَّةً اَوْ اٰوِىٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوا يٰلُوطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ

منزل ٣

(यानी इब्राहीम ने) भी सलाम किया, फिर देर नहीं लगाई कि एक तला हुआ बछड़ा लाए। **(69)** सो जब उन्होंने (यानी इब्राहीम ने) देखा कि उनके हाथ उस (खाने) तक नहीं बढ़ते तो उनसे घबराहट महसूस की, और उनसे दिल में डर गए। वे (फ़रिश्ते) कहने लगे डरो मत, हम क़ौमे लूत की तरफ़ भेजे गए हैं।[1] **(70)** और उनकी (यानी इब्राहीम की) बीवी खड़ी थीं, पस हँसीं। सो हमने उनको इसहाक़ की ख़ुशख़बरी दी, और इसहाक़ के बाद याक़ूब की। **(71)** कहने लगीं कि हाय ख़ाक पड़े, अब में बुढ़िया होकर बच्चा जनूँगी, और यह मेरे मियाँ हैं बिलकुल बूढ़े, वाक़ई यह भी अ़जीब बात है। **(72)** (फ़रिश्तों ने) कहा, क्या तुम खुदा के कामों में ताज्जुब करती हो, और (ख़ास कर) इस ख़ानदान के लोगो! तुम पर तो अल्लाह तआ़ला की (ख़ास) रहमत और उसकी बरकतें हैं, बेशक वह तारीफ़ के लायक़, बड़ी शान वाला है।[2] **(73)** फिर जब इब्राहीम का वह ख़ौफ़ ख़त्म हो गया और उनको ख़ुशी की ख़बर मिली तो हमसे लूत की क़ौम के बारे में झगड़ा करना शुरू किया।[3] **(74)** वाक़ई इब्राहीम बड़े बर्दाश्त करने वाले और नर्म दिल वाले थे। **(75)** ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो, तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुँचा है, और उनपर ज़रूर ऐसा अ़ज़ाब आने वाला है जो किसी तरह हटने वाला नहीं। **(76)** और जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के पास आए तो वह (यानी लूत अ़लैहिस्सलाम) उनकी वजह से ग़मगीन हुए और उनके आने के सबब तंगदिल हुए और कहने लगे कि आज का दिन बहुत भारी है। **(77)** और उनकी क़ौम उनके पास दौड़ी हुई आई, और वे पहले से नामाक़ूल हरकतें किया ही करते थे। वह (यानी लूत) फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी क़ौम! ये मेरी (बहू) बेटियाँ (जो तुम्हारे घरों में मौजूद) हैं,[4] वे तुम्हारे लिए (अच्छी)-ख़ासी हैं, सो अल्लाह तआ़ला से डरो और मेरे मेहमानों में मुझको रुस्वा और फ़ज़ीहत मत करो। क्या तुममें कोई भी (माक़ूल आदमी और) भला मानस नहीं? **(78)** वे लोग कहने लगे कि आपको तो मालूम है कि हमको आपकी (बहू) बेटियों की ज़रूरत नहीं,[5] और आपको तो मालूम है जो हमारा मतलब है। **(79)** वह (यानी लूत) फ़रमाने लगे, क्या ख़ूब होता अगर मेरा तुमपर कुछ ज़ोर चलता, या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह पकड़ता। **(80)** वे (फ़रिश्ते) कहने लगे कि ऐ लूत! हम तो आपके रब के

---

1. ताकि उनको कुफ़्र की सज़ा में हलाक करें।
2. वह बड़े से बड़ा काम कर सकता है। पस बजाय ताज्जुब के उसकी तारीफ़ और शुक्र में मश्ग़ूल हो।
3. सिफ़ारिश जो बहुत ज़्यादा इसरार और देखने में झगड़ा थी, और यह गुफ़्तगू फ़रिश्तों से हुई थी, मगर मक़सूद हक़ तआ़ला से अ़र्ज़ करना था। इसलिए 'युजादिलुना' 'यानी हमसे झगड़ा करना शुरू किया,' फ़रमाया।
4. "मेरी बेटियों" से मजाज़न उम्मत की औ़रतें मुराद हैं, क्योंकि नबी उम्मत के लिए बाप की जगह होता है, और हक़ीक़ी मायने इसलिए मुराद नहीं हो सकते कि आपकी दो या तीन बेटियाँ थीं, सो किस-किस से उनका निकाह कर देते, वे तो सारे इसी बीमारी में मुब्तला थे।
5. क्योंकि औ़रतों से हमें दिलचस्पी ही नहीं।

लंय्यसिलू इलै-क फ़-अस्रि बिअह्लि-क बिक़ित्अिम्-मिनल्लैलि व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-हदुन् इल्लम्र-अ-त-क, इन्न्हू मुसीबुहा मा असाबहुम्, इन्-न मौअ़ि-दहुमुस्सुब्हु, अलैसस्-सुब्हु बि-क़रीब **(81)** फ़-लम्मा जा-अ अम्रुना जअ़ल्ना आ़लि-यहा साफ़ि-लहा व अम्तर्ना अ़लैहा हिजा-रतम् मिन् सिज्जीलिम्-मन्ज़ूद **(82)** मुसव्व-मतन् अ़िन्-द रब्बि-क, व मा हि-य मिनज़्ज़ालिमी-न बि-बअ़ीद ● **(83)** ❖

व इला मद्य-न अख़ाहुम् शुअ़ैबन्, क़ा-ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, व ला तन्क़ुसुल्-मिक्या-ल वल्मीज़ा-न इन्नी अराकुम् बिख़ैरिंव्- व इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिम्-मुहीत **(84)** व या क़ौमि औफ़ुल्-मिक्या-ल वल्मीज़ा-न बिल्-क़िस्ति व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन **(85)** बक़िय्यतुल्लाहि ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनी-न, व मा अ-न अ़लैकुम् बि-हफ़ीज़ **(86)** क़ालू या शुअ़ैबु अ-सलातु-क तअ्मुरु-क अन् नत्रु-क मा यअ़्बुदु आबाउना औ अन्-नफ़्अ़-ल फ़ी अम्वालिना मा नशा-उ, इन्न-क ल-अन्तल् हलीमुर्रशीद **(87)** क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व र-ज़-क़नी मिन्हु रिज़्क़न् ह-सनन्, व मा उरीदु अन् उख़ालि-फ़कुम् इला मा अन्हाकुम् अ़न्हु, इन् उरीदु इल्लल्-इस्ला-ह मस्त-तअ़्तु, व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि, अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब **(88)** व या क़ौमि ला

لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ
اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ
الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾ مُّسَوَّمَةً
عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ
شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَلَا تَنْقُصُوا
الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿۸۴﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۸۵﴾
بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ
بِحَفِيْظٍ ﴿۸۶﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ
الرَّشِيْدُ ﴿۸۷﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ
اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ
اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۸۸﴾ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ

भेजे हुए (फ़रिश्ते) हैं, आप तक हरगिज़ उनकी रसाई न होगी, सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर चलिए, और तुममें से कोई (पीछे) फिरकर भी न देखे, (हाँ) मगर आपकी बीवी (न जाएगी) उसपर भी वही (आफ़त) आने वाली है जो और लोगों पर आएगी। उनके वायदे का वक़्त सुबह (का वक़्त) है, क्या सुबह (का वक़्त) क़रीब नहीं। **(81)** सो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने उस ज़मीन (को उलटकर उस) का ऊपर का तख़्ता तो नीचे कर दिया (और नीचे का ऊपर) और उस ज़मीन पर खंगर के पत्थर (झाँवे) "यानी जली हुई ईंटों के टुकड़े" बरसाना शुरू किए (जो) लगातार (गिर रहे थे), **(82)** जिनपर आपके रब के पास का ख़ास निशान भी था।[1] और ये (बस्तियाँ) उन ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं हैं। ● **(83)** ❖

और हमने मद्यन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और तुम नाप और तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको फ़राग़त की हालत में देखता हूँ[2] और मुझको तुमपर ऐसे दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है जो (क़िस्म-क़िस्म की मुसीबतों) का जामे होगा। **(84)** और ऐ मेरी क़ौम! तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ़ से, और लोगों का उनकी चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और ज़मीन में फ़साद करते हुए हद से नहीं निकलो। **(85)** अल्लाह का दिया हुआ जो कुछ बच जाए वह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है,[3] अगर तुमको यक़ीन आए, और मैं तुम्हारा पहरा देने वाला तो हूँ नहीं। **(86)** वे कहने लगे कि ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी पाकबाज़ी तुमको तालीम कर रही है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी परस्तिश "यानी पूजा और इबादत" हमारे बड़े करते आए हैं या (इस बात को छोड़ दें कि) हम अपने माल में जो चाहें तसर्रुफ़ करें। वाक़ई आप हैं बड़े अ़क़्लमन्द, दीन पर चलने वाले।[4] **(87)** शुऐब ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! भला यह बताओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर हूँ और उसने मुझको अपनी तरफ़ से एक उम्दा दौलत (यानी नुबुव्वत) दी हो, (तो फिर कैसे तब्लीग़ न करूँ) और मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारे बरख़िलाफ़ उन कामों को करूँ जिनसे मैं तुमको मना करता हूँ,[5] मैं तो इस्लाह "यानी सुधार" चाहता हूँ जहाँ तक मेरे बस में है, और मुझको जो कुछ तौफ़ीक़ हो जाती है सिर्फ़ अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मैं भरोसा रखता हूँ और उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ।[6] **(88)** और ऐ मेरी क़ौम! मेरी ज़िद "और मुख़ालफ़त" तुम्हारे लिए इसका सबब न हो

---

1. कन्करियों को जो ख़ास कहा सो दुर्रे मन्सूर में रिवायतें हैं जिनसे मालूम होता है कि उनपर कुछ ख़ास रंग और शक्ल के नक़्श बने थे जो दुनिया के पत्थरों में नहीं देखे जाते।
2. फिर तुमको नाप-तौल में कमी करने की क्या ज़रूरत पड़ी है, अगरचे हक़ीक़त में तो किसी को भी ज़रूरत नहीं होती।
3. क्योंकि हराम में बरकत नहीं अगरचे वह ज्यादा हो, और उसका अन्जाम जहन्नम है। और हलाल में बरकत होती है अगरचे वह कम हो। और उसका अन्जाम अल्लाह की रिज़ा है।
4. यानी जिन बातों से हमको मना करते हो उनमें कोई बुराई नहीं। हलीम व रशीद यानी बड़े अ़क़्लमन्द और दीन पर चलने वाले मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर कहा, जैसे बद-दीनों की आ़दत होती है दीनदारों के साथ छेड़ख़ानी करने की।
5. 'बरख़िलाफ़' से यही मुराद है कि तुमको और राह बतलाऊँ और खुद दूसरी राह पर चलूँ। मतलब यह है कि मेरी नसीहत महज़ ख़ैरख़्वाही व दिली दर्द के साथ है, जिसकी दलील यह है कि मैं तुमको वही बतलाता हूँ जो मैं अपनी ज़ात के लिये भी पसन्द करता हूँ।
6. खुलासा यह कि तौहीद व अ़दल के वाजिब होने पर दलाइल भी क़ायम और अल्लाह के हुक्म से उसकी तब्लीग़, और नसीहत करने वाला भी ऐसा हमदर्द और सुधारक, फिर भी नहीं मानते बल्कि उल्टी मुझसे उम्मीद रखते हो कि मैं कहना छोड़ दूँ। और चूँकि इस तक़रीर में दिलसोज़ी और सुधार की अपनी तरफ़ निस्बत है इसलिए 'व मा तौफ़ीक़ी......' फ़रमा दिया।

यज्रिमन्नकुम् शिक़ाक़ी अंय्युसी-बकुम् मिस्लु मा असा-ब क़ौ-म नूहिन् औ क़ौ-म हूदिन् औ क़ौ-म सालिहिन्, व मा क़ौमु लूतिम्-मिन्कुम् बि-बअ़ीद **(89)** वस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि, इन्-न रब्बी रहीमुंव्वदूद **(90)** क़ालू या शुअ़ैबु मा नफ़्क़हु कसीरम्-मिम्मा तक़ूलु व इन्ना ल-नरा-क फ़ीना जअ़ीफ़न्, व लौ ला रह्तु-क ल-रजम्ना-क व मा अन्-त अ़लैना बि-अ़ज़ीज़ **(91)** क़ा-ल या क़ौमि अ-रह्ती अ-अ़ज़्ज़ु अ़लैकुम् मिनल्लाहि, वत्तख़ज़्तुमूहु वरा-अकुम् ज़िहिरय्यन्, इन्-न रब्बी बिमा तअ़्मलू-न मुहीत **(92)** व या क़ौमिअ़्-मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन्, सौ-फ़ तअ़्लमू-न मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व मन् हु-व काज़िबुन्, वर्तक़िबू इन्नी म-अ़कुम् रक़ीब **(93)** व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना शुअ़ैबंव्-वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व अ-ख़ा-ज़तिल्-लज़ी-न ज़-लमुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन **(94)** कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा, अला बुअ़्दल् लिमद्-य-न कमा बअ़िदत् समूद **(95)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन **(96)** इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ़त्तबअ़ू अम्-र फ़िरऔ-न व मा अम्रु फ़िरऔ-न बि-रशीद **(97)** यक़्दुमु क़ौमहू यौमल्-क़ियामति फ़औ-र-दहुमुन्ना-र, व बिअ्सल् विर्दुल्-मौरूद **(98)** व उत्बिअ़ू फ़ी हाज़िही लअ़्-नतंव्-व यौमल्-क़ियामति, बिअ्सर्रिफ़्दुल् मर्फ़ूद **(99)** ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्क़ुरा नक़ुस्सुहू अ़लै-क मिन्हा क़ाइमुंव्-व हसीद **(100)** व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़मा

شقاقي أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح أو قوم هود
أو قوم صلح وما قوم لوط منكم ببعيد ﴿٨٩﴾ واستغفروا ربكم
ثم توبوا إليه إن ربي رحيم ودود ﴿٩٠﴾ قالوا يشعيب ما نفقه
كثيرا مما تقول وإنا لنرىك فينا ضعيفا ولولا رهطك
لرجمنك وما أنت علينا بعزيز ﴿٩١﴾ قال يقوم أرهطي أعز عليكم
من الله واتخذتموه وراءكم ظهريا إن ربي بما تعملون محيط ﴿٩٢﴾
ويقوم اعملوا على مكانتكم إني عامل سوف تعلمون من
يأتيه عذاب يخزيه ومن هو كذب وارتقبوا إني معكم
رقيب ﴿٩٣﴾ ولما جاء أمرنا نجينا شعيبا والذين آمنوا معه برحمة
منا وأخذت الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا في ديرهم
جثمين ﴿٩٤﴾ كأن لم يغنوا فيها ألا بعدا لمدين كما بعدت
ثمود ﴿٩٥﴾ ولقد أرسلنا موسى بآيتنا وسلطن مبين ﴿٩٦﴾ إلى
فرعون وملإيه فاتبعوا أمر فرعون وما أمر فرعون
برشيد ﴿٩٧﴾ يقدم قومه يوم القيمة فأوردهم النار وبئس
الورد المورود ﴿٩٨﴾ وأتبعوا في هذه لعنة ويوم القيمة بئس
الرفد المرفود ﴿٩٩﴾ ذلك من أنباء القرى نقصه عليك منها

जाए कि तुमपर भी उसी तरह की मुसीबतें आ पड़ें जैसी नूह की क़ौम, या हूद की क़ौम, या सालेह की क़ौम पर आ पड़ी थीं, और लूत की क़ौम तो (अभी) तुमसे (बहुत) दूर (ज़माने में) नहीं (हुई)। **(89)** और तुम अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो, बिला शुब्हा मेरा रब बड़ा मेहरबान (और) बड़ी मुहब्बत वाला है। **(90)** वे लोग कहने लगे कि ऐ शुऐब! बहुत-सी बातें तुम्हारी कही हुईं हमारी समझ में नहीं आतीं, और हम तुमको अपने में कमज़ोर देख रहे हैं। और अगर तुम्हारे ख़ानदान का पास न होता तो हम तुमको संगसार "यानी पत्थरों से मार-मारकर हलाक" कर चुके होते। और हमारी नज़र में तो तुम्हारी कुछ इज़्ज़त व क़द्र ही नहीं।[1] **(91)** (शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा ख़ानदान तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से भी ज़्यादा इज़्ज़त वाला है। और उसको तुमने पीठ पीछे डाल दिया, यक़ीनन मेरा रब तुम्हारे सब आमाल को घेरे में लिए हुए है। **(92)** और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी हालत पर अ़मल करते रहो, मैं भी (अपने तौर पर) अ़मल कर रहा हूँ। अब जल्द ही तुमको मालूम हुआ जाता है कि वह कौन शख़्स है जिसपर अ़ज़ाब आया चाहता है, जो उसको रुस्वा कर देगा। और वह कौन शख़्स है जो झूठा था, और तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।[2] **(93)** और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने शुऐब को और जो उनके साथ में ईमान वाले थे, उनको अपनी इनायत सेहत बचा लिया। और उन ज़ालिमों को एक सख़्त आवाज़ ने आ पकड़ा, सो अपने घरों के अन्दर औंधे गिरे रह गए (और मर गए)। **(94)** जैसे उन घरों में बसे ही न थे। ख़ूब सुन लो कि मद्‌यन को रहमत से दूरी हुई जैसा कि समूद रहमत से दूर हुए थे। **(95)** ❖

और हमने मूसा को अपने मोजिज़े और रोशन दलील देकर[3] **(96)** फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा। सो वे लोग फ़िरऔ़न की राय पर चलते रहे, और फ़िरऔ़न की राय कुछ सही न थी। **(97)** वह क़ियामत के दिन अपनी क़ौम के आगे-आगे होगा, फिर उनको दोज़ख़ में जा उतारेगा, और वह उतरने की बहुत ही बुरी जगह है, जिसमें ये लोग उतारे जाएँगे। **(98)** और इस (दुनिया) में भी लानत उनके साथ-साथ रही और क़ियामत के दिन भी,[4] बुरा इनाम है जो उनको दिया गया। **(99)** ये (तबाहशुदा) बस्तियों के बाज़ हालात थे, जिनको हम आपसे बयान करते हैं, (सो) बाज़ (बस्तियाँ) तो उनमें (अब भी) क़ायम हैं,[5] और बाज़ का बिलकुल ख़ात्मा हो गया। **(100)** और हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन उन्होंने ख़ुद ही अपने ऊपर

---

1. मतलब उनका यह था कि तुम हमको ये मज़ामीन मत सुनाओ, वरना तुम्हारी जान का ख़तरा है।

2. यानी तुम नुबुव्वत की दावत में मुझको झूठा कहते हो और हक़ीर समझते हो, तो अब मालूम हो जाएगा कि झूठ के जुर्म का करने वाला और ज़िल्लत की सज़ा का हक़दार कौन था, तुम या मैं। देखें अ़ज़ाब पड़ता है जैसा कि मैं कहता हूँ या अ़ज़ाब नहीं होता जैसा कि तुम्हारा गुमान है।

3. 'रोशन दलील' से मुराद या तो लाठी और चमकता हुआ हाथ है, जो उन नौ निशानियों में से हैं जो नवें पारे के पहले चौथाई पर ज़िक्र हुई हैं कि ये बड़ी हैं और या मूसा अ़लैहिस्सलाम की असरदार तक़रीर है जो आपने तौहीद से मुताल्लिक़ फ़िरऔ़न के सामने फ़रमाई।

4. चुनाँचे यहाँ क़हर से ग़र्क़ हुए और वहाँ दोज़ख़ नसीब होगी।

5. जैसे मिस्र कि फ़िरऔ़नियों के हलाक करने के बाद आबाद रहा।

अ़्गनत् अ़न्हुम् आलि-हतुहुमुल्लती यद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि मिन् शैइल्-लम्मा जा-अ अम्रु रब्बि-क, व मा ज़ादूहुम् ग़ै-र तत्बीब **(101)** व कज़ालि-क अख़्ज़ु रब्बि-क इज़ा अ-ख़ज़ल्-क़ुरा व हि-य ज़ालि-मतुन्, इन्-न अख़्ज़हू अलीमुन् शदीद **(102)** इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल् लिमन् ख़ा-फ़ अ़ज़ाबल्-आख़िरति, ज़ालि-क यौमुम्-मज्मूअुल्-लहुन्नासु व ज़ालि-क यौमुम्-मश्हूद **(103)** व मा नु-अख़्ख़िरुहू इल्ला लि-अ-जलिम् मअ़्दूद **(104)** यौ-म यअ्ति ला तकल्लमु नफ़्सुन् इल्ला बि-इज़्निही फ़-मिन्हुम् शक़िय्युंव्-व सअ़ीद **(105)** फ़-अम्मल्लज़ी-न शक़ू फ़फ़िन्नारि लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्-व शहीक़ **(106)** ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा-अ रब्बु-क, इन्-न रब्ब-क फ़अ़्आ़लुल्लिमा युरीद **(107)** व अम्मल्लज़ी-न सुअ़िदू फ़फ़िल्-जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा-अ रब्बु-क, अ़ताअन् ग़ै-र मज्ज़ूज़ **(108)** फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम् मिम्मा यअ़्बुदु हा-उला-इ मा यअ़्बुदू-न इल्ला कमा यअ़्बुदु आबाउहुम् मिन् क़ब्लु, व इन्ना लमुवफ़्फ़ूहुम् नसीबहुम् ग़ै-र मन्क़ूस **(109)** ❖

وما من دآبة ١٢ ٢١١ هود ١١

قَآئِمٌ وَّحَصِيدٌ ۝ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ
اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝ وَكَذٰلِكَ
اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ
شَدِيْدٌ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۚ ذٰلِكَ
يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا
لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ۝ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ
شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ
وَّشَهِيْقٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا
مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا
فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا
مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ
هٰٓؤُلَآءِ ۚ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۚ وَاِنَّا
لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ
وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ

منزل ٣

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ख़्तुलि-फ़ फ़ीहि, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम्, व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब **(110)** व इन्-न कुल्लल्-लम्मा लयुवफ़्फ़ियन्नहुम् रब्बु-क अअ़्मालहुम्, इन्नहू बिमा यअ़्मलू-न ख़बीर **(111)**

ज़ुल्म किया। सो उनके वे माबूद जिनको वे अल्लाह के अ़लावा पूजते थे उनको कुछ फ़ायदा न पहुँचा सके, जब आपके रब का हुक्म आ पहुँचा, और उल्टा उनको नुक़सान पहुँचाया।[1] **(101)** और आपके रब की पकड़ ऐसी ही है, जब वह किसी बस्ती पर पकड़ करता है जबकि वे ज़ुल्म किया करते हों। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक (और) सख़्त है।[2] **(102)** इन (वाक़िआ़त) में उस शख़्स के लिए बड़ी इबरत है जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरता हो।[3] वह ऐसा दिन होगा कि उसमें तमाम आदमी जमा किए जाएँगे, और वह (सबकी) हाज़िरी का दिन है। **(103)** और हम उसको सिर्फ़ थोड़ी मुद्दत के लिए मुल्तवी किए हुए हैं। **(104)** जिस वक़्त वह दिन आएगा, कोई शख़्स बिना उसकी (यानी ख़ुदा की) इजाज़त के बात तक न कर सकेगा। फिर उनमें बाज़े तो शक़ी "बदबख़्त" होंगे और बाज़े सईद "यानी नेकबख़्त" होंगे। **(105)** सो जो लोग शक़ी हैं वे तो दोज़ख़ में (ऐसे हाल से) होंगे कि उसमें उनकी चीख़-पुकार पड़ी रहेगी। **(106)** और हमेशा-हमेशा को उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं,[4] हाँ अगर उसके रब ही को (निकालना) मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है) आपका रब जो कुछ चाहे उसको पूरा कर सकता है।[5] **(107)** और रह गए वे लोग जो सईद हैं, सो वे जन्नत में होंगे और वे उसमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं। हाँ अगर आपके रबको (निकालना) मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है)[6] वह ख़त्म न होने वाला अ़तिया होगा। **(108)** सो जिस चीज़ की ये पूजा करते हैं उसके बारे में ज़रा शुब्हा न करना,[7] ये लोग भी उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप-दादा इबादत करते थे। और हम यक़ीनन उनका (अ़ज़ाब का) हिस्सा उनको (क़ियामत के दिन) पूरा-पूरा बिना किसी कमी के पहुँचा देंगे। **(109)** ❖

और हमने मूसा को किताब दी थी, सो उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया,[8] और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले मुक़र्रर हो चुकी है तो उनका फ़ैसला हो चुका होता, और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उनको तरद्दुद "यानी असमंजस" में डाल रखा है। **(110)** और यक़ीनन

1. यानी नुक़सान के सबब हुए कि उनकी पूजा की बदौलत सज़ा पाई।
2. उससे सख़्त तकलीफ़ पहुँचती है और उससे बच नहीं सकता।
3. सबक़ लेने की वजह ज़ाहिर है कि जब दुनिया का अ़ज़ाब ऐसा सख़्त है, हालाँकि यह बदला मिलने की जगह नहीं, तो आख़िरत का कैसा सख़्त अ़ज़ाब होगा जो कि बदला मिलने की जगह है।
4. यह मुहावरा है हमेशा रहने के लिए।
5. मगर बावजूद क़ुदरत के यह यक़ीनी बात है कि ख़ुदा कभी यह बात न चाहेगा, पस निकलना भी नसीब न होगा।
6. मगर यह यक़ीनी है कि ख़ुदा यह बात कभी न चाहेगा, पस उनके निकलने का भी कोई एहतिमाल और गुन्जाइश नहीं।
7. बल्कि यक़ीन रखना कि उनका यह अ़मल सज़ा को वाजिब करने वाला है, उसके बातिल होने की वजह से।
8. किसी ने माना किसी ने न माना, यह कोई आपके लिए नई बात नहीं हुई। पस आप ग़मगीन न हों।

फ़स्तक़िम् कमा उमिर्-त व मन् ता-ब म-अ-क व ला ततग़ौ, इन्नहू बिमा तअ्मलू-न बसीर **(112)** व ला तर्कनू इलल्लज़ी-न ज़-लमू फ़-तमस्सकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ सुम्-म ला तुन्सरून **(113)** व अक़िमिस्सला-त त-र-फ़यिन्नहारि व ज़ु-लफ़म् मिनल्लैलि, इन्नल्-ह-सनाति युज़्हिब्नस्- सय्यिआति, ज़ालि-क ज़िक्रा लिज़्ज़ाकिरीन **(114)** वस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन **(115)** फ़लौ ला का-न मिनल्क़ुरूनि मिन् क़ब्लिकुम् उलू बक़िय्यतिंय्यन्हौ-न अनिल्फ़सादि फ़िल्अर्ज़ि इल्ला क़लीलम् मिम्-मन् अन्जैना मिन्हुम् वत्त-बअल्लज़ी-न ज़-लमू मा उत्रिफ़ू फ़ीहि व कानू मुज्रिमीन **(116)** व मा का-न रब्बु-क लियुह्लिकल्- क़ुरा बिज़ुल्मिंव्-व अह्लुहा मुस्लिहून **(117)** व लौ शा-अ रब्बु-क ल-ज-अलन्ना-स उम्मतंव्-वाहि-दतंव्-व ला यज़ालू-न मुख़्तलिफ़ीन **(118)** इल्ला मर्रहि-म रब्बु-क, व लिज़ालि-क ख़-ल-क़हुम्, व तम्मत् कलि-मतु रब्बि-क ल-अम्ल-अन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अज्मअीन **(119)** व कुल्लन् नक़ुस्सु अलै-क मिन् अम्बाइर्रुसुलि मा नुसब्बितु बिही फ़ुआद-क व जाअ-क फ़ी हाज़िहिल्-हक़्क़ु व मौअि-ज़तुंव्-व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन **(120)** व क़ुल् लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनूनअ्मलू अला मकानतिकुम्, इन्ना आमिलून **(121)** वन्तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून **(122)** व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व

اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١١﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ
ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ
الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾
وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾ فَلَوْلَا كَانَ
مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ
فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى
بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ
اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ
وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ
الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَ
مَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا
عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ

सब-के-सब ऐसे ही हैं कि आपका रब उनको उनके आमाल का पूरा-पूरा हिस्सा देगा, वह यक़ीनन उनके आमाल की पूरी-पूरी ख़बर रखता है। **(111)** तो आप जिस तरह कि आपको हुक्म हुआ है मुस्तक़ीम रहिए, "यानी सही रास्ते पर क़ायम रहिए" और वे लोग भी जो (कुफ़्र से) तौबा करके आपके साथ में हैं, और दायरे से ज़रा मत निकलो, यक़ीनी तौर पर वह तुम सब के आमाल को ख़ूब देखता है। **(112)** और उन ज़ालिमों की तरफ़ मत झुको, कभी तुमको दोज़ख़ की आग लग जाए और ख़ुदा के सिवा कोई तुम्हारा साथ देने वाला न हो, फिर हिमायत तो तुम्हारी ज़रा भी न हो। **(113)** और आप नमाज़ की पाबन्दी रखिए, दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्सों में।[1] बेशक नेक काम मिटा देते हैं बुरे कामों को, यह बात एक नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। **(114)** और सब्र किया कीजिए कि अल्लाह तआला नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते। **(115)** जो उम्मतें तुमसे पहले हो गुज़री हैं उनमें ऐसे समझदार लोग न हुए जो कि (दूसरों को) मुल्क में फ़साद (यानी कुफ़्र व शिर्क) फैलाने से मना करते, सिवाय चन्द आदमियों के कि जिनको उनमें से हमने (अ़ज़ाब से) बचा लिया था।[2] और जो लोग नाफ़रमान थे वे नाज़ व नेमत में थे, उसी के पीछे पड़े रहे और अपराधों के आ़दी हो गए।[3] **(116)** और आपका रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को कुफ़्र के सबब हलाक कर दे और उनके रहने वाले सुधार में लगे हों। **(117)** और अगर आपके रब को मन्ज़ूर होता तो सब आदमियों को एक ही तरीक़े का (यानी सब को मोमिन) बना देते, और (आगे भी) हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे, **(118)** मगर जिसपर आपके रब की रहमत हो। और (इस इख़्तिलाफ़ का ग़म न कीजिए, क्योंकि) उसने (यानी अल्लाह तआ़ला ने) लोगों को इसी वास्ते पैदा किया है, और आपके रब की (यह) बात पूरी होगी कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इनसानों दोनों से भर दूँगा।[4] **(119)** और पैग़म्बरों के क़िस्सों में से हम ये सारे क़िस्से आपसे बयान करते हैं जिनके ज़रिये से हम आपके दिल को मज़बूती देते हैं, और उन (क़िस्सों) में आपके पास (ऐसा मज़मून) पहुँचा है, (जो ख़ुद भी) सही (है) और मुसलमानों के लिए नसीहत (है) और याद-दिहानी (है)।[5] **(120)** और जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए कि तुम अपनी हालत पर अ़मल करते रहो, हम भी अ़मल कर रहे हैं। **(121)** और तुम मुन्तज़िर रहो हम भी मुन्तज़िर हैं। **(122)** और

---

1. दिन के दो सिरों से मुराद बाज़ के नज़दीक फ़ज्र और अ़स्र है और बाज़ के नज़दीक इससे मुराद दिन के अव्वल व आख़िर के हिस्से हैं। अव्वल हिस्से में सुबह की नमाज़ है और आख़िर के हिस्से में ज़ोहर और अ़स्र। और रात के हिस्सों से मुराद मग़रिब और इशा का वक़्त। पस एक क़ौल पर इस आयत मे पाँचों नमाज़ें मुराद हैं और एक क़ौल पर सिवाय ज़ोहर के चार नमाज़ें, और ज़ोहर दूसरी आयत में ज़िक्र की गई है जो सूरः रूम में हैः 'व ही-न तुज़्हिरून.....'।

2. वे जैसे ख़ुद कुफ़्र व शिर्क से तौबा कर चुके थे औरों को भी मना करते रहते थे। और इन्हीं दोनों अ़मल की बरकत से वे अ़ज़ाब से बच गए थे। बाक़ी और लोग चूँकि ख़ुद ही कुफ़्र में मुब्तला थे और उन्होंने औरों को भी मना न किया, इसलिए उनपर अ़ज़ाब आया।

3. मतलब का ख़ुलासा यह कि नाफ़रमानी तो उनमें आ़म तौर पर रही और मना करने वाला कोई हुआ नहीं, इसलिए सब एक ही अ़ज़ाब में मुब्तला हुए। वरना कुफ़्र का अ़ज़ाब आ़म होता और फ़साद यानी ख़राबी और बिगाड़ का ख़ास। अब मना न करने की वजह से जो फ़सादी नहीं थे वे भी उन्हें में शरीक क़रार दिए गए। इसलिए जो अ़ज़ाब कुफ़्र व फ़साद के मजमूए पर नाज़िल हुआ वह भी सबके लिए आ़म रहा।

4. ख़ुद उसकी हिक्मत यह है कि जिस तरह मरहूमीन में रहमत की सिफ़त का ज़ुहूर हुआ, जिनपर ग़ज़ब किया गया उनमें ग़ज़ब की सिफ़त ज़ाहिर हो। फिर उस ज़ाहिर होने की हिक्मत या उस हिक्मत की हिक्मत अल्लाह ही को मालूम है। ग़रज़ इस ज़ाहिर होने की हिक्मत से बाज़ों का जहन्नम में जाना ज़रूरी और जहन्नम में जाने के लिए काफ़िरों का वजूद तक्वीनी तौर पर ज़रूरी। और काफ़िरों के वजूद के लिए इख़्तिलाफ़ लाज़िम। यह वजह है सबके मुसलमान न होने की।

5. क़िस्सों के बयान करने का यह दूसरा फ़ायदा हुआ, एक फ़ायदा नबी के लिए, दूसरा उम्मत के लिए।

फ़ायदाः हक़ ज़ाती सिफ़त है क़ुरआन की उन आयतों की जो क़िस्सों पर मुश्तमिल हैं, और नसीहत व याद-दिहानी उनकी इज़ाफ़ी सिफ़तें हैं, जिनमें एक हाकिम और एक डाँट-डपट करने वाला है।

इलैहि युर्जअुल्-अम्रु कुल्लुहू फ़अ्बुद्हु व तवक्कल् अ़लैहि, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (123) ❖

12 सूरतु यूसुफ़ 53

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7411 अक्षर, 1808 शब्द 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, तिल्-क आयातुल्-किताबिल् मुबीन (1) इन्ना अन्ज़ल्नाहु क़ुरआनन् अ़-रबिय्यल् लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून (2) नह्नु नक़ुस्सु अ़लै-क अह्स-नल्-क़-ससि बिमा औहैना इलै-क हाज़ल्-क़ुर्आ-न व इन् कुन्-त मिन् क़ब्लिही लमिनल्-ग़ाफ़िलीन (3) इज़् क़ा-ल यूसुफ़ु लि-अबीहि या अ-बति इन्नी रऐतु अ-ह-द अ़-श-र कौकबंव्-वश्शम्-स वल्क़-म-र रऐतुहुम् ली साजिदीन (4) क़ा-ल या बुनय्-य ला तक़्सुस् रुअ्या-क अ़ला इख़्वति-क फ़-यकीदू ल-क कैदन्, इन्नश्शैता-न

وما من دآبة ١٢ — ٢١٣ — يوسف ١٢

غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ
وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ
سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۤرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ
اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ
اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّىْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِىْ سٰجِدِيْنَ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ
رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ
الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا
عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ
لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ اِذْ قَالُوْا
لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّ اَبَانَا
لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ
وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ قَالَ قَاۗىِٕلٌ

منزل ٣

लिल्इन्सानि अ़दुव्वुम् मुबीन (5) व कज़ालि-क यज्तबी-क रब्बु-क व युअ़ल्लिमु-क मिन् तअ्वीलिल्- अहादीसि व युतिम्मु निअ्म-तहू अ़लै-क व अ़ला आलि यअ्क़ू-ब कमा अ-तम्महा अ़ला अ-बवै-क मिन् क़ब्लु इब्राही-म व इस्हा-क़, इन्-न रब्ब-क अ़लीमुन् हकीम (6) ❖

ल-क़द् का-न फ़ी यूसु-फ़ व इख़्वतिही आयातुल् लिस्सा-इलीन (7) इज़् क़ालू
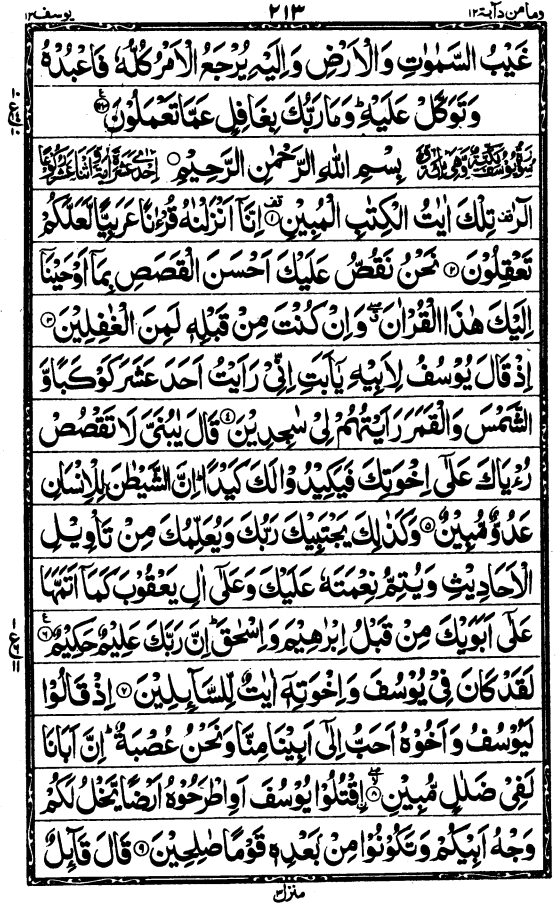
आसमानों और ज़मीन में जितनी ग़ैब की बातें हैं उनका इल्म ख़ुदा ही को है, और सब मामलात उसी की तरफ़ लौटाए जाएँगे। तो आप उसी की इबादत कीजिए और उसी पर भरोसा कीजिए, और आपका रब उन बातों से बेख़बर नहीं जो कुछ तुम (लोग) कर रहे हो। **(123)** ❖

12 सूरः यूसुफ़ 53

सूरः यूसुफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[1]अलिफ़-लाम-रा। ये आयतें हैं एक वाज़ेह किताब की। **(1)** हमने उसको उतारा है कुरआन अ़रबी (ज़बान का) ताकि तुम समझो। **(2)** हमने जो यह कुरआन आपके पास भेजा है, इसके ज़रिये से हम आपसे एक बड़ा उम्दा क़िस्सा बयान करते हैं, और इससे पहले आप बिलकुल बेख़बर थे।[2] **(3)** (वह वक़्त ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जब यूसुफ़ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा! मैंने ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद देखे हैं, उनको अपने सामने सज्दा करते हुए देखा है। **(4)** उन्होंने फ़रमाया कि बेटा! अपने इस ख़्वाब को अपने भाइयों के सामने बयान मत करना, पस वे तुम्हारे लिए कोई ख़ास तदबीर करेंगे। बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है। **(5)** और इसी तरह तुम्हारा रब तुमको चुनेगा और तुमको ख़्वाबों की ताबीर का इल्म देगा, और तुमपर और याक़ूब के ख़ानदान पर अपना इनाम पूरा करेगा जैसा कि इससे पहले तुम्हारे दादा-परदादा (यानी) इब्राहीम और इसहाक़ पर अपना इनाम पूरा कर चुका है, वाक़ई तुम्हारा रब बड़ा इल्म (व) हिक्मत वाला है।[3] **(6)** ❖

यूसुफ़ के और उनके भाइयों के क़िस्से में (ख़ुदा की क़ुदरत और आँ-हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत के) दलाइल मौजूद हैं, उन लोगों के लिए जो पूछते हैं।[4] **(7)** (वह वक़्त ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जबकि उनके भाइयों ने बातचीत की कि यूसुफ़ और उनका भाई हमारे बाप को हमसे ज़्यादा प्यारे हैं, हालाँकि हम एक जमाअ़त (की जमाअ़त) हैं, वाक़ई हमारे बाप खुली ग़लती में हैं।[5] **(8)** या तो युसूफ़ को क़त्ल कर डालो, या उसको किसी सरज़मीन में डाल आओ तो तुम्हारे बाप का रुख़ ख़लिस तुम्हारी तरफ़ हो जाएगा[6] और तुम्हारे सब काम बन जाएँगे। **(9)** उन्हीं में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल मत करो,

1. यह सूरत तक़रीबन पूरी की पूरी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से पर मुश्तमिल है और उसके शुरू करने से पहले कुरआन पाक के हक़ होने का बयान है, जिसमें वह क़िस्सा बयान हुआ है। और उसके ख़त्म करने से पहले अव्वल तौहीद का मज़मून और उसमें कोताही पर वईद, फिर रिसालत की बहस और उसके इनकारियों का बुरा अन्जाम होने का मुख़्तसर तौर बयान, और ऐसी हिकायतों और क़िस्सों का इबरत का सबब होना और क़ुरआन का हक़ होना मज़कूर है जिसमें ये क़िस्से हैं और इसी पर सूरः ख़त्म है। पस सूरः का ज़्यादा हिस्सा क़िस्सों पर मुश्तमिल है और सूरः का कुछ हिस्सा दीन के उसूलों में है जिसमें कुफ़्फ़ार की मुख़ालफ़त की वजह से आपको जो ग़म था उसके ख़ात्मे और तसल्ली के लिए यह क़िस्सा बयान किया गया है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को उनके भाइयों की मुख़ालफ़त से कोई नुक़सान नहीं पहुँचा, बल्कि अन्जामकार वही तरक़्क़ी का सबब हो गया। इसी तरह आपको आपकी क़ौम की मुख़ालफ़त नुक़सानदेह न होगी।
2. क्योंकि आपने न कोई किताब पढ़ी थी, न किसी किताब वाले से फ़ायदा हासिल किया था और अ़वाम में इस तरह सही तौर पर यह क़िस्सा मश्हूर न था। पस इससे साबित हुआ कि यह क़ुरआन वह्य यानी अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल-शुदा है।
3. ये ख़ुशख़बरियाँ जो याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने दीं या तो इस ख़्वाब से समझे या वह्य से।
4. यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को ऐसी बेकसी और बेबसी से उस बुलन्दी और हुकूमत पर पहुँचा देना **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 426 पर)**

ल-यूसुफ़ु व अख़ूहु अहब्बु इला अबीना मिन्ना व नह्नु अ़ुस्बतुन्, इन्-न अबाना लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(8)** उक़्तुलू यूसु-फ़ अविंतरहूहु अर्ज़ंय्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू मिम्-बअ़्दिही क़ौमन् सालिहीन **(9)** क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् ला तक़्तुलू यूसु-फ़ व अल्क़ूहु फ़ी ग़या-बतिल्-जुब्बि यल्तक़ित्हु बअ़्ज़ुस्सय्यारति इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन **(10)** क़ालू या अबाना मा ल-क ला तअ्मन्ना अ़ला यूसु-फ़ व इन्ना लहू लनासिहून **(11)** अर्सिल्हु म-अ़ना ग़दंय्-यर्तअ् व यल्अ़ब् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून **(12)** क़ा-ल इन्नी ल-यह्ज़ुनुनी अन् तज़्हबू बिही व अख़ाफ़ु अंय्यअ्कु-लहुज़्ज़िअ्बु व अन्तुम् अ़न्हु ग़ाफ़िलून **(13)** क़ालू ल-इन् अ-क-लहुज़्ज़िअ्बु व नह्नु अ़ुस्बतुन् इन्ना इज़ल्-लख़ासिरून **(14)** फ़-लम्मा ज़-हबू बिही व अज्मअू अंय्यज्-अ़लूहु फ़ी ग़या-बतिल्-जुब्बि व औहैना इलैहि लतुनब्बि-अन्नहुम् बिअम्रिहिम् हाज़ा व हुम् ला यश्अ़ुरून **(15)** व जाऊ अबाहुम् अ़िशाअंय्-यब्कून **(16)** क़ालू या अबाना इन्ना ज़हब्ना नस्तबिक़ु व तरक्ना यूसु-फ़ अ़िन्-द मताअ़िना फ़-अ-क-लहुज़्-ज़िअ्बु व मा अन्-त बिमुअ्मिनिल्लना व लौ कुन्ना सादिक़ीन ▲ **(17)** व जाऊ अ़ला क़मीसिही बि-दमिन् कज़िबिन्, क़ा-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रन्, फ़-सब्रुन् जमीलुन्, वल्लाहुल्-मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून **(18)** व जाअत् सय्यारतुन् फ़-अर्सलू वारि-दहुम् फ़-अद्ला दल्वहू, क़ा-ल या बुश्रा हाज़ा ग़ुलामुन्, व अ-सर्रूहु बिज़ा-अ़तन्, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिमा यअ़्मलून **(19)** व शरौहु बि-स-मनिम् बख़्सिन् दराहि-म

مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ
السَّيَّارَةِ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ۝١٠ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ
يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ۝١١ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ
وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝١٢ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَن تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ
أَن يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝١٣ قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ
الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخَاسِرُونَ ۝١٤ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَ
أَجْمَعُوا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم
بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝١٥ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ۝١٦
قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِندَ مَتَاعِنَا
فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۝١٧
وَجَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ
أَنفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝١٨
وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ قَالَ يَا بُشْرَىٰ
هَٰذَا غُلَامٌ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝١٩ وَ
شَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ۝٢٠
وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن مِّصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ

▲ सलासः 3/4

और उनको किसी अन्धेरे कुएँ में डाल दो,[1] ताकि उनको कोई राह चलता निकाल ले जाए, अगर तुमको करना है। (10) सबने कहा कि अब्बा! इसकी क्या वजह है कि यूसुफ़ के बारे में आप हमारा एतिबार नहीं करते, हालाँकि हम उनके ख़ैर-ख़्वाह हैं। (11) आप उनको कल के दिन हमारे साथ भेजिए कि ज़रा वे खाएँ और खेलें,[2] और हम उनकी पूरी हिफ़ाज़त रखेंगे। (12) (हज़रत याक़ूब ने) फ़रमाया कि मुझको यह बात ग़म में डालती है कि उसको तुम ले जाओ और मैं यह अन्देशा करता हूँ कि उसको कोई भेड़िया खा जाए और तुम उससे बेख़बर रहो। (13) वे बोले अगर उनको कोई भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअ़त (की जमाअ़त मौजूद) हों तो हम बिलकुल ही गए गुज़रे हुए। (14) सो जब उनको ले गए और सबने पुख़्ता इरादा कर लिया कि उनको किसी अन्धेरे कुँए में डाल दें, और हमने उनके पास वह्य भेजी कि तुम उन लोगों को यह बात जतलाओगे और वे पहचानेंगे भी नहीं।[3] (15) और वे लोग अपने बाप के पास इशा के वक़्त रोते हुए पहुँचे। (16) कहने लगे, अब्बा! हम सब तो आपस में दौड़ने में लग गए और यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया, पस एक भेड़िया उनको खा गया, और आप तो हमारा काहे को यक़ीन करने लगे, चाहे हम (कैसे ही) सच्चे हों। ▲ (17) और यूसुफ़ के कुर्ते पर झूठ-मूठ का ख़ून भी लगा लाए थे, (याक़ूब अ़लैहि. ने) फ़रमाया, (ऐसा नहीं है) बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है,[4] सो सब्र ही करूँगा जिसमें शिकायत का नाम न होगा। और जो बातें तुम बनाते हो उनमें अल्लाह तआ़ला ही मदद करे।[5] (18) और एक क़ाफ़िला आ निकला और उन्होंने अपना आदमी पानी लाने के वास्ते भेजा, उसने अपना डोल डाला। कहने लगा कि (अरे भाई) बड़ी ख़ुशी की बात है, यह तो (अच्छा) लड़का (निकल आया) और उनको (तिजारत का) माल क़रार देकर छुपा लिया,[6] और अल्लाह को उन सबकी कारगुज़ारियाँ मालूम थीं।[7] (19) और उनको बहुत ही कम क़ीमत में बेच डाला, यानी गिनती के चन्द दिरहम के बदले, और वे लोग उनके कुछ क़द्रदान तो थे ही नहीं। (20) ❖

(पृष्ठ 424 का शेष) यह ख़ुदा ही का काम था, इससे मुसलमानों को जो किसी क़िस्से के इच्छुक थे इबरत और ईमान की क़ुव्वत हासिल होगी और यहूद को कि उन्होंने ख़ुसूसियत के साथ यह क़िस्सा पूछा था नुबुव्वत की दलील मिल सकती है, अगर ग़ौर करें।

5. हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के साथ सबसे ज़्यादा मुहब्बत होने की अनेक वजह बयान की गई हैं। जिनमें ज़्यादा सही यह है कि नुबुव्वत की समझ से याक़ूब अ़लैहिस्सलाम उनको होनहार देखते थे और ख़्वाब सुनने के बाद यह बात और ज़्यादा पुख़्ता हो गई थी जैसा कि उनके इर्शाद 'और इसी तरह तुम्हारा रब तुमको चुनेगा' से साफ़ मालूम होता है। लेकिन यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई समझते थे कि यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के बारे में ऐसा ख़्याल याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की अपनी सोच है, और सोच में ग़लती होना नुबुव्वत के मनाफ़ी नहीं। पस 'ज़लाले मुबीन' यानी खुली ग़लती से ग़ौर व फ़िक्र की ख़ता मुराद है, वरना नबी के बारे में गुमराही का ख़्याल व एतिक़ाद कुफ़्र है।

6. क्योंकि वह दोनों सूरतों में बाप से जुदा हो जाएँगे।

1. जिसमें पानी भी ज़्यादा न हो कि डूबने का डर हो, वरना वह तो क़त्ल ही है और जल्दी से हर किसी को पता भी न चले, क्योंकि अन्धेरा कुआँ है, और आ़म रास्ते से भी दूर न हो।

2. ज़ाहिरन खेलने को याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने जायज़ रखा, इसके बावजूद कि बेफ़ायदा और बेकार काम की तजवीज़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की शान के ख़िलाफ़ है। सो असल यह है कि यह खेलना बेफ़ायदा नहीं, क्योंकि मुराद इससे दौड़ और तीर चलाना वग़ैरह है, जो फ़ायदेमन्द चीज़ों में से हैं। इसके अ़लावा खेल के जायज़ होने की दूसरी वजह यह थी कि और फ़ायदों के साथ-साथ तबीयत की ताज़गी भी है जो कि बच्चों के लिए ज़रूरी और लाज़िमी मश्ग़लों में जी लगने का ज़रिया है। और ज़रूरी का मुक़द्दिमा (यानी जो चीज़ उसके लिए ज़रूरी हो वह) भी ज़रूरी होता है।

3. चुनाँचे यह वायदा ज़ाहिर और पूरा हुआ। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 428 पर)**

मअ्दू-दतिन् व कानू फ़ीहि मिनज़्ज़ाहिदीन (20) ❖

व क़ालल्लज़िश्तराहु मिम्-मिस्-र लिम्र-अतिही अक्रिमी मस्वाहु असा अंय्यन्फ़-अना औ नत्तख़ि-ज़हू व-लदन्, व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ़ फ़िल्अर्ज़ि व लिनुअ़ल्लि-महू मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि, वल्लाहु ग़ालिबुन् अ़ला अम्रिही व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (21) व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू आतैनाहु हुक्मंव्-व अिल्मन्, व काज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (22) व रा-वदत्हुल्लती हु-व फ़ी बैतिहा अ़न् नफ़्सिही व ग़ल्ल-क़तिल्- अब्वा-ब व क़ालत् है-त ल-क, क़ा-ल मआ़ज़ल्लाहि इन्नहू रब्बी अह्स-न मस्वा-य, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (23) व ल-क़द् हम्मत् बिही व हम्-म बिहा लौ ला अर्-रआ बुर्हा-न रब्बिही, कज़ालि-क लिनस्रि-फ़ अ़न्हुस्सू-अ वल्- फ़ह्शा-अ, इन्नहू मिन् अिबादिनल् मुख़्लसीन (24) वस्त-बक़ल्बा-ब व क़द्दत् क़मी-सहू मिन् दुबुरिंव्-व अल्फ़या सय्यि-दहा लदल्-बाबि, क़ालत् मा जज़ा-उ मन् अरा-द बि-अह्लि-क सूअन् इल्ला अंय्युस्ज-न औ अ़ज़ाबुन् अलीम (25) क़ा-ल हि-य रा-वदत्नी अ़न्-नफ़्सी व शहि-द शाहिदुम् मिन् अह्लिहा इन् का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् क़ुबुलिन् फ़-स-दक़त् व हु-व मिनल्-काज़िबीन (26) व इन् का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् फ़-क-ज़बत् व हु-व मिनस्सादिक़ीन (27) फ़-लम्मा रआ क़मी-सहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् क़ा-ल इन्नहू मिन् कैदिकुन्-न, इन्-न कै-दकुन्-न अ़ज़ीम (28) यूसुफ़ु अअ्रिज़् अ़न् हाज़ा वस्तग़्फ़िरी

اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ
وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا
وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۲﴾ وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ
بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ
مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْٓ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾
وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ
لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۲۴﴾
وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا
الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۵﴾ قَالَ هِىَ رَاوَدَتْنِىْ عَنْ نَّفْسِىْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ
مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۶﴾ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ
وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۷﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ
مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ
وَاسْتَغْفِرِىْ لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿۲۹﴾ وَقَالَ نِسْوَةٌ ع ۳ ۹ ۱۲

और जिस शख़्स ने मिस्र में उनको ख़रीदा था उसने अपनी बीवी से कहा की इसको ख़ातिर से रखना, क्या अ़जब है कि हमारे काम आए या हम इसको बेटा बना लें। और हमने इसी तरह यूसुफ़ को उस सरज़मीन में कुव्वत दी, और ताकि हम उनको ख़्वाबों की ताबीर देना बतला दें,[1] और अल्लाह तआ़ला अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर आदमी नहीं जानते।[2] **(21)** और जब वह अपनी जवानी को पहुँचे, हमने उनको हिक्मत और इल्म अ़ता फ़रमाया, और हम नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।[3] **(22)** और जिस औ़रत के घर में यूसुफ़ रहते थे, वह (उनसे अपना मतलब हासिल करने को) उनको फुसलाने लगी और सारे दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी कि आ जाओ, तुम ही से कहती हूँ। (यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) कहा, (यह तो भारी गुनाह है) अल्लाह बचाए। (दूसरे) वह मेरा पालने-परवरिश करने वाला है। मुझको कैसी अच्छी तरह रखा, ऐसे हक़-फ़रामोश को फ़लाह नहीं हुआ करती। **(23)** और उस औ़रत के दिल में तो उनका ख़्याल जम ही रहा था, और उनको भी उस औ़रत का कुछ-कुछ ख़्याल हो चला था,[4] अगर अपने रब की दलील[5] को उन्होंने न देखा होता[6] तो ज़्यादा ख़्याल हो जाता अ़जब न था।[7] इसी तरह (हमने उनको इल्म दिया) ताकि हम उनसे छोटे और बड़े गुनाह को दूर रखें,[8] क्योंकि वह हमारे मुख़्लिस बन्दों में से थे। **(24)** और दोनों (आगे-पीछे) दरवाज़े की तरफ़ को दौड़े, और उस औ़रत ने उनका कुर्ता पीछे से फाड़ डाला, और दोनों ने उस औ़रत के शौहर को दरवाज़े के पास पाया।[9] (औ़रत) बोली, जो शख़्स तेरी बीवी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा सिवाय इसके और क्या है कि वह जेलख़ाने भेजा जाए या और कोई दर्दनाक सज़ा हो। **(25)** (हज़रत यूसुफ़ ने) कहा, यही मुझसे अपना मतलब (निकालने) को फुसलाती थी, और उस औ़रत के ख़ानदान में से एक गवाह ने गवाही दी[10] कि इनका कुर्ता अगर आगे से फटा है तो औ़रत सच्ची है और ये झूठे। **(26)** और अगर इनका कुर्ता पीछे से फटा है तो औ़रत झूठी और यह सच्चे।[11] **(27)** सो जब उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो कहने लगा कि यह तुम औ़रतों की चालाकी है, बेशक तुम्हारी चालाकियाँ ग़ज़ब ही की हैं। **(28)** ऐ यूसुफ़! इस बात को जाने दो, और ऐ औ़रत! तू अपने कुसूर की माफ़ी माँग, बेशक पूरी की पूरी तू ही कुसूरवार है। **(29)** ❖

(पृष्ठ 426 का शेष) **4.** याकूब अ़लैहिस्सलाम का 'बल सव्वलत्' 'यानी बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है,' फ़रमाना मशहूर क़ौल के मुताबिक़ उस कुर्ते के धब्बे देखने से था, लेकिन अगर वह रिवायत साबित न हो तो अपनी फ़िक्री सलाहियत और दिल की गवाही से होगा जो कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम में अक्सर तो हक़ीक़त के मुताबिक़ होता है और कभी हक़ीक़त के ख़िलाफ़ भी हो जाता है।

5. जब याकूब अ़लैहिस्सलाम को यक़ीनी तौर पर या अन्दाज़े से यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाइयों का बयान ग़लत होना मालूम था तो यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को तलाश क्यों न किया। ग़ालिब यह है कि याकूब अ़लैहिस्सलाम को वह्य से मुख़्तसर तौर पर मालूम हो गया होगा कि वह ज़ाया न होंगे लेकिन मेरी क़िस्मत में लम्बी जुदाई मुक़द्दर है, मेरी तलाश से न मिलेंगे।

6. ताकि कोई आकर दावेदार न हो, फिर उसको लेजाकर मिस्र में किसी बड़े आदमी के हाथ बेचकर ख़ूब नफ़ा कमाएँगे।

7. कि भाई उनको बेवतन और क़ाफ़िले वाले माल हासिल करने का ज़रिया बना रहे थे, और अल्लाह तआ़ला उनको ज़माने का बादशाह बना रहा था।

1. ख़ूब कुव्वत और ख़्वाब की ताबीरों का इल्म देने से मक़सूद यह था कि दौलते ज़ाहिरी व बातिनी से मालामाल करें।

2. यह जुम्ला क़िस्से के दरमियान में एक ज़ायद जुम्ले के तौर पर आ गया ताकि ख़रीद व बेच के साथ शुरू ही से सुनने वालों को मालूम हो जाए कि गोया इस वक़्त ज़ाहिरन ऐसी नागवार हालत में हैं, मगर हमने उनको असल में एक शानदार हुकूमत और अ़जीब व ग़रीब उलूम के लिए बचाया है। और ये हालतें आ़रज़ी और असली मक़ासिद का मुक़द्दिमा हैं। क्योंकि हुकूमत हासिल करके तरक़्क़ी पाने का ज़रिया अ़ज़ीज़ के घर आना ही हुआ। इसी तरह उलूम व दिल की कैफ़ियतों के लिए नागवारियाँ और मशक़्क़तें सबब हो जाते हैं। पस इस एतिबार से उलूम के फ़ैज़ान में भी उसको दख़ल हुआ। और मुश्तरक तौर पर रईसों और सरदारों के घर में परवरिश पाना सलीक़ा व तजुर्बा बढ़ाता है, जिसकी हुकूमत और उलूम दोनों में ज़रूरत है, ख़ासकर ताबीर के इल्म में। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 430 पर)**

लिज़म्बिकि इन्नकि कुन्ति मिनल्-ख़ातिईन (29) ❖

व क़ा-ल निस्वतुन् फ़िल्-मदीनतिम्र-अतुल्-अज़ीज़ि तुराविदु फ़ताहा अ़न्-नफ़्सिही क़द् श-ग़-फ़हा हुब्बन्, इन्ना ल-नराहा फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (30) फ़-लम्मा समिअ़त् बिमक्रिहिन्-न अर्-सलत् इलैहिन्-न व अअ़्त-दत् लहुन्-न मुत्त-कअंव्-व आतत् कुल्-ल वाहि-दतिम् मिन्हुन्-न सिक्कीनंव्-व क़ालतिख़रुज् अ़लैहिन्-न फ़-लम्मा रऐ-नहू अक्बर्-नहू व क़त्तअ़्-न ऐदियहुन्-न व क़ुल्-न हा-श लिल्लाहि मा हाज़ा ब-शरन्, इन् हाज़ा इल्ला म-लकुन् करीम (31) क़ालत् फ़ज़ालिकुन्नल्लज़ी लुम्तुन्ननी फ़ीहि, व ल-क़द् रावत्तुहू अ़न् नफ़्सिही फ़स्तअ़्-स-म, व ल-इल्लम् यफ़अ़ल् मा आमुरुहू लयुस्ज-नन्-न व ल-यकूनम् मिनस्साग़िरीन (32) क़ा-ल रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्-य मिम्मा यद्अ़ू-ननी इलैहि व इल्ला तस्रिफ़् अ़न्नी कैदहुन्-न अस्बु इलैहिन्-न व अकुम् मिनल्-जाहिलीन (33) फ़स्तजा-ब लहू रब्बुहू फ़-स-र-फ़ अ़न्हु कैदहुन्-न, इन्नहू हुवस्-समीअ़ुल्-अ़लीम (34) सुम्-म बदा लहुम् मिम्-बअ़्दि मा र-अवुल्-आयाति ल-यस्जुनुन्नहू हत्ता हीन (35) ❖

व द-ख़-ल म-अ़हुस्सिज्-न फ़-तयानि, क़ा-ल अ-हदुहुमा इन्नी अरानी अअ़्सिरु ख़म्रन् व क़ालल्-आख़रु इन्नी अरानी अह्मिलु फ़ौ-क रअ़्सी ख़ुब्ज़न् तअ्कुलुत्तैरु मिन्हु, नब्बिअ़्ना बितअ्वीलिही इन्ना नरा-क मिनल्मुह्सिनीन (36) क़ा-ल ला यअ्तीकुमा तआमुन्

وما من دآبة ١٢ ٣١٦ يوسف ١٢

فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا
حُبًّا ۭ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ
اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا
وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ
وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۭ اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝ قَالَتْ
فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ۭ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ
فَاسْتَعْصَمَ ۭ وَلَىِٕنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ
الصّٰغِرِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ
وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى
حِيْنٍ ۝ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۭ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّىْٓ اَرٰىنِيْٓ
اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّىْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا
تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۭ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ
يَّاْتِيَكُمَا ۭ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۭ اِنِّىْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ

منزل

और कुछ औरतों ने जो कि शहर में रहती थीं यह बात कही कि अ़ज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम को (उससे अपना मतलब हासिल करने के वास्ते) फुसलाती है। उस ग़ुलाम का इश्क़ उसके दिल में जगह कर गया है, हम तो उसको खुली ग़लती में देखते हैं। **(30)** सो जब उस औरत ने उन औरतों की यह बदगोई सुनी तो किसी के हाथ उनको बुला भेजा (कि तुम्हारी दावत है)[1] और उनके वास्ते (मस्नद) तकिया लगाया, और हर एक को उनमें से एक-एक चाकू दे दिया। (यह तो सिर्फ़ बहाना था, असली ग़रज़ यह थी कि अपने आपे में न रहकर अपने हाथ ज़ख़्मी कर लें) और (यूसुफ़ से) कहा कि ज़रा इनके सामने तो आ जाओ। (वह यह समझकर कि कोई जायज़ और सही ज़रूरत होगी बाहर आ गए) सो औरतों ने जो उनको देखा तो (उनके हुस्न व ख़ूबसूरती से) हैरान रह गईं और (उनपर ऐसी बदहवासी तारी हुई कि) अपने हाथ काट लिए, और कहने लगीं, ख़ुदा की पनाह, यह शख़्स आदमी हरगिज़ नहीं, यह तो कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है।[2] **(31)** बोली, वह शख़्स यही है जिसके बारे में तुम मुझको बुरा-भला कहती थीं (कि अपने ग़ुलाम को चाहती है) और वाक़ई मैंने इससे अपना मतलब हासिल करने की ख़्वाहिश की थी मगर यह पाक-साफ़ रहा, और अगर आइन्दा (भी) मेरा कहना नहीं करेगा तो बेशक जेलख़ाने भेजा जाएगा और बेइज़्ज़त भी होगा। **(32)** (यूसुफ़ ने) दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! जिस काम की तरफ़ ये औरतें मुझको बुला रही हैं उससे तो जेल में जाना ही मुझको ज़्यादा पसन्द है। और अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा और नादानी का काम कर बैठूँगा।[3] **(33)** सो उनके रब ने उनकी दुआ़ क़बूल की और उन औरतों के दाव-पेच को उनसे दूर रखा, बेशक वह बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है। **(34)** फिर बहुत-सी निशानियाँ देखने के बाद उन लोगों को यही मस्लहत मालूम हुआ कि उनको एक वक़्त तक क़ैद में रखें।[4] **(35)** ❖

और उनके (यानी यूसुफ़ के) साथ और भी दो ग़ुलाम क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए। उनमें से एक ने कहा कि मैं अपने को (ख़्वाब में) देखता हूँ कि शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा कि मैं अपने को इस तरह देखता हूँ कि मैं अपने सर पर रोटियाँ लिए जाता हूँ, उनमें से परिन्दे खाते हैं। हमको इस (ख़्वाब) की ताबीर बतलाइए, आप हमको नेक आदमी मालूम होते हैं। **(36)** (यूसुफ़ ने) फ़रमाया कि जो खाना तुम्हारे पास आता है जो कि तुमको खाने के लिए मिलता है, मैं उसके आने से पहले उसकी हक़ीक़त तुमको बतला दिया करता हूँ। यह (बतला देना) उस इल्म की बदौलत है जो मुझको मेरे रब ने तालीम फ़रमाया है, मैंने तो उन लोगों का मज़हब छोड़ रखा है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वे लोग आख़िरत के भी इनकारी हैं।[5] **(37)** और

(पृष्ठ 428 का शेष) 3. इसमें पहले से यह बतलाना मक़सूद है कि जो कुछ आगे क़िस्से में बाज़े मामलात और बातों की तोहमत आपके मुताल्लिक़ आएगी वह सब ग़लत होगी, क्योंकि वह साहिबे हिक्मत थे जिसका हासिल है नफ़ा देने वाला इल्म, यानी इल्म अ़मल के साथ, और इन चीज़ों का सादिर होना हिक्मत के ख़िलाफ़ है। पस सादिर और ज़ाहिर होना ग़लत है।

4. तबई चीज़ होने के दर्जे में जो कि इख़्तियार से बाहर है जैसा कि गर्मी के रोज़े में पानी की तरफ़ तबई मैलान होता है अगरचे रोज़ा तोड़ने का वस्वसा भी नहीं आता।

5. यानी इस काम के गुनाह होने की दलील को कि शरई हुक्म है।

6. यानी उनको शरीअ़त का इल्म जो कि अ़मली क़ुव्वत के साथ मिला हुआ है, न होता।

7. क्योंकि असबाब और उसकी तरफ़ मुतवज्जह करने वाले हालात ऐसे ही ताक़तवर थे।

8. यानी इरादे से भी बचाया और फ़ेल से भी बचाया।

9. औरत शौहर को देखकर सटपटाई और फ़ौरन बात बनाकर बोली।

10. वह एक दूध पीता बच्चा था जो यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के मोजिज़े से बोल पड़ा। अगर यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम उस वक़्त नबी न हों तो इस आ़म आ़दत के ख़िलाफ़ पेश आने वाले वाक़िए को इस्तिलाह में मोजिज़े के बजाय 'इरहास' (यानी उसकी बुनियाद और पहला दर्जा) कहेंगे।

11. इस गवाही देने वाले ने जो फ़ैसला बतलाया यह कोई शरई हुज्जत नहीं, काफ़ी हुज्जत तो सिर्फ़ उसका बोल पड़ना है, लेकिन हाज़िरीन के ज़ौक़ के मुवाफ़िक़ उसका बयान कर देना असली हुज्जत के लिए ज़्यादा ताईद करने वाला हो गया। **(पृष्ठ 430 की तफ़सीर पृष्ठ 432 पर)**

तुर्ज़क़ानिही इल्ला नब्बअ्तुकुमा बितअ्वीलिही क़ब्-ल अंय्यअ्ति-यकुमा, ज़ालिकुमा मिम्मा अ़ल्ल-मनी रब्बी, इन्नी तरक्तु मिल्ल-त क़ौमिल् ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून **(37)** वत्तबअ्तु मिल्ल-त आबाई इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब, मा का-न लना अन् नुश्रि-क बिल्लाहि मिन् शैइन्, ज़ालि-क मिन् फ़ज़्लिल्लाहि अ़लैना व अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून **(38)** या साहि-बयिस्सिज्नि अ-अर्बामुम् मु-तफ़र्रिक़ू-न ख़ैरुन् अमिल्लाहुल् वाहिदुल्-क़ह्हार **(39)** मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिही इल्ला अस्मा-अन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, अ-म-र अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु, ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून **(40)** या साहि-बयिस्सिज्नि अम्मा अ-हदुकुमा फ़-यस्क़ी रब्बहू ख़म्रन् व अम्मल्-आख़रु फ़युस्-लबु फ़-तअ्कुलुत्-तैरु मिर्रअ्सिही, क़ुज़ियल्-अम्रुल्लज़ी फ़ीहि तस्तफ़्तियान **(41)** व क़ा-ल लिल्लज़ी ज़न्-न अन्नहू नाजिम् मिन्हुमज़्कुर्नी अिन्-द रब्बि-क, फ़अन्साहुश्शैतानु ज़िक्-र रब्बिही फ़-लबि-स फ़िस्सिज्नि बिज़्-अ़ सिनीन **(42)** ❖

يوسف ١٢ — ٢١٧ — وما من دآبة ١٢

لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ
اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ
بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ
مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا
اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ
خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ
قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ۝ وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ
نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ؗ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ
فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ
بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ
وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ
لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ

منزل ٣

व क़ालल्-मलिकु इन्नी अरा सब्-अ़ ब-क़रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अ़िजाफ़ुंव्-व सब्-अ़ सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव्-व उ-ख़-र याबिसातिन्, या अय्युहल् म-लउ

मैंने अपने बाप-दादों का मज़हब इख़्तियार कर रखा है। इब्राहीम का और इसहाक़ का और याक़ूब का, हमको किसी तरह मुनासिब नहीं कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक क़रार दें।[1] यह (तौहीद का अ़क़ीदा) हमपर और दूसरे लोगों पर ख़ुदा तआ़ला का एक फ़ज़्ल है,[2] लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।[3] **(38)** ऐ क़ैदख़ाने के दोनों साथियो! मुतफ़र्रिक़ "यानी अलग-अलग" माबूद अच्छे या एक माबूद बरहक़, जो सबसे ज़बरदस्त है (वह अच्छा)। **(39)** तुम लोग तो ख़ुदा को छोड़कर सिर्फ़ चन्द बेहक़ीक़त नामों की इबादत करते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने मुक़र्रर कर लिया है। ख़ुदा तआ़ला ने तो उनकी कोई दलील भेजी नहीं। हुक्म ख़ुदा ही का है, उसने यह हुक्म दिया है कि सिवाय उसके और किसी की इबादत मत करो, यही सीधा तरीक़ा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।[4] **(40)** ऐ क़ैदख़ाने के दोनों साथियो! तुममें एक तो (बरी होकर) अपने आक़ा को शराब पिलाया करेगा और दूसरा सूली दिया जाएगा, और उसके सर को परिन्दे खाएँगे, जिस बारे में तुम पूछते थे वह इसी तरह मुक़द्दर हो चुका।[5] **(41)** और जिस शख़्स की रिहाई का गुमान था उससे (यूसुफ़ ने) फ़रमाया कि अपने आक़ा के सामने मेरा भी ज़िक्र करना, (कि एक शख़्स बेक़ुसूर क़ैद है। उसने वायदा कर लिया) फिर उसको अपने आक़ा के सामने ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया तो क़ैदख़ाने में और भी चन्द साल उनका रहना हुआ।[6] **(42)** ❖

और बादशाह ने कहा, मैं देखता हूँ कि सात गायें मोटी-ताज़ी हैं जिनको सात कमज़ोर और दुबली गायें खा गईं, और सात बालें हरी हैं और उनके अ़लावा (सात) और हैं जो कि सूखी हैं। ऐ दरबार वालो! अगर तुम ताबीर दे सकते हो तो मेरे इस ख़्वाब के बारे में मुझको जवाब दो। **(43)** वे लोग कहने लगे कि यूँ ही परेशान ख़्यालात हैं, और हम लोग ख़्वाबों की ताबीर का इल्म भी नहीं रखते।[7] **(44)** और उन (ज़िक्र हुए) दो

(तफ़सीर पृष्ठ 430) **1.** इस दावत में उनके सामने मुख़्तलिफ़ खाने और मेवे हाज़िर किए, जिनमें बाज़ चीज़ें चाकू से छीलकर खाने की थीं।

2. मतलब यह कि ऐसा हुस्न व जमाल आदमी में कहाँ होता है। फ़रिश्ते अलबत्ता ऐसे नूरानी होते हैं।

3. यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का यह फ़रमाना 'कि अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा' पारसाई के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि यह पारसाई भी तो अल्लाह की हिफ़ाज़त ही की बदौलत है। चूँकि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की नज़र हक़ीक़ी असर करने वाले की तरफ़ होती है इसलिए उनको अपनी पारसाई पर एतिमाद और नाज़ नहीं होता। और यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का यह कहना 'कि अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा' मक़सूद इससे यह है कि 'इसको मुझसे दूर फ़रमा दीजिए' इसलिए इसके बाद 'सो उनकी दुआ़ उनके रब ने क़बूल की' फ़रमाया। और इस क़बूल होने का बयान ख़ुद क़ुरआन में है: 'और उन औ़रतों के दाव-पेच को उनसे दूर रखा'। जेल में जाना क़बूलियत का हिस्सा नहीं, जैसा कि मश्हूर है कि क़ैद की दुआ़ की इसलिए क़ैद में गए, क्योंकि क़ैद की दरख़्वास्त तो नहीं की सिर्फ़ बुरे फ़ेल को जेलख़ाने से ज़्यादा बुरा होना बयान किया।

4. अ़वाम में चर्चा बन्द होने की ग़रज़ से।

5. हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने चाहा कि जब ये मेरे मोतक़िद हैं तो इनको पहले ईमान की दावत देनी चाहिए, इसलिए अव्वल अपना नबी होना एक मोजिज़े से साबित किया। आगे तौहीद को साबित किया है, यानी जब मेरा कमाल और नुबुव्वत दलील से साबित है तो जिस तरीक़े को मैं इख़्तियार करूँ और उसको सही बतलाऊँ वह हक़ होगा, सो वह तरीक़ा यह है।

(तफ़सीर पृष्ठ 432) **1.** यानी तौहीद इस मज़हब का सबसे बड़ा रुक्न है।

2. क्योंकि उसकी बदौलत दुनिया व आख़िरत की फ़लाह हासिल होती है।

3. यानी न तौहीद की क़द्र करते हैं और न उसको इख़्तियार करते हैं।

4. ईमान के अरकान की तब्लीग़ करके अब उनके ख़्वाब की ताबीर बतलाते हैं।

5. चुनाँचे मुक़द्दिमे में सफ़ाई के बाद एक बरी साबित हुआ, दूसरा मुज्रिम, दोनों जेलख़ाने से बुलाए गए। एक रिहाई के लिए दूसरा सज़ा के लिए।

6. 'बिज़्अुन्' अ़रबी में तीन से दस तक के लिए आता है। इसके दरमियान जितने अ़दद (अंक) हैं हर अ़दद का आयत में एहतिमाल है। चूँकि आ़दतन जो असबाब इस्तेमाल किए जाते हों उनका इस्तेमाल जायज़ है इसलिए इस मामले में **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 434 पर)**

अफ़्तूनी फ़ी रुअ्या-य इन् कुन्तुम् लिर्रुअ्या तअ्बुरून **(43)** क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिन् व मा नह्नु बितअ्वीलिल्-अह्लामि बिआ़लिमीन **(44)** व क़ालल्लज़ी नजा मिन्हुमा वद्द-क-र बअ्-द उम्मतिन् अ-न उनब्बिउकुम् बितअ्वीलिही फ़-अर्सिलून **(45)** यूसुफ़ु अय्युहस्-सिद्दीक़ु अफ़्तिना फ़ी सब्अि ब-क़रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफ़ुंव्-व सब्अि सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव्-व उ-ख़-र याबिसातिल्-लअ़ल्ली अर्जिअ़ु इलन्नासि लअ़ल्लहुम् यअ्लमून **(46)** क़ा-ल तज़्-रअू-न सब्-अ सिनी-न द-अबन् फ़मा हसत्तुम् फ़-ज़रूहु फ़ी सुम्बुलिही इल्ला क़लीलम्-मिम्मा तअ्कुलून **(47)** सुम्-म यअ्ती मिम्-बअ्दि ज़ालि-क सब्अुन् शिदादुंय्यअ्कुल्-न मा क़द्दम्तुम् लहुन्-न इल्ला क़लीलम् मिम्मा तुह्सिनून **(48)** सुम्-म यअ्ती मिम्-बअ्दि ज़ालि-क आ़मुन् फ़ीहि युग़ासुन्नासु व फ़ीहि यअ्सिरून **(49)** ❖

व क़ालल् मलिकुअ्तूनी बिही फ़-लम्मा जा-अहुर्रसूलु क़ालर्जिअ् इला रब्बि-क फ़स्अल्हु मा बालुन्-निस्वतिल्--लाती क़त्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न, इन्-न रब्बी बिकैदिहिन्-न अ़लीम **(50)** क़ा-ल मा ख़त्बुकुन्-न इज़् रावत्तुन्-न यूसु-फ़ अ़न् नफ़्सिही, क़ुल्-न हा-श लिल्लाहि मा अ़लिम्ना अ़लैहि मिन् सूइन्, क़ालतिम्र-अतुल्-अ़ज़ीज़िल्-आ-न हस्ह-सल्हक़्क़ु, अ-न रावत्तुहू अ़न् नफ़्सिही व इन्नहू लमिनस्सादिक़ीन **(51)** ज़ालि-क लि-यअ्ल-म अन्नी लम् अख़ुन्हु बिल्ग़ैबि व अन्नल्ला-ह ला यह्दी कैदल्-ख़ाइनीन **(52)**

الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ
اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ
اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ
سُنْبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا فَمَا
حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ
يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ
لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ
ائْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ
فَسْئَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ اِنَّ
رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ
عَنْ نَّفْسِهٖ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ
قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْئٰنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ
عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ
لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

(क़ैदियों) में से जो रिहा हो गया था उसने कहा, और मुद्दत के बाद उसको (हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की वसीयत का) ख़्याल आया कि मैं इसकी ताबीर की ख़बर लाए देता हूँ, आप लोग मुझको ज़रा जाने की इजाज़त दीजिए। **(45)** (वह क़ैद ख़ाने में पहुँचा और कहा) ऐ यूसुफ़! ऐ सच्चाई के पैकर, आप हम लोगों को इस (ख़्वाब) का जवाब (यानी ताबीर) दीजिए कि सात गायें मोटी हैं, उनको सात दुबली गायें खा गईं, और सात बाले हरी हैं और उसके अ़लावा (सात) सूखी हैं, ताकि मैं उन लोगों के पास लौटकर जाऊँ, ताकि उनको भी मालूम हो जाए। **(46)** आपने फ़रमाया कि[1] तुम सात साल लगातार ग़ल्ला बोना, फिर जो फल काटो उसको बालों ही में रहने देना, (ताकि घुन न लग जाए) हाँ मगर थोड़ा-सा जो तुम्हारे खाने में आए (निकाल लेना) **(47)** फिर उसके बाद सात साल ऐसे सख़्त आएँगे जो कि उस ज़ख़ीरे को खा जाएँगे जिसको तुमने (उन सालों के वास्ते) जमाकर रखा है, हाँ मगर थोड़ा-सा जो रख छोड़ोगे। **(48)** फिर उसके बाद एक साल ऐसा आएगा जिसमें लोगों के लिए ख़ूब बारिश होगी और उसमें शीरा भी निचोड़ेंगे। **(49)** ❖

और बादशाह ने हुक्म दिया कि उनको मेरे पास लाओ। फिर जब उनके पास क़ासिद पहुँचा, आपने फ़रमाया तू अपनी सरकार के पास लौट जा, फिर उनसे दरियाफ़्त कर कि उन औ़रतों का क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे, मेरा रब उन औ़रतों के फ़रेब को ख़ूब जानता है।[2] **(50)** कहा कि तुम्हारा क्या वाक़िआ़ है, जब तुमने यूसुफ़ से अपने मतलब की ख़्वाहिश की। औ़रतों ने जवाब दिया कि अल्लाह की पनाह, हमको उनमें ज़रा भी बुराई की बात मालूम नहीं हुई।[3] अ़ज़ीज़ की बीवी कहने लगी कि अब तो हक़ बात ज़ाहिर हो ही गई। मैंने ही उनसे अपने मतलब की ख़्वाहिश की थी, और बेशक वही सच्चे हैं। **(51)** (यूसुफ़ ने) फ़रमाया कि यह (एहतिमाम) सिर्फ़ इस वजह से है ताकि उसको (यानी अ़ज़ीज़ को) यक़ीन के साथ मालूम हो जाए कि मैंने उनकी ग़ैर-मौजूदगी में उसकी आबरू पर हाथ नहीं डाला, और यह कि अल्लाह तआ़ला ख़ियानत करने वालों के फ़रेब को चलने नहीं देता। **(52)**

(पृष्ठ 432 का शेष) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर कोई शुब्हा नहीं हो सकता। और यह जो फ़रमायाः 'तो क़ैदख़ाने में और भी चन्द साल उनका रहना हुआ' यह बतौर इताब के नहीं फ़रमाया बल्कि महज़ भूल जाने पर इसका मुरत्तब करना मक़सद है कि वह भूल गया इसलिए यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की रिहाई का कोई सामान न हुआ।

7. दो जवाब इसलिए दिए कि पहले जवाब से बादशाह के दिल से परेशानी और वस्वसा दूर करना है, और दूसरे जवाब से अपना उज़्र ज़ाहिर करना है। ख़ुलासा यह कि अव्वल तो ऐसे ख़्वाब क़ाबिले ताबीर नहीं, दूसरे हम इस फ़न से वाक़िफ़ नहीं।

1. यानी उन सात मोटी गायों और सात हरी बालों से पैदावार और बारिश के साल मुराद हैं।

2. मतलब यह था कि उनको बुलाकर मेरा हाल उस वाक़िए के मुताल्लिक़ जिसमें मुझको क़ैद किया गया था तफ़तीश किया जाए, और औ़रतों के हाल से मुराद उनका यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के हाल से वाक़िफ़ या नावाक़िफ़ होना है। उन औ़रतों की तख़्सीस शायद इसलिए की हो कि उनके सामने जुलेख़ा ने क़बूल किया था कि 'वाक़ई मैंने इससे अपना मक़सद हासिल करने की ख़्वाहिश की थी मगर यह पाक रहा'। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के अपने पाकदामन होने के इस एहतिमाम से मालूम हुआ कि तोहमत को हटाने में कोशिश करना पसन्दीदा बात है। हदीसों में इसका पसन्दीदा होना आया है। अन्य फ़ायदों के साथ इसका एक फ़ायदा यह भी है कि लोग ग़ीबत से बचेंगे और अपना दिल भी तश्वीश से महफ़ूज़ रहेगा।

3. यानी वे बिलकुल पाक व साफ़ हैं।

तेरहवाँ पारः व मा उबर्रिउ

सूरतु यूसुफ़ (आयत 53 से 111)

व मा उबर्रिउ नफ़्सी इन्नन्नफ़्-स ल-अम्मा-रतुम्-बिस्सू-इ इल्ला मा रहि-म रब्बी, इन्-न रब्बी ग़फ़ूरुर्रहीम **(53)** व कालल्-मलिकुअ्तूनी बिही अस्तख़्लिस्हु लिनफ़्सी फ़-लम्मा कल्ल-महू का-ल इन्नकल्-यौ-म लदैना मकीनुन् अमीन **(54)** कालजूअ्ल्नी अ़ला ख़ज़ाइनिल्-अर्ज़ि इन्नी हफ़ीज़ुन् अ़लीम **(55)** व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ फ़िल्अर्ज़ि य-तबव्वउ मिन्हा हैसु यशा-उ, नुसीबु बि-रह्मतिना मन्-नशा-उ व ला नुज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन **(56)** व ल-अज्रुल्-आख़िरति ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तकून **(57)** ❖

व जा-अ इख़्वतु यूसु-फ फ़-द-ख़लू अ़लैहि फ़-अ़-र-फ़हुम् व हुम् लहू मुन्किरून **(58)** व लम्मा जह्ह-ज़हुम् बि-जहाज़िहिम् कालअ्तूनी बि-अख़िल्-लकुम् मिन् अबीकुम् अला तरौ-न अन्नी ऊफ़िल्-कै-ल व अ-न ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन **(59)** फ़-इल्लम् तअ्तूनी बिही फ़ला कै-ल लकुम् अ़िन्दी व ला तक्रबून **(60)** कालू सनुराविदु अ़न्हु अबाहु व इन्ना लफ़ाअ़िलून **(61)** व का-ल लिफ़ित्यानिहिज्-अ़लू बिज़ा-अ़-तहुम् फ़ी रिहालिहिम् लअ़ल्लहुम् यअ्रिफ़ूनहा इज़न्क़-लबू इला अह्लिहिम् लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून **(62)** फ़-लम्मा र-जअ़ू इला अबीहिम् कालू या अबाना मुनि-अ़ मिन्नल्कैलु फ़-अर्सिल् म-अ़ना अख़ाना नक्तल् व इन्ना लहू

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِىٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ
رَبِّىٓ ۚ إِنَّ رَبِّى غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِى بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ
لِنَفْسِى ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ
ٱجْعَلْنِى عَلَىٰ خَزَآئِنِ ٱلْأَرْضِ ۖ إِنِّى حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذَٰلِكَ
مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِى ٱلْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ۚ نُصِيبُ
بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَأَجْرُ
ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَكَانُوا۟ يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ إِخْوَةُ
يُوسُفَ فَدَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُۥ مُنكِرُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَمَّا
جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ٱئْتُونِى بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا
تَرَوْنَ أَنِّىٓ أُوفِى ٱلْكَيْلَ وَأَنَا۠ خَيْرُ ٱلْمُنزِلِينَ ﴿٥٩﴾ فَإِن لَّمْ تَأْتُونِى
بِهِۦ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِى وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾ قَالُوا۟ سَنُرَٰوِدُ عَنْهُ
أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَٰعِلُونَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيَٰنِهِ ٱجْعَلُوا۟ بِضَٰعَتَهُمْ فِى
رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَآ إِذَا ٱنقَلَبُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَبِيهِمْ قَالُوا۟ يَٰٓأَبَانَا مُنِعَ مِنَّا ٱلْكَيْلُ
فَأَرْسِلْ مَعَنَآ أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ
ءَامَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَآ أَمِنتُكُمْ عَلَىٰٓ أَخِيهِ مِن قَبْلُ ۖ فَٱللَّهُ

❖ रु. 7/8/1

तेरहवाँ पारः व मा उबर्रिउ

सूरः यूसुफ़ (आयत 53 से 111)

और (बाक़ी) मैं अपने नफ़्स को (ज़ात के एतिबार से) बरी (और पाक) नहीं बतलाता, (क्योंकि) नफ़्स तो (हर एक का) बुरी ही बात बतलाता है, सिवाय उस (नफ़्स) के जिसपर मेरा रब रहम करे,[1] बेशक मेरा रब बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला है। **(53)** और (यह सुनकर) बादशाह ने कहा कि उनको मेरे पास लाओ, मैं उनको ख़ास अपने (काम के) लिए रखूँगा। पस जब उसने (यानी बादशाह ने) उनसे बातें कीं तो (उनसे) कहा कि तुम हमारे नज़दीक आज (से) इज़्ज़त व इक्राम वाले और मोतबर हो। **(54)** (यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मुल्की ख़ज़ानों पर मुझको मामूर कर दो, मैं (उनकी) हिफ़ाज़त भी रखूँगा (और) ख़ूब वाक़िफ़ (भी) हूँ।[2] **(55)** और हमने ऐसे (अ़जीब) अन्दाज़ पर यूसुफ़ को मुल्क में बाइख़्तियार बना दिया कि उसमें जहाँ चाहें रहें-सहें,[3] हम जिसपर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें और हम नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते।[4] **(56)** और आख़िरत का अज्र कहीं ज़्यादा बढ़कर है, ईमान और तक़्वा वालों के लिए।[5] **(57)** ❖

और (किनआ़न में भी अकाल पड़ा तो) यूसुफ़ के भाई आए फिर उनके (यानी यूसुफ़ के) पास पहुँचे, सो उन्होंने (यानी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) उनको पहचान लिया और उन्होंने उनको (यानी यूसुफ़ को) नहीं पहचाना। **(58)** और जब उन्होंने (यानी यूसुफ़ ने) उनके (ग़ल्ले का) सामान तैयार कर दिया तो (चलते वक़्त) फ़रमा दिया कि अपने अ़ल्लाती "माँ की तरफ़ से सौतेले" भाई को भी (साथ) लाना (ताकि उसका हिस्सा भी दिया जा सके), तुम देखते नहीं हो कि मैं पूरा नापकर देता हूँ, और मैं सबसे ज़्यादा मेहमान नवाज़ी करता हूँ।[6] **(59)** और अगर तुम (दोबारा आए और) उसको मेरे पास न लाए[7] तो न मेरे पास तुम्हारे नाम का ग़ल्ला होगा और न तुम मेरे पास आना। **(60)** वे बोले (देखिए) हम (अपनी कोशिश भर तो) उसके बाप से उसको माँगेंगे और हम (इस काम को) ज़रूर करेंगे। **(61)** और उन्होंने (यानी यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कह दिया कि उनकी जमा-पूँजी उन (ही) के सामान में (छुपाकर) रख दो, ताकि जब घर जाएँ तो उसको पहचानें, शायद (यह एहसान व करम देखकर) फिर दोबारा आएँ।[8] **(62)** ग़रज़ जब वह लौटकर अपने बाप (याक़ूब) के पास पहुँचे, कहने लगे ऐ अब्बा![9] हमारे लिए (क़तई तौर पर) ग़ल्ले की बन्दिश कर दी गई, सो आप हमारे भाई (बिनयामीन) को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम (फिर) ग़ल्ला ला सकें, और हम उनकी पूरी हिफ़ाज़त रखेंगे। **(63)** उन्होंने (यानी याक़ूब अ़लैहि. ने) फ़रमाया कि बस (रहने दो) मैं इसके बारे में भी तुम्हारा वैसा ही एतिबार करता हूँ जैसा इससे पहले इसके भाई (यूसुफ़) के बारे में तुम्हारा एतिबार कर चुका हूँ। सो अल्लाह (के सुपुर्द, वही) सबसे बढ़कर निगहबान है, और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। **(64)**

1. ख़ुलासा यह कि मेरी पाकीज़गी और पाकदामनी मेरे नफ़्स का ज़ाती कमाल नहीं कि इसके ख़िलाफ़ हो ही न सके, बल्कि अल्लाह की रहमत व इनायत का असर है, इसलिए वह बुराई का हुक्म नहीं करता वरना जैसे औरों के नुफ़ूस हैं वैसा ही मेरा होता।
2. चुनाँचे बजाय इसके कि उनको कोई ख़ास ओ़हदा देता जैसे अपने पूरे इख़्तियारात हर क़िस्म के दे दिए, गोया हक़ीक़त में बादशाह यही हो गए। अगरचे बराये नाम वह बादशाह रहा, और यह अ़ज़ीज़ के ओ़हदे से मश्हूर हुए। इससे मालूम हुआ कि जब किसी काम की अपने अन्दर क़ाबलियत देखें तो खुद उसकी दरख़्वास्त जायज़ है, मगर मक़सूद नफ़ा पहुँचाना हो, न कि नफ़्स-परवरी।
3. यानी या तो वह वक़्त था कि कुएँ में क़ैद थे, फिर अ़ज़ीज़ की मातहती में बन्दी रहे, फिर क़ैदख़ाने में बन्द रहे। और या आज यह ख़ुदमुख़्तारी और आज़ादी इनायत हुई।
4. यानी दुनिया में भी नेकी का अज्र है कि पाकीज़ा ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाते हैं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 438 पर)**

लहाफ़िज़ून **(63)** क़ा-ल हल् आमनुकुम् अ़लैहि इल्ला कमा अमिन्तुकुम् अ़ला अख़ीहि मिन् क़ब्लु, फ़ल्लाहु ख़ैरुन् हाफ़िज़ंव्-व हु-व अर्हमुर्-राहिमीन **(64)** व लम्मा फ़-तहू मता-अ़हुम् व-जदू बिज़ाअ़-तहुम् रुद्दत् इलैहिम्, क़ालू या अबाना मा नब्ग़ी, हाज़िही बिज़ा-अ़तुना रुद्दत् इलैना व नमीरु अह्लना व नह़्फ़ज़ु अख़ाना व नज़्दादु कै-ल बअ़ीरिन्, ज़ालि-क कैलुंय्यसीर **(65)** क़ा-ल लन् उर्सि-लहू म-अ़कुम् हत्ता तुअ्तूनि मौसिक़म्-मिनल्लाहि ल-तअ्तुन्ननी बिही इल्ला अंय्युहा-त बिकुम् फ़-लम्मा आतौहु मौसि-क़हुम् क़ालल्लाहु अ़ला मा नक़ूलु वकील **(66)** व क़ा-ल या बनिय्-य ला तद्ख़ुलू मिम्-बाबिंव्-वाहिदिंव्- वद्ख़ुलू मिन् अब्वाबिम् मु-तफ़र्रि-क़तिन्, व मा उग़्नी अ़न्कुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन्, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, अ़लैहि तवक्कल्तु व अ़लैहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मु-तवक्किलून **(67)** व लम्मा द-ख़लू मिन् हैसु अ-म-रहुम् अबूहुम्, मा का-न युग़्नी अ़न्हुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन् इल्ला हा-जतन् फ़ी नफ़्सि यअ़्क़ू-ब क़ज़ाहा, व इन्नहू लज़ू अ़िल्मिल्-लिमा अ़ल्लम्नाहु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून **(68)** ❖

خَيْرٌ حٰفِظًا ۖ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ
وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ۗ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ۗ هٰذِهٖ
بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ
بَعِيْرٍ ۗ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ
مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ
مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ يٰبَنِيَّ
لَا تَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۗ
وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۗ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ
اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ۗ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً
فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ۗ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ
اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا
جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ
مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا
تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ

ع ٨ ١١ ٢

व लम्मा द-ख़लू अ़ला यूसु-फ़ आवा इलैहि अख़ाहु क़ा-ल इन्नी अ-न अख़ू-क फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यअ़्मलून **(69)** फ़-लम्मा जह्ह-ज़हुम् बि-जहाज़िहिम् ज-अ़लस्सिक़ाय-त फ़ी रह़्लि अख़ीहि सुम्-म अज़्ज़-न मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहल्-अ़ीरु इन्नकुम् लसारिक़ून **(70)** क़ालू व अक़्बलू अ़लैहिम् माज़ा तफ़्क़िदून **(71)** क़ालू नफ़्क़िदु सुवाअ़ल्-मलिकि व लिमन्

और (इस गुफ़्तगू के बाद) जब उन्होंने अपना सामान खोला तो (उसमें) उनको उनकी जमा-पूँजी (भी) मिली कि उन्हीं को वापस कर दी गई। कहने लगे कि ऐ अब्बा! (लीजिए) और हमको क्या चाहिए, यह हमारी जमा-पूँजी भी तो हम ही को लौटा दी गई है, और अपने घर वालों के वास्ते (और) रसद लाएँगे और अपने भाई की ख़ूब हिफ़ाज़त रखेंगे, और एक ऊँट का बोझ ग़ल्ला और ज़्यादा लाएँगे, यह थोड़ा-सा ग़ल्ला है। **(65)** उन्होंने (यानी याक़ूब अ़लैहि. ने) फ़रमाया कि उस वक़्त तक हरगिज़ इसको तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक कि अल्लाह की क़सम खाकर मुझको पक्का क़ौल न दोगे कि तुम इसको ज़रूर ले ही आओगे, हाँ अगर घिर ही जाओ (तो मजबूरी है)। (चुनाँचे सबने इसपर क़सम खाई) सो जब वे क़सम खाकर उन्हें (यानी अपने बाप को) क़ौल दे चुके तो उन्होंने फ़रमाया कि हम लोग जो कुछ बात-चीत कर रहे हैं यह सब अल्लाह ही के हवाले है।[1] **(66)** और (चलते वक़्त) उन्होंने (यानी याक़ूब ने उनसे) फ़रमाया कि ऐ मेरे बेटो! सब-के-सब एक ही दरवाज़े से मत जाना, बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से जाना,[2] और मैं ख़ुदा के हुक्म को तुमपर से टाल नहीं सकता। हुक्म तो बस अल्लाह ही का (चलता) है, (बावजूद इस ज़ाहिरी तदबीर के दिल से) उसी पर भरोसा रखता हूँ, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।[3] **(67)** और जब (मिस्र पहुँचकर) जिस तरह उनके बाप ने कहा था (उसी तरह शहर के) अन्दर दाख़िल हुए (तो बाप का अरमान पूरा हो गया, बाक़ी) उनको (यानी उनके बाप को उन्हें यह तदबीर बतलाकर) उनसे ख़ुदा का हुक्म टालना मक़सूद न था लेकिन याक़ूब (अ़लैहिस्सलाम) के जी में (तदबीर के दर्जे में) एक अरमान (आया) था जिसको उन्होंने ज़ाहिर कर दिया, और वह बेशक बड़े आ़लिम थे, इस वजह से कि हमने उनको इल्म दिया था,[4] लेकिन अक्सर लोग इसका इल्म नहीं रखते।[5] **(68)** ❖

और जब ये लोग (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई) यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने भाई को अपने साथ मिला लिया (और तन्हाई में उनसे) कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ, सो ये लोग जो कुछ (बद-सुलूकी) करते रहे हैं उसका रंज मत करना।[6] **(69)** फिर जब उन्होंने (यानी यूसुफ़ अ़लैहि. ने) उनका सामान तैयार कर दिया तो पानी पीने का बरतन अपने भाई के सामान में रख दिया।[7] फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम ज़रूर चोर हो। **(70)** वे उन (तलाश करने वालों) की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है। **(71)** उन्होंने कहा कि हमको बादशाही पैमाना नहीं

(पृष्ठ 436 का शेष) **5.** ग़रज़ यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने बाइख़्तियार होकर ग़ल्ला पैदा कराना और जमा कराना शुरू किया और सात साल के बाद अकाल शुरू हुआ, यहाँ तक कि दूर-दूर से यह ख़बर सुनकर कि मिस्र में हुकूमत की तरफ़ से ग़ल्ला फ़रोख़्त होता है, गिरोह के गिरोह लोग आना शुरू हुए और किनआ़न में भी अकाल पड़ा तो यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई बिनयामीन के अ़लावा ग़ल्ला लेने मिस्र आए। अगली आयतों में दूर तक इसी वाक़िए को बयान किया गया है।

6. पस अगर तुम्हारा वह भाई आएगा तो उसको भी पूरा हिस्सा दूँगा, और उसकी ख़ूब ख़ातिर-मुदारात करूँगा, जैसा कि तुमने अपने साथ देखा।

7. तो मैं समझूँगा कि तुम मुझको धोखा देकर ग़ल्ला ज़्यादा लेना चाहते थे।

8. चूँकि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को उनका दोबारा आना और उनके भाई का लाना मन्ज़ूर था इसलिए कई तरह से इसकी तदबीर की, अव्वल वायदा किया कि अगर उसको लाओगे तो उसका हिस्सा भी मिलेगा। दूसरे यह डाँट-डपट भी दी कि अगर न लाओगे तो अपना हिस्सा भी न पाओगे। तीसरे दाम जो नक़द के अ़लावा कोई और चीज़ थी वापस कर दिए, दो ख़्याल से एक यह कि इस एहसान व करम को ज़ेहन में रखकर फिर आएँगे, दूसरे इसलिए कि शायद इनके पास और दाम न हों और ख़ाली हाथ होने की वजह से फिर न आ सकें। लेकिन जब यह दाम होंगे तो इन्हीं को लेकर फिर आ सकते हैं।

9. हमारी बड़ी ख़ातिर हुई और ग़ल्ला भी मिला, मगर बिनयामीन का हिस्सा नहीं मिला बल्कि बिना बिनयामीन को साथ लाए आइन्दा भी बन्दिश कर दी गई।

1. यानी वही हमारे क़ौल व क़रार का गवाह है कि सुन रहा है, और वही इस क़ौल को **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 440 पर)**

जा-अ बिही हिम्लु बअ़ीरिंव्-व अ-न बिही ज़अ़ीम **(72)** क़ालू तल्लाहि ल-क़द् अ़लिम्तुम् मा जिअ्ना लिनुफ़्सि-द फ़िल्अर्ज़ि व मा कुन्ना सारिक़ीन **(73)** क़ालू फ़मा जज़ाउहू इन् कुन्तुम् काज़िबीन **(74)** क़ालू जज़ाउहू मंव्वुजि-द फ़ी रह्लिही फ़हु-व जज़ाउहू, कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन **(75)** फ़-ब-द-अ बिऔअि-यतिहिम् क़ब्-ल विआ-इ अख़ीहि सुम्मस्तख़्र-जहा मिंव्विआ-इ अख़ीहि, कज़ालि-क किद्ना लियूसु-फ़, मा का-न लियअ्ख़ु-ज़ अख़ाहु फ़ी दीनिल्-मलिकि इल्ला अंय्यशाअल्लाहु, नर्फ़अु द-रजातिम् मन्-नशा-उ, व फ़ौ-क़ कुल्लि ज़ी अ़िल्मिन् अ़लीम **(76)** क़ालू इंय्यस्रिक़् फ़-क़द् स-र-क़ अख़ुल्लहू मिन् क़ब्लु, फ़-असर्रहा यूसुफ़ु फ़ी नफ़्सिही व लम् युब्दिहा लहुम् क़ा-ल अन्तुम् शर्रुम्-मकानन् वल्लाहु अअ्लमु बिमा तसिफ़ून **(77)** क़ालू या अय्युहल्-अ़ज़ीज़ु इन्-न लहू अबन् शैख़न् कबीरन् फ़ख़ुज़् अ-ह-दना मकानहू इन्ना नरा-क मिनल्- मुह्सिनीन **(78)** क़ा-ल मआ़ज़ल्लाहि अन् नअ्ख़ु-ज़ इल्ला मंव्व-जद्ना मता-अ़ना अ़िन्दहू इन्ना इज़ल्-लज़ालिमून **(79)** ❖

وانا به زعيم (72) قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد في الارض
وما كنا سارقين (73) قالوا فما جزاؤه ان كنتم كذبين (74) قالوا
جزاؤه من وجد في رحله فهو جزاؤه كذلك نجزي
الظلمين (75) فبدا باوعيتهم قبل وعاء اخيه ثم استخرجها
من وعاء اخيه كذلك كدنا ليوسف ما كان لياخذ اخاه
في دين الملك الا ان يشاء الله نرفع درجت من نشاء و
فوق كل ذي علم عليم (76) قالوا ان يسرق فقد سرق اخ
له من قبل فاسرها يوسف في نفسه ولم يبدها لهم قال
انتم شر مكانا والله اعلم بما تصفون (77) قالوا يايها العزيز ان
له ابا شيخا كبيرا فخذ احدنا مكانه انا نرىك من المحسنين (78)
قال معاذ الله ان ناخذ الا من وجدنا متاعنا عنده انا
اذا لظلمون (79) فلما استيئسوا منه خلصوا نجيا قال كبيرهم
الم تعلموا ان اباكم قد اخذ عليكم موثقا من الله ومن
قبل ما فرطتم في يوسف فلن ابرح الارض حتى ياذن لي
ابي او يحكم الله لي وهو خير الحكمين (80) ارجعوا الى ابيكم
فقولوا يابانا ان ابنك سرق وما شهدنا الا بما علمنا وما

फ़लम्मस्तै-असू मिन्हु ख़-लसू नजिय्यन्, क़ा-ल कबीरुहुम् अलम् तअ्लमू अन्-न अबाकुम् क़द् अ-ख़-ज़ अ़लैकुम् मौसिक़म्-मिनल्लाहि व मिन् क़ब्लु मा फ़र्रत्तुम् फ़ी यूसु-फ़ फ़-लन् अब्र-हल्-अर्-ज़ हत्ता यअ्ज़-न ली अबी औ यह्कुमल्लाहु ली व हु-व ख़ैरुल्-हाकिमीन **(80)** इर्जिअू इला अबीकुम् फ़क़ूलू या अबाना इन्नब्न-क स-र-क़, व मा शहिद्ना

मिलता, (वह ग़ायब है) और जो शख़्स उसको (लाकर) हाज़िर करे उसको एक ऊँट के बोझ के बराबर ग़ल्ला मिलेगा, और मैं उस (के दिलवाने) का ज़िम्मेदार हूँ। **(72)** ये लोग कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम तुमको ख़ूब मालूम है कि हम लोग मुल्क में फ़साद फैलाने नहीं आए, और हम लोग चोरी करने वाले नहीं।[1] **(73)** उन (ढूँढने वाले) लोगों ने कहा (अच्छा) अगर तुम झूठे निकले तो उस चोर की क्या सज़ा? **(74)** उन्होंने जवाब दिया कि जिस शख़्स के सामान में मिले बस वही शख़्स अपनी सज़ा है,[2] हम लोग ज़ालिमों (यानी चोरों) को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।[3] **(75)** फिर उन्होंने (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) अपने भाई के सामान के थेले से पहले तलाशी की शुरूआ़त दूसरे भाइयों के (सामान के) थेलों से की, फिर (आख़िर में) उस (बरतन को) अपने भाई के (सामान के) थेले से बरामद कर लिया। हमने यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की ख़ातिर से इस तरह तदबीर फ़रमाई।[4] वह (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम) अपने भाई को उस (मिस्र के) बादशाह के क़ानून की रू से नहीं ले सकते थे,[5] मगर यह कि अल्लाह ही को मन्ज़ूर था। हम जिसको चाहते हैं (इल्म में) ख़ास दर्जों तक बढ़ा देते हैं, और तमाम इल्म वालों से बढ़कर एक बड़ा इल्म वाला है। **(76)** कहने लगे, (साहिब) अगर उसने चोरी की तो (ताज्जुब नहीं, क्योंकि) इसका एक भाई (था वह) भी (इसी तरह) इससे पहले चोरी कर चुका है। पस यूसुफ़ ने इस बात को (जो आगे आती है) अपने दिल मे पोशीदा रखा और इसको उनके सामने (ज़बान से) ज़ाहिर नहीं किया, यानी (दिल में) यूँ कहा कि उस (चोरी) के दर्जे में तुम तो और भी ज़्यादा बुरे हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो उस (की हक़ीक़त) का अल्लाह ही को ख़ूब इल्म है।[6] **(77)** कहने लगे कि ऐ अ़ज़ीज़! इस (बिनयामीन) का एक बहुत बूढ़ा बाप है, सो (आप ऐसा कीजिए कि) इसकी जगह हम में से एक को रख लीजिए, (और अपना गुलाम बना लीजिए) हम आपको नेक-मिज़ाज देखते हैं। **(78)** उन्होंने (यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) कहा कि ऐसी (बेइन्साफ़ी की) बात से ख़ुदा बचाए कि जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है उसके सिवा दूसरे शख़्स को पकड़ कर रख लें, इस हालत में तो हम बड़े बेइन्साफ़ समझे जाएँगे। **(79)** ❖

फिर जब उनको उनसे (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से) बिलकुल उम्मीद न रही (कि बिनयामीन को देंगे) तो (उस जगह से) अलग होकर आपस में मश्विरा करने लगे। उन सबमें जो बड़ा था उसने कहा, क्या तुमको मालूम नहीं तुम्हारे बाप तुमसे ख़ुदा की क़सम खिलाकर पक्का क़ौल ले चुके हैं, और इससे पहले यूसुफ़ के बारे में तुम किस क़द्र कोताही कर ही चुके हो। सो मैं तो इस ज़मीन से टलता नहीं जब तक कि मेरे बाप मुझको (हाज़िरी की) इजाज़त न दें, या अल्लाह तआ़ला मेरे लिए इस मुश्किल को सुलझा दे, और वही ख़ूब सुलझाने वाला है। **(80)** तुम वापस अपने बाप के पास जाओ, और (जाकर उनसे) कहो कि अब्बा! आपके साहिबज़ादे

(पृष्ठ 438 का शेष) पूरा कर सकता है। इस इर्शाद से दो मक़सद हुए, अव्वल अपने क़ौल का पास व लिहाज़ रखने की तरग़ीब व तंबीह कि अल्लाह को हाज़िर-नाज़िर समझने से यह बात होती है, और दूसरे इस तदबीर की हद का आख़िरी दर्जा तक़दीर को क़रार देना जो कि तवक्कुल का हासिल है। ग़रज़ मिस्र के सफ़र को मय बिनयामीन सब दोबारा तैयार हुए।

2. बाज़ बुरी चीज़ों जैसे बुरी नज़र वग़ैरह से बचने की यह सिर्फ़ एक ज़ाहिरी तदबीर है।

3. यानी तुम भी उसी पर भरोसा रखना, तदबीर पर नज़र मत करना।

4. पस वह इल्म के ख़िलाफ़ तदबीर को एतिक़ादी तौर पर हक़ीक़तन असर करने वाली कब समझ सकते थे।

5. बल्कि जहालत की वजह से तदबीर को असल असर करने वाली एतिक़ाद कर लेते हैं। यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि पहली बार जो ये ग़ल्ला लेने गए थे उस वक़्त याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने उनसे यह क्यों न कहा कि एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना? इसका जवाब यह है कि पहली बार मिस्र वाले उनको पहचानते नहीं थे, इसलिए किसी ने उनकी तरफ़ ध्यान भी न किया था। इस बार जो यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उनके साथ इनायत का ख़ास बर्ताव किया तो उनपर नज़रें पड़ने लगीं, और थे सब हसीन व ख़ूबसूरत, इसलिए बुरी नज़र और हसद वग़ैरह का अन्देशा हुआ।

6. क्योंकि अब तो अल्लाह ने हमको मिला दिया है, अब सब ग़म भुला देना चाहिए। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के साथ बद-सुलूकी तो ज़ाहिर और मश्हूर है, रहा बिनयामीन के साथ या तो **(पृष्ठ 438 की बक़िया और पृष्ठ 440 की तफ़सीर पृष्ठ 442-446 पर)**

इल्ला बिमा अ़लिम्ना व मा कुन्ना लिल्ग़ैबि हाफ़िज़ीन **(81)** वस्अलिल्-क़र्य-तल्लती कुन्ना फ़ीहा वल्‌ओ़ीरल्लती अक़्बल्ना फ़ीहा, व इन्ना लसादिक़ून **(82)** क़ा-ल बल् सव्वलत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रन्, फ़-सब्रुन् जमीलुन्, अ़सल्लाहु अंय्यअ्ति-यनी बिहिम् जमीअ़न्, इन्नहू हुवल् अ़लीमुल्-हकीम **(83)** व तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या अ-सफ़ा अ़ला यूसु-फ़ वब्यज़्ज़त् अ़ैनाहु मिनल्-हुज़्नि फ़हु-व कज़ीम **(84)** क़ालू तल्लाहि तफ़्तउ तज़्कुरु यूसु-फ़ हत्ता तकू-न ह-रज़न् औ तकू-न मिनल्-हालिकीन **(85)** क़ा-ल इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि व अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्लमून **(86)** या बनिय्यज़्हबू फ़-तहस्ससू मिंय्यूसु-फ़ व अख़ीहि व ला तै-असू मिर्रौहिल्लाहि, इन्नहू ला यै-असू मिर्रौहिल्लाहि इल्लल् क़ौमुल्-काफ़िरून **(87)** फ़-लम्मा द-ख़लू अ़लैहि क़ालू या अय्युहल्-अ़ज़ीज़ु मस्सना व अह्ल-नज़्ज़ुर्रु व जिअ्ना बिबिज़ा-अ़तिम्-मुज़्जातिन् फ़औफ़ि लनल्कै-ल व तसद्दक़् अ़लैना, इन्नल्ला-ह यज्ज़िल् मु-तसद्दिक़ीन **(88)** क़ा-ल हल्

وما ابرئ ١٣ ٢٢٢ يوسف ١٢

كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ
الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ
اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ
جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى
عَلٰي يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝
قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ
تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ
اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا
مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ
مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا
يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ
فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝
قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ۝
قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ۭ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ قَدْ
مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۭ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا

منزل ٣

अ़लिम्तुम् मा फ़अ़ल्तुम् बियूसु-फ़ व अख़ीहि इज़् अन्तुम् जाहिलून **(89)** क़ालू अ-इन्न-क ल-अन्-त यूसुफ़ु, क़ा-ल अ-न यूसुफ़ु व हाज़ा अख़ी, क़द् मन्नल्लाहु अ़लैना, इन्नहू मंय्यत्तक़ि व यस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन **(90)** क़ालू तल्लाहि ल-क़द् आस-रकल्लाहु अ़लैना व इन् कुन्ना लख़ातिईन **(91)** क़ा-ल ला तस्री-ब

(बिनयामीन) ने चोरी की, (इसलिए गिरफ़्तार हुए) और हम तो वही बयान करते हैं जो हमको (देखने से) मालूम हुआ है, और हम ग़ैब की बातों के तो हाफ़िज़ नहीं थे। **(81)** और उस बस्ती (यानी मिस्र) वालों से पूछ लीजिए जहाँ हम (उस वक़्त) मौजूद थे, और उस क़ाफ़िले वालों से पूछ लीजिए जिनमें हम शामिल होकर (यहाँ) आए हैं।[1] और यक़ीन जानिए कि हम बिलकुल सच कहते हैं। **(82)** वह (यानी याक़ूब अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाने लगे कि बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली, सो सब्र ही करूँगा, (जिसमें शिकायत का नाम न होगा), (मुझको) अल्लाह से उम्मीद है कि उन सबको मुझ तक पहुँचा देगा, (क्योंकि) वह ख़ूब वाक़िफ़ है,[2] बड़ी हिक्मत वाला है।[3] **(83)** और उनसे दूसरी तरफ़ रुख़ कर लिया और कहने लगे कि हाय यूसुफ़, अफ़सोस! और ग़म से (रोते-रोते) उनकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं, और वह (ग़म से जी ही जी में) घुटा करते थे।[4] **(84)** (बेटे) कहने लगे, ख़ुदा की क़सम (मालूम होता है) तुम हमेशा ही यूसुफ़ की यादगारी में लगे रहोगे, यहाँ तक कि घुल-घुलकर जान होंठों पर आ जाएगी या यह कि बिलकुल मर ही जाओगे।[5] **(85)** उन्होंने (यानी याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मैं तो अपने रंज व ग़म की सिर्फ़ अल्लाह से शिकायत करता हूँ और अल्लाह की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। **(86)** ऐ मेरे बेटो! जाओ यूसुफ़ और उनके भाई की तलाश करो, और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वही लोग नाउम्मीद होते हैं जो काफ़िर हैं। **(87)** फिर जब वे उनके (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के) पास पहुँचे। कहने लगे ऐ अ़ज़ीज़! हमको और हमारे घर वालों को (अकाल की वजह से) बड़ी तकलीफ़ पहुँच रही है, और हम कुछ यह निकम्मी "यानी बेकार-सी और मामूली" चीज़ लाए हैं, सो आप पूरा ग़ल्ला दे दीजिए और हमको ख़ैरात (समझकर) दे दीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ैरात देने वालों को (बेहतरीन) बदला देता है।[6] **(88)** उन्होंने (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, (कहो) वह भी तुमको याद है जो कुछ तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ (बर्ताव) किया था, जबकि तुम्हारी जहालत का ज़माना था।[7] **(89)** कहने लगे, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ़ हो। उन्होंने फ़रमाया, (हाँ) मैं यूसुफ़ हूँ और यह (बिनयामीन) मेरा (हक़ीक़ी) भाई है। हमपर अल्लाह तआ़ला ने बड़ा एहसान किया,[8] वाक़ई जो शख़्स गुनाहों से बचता है और सब्र करता है तो अल्लाह ऐसे नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं किया करता।[9] **(90)** वे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम कुछ शक नहीं कि तुमको अल्लाह तआ़ला ने हमपर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई,[10] और बेशक हम (इसमें) ख़तावार थे। **(91)** उन्होंने

(पिछले पृष्ठ का शेष) उनको भी कुछ तकलीफ़ दी हो, वरना यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की जुदाई क्या उनके हक़ में कुछ कम तकलीफ़ थी। फिर दोनों भाइयों ने मश्विरा किया कि कोई ऐसी सूरत हो कि बिनयामीन यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के पास रहें, क्योंकि वैसे रहने में तो और भाइयों के क़सम खाने और क़ौल व क़रार की वजह से इसरार होगा, नाहक़ का झगड़ा होगा। फिर अगर वजह भी ज़ाहिर हो गई तो राज़ खुला और अगर पोशीदा रही तो याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का रंज बढ़ेगा कि बिला सबब क्यों रखे गए या क्यों रहे। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तदबीर तो है मगर ज़रा-सी तुम्हारी बदनामी है। बिनयामीन ने कहा, कुछ परवाह नहीं। ग़रज़ उनमें यह मामला क़रार पा गया जिसका बयान अगली आयत में है।

7. वही बरतन पैमाना ग़ल्ला देने का भी था।

(तफ़सीर पृष्ठ 440) **1.** यानी हमारा यह तरीक़ा और आ़दत नहीं।

2. यानी चोरी के बदले में ख़ुद उसकी ज़ात को माल वाला अपना गुलाम बना ले।

3. यानी हमारी शरीअ़त में यही मसला और अ़मल है।

4. यानी अगरचे यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम बड़े आ़लिम व अ़क़्लमन्द थे, मगर फिर भी हमारी तरफ़ से तदबीर सुझाए जाने के मोहताज थे, इसलिए कि किसी का इल्म ज़ाती और ग़ैर-महदूद नहीं।

5. दुर्रे मन्सूर में मुजाहिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि से नक़ल किया गया है कि मिस्र का बादशाह मुसलमान हो गया था, लेकिन 'मा का-न लियाअ़ख़ु-ज़....से मालूम होता है कि यह रिवायत सही नहीं, **(पृष्ठ 440 की बक़िया और पृष्ठ 442 की तफ़सीर पृष्ठ 444-448 पर)**

अ़लैकुमुल्-यौ-म, यग़्फ़िरुल्लाहु लकुम् व हु-व अ़र्हमुर्-राहिमीन (92) इज़्हबू बि-क़मीसी हाज़ा फ़अल्क़ूहु अ़ला वज्हि-अबी यअ्ति बसीरन् वअ्तूनी बिअह्लिकुम् अज्मईन (93) ❖

व लम्मा फ़-स-लतिल्-ईरु क़ा-ल अबूहुम् इन्नी ल-अजिदु री-ह यूसु-फ़ लौ ला अन् तुफ़न्निदून (94) क़ालू तल्लाहि इन्न-क लफ़ी ज़लालिकल्-क़दीम ◆ (95) फ़-लम्मा अन् जाअल्-बशीरु अल्क़ाहु अ़ला वज्हिही फ़र्तद्-द बसीरन्, क़ा-ल अलम् अक़ुल् लकुम् इन्नी अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्लमून (96) क़ालू या अबानस्तग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना इन्ना कुन्ना ख़ातिईन (97) क़ा-ल सौ-फ़ अस्तग़्फ़िरु लकुम् रब्बी, इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम (98) फ़-लम्मा द-ख़लू अ़ला यूसु-फ़ आवा इलैहि अ-बवैहि व क़ालद्ख़ुलू मिस्-र इन्शा-अल्लाहु आमिनीन (99) व र-फ़-अ़ अ-बवैहि अ़लल्- अ़र्शि व ख़र्रू लहू सुज्जदन् व क़ा-ल या अ-बति हाज़ा तअ्वीलु रुअ्या-य मिन् क़ब्लु, क़द् ज-अ़-लहा रब्बी हक़्क़न्, व क़द् अह्स-न बी इज़् अख़्र-जनी मिनस्सिज्नि व जा-अ बिकुम् मिनल्बद्वि मिम्-बअ्दि अन् न-ज़ग़श्शैतानु बैनी व बै-न इख़्वती, इन्-न रब्बी लतीफ़ुल्लिमा यशा-उ, इन्नहू हुवल् अ़लीमुल्-हकीम (100) रब्बि क़द् आतैतनी मिनल्मुल्कि व अ़ल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिल्- अहादीसि फ़ातिरस्समावाति वल्अर्ज़ि, अन्-त वलिय्यी फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति तवफ़्फ़नी मुस्लिमंव्-व अल्हिक़्नी बिस्सालिहीन (101)

لَخٰطِئِيْنَ ۝ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ
اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ
اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَلَمَّا فَصَلَتِ
الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ۝
قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ۝ فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ
اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْۤ
اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ
اِنَّا كُنَّا خٰطِئِيْنَ ۝ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ
ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ؕ ۝ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى
الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ
مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ
مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ
بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ۝ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ
الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا

منزل ٣

(यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि तुमपर आज कोई इल्ज़ाम नहीं,[1] अल्लाह तआ़ला तुम्हारा कुसूर माफ़ करे, और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।[2] (92) अब तुम मेरा यह कुर्ता (भी) लेते जाओ और इसको मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, (इससे) उनकी आँखें रोशन हो जाएँगी,[3] और अपने (बाक़ी) घर वालों को (भी) सबको मेरे पास ले आओ। (93) ❖

और जब क़ाफ़िला चला तो उनके बाप ने कहना शुरू किया कि अगर तुम मुझको बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो (एक बात कहूँ कि) मुझको तो यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की ख़ुशबू आ रही है।[4] (94) वे (पास वाले) कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम आप तो अपने उसी पुराने ग़लत ख़्याल में मुब्तला हैं। ◆ (95) पस जब ख़ुशख़बरी लाने वाला आ पहुँचा तो (आते ही) उसने वह कुर्ता उनके मुँह पर (लाकर) डाल दिया। पस फ़ौरन ही उनकी आँखें खुल गईं, और (बेटों से) फ़रमाया, क्यों मैंने तुमसे कहा न था कि अल्लाह तआ़ला की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (96) सब बेटों ने कहा कि ऐ हमारे बाप! हमारे लिए (ख़ुदा से) हमारे गुनाहों की मग़्फ़िरत की दुआ़ कीजिए, हम बेशक ख़तावार थे।[5] (97) उन्होंने (यानी याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया जल्द ही तुम्हारे लिए अपने रब से मग़्फ़िरत की दुआ़ करूँगा, बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।[6] (98) फिर जब ये सब-के-सब यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने माँ-बाप को (अदब के तौर पर) अपने पास जगह दी, और कहा कि सब मिस्र में चलिए (और) ख़ुदा को मन्ज़ूर है तो (वहाँ) अमन-चैन से रहिए। (99) और अपने माँ-बाप को (शाही) तख़्त पर ऊँचा बिठाया, और सब-के-सब उनके (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के) आगे सज्दे में गिर गए,[7] और उन्होंने (यानी यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने) कहा कि ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो पहले ज़माने में देखा था, जिसको मेरे रब ने सच्चा कर दिया। और उसने (यानी ख़ुदा ने) मेरे साथ एहसान किया कि (एक तो) उसने मुझे क़ैद से निकाला और (दूसरा यह कि) तुम सबको बाहर से (यहाँ) लाया। (यह सब कुछ) इसके बाद (हुआ) कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था,[8] बेशक मेरा रब जो चाहता है उसकी उम्दा तदबीर करता है, बेशक वह बड़ा इल्म वाला (और) हिक्मत वाला है।[9] (100) ऐ मेरे परवर्दिगार! तूने मुझको हुकूमत का बड़ा हिस्सा दिया और मुझको ख़्वाबों की ताबीर देना तालीम फ़रमाया (जो कि एक बड़ा इल्म है), ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, मुझको पूरी फ़रमाँबरदारी की हालत में दुनिया से उठा ले और मुझको ख़ास नेक बन्दों में शामिल कर ले।[10] (101) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) यह क़िस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम आपको वह्य के ज़रिये से बतलाते

(पिछले पृष्ठ का शेष) वरना इस्लाम के बाद अपना क़ानून ग़ैर-शरई क्यों रखता। अलबत्ता अगर यह कहा जाए कि आ़म रिआ़या से मग़लूब रहा हो इसलिए क़ानून जारी न कर सका हो तो मुम्किन है। दूसरे यह कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अपना शरई क़ानून जारी करने के मुख़्तार न थे तो हुकूमत का ओ़हदा क्यों लिया। जवाब यह है कि शरई क़ानून जारी न करने से यह लाज़िम नहीं आता कि ग़ैर-शरई क़ानून जारी करते हों, और एतिराज़ का मक़ाम यह दूसरी चीज़ हो सकती है। दूसरे जहाँ शरई तौर पर हद 'यानी इस्लामी सज़ा का क़ानून' हो और क़ानूनन् सज़ा हो और हद का इख़्तियार न हो तो सज़ा के न होने से उसका वजूद ग़नीमत है, उसको ग़ैर-मुख़्तार के लिए बग़ैर शरई क़ानून का हाकिम न कहेंगे।

6. यानी हम दोनों भाइयों से तो चोरी का जुर्म नहीं हुआ और तुमने तो इतना बड़ा काम किया कि कोई माल ग़ायब करता है तुमने तो आदमी ग़ायब कर दिया कि मुझको बाप से बिछड़ा दिया। और ज़ाहिर है कि आदमी की चोरी माल की चोरी से ज़्यादा बुरी है। और यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाइयों ने यह जो कहा कि इसके भाई ने भी चोरी की थी, इसकी हक़ीक़त दुर्रे मन्सूर में यह लिखी है कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को उनकी फूफी परवरिश करती थीं, जब होशियार हुए तो याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें वापस लेना चाहा, लेकिन वह अपने पास रखना चाहती थीं इसलिए उनकी कमर में एक पटका कपड़ों के अन्दर बाँधकर मश्हूर कर दिया कि पटका गुम हो गया, और जब तलाशी ली तो उनकी कमर में निकला (पृष्ठ 440 की बक़िया और पृष्ठ 442, 444 की तफ़सीर पृष्ठ 446-450 पर)

ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहि इलै-क व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् अज्मअू अम्रहुम् व हुम् यम्कुरून **(102)** व मा अक्सरुन्नासि व लौ हरस्-त बिमुअ्मिनीन **(103)** व मा तस्अलुहुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन्, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-आ़लमीन **(104)** ❖

व क-अय्यिम्-मिन् आयतिन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि यमुर्रू-न अ़लैहा व हुम् अ़न्हा मुअ्रिज़ून **(105)** व मा युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिल्लाहि इल्ला व हुम् मुश्रिकून **(106)** अ-फ़-अमिनू अन् तअ्ति-यहुम् ग़ाशि-यतुम् मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि औ तअ्ति-यहुमुस्साअ़तु बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(107)** क़ुल् हाज़िही सबीली अद्अू इलल्लाहि, अ़ला बसीरतिन् अ-न व मनित्त-ब--अ़नी, व सुब्हानल्लाहि व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन **(108)** व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् मिन् अह्लिल्क़ुरा, अ-फ़लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, व लदारुल्-आख़िरति ख़ैरुल्-लिल्लज़ीनत्तक़ौ, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(109)** हत्ता इज़स्तै-असर्-रुसुलु व ज़न्नू अन्नहुम् क़द् कुज़िबू जा-अहुम् नस्रुना फ़नुज्जि-य मन् नशा-उ, व ला युरद्दु बअ्सुना अ़निल् क़ौमिल्-मुज्रिमीन **(110)** ल-क़द् का-न फ़ी क़-ससिहिम् अ़िब्रतुल्-लिउलिल्-अल्बाबि, मा का-न हदीसंय्युफ़्तरा व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै-न यदैहि व तफ़्सी-ल कुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह्म-तल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून **(111)** ❖

وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ
اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا
اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ
بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ
لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ
عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ
اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ
عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾
قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ
اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ
اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾
حَتّٰٓي اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا
جَاۗءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاۗءُ ۭ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۭ

ع ٥

وقف النبي عليه الصلوة والسلام

हैं, (और) आप उन (यूसुफ़ के भाइयों) के पास उस वक़्त मौजूद न थे जबकि उन्होंने अपना इरादा पुख़्ता कर लिया था और वे तदबीरें कर रहे थे।[1] **(102)** और अक्सर लोग ईमान नहीं लाते गो आपका कैसा ही जी चाहता हो। **(103)** और आप उनसे इसपर कुछ मुआवज़ा तो चाहते नहीं। यह (क़ुरआन) तो तमाम जहान वालों के लिए सिर्फ़ नसीहत है। **(104)** ❖

और बहुत-सी निशानियाँ हैं आसमानों में और ज़मीन में, जिनपर उनका गुज़र होता रहता है,[2] और वे उनकी तरफ़ (बिलकुल) तवज्जोह नहीं करते। **(105)** और अक्सर लोग जो ख़ुदा को मानते भी हैं तो इस तरह कि शिर्क भी करते जाते हैं।[3] **(106)** सो क्या फिर भी इस बात से मुत्मइन हुए (बैठे) हैं कि उनपर ख़ुदा के अ़ज़ाब की कोई ऐसी आफ़त आ पड़े जो उनको घेर ले या उनपर अचानक क़ियामत आ जाए और उनको (पहले से) ख़बर भी न हो।[4] **(107)** आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं (लोगों को) ख़ुदा की (तौहीद की) तरफ़ इस तौर पर बुलाता हूँ कि मैं दलील पर क़ायम हूँ, मैं भी और मेरे साथ वाले भी,[5] और अल्लाह (शिर्क से) पाक है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ।[6] **(108)** और हमने आपसे पहले मुख़्तलिफ़ बस्ती वालों में से जितने (रसूल) भेजे सब आदमी ही थे (कोई भी फ़रिश्ता न था), और (ये लोग जो बेफ़िक्र हैं, तो) क्या ये लोग मुल्क में (कहीं) चले-फिरे नहीं कि (अपनी आँखों से) देख लेते कि उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ जो इनसे पहले (काफ़िर) हो गुज़रे हैं, और अलबत्ता आख़िरत की दुनिया उन लोगों के लिए निहायत ख़ैर व फ़लाह की चीज़ है जो एहतियात रखते हैं, सो क्या तुम इतना भी नहीं समझते।[7] **(109)** यहाँ तक कि जब पैग़म्बर (इस बात से) मायूस हो गए और उन पैग़म्बरों को गुमान ग़ालिब हो गया कि हमारी समझ ने ग़लती की, उनको हमारी मदद पहुँची,[8] फिर (उस अ़ज़ाब से) हमने जिसको चाहा वह बचा लिया गया,[9] और हमारा अ़ज़ाब मुज्रिम लोगों से नहीं हटता।[10] **(110)** उन (नबियों और पहली उम्मतों) के क़िस्से में समझदार लोगों के लिए (बड़ी) इबरत है। यह क़ुरआन (जिसमें क़िस्से हैं) कोई घड़ी हुई बात तो है नहीं (कि इससे इबरत न होती) बल्कि इससे पहले जो (आसमानी) किताबें हो चुकी हैं यह उनकी तस्दीक़ करने वाला है और हर ज़रूरी बात का खुलासा करने वाला है, और ईमान वालों के लिए हिदायत का ज़रिया और रहमत है। **(111)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) और उस शरीअ़त के कानून के मुवाफ़िक़ यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को फूफी के क़ब्ज़े में रहना पड़ा, यहाँ तक कि उनकी फूफी ने वफ़ात पाई और आप याकूब अ़लैहिस्सलाम के पास आ गए।

(तफ़सीर पृष्ठ 442) **1.** मालूम होता है कि किनआ़न या आस-पास के और लोग भी ग़ल्ला लेने गए होंगे।

2. इसलिए उसको सबकी ख़बर है कि कहाँ-कहाँ और किस-किस हाल में हैं।

3. वह जब मिलाना चाहेगा तो हज़ारों असबाब व तदबीरें दुरुस्त कर देगा।

4. क्योंकि ज़्यादा रोने से आँखों की सियाही गुम हो जाती है और आँखें बेरौनक़ या बिलकुल बेनूर हो जाती हैं, और ग़म की शिद्दत के साथ जब बर्दाश्त भी शिद्दत की होगी जैसा कि साबिरीन की शान है तो कज़्म (यानी घुटन) की कैफ़ियत पैदा होगी।

5. याकूब अ़लैहिस्सलाम का मख़्लूक़ की मुहब्बत में इस क़द्र रोना वस्वसे का सबब न हो, क्योंकि मुहब्बत एक बेइख़्तियारी चीज़ है और रोना भी दिल के नर्म होने और रहम की दलील है, और ख़ासकर उस वक़्त जबकि मुहब्बत का सबब कोई दीनी मामला हो। और किसी को शुब्हा न हो कि जब याकूब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया थाः 'फ़-सब्रुन् जमील' तो फिर ज़बान पर शिकायत क्यों लाए। इसका जवाब ख़ुद क़ुरआन में है किः 'अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि' यानी मख़्लूक़ के पास शिकायत ले जाना सब्रे जमील के मनाफ़ी है न कि ख़ालिक़ की तरफ़ रुजू करना, इसलिए कि यह तो दुआ़ और अल्लाह से माँगना है जो कि मतलूब है।

6. यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने जो उनके ये आ़जिज़ी भरे अल्फ़ाज़ सुने तो न रहा गया और बेइख़्तियार चाहा कि अब उनसे खुल जाऊँ और अ़जब नहीं कि दिल के नूर से मालूम हो गया हो कि इस बार उनको तजस्सुस भी है, और यह मालूम हो गया हो कि अब जुदाई का ज़माना ख़त्म हो चुका। पस तआ़रुफ़ (परिचय) की तम्हीद के तौर पर यह बात फ़रमाई जो अगली आयत में ज़िक्र है।

7. यह सुनकर चकराए कि अ़ज़ीज़े मिस्र को **(पृष्ठ 442 की बक़िया और पृष्ठ 444, 446 की तफ़सीर पृष्ठ 448-454 पर)**

13 सूरतुर्-रअ़्दि 96

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 3614 अक्षर, 863 शब्द, 43 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

आलिफ़्-लाम्-मीम्-रा, तिल्-क आयातुल्-किताबि, वल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बिकल्-हक़्क़ु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (1) अल्लाहुल्लज़ी र-फ़अ़स्समावाति बिग़ैरि अ़-मदिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र, कुल्लुंय्यज्री लि-अ-जलिम्-मुसम्मन्, युदब्बिरुल्-अम्-र युफ़स्सिलुल्- आयाति लअ़ल्लकुम् बिलिक़ा-इ रब्बिकुम् तूक़िनून (2) व हुवल्लज़ी मद्दल्-अर्-ज़ व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि-य व अन्हारन्, व मिन् कुल्लिस्स-मराति ज-अ़-ल फ़ीहा ज़ौजैनिस्नैनि युग़्शिल्लैलन्नहा-र, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून (3) व फ़िल्अर्ज़ि क़ि-तअ़ुम् मु-तजाविरातुंव्-व जन्नातुम्-मिन् अअ़्नाबिंव्-व ज़र्अुंव्-व नख़ीलुन् सिन्वानुंव्-व ग़ैरु सिन्वानिंय्युस्क़ा बिमाइंव्वाहिदिन्, व नुफ़ज़्ज़िलु बअ़्ज़हा अ़ला बअ़्ज़िन् फ़िल्उकुलि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ़्क़िलून (4) व इन् तअ़्जब् फ़-अ़-जबुन् क़ौलुहुम् अ-इज़ा कुन्ना तुराबन् अ-इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन्, उलाइ-कल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् व उलाइकल्-अग़्लालु फ़ी अअ़्नाक़िहिम् व उलाइ-क

مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

سُورَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَآيَاتُهَا ٤٣ رُكُوعَاتُهَا ٦

الٓمٓرۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ ۗ وَالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُم بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا ۖ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾ وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَاوِرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِّنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾ ۞ وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ

13 सूरः रअ़द 96

सूरः रअ़द मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 43 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़्-लाम्-मीम्-रा।[1] यह (जो आप सुन रहे हैं) आयतें हैं (एक बड़ी) किताब (यानी क़ुरआन) की, और जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ़ से नाज़िल किया जाता है बिलकुल सच है, और लेकिन बहुत-से आदमी ईमान नहीं लाते। **(1)** अल्लाह ऐसा (क़ादिर है) कि उसने आसमानों को बिना सुतून के ऊँचा खड़ा कर दिया, चुनाँचे तुम इन (आसमानों) को (इसी तरह) देख रहे हो, फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ,[2] और सूरज व चाँद को काम में लगा दिया, हर एक मुक़र्ररा वक़्त पर चलता रहता है।[3] वही (अल्लाह) हर काम की तदबीर करता है, (और) दलीलों को साफ़-साफ़ बयान करता है ताकि तुम अपने रब के पास जाने का यक़ीन कर लो।[4] **(2)** और वह ऐसा है कि उसने ज़मीन को फैलाया और उस (ज़मीन) में पहाड़ और नहरें पैदा कीं, और उसमें हर क़िस्म के फूलों से दो-दो क़िस्म के पैदा किए,[5] रात (की अँधेरी) से दिन (की रोशनी) को छुपा देता है। इन (ज़िक्र हुए) उमूर में सोचने वालों के (समझने के) वास्ते (तौहीद पर) दलीलें (मौजूद) हैं। **(3)** और ज़मीन में पास-पास (और फिर) मुख़्तलिफ़ टुकड़े हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेतियाँ हैं और खजूरें हैं, जिनमें बाज़े तो ऐसे हैं कि एक तने से ऊपर जाकर दो तने हो जाते हैं और बाज़े में दो तने नहीं होते,[6] सबको एक ही तरह का पानी दिया जाता है, और हम एक को दूसरे पर फलों में फ़ौक़ियत "यानी बरतरी" देते हैं। इन (ज़िक्र हुए) उमूर में (भी) समझदारों के वास्ते (तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं।[7] **(4)** और (ऐ मुहम्मद!) अगर आपको ताज्जुब हो तो (वाक़ई) उनका यह क़ौल ताज्जुब के लायक़ है कि जब हम ख़ाक हो गए तो क्या हम फिर (क़ियामत के दिन) नए सिरे से पैदा होंगे। ये वे लोग हैं कि उन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया और ऐसे लोगों की गर्दनों में (दोज़ख़ में) तौक़ डाले जाएँगे, और ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं (और) वे उसमें हमेशा रहेंगे। **(5)** और ये लोग आ़फ़ियत से पहले आपसे मुसीबत (के नाज़िल होने) का तक़ाज़ा करते

(पिछले पृष्ठ का शेष) यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के वाक़िए से क्या सरोकार? उधर उस शुरू के ज़माने के ख़्वाब से एहतिमाल था ही कि शायद यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम किसी बड़े रुतबे को पहुँचें और हम सबको उनके सामने गर्दन झुकानी पड़े, इसलिए इस बात से शक हुआ और ग़ौर किया तो कुछ-कुछ पहचाना और वह बात कही जिसका आगे ज़िक्र है।

8. यानी हम दोनों को अव्वल सब्र व तक़्वे की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई, फिर उसकी बरकत से हमारी तकलीफ़ को राहत से और फूट को इजतिमा (संगठन) से और माल व ओ़हदे की कमी को माल व ओ़हदे की ज़्यादती से तब्दील फ़रमा दिया।

9. यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई पिछले तमाम वाक़िआ़त को याद करके शर्मिन्दा हुए और माज़िरत के तौर पर वह बात कहने लगे जो अगली आयत में है।

10. और वाक़ई आप इसी लायक़ थे।

(तफ़सीर पृष्ठ 444) **1.** यानी बेफ़िक्र रहो मेरा दिल साफ़ हो गया।

2. इसी दुआ़ से यह भी समझ में आ गया कि मैंने भी माफ़ कर दिया।

3. यह इसलिए फ़रमाया कि उनको बीनाई में ख़राबी आने का इल्म हो गया होगा, और याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का उस कुर्ते के डालने से बीना (यानी देखने वाला) हो जाना मोजिज़े के तौर पर था, और सही रिवायतों की बुनियाद पर कुर्ता कोई ख़ास न था, यही मामूली पहनने का था।

4. यह याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का मोजिज़ा था कि उस कुर्ते में यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के बदन का जो असर था वह महसूस हो गया, और चूँकि मोजिज़ा इख़्तियारी नहीं होता इसलिए उससे पहले यह एहसास न हुआ।

5. मतलब यह कि आप भी माफ़ कर दीजिए, क्योंकि आ़दतन किसी के लिए इस्तिग़फ़ार वही करता है जो ख़ुद भी कोई दारोगीर और पकड़ करना नहीं चाहता। **(पृष्ठ 444 की बक़िया और पृष्ठ 446, 448 की तफ़सीर पृष्ठ 450-456 पर)**

अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(5)** व यस्तअ़्जिलून-क बिस्सय्यि-अति क़ब्लल्-ह-सनति व क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिमुल्-मसुलातु, व इन्-न रब्ब-क लज़ू मग़्फ़ि-रतिल् लिन्नासि अ़ला जुल्मिहिम् व इन्-न रब्ब-क ल-शदीदुल्-अ़िक़ाब **(6)** व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही, इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरुंव्-व लिकुल्लि क़ौमिन् हाद **(7)** ❖

अल्लाहु यअ़्लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल्-अर्हामु व मा तज़्दादु, व कुल्लु शैइन् अ़िन्दहू बिमिक़्दार **(8)** आ़लिमुल्- ग़ैबि वश्शहादतिल् कबीरुल्-मु-तआ़ल **(9)** सवाउम्-मिन्कुम् मन् अ-सर्रल्-क़ौ-ल व मन् ज-ह-र बिही व मन् हु-व मुस्तख़्फ़िम् बिल्लैलि व सारिबुम्-बिन्नहार **(10)** लहू मुअ़क़्क़िबातुम् मिम्-बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही यह्फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला युग़य्यिरु मा बिक़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम्, व इज़ा अरादल्लाहु बिक़ौमिन् सूअन् फ़ला म-रद्-द लहू व मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वाल **(11)** हुवल्लज़ी युरीकुमुल्- बर्-क़ ख़ौफ़ंव्-व त-म-अंव्-व युन्शिउस्- सहाबस्- सिक़ाल **(12)** व युसब्बिहुर्रअ़्दु बिहम्दिही वल्मलाइ-कतु मिन् ख़ीफ़तिही व युर्सिलुस्सवाअ़ि-क़ फ़युसीबु बिहा मंय्यशा-उ व हुम् युजादिलू-न फ़िल्लाहि व हु-व शदीदुल्- मिहाल **(13)** लहू दअ़्वतुल्-हक़्क़ि, वल्लज़ी-न यद्अ़ू-न मिन् दूनिही ला यस्तजीबू-न लहुम् बिशैइन् इल्ला

فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٥﴾ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۗ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ
عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ إِنَّمَآ أَنْتَ مُنْذِرٌ وَّ
لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثٰى وَمَا تَغِيضُ ع
الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۗ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿٨﴾ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسَرَّ
الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ
بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُونَهٗ
مِنْ أَمْرِ اللّٰهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوا مَا
بِأَنْفُسِهِمْ ۗ وَإِذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ
طَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ
وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا
مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾ لَهٗ
دَعْوَةُ الْحَقِّ ۗ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ

❖ रु. 1/7/7

हैं, हालाँकि इनसे पहले (और काफ़िरों पर सज़ाओं के) वाक़िआत गुज़र चुके हैं। और यह बात भी यक़ीनी है कि आपका रब लोगों की ख़ताएँ बावजूद उनकी बेजा हरकतों के माफ़ कर देता है, और यह बात भी यक़ीनी है कि आपका रब सख़्त सज़ा देता है।[1] **(6)** और (ये) काफ़िर लोग (यूँ भी) कहते हैं कि उनपर (वह ख़ास) मोजिज़ा (जो हम चाहते हैं) क्यों नाज़िल नहीं किया गया, (हालाँकि) आप सिर्फ़ डराने वाले (नबी) हैं, और हर क़ौम के लिए हादी होते चले आए हैं।[2] **(7)** ❖

अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर रहती है जो कुछ किसी औ़रत को हमल ''यानी गर्भ'' रहता है,[3] और जो कुछ रहम ''यानी बच्चेदानी'' में कमी व बेशी होती है। और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाज़ से (मुक़र्रर) है। **(8)** वह (तमाम) छुपी और ज़ाहिर (चीज़ों) का जानने वाला (है), सबसे बड़ा (और) आ़लीशान है। **(9)** तुममें से जो शख़्स कोई बात चुपके से कहे और जो पुकारकर कहे, और जो शख़्स रात में कहे और जो दिन में चले-फिरे, ये सब (ख़ुदा के इल्म में) बराबर हैं।[4] **(10)** हर शख़्स (की हिफ़ाज़त) के लिए कुछ फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं जिनकी बदली होती रहती है, कुछ उसके आगे और कुछ उसके पीछे कि वे अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं।[5] वाक़ई अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम की (अच्छी) हालत में बदलाव नहीं करता जब तक कि वे लोग ख़ुद अपनी (सलाहियत की) हालत को नहीं बदल देते।[6] और जब अल्लाह किसी क़ौम पर मुसीबत डालना तजवीज़ कर लेता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत ही नहीं, और कोई उसके (यानी ख़ुदा के) सिवा उनका मददगार नहीं रहता।[7] **(11)** वह ऐसा है कि तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है, और वह बादलों को (भी) बुलन्द करता है जो (पानी से) भरे होते हैं। **(12)** और रअ़्द (फ़रिश्ता) उसकी तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करता है और (दूसरे) फ़रिश्ते (भी) उसके ख़ौफ़ से, और वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिसपर चाहे उन्हें गिरा देता है। और वे लोग अल्लाह के

(पिछले पृष्ठ का शेष) **6.** इससे उनका माफ़ कर देना भी मालूम हो गया। ग़रज़ सब तैयार होकर मिस्र को चल दिए और यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ख़बर सुनकर स्वागत के लिए मिस्र से बाहर तशरीफ़ ले गए और बाहर ही मुलाक़ात का बन्दोबस्त किया गया, जिसका बयान अगली आयत में है।

7. इसकी वजह कि पहली मुलाक़ात में सज्दा न किया और मिस्र पहुँचकर किया, यह थी कि पहली मुलाक़ात में मुहब्बत का ग़ल्बा था और मिस्र में यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अपने शाही तख़्त पर थे। और यह सज्दा बतौर सलाम के था, जो पहली उम्मतों में जायज़ था। यहाँ यह शुब्हा होता है कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने माँ-बाप से इतनी बड़ी ताज़ीम और अदब को क्योंकर गवारा किया? इसका जवाब यह है कि याक़ूब और यूसुफ़ अ़लैहिमस्सलाम दोनों को ख़्वाब से मालूम हुआ था कि ऐसा मामला होने वाला है, इसलिए ख़ुदाई मामलात में कुछ कहना मुम्किन न था। इसके बाद सब हँसी-ख़ुशी रहते रहे, यहाँ तक कि याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के इन्तिक़ाल का वक़्त आ पहुँचा और वह वसीयत के मुताबिक़ वफ़ात के बाद मुल्क शाम में लेजाकर अपने बुज़ुर्गों के पास दफ़न किए गए।

8. जिसका तक़ाज़ा यह था कि उम्र भर मेल-जोल और इत्तिफ़ाक़ न होता, लेकिन अल्लाह तआ़ला की इनायत से मिलाप हो गया।

9. वह अपने इल्म व हिक्मत से सब उमूर की तदबीर दुरुस्त कर देता है।

10. यानी जिस तरह दुनिया में मेरे सब काम बना दिए कि हुकूमत दी, इल्म दिया, इसी तरह आख़िरत के काम भी बना दीजिए और जो मेरे बुज़ुर्गों में बड़े-बड़े नबी हुए हैं उनमें मुझको पहुँचा दीजिए। अगर मौत का शौक़ अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात की तमन्ना के लिए हो तो जायज़ है।

(तफ़सीर पृष्ठ 446) **1.** यह यक़ीनी बात है कि आपने किसी से यह क़िस्सा सुना-सुनाया भी नहीं। पस यह साफ़ दलील है आपकी नुबुव्वत की और इस बात की कि आपके पास अल्लाह की तरफ़ से वह्य आती है।

2. यानी उनको देखते रहते हैं।

3. बिना तौहीद के ख़ुदा को मानना **(पृष्ठ 446 की बक़िया और पृष्ठ 448, 450 की तफ़सीर पृष्ठ 452-458 पर)**

कबासिति कफ़्फ़ैहि इललू-मा-इ लियब्लु-ग़ फ़ाहु व मा हु-व बिबालिग़िही, व मा दुआ़उल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल **(14)** व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअंव्-व कर्हंव्-व ज़िलालुहुम् बिल्ग़ुदुव्वि वल्आसाल ❑ **(15)** क़ुल् मर्रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि, क़ुलिल्लाहु, क़ुल् अ-फ़त्तख़ज़्तुम् मिन् दूनिही औलिया-अ ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् नफ़अंव्-व ला ज़र्रन्, क़ुल् हल् यस्तविल्-अअ़्मा वल्बसीरु अम् हल् तस्तविज़्ज़ुलुमातु वन्नूरु, अम् ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रका-अ ख़-लक़ू क-ख़ल्क़िही फ़-तशाबहल्-ख़ल्क़ु अ़लैहिम्, क़ुलिल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हुवल् वाहिदुल्-क़ह्हार **(16)** अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़सालत् औदि-यतुम् बि-क़-दरिहा फ़ह्त-मलस्सैलु ज़-बदर्-राबियन्, व मिम्मा यूक़िदू-न अ़लैहि फ़िन्नारिब्तिग़ा-अ हिल्यतिन् औ मताअ़िन् ज़-बदुम्- मिस्लुहू, कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहुल्-हक़्-क़ वल्बाति-ल, फ़-अम्मज़्ज़-बदु फ़-यज़्हबु जुफ़ा-अन् व अम्मा मा यन्फ़अ़ुन्ना-स फ़यम्कुसु फ़िल्अर्ज़ि, कज़ालि-क याज़्रिबुल्लाहुल्-अम्साल **(17)** लिल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिमुल्-हुस्ना, वल्लज़ी-न लम् यस्तजीबू लहू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्लहू म-अ़हू लफ़्तदौ बिही, उलाइ-क लहुम् सूउल्-हिसाबि व मअ्वाहुम् ज-हन्नमु, व बिअ्सल्-मिहाद ● **(18)** ❖

وما ابرئ ١٣ ٢٢٧ الرعد ١٣

بِشَیۡءٍ اِلَّا کَبَاسِطِ کَفَّیۡهِ اِلَی الۡمَآءِ لِیَبۡلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَ
مَا دُعَآءُ الۡکٰفِرِیۡنَ اِلَّا فِیۡ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَلِلّٰهِ یَسۡجُدُ مَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّکَرۡهًا وَّظِلٰلُهُمۡ بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ ﴿۱۵﴾ قُلۡ
مَنۡ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلۡ اَفَاتَّخَذۡتُمۡ مِّنۡ
دُوۡنِهٖۤ اَوۡلِیَآءَ لَا یَمۡلِکُوۡنَ لِاَنۡفُسِهِمۡ نَفۡعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلۡ هَلۡ
یَسۡتَوِی الۡاَعۡمٰی وَالۡبَصِیۡرُ ۬ۙ اَمۡ هَلۡ تَسۡتَوِی الظُّلُمٰتُ وَالنُّوۡرُ ۚ
اَمۡ جَعَلُوۡا لِلّٰهِ شُرَکَآءَ خَلَقُوۡا کَخَلۡقِهٖ فَتَشَابَهَ الۡخَلۡقُ عَلَیۡهِمۡ ؕ
قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ کُلِّ شَیۡءٍ وَّهُوَ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ اَنۡزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتۡ اَوۡدِیَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحۡتَمَلَ السَّیۡلُ زَبَدًا
رَّابِیًا ؕ وَمِمَّا یُوۡقِدُوۡنَ عَلَیۡهِ فِی النَّارِ ابۡتِغَآءَ حِلۡیَةٍ اَوۡ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِّثۡلُهٗ ؕ کَذٰلِکَ یَضۡرِبُ اللّٰهُ الۡحَقَّ وَالۡبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ
فَیَذۡهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا یَنۡفَعُ النَّاسَ فَیَمۡکُثُ فِی الۡاَرۡضِ ؕ
کَذٰلِکَ یَضۡرِبُ اللّٰهُ الۡاَمۡثَالَ ﴿۱۷﴾ؕ لِلَّذِیۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِرَبِّهِمُ الۡحُسۡنٰی ؕ
وَالَّذِیۡنَ لَمۡ یَسۡتَجِیۡبُوۡا لَهٗ لَوۡ اَنَّ لَهُمۡ مَّا فِی الۡاَرۡضِ جَمِیۡعًا وَّ
مِثۡلَهٗ مَعَهٗ لَافۡتَدَوۡا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِکَ لَهُمۡ سُوۡٓءُ الۡحِسَابِ ۬ۙ وَمَاۡوٰىهُمۡ
جَهَنَّمُ ؕ وَبِئۡسَ الۡمِهَادُ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنۡ یَّعۡلَمُ اَنَّمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ مِنۡ

منزل ٣

बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि वह बड़ा ज़बरदस्त क़ुव्वत वाला है। **(13)** सच्चा पुकारना उसी के लिए ख़ास है,[1] और उसके (यानी ख़ुदा के) सिवा जिनको ये लोग पुकारते हैं वे इनकी दरख़्वास्त को इससे ज़्यादा मन्ज़ूर नहीं कर सकते जितना पानी उस शख़्स की दरख़्वास्त को मन्ज़ूर करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुँह तक (उड़कर) आ जाए, और वह उस (के मुँह) तक (अपने आप) आने वाला नहीं,[2] और काफ़िरों का (उनसे) दरख़्वास्त करना बिलकुल बेअसर है। **(14)** और अल्लाह ही के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं, ख़ुशी से और मजबूरी से,[3] और उनके साये भी सुबह और शाम के वक़्तों में।[4] ❑ **(15)** आप कहिए कि आसमानों और ज़मीन का परवर्दिगार कौन है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह है। (फिर) आप (यह) कहिए कि क्या फिर भी तुमने उसके (यानी ख़ुदा के) सिवा (दूसरे) मददगार क़रार दे रखे हैं जो ख़ुद अपनी ज़ात के नफ़े-नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते। आप (यह भी) कहिए कि क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर हो सकता है?[5] या कहीं अँधेरा और रोशनी बराबर हो सकती है,[6] या उन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक क़रार दे रखे हैं कि उन्होंने भी (किसी चीज़ को) पैदा किया हो जैसे कि ख़ुदा पैदा करता है, फिर उनको पैदा करना एक-सा मालूम हुआ हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही वाहिद है, ग़ालिब है। **(16)** उसी (अल्लाह तआ़ला) ने आसमानों से पानी नाज़िल फ़रमाया, फिर नाले (भरकर) अपनी मिक़्दार "यानी मात्रा" के मुवाफ़िक़ चलने लगे, फिर (वह) सैलाब कूड़े-कबाड़ को बहा लाया जो उस (पानी) के ऊपर (आ रहा) है। और जिन चीज़ों को आग के अन्दर ज़ेवर और असबाब बनाने की ग़रज़ से तपाते हैं उसमें भी ऐसा मैल-कुचैल (ऊपर आ जाता) है।[7] अल्लाह तआ़ला हक़ (यानी ईमान वग़ैरह) और बातिल (कुफ़्र वग़ैरह) की इसी तरह की मिसाल बयान कर रहा है, सो जो मैल-कुचैल था वह तो फेंक दिया जाता है और जो चीज़ लोगों के लिए कारामद है ज़मीन (यानी दुनिया) में (नफ़ा पहुँचाने के साथ) रहती है। अल्लाह तआ़ला इसी तरह (हर ज़रूरी मज़मून में) मिसालें बयान किया करते हैं।[8] **(17)** जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया उनके वास्ते अच्छा बदला है,[9] और जिन लोगों ने उसका कहना न माना उनके पास अगर तमाम ज़मीन (यानी दुनिया) भर की चीज़ें (मौजूद) हों और (बल्कि) उसके साथ उसी के बराबर और भी हो, तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का सख़्त हिसाब होगा और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरा ठिकाना है। ● **(18)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) न मानने की तरह है। पस ये लोग अल्लाह के साथ भी कुफ़्र करते हैं और नबी के साथ भी।

4. मतलब यह कि कुफ़्र का तक़ाज़ा है कि सज़ा हो, चाहे दुनिया में नाज़िल हो या क़ियामत के दिन वाक़े हो। उनको उससे डरना और कुफ़्र छोड़ देना चाहिए।

5. यानी मेरे पास भी तौहीद व रिसालत की दलील है, और मेरे साथ वाले भी दलील से इत्मीनान हासिल करने के साथ मुझपर ईमान लाए हैं। मैं बेदलील बात की तरफ़ किसी को नहीं बुलाता, इसलिए दलील सुनो और समझो। रास्ते का हासिल यह हुआ कि ख़ुदा एक है और मैं उसकी तरफ़ बन्दों को बुलाने वाला हूँ।

6. ख़ुलासा यह हुआ कि नुबुव्वत के दावे से मेरा मक़सद अपना बन्दा बनाना नहीं बल्कि अल्लाह का बन्दा बनाना है, लेकिन उसका तरीक़ा अल्लाह तआ़ला के दाई यानी रसूल की तरफ़ से बतलाया जाता है, इसलिए मुझे दाई मानना वाजिब है जबकि मेरे पास इसकी दलील भी है।

7. कि फ़ानी का इख़्तियार करना बेहतर है या बाक़ी का। और अगर तुमको अ़ज़ाब में देरी से यह शक हो कि वह आएगा ही नहीं तो यह तुम्हारी ग़लती है, इसलिए कि पहली उम्मतों के काफ़िरों को भी बड़ी-बड़ी मोहलतें दी गईं।

8. मोहलत की मुद्दत के लम्बा होने की वजह से पैग़म्बरों ने समझ लिया कि अल्लाह के वायदे का जो मुख़्तसर वक़्त अपने अन्दाज़े और ख़्याल से तय करके हमने अपने **(पृष्ठ 446 की बक़िया और पृष्ठ 448, 450, 452 की तफ़सीर पृष्ठ 454-459 पर)**

अ-फ़मंय्यअ्लमु अन्नमा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बिकल्-हक़्क़ु क-मन् हु-व अअ्मा, इन्नमा य-तज़क्करु उलुल्-अल्बाब **(19)** अल्लज़ी-न यूफ़ू-न बिअ़्हदिल्लाहि व ला यन्क़ुज़ूनल्-मीसाक़ **(20)** वल्लज़ी-न यसिलू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व यख़्शौ-न रब्बहुम् व यख़ाफ़ू-न सूअल्-हिसाब **(21)** वल्लज़ी-न स-बरुब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अ़लानि-यतंव्-व यद्रऊ-न बिल्ह-स-नतिस्सय्यि-अ-त उलाइ-क लहुम् अ़ुक़्बद्दार **(22)** जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलू-नहा व मन् स-ल-ह मिन् आबइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् वल्मलाइ-कतु यद्ख़ुलू-न अ़लैहिम् मिन् कुल्लि बाब **(23)** सलामुन् अ़लैकुम् बिमा सबर्तुम् फ़निअ़्-म अ़ुक़्बद्दार **(24)** वल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न अ़ह्दल्लाहि मिम्-बअ़्दि मीसाक़िही व यक़्तअ़ू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि उलाइ-क लहुमुल्लअ़्-नतु व लहुम् सूउद्दार **(25)** अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, व फ़रिहू बिल्हयातिद्दुन्या, व मल्हयातुद्दुन्या फ़िल्-आख़िरति इल्ला मताअ़् **(26)** ❖

الرعد ١٣ — ٢٢٨ — وما أبرئ ١٣

رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمٰى ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ
يُوفُونَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ
مَا أَمَرَ اللّٰهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ
الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ
وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا
وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ
فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ
بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللّٰهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَ
يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾
اللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ
يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ﴿٢٧﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ
قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ أَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾ الَّذِينَ

منزل ٣

व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी इलैहि मन् अनाब **(27)** अल्लज़ी-न आमनू व तत्मइन्नु

जो शख़्स (यह) यक़ीन रखता हो कि जो कुछ आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के रब की तरफ़ से आप पर नाज़िल हुआ है वह सब हक़ है, क्या ऐसा शख़्स उसकी तरह हो सकता है जो कि अन्धा है,[1] पस नसीहत तो समझदार लोग ही क़बूल करते हैं। **(19)** (और) ये (समझदार) लोग ऐसे हैं कि अल्लाह से जो कुछ उन्होंने अ़हद किया है उसको पूरा करते हैं और उस (अ़हद) को तोड़ते नहीं। **(20)** और (ये) ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला ने जिन ताल्लुक़ात के क़ायम रखने का हुक्म किया है उनको क़ायम रखते हैं, और अपने रब से डरते रहते हैं, और सख़्त अ़ज़ाब का अन्देशा रखते हैं।[2] **(21)** और ये लोग ऐसे हैं कि अपने रब की रज़ामन्दी को ढूँढते हुए मज़बूत रहते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको रोज़ी दी है उसमें से चुपके भी और ज़ाहिर करके भी ख़र्च करते हैं।[3] और बदसुलूकी को अच्छे सुलूक से टाल देते हैं,[4] उस जहान "यानी आख़िरत" में नेक अन्जाम उन्हीं लोगों के वास्ते है। **(22)** (यानी) हमेशा रहने की जन्नतें जिनमें वे लोग भी दाख़िल होंगे और उनके माँ-बाप और बीवियाँ और औलाद में से[5] जो (जन्नत के) लायक़ होंगे (वे भी दाख़िल होंगे) और फ़रिश्ते उनके पास हर (तरफ़ के) दरवाज़े से आते होंगे **(23)** (और यह कहते होंगे कि) तुम सही-सलामत रहोगे इसकी बदौलत कि तुम (दीने हक़ पर) मज़बूत रहे थे, सो इस जहान में तुम्हारा अन्जाम बहुत अच्छा है। **(24)** और जो लोग ख़ुदा तआ़ला के मुआ़हदों को उनकी पुख़्तगी के बाद तोड़ते हैं, और ख़ुदा तआ़ला ने जिन ताल्लुक़ात "और रिश्तों" के क़ायम रखने का हुक्म फ़रमाया है उनको तोड़ते हैं, और ज़मीन (यानी दुनिया) में फ़साद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत होगी, और उनके लिए उस जहान में ख़राबी होगी। **(25)** अल्लाह जिसको चाहे रिज़्क़ ज़्यादा देता है और तंगी कर देता है। और ये (काफ़िर) लोग दुनियावी ज़िन्दगी पर इतराते हैं, और यह दुनियावी ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में सिवाय एक मामूली फ़ायदे के और कुछ भी नहीं। **(26)** ❖

और ये काफ़िर लोग कहते हैं कि उनपर (हमारे फ़रमाइशी मोजिज़ों में से) कोई मोजिज़ा उनके रब की तरफ़ से क्यों नाज़िल नहीं किया गया। आप कह दीजिए कि वाक़ई अल्लाह तआ़ला जिसको चाहें गुमराह कर देते हैं, और जो शख़्स उनकी तरफ़ मुतवज्जह होता है उसको अपनी तरफ़ से हिदायत कर देते हैं। **(27)** (मुराद इससे वे लोग हैं) जो ईमान लाए और अल्लाह के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मीनान होता है।[6] ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हो जाता है।[7] **(28)** जो लोग ईमान लाए और नेक काम

(पिछले पृष्ठ का शेष) ज़ेहन में क़रार दे रखा था कि उस वक़्त हम कामयाब व ग़ालिब और कुफ़्फ़ार मग़लूब और अल्लाह के क़हर का शिकार होंगे, और गुमान ग़ालिब हो गया कि अल्लाह के वायदे की हद-बन्दी करने में हमसे ग़लती हुई कि बिला वाज़ेह वायदे के महज़ अन्दाज़ों या मदद के जल्द आने की ख़ुशी में हमने क़रीब का वक़्त तय कर लिया हालाँकि वायदा मुतलक़ था, ऐसी हालत में कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब आ पहुँचा।

9. इससे मोमिन लोग मुराद हैं।

10. बल्कि उनपर ज़रूर आ पड़ता है चाहे देर से ही सही। पस यह मक्का के काफ़िर भी इसी धोखे में न रहें।

(तफ़सीर पृष्ठ 448) **1.** इस सूरः का हासिल ये मज़ामीन हैं: तौहीद, रिसालत, रिसालत पर शुब्हात का जवाब, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तसल्ली, क़ुरआन का हक़ होना और वायदा-वईद वग़ैरह।

2. यानी ज़मीन व आसमान में अहकाम जारी करने लगा।

3. चुनाँचे सूरज अपने मदार (यानी दायरे और गर्दिश करने की जगह) को साल भर में तय कर लेता है और चाँद महीने भर में।

4. यानी मरने के बाद ज़िन्दा होने और क़ियामत के आने का यक़ीन कर लो, उसके मुम्किन होने को तो इस तरह कि जब अल्लाह तआ़ला ऐसी अ़ज़ीम चीज़ों के पैदा करने पर क़ादिर है तो मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क्यों क़ादिर नहीं होगा, और उसके आने और मौजूद हो जाने का यक़ीन इस तरह कि **(पृष्ठ 448 की बक़िया और पृष्ठ 450, 452, 454 की तफ़सीर पृष्ठ 456-459 पर)**

क़ुलूबुहुम् बिज़िक्रिल्लाहि, अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल्-क़ुलूब **(28)** अल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब **(29)** कज़ालि-क अर्सल्ना-क फ़ी उम्मतिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहा उ-ममुल्-लितत्लु-व अ़लैहिमुल्लज़ी औहैना इलै-क व हुम् यक्फ़ुरू-न बिर्रह्मानि, क़ुल् हु-व रब्बी ला इला-ह इल्ला हु-व अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि मताब **(30)**

व लौ अन्-न क़ुरआनन् सुय्यिरत् बिहिल्-जिबालु औ क़ुत्तिअ़त् बिहिल्-अर्-ज़ु औ कुल्लि-म बिहिल्मौता, बल् लिल्लाहिल्-अम्रु जमीअ़न्, अ-फ़लम् यै-असिल्लज़ी-न आमनू अल्-लौ यशाउल्लाहु ल-हदन्ना-स जमीअ़न्, व ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू तुसीबुहुम् बिमा स-नअ़ू क़ारि-अ़तुन् औ तहुल्लु क़रीबम् मिन् दारिहिम् हत्ता यअ्ति-य वअ़्दुल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल्-मीआ़द **(31)** ❖

व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-अम्लैतु लिल्लज़ी-न क-फ़रू सुम्-म अख़ज़्तुहूम्, फ़कै-फ़ का-न अ़िक़ाब **(32)** अ-फ़-मन् हु-व क़ाइमुन् अ़ला कुल्लि नफ़्सिम्-बिमा क-सबत् व ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रका-अ, क़ुल् सम्मूहुम् अम् तुनब्बिऊनहू बिमा ला यअ्लमु फ़िल्अर्ज़ि अम् बिज़ाहिरिम्-मिनल्क़ौलि, बल् ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू मक्रुहुम् व सुद्दू अ़निस्सबीलि, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद **(33)** लहुम् अ़ज़ाबुन् फ़िल्हयातिद्दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अशक़्क़ु व मा लहुम्

وما ابرئ ١٣ ٢٢٩ الرعد ١٣

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۝ كَذٰلِكَ
اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا عَلَيْهِمُ
الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ۝ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا
سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ
لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ
لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ
بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ
وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ
مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۝ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي
الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ هَادٍ ۝ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ

منزل ٣

किए उनके लिए ख़ुशहाली और नेक अन्जामी है।[1] **(29)** (और) इसी तरह हमने आपको एक ऐसी उम्मत में रसूल बनाकर भेजा है कि उस (उम्मत) से पहले और बहुत-सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि आप उनको वह (किताब) पढ़कर सुना दें जो हमने आपके पास वह्य के ज़रिये भेजी है,[2] और वे लोग बड़े रहमत वाले की नाशुक्री करते हैं।[3] आप फ़रमा दीजिए कि वह मेरा पालने वाला (और निगहबान) है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और उसी के पास मुझको जाना है।[4] **(30)** और अगर कोई ऐसा क़ुरआन होता जिसके ज़रिये से पहाड़ (अपनी जगह से) हटा दिए जाते या उसके ज़रिये से ज़मीन जल्दी-जल्दी तय हो जाती, या उसके ज़रिये से मुर्दों के साथ किसी को बातें करा दी जातीं[5] (तब भी ये लोग ईमान न लाते), बल्कि सारा इख़्तियार ख़ास अल्लाह ही को है।[6] क्या (यह सुनकर) फिर भी ईमान वालों को इस बात में तसल्ली नहीं हुई कि अगर ख़ुदा तआ़ला चाहता तो तमाम (दुनिया भर के) आदमियों को हिदायत कर देता,[7] और (ये मक्का के) काफ़िर तो हमेशा (आए दिन) इस हालत में रहते हैं कि उनके (बुरे) किरदारों के सबब उनपर कोई न कोई हादसा पड़ता रहता है,[8] या उनकी बस्ती के क़रीब नाज़िल होता रहता है, यहाँ तक कि अल्लाह का वायदा आ जाएगा।[9] यक़ीनन अल्लाह तआ़ला वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करते। **(31)** ❖

और बहुत-से पैग़म्बरों के साथ जो आपसे पहले हो चुके हैं हँसी-ठट्ठा हो चुका है,[10] फिर मैं उन काफ़िरों को मोहलत देता रहा, फिर मैंने उनपर दारोगीर "यानी पकड़" की, सो मेरी सज़ा किस तरह की थी। **(32)** फिर (भी) क्या जो (ख़ुदा) हर शख़्स के आमाल पर बाख़बर हो (और उन लोगों के शरीक क़रार दिए हुए बराबर हो सकते हैं) और उन लोगों ने ख़ुदा के लिए शरीक तजवीज़ किए हैं। आप कहिए कि (ज़रा) उन (शरीकों) का नाम तो लो, क्या तुम उसको (यानी ख़ुदा तआ़ला को) ऐसी बात की ख़बर देते हो कि दुनिया (भर) में उस (के वजूद) की ख़बर उसको (यानी अल्लाह को) न हो,[11] या ख़ाली ज़ाहिरी लफ़्ज़ के एतिबार से उनको शरीक कहते हो, बल्कि काफ़िरों को अपने मुग़ालते की बातें पसन्दीदा मालूम होती हैं, और (इसी वजह से) ये लोग (हक़) रास्ते से महरूम रह गए। और जिसको ख़ुदा तआ़ला गुमराही में रखे उसको कोई राह पर लाने वाला नहीं।[12] **(33)** उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) अ़ज़ाब है,[13] और आख़िरत का अ़ज़ाब इससे कई दर्जे ज़्यादा सख़्त है, और अल्लाह (के अ़ज़ाब) से उनको कोई बचाने वाला नहीं होगा। **(34)** (और) जिस जन्नत का मुत्तक़ियों से वायदा किया गया है उसकी कैफ़ियत यह है कि उस (की इमारतों व पेड़ों) के नीचे से

(पिछले पृष्ठ का शेष) ऐसे शख़्स ने उसकी ख़बर दी है जो बिलकुल सच्चा है (यानी हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तो ज़रूर ऐसा ही होगा।

5. जैसे खट्टे और मीठे या छोटे और बड़े। कोई किसी रंग का और कोई किसी रंग का।

6. बल्कि जड़ से शाख़ों तक एक ही तना चला जाता है, 'सिन्वान' के तर्जुमे में दो तने की तख़्सीस मिसाल देने के लिए है वरना बाज़ में तीन चार तक देखे गए हैं। और फिर हर एक में पठ्ठे अलग-अलग निकलते हैं और फल अलग-अलग लगते हैं।

7. ऊपर तौहीद को साबित किया था, आगे काफ़िरों के उन शुब्हात का जवाब है जो नुबुव्वत के मुताल्लिक़ थे सज़ा की धमकी के साथ, और वे तीन शुब्हे थे। पहला शुब्हा यह था कि मरने के बाद ज़िन्दा होने को वे लोग मुहाल समझते थे और इससे नुबुव्वत की नफ़ी पर दलील पकड़ते थे। दूसरा शुब्हा यह था कि अगर आप नबी हैं तो नुबुव्वत के इनकार पर जिस अ़ज़ाब की वईद सुनाते हैं वह क्यों नहीं आता। तीसरा शुब्हा यह था कि जिन मोजिज़ों की हम फ़रमाइश करते हैं वे क्यों ज़ाहिर नहीं किये जाते। आयत 'व इन तअ्जब्...' में पहले शुब्हे का रद्द है और आयत 'व यस्तअ्जिलून-क..' में दूसरे शुब्हे का जवाब है, और आयत 'व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू..' में तीसरे शुब्हे का जवाब है।

(तफ़सीर पृष्ठ 450) **1.** यानी इसमें दोनों सिफ़तें हैं और हर एक के ज़ाहिर होने की शर्तें और असबाब हैं। पस उन्होंने बिला सबब अपने को रहमत व मग़्फ़िरत के लिए हक़दार समझ लिया, बल्कि कुफ़्र की वजह से उनके लिए तो अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाला है।

(पृष्ठ 450 की बकिया और पृष्ठ 452, 454, 456 की तफ़सीर पृष्ठ 458-460 पर)

मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (34) म-सलुल्- जन्नतिल्लती वुअ़िदल्-मुत्तक़ू-न, तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, उकुलुहा दाइमुंव्-व ज़िल्लुहा, तिल्-क अुक़्बल्लज़ीनत्तक़ौ व उक़्बल् काफ़िरीनन्नार (35) वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यफ़्रहू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मिनल्-अह्ज़ाबि मंय्युन्किरु बअ़्ज़हू, क़ुल् इन्नमा उमिर्तु अन् अअ़्बुदल्ला-ह व ला उश्रि-क बिही, इलैहि अद्अ़ू व इलैहि मआब (36) व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु हुक्मन् अ़-रबिय्यन्, व ल-इनित्त-बअ़्-त अह्वा-अहुम् बअ़्-द मा जाअ-क मिनल्-अ़िल्मि मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला वाक़ (37) ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम् मिन् क़ब्लि-क व जअ़ल्ना लहुम् अज़्वाजंव्-व ज़ुर्रिय्य-तन्, व मा का-न लि-रसूलिन् अंय्यअ्ति-य बिआयतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, लिकुल्लि अ-जलिन् किताब (38) यम्हुल्लाहु मा यशा-उ व युस्बितु व अ़िन्दहू उम्मुल्-किताब (39) व इम्मा नुरियन्न-क बअ़्ज़ल्लज़ी नअ़िदुहुम् औ न-तवफ़्फ़-यन्न-क फ़-इन्नमा अ़लैकल्-बलाग़ु व अ़लैनल्-हिसाब (40) अ-व लम् यरौ अन्ना नअ्तिल्-अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा, वल्लाहु यह्कुमु ला मुअ़क़्क़ि-ब लिहुक्मिही, व हु-व सरीअ़ुल्-हिसाब (41) व क़द् म-करल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़लिल्लाहिल्-मक्रु जमीअ़न्, यअ़्लमु मा तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन्, व स-यअ़्लमुल्-कुफ़्फ़ारु लिमन् अ़ुक़्बद्दार (42) व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लस्-त मुर्सलन्,

المتقون تجري من تحتها الانهر اكلها دآئم وظلها تلك
عقبى الذين اتقوا وعقبى الكفرين النار ۝ والذين
اتينهم الكتب يفرحون بمآ انزل اليك ومن الاحزاب
من ينكر بعضه قل انمآ امرت ان اعبد الله ولآ اشرك
به اليه ادعوا واليه ماب ۝ وكذلك انزلنه حكما
عربيا ولئن اتبعت اهوآءهم بعد ما جآءك من العلم
ما لك من الله من ولي ولا واق ۝ ولقد ارسلنا رسلا
من قبلك وجعلنا لهم ازواجا وذرية وما كان لرسول
ان ياتي باية الا باذن الله لكل اجل كتاب ۝ يمحوا الله
ما يشآء ويثبت وعنده ام الكتب ۝ وان ما نرينك
بعض الذي نعدهم او نتوفينك فانما عليك البلغ
وعلينا الحساب ۝ اولم يروا انا ناتي الارض ننقصها
من اطرافها والله يحكم لا معقب لحكمه وهو سريع
الحساب ۝ وقد مكر الذين من قبلهم فلله المكر جميعا
يعلم ما تكسب كل نفس وسيعلم الكفر لمن عقبى
الدار ۝ ويقول الذين كفروا لست مرسلا قل كفى بالله

नहरें जारी होंगी, उसका फल और उसका साया हमेशा रहने वाला रहेगा।[1] यह तो अन्जाम होगा मुत्तक़ियों का, और काफ़िरों का अन्जाम दोज़ख़ होगा। **(35)** और जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उस (किताब) से ख़ुश होते हैं[2] जो आप पर नाज़िल की गई है, और उन्हीं के गिरोह में बाज़े ऐसे हैं कि उसके कुछ हिस्से का इनकार करते हैं।[3] आप फ़रमाइए कि[4] मुझको यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह तआ़ला की इबादत करूँ और किसी को उसका शरीक न ठहराऊँ। मैं उसी (अल्लाह ही) की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मुझको जाना है। **(36)** और इसी तरह हमने उसको इस तौर पर नाज़िल किया कि वह एक ख़ास हुक्म है, अ़रबी (ज़बान में)।[5] और अगर आप (मान लो, अगरचे ऐसा होना नामुम्किन है) उनके नफ़्सानी ख़्यालात की पैरवी करने लगें इसके बाद कि आपके पास (सही) इल्म पहुँच चुका है, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न कोई आपका मददगार होगा और न कोई बचाने वाला।[6] **(37)** ❖

और हमने यक़ीनन आपसे पहले बहुत-से रसूल भेजे, और हमने उनको बीवियाँ और बच्चे भी दिए,[7] और किसी पैग़म्बर के इख़्तियार में यह बात नहीं कि एक आयत भी बिना ख़ुदा तआ़ला के हुक्म के ला सके, हर ज़माने के (मुनासिब ख़ास-ख़ास) अहकाम (होते) हैं। **(38)** ख़ुदा तआ़ला (ही) जिस (हुक्म) को चाहे मौक़ूफ़ कर देते हैं और जिस (हुक्म) को चाहें क़ायम रखते हैं, और असल किताब उन्हीं के पास है।[8] **(39)** और जिस (बात) का हम उनसे वायदा कर रहे हैं उसमें का बाज़ (वाक़िआ़) अगर हम आपको दिखला दें या हम आपको वफ़ात दे दें, पस आपके ज़िम्मे तो सिर्फ़ (अहकाम का) पहुँचा देना है और दारोगीर ''यानी पूछताछ और पकड़'' करना हमारा काम है।[9] **(40)** क्या वे इस (बात) को नहीं देख रहे हैं कि हम ज़मीन को हर (चारों) तरफ़ से लगातार कम करते चले आते हैं।[10] और अल्लाह (जो चाहता है) हुक्म करता है, उसके हुक्म को कोई हटाने वाला नहीं, और वह बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। **(41)** और उनसे पहले जो (काफ़िर) लोग हो चुके हैं उन्होंने तदबीरें कीं, सो असल तदबीर तो ख़ुदा ही की है,[11] उसको सब ख़बर रहती है जो शख़्स जो कुछ भी करता है, और उन काफ़िरों को अभी मालूम हुआ जाता है कि उस आ़लम ''यानी आख़िरत'' में नेक अन्जामी किसके हिस्से में है।[12] **(42)** और (ये) काफ़िर लोग (यूँ) कह रहे हैं कि (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) आप पैग़म्बर नहीं, आप फ़रमा दीजिए कि (मेरी नुबुव्वत पर) मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह और वह शख़्स जिसके पास (आसमानी) किताब का इल्म है, काफ़ी गवाह हैं।[13] **(43)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) **2.** आयत में लफ़्ज़ 'हादी' नबी और नबी के नायब दोनों को आ़म है, पस हिन्दुस्तान में मुतलक़ 'हादी' के आने से उसका नबी होना लाज़िम नहीं, हाँ इसका एहतिमाल और गुन्जाइश ज़रूर है।

3. बच्चों की तादाद की या मुद्दत की कि कभी एक बच्चा होता है कभी ज़्यादा, कभी जल्दी होता है कभी देर में।

4. यानी सबको यक्साँ जानता है। और जैसा कि तुममें से हर एक को जानता है इसी तरह हर एक ही हिफ़ाज़त करता है।

5. बहुत-सी बलाओं से इनसान की हिफ़ाज़त करते हैं। लेकिन इससे कोई यह न समझ जाए कि जब फ़रिश्ते हमारे मुहाफ़िज़ हैं फिर जो चाहो नाफ़रमानी करो, अगरचे कुफ़्र ही क्यों न हो किसी तरह अ़ज़ाब नाज़िल न होगा। यह गुमान ग़लत है।

6. जब वे अपनी सलाहियत में ख़लल डालने लगते हैं तो फिर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भी उनपर मुसीबत व सज़ा तजवीज़ की जाती है। आयत से जिस बात पर दलालत हो रही है उसका हासिल यह है कि बिना नाफ़रमानी के हम नाराज़ नहीं होते। पस गुनाहों से बचने में नाराज़ी की नफ़ी यक़ीनी है नेमत और आ़फ़ियत के न होने का वायदा नहीं। गुनाहों और नाफ़रमानी से अगरचे ज़ाहिरी नेमत व आ़फ़ियत ख़त्म भी न हो लेकिन हक़ तआ़ला की नाराज़ी तो ज़रूर मुरत्तब हो जाती है।

7. ऐसे वक़्त में ख़ुदा के सिवा कोई भी उनका मददगार नहीं रहता, यहाँ तक कि वे भी जिनकी हिफ़ाज़त का उनको गुमान व नाज़ है। ग़रज़ यह कि फ़रिश्ते भी उनकी हिफ़ाज़त नहीं करते और अगर करते तो भी हिफ़ाज़त काम न आ सकती।

(पृष्ठ 452, 454, 456 और 458 की तफ़सीर पृष्ठ 459, 460 पर)

(तफ़सीर पृष्ठ 452) 1. क्योंकि उसको क़ुबूल करने की क़ुदरत है।

2. पस जिस तरह पानी उनकी दरख़्वास्त क़ुबूल करने से आजिज़ है इसी तरह उनके माबूद आजिज़ हैं। अगर वे माबूद रूह वाले नहीं हैं तब तो बेबसी ज़ाहिर है, और अगर रूह वाले हैं तब भी क़ादिरे हक़ीक़ी यानी अल्लाह पाक के सामने आजिज़ हैं।

3. ख़ुशी से यह कि अपने इख़्तियार से इबादत करते हैं और मजबूरी के यह मायने हैं कि अल्लाह तआ़ला जिस मख़्लूक़ में जो तसर्रुफ़ करना चाहते हैं वह उसकी मुख़ालफ़त नहीं कर सकता।

4. यानी रब्बे क़दीर साये को जितना चाहे बढ़ाए, जितना चाहे घटाए। और सुबह व शाम के वक़्त चूँकि उनका घटना और बढ़ना ज़ाहिर होता है इसलिए तख़्सीस की गई, वरना साया भी इसी मायने में हर तरह फ़रमाँबर्दार है।

5. यह मिसाल है मुश्रिक और ईमान वाले की।

6. यह मिसाल है शिर्क और तौहीद की।

7. इन दो मिसालों में दो चीज़ें हैं, एक कारामद चीज़ कि असल पानी और असल माल है, और एक नाकारा चीज़ कि कूड़ा-करकट और मैल-कुचैल है।

8. दोनों मिसालों का हासिल यह है कि जैसा इन मिसालों में मैल-कुचैल थोड़ी देर के लिए असली चीज़ के ऊपर नज़र आता है लेकिन अन्जामकार वह फेंक दिया जाता है और असली चीज़ रह जाती है, इसी तरह बातिल अगरचे कुछ वक़्त के लिए हक़ के ऊपर ग़ालिब नज़र आए लेकिन आख़िरकार बातिल मिट जाता और मग़लूब हो जाता है, और हक़ बाक़ी और साबित रहता है।

9. यानी जन्नत।

(तफ़सीर पृष्ठ 454) 1. यानी काफ़िर व मोमिन बराबर नहीं।

2. उस अ़ज़ाब से ख़ौफ़ खाते हैं जो काफ़िरों के साथ ख़ास होगा, इसलिए कुफ़्र से बचते हैं।

3. यानी जैसा मौक़ा होता है।

4. यानी कोई उनके साथ बदसुलूकी करे तो कुछ ख़्याल नहीं करते बल्कि उसके साथ अच्छा सुलूक करते हैं।

5. जो अल्लाह के यहाँ ख़ास और क़रीबी होंगे उनकी बरकत से उनके माँ-बाप और बीवियाँ और औलाद भी उसी दर्जे में ताबे होकर दाख़िल होंगे। चुनाँचे इस आयत की तफ़सीर में इब्ने अबी हातिम और अबू शैख़ ने सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की है कि मोमिन जन्नत में दाख़िल होकर कहेगा कि मेरी माँ कहाँ है, मेरा बेटा कहाँ है, मेरी बीवी कहाँ है। उससे कहा जाएगा कि उनके आमाल तुम्हारे आमाल के जैसे नहीं थे। जन्नती कहेगा कि मैं जो अ़मल करता रहा हूँ अपने लिए भी थे और उनके लिए भी। और औलाद व बाप-दादा से मुराद वे हैं जो बिला वास्ता (यानी प्रत्यक्ष रूप से) हों।

6. यानी वे क़ुरआन के मोजिज़ा होने को नुबुव्वत पर दलालत के लिए काफ़ी समझते हैं, और उल्टी-सीधी फ़रमाइश नहीं करते। फिर ख़ुदा की याद और इताअ़त में उनको ऐसी रग़बत होती है कि काफ़िरों की तरह उनको दुनिया की ज़िन्दगी के समान रग़बत और ख़ुशी नहीं होती।

7. यानी जिस दर्जे का ज़िक्र हो उसी दर्जे का इत्मीनान होता है। चुनाँचे क़ुरआन से ईमान और नेक आमाल और नेकी से हद दर्जा ताल्लुक़ और अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह मयस्सर होती है।

(तफ़सीर पृष्ठ 456) 1. ख़ुलासा यह कि काफ़िरों के लिए क़ुरआन के मोजिज़ा होने को नाकाफ़ी समझना और गुमराही, और उससे पहले दुनिया की तरफ़ रग़बत और उसके लुत्फ़ व फ़ायदे का फ़ानी होना। और उसके मुक़ाबले में मोमिनों के लिए क़ुरआन को काफ़ी समझना और हिदायत और आख़िरत की तरफ़ रग़बत और उसके फल और बदले का बाक़ी होना साबित फ़रमाया है, और इस मक़ाम का असल मक़सूद रिसालत की बहस है। आगे इस बहस का बाक़ी हिस्सा है। यानी ये लोग जो आपके रसूल होने पर शुब्हात करते हैं तो आपका रसूल होना कोई अनोखी चीज़ तो है नहीं, पहले भी रसूल होते आए हैं।

2. पस उनको चाहिए था कि इस अ़ज़ीम नेमत की क़द्र करते और इस किताब पर ईमान ले आते जो कि मोजिज़ा भी है।

3. और क़ुरआन पर ईमान नहीं लाते।

4. पस मेरी हिफ़ाज़त के लिए तो अल्लाह तआ़ला काफ़ी है, तुम मुख़ालफ़त करके मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

5. यानी मुर्दा ज़िन्दा हो जाता और कोई उससे बातें कर लेता। ये वे मोजिज़े हैं जिनकी फ़रमाइश काफ़िर लोग अक्सर किया करते थे।

6. वह जिसको तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाते हैं वही ईमान लाता है, और उनकी आ़दत है कि जिसके अन्दर तलब होती है उसको तौफ़ीक़ देते हैं और मुख़ालिफ़ व दुश्मन को महरूम कर देते हैं।

7. चूँकि बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का जी चाहता था कि ये फ़रमाइशी मोजिज़े ज़ाहिर हो जाएँ, शायद ये ईमान ले आएँ, इसलिए फ़रमाया कि क्या यह सुनकर भी कि ये मुख़ालिफ़ और दुश्मन हैं, हरगिज़ ईमान नहीं लाएँगे, **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) ईमान वालों को तसल्ली नहीं हुई? अगर ख़ुदा चाहता तो दुनिया भर के आदमियों को हिदायत कर देता मगर बाज़ हिक्मतों से उसकी मरज़ी नहीं हुई, और सब ईमान नहीं लाएँगे। इसका क़रीबी सबब उनकी दुश्मनी और मुख़ालफ़त है, फिर उन मुख़ालिफ़ों के ईमान की फ़िक्र में क्यों लगे हैं।

8. कहीं क़त्ल, कहीं क़ैद, कहीं शिकस्त और हार।

9. या बाज़े हादसे ख़ुद उनपर नहीं पड़ते मगर उनकी बस्ती के क़रीब नाज़िल होते रहते हैं, जैसे किसी और क़ौम पर आफ़त आई और इनको ख़ौफ़ पैदा हुआ कि कहीं हमपर भी बला न आ जाए, यहाँ तक कि इसी हालत में आख़िरत के अ़ज़ाब का सामना हो जाएगा, जो मरने के बाद शुरू हो जाएगा।

10. उन लोगों का यह मामला झुठलाना और हँसी उड़ाना कुछ आपके साथ ख़ास नहीं। और इसी तरह उनके लिए अ़ज़ाब में देरी होना कुछ उनके साथ ख़ास नहीं, बल्कि पहले रसूलों और पहली उम्मतों के साथ भी ऐसा होता रहा है।

11. क्योंकि हक़ तआ़ला तो उसी को मौजूद जानता है जो हक़ीक़त में मौजूद हो, और जो मौजूद न हो उसको मौजूद नहीं जानता, क्योंकि इससे इल्म का ग़लत होना लाज़िम आता है, अगरचे ज़ाहिर होने में दोनों बराबर हैं।

12. अलबत्ता वह उसी को गुमराह रखता है जो बावजूद हक़ वाज़ेह होने के मुख़ालफ़त करता रहे।

13. वह अ़ज़ाब क़त्ल, क़ैद और ज़िल्लत या बीमारियाँ व मुसीबतें हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 458) **1.** मेवों के हमेशा रहने से यह मुराद है कि अगर एक बार मेवा खा लिया तो दूसरा उसके बदले दरख़्त पर और लग जाएगा। और साये के हमेशा रहने की वजह यह है कि वहाँ सूरज न होगा। मगर याद रहे कि रोशनी का वजूद सूरज पर मुन्हसिर नहीं, इसलिए यह वस्वसा न होना चाहिए कि रोशनी कहाँ से आएगी।

2. जैसे यहूद में अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु और उनके साथी, और ईसाइयों में नज्जाशी और उनके भेजे हुए।

3. इससे मुराद वह हिस्सा है जिसमें उनकी किताब के ख़िलाफ़ अहकाम हैं।

4. अहकाम दो क़िस्म के हैं, उसूल यानी बुनियादी और फ़ुरूअ़ यानी उसूल से निकले हुए अहकाम। अगर तुम उसूल में मुख़ालिफ़ हो तो वे सब शरीअ़तों में मुश्तरक हैं।

5. अहकाम का इख़्तिलाफ़ उम्मतों के इख़्तिलाफ़ के सबब हुआ, क्योंकि उम्मतों की मस्लहतें हर ज़माने में अलग-अलग रहीं। पस शरीअ़तों का यह इख़्तिलाफ़ मुख़ालफ़त को नहीं चाहता। चुनाँचे ख़ुद तुम्हारी मानी हुई शरीअ़तों में भी अहकाम का ऐसा इख़्तिलाफ़ मौजूद था, फिर तुम्हारे लिए मुख़ालफ़त और इनकार की क्या गुन्जाइश है।

6. जब नबी को ऐसा ख़िताब किया जा रहा है तो और लोग इनकार करके कहाँ रहेंगे।

7. अहले किताब में से बाज़ों का जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर यह ताना है कि यह कैसे नबी? इनको तो बीवियों और बच्चों का शग़ल रहता है, सो यह चीज़ रसूल होने के ख़िलाफ़ नहीं, बहुत-से पैग़म्बरों के इनसे भी ज़्यादा बीवियाँ और बच्चे थे।

8. यानी लौहे महफ़ूज़। ये सब अहकाम निरस्त करने वाले और निरस्त होने वाले और जो अपनी जगह क़ायम हैं सब उसमें दर्ज हैं। वह सब को जमा करने वाली और गोया तमाम चीज़ों का मजमूआ़ है। यानी जहाँ से ये अहकाम आते हैं वह अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है। पस पहले अहकाम के मुवाफ़िक़ या उनसे अलग अहकाम लाने की किसी को गुन्जाइश और ताक़त ही नहीं हो सकती।

9. यानी ये लोग जो इस बिना पर नुबुव्वत का इनकार करते हैं कि अगर आप नबी हैं तो नुबुव्वत का इनकार करने पर जिस अ़ज़ाब का वायदा किया जाता है वह क्यों नहीं नाज़िल होता, चाहे आपकी ज़िन्दगी में उनपर कोई अ़ज़ाब नाज़िल हो जाए चाहे उस अ़ज़ाब के नाज़िल होने से पहले हम आपको वफ़ात दे दें, फिर बाद में वह अ़ज़ाब ज़ाहिर हो, चाहे दुनिया में या आख़िरत में, तो दोनों हालतों में आप इस फ़िक्र में न पड़ें कि अगर अ़ज़ाब आ जाए तो बेहतर है कि शायद ये ईमान ले आएँ, क्योंकि आपके ज़िम्मे सिर्फ़ तब्लीग़ है और दारोगीर और पकड़ करना तो हमारा काम है।

10. यानी इस्लामी फ़ुतूहात की कसरत की वजह से उनकी हुकूमत और राज दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। सो यह भी तो एक क़िस्म का अ़ज़ाब है, जो असली अ़ज़ाब का दीबाचा यानी शुरूआ़त है।

11. उसके सामने किसी की नहीं चलती। सो अल्लाह ने उनकी वे तदबीरें नहीं चलने दीं।

12. यानी जल्द ही उनको अपना बुरा अन्जाम और आमाल की सज़ा मालूम हो जाएगी।

13. इससे अहले किताब के वे उलमा मुराद हैं जो इनसाफ़ वाले थे और नुबुव्वत की पेशीनगोई (यानी भविष्यवाणी) देखकर ईमान ले आए थे। मतलब यह हुआ कि मेरी नुबुव्वत की दो दलीलें हैं अ़क़्ली और नक़ली। अ़क़्ली तो यह कि हक़ तआ़ला ने मुझको मोजिज़े अ़ता फ़रमाए जो नुबुव्वत की दलील हैं, और अल्लाह के गवाह होने के यही मायने हैं। और नक़ली यह कि पहली आसमानी किताबों में इसकी ख़बर मौजूद है। अगर यक़ीन न आए तो इन्साफ़-पसन्द उलमा से पूछ लो, वे ज़ाहिर कर देंगे। पस अ़क़्ली और नक़ली दलीलों के होते हुए नुबुव्वत का इनकार करना सिवाय बद-बख़्ती के और क्या है।

क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम् व मन् अिन्दहू अिल्मुल्-किताब (43) ❖

14 सूरतु इब्राहीम 72

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3601 अक्षर, 845 शब्द, 52 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क लितुख़्रिजन्ना-स मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्-नूरि बि-इज़्नि रब्बिहिम् इला सिरातिल् अ़ज़ीज़िल्-हमीद (1) अल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व वैलुल्-लिल्-काफ़िरी-न मिन् अ़ज़ाबिन् शदीद (2) अल्लज़ी-न यस्तहिब्बूनल्-हयातद्दुन्या अ़लल्-आख़िरति व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि़-वजन्, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद (3) व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन्इल्ला बिलिसानि-क़ौमिही लियुबय्यि-न लहुम्, फ़युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (4) व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना अन् अख़्रिज् क़ौम-क मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व ज़क्किर्हुम् बिअय्यामिल्लाहि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (5) व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिज़्कुरू निअ़्म-तल्लाहि अ़लैकुम् इज़् अन्जाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमूनकुम् सूअल्-अ़ज़ाबि व युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम्

شهيدا بيني وبينكم ومن عنده علم الكتب ﴿٤٣﴾
سورة ابراهيم مكية بسم الله الرحمن الرحيم
الر كتب انزلنه اليك لتخرج الناس من الظلمت الى
النور باذن ربهم الى صراط العزيز الحميد ﴿١﴾ الله الذي
له ما في السموت وما في الارض وويل للكفرين من
عذاب شديد ﴿٢﴾ الذين يستحبون الحيوة الدنيا على الاخرة
ويصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا اولئك في
ضلل بعيد ﴿٣﴾ وما ارسلنا من رسول الا بلسان قومه
ليبين لهم فيضل الله من يشاء ويهدي من يشاء
وهو العزيز الحكيم ﴿٤﴾ ولقد ارسلنا موسى بايتنا ان
اخرج قومك من الظلمت الى النور وذكرهم بايىم
الله ان في ذلك لايت لكل صبار شكور ﴿٥﴾ واذ قال
موسى لقومه اذكروا نعمة الله عليكم اذ انجىكم من
ال فرعون يسومونكم سوء العذاب ويذبحون ابناءكم
ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم ﴿٦﴾
واذ تاذن ربكم لئن شكرتم لازيدنكم ولئن كفرتم

منزل ٣

14 सूरः इब्राहीम 72

सूरः इब्राहीम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-रा। यह (कुरआन) एक किताब है जिसको हमने आप पर नाज़िल फ़रमाया है ताकि आप तमाम लोगों को उनके परवर्दिगार के हुक्म से अन्धकार से निकालकर रोशनी की तरफ़ यानी खुदा-ए-ग़ालिब तारीफ़ वाले की राह की तरफ़ लाएँ।[1] **(1)** (वह ऐसा खुदा है) कि उसी की मिल्क है जो कुछ कि आसमानों में है और जो कुछ कि ज़मीन में है, और बड़ी ख़राबी यानी बड़ा सख़्त अ़ज़ाब है **(2)** उन (काफ़िरों) को जो कि दुनियावी ज़िन्दगानी को आख़िरत पर तरजीह देते हैं, और (बल्कि) अल्लाह की (ज़िक्र हुई) राह से रोकते हैं और उसमें टेढ़ (यानी शुब्हात) को ढूँढते रहते हैं।[2] ऐसे लोग बड़ी दूर की गुमराही में हैं।[3] **(3)** और हमने (पहले) तमाम पैग़म्बरों को (भी) उन्हीं की क़ौम की ज़बान में पैग़म्बर बनाकर भेजा है[4] ताकि उनसे (अल्लाह के अहकाम को) बयान करें। फिर जिसको अल्लाह तआ़ला चाहें गुमराह करते हैं[5] और जिसको चाहें हिदायत करते हैं,[6] और वही (सब उमूर पर) ग़ालिब है (और) हिक्मत वाला है।[7] **(4)** और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि अपनी क़ौम को (कुफ़्र) की अँधेरियों से (ईमान की) रोशनी की तरफ़ लाओ, और उनको अल्लाह तआ़ला की (नेमत और सज़ा के) मामलात याद दिलाओ,[8] बेशक उन (मामलात) में इबरतें हैं हर सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए। **(5)** और (उस वक़्त को याद कीजिये कि) जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम अल्लाह तआ़ला का इनाम अपने ऊपर याद करो, जबकि तुमको फ़िरऔ़न वालों से नजात दी, जो तुमको सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे और तुम्हारे बेटों को ज़िब्ह करते थे और तुम्हारी औ़रतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ा इम्तिहान था।[9] **(6)** ❖

और (वह वक़्त याद करो) जबकि तुम्हारे रब ने तुमको इत्तिला फ़रमा दी कि अगर तुम शुक्र करोगे तो तुमको ज़्यादा (नेमत) दूँगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो (यह अच्छी तरह समझ लो कि) मेरा अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है।[10] **(7)** और मूसा ने (यह भी) फ़रमाया कि अगर तुम और दुनिया भर के आदमी सब-के-सब

---

1. रोशनी में लाने का मतलब यह है कि वह राह बतलाएँ।
2. यानी ऐसे शुब्हात पैदा करते हैं जिनके ज़रिये से दूसरों को गुमराह कर सकें।
3. यानी वह गुमराही हक़ से बड़ी दूर है।
4. यह उस शुब्हे का जवाब है कि कुरआन अ़रबी ज़बान में क्यों नाज़िल हुआ, इससे तो यह शुब्हा होता है कि खुद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तैयार कर लिया होगा। अ़रबी के अ़लावा किसी दूसरी ज़बान में क्यों नाज़िल नहीं हुआ ताकि यह शुब्हा ही न होता, और कुरआन दूसरी आसमानी किताबों से ग़ैर-अ़रबी होने में उनके मुवाफ़िक़ भी होता। जवाब का खुलासा यह है कि तमाम पैग़म्बरों पर उन्हीं की क़ौमी ज़बान में अहकाम नाज़िल होते रहे, क्योंकि असल मक़सूद अहकाम का बयान करना और तब्लीग़ है, न कि ज़बानों में मुत्तफ़िक़ होना।
5. यानी उन अहकाम को क़बूल न करके गुमराह होता है।
6. कि वह उन अहकाम को क़बूल कर लेता है।
7. पस ग़ालिब होने की बिना पर सबको हिदायत कर सकता था मगर बहुत-सी हिक्मतें की वजह से ऐसा न हुआ।
8. क्योंकि नेमत को याद करके शुक्र करेगा। सज़ा और उसके ख़त्म होने को याद करके आइन्दा हादसों में सब्र करेगा कि याद दिलाने का एक फ़ायदा यह भी है।
9. यानी मुसीबत में बला थी और बला और नेमत दोनों बन्दे के लिए इम्तिहान हैं। पस इसमें मूसा अ़लैहिस्सलाम ने नेमत व सज़ा दोनों का ज़िक्र फ़रमाया।
11. शुक्र में ईमान और नाशुक्री में कुफ़्र भी दाख़िल है।

बलाउम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम **(6)** ❖

व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बुकुम् ल-इन् श-कर्तुम् ल-अज़ीदन्नकुम् व ल-इन् क-फ़र्तुम् इन्-न अ़ज़ाबी ल-शदीद **(7)** व क़ा-ल मूसा इन् तक्फ़ुरू अन्तुम् व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् फ़-इन्नल्ला-ह ल-ग़निय्युन् हमीद **(8)** अलम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द, वल्लज़ी-न मिम्-बअ्दिहिम्, ला यअ्लमुहुम् इल्लल्लाहु, जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-रद्दू ऐदि-यहुम् फ़ी अफ़्वाहिहिम् व क़ालू इन्ना क-फ़र्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही व इन्ना लफ़ी शक्किम् मिम्मा तद्अूनना इलैहि मुरीब ▲ **(9)** क़ालत् रुसुलुहुम् अफ़िल्लाहि शक्कुन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि, यद्अूकुम् लियग़्फ़ि-र लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़ि-रकुम् इला अ-जलिम्- मुसम्मन्, क़ालू इन् अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना, तुरीदू-न अन् तसुद्दूना अ़म्मा का-न यअ्बुदु आबाउना फ़अ्तूना बिसुल्तानिम्- मुबीन **(10)** क़ालत् लहुम् रुसुलुहुम् इन् नह्नु इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् व लाकिन्नल्ला-ह यमुन्नु अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, व मा का-न लना अन् नअ्ति-यकुम् बिसुल्तानिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्- मुअ्मिनून **(11)** व मा लना अल्ला न-तवक्क-ल अ़लल्लाहि व क़द् हदाना सुबु-लना, व लनस्बिरन्-न अ़ला मा आज़ैतुमूना, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मु-तवक्किलून **(12)** ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिरुसुलिहिम् लनुख़्रिजन्नकुम् मिन् अर्ज़िना औ ल-तअूदुन्-न

إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا
الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِن
بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ
فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُم
بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَتْ رُسُلُهُمْ
أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم
مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوا إِنْ أَنتُمْ
إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ
آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن
نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى
اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَ
عَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ

मिलकर भी नाशुक्री करने लगो तो अल्लाह तआ़ला (का कोई नुक़सान नहीं, क्योंकि वह) बिलकुल ग़नी (और) तारीफ़ वाले हैं। **(8)** (ऐ मक्का के काफ़िरो!) क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, यानी नूह की क़ौम, और (हूद की क़ौम) आ़द, और (सालेह की क़ौम) समूद, और जो लोग उनके बाद हुए हैं जिनको सिवाय अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं जानता। उनके पैग़म्बर उनके पास दलीलें लेकर आए, सो उन क़ौमों ने अपने हाथ उन (पैग़म्बरों) के मुँह में दे दिए,[1] और कहने लगे कि जो (हुक्म) तुमको देकर भेजा गया है हम उसके इनकारी हैं, और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो हम उसकी तरफ़ से बहुत बड़े शुब्हे में हैं जो (हमको) तरद्दुद में डाले हुए है।[2] ▲ **(9)** उनके पैग़म्बरों ने कहा, क्या (तुमको) अल्लाह तआ़ला के बारे में शक है जो कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है,[3] वह तुमको बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे,[4] और मुक़र्ररा मुद्दत तक तुमको (ख़ैर व ख़ूबी के साथ) ज़िन्दगी दे।[5] उन्होंने कहा कि तुम सिर्फ़ एक आदमी हो जैसे हम हैं,[6] तुम (यूँ) चाहते हो कि हमारे बाप (और दादा) जिस चीज़ की इबादत करते थे (यानी बुत) उससे हमको रोक दो,[7] सो कोई साफ़ मोजिज़ा दिखलाओ। **(10)** उनके रसूलों ने (इसके जवाब में) कहा कि हम भी तुम्हारे जैसे आदमी ही हैं, लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहे एहसान फ़रमा दे,[8] और यह बात हमारे क़ब्ज़े की नहीं कि हम तुमको बिना खुदा के हुक्म के कोई मोजिज़ा दिखला सकें, और अल्लाह ही पर सब ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए।[9] **(11)** और हमको अल्लाह पर भरोसा न करने का कौन-सी चीज़ सबब हो सकती है, हालाँकि उसने हमको हमारे (दोनों जहान के फ़ायदों के) रास्ते बतला दिए,[10] और तुमने जो कुछ हमको तकलीफ़ पहुँचाई है हम उसपर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। **(12)** ❖

और (उन) काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुमको अपनी सरज़मीन से निकाल देंगे, या (यह हो कि) तुम हमारे मज़हब में लौट आओ। पस उन (रसूलों) पर उनके रब ने (तसल्ली के लिए) वह्य नाज़िल फ़रमाई कि हम (ही) इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। **(13)** और उनके (हलाक करने के) बाद तुमको इस सरज़मीन में आबाद रखेंगे। (और) यह हर उस शख़्स के लिए (आम) है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे

1. यानी मानते तो क्या? बल्कि यह कोशिश करते थे कि उनको बात तक न करने दें।
2. मक़सूद इससे तौहीद व रिसालत दोनों का इनकार है।
3. यानी उसका इन चीज़ों को पैदा करना खुद उसके वजूद और एक होने की दलील है, फिर इस दलील के होते हुए उसके वजूद और उसकी तौहीद में शक है।
4. इस्लाम से तमाम गुनाह तो माफ़ होते हैं लेकिन हुक़ूक़ व सज़ाएँ माफ़ नहीं होते। चुनाँचे इस्लाम के सबब ज़िम्मी (यानी वह ग़ैर-मुस्लिम जो मुआ़हदे के तहत इस्लामी हुकूमत में रहता हो) से सज़ा का ख़त्म न होना फ़िक़्ह यानी मसाइल के अन्दर ज़िक्र हुआ है।
5. मतलब यह कि तौहीद इसके अ़लावा कि अपने आप में हक़ है, तुम्हारे लिए दोनों जहान में फ़ायदेमन्द भी है।
6. और बशर (यानीं इनसान) होना रसूल होने के ख़िलाफ़ है, जब पैग़म्बर नहीं हो तो तुम जो कुछ तौहीद के बारे में कहते हो वह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है।
7. हालाँकि शिर्क के हक़ होने की वाज़ेह दलील यह है कि हमारे बुज़ुर्ग इसको करते आए हैं।
8. हम अपने बशर (यानी इनसान) होने को तसलीम करते हैं कि वाक़ई हम भी तुम्हारे जैसे आदमी ही हैं, लेकिन बशर होने और नुबुव्वत में कोई ऐसी बात नहीं कि दोनों जमा न हों, क्योंकि नुबुव्वत अल्लाह तआ़ला का एक आला दर्जे का इनाम व एहसान है।
9. मोजिज़ा दिखाना हमारे बस की बात नहीं, फिर अगर इसपर भी तुम न मानो और मुख़ालफ़त किए जाओ तो हम तुम्हारी मुख़ालफ़त से नहीं डरते बल्कि अल्लाह पर भरोसा करते हैं।
10. जिसका इतना बड़ा फ़ज़्ल हो उसपर तो ज़रूर भरोसा करना चाहिए।

फ़ी मिल्लतिना, फ़-औहा इलैहिम् रब्बुहुम् लनुह्लिकन्नज़्-ज़ालिमीन **(13)** व लनुस्किनन्न-कुमुल्-अर्-ज़ मिम्-बअ्दिहिम्, ज़ालि-क लिमन् ख़ा-फ मक़ामी व ख़ा-फ वअ़ीद **(14)** वस्तफ़्तहू व ख़ा-ब कुल्लु जब्बारिन् अ़नीद **(15)** मिंव्वराइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्-माइन् सदीद **(16)** य-तजर्रअुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यअ्तीहिल्-मौतु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व मा हु-व बि-मय्यितिन्, व मिंव्वराइही अ़ज़ाबुन् ग़लीज़ **(17)** म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् अअ्मालुहुम् क-रमादि-निश्तद्दत् बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन् आ़सिफ़िन्, ला यक़्दिरू-न मिम्मा क-सबू अ़ला शैइन्, ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद **(18)** अलम् त-र अन्नल्ला-ह ख़-लक़स्-समावाति वल्-अर्-ज़ बिल्- हक़्क़ि, इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद **(19)** व मा ज़ालि-क अ़लल्लाहि बि-अ़ज़ीज़ **(20)** व ब-रज़ू लिल्लाहि जमीअ़न् फ़क़ालज़्ज़ु-अ़फ़ा-उ लिल्लज़ीनस्-तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-बअ़न् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अ़न्ना मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि मिन् शैइन्, क़ालू लौ हदानल्लाहु ल-हदैनाकुम्, सवाउन् अ़लैना अ-जज़िअ्ना अम् सबर्ना मा लना मिम्-महीस **(21)** ❖

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल्-अम्रु इन्नल्ला-ह व-अ़-दकुम् वअ्दल्-हक़्क़ि व व-अ़त्तुकुम् फ़-अख़्लफ़्तुकुम्, व मा का-न लि-य अ़लैकुम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला अन् दअ़ौतुकुम् फ़स्त-जब्तुम् ली फ़ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ु-सकुम्, मा अ-न बिमुस्रिख़िकुम् व

ابرٰهيم ١٤ ٢٣٣ ومآ أبرئ ١٣

فَأَوْحَىٰٓ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ
ٱلْأَرْضَ مِنۢ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِى وَخَافَ
وَعِيدِ ۝ وَٱسْتَفْتَحُوا۟ وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مِّن وَرَآئِهِۦ
جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّآءٍ صَدِيدٍ ۝ يَتَجَرَّعُهُۥ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُۥ
وَيَأْتِيهِ ٱلْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِن وَرَآئِهِۦ
عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝ مَّثَلُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِرَبِّهِمْ ۖ أَعْمَٰلُهُمْ كَرَمَادٍ
ٱشْتَدَّتْ بِهِ ٱلرِّيحُ فِى يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ لَّا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا۟
عَلَىٰ شَىْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ ٱلضَّلَٰلُ ٱلْبَعِيدُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ خَلَقَ
ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ بِٱلْحَقِّ ۚ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ
جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝ وَبَرَزُوا۟ لِلَّهِ جَمِيعًا
فَقَالَ ٱلضُّعَفَٰٓؤُا۟ لِلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ
أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ ٱللَّهِ مِن شَىْءٍ ۚ قَالُوا۟ لَوْ هَدَىٰنَا
ٱللَّهُ لَهَدَيْنَٰكُمْ ۖ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَجَزِعْنَآ أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِن
مَّحِيصٍ ۝ وَقَالَ ٱلشَّيْطَٰنُ لَمَّا قُضِىَ ٱلْأَمْرُ إِنَّ ٱللَّهَ وَعَدَكُمْ
وَعْدَ ٱلْحَقِّ وَوَعَدتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِىَ عَلَيْكُم مِّن
سُلْطَٰنٍ إِلَّآ أَن دَعَوْتُكُمْ فَٱسْتَجَبْتُمْ لِى ۖ فَلَا تَلُومُونِى وَلُومُوٓا۟

منزل

और मेरी वईद "यानी सज़ा की धमकी" से डरे।[1] **(14)** और (काफ़िर लोग) फ़ैसला चाहने लगे और जितने नाफ़रमान (और) ज़िद्दी (लोग) थे वे सब नाकाम हुए।[2] **(15)** उसके आगे दोज़ख़ है और उसको (दोज़ख़ में) ऐसा पानी पीने को दिया जाएगा जो कि पीप-लहू (के जैसा) होगा। **(16)** जिसको घूँट-घूँट करके पिएगा और (गले से) आसानी के साथ उतारने की कोई सूरत न होगी, और हर (चारों) तरफ़ से उसपर मौत (के सामान) की आमद होगी और वह किसी तरह से मरेगा नहीं,[3] और उसको और सख़्त अ़ज़ाब का सामना होगा।[4] **(17)** जो लोग अपने परवर्दिगार के साथ कुफ़्र करते हैं उनकी हालत अ़मल के एतिबार से यह है कि जैसे कुछ राख हो, जिसको तेज़ आँधी के दिन में तेज़ी के साथ हवा उड़ा ले जाए। (इसी तरह) उन लोगों ने जो कुछ अ़मल किए थे उनका कोई हिस्सा उनको हासिल न होगा (राख की तरह बर्बाद हो जाएगा), यह भी बड़ी दूर दराज़ की गुमराही है।[5] **(18)** क्या (ऐ मुख़ातब!) तुझको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों को और ज़मीन को बिलकुल ठीक-ठीक[6] पैदा किया है, (इससे उसका क़ादिर होना भी मालूम हो गया, पस) अगर वह चाहे तो तुम सबको फ़ना कर दे और एक दूसरी नई मख़्लूक़ को पैदा कर दे। **(19)** और यह ख़ुदा को कुछ भी मुश्किल नहीं।[7] **(20)** और ख़ुदा के सामने सब पेश होंगे, फिर छोटे दर्जे के लोग (यानी अ़वाम और पैरवी करने वाले) बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे कि हम (दुनिया में) तुम्हारे ताबे थे, तो क्या तुम ख़ुदा के अ़ज़ाब का कुछ हिस्सा हमसे हटा सकते हो।[8] वे (जवाब में) कहेंगे कि अगर अल्लाह हमको कोई राह बतलाता तो हम तुमको वह राह बतला देते, (और अब तो) हम सबके हक़ में (दोनों सूरतें) बराबर हैं, चाहे हम परेशान हों चाहे संयम से काम लें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं।[9] **(21)** ❖

1. मुराद यह कि जो मुसलमान हो, जिसकी निशानी अल्लाह के सामने खड़ा होने और उसकी सज़ा की धमकी से ख़ौफ़ है, सबके लिए यह अ़ज़ाब से नजात देने का वायदा आ़म है।
2. यानी हलाक हो गए और जो उनकी मुराद थी कि अपने को हक़ पर समझकर फ़त्ह व कामयाबी चाहते थे वह हासिल न हुई।
3. रिसालत के बाज़ इनकारी अपने ख़्याल व गुमान में अल्लाह से नज़दीकी और सवाब के भी कुछ आमाल करते थे जिनमें से कुछ तो अपनी ज़ात के एतिबार से भी नज़दीकी का सबब न थे जैसे बुतों को पूजना, और बाज़ अपनी ज़ात के एतिबार से तो क़ुर्ब व नज़दीकी का ज़रिया थे मगर ईमान के न होने के सबब उनके हक़ में क़ुर्बत नहीं रहे थे जैसे गुलामों और बाँदियों को आज़ाद करना, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक, मेहमानों की ख़ातिर-मुदारात वग़ैरह-वग़ैरह। पस इन आमाल का लिहाज़ करके उनको शुब्हा हो सकता था कि ये आमाल हमारे काम आएँगे और अ़ज़ाब से बचा लेंगे। इसी तरह यह ख़्याल हो सकता था कि क़ियामत ही क़ायम न होगी इसलिए अ़ज़ाब भी न होगा। इसी तरह यह वस्वसा भी मुम्किन था कि हम जिनके हुक्म से इस बुत-परस्ती को इख़्तियार किए हुए हैं, वे और अल्लाह के अ़लावा हमारे माबूद हमको बचा लेंगे, इसलिए हक़ तआ़ला ने उनके लिए नजात के तमाम रास्तों का बन्द हो जाना गुज़िश्ता आयतों में ज़ाहिर फ़रमा दिया।
4. अगर उन काफ़िरों को अपनी नजात के मुताल्लिक़ यह गुमान हो कि हमारे आमाल हमारे लिए फ़ायदेमन्द (लाभदायक) होंगे तो इसका क़ायदा कुल्लिया यह सुन लो कि काफ़िरों के आमाल की तो यह मिसाल है जैसे तेज़ आँधी राख को उड़ा ले जाए। इस सूरत में उस राख का नाम व निशान भी न रहेगा जो उड़ने में बहुत हल्की होती है, जिसका बयान अगली आयत में है।
5. गुमान तो यह हो कि हमारे अ़मल नेक और नफ़ा देने वाले हैं और फिर ज़ाहिर हों बुरे और नुक़सान देने वाले।
6. यानी फ़ायदों और मस्लहतों पर मुश्तमिल।
7. पस जब नई मख़्लूक़ पैदा करना आसान है तो तुमको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है। पस इसमें आसमान व ज़मीन के पैदा करने से तो नई मख़्लूक़ के पैदा करने की क़ुदरत होने पर इस्तिदलाल किया और उससे पुरानी मख़्लूक़ के दोबारा पैदा करने पर क़ादिर होने पर दलील पकड़ी। ग़रज़ नजात के रास्ते का यह ख़्याल व गुमान भी बातिल हुआ।
8. यानी अगर यह गुमान हो कि हमारे बड़े हमको बचा लेंगे तो इसकी हक़ीक़त भी सुन लो कि अ़वाम और ताबिईन ख़ास लोगों और जिनकी वे पैरवी करते थे उनसे बतौर मलामत व नाराज़गी के कहेंगे कि दीन का जो रास्ता तुमने हमको बतलाया हम उसी पर हो लिए और आज हमपर मुसीबत है, अगर बिलकुल न बचा सको तो कुछ तो बचा सकते हो?
9. इस सवाल व जवाब से मालूम हो गया कि कुफ़्र के रास्ते के बड़े भी अपने पैरोकारों के कुछ काम न आएँगे। नजात के इस तरीक़े में भी कोई गुन्जाइश न रही।

मा अन्तुम् बिमुस्रिख़िय्-य, इन्नी क-फ़र्तु बिमा अश्रक्तुमूनि मिन् क़ब्लु, इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(22)** व उद्ख़िलल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा बि-इज़्नि रब्बिहिम्, तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलाम **(23)** अलम् त-र कै-फ़ ज़-रबल्लाहु म-सलन् कलि-मतन् तय्यि-बतन् क-श-ज-रतिन् तय्यि-बतिन् अस्लुहा साबितुंव्-व फ़र्अ़ुहा फ़िस्समा-इ **(24)** तुअ्ती उकु-लहा कुल्-ल हीनिम्- बि-इज़्नि रब्बिहा, व यज़्रिबुल्लाहुल्- अम्सा-ल लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून **(25)** व म-सलु कलि-मतिन् ख़बिसतिन् क-श-ज-रतिन् ख़बीसतिनिज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़िल्अर्ज़ि मा लहा मिन् क़रार **(26)** युसब्बितुल्-लाहुल्लज़ी-न आमनू बिल्क़ौलिस्-साबिति फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्- आख़िरति व युज़िल्लुल्लाहुज़्ज़ालिमी-न व यफ़्अ़लुल्लाहु मा यशा-उ **(27)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न बद्दलू निअ़्-मतल्लाहि कुफ़्रंव्-व अ-हल्लू क़ौमहुम् दारल्-बवार **(28)** जहन्न-म यस्लौनहा, व बिअ्सल्क़रार **(29)** व ज-अ़लू लिल्लाहि अन्दादल्-लियुज़िल्लू अ़न् सबीलिही, क़ुल् त-मत्तअ़ू फ़-इन्-न मसीरकुम् इलन्नार **(30)** क़ुल् लिअ़िबादियल्लज़ी-न आमनू युक़ीमुस्सला-त व युन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अ़लानि-यतम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्-ला बैअ़ुन् फ़ीहि व ला ख़िलाल **(31)** अल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्र-ज बिही मिनस्स-मराति रिज़्क़ल्लकुम्

أَنفُسَكُم مَّا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنتُم بِمُصْرِخِيَّ إِنِّي كَفَرْتُ
بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِن قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾ وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا
سَلَامٌ ﴿٢٣﴾ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ
طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ
حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ
مِن فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِن قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا
بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ
الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ
اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَبِئْسَ
الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلُّوا عَن سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعُوا
فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُل لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَيُنفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَن
يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ ﴿٣١﴾ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ

और जब (क़ियामत में) तमाम मुक़द्दमों का फ़ैसला हो चुकेगा तो (जवाब में) शैतान कहेगा कि अल्लाह तआ़ला ने तुमसे सच्चे वायदे किए थे और मैंने भी तुमसे कुछ वायदे किए थे, सो मैंने वे वायदे तुमसे ख़िलाफ़ किए थे, और मेरा तुमपर और तो कुछ ज़ोर चलता न था, सिवाय इसके कि मैंने तुमको बुलाया था। सो तुमने (अपने इख़्तियार से) मेरा कहना मान लिया, तो तुम (सारी) मलामत मुझपर मत करो, और (ज़्यादा) मलामत अपने आपको करो।[1] न मैं तुम्हारा मददगार (हो सकता) हूँ और न तुम मेरे मददगार (हो सकते) हो, मैं ख़ुद (तुम्हारे) इस (फ़ेल) से बेज़ार हूँ कि तुम इसके पहले (दुनिया में) मुझको (ख़ुदा का) शरीक क़रार देते थे। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब (मुक़र्रर) है।[2] **(22)** और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएँगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, (और) वे उनमें अपने परवर्दिगार के हुक्म से हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) वहाँ उनको सलाम इस लफ़्ज़ से किया जाएगा। अस्सलामु अ़लैकुम।[3] **(23)** क्या आपको मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई है, कलिमा-ए-तय्यिबा (यानी कलिमा-ए-तौहीद) की कि वह एक पाकीज़ा दरख़्त के जैसा है,[4] जिसकी जड़ ख़ूब गड़ी हुई हो और उसकी शाख़ें "यानी टहनियाँ" ऊँचाई में जा रही हों। **(24)** वह अपने परवर्दिगार के हुक्म से हर फ़स्ल में अपना फल देता हो,[5] और अल्लाह तआ़ला (ऐसी) मिसालें लोगों के वास्ते इसलिए बयान फ़रमाते हैं ताकि वे ख़ूब समझ लें। **(25)** और गन्दे कलिमे (या कुफ़्र व शिर्क के कलिमे) की मिसाल ऐसी है जैसे एक ख़राब दरख़्त हो कि ज़मीन के ऊपर ही ऊपर से उखाड़ लिया जाए, उसको कुछ जमाव "और मज़बूती" न हो।[6] **(26)** अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को इस पक्की बात (यानी कलिमा-ए-तय्यिबा की बरकत) से दुनिया और आख़िरत में मज़बूत रखता है,[7] और अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) को (दीन में और इम्तिहान में) बिचला देता है,[8] और अल्लाह तआ़ला जो चाहता है करता है। **(27)** ❖

क्या आपने उन लोगों (मक्का वालों) को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत पर बजाय (शुक्र करने के) कुफ़्र किया और जिन्होंने अपनी क़ौम को हलाकत के घर **(28)** (यानी) जहन्नम में पहुँचा दिया।[9] वे उसमें दाख़िल होंगे, और वह रहने की बुरी जगह है। **(29)** और उन लोगों ने अल्लाह के साझी क़रार दिए ताकि दूसरों को भी उसके दीन से गुमराह करें। आप कह दीजिए कि थोड़ी और ऐश कर लो, क्योंकि तुम्हारा अख़ीर अन्जाम दोज़ख़ में जाना है।[10] **(30)** जो मेरे (ख़ास) ईमान वाले बन्दे हैं उनसे कह दीजिए कि वे नमाज़ की पाबन्दी रखें और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से छुपे और खुले तौर पर ख़र्च किया करें, ऐसे दिन के आने से पहले (पहले) कि जिसमें न ख़रीद व बेच होगी और न दोस्ती।[11] **(31)** अल्लाह ऐसा है कि जिसने

---

1. जब क़ियामत में ईमान वाले जन्नत में और कुफ़्फ़ार दोज़ख़ में भेज दिये जायेंगे तो उस वक़्त शैतान भी उनका शरीके हाल होगा। दोज़ख़ वाले उसको मलामत करेंगे कि कमबख़्त! तू तो डूबा ही था हमको भी अपने साथ डुबो दिया। शैतान जवाब देगा कि मुझपर तुम्हारी मलामत बेजा है क्योंकि अल्लाह ने तुमसे जितने वायदे किये थे सब सच्चे वादे थे, कि ईमान से नजात और कुफ़्र से हलाकत होगी, और क़ियामत ज़रूर क़ायम होगी। इसके बरख़िलाफ़ मैंने कहा था कि क़ियामत क़ायम नहीं होगी और तुम्हारा कुफ़्र का तरीक़ा ही नजात का सबब है। हक़ तआ़ला का इर्शाद सही और मेरा बयान ग़लत था। अल्लाह तआ़ला के वायदों के हक़ होने और मेरे बयानात के ग़लत होने पर क़तई दलीलें क़ायम थीं। सो बावजूद इसके तुमने मेरे वायदों को सही और ख़ुदा के वायदों को ग़लत समझा। तो तुम अपने हाथों ख़ुद डूबे।

2. पस इससे अल्लाह के अ़लावा दूसरे माबूदों का भरोसा भी ख़त्म हुआ। क्योंकि जो उन माबूदों की इबादत का असल जज़्बा और सबब है। जब उसने साफ़ जवाब दे दिया तो औरों से क्या उम्मीद हो सकती है। पस काफ़िरों की नजात तमाम रास्ते बन्द हो गये।

3. यानी आपस में भी और फ़रिश्तों की तरफ़ से भी। अल्लाह तआ़ला के क़ौलः 'इल्ला क़ीलन् सलामन् सलामा' और अल्लाह तआ़ला के क़ौलः 'वल्-मलाइ-कतु यदख़ुलू-न अ़लैहिम मिन् कुल्लि बाबिन्, सलामुन् अ़लैकुम बिमा स-बर्तुम......' की वजह से।

4. मुराद खजूर का दरख़्त है।

5. यानी ख़ूब फल देता हो कोई फ़स्ल मारी न जाती हो। इसी तरह कलिमा-ए-तौहीद यानीः **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 470 पर)**

व सख़्ख़-र लकुमुल्फ़ुल्-क लितज्रि-य फ़िल्- बह्रि बि-अम्रिही व सख़्ख़-र लकुमुल्-अन्हार **(32)** व सख़्ख़-र लकुमुश्शम्-स वल्- क़-म-र दाइबैनि व सख़्ख़-र लकुमुल्- लै-ल वन्नहार **(33)** व आताकुम् मिन् कुल्लि मा स-अल्तुमूहू, व इन् तअ़ुद्दू निअ़्-मतल्लाहि ला तुह्सूहा, इन्नल्- इन्सा-न ल-ज़लूमुन् कफ़्फ़ार **(34)** ❖

व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ल्-ब-ल-द आमिनंव्-वज्नुब्नी व बनिय्-य अन् नअ़्बुदल्-अस्नाम **(35)** रब्बि इन्नहुन्-न अज़्लल्-न कसीरम्-मिनन्नासि फ़-मन् तबि-अ़नी फ़-इन्नहू मिन्नी व मन् अ़सानी फ़इन्न-क ग़फ़ूरुर् रहीम **(36)** रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन् ज़ुर्रिय्यती बिवादिन् ग़ैरि ज़ी-ज़र्अिन् अिन्-द बैतिकल्-मुहर्रमि रब्बना लियुक़ीमुस्सला-त फ़ज्अ़ल् अफ़्इ-दतम् मिनन्नासि तह्वी इलैहिम् वर्ज़ुक़्हुम् मिनस्स-मराति लअ़ल्लहुम् यश्कुरून **(37)** रब्बना इन्न-क तअ़्लमु मा नुख़्फ़ी व मा नुअ़्लिनु, व मा यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन् शैइन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ **(38)** अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी व-ह-ब ली अ़लल्-कि-बरि इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़, इन्-न रब्बी ल-समीअ़ुद्-दुआ़-इ **(39)** रब्बिज्अ़ल्नी मुक़ीमस्सलाति व मिन् ज़ुर्रिय्यती रब्बना व तक़ब्बल् दुआ़-इ **(40)** रब्बनग़्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य व लिल्मुअ्मिनी-न यौ-म यक़ूमुल्-हिसाब **(41)** ❖

व ला तह्स-बन्नल्ला-ह ग़ाफ़िलन् अ़म्मा यअ़्मलुज़्ज़ालिमू-न, इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम् लियौमिन् तश्ख़सु फ़ीहिल्-अब्सार **(42)** मुह्तिअ़ी-न मुक़्निअ़ी रुऊसिहिम् ला यर्तद्दु

وما أبرئ ١٣ ٢٣٥ ابراهيم ١٤

وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾ وَ
سَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ ۚ
وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ
اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا
الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ ۗ رَبِّ اِنَّهُنَّ
اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ
عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ
بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ
الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۗ
وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۗ اِنَّ
رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ
الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۗ اِنَّمَا

منزل ٣

आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से पानी (यानी बारिश को) बरसाया, फिर उस (पानी) से फलों की क़िस्म से तुम्हारे लिए रिज़्क़ पैदा किया और तुम्हारे नफ़े के वास्ते कश्ती (और जहाज़) को तुम्हारे ताबे बनाया ताकि वह उसके (यानी ख़ुदा के) हुक्म (व क़ुदरत) से दरिया में चले, और तुम्हारे नफ़े के वास्ते नहरों को (अपनी क़ुदरत का) ताबे बनाया। **(32)** और तुम्हारे नफ़े के वास्ते सूरज और चाँद को (अपनी क़ुदरत का) ताबे बनाया जो हमेशा चलने ही में रहते हैं, और तुम्हारे नफ़े के वास्ते रात और दिन को (अपनी क़ुदरत का) ताबे बनाया। **(33)** और जो-जो चीज़ तुमने माँगी तुमको (हर चीज़) दी,[1] और अल्लाह तआला की नेमतें अगर शुमार करने लगो तो शुमार में नहीं ला सकते, (मगर) सच यह है कि आदमी बहुत ही बेइन्साफ़ और बड़ा ही नाशुक्र है।[2] **(34)** ❖

और जबकि इब्राहीम ने कहा,[3] ऐ मेरे रब! इस शहर (यानी मक्का) को अमन वाला बना दीजिए[4] और मुझको और मेरे ख़ास फ़रज़न्दों को बुतों की हिफ़ाज़त से बचाए रखिए।[5] **(35)** ऐ मेरे परवर्दिगार! उन बुतों ने बहुत-से आदमियों को गुमराह कर दिया,[6] फिर जो शख़्स मेरी राह पर चलेगा वह तो मेरा है ही, और जो शख़्स (इस बारे में) मेरा कहना न माने, सो आप तो बहुत ज़्यादा मग़्फ़िरत करने वाले (और) बहुत ज़्यादा रहमत फ़रमाने वाले हैं।[7] **(36)** ऐ हमारे रब! मैं अपनी औलाद को[8] आपके अ़ज़मत वाले "यानी प्रतिष्ठि" घर के क़रीब[9] एक (चटियल और सुनसान) मैदान में जो काश्तकारी के क़ाबिल नहीं,[10] आबाद करता हूँ, ऐ हमारे रब ताकि वे लोग नमाज़ का एहतिमाम "यानी पाबन्दी" रखें, तो आप कुछ लोगों के दिल उनकी तरफ़ माइल कर दीजिए,[11] और उनको (महज़ अपनी क़ुदरत से) फल खाने को दीजिए[12] ताकि ये लोग (इन नेमतों का) शुक्र करें।[13] **(37)** ऐ हमारे रब! आपको तो सब कुछ मालूम है जो हम अपने दिल में रखें और जो ज़ाहिर कर दें। और अल्लाह तआला से (तो) कोई चीज़ भी छुपी नहीं, (न) ज़मीन में और न आसमान में। **(38)** तमाम तारीफ़ (और प्रशंसा) ख़ुदा के लिए (लायक़) है जिसने मुझको बुढ़ापे में इसमाईल और इसहाक़ (दो बेटे) अ़ता फ़रमाए। हक़ीक़त में मेरा रब दुआ़ का बड़ा सुनने वाला है।[14] **(39)** ऐ मेरे रब! मुझको भी नमाज़ का (ख़ास) एहतिमाम करने वाला रखिए और मेरी औलाद में भी[15] (बाज़ों को)। ऐ हमारे रब! और मेरी (यह) दुआ़ क़बूल कीजिये। **(40)** (और) ऐ हमारे रब! मेरी मग़्फ़िरत कर दीजिए और मेरे माँ-बाप की भी और तमाम मोमिनों की भी हिसाब के क़ायम होने के दिन।[16] **(41)** ❖

(पृष्ठ 468 का शेष) 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' की एक जड़ है यानी एतिक़ाद जो मोमिन के दिल में मज़बूती के साथ जगह पकड़े हुए है। और उसकी कुछ शाख़ें हैं यानी नेक आमाल जो ईमान पर मुरत्तब होते हैं जो बारगाहे क़बूलियत में आसमान की तरफ़ ले जाये जाते हैं। फिर उनपर हमेशा की रिज़ा का फल और नतीजा मुरत्तब होता है।

6. मुराद हन्ज़ल यानी इन्दराइन का पेड़ है। वह तनेदार नहीं होता उसको मजाज़न पेड़ फ़रमा दिया गया। और ख़राब उसकी बू, रंग और मज़े की वजह से फ़रमाया। और ऊपर से उखाड़ने का मतलब यह है कि उसकी जड़ दूर तक नहीं होती ऊपर ही रखी होती है।

7. दुनियावी ज़िन्दगी में साबित क़दम रहने से यह मुराद है कि उसपर शैतानों के बहकाने और गुमराह करने का असर नहीं होता और मरते दम तक ईमान पर क़ायम रहता है। और आख़िरत की मज़बूती से मुराद क़ब्र में मुन्कर नकीर के जवाब का सही-सही और इत्मीनान से जवाब दे देना है। यह तफ़सीर बहुत-सी हदीसों में आई है।

8. दुनिया में तो काफ़िरों की गुमराही ज़ाहिर है और क़ब्र में हदीसों की वज़ाहत के मुताबिक़ उनसे जवाब न बन पड़ेगा बल्कि हैरानी व परेशानी भरा जवाब देंगे। हाँ हाँ मैं नहीं जानता।

9. यानी उनको भी कुफ़्र की तालीम दी।

10. ऐश से मुराद कुफ़्र की हालत में रहना है। क्योंकि हर शख़्स को अपने मज़हब में लज़्ज़त होती है। यानी और थोड़े दिन कुफ़्र कर लो यह धमकी और डाँट है।

11. यानी जिस्मानी और माली इबादतों को **(पृष्ठ 468 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 470 की तफ़सीर पृष्ठ 472-476 पर)**

इलैहिम् तर्फ़ुहुम् व अफ़्इ-दतुहुम् हवा-अ् (43) व अन्ज़िरिन्ना-स यौ-म यअ्तीहिमुल्-अ़ज़ाबु फ़-यक़ूलुल्लज़ी-न ज़-लमू रब्बना अख़्ख़िर्ना इला अ-जलिन् क़रीबिन् नुजिब् दअ्व-त-क व नत्तबिअ़िर्रुसु-ल, अ-व लम् तकूनू अक़्सम्तुम् मिन् क़ब्लु मा लकुम् मिन् ज़वाल (44) व सकन्तुम् फ़ी मसाकिनिल्लज़ी-न ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् व तबय्य-न लकुम् कै-फ़ फ़अ़ल्ना बिहिम् व ज़रब्ना लकुमुल्- अम्साल (45) व क़द् म-करू मक्रहुम् व अ़िन्दल्लाहि मक्रुहुम्, व इन् का-न मक्रुहुम् लि-तज़ू-ल मिन्हुल्- जिबाल (46) फ़ला तह्स-बन्नल्ला-ह मुख़्लि-फ़ वअ्दिही रुसु-लहू, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (47) यौ-म तुबद्दलुल्- अर्ज़ु ग़ैरल्-अर्ज़ि वस्समावातु व ब-रज़ू लिल्लाहिल् वाहिदिल्-क़ह्हार (48) व तरल्मुज्रिमी-न यौ-मइज़िम् मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद (49) सराबीलुहुम् मिन् क़तिरानिंव्-व तग़्शा वुजू-हहुमुन्नार (50) लियज्ज़ियल्लाहु कुल्-ल नफ़्सिम् मा क-सबत्, इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्-हिसाब (51) हाज़ा बलाग़ुल्-लिन्नासि व लियुन्ज़रू बिही व लि-यअ्लमू अन्नमा हु-व इलाहुंव्वाहिदुंव्-व लि-यज़्ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब (52) ❖

يؤخرهم ليوم تشخص فيه الابصار ۝٤٢ مهطعين مقنعي
رءوسهم لا يرتد اليهم طرفهم وافدتهم هواء ۝٤٣ وانذر
الناس يوم ياتيهم العذاب فيقول الذين ظلموا ربنا اخرنا
الى اجل قريب نجب دعوتك ونتبع الرسل اولم تكونوا
اقسمتم من قبل ما لكم من زوال ۝٤٤ وسكنتم في مسكن
الذين ظلموا انفسهم وتبين لكم كيف فعلنا بهم وضربنا
لكم الامثال ۝٤٥ وقد مكروا مكرهم وعند الله مكرهم وان
كان مكرهم لتزول منه الجبال ۝٤٦ فلا تحسبن الله مخلف وعده
رسله ان الله عزيز ذو انتقام ۝٤٧ يوم تبدل الارض غير الارض
والسموت وبرزوا لله الواحد القهار ۝٤٨ وترى المجرمين
يومئذ مقرنين في الاصفاد ۝٤٩ سرابيلهم من قطران وتغشى
وجوههم النار ۝٥٠ ليجزي الله كل نفس ما كسبت ان الله سريع
الحساب ۝٥١ هذا بلغ للناس ولينذروا به وليعلموا انما
هو اله واحد وليذكر اولوا الالباب ۝٥٢ ع

سورة الحجر مكية وهي تسع وتسعون اية وست ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
الر تلك ايت الكتب وقران مبين ۝١

15 सूरतुल्-हिज्र 54

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2907 अक्षर, 663 शब्द, 99 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा। तिल्-क आयातुल्- किताबि व क़ुर्आनिम्-मुबीन (1)

और (ऐ मुख़ातब!) जो कुछ ये ज़ालिम (काफ़िर) लोग कर रहे हैं इससे अल्लाह को बेख़बर मत समझ (क्योंकि) उनको सिर्फ़ उस दिन तक मोहलत दे रखी है जिसमें (उन लोगों की) निगाहें फटी रह जाएँगी। **(42)** दौड़ते होंगे, अपने सर ऊपर उठा रखे होंगे, (और) उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आएगी,[1] और उनके दिल बिलकुल बदहवास होंगे। **(43)** और आप उन लोगों को उस दिन से डराइए जिस दिन उनपर अ़ज़ाब आ पड़ेगा। फिर ये ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब! एक थोड़ी-सी मुद्दत तक हमको (और) मोहलत दे दीजिए, हम आपका सब कहना मान लेंगे और पैग़म्बरों की इत्तिबा ''यानी पैरवी'' करेंगे। (जवाब में इर्शाद होगा) क्या तुमने इससे पहले क़स्में न खाई थीं कि तुमको कहीं जाना ही नहीं है।[2] **(44)** हालाँकि तुम उन (पहले) लोगों के रहने की जगहों में रहते थे जिन्होंने अपनी ज़ात का नुक़सान किया था, और तुमको (यह भी) मालूम हो गया था कि हमने उनके साथ क्योंकर मामला किया था, और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं।[3] **(45)** और उन लोगों ने अपनी-सी बहुत ही बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं, और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। और वाक़ई उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएँ, (मगर सब बेकार हो गईं)।[4] **(46)** पस अल्लाह तआ़ला को अपने रसूलों से वायदा-ख़िलाफ़ी करने वाला न समझना, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा ज़बरदस्त (और) पूरा बदला लेने वाला है। **(47)** जिस दिन दूसरी ज़मीन बदल दी जाएगी इस ज़मीन के अ़लावा और आसमान भी,[5] और सब-के-सब एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। **(48)** और तू मुज्रिमों (यानी काफ़िरों) को ज़न्जीरों में जकड़े हुए देखेगा। **(49)** (और) उनके कुर्ते क़तरान के होंगे,[6] और आग उनके चेहरों पर लिपटी होगी। **(50)** ताकि अल्लाह तआ़ला हर (मुज्रिम) शख़्स को उसके किए की सज़ा दे, यक़ीनन अल्लाह तआ़ला बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। **(51)** यह (कुरआन) लोगों के लिए (अहकाम का) पहुँचाना है, और ताकि इसके ज़रिये से (अ़ज़ाब से) डराए जाएँ, और ताकि इस बात का यक़ीन कर लें कि वही एक माबूद (बरहक़) है, और ताकि समझदार लोग नसीहत हासिल करें। **(52)** ❖

15 सूरः हिज्र 54

सूरः हिज्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 99 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-रा।[7] ये आयतें हैं एक (कामिल) किताब और वाज़ेह कुरआन की।[8] **(1)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) अदा करते हैं कि यही नेमत का शुक्र है। इस आयत में मोमिनों की कई तरह तारीफ़ हो गई। एक तो 'अल्लज़ी-न आमनू' से उनको ताबीर फ़रमाया, फिर उनको अ़िबादी (यानी मेरे बन्दे) सम्मान बढ़ाने के तौर पर फ़रमाया, फिर इनायत फ़रमाते हुए शुक्र करने की तरग़ीब देकर नाशुक्री की बड़ी आफ़त से बचा लिया।

(तफ़सीर पृष्ठ 470) 1. जो-जो चीज़ में शर्त यह है कि वह बन्दे के हाल के भी मुनासिब हो। इससे यह शुब्हा जाता रहा कि बाज़ चीज़ें हम माँगते हैं मगर वे नहीं मिलतीं। सो वे अल्लाह की मस्लहत में माँगने वाले के हाल के मुनासिब न होंगी।

2. क्योंकि वह अल्लाह की नेमतों की क़द्र और उनका शुक्र अदा नहीं करता बल्कि और इसके उनट कुफ़्र व नाफ़रमानी करने लगता है।

3. हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम और हज़रत हाजरा अ़लैहस्सलाम को अल्लाह के हुक्म से मक्का के मैदान में लाकर रखने के वक़्त दुआ़ के तौर पर कहा।

4. यानी इसके रहने वाले अमन के हक़दार रहें, यानी इसको हरम कर दीजिए।

5. बुत-परस्ती से महफ़ूज़ रखिए जो जाहिलों में राइज है, जैसा कि अब तक महफ़ूज़ रखा।

6. यानी उनकी गुमराही के सबब हो गए, इसलिए डरकर आपकी पनाह चाहता हूँ। और मैं जिस तरह औलाद के बचने की दुआ़ करता हूँ इसी तरह उनको भी कहता-सुनता रहूँगा। **(पृष्ठ 470 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 472 की तफ़सीर पृष्ठ 474-478 पर)**

चौदहवाँ पारः रु-बमा

सूरतुल्-हिज्रि (आयत 2 से 99)

रु-बमा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ कानू मुस्लिमीन (2) ज़र्हुम् यअ्कुलू व य-तमत्तअू व युल्हिहिमुल्-अ-मलु फ़सौ-फ यअ्लमून (3) व मा अह्लक्ना मिन् क़र्यतिन् इल्ला व लहा किताबुम्-मअ्लूम (4) मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून (5) व क़ालू या अय्युहल्लज़ी नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिज़्ज़िक्रु इन्न-क ल-मज्नून (6) लौ मा तअ्तीना बिल्मलाइ-कति इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (7) मा नुनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-त इल्ला बिल्हक़्क़ि व मा कानू इज़म्-मुन्ज़रीन (8) इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्-नज़्ज़िक्-र व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (9) व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी शि-यअ़िल्-अव्वलीन (10) व मा यअ्तीहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (11) कज़ालि-क नस्लुकुहू फ़ी क़ुलूबिल्-मुज्रिमीन (12)

الحجر ١٥ ٢٣٧ ربما ١٤

ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين ۝ ذرهم يأكلوا
ويتمتعوا ويلههم الأمل فسوف يعلمون ۝ وما أهلكنا
من قرية إلا ولها كتاب معلوم ۝ ما تسبق من أمة
أجلها وما يستأخرون ۝ وقالوا يا أيها الذي نزل عليه
الذكر إنك لمجنون ۝ لو ما تأتينا بالملائكة إن كنت من
الصادقين ۝ ما ننزل الملائكة إلا بالحق وما كانوا إذا
منظرين ۝ إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون ۝ و
لقد أرسلنا من قبلك في شيع الأولين ۝ وما يأتيهم
من رسول إلا كانوا به يستهزءون ۝ كذلك نسلكه في
قلوب المجرمين ۝ لا يؤمنون به وقد خلت سنة الأولين ۝
ولو فتحنا عليهم بابا من السماء فظلوا فيه يعرجون ۝
لقالوا إنما سكرت أبصارنا بل نحن قوم مسحورون ۝
ولقد جعلنا في السماء بروجا وزيناها للناظرين ۝ وحفظناها
من كل شيطان رجيم ۝ إلا من استرق السمع فأتبعه
شهاب مبين ۝ والأرض مددناها وألقينا فيها رواسي
وأنبتنا فيها من كل شيء موزون ۝ وجعلنا لكم فيها

ला युअ्मिनू-न बिही व क़द् ख़लत् सुन्नतुल्-अव्वलीन (13) व लौ फ़तह्ना अ़लैहिम् बाबम्-मिनस्समा-इ फ़ज़ल्लू फ़ीहि यअ्रुजून (14) लक़ालू इन्नमा सुक्किरत् अब्सारुना बल् नह्नु क़ौमुम्-मस्हूरून (15) ❖

व ल-क़द् जअ़ल्ना फ़िस्समा-इ बुरूजव्-व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन (16) व हफ़िज़्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर्रजीम (17) इल्ला मनिस्त-रक़स्सम्-अ़ फ़अत्ब-अ़हू

चौदहवाँ पारः रु-बमा

सूरः हिज्र (आयत 2 से 99)

काफ़िर लोग बार-बार तमन्ना करेंगे कि क्या ख़ूब होता अगर वे मुसलमान होते।[1] (2) आप उनको (उनके हाल पर) रहने दीजिए कि वे खा लें और चैन उड़ा लें और ख़्याली मन्सूबे उनको ग़फ़लत में डाले रखें, उनको अभी हक़ीक़त मालूम हुई जाती है। (3) और हमने जितनी बस्तियाँ हलाक की हैं उन सबके लिए एक मुक़र्रर (वक़्त) लिखा हुआ (होता रहा) है। (4) कोई उम्मत अपनी मुक़र्ररा मीयाद से न पहले (हलाक) हुई है और न पीछे रही है।[2] (5) और (उन काफ़िरों ने यूँ) कहा कि ऐ वह शख़्स जिसपर क़ुरआन नाज़िल किया गया है, तहक़ीक़ कि तुम मजनूँ हो। (6) अगर तुम सच्चे हो तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाते। (7) हम फ़रिश्तों को साफ़ फ़ैसले ही के लिए नाज़िल किया करते हैं, और उस वक़्त उनको मोहलत भी न दी जाती। (8) हमने क़ुरआन को नाज़िल किया है और हम इसके मुहाफ़िज़ हैं।[3] (9) और हमने आपसे पहले भी (पैग़म्बरों को) अगले लोगों के गिरोहों में भेजा था। (10) और कोई रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया जिसके साथ उन्होंने हँसी-ठट्ठा न किया हो। (11) इसी तरह हम यह (हँसी और मज़ाक़ उड़ाना) उन मुज्रिमों के दिलों में डाल देते हैं। (12) (जिसकी वजह से) ये लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाते, और (यह) दस्तूर पहलों ही से होता आया है। (13) और अगर हम उनके लिए आसमान में कोई दरवाज़ा खोल दें फिर ये दिन के वक़्त उसमें चढ़ जाएँ। (14) (तब भी यूँ) कह दें कि हमारी नज़रबन्दी कर दी गई थी, बल्कि हम लोगों पर तो बिलकुल जादू कर रखा है। (15) ❖

और बेशक हमने आसमान में बड़े-बड़े सितारे पैदा किए, और देखने वालों के लिए उसको सजाया।[4] (16) और उसको हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ फ़रमाया।[5] (17) हाँ मगर कोई बात चोरी-छुपे सुन भागे तो उसके पीछे एक चमकदार शोला हो लेता है।[6] (18) और हमने ज़मीन को फैलाया और उसमें भारी-भारी पहाड़ डाल दिए और उसमें हर क़िस्म की चीज़ एक मुतैयन मिक़दार "मात्रा" से उगाई है। (19) और हमने तुम्हारे

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. उनकी मग़्फ़िरत और रहमत का सामान भी कर सकते हैं कि उनको हिदायत कर दें। इस दुआ से मक़सूद मोमिनों के लिए हिदायत तलब करना है।

8. यानी इसमाईल अ़लैहिस्सलाम को और उनके वास्ते से उनकी नस्ल को।

9. यानी ख़ाना काबा के क़रीब जो कि पहले से यहाँ बना हुआ था और हमेशा से लोग उसका अदब करते आते थे।

10. चटियल और सुनसान मैदान में जो पथरीला होने के सबब खेती-बाड़ी के क़ाबिल नहीं।

11. कि यहाँ आकर रहें-सहें ताकि आबादी पुर-रौनक़ हो जाए।

12. चूँकि यहाँ खेती-बाड़ी वग़ैरह नहीं हो सकती, इसलिए उनको महज़ अपनी क़ुदरत से फल खाने को दीजिए।

13. ये दुआएँ महज़ बन्दगी और आजिज़ी के इज़्हार के लिए हैं, इनसे यह ग़रज़ नहीं कि दरख़्वास्त करके आपको अपनी हाजतों की इत्तिला दूँ।

14. कि औलाद के देने के मुताल्लिक़ मेरी दुआ क़बूल की।

15. चूँकि मुझको वह्य से मालूम हो गया है कि मेरी औलाद में ग़ैर-मोमिन भी होंगे इसलिए सारी औलाद के लिए दुआ नहीं कर सकता।

16. इस मक़ाम पर इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की कई दुआएँ सिवाय माँ-बाप की मग़्फ़िरत के सब क़बूल हुईं। अव्वल मक्का को अमन वाला बनाना। चुनाँचे वह इस तरह क़बूल हुई कि वह हरम हो गया जिसमें क़त्ल व ग़ारत यहाँ तक कि जंगली जानवरों और बाज़े घास और पौधों का काटना व हटाना भी हराम हो गया। दूसरी दुआ अपने और अपनी औलाद के शिर्क से महफ़ूज़ रहने की थी। वह इस तरह क़बूल हुई कि उनके ख़ास फ़रज़न्द **(पृष्ठ 470 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 472, 474 की तफ़सीर पृष्ठ 476-480 पर)**

शिहाबुम्-मुबीन **(18)** वल्अर्-ज़ मदद्नाहा व अल्कैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि शैइम्-मौज़ून **(19)** व जअ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआ़यि-श व मल्लस्तुम् लहू बिराज़िक़ीन **(20)** व इम्मिन् शैइन् इल्ला अिन्दना ख़ज़ाइनुहू व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि-क़्-दरिम्-मअ़्लूम **(21)** व अर्सल्नर्रिया-ह लवाक़ि-ह फ़-अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ माअन् फ़-अस्क़ैनाकुमूहु व मा अन्तुम् लहू बिख़ाज़िनीन **(22)** व इन्ना ल-नह्नु नुह्यी व नुमीतु व नह्नुल्-वारिसून **(23)** व ल-क़द् अ़लिम्नल्-मुस्तक़्दिमी-न मिन्कुम् व ल-क़द् अ़लिम्नल्-मुस्तअ़्ख़िरीन **(24)** व इन्-न रब्ब-क हु-व यह्शुरुहुम्, इन्नहू हकीमुन् अ़लीम **(25)** ❖

व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिम् मिन् ह-मइम्-मस्नून **(26)** वल्जान्-न ख़लक़्नाहु मिन् क़ब्लु मिन्-नारिस्समूम **(27)** व इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी ख़ालिक़ुम् ब-शरम्-मिन् सल्सालिम् मिन् ह-मइम्-मस्नून **(28)** फ़-इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़-क़अ़ू लहू साजिदीन **(29)** फ़-स-जदल्-मलाइ-कतु कुल्लुहुम् अज्मअ़ून **(30)** इल्ला इब्ली-स, अबा अंय्यकू-न मअ़स्साजिदीन **(31)** क़ा-ल या इब्लीसु मा ल-क अल्ला तकू-न मअ़स्साजिदीन **(32)** क़ा-ल लम् अकुल्-लिअस्जु-द लि-ब-शरिन् ख़लक़्तहू मिन् सल्सालिम्-मिन् ह-मइम्-मस्नून **(33)** क़ा-ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम **(34)** व इन्-न अ़लैकल्लअ़्-न-त इला यौमिद्दीन **(35)** क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून **(36)** क़ा-ल फ़-इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन **(37)** इला यौमिल्

ربما ١٤ ٢٣٨ الحجر ١٥

معايش ومن لستم له برازقين ۝ وإن من شيء إلا
عندنا خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم ۝ وأرسلنا الرياح
لواقح فأنزلنا من السماء ماء فأسقيناكموه وما أنتم له
بخازنين ۝ وإنا لنحن نحيي ونميت ونحن الوارثون ۝ ولقد
علمنا المستقدمين منكم ولقد علمنا المستأخرين ۝ وإن
ربك هو يحشرهم إنه حكيم عليم ۝ ولقد خلقنا الإنسان
من صلصال من حمإ مسنون ۝ والجان خلقناه من قبل
من نار السموم ۝ وإذ قال ربك للملائكة إني خالق بشرا
من صلصال من حمإ مسنون ۝ فإذا سويته ونفخت فيه
من روحي فقعوا له ساجدين ۝ فسجد الملائكة كلهم أجمعون ۝
إلا إبليس أبى أن يكون مع الساجدين ۝ قال يا إبليس
ما لك ألا تكون مع الساجدين ۝ قال لم أكن لأسجد لبشر
خلقته من صلصال من حمإ مسنون ۝ قال فاخرج منها
فإنك رجيم ۝ وإن عليك اللعنة إلى يوم الدين ۝ قال
رب فأنظرني إلى يوم يبعثون ۝ قال فإنك من المنظرين ۝
إلى يوم الوقت المعلوم ۝ قال رب بما أغويتني لأزينن

منزل ٣

वास्ते उसमें रोज़ी के सामान बनाए और उनको भी (रोज़ी दी) कि जिनको तुम रोज़ी नहीं देते। **(20)** और जितनी चीज़ें हैं हमारे पास सब ख़ज़ाने (के ख़ज़ाने) हैं। और हम उस (चीज़) को एक मुतैयन मिक़दार "यानी मात्रा" से उतारते रहते हैं। **(21)** और हम ही हवाओं को भेजते रहते हैं जो कि बादलों को पानी से भर देती हैं, फिर हम ही आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर वह (पानी) तुमको पीने को देते हैं, और तुम (इतना पानी) जमा करके न रख सकते थे। **(22)** और हम ही ज़िन्दा करते हैं और मारते हैं, और हम ही (बाक़ी) रह जाएँगे। **(23)** और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और हम तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। **(24)** और बेशक आपका रब ही उन सबको जमा फ़रमाएगा, बेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। **(25)** ❖

और हमने इनसान को[1] बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की बनी हुई थी, पैदा किया। **(26)** और जिन्न को इससे पहले[2] आग से कि वह एक गर्म हवा थी, पैदा कर चुके थे। **(27)** और (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जब आपके रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं एक बशर को बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे से बनी होगी, पैदा करने वाला हूँ। **(28)** सो जब मैं उसको पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी तरफ़ से जान डाल दूँ तो तुम सब उसके सामने सज्दे में गिर पड़ना। **(29)** सो सारे के सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया। **(30)** मगर इब्लीस ने (नहीं किया), उसने इस बात को कबूल नहीं किया कि सज्दा करने वालों में शामिल हो।[3] **(31)** (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया कि ऐ इब्लीस! तुझको कौन-सी बात इसकी सबब हुई कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। **(32)** कहने लगा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर "आदमी" को सज्दा करूँ जिसको आपने बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की बनी है, पैदा किया है।[4] **(33)** इर्शाद हुआ कि तू इस (आसमान) से निकल, क्योंकि बेशक तू मरदूद हो गया। **(34)** और बेशक तुझपर लानत रहेगी क़ियामत के दिन तक।[5] **(35)** कहने लगा, तो फिर मुझको मोहलत दीजिए क़ियामत के दिन तक। **(36)** इर्शाद हुआ कि तुझको मोहलत दी गई। **(37)** तय वक़्त की तारीख़ तक। **(38)** कहने लगा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! इस सबब

(पिछले पृष्ठ का शेष) जो आपकी पुश्त से थे इससे महफ़ूज़ रहे, पस औलाद दर औलाद के शिर्क से कोई इश्काल लाज़िम नहीं आता। खुद इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम शिर्क से शुरू से बरी और पाक चले आते थे। अपने लिए जो शिर्क से महफ़ूज़ रहने की दुआ़ की तो उससे हमेशा महफ़ूज़ रहना मक़सूद था, फिर यह कि हमेशा की हिफ़ाज़त भी नुबुव्वत व मासूम होने की वजह से यक़ीनी थी फिर उसकी तलब के क्या मायने? जवाब यह है कि गुनाहों से महफ़ूज़ रहने का लाज़िम रहना अल्लाह की तौफ़ीक़ से है, कोई तबई चीज़ नहीं, इसलिए हिफ़ाज़त की तलब ज़रूरी है। तीसरी दुआ़ नमाज़ की पाबन्दी के लिए थी, यह भी क़बूल हुई। आपकी औलाद में बहुत-से आ़बिद बल्कि आ़बिदों के सरदार हुए। चौथी दुआ़ भी क़बूल हुई, चुनाँचे पहले क़बीला जुर्हुम ने वहाँ आकर रिहाइश इख़्तियार की फिर मुख़्तलिफ़ ज़मानों में लोग मुख़्तलिफ़ मक़ामात से आकर वहाँ बसते रहे। पाँचवीं दुआ़ फलों के लिए थी। यह दो तरह से क़बूल हुई एक ताइफ़ में पैदावार की ज़्यादती, दूसरे दुनिया के दूसरे शहरों और मुल्कों से उनका आना।

(तफ़सीर पृष्ठ 472) **1.** यानी ऐसी टिकटिकी बंधेगी कि आँख न झपकेंगे।

2. यानी क़ियामत के इनकारी थे और इसपर क़सम खाते थे।

3. यानी आसमानी किताबों में हमने इन वाक़िआत को मिसाल के तौर पर बयान किया कि अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम भी ऐसे ही ग़ज़ब और अ़ज़ाब के हक़दार होगे। पस वाक़िआत का पहले तो ख़बरों से सुनना फिर हमारा उनको बयान करना, फिर उन जैसा बनने पर तंबीह कर देना, इन सब असबाब का तक़ाज़ा यह था कि क़ियामत का इनकार न करते।

4. यह जो फ़रमाया कि उन तदबीरों से पहाड़ों का टल जाना भी हैरतनाक न था, तो यह किसी चीज़ की कुव्वत बयान करने के लिए एक मुहावरा है, और अपने आप में यह चीज़ कुछ मुहाल भी नहीं, क्योंकि पहाड़ों के तोड़ने और उड़ाने की तदबीरें आजकल ख़ूब कसरत से इस्तेमाल में आ रही हैं। और अल्लाह ही ज़्यादा बेहतर जानते हैं।

5. यानी इन आसमानों के अ़लावा आसमान भी **(पृष्ठ 472 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 474, 476 की तफ़सीर पृष्ठ 478-482 पर)**

वक़्तिल्-मअ़्लूम (38) क़ा-ल रब्बि बिमा अग़्वैतनी ल-उज़य्यिनन्-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व ल-उग़्वियन्नहुम् अज्मअ़ीन (39) इल्ला अ़िबाद-क मिन्हुमुल्-मुख़्लसीन (40) क़ा-ल हाज़ा सिरातुन् अ़लय्-य मुस्तक़ीम (41) इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन् इल्ला मनित्त-ब-अ़-क मिनल्-ग़ावीन (42) व इन्-न जहन्न-म लमौअ़िदुहुम् अज्मअ़ीन (43) लहा सब्-अ़तु अब्वाबिन्, लिकुल्लि बाबिम् मिन्हुम् जुज़्उम्-मक़्सूम (44) ❖

इन्नल् मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून (45) उद्ख़ुलूहा बि-सलामिन् आमिनीन (46) व नज़अ़्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् इख़्वानन् अ़ला सुरुरिम् मु-तक़ाबिलीन (47) ला यमस्सुहुम् फ़ीहा न-सबुंव्-व मा हुम् मिन्हा बिमुख़्रजीन (48) नब्बिअ् अ़िबादी अन्नी अनल् ग़फ़ूरुर्रहीम (49) व अन्-न अ़ज़ाबी हुवल् अ़ज़ाबुल् अलीम (50) व नब्बिअ्हुम् अ़न् ज़ैफ़ि इब्राहीम ✣ (51) इज़् द-ख़लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन्, क़ा-ल इन्ना मिन्कुम् वजिलून (52) क़ालू ला तौजल् इन्ना नबुश्शिरु-क बिग़ुलामिन् अ़लीम (53) क़ा-ल अ-बश्शर्तुमूनी अ़ला अम्मस्-सनियल्-कि-बरु फ़बि-म तुबश्शिरून (54) क़ालू बश्शर्ना-क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकुम् मिनल् क़ानितीन (55) क़ा-ल व मंय्यक़्नतु मिर्रह्मति रब्बिही इल्लज़्ज़ाल्लून (56) क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (57) क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम्-मुज्रिमीन (58) इल्ला आ-ल लूतिन्, इन्ना लमुनज्जूहुम् अज्मअ़ीन (59) इल्लम्-र-अ-तहू क़द्दर्ना इन्नहा

لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ
الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ
عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ
أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي
جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي
صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ
فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي
أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾
وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا
قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ
عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ
تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا بَشَّرْنَاكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَانِطِينَ ﴿٥٥﴾
قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا
خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾
إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا

ع ١٩/٣ وقف لازم

से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं क़सम खाता हूँ कि मैं उनको दुनिया में (गुनाहों को) पसन्दीदा करके दिखाऊँगा, और उन सबको गुमराह करूँगा। **(39)** सिवाय आपके उन बन्दों के जो उनमें से चुन लिए गए हैं।[1] **(40)** इर्शाद हुआ कि यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है। **(41)** वाक़ई मेरे उन बन्दों पर तेरा ज़रा भी बस न चलेगा, हाँ मगर जो गुमराह लोगों में से तेरी राह पर चलने लगे। **(42)** और उन सबसे जहन्नम का वायदा है। **(43)** जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। **(44)** ❖

बेशक खुदा से डरने वाले बाग़ों और चश्मों में होंगे। **(45)** तुम उनमें सलामती और अमन से दाख़िल हो।[2] **(46)** और उनके दिलों में जो कीना था हम वह सब दूर कर देंगे कि सब भाई-भाई की तरह रहेंगे, तख़्तों पर आमने-सामने (बैठा करेंगे)। **(47)** वहाँ उनको ज़रा भी तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे वहाँ से निकाले जाएँगे। **(48)** आप मेरे बन्दों को इत्तिला दे दीजिए कि मैं बड़ा मग्फ़िरत वाला, बड़ा रहमत वाला (भी) हूँ। **(49)** और यह कि मेरी सज़ा दर्दनाक सज़ा है।[3] **(50)** और आप उनको इब्राहीम के मेहमानों की भी इत्तिला दीजिए। **(51)** जबकि वे उनके पास आए, फिर उन्होंने अस्सलामु अ़लैकुम कहा, (इब्राहीम) कहने लगे कि हम तो तुमसे डर रहे हैं।[4] **(52)** उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम आपको एक फ़रज़न्द ''यानी लड़के'' की खुशख़बरी देते हैं जो बड़ा आ़लिम होगा।[5] **(53)** (इब्राहीम) कहने लगे कि क्या तुम मुझको इस हालत पर खुशख़बरी देते हो कि मुझपर बुढ़ापा आ गया, सो किस चीज़ की खुशख़बरी देते हो।[6] **(54)** वे बोले कि हम आपको हक़ चीज़ की खुशख़बरी देते हैं,[7] सो आप नाउम्मीद न हों।[8] **(55)** (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि भला अपने रब की रहमत से कौन नाउम्मीद होता है सिवाय गुमराह लोगों के।[9] **(56)** फ़रमाने लगे कि अब तुमको क्या मुहिम पेश आई है ऐ भेजे हुए (फ़रिश्तो)! **(57)** (फ़रिश्तों ने) कहा कि हम एक मुज्रिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। **(58)** मगर लूत का ख़ानदान, कि हम उन सबको बचा लेंगे।[10] **(59)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) दूसरे बदल दिए जाएँगे। क्योंकि पहली बार के सूर फूँकने से सब ज़मीन व आसमान टूट-फूट जाएँगे, फिर दूसरी बार नये सिरे से ज़मीन व आसमान बनेंगे। हदीसों से साबित होता है कि इस दोबारा पैदा करने के अ़लावा आसमानों और ज़मीन में कोई और तब्दीली भी होगी, जिसमें अहले महशर किसी तब्दीली के वक़्त ज़मीन पर नहीं होंगे बल्कि पुलसिरात पर होंगे, जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में वज़ाहत है। बाक़ी उस तब्दीली की हिक्मत खुदा-ए-अ़लीम ही को मालूम है।

6. क़तरान चीड़ के पेड़ का रोग़न होता है। यानी सारे बदन को चीड़ का तेल लिपटा होगा कि उसमें आग जल्दी और तेज़ी के साथ लगे।

7. खुलासा इस सूरः का ये मज़ामीन हैं: क़ुरआन का हक़ होना, काफ़िरों को अ़ज़ाब देना, रिसालत की तहक़ीक़, तौहीद का साबित करना, बाज़ इनामात का ज़िक्र, फ़रमाँबर्दारों को बदला और जज़ा, मुख़ालिफ़ों को सज़ा, बतौर नमूना जज़ा और सज़ा के बाज़ क़िस्से, क़ियामत की हक़ीक़त और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तसल्ली।

8. यानी इसकी दोनों सिफ़तें हैं, कामिल किताब होना भी और वाज़ेह क़ुरआन होना भी।

(तफ़सीर पृष्ठ 474) **1.** बार-बार इसलिए कि जब कोई नई शिद्दत वाक़ेअ़ होगी और मालूम होगा कि इसका सबब कुफ़्र है तब ही इस्लाम न लाने पर ताज़ा हसरत करेंगे।

2. पस इसी तरह जब उनका वक़्त आ जाएगा उनको भी सज़ा दे दी जाएगी।

3. इसलिए इसमें कोई कमी-बेशी नहीं कर सकता, जैसा कि और किताबों में होता आ रहा है कि बावजूद किसी मुख़ालिफ़ के न होने के उसके नुस्ख़ों में कमी-ज़्यादती का इख़्तिलाफ़ होता है, और इसमें मुख़ालिफ़ों की कोशिश के बावजूद यह बात नहीं हुई।

4. 'बुरूज' की तफ़सीर सितारों के साथ **(पृष्ठ 474 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 476, 478 की तफ़सीर पृष्ठ 480-484 पर)**

लमिनल्-ग़ाबिरीन (60) ❖

फ़-लम्मा जा-अ आ-ल लूति-निल्मुर्सलून (61) क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुम्-मुन्करून (62) क़ालू बल् जिअ्ना-क बिमा कानू फ़ीहि यम्तरून (63) व अतैना-क बिल्हक़्क़ि व इन्ना लसादिक़ून (64) फ़-अस्रि बिअह्लि-क बिक़ित्अिम् मिनल्लैलि वत्तबिअ् अद्बारहुम् व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-हदुंव्वम्ज़ू हैसु तुअ्मरून (65) व क़ज़ैना इलैहि ज़ालिकल्-अम्-र अन्-न दाबि-र हाउला-इ मक़्तूअुम्-मुस्बिहीन (66) व जा-अ अह्लुल्-मदीनति यस्तब्शिरून (67) क़ा-ल इन्-न हाउला-इ ज़ैफ़ी फ़ला तफ़्ज़हून (68) वत्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ून (69) क़ालू अ-व लम् नन्ह-क अ़निल्-आ़लमीन (70) क़ा-ल हाउला-इ बनाती इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन (71) ल-अ़म्रु-क इन्नहुम् लफ़ी सक्रतिहिम् यअ्महून (72) फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सैहतु मुश्रिक़ीन (73) फ़-जअ़ल्ना आ़लि-यहा साफ़ि-लहा व अम्तर्ना अ़लैहिम् हिजा-रतम् मिन् सिज्जील (74) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिल्-मु-तवस्सिमीन (75) व इन्नहा लबि-सबीलिम् मुक़ीम (76) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिल्मुअ्मिनीन (77) व इन् का-न अस्हाबुल्-ऐ-कति लज़ालिमीन (78) फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् ✣ व इन्नहुमा लबि-इमामिम्- मुबीन (79) ❖

व ल-क़द् कज़्ज़-ब अस्हाबुल् हिज्रिल्-मुर्सलीन (80) व आतैनाहुम् आयातिना फ़कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन (81) व कानू यन्हितू-न मिनल्-जिबालि बुयूतन् आमिनीन (82)

إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ
إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ ﴿٦٢﴾ قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾
وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٦٤﴾ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ
اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ
تُؤْمَرُونَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ
مُصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾ وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾ قَالَ إِنَّ
هَٰؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ﴿٦٩﴾
قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ
كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾ فَأَخَذَتْهُمُ
الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾
وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُقِيمٍ ﴿٧٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾
وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَ
إِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُبِينٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾
وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوا يَنْحِتُونَ
مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾

सिवाय उनकी बीवी के कि हमने उसके बारे में तय कर रखा है कि वह ज़रूर उसी मुज्रिम क़ौम में रह जाएगी।[1] **(60)** ❖

फिर जब भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के ख़ानदान के पास आए **(61)** (तो) वे कहने लगे, तुम तो अजनबी आदमी हो। **(62)** उन्होंने कहा, नहीं! बल्कि हम आपके पास वह चीज़ लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक किया करते थे।[2] **(63)** और हम आपके पास यक़ीनी (होने वाली) चीज़ लेकर आए हैं और हम बिलकुल सच्चे हैं। **(64)** सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर चले जाइए, और आप सबके पीछे हो लीजिए,[3] और तुममें से कोई पीछे फिरकर भी न देखे, और जिस जगह का तुमको हुक्म हुआ है उस तरफ़ सब चले जाना।[4] **(65)** और हमने उनके (यानी लूत अ़लैहिस्सलाम के) पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उनकी बिलकुल जड़ ही कट जाएगी।[5] **(66)** और शहर के लोग ख़ूब ख़ुशियाँ करते हुए पहुँचे।[6] **(67)** (लूत अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ये लोग मेरे मेहमान हैं, सो मुझको फ़ज़ीहत मत करो। **(68)** और अल्लाह तआ़ला से डरो और मुझको रुस्वा मत करो। **(69)** वे कहने लगे कि क्या हम आपको दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर चुके। **(70)** (हज़रत लूत ने) फ़रमाया कि ये मेरी (बहू) बेटियाँ मौजूद हैं,[7] अगर तुम (मेरा कहना) करो। **(71)** आपकी जान की क़सम वे अपनी मस्ती में मदहोश थे। **(72)** पस सूरज निकलते-निकलते उनको सख़्त आवाज़ ने आ दबाया। **(73)** फिर हमने उन बस्तियों का ऊपर का तख़्ता तो नीचे कर दिया और उन लोगों पर कँगर के पत्थर बरसाना शुरू किए। **(74)** इस (वाक़िए) में कई निशानियाँ हैं अ़क़्ल रखने वालों के लिए।[8] **(75)** और ये (बस्तियाँ) एक आबाद सड़क पर (मिलती) हैं।[9] **(76)** उन (बस्तियों) में ईमान वालों के लिए बड़ी इबरत है। **(77)** और बन वाले (शुऐब की उम्मत भी) बड़े ज़ालिम थे। **(78)** सो हमने उनसे बदला लिया,[10] और दोनों (बस्तियाँ) साफ़ सड़क पर हैं।[11] **(79)** ❖

और हिज्र वालों ने पैग़म्बरों को झूठा बतलाया।[12] **(80)** और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं, सो वे लोग उनसे मुँह मोड़ते रहे। **(81)** और वे लोग पहाड़ों को तराश-तराशकर उनमें घर बनाते थे कि अमन में रहें। **(82)** सो उनको सुबह के वक़्त सख़्त आवाज़ ने आन पकड़ा। **(83)** सो उनके हुनर उनके कुछ भी काम

(पिछले पृष्ठ का शेष) मुजाहिद और क़तादा से, और बड़े सितारों के साथ अबू सालेह से दुर्रे मन्सूर में नक़ल की गई है। तश्बीह देते हुए मजाज़न उनको बुरूज कह दिया गया।

5. कि वहाँ तक उनकी रसाई नहीं होने पाती।

6. जानना चाहिए कि क़ुरआन व हदीस में यह दावा नहीं कि बिना इस सबब के शिहाब (टूटने वाला चमकदार सितारा) पैदा नहीं होता बल्कि दावा यह है कि चोरी-छुपे आसमानी ख़बरें सुनने के वक़्त शिहाब (टूटने वाले चमकदार सितारे) से शैतानों को मारा जाता है। पस मुम्किन है कि शिहाब कभी महज़ तबई तौर पर होता हो और कभी इस ग़रज़ के लिए होता हो। और शिहाबे साक़िब (टूटने वाला चमकदार सितारा) दिन को भी होता है लेकिन सूरज की रोशनी की वजह से नज़र नहीं आता। तो यह वस्वसा न रहा कि शैतान रात ही को चोरी-छुपे बात सुनने की कोशिश करते हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 476) **1.** यानी इस जिन्स की पहली असल यानी आदम अ़लैहिस्सलाम को।

2. यानी आदम अ़लैहिस्सलाम से पहले।

3. यानी सज्दा न किया।

4. यानी ऐसे हक़ीर व ज़लील माद्दे से बनाया गया है और मैं नूरानी माद्दे आग से पैदा हुआ हूँ, तो नूरानी होकर अंधेरी वाले को कैसे सज्दा करूँ।

5. यानी क़ियामत तक तू मेरी रहमत से **(पृष्ठ 476 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 478, 480 की तफ़सीर पृष्ठ 482-486 पर)**

फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सैहतु मुस्बिहीन (83) फ़मा अग़ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून (84) व मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि, व इन्नस्सा-अ़-त लआति-यतुन् फ़स्फ़हिस्सफ़्हल्-जमील (85) इन्-न रब्ब-क हुवल् ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (86) व ल-क़द् आतैना-क सब्अ़म् मिनल्-मसानी वल्क़ुरआनल्-अ़ज़ीम (87) ला तमुद्दन्-न अ़ैनै-क इला मा मत्तअ़्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् वख़्फ़िज़् जनाह-क लिल्मुअ्मिनीन (88) व क़ुल् इन्नी अनन्नज़ीरुल्-मुबीन (89) कमा अन्ज़ल्ना अ़लल्-मुक़्तसिमीन (90) अल्लज़ी-न ज-अ़लुल्-क़ुर्आ-न अ़िज़ीन (91) फ़-वरब्बि-क लनस्-अलन्नहुम् अज्मअ़ीन (92) अ़म्मा कानू यअ़्मलून ◆ (93) फ़स्दअ़् बिमा तुअ्मरु व अअ़्रिज़् अ़निल्-मुश्रिकीन (94) इन्ना कफ़ैनाकल्- मुस्तह्ज़िईन (95) अल्लज़ी-न यज्अ़लू-न मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़सौ-फ़ यअ़्लमून (96) व ल-क़द् नअ़्लमु अन्न-क यज़ीक़ु सद्रु-क बिमा यक़ूलून (97) फ़-सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क व कुम् मिनस्-साजिदीन (98) वअ़्बुद् रब्ब-क हत्ता यअ्ति-यकल्- यक़ीन (99) ❖

ربما ١٤ ٣٤١ النحل ١٦

فَمَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ
الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ
اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ
عَيْنَيْكَ إِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ إِنِّيْٓ أَنَا النَّذِيْرُ
الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ
عِضِيْنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾
فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ إِنَّا كَفَيْنٰكَ
الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ
يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ
حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

أَتٰىٓ أَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ۚ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾
يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ أَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ

منزل

16 सूरतुन्-नह्लि 70

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7974 अक्षर, 1871 शब्द, 128 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अता अम्रुल्लाहि फ़ला तस्तअ़्जिलूहु, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (1) युनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-त बिर्रूहि मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही अन् अन्ज़िरू

न आए।[1] **(84)** और हमने आसमानों को और ज़मीन को और उनकी दरमियानी चीज़ों को बग़ैर मस्लहत के पैदा नहीं किया,[2] और ज़रूर क़ियामत आने वाली है। सो आप ख़ूबी के साथ दरगुज़र कीजिए।[3] **(85)** बेशक आपका रब बड़ा ख़ालिक़, बड़ा अ़ालिम है। **(86)** और हमने आपको सात आयतें दीं जो (नमाज़ में) बार-बार (पढ़ी जाती) हैं[4] और क़ुरआने अ़ज़ीम (दिया)। **(87)** आप अपनी आँख उठाकर उस चीज़ को न देखिए जो कि हमने उन मुख़्तलिफ़ क़िस्म के (काफ़िर) लोगों को बरतने के लिए दे रखी है, और उनपर ग़म न कीजिए और मुसलमानों पर शफ़्क़त रखिए। **(88)** और कह दीजिए कि मैं खुल्लम-खुल्ला डराने वाला हूँ **(89)** जैसा कि हमने उन लोगों पर (अ़ज़ाब) नाज़िल किया है जिन्होंने हिस्से कर रखे थे। **(90)** यानी आसमानी किताब के मुख़्तलिफ़ हिस्से क़रार दिए थे। (तुमपर भी नाज़िल करेंगे)[5] **(91)** सो आपके रब की क़सम हम उन सबसे पूछताछ करेंगे **(92)** उनके आमाल की। ◆ **(93)** ग़रज़ आपको जिस बात का हुक्म किया गया है उसको साफ़-साफ़ सुना दीजिए, और (उन) मुश्रिकों की परवाह न कीजिए। **(94)** हँसी उड़ाने वालों के लिए हम काफ़ी हैं। **(95)** ये लोग जो अल्लाह के साथ दूसरा माबूद क़रार देते हैं, उनसे आपके लिए हम काफ़ी हैं, सो उनको अभी मालूम हुआ जाता है। **(96)** और वाक़ई हमको मालूम है कि ये लोग जो बातें करते हैं उनसे आप तंगदिल होते हैं। **(97)** सो आप अपने परवर्दिगार की तस्बीह व तारीफ़ करते रहिए, और नमाज़ें पढ़ने वालों में रहिए। **(98)** और अपने रब की इबादत करते रहिए यहाँ तक कि आपको मौत आ जाए।[6] **(99)** ❖

16 सूरः नह्ल 70

सूरः नह्ल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 128 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा,[7] सो तुम उसमें जल्दी मत मचाओ। वह लोगों के शिर्क से पाक और बरतर है।[8] **(1)** वह फ़रिश्तों को वह्य यानी अपना हुक्म देकर अपने बन्दों में से जिसपर चाहें नाज़िल फ़रमाते हैं, कि ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो मुझसे डरते रहो।[9] **(2)** आसमानों को और

(पिछले पृष्ठ का शेष) दूर रहेगा, न मक़बूल होगा और न तुझपर रहमत की जाएगी और न तौबा की तौफ़ीक़ होगी। और ज़ाहिर है कि क़ियामत तक जो रहमत नाज़िल होने का मक़ाम न होगा उसके क़ियामत में रहमत का महल होने का एहतिमाल ही नहीं। पस जिस वक़्त तक एहतिमाल था उसकी नफ़ी कर दी।

(तफ़सीर पृष्ठ 478) 1. यानी जिनको आपने मेरे असर से महफ़ूज़ रखा है।

2. यानी इस वक़्त भी हर बुराई से सलामती है और आगे भी किसी बुराई का अन्देशा नहीं।

3. ताकि इससे ख़बरदार होकर ईमान और तक़्वे की तरफ़ दिलचस्पी और कुफ़्र व नाफ़रमानी से नफ़रत हो।

4. इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उनको मेहमान समझकर फ़ौरन उनके लिए खाना तैयार करके लाए मगर चूँकि वे फ़रिश्ते थे, उन्होंने खाना नहीं खाया, तब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम दिल में डरे कि ये लोग खाना क्यों नहीं खाते। चूँकि वे फ़रिश्ते इनसानी सूरत में थे इसलिए उनको इनसान ही समझा और उनके खाना न खाने से शुब्हा हुआ कि ये लोग कहीं मुख़ालिफ़ न हों।

5. मतलब यह कि नबी होगा। क्योंकि आदमियों में सबसे ज़्यादा इल्म अम्बिया को होता है। मुराद इस लड़के से हज़रत इसहाक़ हैं।

6. मतलब यह कि यह बात अपने आप में अ़जीब है, न यह कि क़ुदरत से बईद है।

7. यानी लड़के की पैदाइश यक़ीनन होने वाली है।

8. यानी अपने बुढ़ापे पर नज़र न कीजिए कि **(पृष्ठ 478 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 480, 482 की तफ़सीर पृष्ठ 484-486 पर)**

अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फ़त्तक़ून (2) ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (3) ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् फ़-इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (4) वल्-अन्आ़-म ख़-ल-क़हा लकुम् फ़ीहा दिफ़्उंव्-व मनाफ़िअु व मिन्हा तअ्कुलून (5) व लकुम् फ़ीहा जमालुन् ही-न तुरीहू-न व ही-न तस्रहून (6) व तह्मिलु अस्क़ा-लकुम् इला ब-लदिल्-लम् तकूनू बालिग़ीहि इल्ला बिशिक़्क़िल्-अन्फ़ुसि, इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्-रहीम (7) वल्ख़ै-ल वल्बिग़ा-ल वल्हमी-र लितर्कबूहा व ज़ी-नतन्, व यख़्लुक़ु मा ला तअ्लमून (8) व अ़लल्लाहि क़स्दुस्सबीलि व मिन्हा जा-इरुन्, व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअ़ीन (9) ❖

हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअल्लकुम् मिन्हु शराबुंव्-व मिन्हु श-जरुन् फ़ीहि तुसीमून (10) युम्बितु लकुम् बिहिज़्ज़र्-अ़ वज़्ज़ैतू-न वन्नख़ी-ल वल्- अअ्ना-ब व मिन् कुल्लिस्स-मराति, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-यतल्-लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (11) व सख़्ख़-र लकुमुल्-लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्क़-म-र, वन्नुजूमु मुसख़्ख़रातुम्-बिअम्रिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (12) व मा ज़-र-अ लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्यज़्ज़क्करून (13) व हुवल्लज़ी सख़्ख़रल्-बह्-र लितअ्कुलू मिन्हु लह्मन् तरिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू मिन्हु हिल्य-तन् तल्बसूनहा व तरल्फ़ुल्-क मवाख़ि-र फ़ीहि व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (14) व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम्

اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ
نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ
فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ
تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝ وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ
تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝
وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً وَيَخْلُقُ مَا
لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ وَلَوْ شَآءَ
لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ
شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ
وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌ بِاَمْرِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا
اَلْوَانُهٗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ
سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً

ज़मीन को हिक्मत से बनाया, वह उनके शिर्क से पाक है। **(3)** इनसान को नुत्फ़े से बनाया फिर वह यकायक खुल्लम-खुल्ला झगड़ने लगा।[1] **(4)** और उसी ने चौपायों को बनाया, उनमें तुम्हारे जाड़े का (भी) सामान है, और (भी) बहुत-से फ़ायदे हैं और उनमें से खाते भी हो। **(5)** और उनकी वजह से तुम्हारी रौनक़ भी है, जबकि शाम के वक़्त लाते हो और जबकि सुबह के वक़्त छोड़ देते हो। **(6)** और वे तुम्हारे बोझ भी ऐसे शहर को ले जाते हैं जहाँ तुम जान को मेहनत में डाले बिना नहीं पहुँच सकते थे, वाक़ई तुम्हारा रब बड़ी शफ़्क़त वाला, बड़ी रहमत वाला है।[2] **(7)** और घोड़े और ख़च्चर और गधे भी पैदा किए ताकि तुम उनपर सवार हो और यह कि ज़ीनत के लिए भी, और वह ऐसी-ऐसी चीज़ें बनाता है जिनकी तुमको ख़बर भी नहीं।[3] **(8)** और सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुँचता है, और बाज़े रास्ते टेढ़े भी हैं। और अगर वह (यानी खुदा) चाहता तो सबको मक़सूद तक पहुँचा देता।[4] **(9)** ❖

वह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाया, जिससे तुमको पीने को मिलता है और उस (के सबब) से दरख़्त (पैदा होते) हैं जिनमें तुम (अपने मवेशियों को) चरने छोड़ देते हो। **(10)** (और) उस (पानी) से तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है, बेशक इसमें सोचने वालों के लिए दलील है। **(11)** और उसने रात और दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारे ताबे "यानी अधीन" किया, और सितारे उसके हुक्म से ताबे हैं। बेशक इसमें अ़क्ल रखने वाले लोगों के लिए चन्द दलीलें हैं। **(12)** और उन चीज़ों को भी जिनको तुम्हारे लिए ज़मीन में इस तौर पर पैदा किया कि उनकी क़िस्में मुख़्तलिफ़ "यानी अलग-अलग और विभिन्न" हैं,[5] बेशक इसमें समझदार लोगों के लिए दलील है। **(13)** और वह ऐसा है कि उसने दरिया को ताबे किया ताकि उसमें से ताज़ा-ताज़ा गोश्त खाओ, और उसमें से गहना निकालो जिसको तुम पहनते हो, और तू कश्तियों को देखता है कि वे पानी चीरती हुई चली जा रही हैं। और ताकि तुम उसकी (यानी खुदा की) रोज़ी तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। **(14)** और उसने ज़मीन में

(पिछले पृष्ठ का शेष) ऐसे असबाब पर नज़र करने से जो आ़दतन पाए जाते हों नाउम्मीदी के वस्वसे ग़ालिब होते हैं।

9. यानी नबी होकर गुमराहों की सिफ़त अपने अन्दर कैसे पैदा कर सकता हूँ। मक़सद सिर्फ़ इस बात का अ़जीब होना है, बाक़ी अल्लाह का वायदा सच्चा है और मुझको उम्मीद से बढ़कर उसका कामिल यक़ीन है।

10. यानी उनको बचने का तरीक़ा बतला देंगे कि उन मुज्रिमों से अलग हो जाएँ।

(तफ़सीर पृष्ठ 480) **1.** और उनके साथ अ़ज़ाब में मुब्तला होगी।

2. यानी अ़ज़ाब।

3. ताकि कोई रह न जाए, लौट न जाए और आपके रोब और डर से कोई पीछे फिरकर भी न देखे।

4. यानी मुल्क शाम।

5. यह फ़रिश्तों की गुफ़्तगू जो ऊपर ज़िक्र हुई ज़ाहिर होने में मुअख़्ख़र है। मक़सद की अहमियत के लिए ज़िक्र में मुक़द्दम फ़रमा दिया, और वह नजात देने और हलाक करने की ख़बर देना है। और आगे जो हिस्सा आता है वह ज़ाहिर होने में मुक़द्दम है।

6. यह ख़बर सुनकर कि लूत अ़लैहिस्सलाम के यहाँ हसीन-हसीन लड़के आए हैं।

7. यानी जो तुम्हारे घरों में हैं।

8. मिसाल के तौर पर एक यह कि बुरे काम का नतीजा बुरा होता है। एक यह कि ईमान व इताअ़त से नजात होती है। एक यह कि अल्लाह को बड़ी क़ुदरत है कि तबई असबाब के ख़िलाफ़ जो चाहे कर दे, और इसी तरह दूसरे।

9. यानी अ़रब से मुल्क शाम को जाते हुए उनके आसार और निशानियाँ मालूम होते हैं।

10. और उनको अ़ज़ाब से हलाक कर दिया। **(पृष्ठ 480 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 482, 484 की तफ़सीर पृष्ठ 486-488 पर)**

व अन्हारंव्-व सुबुलल्-लअ़ल्लकुम् तह्तदून (15) व अ़लामातिन्, व बिन्नज्मि हुम् यह्तदून (16) अ-फ़मंय्यख़्लुक़ु कमल्-ला यख़्लुक़ु, अ-फ़ला तज़क्करून (17) व इन् तअ़ुद्दू निअ़्-मतल्लाहि ला तुह्सूहा, इन्नल्ला-ह ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (18) वल्लाहु यअ़्लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ़्लिनून (19) वल्लज़ी-न यद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यख़्लुक़ू-न शैअंव्-व हुम् युख़्लक़ून (20) अम्वातुन् ग़ैरु अह्याइन्, वमा यश्अ़ुरू-न अय्या-न युब्अ़सून (21) ❖

इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़ल्लज़ी-न ला युअ़्मिनू-न बिल्आख़िरति क़ुलूबुहुम् मुन्कि-रतुंव्-व हुम् मुस्तक्बिरून (22) ला ज-र-म अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ़्लिनू-न, इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्तक्बिरीन (23) व इज़ा क़ी-ल लहुम् माज़ा अन्ज़-ल रब्बुकुम् क़ालू असातीरुल्-अव्वलीन (24) लियह्मिलू औज़ारहुम् कामि-लतंय्-यौमल्-क़ियामति व मिन् औज़ारिल्-लज़ी-न युज़िल्लू-नहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन्, अला सा-अ मा यज़िरून (25) ❖

क़द् म-करल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अतल्लाहु बुन्या-नहुम् मिनल्-क़वाअ़िदि फ़-ख़र्-र अ़लैहिमुस्सक़्फ़ु मिन् फ़ौक़िहिम् व अताहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अ़ुरून (26) सुम्-म यौमल् क़ियामति युख़्ज़ीहिम् व यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तुशाक़्क़ू-न फ़ीहिम्, क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म इन्नल् ख़िज़्यल्-यौ-म वस्सू-अ अ़लल्-काफ़िरीन (27) अल्लज़ी-न त-तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइ-कतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् फ़-अल्क़वुस्स-ल-म मा कुन्ना नअ़्-मलु

تلبسونها وترى الفلك مواخر فيه ولتبتغوا من فضله و
لعلكم تشكرون ﴿١٤﴾ وألقى في الأرض رواسي أن تميد بكم
وأنهارا وسبلا لعلكم تهتدون ﴿١٥﴾ وعلامات وبالنجم هم
يهتدون ﴿١٦﴾ أفمن يخلق كمن لا يخلق أفلا تذكرون ﴿١٧﴾
وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الله لغفور رحيم ﴿١٨﴾
والله يعلم ما تسرون وما تعلنون ﴿١٩﴾ والذين يدعون من
دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون ﴿٢٠﴾ أموات غير
أحياء وما يشعرون أيان يبعثون ﴿٢١﴾ إلهكم إله واحد
فالذين لا يؤمنون بالآخرة قلوبهم منكرة وهم
مستكبرون ﴿٢٢﴾ لا جرم أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون
إنه لا يحب المستكبرين ﴿٢٣﴾ وإذا قيل لهم ماذا أنزل
ربكم قالوا أساطير الأولين ﴿٢٤﴾ ليحملوا أوزارهم كاملة يوم
القيامة ومن أوزار الذين يضلونهم بغير علم ألا ساء ما
يزرون ﴿٢٥﴾ قد مكر الذين من قبلهم فأتى الله بنيانهم من
القواعد فخر عليهم السقف من فوقهم وأتاهم العذاب
من حيث لا يشعرون ﴿٢٦﴾ ثم يوم القيامة يخزيهم ويقول

पहाड़ रख दिए ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे, और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम मन्ज़िले-मक़सूद तक पहुँच सको। **(15)** और बहुत-सी निशानियाँ (बनाईं) और तारों से भी लोग रास्ता मालूम करते हैं। **(16)** सो क्या जो शख़्स पैदा करता हो वह उस जैसा हो जाएगा जो पैदा नहीं कर सकता, फिर क्या तुम नहीं समझते। **(17)** और अगर तुम अल्लाह तआ़ला की नेमतों को गिनने लगो तो न गिन सको। वाक़ई अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।[1] **(18)** और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे छुपे और ज़ाहिरी हालात सब जानते हैं। **(19)** और ख़ुदा के अ़लावा जिनकी ये लोग इबादत करते हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद ही मख़्लूक़ "यानी पैदा किए हुए" हैं। **(20)** मुर्दे हैं,[2] ज़िन्दा नहीं, और उनको ख़बर नहीं कि (मुर्दे) कब उठाए जाएँगे।[3] **(21)** ❖

तुम्हारा माबूद (बरहक़) एक ही माबूद है, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल मुन्किर हो रहे हैं और वे तकब्बुर करते हैं। **(22)** ज़रूरी बात है कि अल्लाह तआ़ला उनके छुपे व ज़ाहिरी सब हालात जानते हैं, यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करते। **(23)** और जब उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल फ़रमाई है,[4] तो कहते हैं कि वे तो महज़ बेसनद बातें हैं जो पहलों से चली आ रही हैं।[5] **(24)** (नतीजा इसका यह होगा) कि उन लोगों को क़ियामत के दिन अपने गुनाहों का पूरा बोझ और जिनको ये लोग बेइल्मी से गुमराह कर रहे थे उन (के गुनाहों) का भी कुछ बोझ अपने ऊपर उठाना पड़ेगा। ख़ूब याद रखो जिस (गुनाह) को ये अपने ऊपर लाद रहे हैं वह बुरा (बोझ) है।[6] **(25)** ❖

जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उन्होंने (बड़ी-बड़ी) तदबीरें कीं, सो अल्लाह तआ़ला ने उनका (बना-बनाया) घर जड़-बुनियाद से ढा दिया, फिर ऊपर से उनपर छत आ पड़ी और उनपर अ़ज़ाब ऐसी तरह आया कि उनको ख़्याल भी न था। **(26)** फिर क़ियामत के दिन वह (यानी अल्लाह तआ़ला) उनको रुस्वा

(पिछले पृष्ठ का शेष) 11. और मुल्क शाम को जाते हुए राह में नज़र आती है।

12. क्योंकि जब सालेह अ़लैहिस्सलाम को झूठा कहा और सब पैग़म्बरों का असल दीन एक ही है तो सब ही को झूठा बताया।

(तफ़सीर पृष्ठ 482) 1. उन्हीं मज़बूत घरों में अ़ज़ाब से काम तमाम हो गया। इस आफ़त से उनके घरों ने न बचा लिया। इस आफ़त का उनको एहतिमाल भी न था और अगर होता भी तो क्या करते।

2. बल्कि इस मस्लहत से पैदा किया कि उनको देखकर दुनिया को बनाने वाले के वजूद और उसके तन्हा व यक्ता होने और उसकी बड़ाई पर इस्तिदलाल करके उसके अहकाम की इताअ़त करें। और इस हुज्जत के क़ायम करने के बाद जो ऐसा न करे वह अ़ज़ाब का शिकार हो।

3. दरगुज़र का मतलब यह है कि इस ग़म में न पड़िए। इसका ख़्याल न कीजिए। और ख़ूबी यह कि शिक्वा-शिकायत भी न कीजिए।

4. मुराद इससे सूरः फ़ातिहा है।

5. उनमें जो मरज़ी के मुवाफ़िक़ हुआ मान लिया, जो मरज़ी के ख़िलाफ़ हुआ उससे इनकार कर दिया। इससे मुराद यहूदी व ईसाई हैं।

6. यानी मरते दम तक ज़िक्र व इबादत में मश्गूल रहिए। इसमें जिन उमूर का हुक्म किया गया और जो अज्र व सवाब का सबब हैं उनके अ़लावा यह भी ख़ासियत है कि इस तरफ़ ध्यान सीमित रखने से दूसरा मश्ग़ला जो कि दिल की तंगी का सबब था, ख़त्म या मग़लूब हो जाता है।

7. यानी कुफ़्र व शिर्क की सज़ा का वक़्त क़रीब आ पहुँचा और उसका आना यक़ीनी है।

8. यानी उसका कोई शरीक नहीं।

9. इसमें यह बात ज़ाहिर फ़रमा दी कि तौहीद तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की शरीअ़त में मुश्तरका है।

(पृष्ठ 484, 486 की तफ़सीर पृष्ठ 488-490 पर).

मिन् सूइन्, बला इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (28) फ़द्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, फ़-लबिअ्-स मस्वल् मु-तकब्बिरीन (29) व क़ी-ल लिल्लज़ीनत्तक़ौ माज़ा अन्ज़-ल रब्बुकुम्, क़ालू ख़ैरन्, लिल्लज़ी-न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह-स-नतुन्, व लदारुल्-आख़िरति ख़ैरुन्, व लनिअ्-म दारुल्- मुत्तक़ीन (30) जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलूनहा तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न, कज़ालि-क यज्ज़िल्लाहुल्-मुत्तक़ीन (31) अल्लज़ी-न त-तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइ-कतु तय्यिबी-न यक़ूलू-न सलामुन् अ़लैकुमुद्ख़ुलुल्-जन्न-त बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (32) हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-यहुमुल्-मलाइ-कतु औ यअ्ति-य अम्रु रब्बि-क, कज़ालि-क फ़-अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (33) फ़-असाबहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (34) ◆

व क़ालल्लज़ी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अ़बद्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् नह्नु व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन्, कज़ालि-क फ़-अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-हल् अ़लर्रुसुलि इल्लल् बलाग़ुल्-मुबीन (35) व ल-क़द् बअ़स्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूलन् अनिअ़्बुदुल्ला-ह वज्तनिबुत्ताग़ू-त फ़मिन्हुम् मन् हदल्लाहु व मिन्हुम् मन् हक़्क़त् अ़लैहिज़्ज़लालतु, फ़सीरू

اين شركاءي الذين كنتم تشاقون فيهم قال الذين اوتوا
العلم ان الخزي اليوم والسوء على الكفرين ٢٧ الذين تتوفهم
الملئكة ظالمي انفسهم فالقوا السلم ما كنا نعمل من
سوء بلى ان الله عليم بما كنتم تعملون ٢٨ فادخلوا ابواب
جهنم خلدين فيها فلبئس مثوى المتكبرين ٢٩ وقيل
للذين اتقوا ماذا انزل ربكم قالوا خيرا للذين احسنوا
في هذه الدنيا حسنة ولدار الاخرة خير ولنعم دار
المتقين ٣٠ جنت عدن يدخلونها تجري من تحتها الانهر
لهم فيها ما يشاءون كذلك يجزي الله المتقين ٣١ الذين
تتوفهم الملئكة طيبين يقولون سلم عليكم ادخلوا
الجنة بما كنتم تعملون ٣٢ هل ينظرون الا ان تاتيهم
الملئكة او ياتي امر ربك كذلك فعل الذين من قبلهم
وما ظلمهم الله ولكن كانوا انفسهم يظلمون ٣٣
فاصابهم سيات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به
يستهزءون ٣٤ وقال الذين اشركوا لو شاء الله ما عبدنا
من دونه من شيء نحن ولا اباؤنا ولا حرمنا من دونه

करेगा और यह कहेगा कि मेरे शरीक जिनके बारे में तुम लड़ा-झगड़ा करते थे, कहाँ हैं, जानने वाले कहेंगे कि आज काफ़िरों पर पूरी रुस्वाई और अ़ज़ाब है। **(27)** जिनकी जान फ़रिश्तों ने कुफ़्र की हालत में निकाली थी, फिर वे (काफ़िर) लोग सुलह का (पैग़ाम) डालेंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे। क्यों नहीं? बेशक अल्लाह को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। **(28)** सो जहन्नम के दरवाज़ों में (से) दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा-हमेशा को रहो। ग़रज़ तकब्बुर करने वालों का (वह) बुरा ठिकाना है।[1] **(29)** और जो लोग (शिर्क से) बचते हैं उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल फ़रमाई है, वे कहते हैं कि बड़ी ख़ैर नाज़िल फ़रमाई है। जिन लोगों ने नेक काम किए हैं उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत की दुनिया तो (और ज़्यादा) बेहतर है, और वाक़ई (वह शिर्क से) बचने वालों का अच्छा घर है। **(30)** (वह घर) हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें ये दाख़िल होंगे, उन (बाग़ों) के नीचे से नहरें जारी होंगी। जिस चीज़ को उनका जी जाहेगा वहाँ उनको मिलेगी। इसी तरह का बदला अल्लाह (सब शिर्क से) बचने वालों को देगा। **(31)** जिनकी रूह फ़रिश्ते इस हालत में निकालते हैं कि वे पाक होते हैं और कहते जाते हैं, अस्सलामु अलैकुम, तुम जन्नत में चले जाना अपने आमाल के सबब।[2] **(32)** क्या ये लोग[3] इसी बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या आपके परवर्दिगार का हुक्म आ जाए।[4] ऐसा ही उनसे पहले जो लोग थे उन्होंने भी किया था, और उनपर अल्लाह ने ज़रा भी ज़ुल्म न किया लेकिन वे आप ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे। **(33)** आख़िर उनको उनके बुरे आमाल की सज़ाएँ मिलीं और जिस (अ़ज़ाब) पर वे हँसते थे उनको उसी ने आन घेरा। **(34)** ❖

और मुश्रिक लोग (यूँ) कहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो उसके सिवा किसी चीज़ की न हम इबादत करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम उसके (हुक्म के) बग़ैर किसी चीज़ को हराम कह सकते। जो लोग उनसे पहले हुए हैं ऐसी ही हरकत उन्होंने भी की थी, सो पैग़म्बरों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। **(35)** और हम हर उम्मत में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते रहे हैं कि तुम अल्लाह

(तफ़सीर पृष्ठ 484) **1.** मतलब यह कि हमारी तो ये नेमतें और इनसान की तरफ़ से यह नाशुक्री कि ख़ुदा ही की ज़ात व सिफ़ात में झगड़ता है।

2. कि तुम्हारे आराम के लिए क्या-क्या सामान पैदा किए।

3. इन आयतों में ख़ूबसूरती और बनने-सँवरने का जायज़ होना मालूम होता है, और उसमें और तकब्बुर व बड़ाई जतलाने में फ़र्क़ यह है कि ख़ूबसूरती और सँवरना तो अपना दिल ख़ुश करने के लिए या नेमत के इज़हार के लिए होता है। और दिल में अपने को न उस नेमत का मुस्तहिक़ समझता है और न दूसरों को हक़ीर व ज़लील समझता है बल्कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ उसका मन्सूब होना उसकी नज़रों के सामने रहता है, और जिसमें हक़दार होने का दावा और दूसरों को हक़ीर व ज़लील समझना और अपने ऊपर नज़र और दूसरों की नज़र में बड़ाई और शान ज़ाहिर करना हो वह तकब्बुर और हराम है।

4. मगर वह उसी को पहुँचाते हैं जो इस सीधे रास्ते का तालिब हो, इसलिए तुमको चाहिए कि इन दलीलों में ग़ौर करो और उनसे हक़ तलब करो कि तुमको मक़सूद तक पहुँचना नसीब हो।

5. इसमें तमाम जानदार, पेड़-पौधे और घास-फूँस, बेजान चीज़ें, मुरक्कब और अलग-अलग चीज़ें सब दाख़िल हो गए।

(तफ़सीर पृष्ठ 486) **1.** कोई शिर्क से तौबा कर ले तो मग़्फ़िरत हो जाती है और न करे तो जब भी ये तमाम नेमतें ज़िन्दगी तक उससे दूर नहीं होती।

2. चाहे हमेशा के लिए जैसे बुत, **(पृष्ठ 486 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 488 की तफ़सीर पृष्ठ 490, 490 पर)**

फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्-मुकज़्ज़िबीन **(36)** इन् तह़्रिस् अ़ला हुदाहुम् फ़-इन्नल्ला-ह ला यह्दी मंय्युज़िल्लु व मा लहुम् मिन्-नासिरीन **(37)** व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ला यब्अ़सुल्लाहु मंय्यमूतु, बला वअ़्दन् अ़लैहि हक़्क़ंव्-व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून **(38)** लियुबय्यि-न लहुमुल्लज़ी यख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि व लियअ़्-लमल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् कानू काज़िबीन **(39)** इन्नमा क़ौलुना लिशैइन् इज़ा अरद्नाहु अन्-नक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून **(40)** ❖

वल्लज़ी-न हाजरू फ़िल्लाहि मिम्-बअ़्दि मा ज़ुलिमू लनुबव्विअन्नहुम् फ़िद्दुन्या ह-स-नतन्, व लअज्रुल्-आख़िरति अक्बरु ✣ लौ कानू यअ़्लमून **(41)** अल्लज़ी-न स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून **(42)** व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् फ़स्अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्लमून **(43)** बिल्-बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि, व अन्ज़ल्ना इलैकज़्ज़िक्-र लितुबय्यि-न लिन्नासि मा नुज़्ज़ि-ल इलैहिम् व लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून ● **(44)** अ-फ़-अमिनल्लज़ी-न म-करुस्सय्यिआति अंय्यख़्सिफ़ल्लाहु बिहिमुल्-अर्-ज़ औ यअ्ति-यहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अ़ुरून **(45)** औ यअ्ख़ु-ज़हुम्

ربما ١٤ ٢٤٥ النحل ١٦

من شیء كذلك فعل الذين من قبلهم فهل على الرسل الا البلغ المبين ﴿٣٥﴾ ولقد بعثنا في كل امة رسولا ان اعبدوا الله واجتنبوا الطاغوت فمنهم من هدى الله ومنهم من حقت عليه الضللة فسيروا في الارض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين ﴿٣٦﴾ ان تحرص على هدىهم فان الله لا يهدي من يضل وما لهم من نصرين ﴿٣٧﴾ واقسموا بالله جهد ايمانهم لا يبعث الله من يموت بلى وعدا عليه حقا ولكن اكثر الناس لا يعلمون ﴿٣٨﴾ ليبين لهم الذي يختلفون فيه وليعلم الذين كفروا انهم كانوا كذبين ﴿٣٩﴾ انما قولنا لشيء اذا اردنه ان نقول له كن فيكون ﴿٤٠﴾ والذين هاجروا في الله من بعد ما ظلموا لنبوئنهم في الدنيا حسنة ولاجر الاخرة اكبر لو كانوا يعلمون ﴿٤١﴾ الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ﴿٤٢﴾ وما ارسلنا من قبلك الا رجالا نوحي اليهم فسئلوا اهل الذكر ان كنتم لا تعلمون ﴿٤٣﴾ بالبينت والزبر وانزلنا اليك الذكر لتبين للناس ما نزل اليهم ولعلهم يتفكرون ﴿٤٤﴾

منزل ٣

तआला की इबादत करो और शैतान से बचते रहो।[1] सो उनमें बाज़े वे हुए हैं कि जिनको अल्लाह तआला ने हिदायत दी, और बाज़े उनमें वे हुए जिनपर गुमराही साबित हो गई।[2] तो (अच्छा) ज़मीन में चलो-फिरो, देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ।[3] **(36)** उनके सही रास्ते पर आने की अगर आपको तमन्ना हो तो अल्लाह तआला ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं करता जिसको गुमराह करता है, और उनका कोई हिमायती न होगा। **(37)** और ये लोग बड़े ज़ोर लगा-लगाकर अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि जो मर जाता है अल्लाह उसे दोबारा ज़िन्दा न करेगा। क्यों नहीं? (ज़िन्दा करेगा) इस वायदे को तो उसने (यानी अल्लाह तआला ने) अपने ज़िम्मे लाज़िम कर रखा है, लेकिन अक्सर लोग यक़ीन नहीं लाते। **(38)** ताकि जिस चीज़ में ये लोग इख़्तिलाफ़ किया करते थे उनके सामने उसको ज़ाहिर कर दे, और ताकि काफ़िर लोग यक़ीन कर लें कि वाक़ई वही झूठे थे।[4] **(39)** हम जिस चीज़ को चाहते हैं, तो हमारा उससे इतना ही कहना होता है कि तू हो जा, पस वह हो जाती है।[5] **(40)** ❖

और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन छोड़ दिया[6] उसके बाद कि उनपर ज़ुल्म किया गया, हम उनको दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे,[7] और आख़िरत का सवाब तो कई दर्जे बड़ा है, काश उनको ख़बर होती।[8] **(41)** वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रबपर भरोसा रखते हैं।[9] **(42)** और हमने आपसे पहले सिर्फ़ आदमी ही (रसूल बनाकर और मोजिज़ात और किताबें देकर) भेजे हैं, कि हम उनपर वह्य भेजा करते थे, सो अगर तुमको इल्म नहीं तो जानने वालों से पूछ देखो।[10] **(43)** और आप पर भी यह क़ुरआन उतारा है, ताकि जो मज़ामीन लोगों के पास भेजे गए उनको आप उनसे ज़ाहिर कर दें, और ताकि वे "ग़ौर व" फ़िक्र किया करें।[11] ● **(44)** जो लोग बुरी (बुरी) तदबीरें करते हैं क्या (ऐसे लोग) फिर भी इस बात से

(पिछले पृष्ठ का शेष) या फ़िलहाल जैसे जो मर चुके, या अन्जाम के एतिबार से जैसे जो मरेंगे, मिसाल के तौर पर फ़रिश्ते और जिन्न और ईसा अलैहिस्सलाम।

3. यानी बाज़ को तो इल्म ही नहीं और बाज़ को उसका तयशुदा वक़्त मालूम नहीं। और माबूद को तो पूरा इल्म चाहिए ख़ुसूसन मरने के बाद ज़िन्दा होने का कि उसपर इबादत करने या न करने की जज़ा होगी, तो उसका इल्म तो माबूद के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

4. यानी कोई नावाक़िफ़ शख़्स तहक़ीक़ के लिए या कोई वाक़िफ़ शख़्स इम्तिहान के लिए उनसे पूछता है कि क़ुरआन जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला का नाज़िल किया हुआ फ़रमाते हैं, क्या यह सही है।

5. यानी मज़हब वाले पहले से तौहीद, नुबुव्वत और आख़िरत के दावेदार होते आए हैं, उन्हीं से यह भी नक़ल करने लगे।

6. ज़ो शख़्स किसी को गुमराह किया करता है उस गुमराह को तो गुमराही का गुनाह होता है और उस गुमराह करने वाले को गुमराही का सबब बन जाने का। इसी सबब बनने के हिस्से को कुछ बोझ फ़रमाया गया। और अपने गुनाह के बोझ का पूरे तौर पर उठाना ज़ाहिर है।

(तफ़सीर पृष्ठ 488) **1.** आयत का हासिल यह हुआ कि तुमने अपने से पहले काफ़िरों का हाल घाटे में रहने और दुनिया व आख़िरत के अज़ाब का सुन लिया। इसी तरह जो तदबीर व फ़रेब और बहानेबाज़ी दीने हक़ के मुक़ाबले में तुम कर रहे हो और मख़्लूक़ को गुमराह करना चाहते हो तो यही अन्जाम तुम्हारा होगा।

2. रूह निकलने के बाद जन्नत में जाना रूहानी जाना है, और जिस्मानी जाना मख़्सूस है क़ियामत के साथ। और यह मायने भी हो सकते हैं कि क़ियामत में तुम जन्नत में जाना और मक़सद हर हाल में ख़ुशख़बरी सुनाना है। और आमाल को जो जन्नत में दाख़िल होने का सबब फ़रमाया तो यह सबब आदतन है, और हक़ीक़ी सबब अल्लाह की रहमत है जैसा कि एक हदीस में आया है।

3. ऊपर मोमिनों के ज़िक्र से पहले काफ़िरों के गुमराह होने और गुमराह करने का ज़िक्र था। मोमिनों का ज़िक्र मुक़ाबले की मुनासबत से मज़मून के मुकम्मल करने के लिए दरमियान में आ गया, अब काफ़िरों की हठ-धर्मी और मुख़ालफ़त व दुश्मनी पर वईद है।

4. यानी क्या मौत के वक़्त या क़ियामत में ईमान लाएँगे जबकि ईमान मक़बूल न होगा, अगरचे उस वक़्त सब कुछ सामने आ जाने की वजह से तमाम कुफ़्फ़ार तौबा करेंगे। **(पृष्ठ 490 की तफ़सीर पृष्ठ 492, 494 पर)**

फ़ी तक़ल्लुबिहिम् फ़मा हुम् बिमुअ्जिज़ीन **(46)** औ यअ्ख़ु-ज़हुम् अ़ला तख़व्वुफ़िन् फ़-इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम **(47)** अ-व लम् यरौ इला मा ख़-लक़ल्लाहु मिन् शैइंय्-य-तफ़य्यउ ज़िलालुहू अ़निल्-यमीनि वश्शमाइलि सुज्जदल्-लिल्लाहि व हुम् दाख़िरून **(48)** व लिल्लाहि यस्जुदू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् दाब्बतिंव्-वल्-मलाइ--कतु व हुम् ला यस्तक्बिरून **(49)** यख़ाफ़ू-न रब्बहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् व यफ़्अ़लू-न मा युअ्मरून ❑ **(50)** ❖

व क़ालल्लाहु ला तत्तख़िज़ू इलाहैनिस्-नैनि इन्नमा हु-व इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़-इय्या-य फ़र्हबून **(51)** व लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व लहुद्दीनु वासिबन् अ-फ़ग़ैरल्लाहि तत्तक़ून **(52)** व मा बिकुम् मिन् निअ्मतिन् फ़मिनल्लाहि सुम्-म इज़ा मस्सकुमुज़्-ज़ुर्रु फ़-इलैहि तज्अरून **(53)** सुम्-म इज़ा क-शफ़ज़्ज़ुर्-र अ़न्कुम् इज़ा फ़रीक़ुम्-मिन्कुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून **(54)** लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम्, फ़-तमत्तअू, फ़सौ-फ़ तअ्लमून **(55)** व यज्अ़लू-न लिमा ला यअ्लमू-न नसीबम् मिम्मा रज़क़्नाहुम्, तल्लाहि लतुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तफ़्तरून **(56)** व यज्अ़लू-न लिल्लाहिल्- बनाति सुब्हानहू व लहुम् मा यश्तहून **(57)** व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिल्उन्सा ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम **(58)**

اَفَاَمِنَ الَّذِیْنَ مَكَرُوا السَّیِّاٰتِ اَنْ یَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ
اَوْ یَاْتِیَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَیْثُ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۴۵﴾ اَوْ یَاْخُذَهُمْ
فِیْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ﴿۴۶﴾ اَوْ یَاْخُذَهُمْ عَلٰی تَخَوُّفٍ
فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۴۷﴾ اَوَلَمْ یَرَوْا اِلٰی مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ
شَیْءٍ یَّتَفَیَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْیَمِیْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ
دٰخِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَلِلّٰهِ یَسْجُدُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ
مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ یَخَافُوْنَ
رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَیَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَقَالَ
اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَیْنِ اثْنَیْنِ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاِیَّایَ
فَارْهَبُوْنِ ﴿۵۱﴾ وَلَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّیْنُ
وَاصِبًا اَفَغَیْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ
ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَیْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿۵۳﴾ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ
عَنْكُمْ اِذَا فَرِیْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ یُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ لِیَكْفُرُوْا بِمَآ
اٰتَیْنٰهُمْ فَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَیَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا یَعْلَمُوْنَ
نَصِیْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۶﴾
وَیَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ وَلَهُمْ مَّا یَشْتَهُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذَا

❖ रु. 6/10/12 ❑ सज्दा 3

बेफ़िक्र हैं कि अल्लाह तआला उनको ज़मीन में धँसा दे या उनपर ऐसी जगह से अ़ज़ाब आ पड़े जहाँ से उनको गुमान भी न हो।[1] (45) या उनको चलते-फिरते पकड़े, सो ये लोग (अल्लाह तआला) को हरगिज़ हरा नहीं सकते। (46) या उनको घटाते-घटाते पकड़ ले, सो तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक़, मेहरबान है। (47) क्या उन लोगों ने अल्लाह की उन पैदा की हुई चीज़ों को नहीं देखा जिनके साये कभी एक तरफ़ को कभी दूसरी तरफ़ को इस तौर पर झुक जाते हैं कि ख़ुदा के ताबे "अधीन" हैं,[2] और वे चीज़ें भी आ़जिज़ हैं। (48) और अल्लाह तआला ही की ताबेदार हैं जितनी चीज़ें चलने वाली आसमानों में और ज़मीन में मौजूद हैं, और (ख़ास तौर पर) फ़रिश्ते, और वे तकब्बुर नहीं करते। (49) वे अपने रब से डरते हैं जो कि उनपर हाकिम है, और उनको जो कुछ हुक्म किया जाता है वे उसको करते हैं। ❑ (50) ❖

और अल्लाह ने फ़रमाया है कि दो माबूद मत बनाओ, बस एक माबूद वही है, तो तुम लोग ख़ास मुझ ही से डरा करो।[3] (51) और सब चीज़ें उसी की हैं जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं, और लाज़िमी तौर पर इताअ़त बजा लाना उसी का हक़ है,[4] तो क्या फिर भी अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कुछ भी नेमत है वह सब अल्लाह ही की तरफ़ से है, फिर जब तुमको तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी से फ़रियाद करते हो।[5] (53) फिर जब तुमसे उस तकलीफ़ को हटा देता है तो तुममें की एक जमाअ़त अपने रब के साथ शिर्क करने लगती है।[6] (54) (जिसका हासिल यह है) कि वे हमारी दी हुई नेमत की नाशुक्री करते हैं। ख़ैर कुछ दिन ऐश उड़ा लो अब जल्दी ही तुमको ख़बर हुई जाती है। (55) और ये लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुताल्लिक़ उनको कुछ इल्म नहीं, क़सम है ख़ुदा की! तुमसे तुम्हारी इन बोहतान-बाज़ियों की ज़रूर बाज़पुर्स "यानी पूछताछ" होगी। (56) और अल्लाह तआ़ला के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते हैं, सुब्हानल्लाह! और अपने लिए पसन्दीदा चीज़ (यानी बेटे)। (57) और जब

(तफ़सीर पृष्ठ 490) 1. 'और हम हर उम्मत में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते रहे' से ज़ाहिरन यह मालूम होता है कि हिन्दुस्तान वालों के लिए भी पुराने ज़माने में कुछ रसूल भेजे गए हैं, चाहे वे हिन्दुस्तान ही में पैदा हुए और रहे हों या किसी और मुल्क में रहते हों और यहाँ उनके नायब तब्लीग़ के लिए आए हों।

2. मतलब यह कि कुफ़्फ़ार और अम्बिया में यह मामला इसी तरह चला आ रहा है। और हिदायत व गुमराही के मुताल्लिक़ अल्लाह तआ़ला का मामला भी यूँ ही जारी है कि काफ़िरों का झगड़ना और बहस करना भी पुराना और नबियों की तालीम भी पुरानी, और सबका हिदायत न पाना भी पुराना, फिर आपको ग़म क्यों हो।

3. पस अगर वे गुमराह न थे तो उनपर अ़ज़ाब क्यों नाज़िल हुआ। और इन वाक़िआ़त को इत्तिफ़ाक़िया इसलिए नहीं कह सकते कि ख़िलाफ़े आ़दत हुए और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की पेशीनगोई के बाद हुए, और मोमिनीन उससे बचे रहे, फिर उसके अ़ज़ाब होने में क्या शक है।

4. पस क़ियामत का आना यक़ीनी और अ़ज़ाब व सवाब का फ़ैसला होना ज़रूरी है।

5. तो इतनी बड़ी क़ुदरते कामिला के सामने बेजान चीज़ों में देबारा जान का पड़ जाना कौन-सी दुश्वार है, जैसा कि पहली बार जान डाल चुके हैं।

6. और हब्शा को चले गए।

7. यानी उनको मदीना पहुँचकर ख़ूब अमन व राहत देंगे। चुनाँचे थोड़े ही दिनों के बाद अल्लाह तआ़ला ने पहुँचा दिया और उसको अस्ली वतन क़रार दिया, और उसको ठिकाना कहा और हर तरह की वहाँ तरक़्क़ी हुई। इसलिए 'ह-स-नः' कहा गया, और हब्शा का ठहरना आ़रज़ी (अस्थाई) था इसलिए उसको ठिकाना नहीं फ़रमाया।

8. और उसके हासिल करने की रग़बत से मुसलमान हो जाते।

(पृष्ठ 490 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 492 की तफ़सीर पृष्ठ 494 पर)

य-तवारा मिनल्-क़ौमि मिन् सू-इ मा बुश्शि-र बिही, अयुम्सिकुहू अ़ला हूनिन् अम् यदुस्सुहू फ़ित्तुराबि, अला सा-अ मा यह्कुमून **(59)** लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति म-सलुस्सौइ व लिल्लाहिल् म-सलुल्-अअ्ला व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम **(60)** ❖

व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्ना-स बिज़ुल्मिहिम् मा त-र-क अ़लैहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अ़तव्-व ला यस्तक़्दिमून **(61)** व यज्अ़लू-न लिल्लाहि मा यक्रहू-न व तसिफ़ु अल्सिनतुहुमुल्-कज़ि-ब अन्-न लहुमुल्-हुस्ना, ला ज-र-म अन्-न लहुमुन्ना-र व अन्नहुम् मुफ़्रतून **(62)** तल्लाहि ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्मालहुम् फ़हु-व वलिय्युहुमुल्-यौ-म व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(63)** व मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब इल्ला लितुबय्यि-न लहुमुल्लज़िख़्त-लफ़ू फ़ीहि व हुदंव्-व रह्म-तल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून **(64)** वल्लाहु अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अह्या बिहिल्अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्यस्मअून **(65)** ❖

النحل ١٦ ۲۴۷ ربما ١٤

بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾
يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى
هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾
لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ
الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ
مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ
فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾
وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ
لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ
لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ
فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾
وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ
بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ

منزل ٣

व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आ़मि लअिब्र-तन् नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिही मिम्-बैनि फ़र्सिंव्-व दमिल्-ल-बनन् ख़ालिसन् साइग़ल्-लिश्शारिबीन **(66)** व मिन् स-मरातिन्नख़ीलि

उनमें से किसी को औरत (यानी बेटी) की ख़बर दी जाए तो सारे दिन उसका चेहरा बेरौनक़ रहे, और वह दिल ही दिल में घुटता रहे। **(58)** जिस चीज़ की उसको ख़बर दी गई है उसकी शर्म से लोगों से छुपा-छुपा फिरे कि आया उसको ज़िल्लत पर लिए रहे या उसको मिट्टी में गाड़ दे। ख़ूब सुन लो उनकी यह तजवीज़ बहुत ही बुरी है। **(59)** जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते उनकी बुरी हालत है,[1] और अल्लाह तआ़ला के लिए तो बड़ी आला दर्जे की सिफ़तें (साबित) हैं, और वह बड़े ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले हैं। **(60)** ❖

और अगर अल्लाह तआ़ला लोगों पर उनके ज़ुल्म के सबब दारोगीर "यानी पकड़" फ़रमाते तो ज़मीन के ऊपर कोई हरकत करने वाला न छोड़ते, लेकिन एक मुक़र्ररा वक़्त तक मोहलत दे रहे हैं। फिर जब उनका मुक़र्ररा वक़्त आ पहुँचेगा उस वक़्त एक घड़ी "पल" न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। **(61)** और अल्लाह तआ़ला के लिए वे उमूर तजवीज़ करते हैं जिनको ख़ुद नापसन्द करते हैं और अपनी ज़बान से झूठे दावे करते जाते हैं कि उनके लिए हर तरह की भलाई है, लाज़िमी बात है कि उनके लिए दोज़ख़ है, और बेशक वे लोग सबसे पहले भेजे जाएँगे। **(62)** ख़ुदा तआ़ला की क़सम! आपसे पहले जो उम्मतें हो गुज़री हैं उनके पास भी हमने (रसूलों को) भेजा था, सो उनको भी शैतान ने उनके आमाल अच्छे बना करके दिखलाए, पस वह आज उनका रफ़ीक़ "यानी साथी" था, और उनके वास्ते दर्दनाक सज़ा है।[2] **(63)** और हमने आप पर यह किताब सिर्फ़ इसलिए नाज़िल की है कि जिन उमूर में लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं आप (आ़म) लोगों पर उसको ज़ाहिर फ़रमा दें, और ईमान वालों की हिदायत और रहमत की ग़रज़ से (नाज़िल फ़रमाया), **(64)** और अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा किया,[3] इसमें ऐसे लोगों के लिए बड़ी दलील है जो सुनते हैं। **(65)** ❖

और (साथा ही) तुम्हारे लिए मवेशियों में भी ग़ौर करने का मक़ाम है। उनके पेट में जो गोबर और ख़ून है उसके दरमियान में से साफ़ और (गले में) आसानी से उतरनेवाला दूध हम तुमको पीने को देते हैं।[4] **(66)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) **9.** वतन छोड़ने के वक़्त यह ख़्याल नहीं करते कि खाएँगे-पिएँगे कहाँ से।

10. ज़िक्र वालों से मुराद अहले किताब हैं।

11. ग़रज़ यह कि जब आपकी रिसालत भी पुराने तरीक़े के मुवाफ़िक़ है तो फिर इनकार की क्या वजह और ख़िलाफ़ होने के दावे की क्या दलील?

(तफ़सीर पृष्ठ 492) **1.** जैसे बद्र की लड़ाई में ऐसे बेसरो-सामान मुसलमानों के हाथ से उनको सज़ा मिली कि कभी उनको इसका अ़क़्ली एहतिमाल भी न होता कि ये हमपर ग़ालिब आ सकेंगे।

2. यानी साये के असबाब कि सूरज का नूरानी होना और सायेदार जिस्म का भारी और गाढ़ा होना है, और साये की हरकत का सबब सूरज की हरकत है, फिर साये की ख़ासियतें, ये सब अल्लाह के हुक्म से हैं।

3. क्योंकि जब माबूद होना मेरे साथ ख़ास है तो जो उसके लवाज़िम हैं मुकम्मल क़ुदरत होना वग़ैरह वे भी मेरे ही साथ ख़ास होंगे, तो इन्तिक़ाम वग़ैरह का ख़ौफ़ मुझ ही से होना चाहिए। और शिर्क इन्तिक़ाम को दावत देता है, पस शिर्क न करना चाहिए।

4. यानी वही इस बात का हक़दार है कि सब उसकी इताअ़त करें।

5. यानी जिस तरह डरने के क़ाबिल अल्लाह के सिवा कोई नहीं उसी तरह नेमत देने वाला और उम्मीद के क़ाबिल भी सिवाय अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं।

6. एक जमाअ़त इसलिए कहा गया कि बाज़े इस हालत को याद रखकर तौहीद व ईमान पर क़ायम हो जाते हैं।

(पृष्ठ 494 की तफ़सीर पृष्ठ 496 पर)

वलअअ्नाबि तत्तख़िज़ू-न मिन्हु स-करंव्-व रिज़्कन् ह-सनन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (67) व औहा रब्बु-क इलन्नह्लि अनित्तख़िज़ी मिनल्-जिबालि बुयूतंव्-व मिनश्श-जरि व मिम्मा यअ्रिशून (68) सुम्-म कुली मिन् कुल्लिस्स-मराति फ़स्लुकी सुबु-ल रब्बिकि ज़ुलुलन्, यख़्रुजु मिम्-बुतूनिहा शराबुम्-मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल्-लिन्नासि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (69) वल्लाहु ख़ा-ल-क़कुम् सुम्-म य-तवफ़्फ़ाकुम् व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल्-अुमुरि लिकै ला यअ्ल-म बअ्-द अिल्मिन् शैअन्, इन्नल्ला-ह अलीमुन् क़दीर (70) ❖

वल्लाहु फ़ज़्ज़-ल बअ्ज़कुम् अला बअ्ज़िन् फ़िर्रिज़्क़ि फ़-मल्लज़ी-न फ़ुज़्ज़िलू बिरादूदी रिज़्क़िहिम् अला मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़हुम् फ़ीहि सवाउन्, अ-फ़बिनिअ्-मतिल्लाहि यज्हदून (71) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिन् अज़्वाजिकुम् बनी-न व ह-फ़-दतंव्-व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति, अ-फ़बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि हुम् यक्फ़ुरून (72) व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु रिज़्क़म्-मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि शैअंव्-व ला यस्ततीअून (73) फ़ला तज़्रिबू लिल्लाहिल्-अम्सा-ल, इन्नल्ला-ह यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून (74)

ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا
حَسَنًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَاَوْحٰی رَبُّكَ
اِلَی النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَ
مِمَّا یَعْرِشُوْنَ ﴿۶۸﴾ ثُمَّ كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ
رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ یَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِیْهِ
شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَاللّٰهُ
خَلَقَكُمْ ثُمَّ یَتَوَفّٰىكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّرَدُّ اِلٰۤی اَرْذَلِ الْعُمُرِ
لِكَیْ لَا یَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَیْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ ﴿۷۰﴾ وَاللّٰهُ
فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰی بَعْضٍ فِی الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِیْنَ فُضِّلُوْا
بِرَآدِّیْ رِزْقِهِمْ عَلٰی مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَهُمْ فِیْهِ سَوَآءٌ ؕ
اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿۷۱﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِیْنَ وَحَفَدَةً وَّ
رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ یُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ
هُمْ یَكْفُرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَیَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَمْلِكُ
لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَیْـًٔا وَّلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ ﴿۷۳﴾
فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

और खजूर और अंगूरों के फलों से तुम लोग नशे की चीज़[1] और उम्दा खाने की चीज़ें बनाते हो। बेशक इसमें उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो अ़क्ल रखते हैं। **(67)** और आपके रब ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाली की तू पहाड़ों में घर बना ले और दरख़्तों में और जो लोग इमारतें बनाते हैं, उनमें। **(68)** फिर हर क़िस्म के फूलों से चूसती फिर, फिर अपने रब के रास्तों में चल जो आसान हैं, उसके पेट में से पीने की एक चीज़ निकलती है जिसकी रंगतें मुख़्तलिफ़ होती हैं, कि उसमें लोगों के लिए शिफ़ा है, इसमें उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो सोचते हैं। **(69)** और अल्लाह तआ़ला ने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हारी जान निकालता है। और बाज़े तुममें वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुँचाए जाते हैं, (जिसका यह असर होता है) कि एक चीज़ से बाख़बर होकर फिर बेख़बर हो जाता है, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़ी क़ुदरत वाले हैं। **(70)** ❖

और अल्लाह तआ़ला ने तुममें बाज़ों को बाज़ों पर रिज़्क़ में फ़ज़ीलत दी है। सो जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई है वे अपने हिस्से का माल अपने गुलामों को इस तरह कभी देने वाले नहीं कि वे सब उसमें बराबर हो जाएँ, क्या फिर भी ख़ुदा तआ़ला की नेमत का इनकार करते हैं।[2] **(71)** और अल्लाह तआ़ला ने तुम ही में से तुम्हारे लिए बीवियाँ बनाईं, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए, और तुमको अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने (पीने) को दीं,[3] क्या फिर भी बेबुनियाद चीज़ पर ईमान रखेंगे और अल्लाह तआ़ला की नेमत की नाशुक्री करते रहेंगे। **(72)** और अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते रहेंगे जो उनको न आसमान में से रिज़्क़ पहुँचाने का इख़्तियार रखती हैं और न ज़मीन में से, और न क़ुदरत रखती हैं। **(73)** सो तुम अल्लाह तआ़ला के लिए मिसालें मत घड़ो, (और) अल्लाह तआ़ला जानते हैं और तुम नहीं जानते। **(74)**

(तफ़सीर पृष्ठ 494) 1. दुनिया में भी कि ऐसी जहालत में मुब्तला हैं और आख़िरत में भी कि ज़िल्लत व सज़ा में मुब्तला होंगे।

2. ग़रज़ यह बाद में आने वाले भी पहले वालों की तरह कुफ़्र कर रहे हैं और उन्हीं की तरह इनको भी सज़ा होगी। फिर आप क्यों ग़म में पड़ें।

3. यानी उसकी बढ़ोत्तरी की क़ुव्वत को इसके बाद कि ख़ुश्क हो जाने से कमज़ोर हो गई थी, ताक़त दे दी।

4. आयत से यह मुराद नहीं कि पेट में एक तरफ़ गोबर होता है और एक तरफ़ ख़ून, और दोनों के दरमियान में दूध रहता है। बल्कि पेट में जो ग़िज़ा होती है उसमें वे हिस्से जो आगे चलकर दूध बनेंगे और वे हिस्से जो गोबर बन जाएँगे सब मिलेजुले होते हैं। अल्लाह तआ़ला उनको अलग-अलग करते हैं। कुछ गोबर बनकर निकल जाता है और कुछ जिगर के ज़रिये हाज़िमे के बाद अख़्लात (यानी ख़ून, बलग़म, सौदावी माद्दा और सफ़रावी माद्दा) बनते हैं, जिनमें ख़ून भी है। फिर उस ख़ून में वह हिस्सा जो आगे चलकर दूध बनेगा ये दोनों मिलेजुले होते हैं। अल्लाह एक हिस्सा अलग करके छाती या थनों तक पहुँचाता है और वह वहाँ पहुँचकर दूध बन जाता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 496) 1. नशे की चीज़। इसमें दो क़ौल हैं, एक यह कि आयत नाज़िल होने के वक़्त नशा लाने वाली चीज़ें हराम न थीं। क्योंकि यह आयत मक्की है, इसलिए इसको एहसान करना फ़रमाया, लेकिन चूँकि हराम होने वाली थीं इसलिए इसको अच्छा और पसन्दीदा वग़ैरह न फ़रमाया, जैसे रिज़्क़ को फ़रमाया है। दूसरा क़ौल यह है कि अगरचे आयत के नाज़िल होने के वक़्त नशा लाने वाली चीज़ें हराम भी हो गई हों, इस एहतिमाल पर कि शायद यह आयत मदनी हो, लेकिन यहाँ महसूस तौर पर एहसान करना मक़सूद नहीं ताकि हलाल होने पर मौक़ूफ़ हो बल्कि मअ़नवी एहसान करना यानी तौहीद पर इस्तिदलाल है।

2. इसमें शिर्क की हद दर्जा बुराई है कि जब तुम्हारे गुलाम तुम्हारे रिज़्क़ में शरीक नहीं हो सकते तो अल्लाह तआ़ला के गुलाम उसकी खुदाई में कैसे शरीक हो सकते हैं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 498 पर)**

ज़-रबल्लाहु म-सलन् अ़ब्दम्-मम्लूकल्-ला यक़्दिरु अ़ला शैइंव्-व मर्रज़क़्नाहु मिन्ना रिज़्क़न् ह-सनन् फ़हु-व युन्फ़िक़ु मिन्हु सिर्रंव्-व जह्रन्, हल् यस्तवू-न, अल्हम्दु लिल्लाहिं, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमून **(75)** व ज़-रबल्लाहु म-सलर्रजुलैनि अ-हदुहुमा अब्कमु ला यक़्दिरु अ़ला शैइंव्-व हु-व कल्लुन् अ़ला मौलाहु ऐ-नमा युवज्जिहहु ला यअ्ति बिख़ैरिन्, हल् यस्तवी हु-व व मंय्यअ्मुरु बिल्- अ़द्लि व हु-व अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(76)** ❖

व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा अम्रुस्सा-अ़ति इल्ला क-लम्हिल्-ब-सरि औ हु-व अक़्रबु, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(77)** वल्लाहु अख़्र-जकुम् मिम्-बुतूनि उम्महातिकुम् ला तअ़्लमू-न शैअंव्-व ज-अ़-ल लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(78)** अलम् यरौ इलत्तैरि मुसख़्ख़रातिन् फ़ी जव्विस्समा-इ, मा युम्सिकुहुन्-न इल्लल्लाहु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून **(79)** वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम् मिम्-बुयूतिकुम् स-कनंव्-व ज-अ़-ल लकुम् मिन् जुलूदिल्-अन्आ़मि बुयूतन् तस्तख़िफ़्फ़ूनहा यौ-म ज़अ़्निकुम् व यौ-म इक़ामतिकुम् व मिन् अस्वाफ़िहा व औबारिहा व अश्आ़रिहा असासंव्-व मताअ़न् इला हीन **(80)** वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम् मिम्मा ख़-ल-क़ ज़िलालंव्-व ज-अ़-ल लकुम् मिनल् जिबालि अक्नानंव्-व ज-अ़-ल लकुम् सराबी-ल तक़ीकुमुल्हर्-र व

لا تعلمون ﴿٧٤﴾ ضرب الله مثلا عبدا مملوكا لا يقدر على
شيء ومن رزقنه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا
وجهرا هل يستون الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ﴿٧٥﴾
وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على
شيء وهو كل على مولىه أينما يوجهه لا يأت بخير
هل يستوي هو ومن يأمر بالعدل وهو على صراط
مستقيم ﴿٧٦﴾ ولله غيب السموت والأرض وما أمر
الساعة إلا كلمح البصر أو هو أقرب إن الله على
كل شيء قدير ﴿٧٧﴾ والله أخرجكم من بطون أمهتكم
لا تعلمون شيئا وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة
لعلكم تشكرون ﴿٧٨﴾ ألم يروا إلى الطير مسخرت في جو
السماء ما يمسكهن إلا الله إن في ذلك لأيت لقوم
يؤمنون ﴿٧٩﴾ والله جعل لكم من بيوتكم سكنا وجعل
لكم من جلود الأنعام بيوتا تستخفونها يوم ظعنكم
ويوم إقامتكم ومن أصوافها وأوبارها وأشعارها
أثاثا ومتاعا إلى حين ﴿٨٠﴾ والله جعل لكم مما خلق ظللا

अल्लाह तआ़ला एक मिसाल बयान फ़रमाते हैं, कि एक ग़ुलाम है जो दूसरे की मिल्क में है कि किसी चीज़ का इख़्तियार नहीं रखता। और एक शख़्स है जिसको हमने अपने पास से ख़ूब रोज़ी दी है, तो वह उसमें से छुपे और खुले तौर पर ख़र्च करता है, क्या (इस क़िस्म के शख़्स) आपस में बराबर हो सकते हैं। सारी तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला ही के लिए लायक़ हैं, बल्कि उनमें से अक्सर तो जानते नहीं।[1] **(75)** और अल्लाह तआ़ला एक और मिसाल बयान फ़रमाते हैं, कि दो शख़्स हैं जिनमें एक तो गूँगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक वबाले जान है, वह उसको जहाँ भेजता है कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता, क्या यह शख़्स और ऐसा शख़्स आपस में बराबर हो सकते हैं जो अच्छी बातों की तालीम करता हो और ख़ुद भी एक सही रास्ते पर हो।[2] **(76)** ❖

और आसमानों और ज़मीन की (तमाम) छुपी बातें अल्लाह ही के साथ ख़ास हैं, और क़ियामत का मामला बस ऐसा (झटपट) होगा जैसे आँख झपकना, बल्कि इससे भी जल्दी,[3] यक़ीनन अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं।[4] **(77)** और अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माओं के पेट से इस हालत में निकाला कि तुम कुछ भी न जानते थे,[5] और उसने तुमको कान दिए और आँख और दिल ताकि तुम शुक्र करो। **(78)** क्या लोगों ने परिन्दों को नहीं देखा कि आसमान के (नीचे) मैदान में ताबे हो रहे हैं, उनको सिवाय अल्लाह के कोई नहीं थामता। इसमें ईमान वाले लोगों के लिए कई दलीले हैं।[6] **(79)** और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारे घरों में रहने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिनको तुम अपने कूच के दिन और ठहरने के दिन हल्का (फुल्का) पाते हो, और उनकी ऊन और उनके रूओं और उनके बालों से घर का सामान और फ़ायदे की चीज़ें एक मुद्दत तक के लिए बनाईं।[7] **(80)** और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे

(पृष्ठ 496 का शेष) **3.** यानी क़ुदरत व नेमत की दूसरी दलीलों में से अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत की एक बड़ी दलील और नेमत ख़ुद तुम्हारा एक जिन्स होने की हैसियत से और शख़्सी (व्यक्तिगत) वजूद है।

(तफ़सीर पृष्ठ 498) **1.** पस जब मजाज़ी मालिक व मजाज़ी मम्लूक बराबर नहीं हो सकते तो मालिके हक़ीक़ी और मम्लूके हक़ीक़ी कब बराबर हो सकते हैं। और इबादत का हक़दार होना मौक़ूफ़ है बराबरी पर, और वह है नहीं।

2. जब मख़्लूक़ मख़्लूक़ में बावजूद इसके बहुत-सी सिफ़तों और हक़ीक़त में एक हैं इतना फ़र्क़ है तो ख़ालिक़ व मख़्लूक़ के फ़र्क़ का ख़ुद अन्दाज़ा कीजिए।

3. क़ियामत के मामले से मुराद है मुर्दों में जान पड़ना, और इसका जल्दी होना ज़ाहिर है। क्योंकि आँख झपकाना हरकत है और हरकत ज़मानी होती है, और जान पड़ना एक लम्हे में होना है और ज़ाहिर है कि एक लम्हे में होना ज़मानी हरकत से ज़्यादा जल्दी होना है।

4. क़ुदरत के साबित करने के लिए क़ियामत की तख़्सीस शायद इस वजह से की हो कि वह मख़्सूस ग़ैबी चीज़ों में से भी है। पस वह इल्म और क़ुदरत दोनों की दलील है। ज़ाहिर होने से पहले तो इल्म की और ज़ाहिर होने के बाद क़ुदरत की।

5. इस मरतबे का नाम इस्तिलाह में 'अक़्ले हयूलानी' है।

6. कुछ निशानियाँ इसलिए फ़रमाया कि परिन्दों को एक ख़ास अन्दाज़ पर पैदा करना जिससे उड़ना मुम्किन हो एक दलील है, फिर फ़िज़ा को ऐसे तौर पर पैदा करना जिसमें उड़ना मुम्किन हो, एक दलील है। फिर इस उड़ने का सामने ज़ाहिर होना एक दलील है। और जितने असबाब को उड़ने में दख़ल है जिसकी वजह से जिस्म का भारी या हल्कापन वग़ैरह चीज़ों का तबई असर ज़ाहिर नहीं होता, दलील हैं। क्योंकि वे सब अल्लाह ही के पैदा किए हुए हैं, फिर उन असबाब पर मुसब्बब यानी उड़ने का मुरत्तब हो जाना यह भी अल्लाह ही के हुक्म से है।

7. एक मुद्दत तक इसलिए फ़रमाया कि आ़दतन यह सामान रूई के कपड़ों के मुक़ाबले में ज़्यादा देर तक टिकने वाला होता है।

सराबी-ल तक़ीकुम् बअ्सकुम्, कज़ालि-क युतिम्मु निअ्-मतहू अ़लैकुम् लअ़ल्लकुम् तुस्लिमून **(81)** फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैकल्-बलाग़ुल्-मुबीन **(82)** यअ्रिफ़ू-न निअ्-मतल्लाहि सुम्-म युन्किरूनहा व अक्सरुहुमुल्-काफ़िरून **(83)** ❖

व यौ-म नब्अ़सु मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् सुम्-म ला युअ्ज़नु लिल्लज़ी-न क-फ़रू व ला हुम् युस्तअ्तबून **(84)** व इज़ा रअल्लज़ी-न ज़-लमुल्- अ़ज़ा-ब फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् व ला हुम् युन्ज़रून **(85)** व इज़ा रअल्लज़ी-न अश्रकू शु-रका-अहुम् क़ालू रब्बना हाउला-इ शु-रकाउनल्लज़ी-न कुन्ना नद्अू मिन् दूनि-क फ़अल्क़ौ इलैहिमुल्क़ौ-ल इन्नकुम् लकाज़िबून ▲ **(86)** व अल्क़ौ इलल्लाहि यौमइज़ि-निस्स-ल-म व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून **(87)** अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि ज़िद्नाहुम् अ़ज़ाबन् फ़ौक़ल्-अ़ज़ाबि बिमा कानू युफ़्सिदून **(88)** व यौ-म नब्अ़सु फ़ी कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् अ़लैहिम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् व जिअ्ना बि-क शहीदन् अ़ला हाउला-इ, व नज़्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब तिब्यानल्-लिकुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह्मतंव्-व बुश्रा लिल्मुस्लिमीन **(89)** ❖

इन्नल्ला-ह यअ्मुरु बिल्-अ़द्लि वल्-इह्सानि व ईता-इ ज़िल्क़ुर्बा व यन्हा

النحل ١٦ ٢٥٠ ربما ١٤

وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ
تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُم بَأْسَكُمْ كَذَٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ
الْمُبِينُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ
الْكَافِرُونَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا
يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ
ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾
وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا
الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِن دُونِكَ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ
لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾ وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُم
مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ
اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾
وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ
وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ
تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ

منزل ٣

लिए अपनी बाज़ मख़्लूक़ात के साये बनाए, और तुम्हारे लिए पहाड़ों में पनाह की जगह बनाई,[1] और तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते बनाए जो गर्मी से तुम्हारी हिफ़ाज़त करें, और ऐसे कुर्ते बनाए जो तुम्हारी लड़ाई से तुम्हारी हिफ़ाज़त करें।[2] अल्लाह तुमपर इसी तरह अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फ़रमाँबरदार रहो। **(81)** फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो आपके ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। **(82)** वे लोग ख़ुदा की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसके इनकारी होते हैं,[3] और ज़्यादा उनमें नाशुक्रे हैं। **(83)** ❖

और जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर उन काफ़िरों को इजाज़त न दी जाएगी और न उनको हक़ तआला के राज़ी करने की फ़रमाइश की जाएगी।[4] **(84)** और जब ज़ालिम लोग अ़ज़ाब को देखेंगे तो वह अ़ज़ाब न उनसे कुछ हल्का किया जाएगा और न वे कुछ मोहलत दिए जाएँगे। **(85)** और जब वे मुश्रिक लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! वे हमारे शरीक यही हैं कि आपको छोड़कर हम इनको पूजा करते थे। सो वे उनकी तरफ़ बात को मुतवज्जह करेंगे कि तुम झूठे हो। ▲ **(86)** और ये लोग उस दिन अल्लाह के सामने इताअ़त की बातें करने लगेंगे और जो कुछ बोहतान बाज़ियाँ करते थे वे सब गुम हो जाएँगी। **(87)** जो लोग कुफ़्र करते थे और अल्लाह की राह से रोकते थे उनके लिए हम एक सज़ा पर दूसरी सज़ा उनके फ़साद की वजह से बढ़ा देंगे। **(88)** और जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह जो उन्हीं में का होगा, उनके मुक़ाबले में खड़ा करेंगे,[5] और उन लोगों के मुक़ाबले में आपको गवाह बनाकर लाएँगे। और हमने आप पर क़ुरआन उतारा है कि (दीन की) तमाम बातों का बयान करने वाला है, और मुसलमानों के वास्ते बड़ी हिदायत और बड़ी रहमत और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला है। **(89)** ❖

---

1. यानी गुफा वग़ैरह जिसमें गर्मी, सर्दी, बारिश और तकलीफ़ देने वाले दुश्मन चाहे वह आदमी हो या जानवर, उन सबसे महफ़ूज़ रह सकते हैं।
2. मुराद इससे ज़िरहें (यानी लोहे का कुर्ता जो लड़ाई में पहनते हैं) हैं।
3. कि जो बर्ताव एहसान करने वाले और नेमत देने वाले के साथ चाहिए था यानी इबादत, वह दूसरे के साथ करते हैं।
4. यानी उनसे यूँ न कहा जाएगा कि तुम तौबा या कोई अ़मल करके अल्लाह को ख़ुश कर लो, वजह इसकी ज़ाहिर है कि आख़िरत दारुल जज़ा (यानी बदला मिलने की जगह) है, दारुल अ़मल (यानी अ़मल करने की जगह) नहीं।
5. मुराद उस उम्मत का नबी है और उन्हीं में का होना आ़म है चाहे नसब के एतिबार से उन्हीं में से हो या उनके साथ रहने में शरीक हो।

अ़निल्-फ़ह़्शा-इ वल्मुन्करि वल्बग़्यि यअि़जुकुम् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून **(90)** व औफ़ू बि-अ़ह्दिल्लाहि इज़ा आ़हत्तुम् व ला तन्क़ुज़ुल्-ऐमा-न बअ़्-द तौकीदिहा व क़द् जअ़ल्तुमुल्ला-ह अ़लैकुम् कफ़ीलन्, इन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा तफ़्अ़लून **(91)** व ला तकूनू कल्लती न-क़ज़त् ग़ज़्लहा मिम्-बअ़्दि क़ुव्वतिन् अन्कासन्, तत्ताख़िज़ू-न ऐमानकुम् द-ख़लम्-बैनकुम् अन् तकू-न उम्मतुन् हि-य अर्बा मिन् उम्मतिन्, इन्नमा यब्लूकुमुल्लाहु बिही, व लयुबय्यिनन्-न लकुम् यौमल्-क़ियामति मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून **(92)** व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ़-लकुम् उम्मतंव्-वाहि-दतंव्-व लाकिंय्-युज़िल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ, व लतुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तअ़्मलून **(93)** व ला तत्तख़िज़ू ऐमानकुम् द-ख़लम् बैनकुम् फ़-तज़िल्-ल क़-दमुम्-बअ़्-द सुबूतिहा व तज़ूक़ुस्सू-अ बिमा सदत्तुम् अ़न् सबीलिल्लाहि व लकुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(94)** व ला तश्तरू बि-अ़ह्दिल्लाहि स-मनन् क़लीलन्, इन्नमा अि़न्दल्लाहि हु-व ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून **(95)** मा अि़न्दकुम् यन्फ़दु व मा अि़न्दल्लाहि बाक़िन्, व ल-नज्ज़ियन्नल्लज़ी-न स-बरू अज्रहुम् बि-अह्सनि मा कानू यअ़्मलून **(96)** मन् अ़मि-ल सालिहम्-मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-लनुह्यि-यन्नहू हयातन् तय्यि-बतन् व लनज्ज़ियन्नहुम् अज्रहुम् बिअह्सनि मा कानू यअ़्मलून **(97)**

ربما ١٤ ٢٥١ النحل ١٦

وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۗ
اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا
مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۗ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ اَنْ
تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۗ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۗ وَلَيُبَيِّنَنَّ
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا
اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا
السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾
وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا
عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا

منزل ٣

बेशक़ अल्लाह तआ़ला एतिदाल और एहसान और अहले क़राबत "यानी रिश्तेदारों और क़रीबी ताल्लुक़ वालों" को देने का हुक्म फ़रमाते हैं, और खुली बुराई और मुतलक़ बुराई और ज़ुल्म करने से मना फ़रमाते हैं। अल्लाह तआ़ला तुमको इसलिए नसीहत फ़रमाते हैं कि तुम नसीहत क़बूल करो।[1] **(90)** और तुम अल्लाह के अ़हद को पूरा करो[2] जबकि तुम उसको अपने ज़िम्मे कर लो, और क़स्मों को उनके मज़बूत करने के बाद मत तोड़ो, और तुम अल्लाह तआ़ला को गवाह भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह तआ़ला को मालूम है जो कुछ तुम करते हो। **(91)** और तुम उस औ़रत के जैसे मत बनो जिसने अपना सूत कातने के बाद बोटी-बोटी करके नोच डाला, कि तुम अपनी क़स्मों को आपस में फ़साद डालने का ज़रिया बनाने लगो,[3] महज़ इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए, बस इससे अल्लाह तआ़ला तुम्हारी आज़माइश करता है।[4] और जिन चीज़ों में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे क़ियामत के दिन उन सबको तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर देगा। **(92)** और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता तो तुम सबको एक ही तरीक़े का बना देते, लेकिन जिसको चाहते हैं बेराह कर देते हैं और जिसको चाहते हैं राह पर डाल देते हैं।[5] और तुमसे तुम्हारे आमाल की ज़रूर पूछताछ और सवाल होगा। **(93)** और तुम अपनी क़स्मों को आपस में फ़साद डालने का ज़रिया मत बनाओ[6] कि (कभी किसी और का) क़दम जमने के बाद न फिसल जाए। फिर तुमको इस सबब से कि तुम राहे ख़ुदा से रुकावट हुए, तकलीफ़ भुगतना पड़े, और तुमको बड़ा अ़ज़ाब होगा। **(94)** और तुम लोग अल्लाह के अ़हद के बदले में थोड़ा-सा फ़ायदा मत हासिल करो, बस अल्लाह के पास की जो चीज़ है वह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुम समझना चाहो। **(95)** और जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह हमेशा रहेगा। और जो लोग साबित क़दम हैं हम उनके अच्छे कामों के बदले उनका अज्र उनको ज़रूर देंगे। **(96)** जो शख़्स कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औ़रत हो, शर्त यह है कि ईमान वाला हो,[7] तो हम उस शख़्स को मज़ेदार ज़िन्दगी देंगे,[8] और उनके अच्छे कामों के बदले में उनका अज्र देंगे। **(97)**

---

1. जिन चीज़ों का हुक्म है उनमें एतिदाल कुव्वते इल्मिया व अ़मलिया को आ़म है। इसमें सारे अक़ायद व ज़ाहिरी व बातिनी आमाल ग़रज़ तमाम शरई अहकाम दाख़िल हो गए। फिर उनमें से एहसान इस वजह से ज़िक्र के साथ ख़ास किया गया कि उसका नफ़ा दूसरे तक पहुँचता है। फिर एहसान में से रिश्तेदारों और क़रीबी ताल्लुक़ वालों के साथ एहसान और ज़्यादा फ़ज़ीलत व अहमियत रखता है, इसलिए उसके बाद इसको लाए। इसी तरह मना की हुई चीज़ों में बुराई आ़म है, शरीअ़त के ख़िलाफ़ तमाम उमूर को। फिर उसमें खुली बुराई को उसके ज़्यादा बुरा और ख़राब होने की वजह से मख़्सूस तौर पर ज़िक्र फ़रमाया, और उसके ज़्यादा शदीद होने की वजह से मुक़द्दम फ़रमाया। इसी तरह उन मना किए गए उमूर में से ज़ुल्म करने को उसका नुक़सान दूसरे तक पहुँचने की वजह से मख़्सूस तौर पर ज़िक्र किया गया। पस इस तरह से इसमें तमाम अच्छे और बुरे उमूर दाख़िल हो गए।

2. ऊपर 'यअ्मुरु बिल्अ़द्लि' में तमाम जायज़ उमूर का हुक्म था अब उनमें से एक ख़ास अम्र यानी वायदे के पूरा करने का निहायत पाबन्दी से हुक्म है। और इसके ख़ास करने की वजह अपने आप में इसके अहम होने के साथ-साथ शायद यह भी हो कि शुरू इस्लाम में अ़हद के पूरा करने और उसके तोड़ने का इस्लाम पर एक ख़ास असर था कि इस्लाम पर बाक़ी रहना यह भी अ़हद पूरा करने की एक क़िस्म थी। और सुलह व जंग में एतिबार का मदार इसी पर था, साथ ही इससे इस्लाम लाने वालों को अपने निजी और अ़वामी हुक़ूक़ के बारे में पूरा इत्मीनान होता था जो इस्लाम की तरक़्क़ी और कुव्वत का सबब था। इसी तरह अ़हद तोड़ने में इसके उलट ख़राबियाँ सामने आती थीं जिसका नुक़सान इस्लाम को पहुँचता था, इस वजह से यह मज़मून अहम **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 504 पर)**

फ़-इज़ा क़रअ्तल्-क़ुरआ-न फ़स्तअिज़् बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम **(98)** इन्नहू लै-स लहू सुल्तानुन् अ़लल्लज़ी-न आमनू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून **(99)** इन्नमा सुल्तानुहू अ़लल्लज़ी-न य-तवल्लौनहू वल्लज़ी-न हुम् बिही मुश्रिकून **(100)** ❖

व इज़ा बद्दल्ना आ-यतम् मका-न आयतिंव्-वल्लाहु अअ्लमु बिमा युनज़्ज़िलु क़ालू इन्नमा अन्-त मुफ़्तरिन्, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमून **(101)** क़ुल् नज़्ज़-लहू रूहुल्- क़ुदुसि मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि लियुसब्बितल्लज़ी-न आमनू व हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुस्लिमीन **(102)** व ल-क़द् नअ्लमु अन्नहुम् यक़ूलू-न इन्नमा युअ़ल्लिमुहू ब-शरुन्, लिसानुल्लज़ी युल्हिदू-न इलैहि अअ्-जमिय्युंव्-व हाज़ा लिसानुन् अ़-रबिय्युम् मुबीन **(103)** इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिआया- -तिल्लाहि ला यह्दीहिमुल्लाहु व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(104)** इन्नमा यफ़्तरिल्-कज़िबल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिआयातिल्लाहि व उलाइ-क हुमुल्- काज़िबून **(105)** मन् क-फ़-र बिल्लाहि मिम्-बअ्दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रि-ह व क़ल्बुहू मुत्मइन्नुम्-बिल्ईमानि व लाकिम्-मन् श-र-ह बिल्कुफ़्रि सद्रन् फ़-अ़लैहिम् ग़-ज़बुम्-मिनल्लाहि व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(106)** ज़ालि-क बिअन्नहुमुस्त-हब्बुल्-हयातद्दुन्या अ़लल्-आख़िरति व अन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन **(107)** उलाइ-कल्लज़ी-न त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् व सम्अ़िहिम् व

يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾ فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ
الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾ إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ
هُم بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾ وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مُفْتَرٍ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾
قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ
آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ
يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ
أَعْجَمِيٌّ وَهَٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٠٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ إِنَّمَا
يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾ مَن كَفَرَ بِاللَّهِ مِن بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ
أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ
صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ

तो जब आप क़ुरआन पढ़ना चाहें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँग लिया करें।[1] (98) यक़ीनन उसका क़ाबू उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान रखते हैं[2] और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (99) बस उसका क़ाबू तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर चलता है जो उससे ताल्लुक़ रखते हैं, और उन लोगों पर जो उसके (यानी अल्लाह के) साथ शिर्क करते हैं। (100) ❖

और जब हम किसी आयत को दूसरी आयत की जगह बदलते हैं,[3] और हालाँकि अल्लाह तआ़ला जो हुक्म भेजता है उसको वही ख़ूब जानता है, तो ये लोग कहते हैं कि आप घड़ने वाले हैं, बल्कि उन्हीं में अक्सर लोग जाहिल हैं। (101) आप फ़रमा दीजिए कि उसको रूहुल-क़ुदुस[4] आपके रब की तरफ़ से हिक्मत के मुवाफ़िक़ लाए हैं,[5] ताकि ईमान वालों को साबित क़दम रखे और मुसलमानों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी हो जाए।[6] (102) और हमको मालूम है कि ये लोग यह भी कहते हैं कि उनको तो आदमी सिखला जाता है, जिस शख़्स की तरफ़ उसकी निस्बत करते हैं उसकी ज़बान तो अ़जमी "यानी ग़ैर-अ़रबी" है, और यह क़ुरआन तो साफ़ अ़रबी है।[7] (103) जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते उनको अल्लाह तआ़ला कभी राह पर न लाएँगे, और उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी। (104) पस झूठ घड़ने वाले तो यही लोग हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और ये लोग हैं पूरे झूठे। (105) जो शख़्स ईमान लाने के बाद अल्लाह के साथ कुफ़्र करे, मगर जिस शख़्स पर ज़बरदस्ती की जाए, शर्त यह है कि उसका दिल ईमान पर मुत्मइन हो, लेकिन हाँ जो जी खोलकर कुफ़्र करे तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उनको बड़ी सज़ा होगी। (106) यह इस सबब से होगा कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में अ़ज़ीज़ रखा, और इस सबब से होगा कि अल्लाह ऐसे काफ़िरों को हिदायत नहीं किया करता। (107) ये

(पृष्ठ 502 का शेष) और पाबन्दी के क़ाबिल हुआ।

3. क्योंकि क़सम और अ़हद तोड़ने से जो लोग मुवाफ़िक़ होते हैं उनको बेएतिबारी और मुख़ालिफ़ों को उठ खड़े होने का मौक़ा मिलता है, और यह फ़साद की जड़ है।

4. कि देखें अ़हद पूरा करते हो या झुकता पल्ला देखकर उधर ढुल जाते हो।

5. चुनाँचे हिदायत में से अ़हद का पूरा करना और गुमराही में से अ़हद को तोड़ना भी है।

6. यानी क़स्मों और अ़हदों को मत तोड़ो।

7. क्योंकि काफ़िर के नेक आमाल मक़बूल नहीं।

8. 'हयाते तय्यिबा' यानी मज़ेदार ज़िन्दगी से यह मुराद नहीं कि उसको फ़िक्र या बीमारी कभी न होगी, बल्कि मतलब यह है कि इताअ़त की बरकत से उसके दिल में ऐसा नूर होगा जिससे वह हर हाल में शाकिर व साबिर और राज़ी रहेगा। और असल राहत व आराम और सुकून यही रिज़ा है।

1. यानी दिल से ख़ुदा तआ़ला पर नज़र रखना वाजिब है कि पनाह माँगने की असली हक़ीक़त यही है। और पढ़ने में ज़बान से भी कह लेना मसनून है।

2. यानी उसका वस्वसा उनपर असरदार नहीं होता।

3. यानी एक आयत को लफ़्ज़ या मायनों के एतिबार से मन्सूख़ 'निरस्त' करके उसकी जगह दूसरा हुक्म भेज देते हैं।

4. यानी जिबराईल अ़लैहिस्सलाम।

5. पस यह अल्लाह का कलाम है और अहकाम में तब्दीली हिक्मत की वजह से है।

6. इस सबब के बढ़ाने से किनाया हो गया कि ऐसी फ़ायदेमन्द चीज़ से यह मुख़ालिफ़ीन फ़ायदा नहीं उठाते।

7. मुराद इससे एक ग़ैर-अ़रबं व रूमी ईसाई ग़ुलाम या लुहार है, जिसका नाम बलआ़म या मक़ीस था। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बातें जी लगाकर सुनता तो हुज़ूर कभी उसके पास जा बैठते, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 506 पर)

अब्सारिहिम् व उलाइ-क हुमुल्ग़ाफ़िलून **(108)** ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति हुमुल्-ख़ासिरून **(109)** सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न हाजरू मिम्-बअ्दि मा फ़ुतिनू सुम्-म जाहदू व स-बरू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम **(110)** ❖

यौ-म तअ्ती कुल्लु नफ़्सिन् तुजादिलु अ़न् नफ़्सिहा व तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्-मा अ़मिलत् व हुम् ला युज़्लमून **(111)** व ज़-रबल्लाहु म-सलन् क़र्-यतन् कानत् आमि-नतम्- मुत्मइन्नतंय्-यअ्तीहा रिज़्क़ुहा र-ग़दम्-मिन् कुल्लि मकानिन् फ़-क-फ़रत् बिअन्अुमिल्लाहि फ़-अज़ा-क़हल्लाहु लिबासल्-जूअ़ि वल्ख़ौफ़ि बिमा कानू यस्नअून **(112)** व ल-क़द् जाअहुम् रसूलुम्-मिन्हुम् फ़-कज़्ज़बूहु फ़- अ-ख़-ज़हुमुल्-अ़ज़ाबु व हुम् ज़ालिमून **(113)** फ़कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्-वश्कुरू निअ्-मतल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्बुदून **(114)** इन्नमा हर्र-म अ़लैकुमुल्-मैत-त वद्द-म व लह्मल्-ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(115)** व ला तक़ूलू लिमा तसिफ़ु अल्सि-नतुकुमुल्-कज़ि-ब हाज़ा हलालुंव्-व हाज़ा हरामुल्-लितफ़्तरू अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब, इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब ला युफ़्लिहून **(116)** मताअुन् क़लीलुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(117)** व अ़लल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना मा

النحل ١٦ ٢٥٣ ربما ١٤

قلوبهم وسمعهم وابصارهم واولئك هم الغفلون ﴿١٠٨﴾
لاجرم انهم في الاخرة هم الخسرون ﴿١٠٩﴾ ثم ان ربك للذين
هاجروا من بعد ما فتنوا ثم جاهدوا وصبروا ان ربك
من بعدها لغفور رحيم ﴿١١٠﴾ يوم تاتي كل نفس تجادل
عن نفسها وتوفى كل نفس ما عملت وهم لا يظلمون ﴿١١١﴾
وضرب الله مثلا قرية كانت امنة مطمئنة ياتيها
رزقها رغدا من كل مكان فكفرت بانعم الله فاذاقها
الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون ﴿١١٢﴾ ولقد
جاءهم رسول منهم فكذبوه فاخذهم العذاب وهم
ظلمون ﴿١١٣﴾ فكلوا مما رزقكم الله حللا طيبا واشكروا نعمت
الله ان كنتم اياه تعبدون ﴿١١٤﴾ انما حرم عليكم الميتة و
الدم ولحم الخنزير وما اهل لغير الله به فمن اضطر غير
باغ ولا عاد فان الله غفور رحيم ﴿١١٥﴾ ولا تقولوا لما تصف
السنتكم الكذب هذا حلل وهذا حرام لتفتروا على الله
الكذب ان الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون ﴿١١٦﴾
متاع قليل ولهم عذاب اليم ﴿١١٧﴾ وعلى الذين هادوا

منزل ٣

वे लोग हैं कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर और कानों पर और आँखों पर मोहर लगा दी है, और ये लोग बिलकुल ग़ाफ़िल हैं। **(108)** लाज़िमी बात है कि आख़िरत में ये लोग बिलकुल घाटे में रहेंगे। **(109)** फिर बेशक आपका रब ऐसे लोगों के लिए कि जिन्होंने (कुफ़्र में) मुब्तला होने के बाद (ईमान लाकर) हिजरत की, फिर जिहाद किया और क़ायम रहे, तो आपका रब इन (आमाल) के बाद बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला, बड़ी रहमत करने वाला है।[1] **(110)** ❖

जिस दिन हर शख़्स अपनी ही तरफ़दारी में गुफ़्तगू करेगा,[2] और हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा, और उनपर ज़ुल्म न किया जाएगा।[3] **(111)** और अल्लाह तआला एक बस्ती वालों की (अ़जीब) हालत बयान फ़रमाते हैं कि वे अमन व इत्मीनान में थे। उनके खाने-पीने की चीज़ें बड़ी फ़राग़त से हर (चार) तरफ़ से उनके पास पहुँचा करती थीं। सो उन्होंने ख़ुदा की नेमतों की बेक़द्री की।[4] उसपर अल्लाह ने उनको इन हरकतों के सबब (एक घेरने वाले) क़हत और ख़ौफ़ का मज़ा चखा दिया।[5] **(112)** और उनके पास उन्हीं में का एक रसूल भी आया। सो उसको उन्होंने झूठा बतलाया। तब उनको अ़ज़ाब ने आन पकड़ा, जबकि वे बिलकुल ही ज़ुल्म पर कमर बाँधने लगे। **(113)** सो जो चीज़ें अल्लाह तआला ने तुमको हलाल और पाक दी हैं उनको खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो। **(114)** तुमपर तो सिर्फ़ मुर्दार को हराम किया है, और ख़ून को, और सुअर के गोश्त को, और जिस चीज़ को अल्लाह के अ़लावा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो। फिर जो शख़्स बिलकुल बेक़रार हो जाए, शर्त यह कि लज़्ज़त का तालिब न हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो अल्लाह बख़्श देने वाला, मेहरबानी करने वाला है।[6] **(115)** और जिन चीज़ों के बारे में तुम्हारा महज़ झूठा ज़बानी दावा है, उनके बारे में यूँ मत कह दिया करो कि (फ़लानी चीज़) हलाल है और यह (फ़लानी चीज़) हराम है, (जिसका हासिल यह होगा) कि अल्लाह पर झूठी तोहमत लगा दो (गे), बिला शुब्हा जो लोग अल्लाह पर झूठ तोहमत लगाते हैं वे फ़लाह न पाएँगे। **(116)** (यह) कुछ दिन का ऐश है, और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है। **(117)** और यहूदियों

(पृष्ठ 504 का शेष) और वह इन्जील वग़ैरह कुछ जानता था तो काफ़िरों ने यह एक बात निकाली कि हुज़ूर को यह सिखला देता है। अल्लाह तआला जवाब देते हैं कि क़ुरआन मजीद तो लफ़्ज़ व मायने के मजमूए का नाम है। सो अगर इसके ऊँचे मायनों की तुमको तमीज़ नहीं तो अल्फ़ाज़ की ग़ैर-मामूली बलाग़त को तो समझ सकते हो। पस अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि मज़ामीन वह शख़्स सिखला देता है तो यह तो सोचो कि ये अल्फ़ाज़ कहाँ से आ गए।

1. यानी ईमान और नेक आमाल की बरकत से उनके सब पिछले गुनाह कुफ़्र वग़ैरह माफ़ हो जाएँगे और अल्लाह की रहमत से उनको जन्नत और उसके बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे।

2. और इससे शफ़ाअ़त के न होने का शुब्हा न हो, क्योंकि वह अपनी राय से न होगी बल्कि इजाज़त से होगी। पस कहना चाहिए कि वह शफ़ाअ़त करने वाले की तरफ़ मन्सूब ही नहीं, और यहाँ उस गुफ़्तगू का ज़िक्र है जो अपनी राय से हो।

3. यानी नेकी के बदले में कमी न होगी अगरचे ज़्यादती हो जाए। और बुराई के बदले में ज़्यादती न होगी अगरचे कमी हो जाए।

4. यानी ख़ुदा के साथ कुफ़्र किया।

5. मक्का शहर शान्तीपूर्ण था हालाँकि उसके आस-पास के लोग मारे और लूट लिए जाते थे। मक्के में अनाज भी सहूलत से पहुँचता रहता था, लेकिन जब मक्का वाले अपने रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान न लाए तो हक़ तआला ने उनकी ये दोनों अच्छी हालतें बदल दीं और उनपर सात साल तक क़हत (अकाल) का अ़ज़ाब मुसल्लत रखा जिससे उनकी हालत बहुत ख़राब हो गई, और इसपर ज़्यादती यह कि वे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के ख़ौफ़ से अमन को भी भूल गए।

6. चूँकि अ़रब वाले इसमाईल अ़लैहिस्सलाम की मिल्लत की पैरवी करने वाले थे इसलिए **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 508 पर)**

क़सस्ना अ़लै-क मिन् क़ब्लु व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(118)** सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न अ़मिलुस्सू-अ बि-जहालतिन् सुम्-म ताबू मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क व अस्लहू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ़्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम **(119)** ❖

इन्-न इब्राही-म का-न उम्म-तन् क़ानितल्-लिल्लाहि हनीफ़न्, व लम् यकु मिनल्-मुश्रिकीन **(120)** शाकिरल्-लिअन्अुमिही, इज्तबाहु व हदाहु इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(121)** व आतैनाहु फ़िद्दुन्या ह-स-नतन्, व इन्नहू फ़िल्-आख़िरति लमिनस्-सालिहीन **(122)** सुम्-म औहैना इलै-क अनित्तबिअ़् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन **(123)** इन्नमा जुअ़िलस्सब्तु अ़लल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़ीहि, व इन्-न रब्ब-क ल-यह्कुमु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(124)** उद्अ़ु इला सबीलि रब्बि-क बिल्हिक्मति वल्मौअ़ि-ज़तिल् ह-स-नति व जादिल्हुम् बिल्लती हि-य अह्सनु, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ़्लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ़्लमु बिल्मुह्तदीन **(125)** व इन् आ़क़ब्तुम् फ़आक़िबू बिमिस्लि मा अ़ूक़िब्तुम् बिही, व ल-इन् सबर्तुम् लहु-व ख़ैरुल्-लिस्साबिरीन **(126)** वस्बिर् व मा सब्रु-क इल्ला बिल्लाहि व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् व ला तकु फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून **(127)** इन्नल्ला-ह मअ़ल्लज़ीनत्तक़ौ वल्लज़ी-न हुम् मुह्सिनून **(128)** ❖

ربما ١٤ — ٢٥٤ — النحل ١٦

حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ
بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ
بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ
حَنِيْفًا ۗ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۗ اِجْتَبٰىهُ وَ
هَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾ وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَاِنَّهٗ
فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ
اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِنَّمَا جُعِلَ
السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۗ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ
رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ
اَحْسَنُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۗ
وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا
بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾

منزل ٣

पर हमने वे चीज़ें हराम कर दी थीं जिनका बयान हम इससे पहले आपसे कर चुके हैं और हमने उनपर कोई ज़्यादती नहीं की, लेकिन वे खुद ही अपने ऊपर ज़्यादती किया करते थे। **(118)** फिर आपका रब ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुरा काम कर लिया, फिर उसके बाद तौबा कर ली और अपने आमाल दुरुस्त कर लिए, तो आपका रब उसके बाद बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला, बड़ी रहमत करने वाला है।[1] **(119)** ❖

बेशक इब्राहीम बड़े मुक़्तदा "यानी पेशवा और रहनुमा" थे,[2] अल्लाह तआ़ला के फ़रमाँबर्दार थे, बिलकुल एक तरफ़ के हो रहे थे, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। **(120)** यानी अल्लाह की नेमतों के शुक्रगुज़ार थे, अल्लाह तआ़ला ने उनको चुन लिया था और उनको सीधे रास्ते पर डाल दिया था। **(121)**. और हमने उनको दुनिया में भी ख़ूबियाँ दी थीं और वे आख़िरत में भी अच्छे लोगों में होंगे।[3] **(122)** फिर हमने आपके पास वह्य भेजी कि आप इब्राहीम के तरीक़े पर जो कि बिलकुल एक तरफ़ के हो रहे थे चलिए, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। **(123)** बस हफ़्ते की ताज़ीम तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर लाज़िम की गई थी जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ़ किया था,[4] बेशक आपका रब क़ियामत के दिन उनमें आपस में फ़ैसला कर देगा जिस बात में ये इख़्तिलाफ़ किया करते थे।[5] **(124)** आप अपने रब की राह की तरफ़[6] इल्म की बातों और अच्छी नसीहतों के ज़रिये से बुलाइए, और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बहस कीजिए।[7] आपका रब ख़ूब जानता है उस शख़्स को भी जो उसके रास्ते से गुम हुआ और वही राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। **(125)** और अगर बदला लेने लगो तो इतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बर्ताव किया गया, और अगर सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के हक़ में बहुत ही अच्छी बात है। **(126)** और आप सब्र कीजिए और आपका सब्र करना खुदा ही की तौफ़ीक़ से है,[8] और उनपर ग़म न कीजिए। और जो कुछ ये तदबीरें किया करते हैं उससे तंगदिल न होइए। **(127)** अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों के साथ (होता) है जो परहेज़गार (होते) हैं और जो नेक काम करने वाले (होते) हैं। **(128)** ❖

(पृष्ठ 506 का शेष) उनमें बहुत-से इस्लामी तौर-तरीक़े हुज़ूरे पाक को नबी बनाकर भेजे जाने तक मौजूद थे। वे उन तमाम हलाल जानवरों को जिनको हम खाते हैं हलाल समझते और खाते थे और जिनको हम हराम समझते हैं उनको वे भी हराम समझते थे। लेकिन ज़माना गुज़र जाने की वजह से उनमें यह बुरी रस्म भी जारी हो गई थी कि वे उस ख़ून को जो कि जानवर के ज़िब्ह के वक़्त बहता है, खाते थे और अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह किए हुए जानवरों को भी खाते थे, लेकिन इस्लाम ने इन चीज़ों की मनाही फ़रमा दी और बाक़ी हालत को बहाल रखा।

1. ऊपर शिर्क व कुफ़्र के उसूल व उससे निकलने वाली चीज़ों यानी तौहीद व रिसालत का इनकार और हराम को हलाल व हलाल को हराम समझने को बातिल और रद्द किया गया है। चूँकि मक्का के मुश्रिक जिनसे इन मज़ामीन में अव्वल ख़िताब है हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में थे और अपने को उनके तरीक़े पर बतलाते थे, इसलिए आगे ज़िक्र हुए मज़ामीन को मज़बूत बनाने के लिए 'का-न उम्म-तन्' में इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का मख़्लूक़ के लिए रहनुमा और पेशवा होना, जिसका हासिल नुबुव्वत व रिसालत है और 'लम यकु मिनल मुश्रिकीन' में उनका मुश्रिक न होना बयान किया जो कि तौहीद है। और 'इन्नमा जुअ़िलस्सब्तु' में इशारे के तौर पर पाक चीज़ों का उनके यहाँ हराम न होना और 'क़ानितन्' के आ़म होने से ख़्वाहिश-परस्ती से हराम का हलाल और हलाल का हराम करना दोनों का न होना, और 'इज्तबाहु व हदाहु व आतैनाहु' में इस तरीक़े की और तरीक़े वाले की फ़ज़ीलत और दरमियान में 'सुम्-म औहैना इलै-क' में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का उस तरीक़े पर होना, मय रिसालत को साबित करने के बयान फ़रमाते हैं, ताकि उनको इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के तरीक़े की मुख़ालफ़त को छोड़ने की और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े की मुवाफ़क़त की तरग़ीब हो जो कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के तरीक़े के मुवाफ़िक़ है, जिसके लवाज़िम से ख़ास तौर पर हुज़ूरे पाक के रसूल होने के इनकार से बाज़ आना भी है।

2. यानी एक बड़ी शान वाले नबी और एक बड़ी उम्मत के मुक़्तदा (यानी जिनकी पैरवी की जाए)।

3. पस ऐसे मक़बूल का जो तरीक़ा होगा वह बिलकुल मक़बूल होगा, उसको इख़्तियार करना चाहिए, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 510 पर)**

पन्द्रहवाँ पारः सुब्हानल्लज़ी

17 सूरतु बनी इस्राईल 50

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6710 अक्षर, 1582 शब्द, 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सुब्हानल्लज़ी अस्रा बिअ़ब्दिही लैलम्-मिनल्-मस्जिदिल्-हरामि इलल् मस्जिदिल्-अक्सल्लज़ी बारक्ना हौलहू लिनुरियहू मिन् आयातिना इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-बसीर **(1)** व आतैना मूसल्-किता-ब व जअ़ल्नाहु हुदल् लि-बनी इस्राई-ल अल्ला तत्तख़िज़ू मिन् दूनी वकीला **(2)** ज़ुर्रिय्य-त मन् हमल्ना म-अ़ नूहिन् इन्नहू का-न अ़ब्दन् शकूरा **(3)** व क़ज़ैना इला बनी इस्राई-ल फ़िल्-किताबि लतुफ़्सिदुन्-न फ़िल्अर्ज़ि मर्रतैनि व ल-तअ़्लुन्-न अ़ुलुव्वन् कबीरा **(4)** फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दु ऊलाहुमा बअ़स्ना अ़लैकुम् अ़िबादल्-लना उली बअ्सिन् शदीदिन् फ़जासू ख़िलालद्दियारि, व का-न वअ़्दम्-मफ़्अ़ूला **(5)** सुम्-म रदद्ना लकुमुल्कर्र-त अ़लैहिम् व अम्दद्नाकुम् बिअम्वालिंव्-व बनी-न व जअ़ल्नाकुम् अक्स-र नफ़ीरा **(6)** इन् अह्सन्तुम् अह्सन्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम्, व इन् अ-सअ्तुम् फ़-लहा, फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दुल्-आख़िरति लि-यसूऊ वुजू-हकुम् व लियद्ख़ुलुल्-मस्जि-द कमा द-ख़लूहु अव्व-ल मर्रतिंव्-व लियुतब्बिरू मा अ़लौ तत्बीरा **(7)**

سبحٰن الذی ١٥ ٢٥٥ الاسراء ١٧

سُورَةُ الْإِسْرَاءِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ

هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝ وَاٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًی

لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِیْ وَكِیْلًا ۝ ذُرِّیَّةَ مَنْ

حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝ وَقَضَیْنَاۤ اِلٰی بَنِیْۤ

اِسْرَآءِیْلَ فِی الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِی الْاَرْضِ مَرَّتَیْنِ وَلَتَعْلُنَّ

عُلُوًّا كَبِیْرًا ۝ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَیْكُمْ عِبَادًا لَّنَاۤ

اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَیْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِیْنَ وَ

جَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِیْرًا ۝ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ

وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِیَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ

وَلِیَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِیُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا

تَتْبِیْرًا ۝ عَسٰی رَبُّكُمْ اَنْ یَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا

جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِیْنَ حَصِیْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ یَهْدِیْ لِلَّتِیْ

هِیَ اَقْوَمُ وَیُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ

منزل ٤

पन्द्रहवाँ पारः सुब्हानल्लज़ी

17 सूरः बनी इसराईल 50

सूरः बनी इसराईल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[1]वह पाक (ज़ात) है जो अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को रात के वक़्त मस्जिदे हराम (यानी काबा की मस्जिद) से मस्जिदे अक़्सा (यानी बैतुल-मक़्दिस) तक, जिसके चारों तरफ़ (यानी मुल्क शाम में) हमने बरकतें[2] कर रखी हैं, ले गया ताकि हम उनको अपनी (क़ुदरत के) कुछ अ़जायबात दिखलाएँ,[3] बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े सुनने वाले, बड़े देखने वाले हैं।[4] **(1)** और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को किताब (यानी तौरात) दी, और हमने उसको बनी इसराईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया कि तुम मेरे सिवा (अपना) कोई कारसाज़ मत क़रार दो। **(2)** ऐ उन लोगों की नस्ल! जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था, वह (नूह अ़लैहिस्सलाम) बड़े शुक्रगुज़ार बन्दे थे। **(3)** और हमने बनी इसराईल को किताब में (पेशीनगोई के तौर पर यह बात) बतला दी थी कि तुम (मुल्क शाम की) सरज़मीन में दो बार ख़राबी करोगे,[5] और बड़ा ज़ोर चलाने लगोगे।[6] **(4)** फिर जब उन दो (बार) में से पहली (बार की शरारत की सज़ा) की मीयाद आएगी हम तुमपर अपने ऐसे बन्दों को मुसल्लत करेंगे जो बड़े जंगजू होंगे, फिर वे तुम्हारे घरों में घुस पड़ेंगे (और तुमको क़त्ल करेंगे) और यह एक वायदा है जो ज़रूर होकर रहेगा। **(5)** फिर (जब तुम तौबा करोगे तो) उनपर तुम्हारा ग़ल्बा कर देंगे, और माल और बेटों से हम तुम्हारी मदद करेंगे,[7] और हम तुम्हारी जमाअ़त को बढ़ा देंगे।[8] **(6)** अगर अच्छे काम करते रहोगे तो अपने ही नफ़े के लिए अच्छे काम करोगे, और अगर (फिर) तुम बुरे काम करोगे तो भी अपने ही लिए, फिर जब पिछली (बार) की मीयाद आएगी (हम फिर दूसरों को मुसल्लत करेंगे) ताकि (मार-मारकर) तुम्हारे मुँह बिगाड़ दें, और जिस तरह वे लोग पहली बार मस्जिद (बैतुल मक़्दिस) में घुसे थे ये (पिछले) लोग भी उसमें घुस पड़ें और जिस-जिसपर उनका ज़ोर चले सबको बर्बाद कर डालें। **(7)** (और अगर आइन्दा इस्लाम का इत्तिबा करोगे तो) अ़जब नहीं कि तुम्हारा रब तुमपर रहम फ़रमाए, और अगर फिर वही (शरारत) करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे,[9] और हमने जहन्नम को (ऐसे) काफ़िरों का जेलख़ाना बना (ही) रखा है। **(8)** बेशक यह क़ुरआन ऐसे (तरीक़े) की हिदायत करता है जो बिलकुल सीधा है (यानी इस्लाम) और उन ईमान वालों को जो कि नेक काम करते हैं (यह) ख़ुशख़बरी देता है

(पृष्ठ 508 का शेष) और वह अब मुन्हसिर है मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े में।

4. मुराद इससे यहूद हैं। यानी पाक चीज़ों को हराम करने की यह सूरत अन्य सूरतों की तरह सिर्फ़ यहूद के साथ मख़्सूस थी, मिल्लते इब्राहीमी में न थी।

5. ऊपर 'सुम्-म औहैना.....' में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रिसालत को साबित करने से यह मक़सूद था कि जिनपर आपको भेजा गया है वे इस रिसालत के हुक़ूक़ अदा करें। आगे ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को रिसालत के हुक़ूक़ व आदाब के अदा करने की तालीम है, जिनमें से इन्तिक़ाम में ख़ास तौर पर अ़दल की रियायत बरतने में आपके पैरोकारों को भी उमूमन ख़िताब है, क्योंकि बदला लेने में आ़दतन पैरोकारों का शरीक रहना ज़रूरी है, बख़िलाफ़ तब्लीग़ व दावत और आयत में ज़िक्र हुए बक़िया अहकाम के, कि नबी से इन्फ़िरादी तौर पर भी इसका सुदूर हो सकता है, इसलिए इसमें ख़ास ख़िताब है।

6. यानी दीन। **(पृष्ठ 508 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 510 की तफ़सीर पृष्ठ 512, 514 पर)**

अ़सा रब्बुकुम् अंय्यर्‌ह़-मकुम् व इन् अ़ुत्तुम् अ़ुद्‌ना ✣ व जअ़ल्ना जहन्न-म लिल्काफ़िरी-न ह़सीरा **(8)** इन्-न हाज़ल्क़ुर्‌आ-न यह्‌दी लिल्लती हि-य अक़्‌वमु व युबश्शिरुल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्‌मलूनस्सालिहाति अन्-न लहुम् अज्रन् कबीरा **(9)** व अन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्‌आख़िरति अअ्‌तद्‌ना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा **(10)** ❖

व यद्‌अुल्-इन्सानु बिश्शर्रि दुआ़-अहू बिल्ख़ैरि, व कानल्-इन्सानु अ़जूला **(11)** व जअ़ल्नल्लै-ल वन्नहा-र आयतैनि फ़-महौना आयतल्लैलि व जअ़ल्ना आयतन्नहारि मुब्सि-रतल्-लितब्तग़ू फ़ज़्लम् मिर्रब्बिकुम् व लितअ्-लमू अ़-ददस्सिनी-न वल्-हिसा-ब, व कुल्-ल शैइन् फ़स्सल्नाहु तफ़्सीला **(12)** व कुल्-ल इन्सानिन् अल्ज़म्ना ताइ-रहू फ़ी अ़ुनुक़िही, व नुख़्रिजु लहू यौमल्-क़ियामति किताबंय्-यल्क़ाहु मन्शूरा **(13)** इक्रअ् किता-ब-क, कफ़ा बिनफ़्सिकल्-यौ-म अ़लै-क हसीबा **(14)** मनिह्‌तदा फ़-इन्नमा यह्‌तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा, व

سبحٰن الذی ١٥ ٢٥٦ بنی اسرآءیل ١٧

لهم اجرا كبيرا ﴿٩﴾ وان الذين لا يؤمنون بالاخرة اعتدنا
لهم عذابا اليما ﴿١٠﴾ ويدع الانسان بالشر دعاءه بالخير
وكان الانسان عجولا ﴿١١﴾ وجعلنا اليل والنهار ايتين
فمحونا اية اليل وجعلنا اية النهار مبصرة لتبتغوا فضلا
من ربكم ولتعلموا عدد السنين والحساب وكل شيء
فصلنه تفصيلا ﴿١٢﴾ وكل انسان الزمنه طئره في عنقه
ونخرج له يوم القيمة كتبا يلقه منشورا ﴿١٣﴾ اقرا كتبك
كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا ﴿١٤﴾ من اهتدى فانما
يهتدي لنفسه ومن ضل فانما يضل عليها ولا تزر
وازرة وزر اخرى وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا ﴿١٥﴾
واذا اردنا ان نهلك قرية امرنا مترفيها ففسقوا فيها
فحق عليها القول فدمرنها تدميرا ﴿١٦﴾ وكم اهلكنا من
القرون من بعد نوح وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا
بصيرا ﴿١٧﴾ من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها ما نشاء
لمن نريد ثم جعلنا له جهنم يصلها مذموما
مدحورا ﴿١٨﴾ ومن اراد الاخرة وسعى لها سعيها وهو

ع ١

منزل ٤

ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, व मा कुन्ना मुअ़ज़्ज़िबी-न हत्ता नब्‌अ़-स रसूला **(15)** व इज़ा अरद्‌ना अन्नुह्‌लि-क क़र्-यतन् अमर्‌ना मुत्-रफ़ीहा फ़-फ़-सक़ू फ़ीहा फ़-हक़्-क़ अ़लैहल्क़ौलु फ़-दम्मर्‌नाहा तद्‌मीरा **(16)** व कम् अह्‌लक्ना मिनल्क़ुरूनि मिम्-बअ़्दि नूहिन्, व कफ़ा बिरब्बि-क बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा **(17)** मन् का-न युरीदुल्-आ़जि-ल-त अ़ज्जल्ना लहू फ़ीहा मा नशा-उ लिमन् नुरीदु सुम्-म जअ़ल्ना

कि उनको बड़ा भारी सवाब मिलेगा। **(9)** और (यह भी बतलाता है कि) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके लिए एक दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। **(10)** ❖

और (बाज़ा) इनसान बुराई (यानी अ़ज़ाब) की ऐसी दरख़्वास्त करता है जिस तरह भलाई की दरख़्वास्त, और इनसान (कुछ तबई तौर पर ही) जल्दबाज़ (होता) है। **(11)** और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया, सो रात की निशानी को तो हमने धुंधला बनाया और दिन की निशानी को हमने रोशन बनाया ताकि (दिन को) तुम अपने रब की रोज़ी तलाश करो और ताकि बरसों का शुमार और हिसाब मालूम कर लो। और हमने हर चीज़ को ख़ूब तफ़सील के साथ बयान किया है।[1] **(12)** और हमने हर इनसान का अ़मल उसके गले का हार करके रखा है,[2] और (फिर) क़ियामत के दिन हम उसका आमालनामा उसके वास्ते निकाल (कर सामने कर) देंगे, जिसको वह खुला हुआ देख लेगा। **(13)** अपना आमालनामा (ख़ुद) पढ़ ले, आज तू ख़ुद अपना आप ही हिसाब लेने वाला काफ़ी है। **(14)** जो शख़्स (दुनिया में) राह पर चलता है वह अपने नफ़े के लिए राह पर चलता है, और जो शख़्स बेराही करता है सो वह भी अपने ही नुक़सान के लिए बेराह होता है। और कोई शख़्स किसी (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा। और हम (कभी) सज़ा नहीं देते जब तक किसी रसूल को नहीं भेज लेते। **(15)** और जब हम किसी बस्ती को[3] हलाक करना चाहते हैं[4] तो उसके ख़ुशहाल लोगों को[5] हुक्म देते हैं, फिर (जब) वे लोग वहाँ शरारत मचाते हैं तो उनपर हुज्जत पूरी हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को तबाह और ग़ारत कर डालते हैं। **(16)** और नूह के बाद हमने बहुत-सी उम्मतों को (कुफ़्र व नाफ़रमानी के सबब) हलाक किया है।[6] और आपका रब अपने बन्दों के गुनाहों को जानने वाला, देखने वाला काफ़ी है। **(17)** जो शख़्स दुनिया (के नफ़े) की नीयत रखेगा, हम ऐसे शख़्स को दुनिया में जितना चाहेंगे (और) जिसके वास्ते चाहेंगे फ़िलहाल ही दे देंगे, फिर हम उसके लिए जहन्नम तजवीज़ करेंगे, वह उसमें बदहाल (बारगाह से) निकाला हुआ होकर दाख़िल होगा। **(18)** और जो शख़्स आख़िरत (के सवाब) की नीयत रखेगा

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. बस इतना काम आपका है फिर आप इस तहक़ीक़ में न पड़िए कि किसने माना, किसने नहीं माना, क्योंकि यह काम ख़ुदा का है।

8. इसलिए आप तसल्ली रखें कि सब्र में आपको दुश्वारी न होगी।

(तफ़सीर पृष्ठ 510) 1. इस सूरः में ज़्यादा मज़ामीन इनामात पर मुश्तमिल हैं। चुनाँचे इसकी शुरूआत मेराज के क़िस्से से की गई कि वह एक बड़ा मोजिज़ा है, जिससे बारी तआ़ला की पाकी के साथ रिसालत पर दलालत करती है, और रिसालत को क़ुव्वत पहुँचाने के लिए मूसा और नूह अ़लैहिमस्सलाम का ज़िक्र लाया गया है और उसकी तस्दीक़ की तरग़ीब के लिए तूफ़ाने नूह (अ़लैहिस्सलाम) से नजात और झुठलाने से डराने के लिए बनी इसराईल की ख़राबी और उनके सज़ा पाने का क़िस्सा सुनाया गया। फिर क़ुरआन को जो कि रिसालत की दलील है हादी बताया गया। यह खुलासा है पहले रुकूअ़ का।

2. दीनी बरकत यह कि वहाँ कसरत से अम्बिया हज़रात दफ़न हैं। दुनियावी बरकत यह कि वहाँ पेड़ और नहरें और पैदावार की कसरत है।

3. जिनमें बाज़ तो ख़ुद वहाँ के मुताल्लिक़ हैं, जैसे इतनी लम्बी दूरी थोड़े से वक़्त में तय करना, सब अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को देखना, उनकी बातें सुनना वग़ैरह। और बाज़ आगे के मुताल्लिक़ हैं जैसे आसमानों पर जाना और बहुत-सी अ़जीब चीज़ें देखना।

4. मस्जिदे-हराम से मस्जिदे-अक़्सा तक ले जाने को 'इसरा' कहते हैं और आगे आसमानों पर जाने को 'मेराज' कहते हैं। और कभी दोनों लफ़्ज़ मजमूए पर बोल दिए जाते हैं।

5. एक बार मूसा अ़लैहिस्सलाम की शरीअ़त की मुख़ालफ़त, दूसरी बार ईसा अ़लैहिस्सलाम की शरीअ़त की मुख़ालफ़त।

6. यानी ज़्यादतियाँ करोगे 'लतुफ़्सिदुन्-न' में अल्लाह तआ़ला के हुक़ूक़ और 'ल-तअ़लुनु-न' में बन्दों के हुक़ूक़ के ज़ाया करने की तरफ़ इशारा है।

7. यानी ये चीज़ें तुमको वापस मिलेंगी और उनसे तुमको क़ुव्वत पहुँचेगी।

(पृष्ठ 510 की बक़िया और पृष्ठ 512 की तफ़सीर पृष्ठ 514 पर)

लहू जहन्न-म यस्लाहा मज़्मूमम्-मद्हूरा **(18)** व मन् अरादल्-आख़िर-त व सआ़ लहा सअ़्-यहा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-उलाइ-क का-न सअ़्युहुम् मश्कूरा **(19)** कुल्लन्-नुमिद्दु हाउला-इ व हाउला-इ मिन् अ़ता-इ रब्बि-क, व मा का-न अ़ता-उ रब्बि-क मह्ज़ूरा **(20)** उन्ज़ुर् कै-फ फ़ज़्ज़ल्ना बअ़्-ज़हुम् अ़ला बअ़्ज़िन्, व लल्आख़िरतु अक्बरु द-रजातिंव्-व अक्बरु तफ़्ज़ीला **(21)** ला तज्अ़ल् मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-तक़्अु-द मज़्मूमम्-मख़्ज़ूला **(22)** ❖

व क़ज़ा रब्बु-क अल्ला तअ़्बुदू इल्ला इय्याहु व बिल्-वालिदैनि इह्सानन्, इम्मा यब्लुग़न्-न अ़िन्द-कल्-कि-ब-र अ-हदुहुमा औ किलाहुमा फ़ला तक़ुल्-लहुमा उफ़्फ़िंव्-व ला तन्हर्हुमा व क़ुल्-लहुमा क़ौलन् करीमा **(23)** वख़्फ़िज़् लहुमा जनाहज़्ज़ुल्लि मिनर्रह्मति व क़ुर्रब्बिर्हम्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा **(24)** रब्बुकुम् अअ़्लमु बिमा फ़ी नुफ़ूसिकुम् इन् तकूनू सालिही-न फ़-इन्नहू का-न लिल्-अव्वाबी-न ग़फ़ूरा **(25)** व आति ज़ल्क़ुर्बा हक़्क़हू वल्-मिस्की-न वब्नस्सबीलि व ला तुबज़्ज़िर् तब्ज़ीरा **(26)** इन्नल्- मुबज़्ज़िरी-न कानू इख़्वानश्-शयातीनि, व कानश्शैतानु लिरब्बिही कफ़ूरा **(27)** व इम्मा तुअ़्रिज़न्-न अ़न्हुमुब्तिग़ा-अ रह्मतिम्- मिर्रब्बि-क तर्जूहा फ़क़ुल्-लहुम् क़ौलम्-मैसूरा **(28)** व ला तज्अ़ल् य-द-क मग़्लू-लतन् इला अ़ुनुक़ि-क व ला तब्सुत्हा कुल्लल्बस्ति फ़-तक़्अु-द मलूमम्-मह्सूरा **(29)** इन्-न रब्ब-क यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, इन्नहू का-न बिअ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा **(30)** ❖

بنی اسرآءیل ١٧ — ٢٥٧ — سبحٰن الذی ١٥

مُؤْمِنٌ فَأُولَٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مَّشْكُورًا ﴿١٩﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هَٰٓؤُلَآءِ
وَهَٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿٢٠﴾
انظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ
دَرَجَٰتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾ لَّا تَجْعَلْ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَتَقْعُدَ
مَذْمُومًا مَّخْذُولًا ﴿٢٢﴾ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّآ إِيَّاهُ وَ
بِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَٰنًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ ٱلْكِبَرَ أَحَدُهُمَآ أَوْ
كِلَاهُمَا فَلَا تَقُل لَّهُمَآ أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا قَوْلًا
كَرِيمًا ﴿٢٣﴾ وَٱخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ ٱلذُّلِّ مِنَ ٱلرَّحْمَةِ وَقُل
رَّبِّ ٱرْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِى صَغِيرًا ﴿٢٤﴾ رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِى نُفُوسِكُمْ
إِن تَكُونُوا صَٰلِحِينَ فَإِنَّهُۥ كَانَ لِلْأَوَّٰبِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾ وَءَاتِ
ذَا ٱلْقُرْبَىٰ حَقَّهُۥ وَٱلْمِسْكِينَ وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾
إِنَّ ٱلْمُبَذِّرِينَ كَانُوٓا إِخْوَٰنَ ٱلشَّيَٰطِينِ ۖ وَكَانَ ٱلشَّيْطَٰنُ
لِرَبِّهِۦ كَفُورًا ﴿٢٧﴾ وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ٱبْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ
تَرْجُوهَا فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً
إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ ٱلْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾
إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ بِعِبَادِهِۦ

منزل ٤

और उसके लिए जैसी कोशिश करना चाहिए वैसी ही कोशिश भी करेगा, शर्त यह है कि वह शख़्स मोमिन भी हो,[1] सो ऐसे लोगों की यह कोशिश मक़बूल होगी।[2] **(19)** आपके परवरदिगार की (इस दुनियावी) अ़ता में से तो हम इनकी भी इम्दाद करते हैं[3] और उनकी भी,[4] और आपके रब की (यह दुनियावी) अ़ता (किसी पर) बन्द नहीं। **(20)** आप देख लीजिए हमने एक को दूसरे पर किस तरह बरतरी दी है, और अलबत्ता आख़िरत दर्जों के एतिबार से भी बहुत बड़ी है और फ़ज़ीलत के एतिबार से भी बहुत बड़ी है। **(21)** अल्लाह (बरहक़) के साथ कोई और माबूद मत तजवीज़ कर (यानी शिर्क मत कर) वरना तू बदहाल बेमददगार होकर बैठ रहेगा। **(22)** ❖

और तेरे रब ने हुक्म कर दिया है कि सिवाय उसके किसी और की इबादत मत करो, और तुम (अपने) माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया करो, अगर तेरे पास उनमें से एक या दोनों के दोनों बुढ़ापे में पहुँच जाएँ तो उनको कभी (हाँ से) हूँ भी मत करना और न उनको झिड़कना, और उनसे ख़ूब अदब से बात करना। **(23)** और उनके सामने नर्मी से इन्किसारी के साथ झुके रहना, और (यूँ) दुआ़ करते रहना कि मेरे परवर्दिगार! इन दोनों पर रहमत फ़रमाइए जैसा कि इन्होंने मुझको बचपन में पाला, परवरिश किया है।[5] **(24)** तुम्हारा रब तुम्हारे दिल की बात को ख़ूब जानता है, अगर तुम नेक-बख़्त हो तो वह तौबा करने वालों की ख़ता माफ़ कर देता है। **(25)** और क़राबतदार "यानी रिश्तेदार" को उसका (माली व ग़ैर-माली) हक़ देते रहना, और मोहताज और मुसाफ़िर को भी देते रहना, और (माल को) बेमौक़ा मत उड़ाना। **(26)** (क्योंकि) बेशक बेमौक़ा उड़ाने वाले शैतानों के भाई (बन्द यानी उनके जैसे) हैं,[6] और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। **(27)** और अगर अपने परवर्दिगार की तरफ़ से जिस रिज़्क़ के आने की उम्मीद हो, उसके इन्तिज़ार में तुझको उनसे अलग होना पड़े तो उनसे नर्मी की बात कह देना।[7] **(28)** और न तो अपना हाथ गर्दन ही से बाँध लेना चाहिए[8] और न बिलकुल ही खोल देना चाहिए,[9] वरना इल्ज़ाम लिए हुए ख़ाली हाथ होकर बैठ रहोगे। **(29)** बेशक तेरा रब जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़्क़ देता है, और वही तंगी कर देता है।[10] बेशक वह अपने बन्दों को ख़ूब जानता है, देखता है। **(30)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) 8. यानी माल, ओ़हदे, औलाद और मानने वालों व पैरोकारों सबमें तरक़्क़ी होगी।

9. चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में उन्होंने आपकी मुख़ालफ़त की, फिर क़त्ल और क़ैद किए गए और ज़लील हुए।

(तफ़सीर पृष्ठ 512) 1. चाहे 'लौहे महफ़ूज़' में। पस कुल्लु शैइन् "यानी हर चीज़" आ़म है। और या क़ुरआन में इस वक़्त 'कुल्लु शैइन्' से मुराद ज़रूरी उमूर हैं। पहली सूरत में मतलब यह है कि 'लौहे महफ़ूज़' में हर चीज़ का अलग-अलग मुक़र्ररा वक़्त लिखा है और दूसरी सूरत में यह मतलब कि देखो क़ुरआन में कैसे मुफ़ीद और हिदायत-भरे मज़ामीन ज़िक्र किए गए हैं जो शुब्हात में तस्कीन व तसल्ली का सबब हैं।

2. यानी हर शख़्स का अ़मल उसके साथ लगा हुआ है।

3. जो कुफ़्र व नाफ़रमानी के सबब हिक्मत के तक़ाज़े से हलाक करने के क़ाबिल हो।

4. तो उसको रसूलों को भेजने से पहले हलाक नहीं करते, बल्कि किसी रसूल को भेजते हैं और इनकार व ज़िद के नतीजे में हलाक करते हैं

5. यानी अमीर और सरदार लोगों को ख़ाकर और अ़वाम को उमूमन ईमान व भलाई का हुक्म भेजते हैं।

6. जैसे आ़द व समूद और उनके अ़लावा दूसरे। और नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम का हलाक होना तो मश्हूर व मारूफ़ ही है।

(तफ़सीर पृष्ठ 514) 1. मतलब यह है कि वह अ़मल शरई क़ायदों के मुवाफ़िक़ किया हो, क्योंकि आख़िरत के लिए वही कोशिश करनी चाहिए जिसका हुक्म हुआ हो, उन आमाल के उलट जो नफ़्सानी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ हों क्योंकि वे मक़बूल नहीं। ग़रज़ शरीअ़त के मुवाफ़िक़ अ़मल किया हो।

2. ग़रज़ कोशिश के क़बूल होने यानी अ़मल के क़बूल की तीन शर्तें हुईं, (१) नीयत का सही होना **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 516 पर)**

व ला तक़्तुलू औलादकुम् ख़श्य-त इम्लाक़िन्, नह्नु नर्ज़ुक़ुहुम् व इय्याकुम्, इन्-न क़त्लहुम् का-न ख़ित्अन् कबीरा **(31)** व ला तक़्रबुज़्ज़िना इन्नहू का-न फ़ाहि-शतन्, व सा-अ सबीला **(32)** व ला तक़्तुलुन्-नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि, व मन् क़ुति-ल मज़्लूमन् फ़-क़द् ज़अ़ल्ना लि-वलिय्यिही सुल्तानन् फ़ला युस्रिफ़्-फ़िल्क़त्लि, इन्नहू का-न मन्सूरा **(33)** व ला तक़्रबू मालल् यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु-ग़ अशुद्दहू व औफ़ू बिल्अ़ह्दि इन्नल्-अ़ह्-द का-न मस्ऊला **(34)** व औफ़ुल्कै-ल इज़ा किल्तुम् व ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीमि, ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला **(35)** व ला तक़्फ़ु मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन्, इन्नस्सम्-अ़ वल्ब-स-र वल्फ़ुआ-द कुल्लु उलाइ-क का-न अ़न्हु मस्ऊला **(36)** व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-रहन् इन्न-क लन् तख़्रिक़ल्-अर्-ज़ व लन् तब्लुग़ल्-जिबा-ल तूला **(37)** कुल्लु ज़ालि-क का-न सय्यिउहू अ़िन्-द रब्बि-क मक्रूहा **(38)** ज़ालि-क मिम्मा औहा इलै-क रब्बु-क मिनल्-हिक्मति, व ला तज्अ़ल् मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़-तुल्क़ा फ़ी जहन्न-म मलूमम्-मद्हूरा **(39)** अ-फ़अस्फ़ाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी-न वत्त-ख़-ज़ मिनल्-मलाइ-कति इनासन्, इन्नकुम् ल-तक़ूलू-न क़ौलन् अ़ज़ीमा **(40)** ❖

व ल-क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल्-क़ुरआनि लि-यज़्ज़क्करू, व मा यज़ीदुहुम् इल्ला

سبحن الذی ۱۵ ۲۵۸ بنی اسرآءیل ۱۷

خَبِيْرًا بَصِيْرًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ
نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا
الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ
الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا
لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّى الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝
وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ
اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝ وَاَوْفُوا
الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ
وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ
وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝ وَلَا تَمْشِ
فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ
طُوْلًا ۝ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝ ذٰلِكَ مِمَّآ
اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ
بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا
عَظِيْمًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ

منزل ۴

और अपनी औलाद को नादारी के अन्देशे से क़त्ल मत करो, (क्योंकि) हम उनको भी रिज़्क़ देते हैं और तुमको भी, बेशक उनका क़त्ल करना बड़ा भारी गुनाह है।[1] **(31)** और ज़िना के पास भी मत फटको,[2] बिला शुब्हा वह बड़ी बेहयाई (की बात) है, और बुरी राह है। **(32)** और जिस शख़्स (के क़त्ल) को अल्लाह तआ़ला ने हराम फ़रमाया है उसको क़त्ल मत करो, हाँ मगर हक़ पर।[3] और जो शख़्स नाहक़ क़त्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख़्तियार दिया है।[4] सो उसको क़त्ल के बारे में (शरीअ़त की) हद से आगे न बढ़ना चाहिए। वह शख़्स तरफ़दारी के क़ाबिल है। **(33)** और यतीम के माल के पास न जाओ[5] मगर ऐसे तरीक़े से जो कि पसन्दीदा है, यहाँ तक कि वह अपने बालिग़ होने की उम्र को पहुँच जाए, और (जायज़) अ़हद को पूरा किया करो,[6] बेशक (ऐसे) अ़हद की (क़ियामत में) पूछताछ और बाज़पुर्स होने वाली है। **(34)** और जब नाप-तौलकर दो तो पूरा नापो और सही तराज़ू से तौलकर दो। यह (अपने आप में भी) अच्छी बात है और इसका अन्जाम भी अच्छा है। **(35)** और जिस बात की तुझको तहक़ीक़ न हो उसपर अ़मल दरामद मत किया कर, क्योंकि कान. आँख और दिल हर शख़्स से इन सबकी (क़ियामत के दिन) पूछ होगी।[7] **(36)** और ज़मीन पर इतराता हुआ मत चल, (क्योंकि) तू न ज़मीन को फाड़ सकता है और न (बदन को तानकर) पहाड़ों की लम्बाई को पहुँच सकता है। **(37)** ये सारे बुरे काम तेरे रब के नज़दीक बिलकुल नापसन्द हैं। **(38)** ये बातें उस हिक्मत में की हैं जो ख़ुदा तआ़ला ने आप पर वह्य के ज़रिये से भेजी हैं, और अल्लाह बरहक़ के साथ कोई और माबूद तजवीज़ मत करना, वरना तू इल्ज़ाम खाया हुआ और मरदूद होकर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। **(39)** तो क्या तुम्हारे रब ने तुमको तो बेटों के साथ ख़ास किया है और ख़ुद फ़रिश्तों को (अपनी) बेटियाँ बनाई हैं, बेशक तुम बड़ी (सख़्त) बात कहते हो।[8] **(40)** ❖

और हमने इस क़ुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि (उसको) अच्छी तरह से समझ लें, और उनको (इस तौहीद से) नफ़रत ही बढ़ती जाती है। **(41)** आप फ़रमाइए कि अगर उसके साथ और माबूद भी

(पृष्ठ 514 का शेष) जिसपर 'अरादल् आख़ि-र-त' दलालत कर रहा है। (२) अ़मल का शरीअ़त के मुताबिक़ सही होना जिसपर 'सअ़्युहा' दलालत कर रहा है। (३) अ़क़ीदे का सही होना, जिसपर 'मुअ़्मिनुन' दलालत कर रहा है। क़बूल होने की शर्तें ये हैं, और इनके बग़ैर मक़बूल नहीं।

3. यानी मक़बूल लोगों की।

4. यानी ग़ैर-मक़बूल लोगों की।

5. 'इर्हम्हुमा' में जो दुआ़ के लिए फ़रमाया है, ज़ाहिर में यह हुक्म पसन्दीदा और मुस्तहब होने के लिए है। और बाज़ ने कहा है कि इससे वाजिब होना साबित होता है। इस सूरत में उम्र भर में एक बार दुआ़ करने से भी वाजिब अदा हो जाएगा और शरई दलीलों से यह दुआ़ करना ईमान के साथ ख़ास है, यानी माँ-बाप मोमिन हों, अलबत्ता अगर कुफ़्र की हालत में ज़िन्दा हों और रहमत की दुआ़ हिदायत की दुआ़ के मायने में की जाए तो जायज़ है।

6. बेजा ख़र्च करने का हासिल यह है कि गुनाह की जगह में ख़र्च करना, चाहे वह गुनाह अपनी ज़ात के एतिबार से हो जैसे शराब व जुआ और ज़िना, चाहे ग़ैर के साथ हो जैसे मुबाह काम में शोहरत व बड़ाई की नीयत से ख़र्च करना।

7. यानी दिलजोई के साथ उनसे वायदा कर लेना कि इन्शा-अल्लाह कहीं से आएगा तो देंगे, और दिल दुखाने वाला जवाब मत देना।

8. कि बुख़्ल की वजह से बिलकुल ही हाथ रोक लिया जाए।

9. कि फ़ुज़ूल-ख़र्ची की जाए।

10. इससे यह मक़सूद नहीं कि कोई किसी का ग़म न करे। बल्कि मतलब यह है कि दूसरे के नफ़े के लिए अपने को दीनी नुक़सान पहुँचाना, या ऐसा दुनियावी नुक़सान बर्दाश्त करना जिसका अन्जाम दीनी नुक़सान हो, इससे मना किया गया है।

1. चूँकि जाहिलियत के ज़माने में बाज़ आदमी बेटियों को तंगदस्ती के ख़ौफ़ से मार डालते थे, इसलिए औलाद से मुराद लड़कियाँ होंगी। और औलाद के उन्वान से ताबीर करना ताल्लुक़ व ख़ुसूसियत ज़ाहिर करने के लिए है कि रहम व शफ़्क़त जोश में आए।

2. यानी ऐसी चीज़ों से भी बचो जो उसकी तरफ़ ले जाएँ। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 518 पर)**

नुफ़ूरा **(41)** क़ुल् लौ का-न म-अ़हू आलि-हतुन् कमा यक़ूलू-न इज़ल्-लब्तग़ौ इला ज़िल्-अ़र्शि सबीला **(42)** सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा यक़ूलू-न अ़ुलुव्वन् कबीरा **(43)** तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्सब्अ़ु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्-न, व इम्-मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्-ला तफ़्क़हू-न तस्बी-हहुम्, इन्नहू का-न हलीमन् ग़फ़ूरा **(44)** व इज़ा क़रअ्तल्-क़ुर्आ-न जअ़ल्ना बैन-क व बैनल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति हिजाबम्-मस्तूरा **(45)** व जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अय्यंफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन्, व इज़ा ज़कर्-त रब्ब-क फ़िल्क़ुर्आनि वह्दहू वल्लौ अ़ला अद्बारिहिम् नुफ़ूरा **(46)** नह्नु अअ्लमु बिमा यस्तमिअ़ू-न बिही इज़् यस्तमिअ़ू-न इलै-क व इज़् हुम् नज्वा इज़् यक़ूलुज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअ़ू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा **(47)** उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू लकल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअ़ू-न सबीला ◆ **(48)** व क़ालू अ-इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव्-व रुफ़ातन् अ-इन्ना लमब्अ़ूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा **(49)** क़ुल् कूनू हिजा-रतन् औ हदीदा **(50)** औ ख़ल्क़म्-मिम्मा यक्बुरु फ़ी सुदूरिकुम् फ़-स-यक़ूलू-न मंय्युअ़ीदुना, क़ुलिल्लज़ी फ़-त-रकुम् अव्व-ल मर्रतिन् फ़-सयुन्ग़िज़ू-न इलै-क रुऊ-सहुम् व यक़ूलू-न मता हु-व, क़ुल् अ़सा अंय्यकू-न क़रीबा **(51)** यौ-म यद्अ़ूकुम् फ़-तस्तजीबू-न बिहम्दिही व तज़ुन्नू-न इल्लबिस्तुम्

بنی اسرآءیل ١٧ ۲۵۹ سبحٰن الذی ١٥

اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤١﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا
اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا
كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ
وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَ
بَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٥﴾ وَّجَعَلْنَا
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِىْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا
ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾
نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ
نَجْوٰۤى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾
اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا
جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ
فِىْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِىْ فَطَرَكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ
قُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ

منزل

होते जैसे कि ये लोग कहते हैं तो उस हालत में अ़र्श वाले तक[1] उन्होंने रास्ता ढूँढ लिया होता।[2] **(42)** ये लोग जो कुछ कहते हैं अल्लाह तआ़ला उससे पाक और बहुत ज़्यादा बरतर है। **(43)** (तमाम) सातों आसमान और ज़मीन और उनमें जितने हैं उसकी पाकी बयान कर रहे हैं, और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो कि तारीफ़ के साथ उसकी पाकी (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) बयान न करती हो, लेकिन तुम लोग उनके पाकी बयान करने को समझते नहीं हो,[3] वह बड़ा हलीम है, बड़ा ग़फ़ूर है। **(44)** और जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं तो हम आपके और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दरमियान एक पर्दा आड़ कर देते हैं। **(45)** और (वह पर्दा यह है कि) हम उनके दिलों पर इससे पर्दा डाल देते हैं कि वे इस (क़ुरआन के मक़सद) को समझें, और उनके कानों में डाट दे देते हैं,[4] और जब आप क़ुरआन में सिर्फ़ अपने रब का ज़िक्र करते हैं तो वे लोग नफ़रत करते हुए पीठ फेरकर चल देते हैं। **(46)** जिस वक़्त ये लोग आपकी तरफ़ कान लगाते हैं तो हम ख़ूब जानते हैं जिस ग़रज़ से ये सुनते हैं,[5] और जिस वक़्त ये लोग आपस में सरगोशियाँ "यानी चुपके-चुपके बातें" करते हैं, जबकि ये ज़ालिम यूँ कहते हैं कि तुम लोग महज़ ऐसे शख़्स का साथ दे रहे हो जिसपर जादू का असर हो गया है। **(47)** आप देखिए तो ये लोग आपके लिए कैसे-कैसे लक़ब तजवीज़ करते हैं। सो ये लोग गुमराह हो गए, रास्ता नहीं पा सकते।[6] ◆ **(48)** और ये लोग कहते हैं कि क्या जब हम (मरने के बाद) हड्डियाँ और चूरा हो जाएँगे, तो क्या हम नए सिरे से पैदा और ज़िन्दा किए जाएँगे। **(49)** आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि तुम पत्थर या लोहा **(50)** या और कोई ऐसी मख़्लूक़ होकर देख लो जो तुम्हारे ज़ेहन में बहुत ही दूर की चीज़ हो।[7] इसपर पूछेंगे कि वह कौन है जो हमको दोबारा ज़िन्दा करेगा? आप फ़रमा दीजिए कि वह वह है जिसने तुमको अव्वल बार पैदा किया था। इसपर आपके आगे सर हिला-हिलाकर कहेंगे कि (अच्छा बतलाओ) यह कब होगा? आप फ़रमा दीजिए कि अ़जब नहीं यह क़रीब ही

(पृष्ठ 516 का शेष) 3. यानी जब क़त्ल के वाजिब या जायज़ होने का कोई शरई सबब पाया जाए तो क़त्ल करना दुरुस्त है, और उस वक़्त वह इस हुक्म में दाख़िल नहीं।

4. वारिस से मुराद वह शख़्स है जिसको बदला लेने का हक़ हो, अगर कोई वारिस मौजूद हो तो वह, वरना बादशाह।

5. यानी [illegible]में तसर्रुफ़ मत करो।

6. अ़हद में अल्लाह के तमाम अहकाम और बन्दों के दरमियान हुए तमाम मुआ़हदे भी दाख़िल हो गए।

7. इसलिए बेतहक़ीक़ बात पर यक़ीन करके उसपर अ़मल-दरामद मत करो।

8. बड़ी सख़्त बात इसलिए कि एक तो अल्लाह तआ़ला के लिए औलाद क़रार देना, फिर औलाद भी वह जो कि अपने लिए नाकारा समझी जाए, जिससे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दो कमियों की निस्बत करना लाज़िम आया।

1. यानी हक़ीक़ी खुदा तक।

2. यानी मुख़ालफ़त और मुक़ाबला सामने आता, फिर दुनिया का मौजूदा निज़ाम कैसे बाक़ी रहता, हालाँकि दुनिया का निज़ाम क़ायम है। तो मालूम हुआ कि फ़साद व बिगाड़ का सबब यानी कई खुदाओं का होना, मौजूद नहीं।

3. तस्बीहे-हाली को इसलिए नहीं समझते कि उसकी हक़ीक़त इस्तिदलाल है, और वह मौक़ूफ़ है सोच-विचार पर, और तुम सोच-विचार नहीं करते। और ज़बान की तस्बीह को बाज़ चीज़ों में तो इसलिए कि वह कशफ़ी उमूर से मुताल्लिक़ है और मोमिनों की ज़बानी तस्बीह को इसलिए कि बावजूद सुनने के उसके मायने और उसकी हक़ीक़त में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते।

4. यानी वह पर्दा न समझना और समझने का इरादा न करना है, जिससे वे आपकी शाने नुबुव्वत नहीं समझ सकते।

5. यानी उनकी ग़रज़ यही एतिराज़ करना और ताना देना है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 520 पर)**

इल्ला क़लीला **(52)** ❖

व क़ुल्-लिअिबादी यक़ूलुल्लती हि-य अह्सनु, इन्नश्शैता-न यन्ज़गु बैनहुम्, इन्नश्शैता-न का-न लिल्इन्सानि अ़दुव्वम्-मुबीना **(53)** रब्बुकुम् अअ़्लमु बिकुम्, इंय्यशअ् यर्हम्कुम् औ इंय्यशअ् युअ़ज़्ज़िब्कुम्, व मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् वकीला **(54)** व रब्बु-क अअ़्लमु बिमन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व ल-क़द् फ़ज़्ज़ल्ना बअ़्ज़न्नबिय्यी-न अ़ला बअ़्ज़िंव्-व आतैना दावू-द ज़बूरा **(55)** क़ुलिद्उ़ल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् मिन् दूनिही फ़ला यम्लिकू-न कश्फ़ज़्ज़ुर्रि अ़न्कुम् व ला तह्वीला **(56)** उलाइ-कल्लज़ी-न यद्अू-न यब्तग़ू-न इला रब्बिहिमुल्-वसी-ल-त अय्युहुम् अक़्रबु व यर्जू-न रह्म-तहू व यख़ाफ़ू-न अ़ज़ाबहू, इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बि-क का-न मह्ज़ूरा **(57)** व इम्-मिन् क़र्यतिन् इल्ला नह्नु मुह्लिकूहा क़ब्-ल यौमिल्-क़ियामति औ मुअ़ज़्ज़िबूहा अ़ज़ाबन् शदीदन्, का-न ज़ालि-क फ़िल्किताबि मस्तूरा **(58)** व मा म-न-अ़ना अन्नुर्सि-ल बिल्आयाति इल्ला अन् कज़्ज़-ब बिहल्-अव्वलू-न, व आतैना समूदन्ना-क़-त मुब्सि-रतन् फ़-ज़-लमू बिहा, व मा नुर्सिलु बिल्आयाति इल्ला तख़्वीफ़ा **(59)** व इज़् क़ुल्ना ल-क इन्-न रब्ब-क अहा-त बिन्नासि, व मा जअ़ल्नर्रुअ्यल्लती अरैना-क इल्ला फ़ित्न-तल्-लिन्नासि वश्श-ज-रतल्-मल्अू़न-त फ़िल्क़ुर्आनि, व नुख़व्विफ़ुहुम् फ़मा यज़ीदुहुम् इल्ला तुग़्यानन्

وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٢﴾ وَقُل لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ
لِلْإِنسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿٥٣﴾ رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِن يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ
أَوْ إِن يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾ وَرَبُّكَ
أَعْلَمُ بِمَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ
عَلَىٰ بَعْضٍ ۖ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ﴿٥٥﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم
مِّن دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ
وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ
مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾ وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾
وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ
وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ
إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا
الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي
الْقُرْآنِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قُلْنَا

आ पहुँचा हो। **(51)** यह उस दिन होगा कि अल्लाह तुमको पुकारेगा और तुम (बिला इख़्तियार) उसकी तारीफ़ करते हुए हुक्म का पालन कर लोगे, और तुम यह ख़्याल करोगे कि तुम बहुत ही कम रहे थे।[1] **(52)** ❖

और आप मेरे (मुसलमान) बन्दों से कह दीजिए कि ऐसी बात कहा करें जो बेहतर हो,[2] शैतान (सख़्त-कलामी कराके) लोगों में फ़साद डलवा देता है, वाक़ई शैतान इनसान का खुला दुश्मन है। **(53)** तुम सबका हाल तुम्हारा परवर्दिगार ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तुमपर रहमत फ़रमाए या अगर वह चाहे तुमको अ़ज़ाब देने लगे। और हमने आप (तक) को उन (की हिदायत) का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा।[3] **(54)** और आपका परवर्दिगार ख़ूब जानता है उनको जो कि आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं,[4] और हमने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है, और हम दाऊद को ज़बूर दे चुके हैं।[5] **(55)** आप फ़रमा दीजिए कि जिनको तुम अल्लाह तआ़ला के सिवा (माबूद) क़रार दे रहे हो, ज़रा उनको पुकारो तो सही। सो (यक़ीनन) वे न तुमसे तकलीफ़ को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न (उसके) बदल डालने का। **(56)** ये लोग जिनको ये (मुश्रिक लोग) पुकार रहे हैं, वे ख़ुद ही अपने रब की तरफ़ ज़रिया ढूँढ रहे हैं,[6] कि उनमें कौन ज़्यादा मुक़र्रब "यानी क़रीबी" (बनता) है। और वे उसकी रहमत के उम्मीदवार हैं और उसके अ़ज़ाब से डरते हैं। (और) वाक़ई आपके रब का अ़ज़ाब है भी डरने के क़ाबिल।[7] **(57)** और (काफ़िरों की) ऐसी कोई बस्ती नहीं जिसको हम क़ियामत से पहले हलाक न करेंगे, या (क़ियामत के दिन) उसको सख़्त अ़ज़ाब न देंगे।[8] यह (बात) किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) में लिखी हुई है। **(58)** और हमको ख़ास (फ़रमाइशी) मोजिज़ों के भेजने से यही बात रोक हुई कि पहले लोग उनको झुठला चुके हैं,[9] और हमने क़ौमे समूद को ऊँटनी दी थी जो कि बसीरत "यानी समझ और दानाई" का ज़रिया थी, सो उन लोगों ने उसके साथ ज़ुल्म किया, और हम ऐसे मोजिज़ों को साफ़ डराने के लिए भेजा करते हैं। **(59)** और (आप वह वक़्त याद कर लीजिए) जबकि हमने आपसे कहा था कि आपका रब अपने इल्म से तमाम लोगों को घेरे हुए है, और हमने जो तमाशा आपको (जागने की हालत में मेराज के अन्दर) दिखलाया था, और जिस दरख़्त की क़ुरआन में मज़म्मत "यानी निंदा" की गई है, हमने तो उन (दोनों चीज़ों) को उन लोगों के लिए गुमराही का सबब कर दिया, और हम उनको डराते रहते हैं

(पृष्ठ 518 का शेष) **6.** क्योंकि ऐसे उमूर से सलाहियत ज़ाया हो जाती है।

7. जब इस चीज़ का ज़िन्दा करना मुम्किन है जो बहुत मुश्किल और दूर की बात है तो जो चीज़ आसान और क़रीब है उसका ज़िन्दा करना तो ज़्यादा आसानी से मुम्किन है। और 'कूनू' से मक़सूद हुक्म नहीं है बल्कि यह बताना है कि अगर पत्थर और लोहा भी हो जाओ तब भी उसकी क़ुदरत से ख़ारिज नहीं हो सकते।

1. क्योंकि क़ब्र और दुनिया में उस दिन के मुक़ाबले में फिर भी राहत थी, और राहत व आराम का ज़माना सख़्ती और परेशानी के ज़माने के सामने कम मालूम होता है।

2. यानी उसमें बुरा-भला कहना और सख़्ती और उत्तेजना न हो।

3. इसलिए सख़्ती करने की ज़रूरत नहीं। मगर मुराद इससे बेज़रूरत सख़्ती करना है जैसा कि अक्सर लड़ाई-झगड़ों में हो जाती है, वरना ज़रूरत और मस्लहत के मौक़े पर तो क़िताल तक की भी इजाज़त है।

4. ऊपर 'व इज़ा क़रअ्तल् क़ुरआ-न' और 'क़ालू अ-इज़ा कुन्ना' में कुफ़्फ़ार के रिसालत और मरने के बाद ज़िन्दा होने के इनकार पर दलालत थी, रिसालत के इनकार के अन्य कारणों में से उनका एक ख़्याल यह भी था कि रसूल फ़रिश्ता होना चाहिए, या अगर आदमी हो तो कोई सरदार और दुनियावी एतिबार से बड़ा आदमी हो। अब इस शुब्हे का जवाब और दाऊद अ़लैहिस्सलाम के ज़िक्र से आपकी रिसालत की ताईद और सब रसूलों में आपके अफ़ज़ल होने की तरफ़ मुख़्तसर इशारा फ़रमाते हैं।

5. ज़बूर की ख़ास करने में यह नुक्ता है कि उसमें हुज़ूर सल्ल. के हुकूमत व बादशाही वाला होने की ख़बर दी गई है।

6. यानी इताअ़त व इबादत में मश्ग़ूल हैं, ताकि अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब (यानी नज़दीकी) मयस्सर हो जाए। और चाहते हैं कि और ज़्यादा निकटता हो जाए। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 522 पर)**

कबीरा (60) ❖

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, क़ा-ल अ-अस्जुदु लिमन् ख़लक़्-त तीना (61) क़ा-ल अ-रऐ-त-क हाज़ल्लज़ी कर्रम्-त अ़लय्-य, ल-इन् अख़्ख़र्तनि इला यौमिल्-क़ियामति ल-अह्तनिकन्-न ज़ुर्रिय्य-तहू इल्ला क़लीला (62) क़ालज़्हब् फ़-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् फ़-इन्-न जहन्न-म जज़ाउकुम् जज़ाअम्-मौफ़ूरा (63) वस्तफ़्ज़िज़् मनिस्त-तअ़्-त मिन्हुम् बिसौति-क व अज्लिब् अ़लैहिम् बिख़ैलि-क व रजिलि-क व शारिक्हुम् फ़िल्अम्वालि वल्-औलादि व अ़िद्हुम्, व मा यअ़िदुहुमुश्-शैतानु इल्ला ग़ुरूरा (64) इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन्, व कफ़ा बिरब्बि-क वकीला (65) रब्बुकुमुल्लज़ी युज़्जी लकुमुल्-फ़ुल्-क फ़िल्बह्रि लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही, इन्नहू का-न बिकुम् रहीमा (66) व इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़िल्बह्रि ज़ल्-ल मन् तद्अू-न इल्ला इय्याहु फ़-लम्मा नज्जाकुम् इलल्-बर्रि अअ्रज़्तुम्, व कानल्-इन्सानु कफ़ूरा (67) अ-फ़-अमिन्तुम् अंय्यख़्सि-फ़ बिकुम् जानिबल्-बर्रि औ युर्सि-ल अ़लैकुम् हासिबन् सुम्-म ला तजिदू लकुम् वकीला (68) अम् अमिन्तुम् अंय्युअ़ी-दकुम् फ़ीहि ता-रतन् उख़्रा फ़युरसि-ल अ़लैकुम् क़ासिफ़म्-मिनर्-रीहि फ़युग़्रि-ककुम् बिमा कफ़र्तुम् सुम्-म ला तजिदू लकुम् अ़लैना बिही तबीआ़ (69) व ल-क़द् कर्रम्ना बनी आद-म व हमल्नाहुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि व रज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ
خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿۶۱﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ
اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ
اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾
وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ
بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ
وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ
سُلْطٰنٌ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ
فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۶۶﴾ وَاِذَا
مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ
اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿۶۷﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ
بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
وَكِيْلًا ﴿۶۸﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا
لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿۶۹﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ

❖ रु. 6/8/6

लेकिन उनकी बड़ी सरकशी बढ़ती ही चली जाती है। **(60)** ❖

और जबकि हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, सो उन सबने सज्दा किया मगर इब्लीस ''यानी शैतान'' ने (न किया और) कहा कि क्या मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूँ जिसको आपने मिट्टी से बनाया है।[1] **(61)** कहने लगा कि इस शख़्स को जो आपने मुझपर फ़ौक़ियत ''यानी बरतरी'' दी है तो भला बताइए (तो, ख़ैर) अगर आपने मुझको क़ियामत के ज़माने तक मोहलत दे दी तो मैं (भी) सिवाय थोड़े-से लोगों के इसकी तमाम औलाद को अपने बस में करूँगा।[2] **(62)** इर्शाद हुआ, जा जो शख़्स उनमें से तेरे साथ हो लेगा, सो तुम सबकी सज़ा जहन्नम है, सज़ा पूरी। **(63)** और उनमें से जिस-जिसपर तेरा क़ाबू चले, अपनी चीख़-पुकार से[3] उसका क़दम उखाड़ देना, और उनपर अपने सवार और प्यादे चढ़ा लाना,[4] और उनके माल और औलाद में अपना साझा कर लेना,[5] और उनसे वायदा करना (कि गुनाहों पर पकड़ न होगी) और शैतान उन लोगों से बिलकुल झूठे वायदे करता है। **(64)** मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा ज़रा क़ाबू न चलेगा और आपका रब काफ़ी कारसाज़ है। **(65)** तुम्हारा रब ऐसा (नेमत देने वाला) है कि तुम्हारे लिए कश्ती को दरिया में ले चलता है ताकि तुम उसके रिज़्क़ की तलाश करो, बेशक वह तुम्हारे हाल पर बहुत मेहरबान है। **(66)** और जब तुमको दरिया में कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो सिवाय उस (ख़ुदा) के और जितनों की तुम इबादत करते थे, सब ग़ायब हो जाते हैं,[6] फिर जब तुमको ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है तो तुम फिर (पहली आदत के मुताबिक़) फिर जाते हो, और (वाक़ई) इनसान है बड़ा नाशुक्रा। **(67)** तो क्या तुम इस बात से बेफ़िक्र हो (बैठे हो) कि तुमको ख़ुश्की की तरफ़ लाकर ज़मीन में धँसा दे, या तुमपर कोई ऐसी तेज़ हवा भेज दे जो कंकर पत्थर बरसाने लगे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओ। **(68)** या तुम इससे बेफ़िक्र हो गए कि वह (अल्लाह) फिर तुमको दरिया ही में दोबारा ले जाए, फिर तुमपर हवा का सख़्त तूफ़ान भेज दे, फिर तुमको तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे, फिर इस बात पर कोई हमारा पीछा करने वाला तुमको न मिले। **(69)** और हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त दी,[7] और हमने उनको ख़ुश्की और दरिया में सवार किया और उम्दा-उम्दा चीज़ें उनको अता फ़रमाईं। और हमने उनको अपनी बहुत-सी मख़्लूक़ पर बरतरी दी।[8] **(70)** ❖

(पृष्ठ 520 का शेष) **7.** मतलब यह है कि जब वे खुद इबादत करने वाले हैं तो माबूद क्योंकर होंगे, और जब वे खुद ही रहमत के हासिल करने में अल्लाह तआला के मोहताज हैं तो औरों को क्या नफ़ा पहुँचा सकते हैं। इसी तरह जब वे खुद नुक़सान यानी अ़ज़ाब से बचने में अल्लाह तआला के मोहताज हैं तो औरों से नुक़सान को क्या दूर कर सकते हैं, लिहाज़ा उनका माबूद व मददगार बनाना महज़ बातिल होगा।

8. पस अगर कोई काफ़िर यहाँ किसी आफ़त में हलाक होने से बच गया तो क़ियामत के दिन बड़ी आफ़त से न बचेगा। आफ़त की क़ैद इसलिए है कि तबई मौत से तो सब ही हलाक होते हैं इसमें कुफ़्र की कोई खुसूसियत नहीं।

9. और तबीयतें इनकी और उनकी एक जैसी हैं, पस ये भी झुठलाएँगे।

1. इसपर मरदूद हुआ और धुतकारा गया।

2. अगर कोई यह सवाल करे कि शैतान को शुरू में यह कैसे मालूम हुआ कि मैं इनसानों को गुमराह करने और बहकाने पर क़ादिर हूँ, इसका जवाब यह है कि ग़ालिबन इनसान के मुख़्तलिफ़ क़ुव्वतों से मुरक्कब होने से उसको यह ख़्याल आया।

3. यानी बहकाने और वस्वसे से।

4. ताकि सब मिलकर गुमराह करने में खूब ज़ोर लगाएँ।

5. यानी माल और औलाद को गुमराही का ज़रिया बना देना। चुनाँचे आँखों के सामने है कि यही दो चीज़ें ज़्यादातर गुमराही का अहम और ताक़तवर सबब हुआ करती हैं।

6. न सिर्फ़ ज़बान पर से बल्कि दिल से भी कि उनका ख़्याल ही नहीं आता, और फ़रियाद को पहुँचने से भी कि वे इम्दाद नहीं कर सकते, जिससे तुम्हारे हाल और ज़बान से एतिराफ़ करने से शिर्क का बातिल होना लाज़िम आता है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 524 पर)**

फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अ़ला कसीरिम्-मिम्मन् ख़लक़्ना तफ़्ज़ीला (70) ❖

यौ-म नद्अू कुल्-ल उनासिम् बि-इमामिहिम् फ़-मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़-उलाइ-क यक़्रऊ-न किताबहुम् व ला युज़्लमू-न फ़तीला (71) व मन् का-न फ़ी हाज़िही अअ्मा फ़हु-व फ़िल्आख़िरति अअ्मा व अज़ल्लु सबीला (72) व इन् कादू लयफ़्तिनू-न-क अ़निल्लज़ी औहैना इलै-क लितफ़्तरि-य अ़लैना ग़ैरहू व इज़ल् लत्त-ख़ज़ू-क ख़लीला (73) व लौ ला अन् सब्बत्ना-क ल-क़द् कित्-त तर्-कनु इलैहिम् शैअन् क़लीला (74) इज़ल् ल-अज़क़्ना-क ज़िअ्फ़ल्-हयाति व ज़िअ्फ़ल्-ममाति सुम्-म ला तजिदु ल-क अ़लैना नसीरा (75) व इन् कादू लयस्तफ़िज़्ज़ू-न-क मिनल्अर्ज़ि लियुख़्रिजू-क मिन्हा व इज़ल्-ला यल्बसू-न ख़िलाफ़-क इल्ला क़लीला (76) सुन्न-त मन् क़द् अर्सल्ना क़ब्ल-क मिर्रुसुलिना व ला तजिदु लिसुन्नतिना तह्वीला (77) ❖

अक़िमिस्सला-त लिदुलूकिश्शम्सि इला ग़-सक़िल्लैलि व क़ुर्आनल्-फ़ज्रि,

خلقنا تفضيلا ۝ يوم ندعوا كل اناس بامامهم فمن
اوتي كتبه بيمينه فاولئك يقرءون كتبهم ولا يظلمون
فتيلا ۝ ومن كان في هذه اعمى فهو في الاخرة اعمى
واضل سبيلا ۝ وان كادوا ليفتنونك عن الذي اوحينا
اليك لتفتري علينا غيره واذا لاتخذوك خليلا ۝ ولولا
ان ثبتنك لقد كدت تركن اليهم شيئا قليلا ۝ اذا لاذقنك
ضعف الحيوة وضعف الممات ثم لا تجد لك علينا نصيرا ۝
وان كادوا ليستفزونك من الارض ليخرجوك منها واذا
لا يلبثون خلفك الا قليلا ۝ سنة من قد ارسلنا قبلك
من رسلنا ولا تجد لسنتنا تحويلا ۝ اقم الصلوة لدلوك
الشمس الى غسق اليل وقران الفجر ان قران الفجر كان
مشهودا ۝ ومن اليل فتهجد به نافلة لك عسى ان يبعثك
ربك مقاما محمودا ۝ وقل رب ادخلني مدخل صدق و
اخرجني مخرج صدق واجعل لي من لدنك سلطنا نصيرا ۝
وقل جاء الحق وزهق البطل ان البطل كان زهوقا ۝
وننزل من القران ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ولا يزيد

इन्-न क़ुर्आनल्-फ़ज्रि का-न मश्हूदा (78) व मिनल्लैलि फ़-तहज्जद् बिही नाफ़ि-लतल् ल-क अ़सा अंय्यब्अ़-स-क रब्बु-क मक़ामम्-मह्मूदा (79) व क़ुर्रब्बि अद्ख़िल्नी मुद्ख़-ल सिद्क़िंव्-व अख़्रिज्नी मुख़्र-ज सिद्क़िंव्-वज्अ़ल्-ली मिल्लदुन्-क सुल्तानन् नसीरा (80) व क़ुल् जाअल्-हक़्क़ु व ज़-हक़ल्-बातिलु, इन्नल्-बाति-ल का-न ज़हूक़ा (81) व नुनज़्ज़िलु मिनल्-क़ुर्आनि मा हु-व शिफ़ाउंव्-व रह्मतुल् लिल्-मुअ्मिनी-न व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमी-न

जिस दिन हम तमाम आदमियों को उनके आमालनामे समेत बुलाएँगे। फिर जिसका आमाल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा, ऐसे लोग अपना आमाल-नामा पढ़ेंगे, और उनका ज़रा भी नुक़सान न किया जाएगा। **(71)** और जो शख़्स दुनिया में (नजात का रास्ता देखने से) अन्धा रहेगा, सो वह आख़िरत में भी (नजात की मन्ज़िल तक पहुँचने से) अन्धा रहेगा, और ज़्यादा भटका हुआ होगा। **(72)** और ये (काफ़िर) आपको उस चीज़ से बिचलाने ही लगे थे जो हमने आपपर वह्य के ज़रिये से भेजी है,[1] ताकि आप उसके सिवा हमारी तरफ़ ग़लत बात की निस्बत करें, और ऐसी हालत में आपको गहरा दोस्त बना लेते। **(73)** और अगर हमने आपको साबित क़दम न बनाया होता तो आप उनकी तरफ़ कुछ-कुछ झुकने के क़रीब जा पहुँचते। **(74)** (अगर ऐसा होता) तो हम आपको ज़िन्दगी की हालत में और मौत के बाद दोहरा (अ़ज़ाब) चखाते, फिर आप हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार भी न पाते।[2] **(75)** और ये लोग इस सरज़मीन से आपके क़दम ही उखाड़ने लगे थे,[3] ताकि आपको इससे निकाल दें, और (अगर ऐसा हो जाता तो) आपके बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। **(76)** जैसा कि उन (हज़रात) के बारे में (हमारा) क़ायदा रहा है जिनको आपसे पहले हमने रसूल बनाकर भेजा था, और आप हमारे (इस) क़ायदे में बदलाव न पाएँगे।[4] **(77)** ❖

सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे (होने) तक नमाज़ें अदा किया कीजिए,[5] और सुबह की नमाज़ भी, बेशक सुबह की नमाज़ (फ़रिश्तों के) हाज़िर होने का वक़्त है।[6] **(78)** और किसी क़द्र रात के हिस्से में, सो उसमें तहज्जुद पढ़ा कीजिए, जो कि आपके लिए (फ़र्ज़ नमाज़ों के अ़लावा) ज़ायद चीज़ है, उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ामे-महमूद[7] में जगह देगा। **(79)** और आप (यूँ) दुआ़ कीजिए कि ऐ परवर्दिगार! मुझको ख़ूबी के साथ पहुँचाइयो, और मुझको ख़ूबी के साथ ले जाइयो,[8] और मुझको अपने पास से ऐसा ग़ल्बा दीजियो जिसके साथ मदद हो।[9] **(80)** और कह दीजिए कि हक़ आया और बातिल गया गुज़रा हुआ। (और) वाक़ई बातिल चीज़ तो (यूँ ही) आती-जाती (रहती) है।[10] **(81)** और हम क़ुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि वे ईमान वालों के हक़ में तो शिफ़ा और रहमत है,[11] और नाइन्साफ़ों को उससे और उल्टा नुक़सान बढ़ता है। **(82)** और आदमी को जब हम नेमत अ़ता करते हैं तो मुँह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है,

---

(पृष्ठ 522 का शेष) 7. इनसान में बाज़ मख़्सूस सिफ़तें ऐसी हैं जो और जानदारों में नहीं, जैसे सूरत की ख़ूबसूरती जिसमें जिस्म का सीधा व क़ायम होना भी आ गया, और अ़क़्ल, और चीज़ों की ईजाद (यानी आविष्कार करना) वग़ैरह। और ये नेमतें पूरी इनसानियत के लिए हैं। पस बनी आदम (यानी आदम की औलाद) से मुराद तमाम इनसान हैं।

8. चूँकि ऊपर "कर्रम्ना" मुख़्तसर था इसलिए इससे यह शुब्हा हो सकता था कि उन सिफ़तों में जो ऊपर ज़िक्र हुई हैं, यह सबसे अफ़ज़ल है, हालाँकि यह बात हक़ीक़त के ख़िलाफ़ थी। क्योंकि ये सिफ़तें फ़रिश्तों पर फ़ज़ीलत का मदार नहीं हो सकतीं, और जो सिफ़तें फ़रिश्तों पर फ़ज़ीलत का मदार हैं वे तमाम औलादे-आदम (यानी इनसानों) में नहीं पाई जातीं, इसलिए 'फ़ज़्ज़ल्ना' में इस बात को वाज़ेह कर दिया कि मुराद इक्राम करने से बाज़ मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत देना है, यानी हैवानात और हैवानात से जो कम रुतबा हैं उनपर इनसानों को फ़ज़ीलत दी। पस यह आयत मुतकल्लिमीन के दरमियान ज़ेरे बहस मसले यानी फ़रिश्तों और इनसानों के एक-दूसरे से फ़ज़ीलत-याफ़्ता होने के बारे में ख़ामोश है।

1. यानी इस कोशिश में लगे थे कि आप हमारे हुक्म के ख़िलाफ़ करें, यानी ग़रीब मुसलमानों को अपने पास से हटा दें, या मुसलमान होने के लिए एक साल की मोहलत दे दें, जबकि ये दोनों मामले शरीअ़त के ख़िलाफ़ हैं।

2. मगर चूँकि आपको मासूम (यानी गुनाहों से महफ़ूज़) और सबित क़दम बनाया, इसलिए मामूली क़रीब होना और रुझान व मैलान भी नहीं हुआ, और 'ज़िअ़फ़ल् हयाति व ज़िअ़फ़ल ममाति' से भी बच गए।

3. यानी मक्का से या मदीना से।

4. कि जब उनकी क़ौम ने उनको वतन से निकाला तो ख़ुद उनको भी रहना नसीब न हुआ।

5. इसमें ज़ोहर, अ़स्र, मग़रिब, इशा चार नमाज़ें आ गईं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 526 पर)**

इल्ला ख़सारा **(82)** व इज़ा अन्अम्ना अ़लल्-इन्सानि अअ्र-ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश्शर्रु का-न यऊसा **(83)** क़ुल् कुल्लुंय्यअ्मलु अ़ला शाकि-लतिही, फ़रब्बुकुम् अअ्लमु बिमन् हु-व अह्दा सबीला **(84)** ❖

व यस्अलून-क अ़निर्रूहि क़ुलिर्रूहु मिन् अम्रि रब्बी व मा ऊतीतुम् मिनल्-अ़िल्मि इल्ला क़लीला **(85)** व ल-इन् शिअ्ना लनज़्ह-बन्-न बिल्लज़ी औहैना इलै-क सुम्-म ला तजिदु ल-क बिही अ़लैना वकीला **(86)** इल्ला रह्म-तम् मिर्रब्बि-क, इन्-न फ़ज़्लहू का-न अ़लै-क कबीरा **(87)** क़ुल् ल-इनिज्त-म-अ़तिल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़ला अंय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल्-क़ुर्आनि ला यअ्तू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअ्ज़ुहुम् लिबअ्ज़िन् ज़हीरा **(88)** व ल-क़द् सर्रफ़्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन्, फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा **(89)** व क़ालू लन् नुअ्मि-न ल-क हत्ता तफ़्जु-र लना मिनल्-अर्ज़ि यम्बूआ **(90)** औ तकू-न ल-क जन्नतुम् मिन् नख़ीलिंव्-व अ़ि-नबिन् फ़तुफ़ज्जिरल्-अन्हा-र ख़िलालहा तफ़्जीरा **(91)** औ तुस्क़ितस्समा-अ कमा ज़अ़म्-त अ़लैना कि-सफ़न् औ तअ्ति-य बिल्लाहि वल्मलाइ-कति क़बीला **(92)** औ यकू-न ल-क बैतुम्-मिन् ज़ुख़्रुफ़िन् औ तर्क़ा फ़िस्समा-इ, व लन् नुअ्मि-न लिरुक़िय्यि-क हत्ता तुनज़्ज़ि-ल अ़लैना किताबन् नक़्रउहू, क़ुल् सुब्हा-न रब्बी हल् कुन्तु इल्ला ब-शरर्-रसूला **(93)** ❖

بنی اسرآءیل ۱۷ ۲۶۳ سبحٰن الذی ۱۵

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَ
نَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ۝ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى
شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ
الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّىْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا
قَلِيْلًا ۝ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِىْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ
لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ۝ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ
عَلَيْكَ كَبِيْرًا ۝ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا
بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
ظَهِيْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ
لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ۝ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
عِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ۝ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا
زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِىَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ۝ اَوْ يَكُوْنَ
لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِى السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ
حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا
بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى

منزل ۴

और जब उसको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो नाउम्मीद हो जाता है।[1] (83) आप फ़रमा दीजिए कि हर शख़्स अपने तरीक़े पर काम कर रहा है, सो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उसको जो ठीक रास्ते पर हो। (84) ❖

और ये लोग आपसे (इम्तिहान के तौर पर) रूह के बारे में पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि रूह मेरे रब के हुक्म से बनी है,[2] और तुमको बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है।[3] (85) और अगर हम चाहें तो जिस क़द्र वह्य आप पर भेजी है सब छीन लें, फिर उसके (वापस लाने के) लिए आपको हमारे मुक़ाबले में कोई हिमायती न मिले। (86) मगर (यह) आपके रब ही की रहमत है (कि ऐसा नहीं किया) बेशक आप पर उसका बड़ा फ़ज़्ल है। (87) आप फ़रमा दीजिए कि अगर तमाम इनसान और जिन्नात (इस बात के लिए) जमा हो जाएँ कि ऐसा क़ुरआन बना लाएँ तब भी ऐसा न ला सकेंगे, अगरचे एक दूसरे का मददगार भी बन जाए। (88) और हमने लोगों के (समझाने के) लिए हर क़िस्म का उम्दा मज़मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इनकार किए बग़ैर न रहे। (89) और ये लोग कहते हैं कि हम आप पर हरगिज़ ईमान न लाएँगे जब तक आप हमारे लिए (मक्का की) ज़मीन से कोई चश्मा जारी न कर दें। (90) या ख़ास आपके लिए खजूर और अंगूरों का कोई बाग़ न हो, फिर उस बाग़ के बीच-बीच में जगह-जगह बहुत-सी नहरें आप जारी कर दें। (91) या जैसा कि आप कहा करते हैं, आप आसमान के टुकड़े हमपर न गिरा दें, या आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने न (ला खड़ा) करें। (92) या आपके पास कोई सोने का बना हुआ घर न हो, या आप (हमारे सामने) आसमान पर न चढ़ जाएँ, और हम तो आपके (आसमान पर) चढ़ने को भी कभी यक़ीन न करें, जब तक कि (वहाँ से) आप हमारे पास एक तहरीर न लाएँ, जिसको हम पढ़ भी लें।[4] आप फ़रमा दीजिए कि सुब्हानल्लाह! मैं सिवाय इसके कि आदमी हूँ (मगर) पैग़म्बर हूँ और क्या हूँ। (कि इन फ़रमाइशों को पूरा करना मेरी क़ुदरत में हो)। (93) ❖

(पृष्ठ 524 का शेष) 6. चूँकि सुबह का वक़्त नींद से उठने का था इसलिए इसका हुक्म भी अलग किया, और इसकी एक ख़ास बुज़ुर्गी भी बयान की।

7. जो शफ़ाअ़ते कुबरा का मक़ाम है। और शफ़ाअ़ते कुबरा वह है जिसमें तमाम मख़्लूक़ात के हिसाब-किताब शुरू होने की शफ़ाअ़त होगी।

8. यानी मक्का से जाने के बाद।

9. जिससे वह ग़ल्बा बढ़ता ही जाए, वरना आ़रज़ी (यानी अस्थाई) ग़ल्बा तो काफ़िरों को भी हो जाता है मगर वे अल्लाह की तरफ़ से मदद-याफ़्ता नहीं होते इसलिए जल्द ख़त्म हो जाता है। इसमें सुपुर्द करने का हुक्म हो गया।

10. चुनाँचे हिजरत के बाद मक्का फ़त्ह हुआ और सब वायदे पूरे हो गए।

11. क्योंकि वे उसे मानते हैं जिससे हक़ तआ़ला की रहमत उनपर होती है, और बुरे अ़क़ीदों व आमाल के मर्ज़ से शिफ़ा होती है।

1. ये दोनों बातें अल्लाह से बेताल्लुक़ी की दलील हैं, और यही बेताल्लुक़ी असली सबब है हिदायत की तरफ़ मुतवज्जह न होने का, और हक़ में ग़ौर न करने का, और इसी से कुफ़्र वग़ैरह पैदा होता है।

2. ज़ाहिर में मालूम होता है कि इसी रूह के मुताल्लिक़ सवाल था जिससे इनसान ज़िन्दा है। क्योंकि जब रूह मुतलक़ बोलते हैं यही समझी जाती है, और जवाब से ज़ाहिर में यह मालूम होता है कि नुसूस (यानी क़ुरआन व हदीस) में इसकी हक़ीक़त ज़ाहिर न करने की वजह बतलाई है, और उसके हादिस (यानी फ़ानी) होने का ज़रूरी अ़क़ीदा ज़ाहिर कर दिया गया है। अब यह बात कि किसी दूसरे तरीक़े से इसका इज़हार हो सकता है या होता है, आयत इसके साबित होने और न होने दोनों से ख़ामोश है, पस दोनों बातों की गुन्जाइश है, और कोई सी सूरत भी क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ नहीं।

3. यहाँ जो इल्म को क़लील यानी थोड़ा-सा फ़रमाया तो अल्लाह तआ़ला के इल्म के मुक़ाबले में, और दूसरी आयत में जो इल्म को 'ख़ैरे कसीर' (यानी बड़ी भलाई) फ़रमाया तो दुनिया के फ़ायदे और दौलत की निस्बत से, पस दोनों में कोई टकराव नहीं।

4. और उसमें आपके आसमान पर पहुँचने की तस्दीक़ रसीद के तौर पर लिखी हुई हो।

व मा म-नअ़न्ना-स अंय्युअ्मिनू इज़् जा-अहुमुल्-हुदा इल्ला अन् क़ालू अ-ब-अ़सल्लाहु ब-शररसूला **(94)** क़ुल् लौ का-न फ़िल्अर्ज़ि मलाइ-कतुंय्यम्शू-न मुत्मइन्नी-न लनज़्ज़ल्ना अ़लैहिम् मिनस्समा-इ म-लकर्रसूला **(95)** क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम्, इन्नहू का-न बिअ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा **(96)** व मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्-मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहुम् औलिया-अ मिन् दूनिही, व नह्शुरुहुम् यौमल्-क़ियामति अ़ला वुजूहिहिम् अ़ुम्यंव्-व बुक्मंव्-व सुम्मन्, मअ्वाहुम् जहन्नमु, कुल्लमा ख़बत् ज़िद्नाहुम् सअ़ीरा ● **(97)** ज़ालि-क जज़ा-उहुम् बिअन्नहुम् क-फ़रू बिआयातिना व क़ालू अ-इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव्-व रुफ़ातन् अ-इन्ना लमब्अूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा **(98)** अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ क़ादिरुन् अ़ला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम् व ज-अ़-ल लहुम् अ-जलल्-ला रै-ब फ़ीहि, फ़-अबज़्ज़ालिमू-न इल्ला कुफ़ूरा **(99)** क़ुल् लौ अन्तुम् तम्लिकू-न ख़ज़ाइ-न रह्मति रब्बी इज़ल् ल-अम्सक्तुम् ख़श्य-तल्-इन्फ़ाक़ि, व कानल्-इन्सानु क़तूरा **(100)** ❖

سبحٰن الذي ١٥ ٢٦٤ بني اسرآءيل ١٧

إِلَّآ أَنْ قَالُوٓا أَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ
مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا
رَّسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ
خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ
تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُونِهِ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى
وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۖ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ
سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوٓا أَإِذَا كُنَّا
عِظَامًا وَّرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ
اللّٰهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى أَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ
وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ ۖ فَأَبَى الظّٰلِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾ قُلْ
لَّوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيٓ إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ
الْإِنْفَاقِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍ
بَيِّنٰتٍ فَسْئَلْ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ إِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ
إِنِّي لَأَظُنُّكَ يٰمُوسٰى مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ أَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ
إِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ
مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾ فَأَرَادَ أَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ

منزل ٤

व ल-क़द् आतैना मूसा तिस्-अ़ आयातिम्-बय्यिनातिन् फ़स्अल् बनी इस्राई-ल इज़् जा-अहुम् फ़क़ा-ल लहू फ़िर्औनु इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या मूसा मस्हूरा **(101)** क़ा-ल ल-क़द् अ़लिम्-त मा अन्ज़-ल हाउला-इ इल्ला रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि बसाइ-र व इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या फ़िर्औनु मस्बूरा **(102)** फ़-अरा-द अंय्यस्तफ़िज़्ज़हुम् मिनल्-अर्ज़ि

और जिस वक़्त उन लोगों के पास हिदायत पहुँच चुकी, उस वक़्त उनको ईमान लाने से सिवाय इसके और कोई (क़ाबिले तवज्जोह) बात रोक नहीं हुई कि उन्होंने कहा, क्या अल्लाह तआला ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा है। **(94)** आप फ़रमा दीजिए कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते (रहते) होते कि इसमें चलते-बसते तो ज़रूर हम उनपर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते।[1] **(95)** आप (आख़िरी बात) कह दीजिए कि अल्लाह तआला मेरे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी गवाह है, (क्योंकि) वह अपने बन्दों को ख़ूब जानता, ख़ूब देखता है। **(96)** और अल्लाह तआला जिसको राह पर लाए वही राह पर आता है, और जिसको वह बेराह कर दे तो ख़ुदा के सिवा आप किसी को भी ऐसों का मददगार न पाएँगे।[2] और हम क़ियामत के दिन उनको अंधा गूँगा बहरा करके मुँह के बल चलाएँगे, (फिर) उनका ठिकाना दोज़ख़ है। वह जब ज़रा धीमी होने लगेगी तब ही उनके लिए और ज़्यादा भड़काएँगे। ● **(97)** यह है उनकी सज़ा, इस सबब से कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया था, और (यूँ) कहा था कि जब हम हड्डियाँ और बिलकुल चूरा-चूरा हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके (क़ब्रों से) उठाए जाएँगे। **(98)** क्या उन लोगों को (इतना) मालूम नहीं कि जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किए वह इस बात पर (और भी ज़्यादा) क़ादिर है कि वह उन जैसे आदमी दोबारा पैदा कर दे, और उनके लिए एक मीयाद मुतैयन कर रखी है, इसमें ज़रा भी शक नहीं, इसपर भी बेइन्साफ़ लोग इनकार किए बग़ैर न रहे।[3] **(99)** आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत (यानी नुबुव्वत) के ख़ज़ानों (यानी कमालात) के मुख़्तार होते तो उस सूरत में तुम (उसके) ख़र्च करने के अन्देशे से ज़रूर हाथ रोक लेते, और आदमी है ही बड़ा तँगदिल।[4] **(100)** ❖

और हमने मूसा को खुले हुए नौ मोजिज़े दिए,[5] जबकि वह उन (बनी इसराईल) के पास आए थे। सो आप बनी इसराईल से पूछ लीजिए। तो फ़िरऔन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मेरे ख़्याल में तो ज़रूर तुमपर किसी ने जादू कर दिया है। **(101)** (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया तू (दिल में) ख़ूब जानता है कि ये (अ़जीब चीज़ें) ख़ास आसमानं और ज़मीन के रब ने ही भेजी हैं, जो कि बसीरत "यानी समझ व अ़क़्ल" के लिए (काफ़ी) ज़रिये हैं, और मेरे ख़्याल में ज़रूर तेरी कम-बख़्ती के दिन आ गए हैं। **(102)** फिर उसने चाहा

---

1. यह रिसालत के मुताल्लिक़ एक शुब्हे का जवाब है। वह शुब्हा यह कि रसूल आदमी न होना चाहिये, फ़रिश्ता होना चाहिए। जवाब का हासिल यह है कि रसूल और जिनके पास रसूल को भेजा जा रहा है उनमें मुनासबत ज़रूरी है। जिनके पास रसूल भेजा जा रहा है अगर वे फ़रिश्ते होते तो रसूल भी फ़रिश्ता होता। जब वे आदमी हैं तो रसूल भी आदमी होना चाहिए। अगर वस्वसा हो कि जब मुनासबत की ज़रूरत से हम-जिन्स होने की रियायत हुई तो फिर रसूल के पास जबकि वह इनसान होता है फ़रिश्ता कैसे आता है और क्योंकर फ़ैज़ होता है? जवाब यह है कि रसूल में चूँकि फ़रिश्ते की शान भी होती है इसलिए उसको फ़रिश्ते और इनसान दोनों से मुनासबत होती है, कि फ़रिश्ते से वह्य लेकर इनसानों को पहुँचा दे।

2. यानी जब तक ख़ुदा की तरफ़ से दस्तगीरी (यानी मदद) न हो, न हिदायत हो सकती है न अ़ज़ाब से बच सकते हैं। चुनाँचे ये लोग बावजूद हिदायत के असबाब के जमा होने के तौफ़ीक़ न होने की वजह से हिदायत तक न पहुँच सके।

3. ऊपर काफ़िरों का आपकी नुबुव्वत पर इनकार करना और आपसे बैर रखना ज़िक्र हुआ है, आगे फ़रमाते हैं कि अगर नुबुव्वत तुम्हारे इख़्तियार में होती तो तुम रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कभी न देते, मगर वह तो फ़ज़्ले ख़ुदा के हाथ में है, इसलिए तुम्हारा बैर, दुश्मनी और नागवारी रोक नहीं हो सकती।

4. यानी कभी भी किसी को न देते, इसके बावजूद कि वह चीज़ ऐसी होती कि देने से भी न घटती, मगर ख़ुद उसके देने ही को ख़र्च करने जैसा समझकर किसी को भी न देते। जैसे बाज़ लोग इल्म की बात बुख़्ल की इन्तिहा की वजह से नहीं बतलाया करते।

5. जिनका ज़िक्र पारा नम्बर नौ के रुकूअ़ नम्बर छह की पहली और चौथी आयत में है।

फ़-अग़रक़्नाहु व मम्-म-अ़हू जमीअ़ा (103) व क़ुल्ना मिम्-बअ़्दिही लि-बनी इस्राईलस्कुनुल्-अर्-ज़ फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दुल्-आख़िरति जिअ्ना बिकुम् लफ़ीफ़ा (104) व बिल्हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल्हक़्क़ि न-ज़-ल, मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा ❖ (105) व क़ुरआनन् फ़रक़्नाहु लितक़्र-अहू अ़लन्नासि अ़ला मुक्सिंव्-व नज़्ज़ल्नाहु तन्ज़ीला (106) क़ुल् आमिनू बिही औ ला तुअ्मिनू, इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म मिन् क़ब्लिही इज़ा युत्ला अ़लैहिम् यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि सुज्जदा (107) व यक़ूलू-न सुब्हा-न रब्बिना इन् का-न वअ़्दु रब्बिना ल-मफ़्अूला (108) व यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि यब्कू-न व यज़ीदुहुम् ख़ुशूआ ❑ (109) क़ुलिद्-अुल्ला-ह अविद्अुर्रह्मा-न, अय्यम् मा तद्अू फ़-लहुल्- अस्माउल्-हुस्ना व ला तज्हर् बि-सलाति-क व ला तुख़ाफ़ित् बिहा वब्तग़ि बै-न ज़ालि-क सबीला (110) व क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्-लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व लम् यकुल्लहू वलिय्युम्- मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिर्हु तक्बीरा (111) ❖

18 सूरतुल्-कह्फ़ि 69

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6620 अक्षर, 1201 शब्द 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़-ल अ़ला अ़ब्दिहिल्-किता-ब व लम् यज्अ़ल्-लहू

कि उन (बनी इसराईल) का उस सरज़मीन से क़दम उखाड़ दे,[1] सो हमने उसको और जो उसके साथ थे सबको डुबो दिया। **(103)** और उसके बाद हमने बनी इसराईल को कह दिया कि (अब) तुम इस सरज़मीन में रहो (सहो) फिर जब आख़िरत का वायदा आ जाएगा तो हम सबको जमा करके ला हाज़िर करेंगे। **(104)** और हमने इस (क़ुरआन) को रास्ती ही के साथ नाज़िल किया और वह रास्ती ही के साथ नाज़िल हो गया,[2] और हमने आपको सिर्फ़ ख़ुशी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है।[3] **(105)** और क़ुरआन में हमने जगह-जगह फ़ासला रखा, ताकि आप इसको लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ें, और हमने इसको उतारने में भी दर्जा-बदर्जा और सिलसिलेवार उतारा।[4] **(106)** आप कह दीजिए कि तुम इस (क़ुरआन) पर चाहे ईमान लाओ चाहे ईमान न लाओ, जिन लोगों को इस (क़ुरआन) से पहले (दीन का) इल्म दिया गया था[5] यह (क़ुरआन) जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं **(107)** और कहते हैं कि हमारा रब (वायदा-ख़िलाफ़ी से) पाक है, बेशक हमारे परवर्दिगार का वायदा ज़रूर पूरा ही होता है।[6] **(108)** और ठोड़ियों के बल गिरते हैं रोते हुए।[7] और यह (क़ुरआन मजीद) उनका ख़ुशू "यानी आ़जिज़ी" बढ़ा देता है। ❑ **(109)** आप फ़रमा दीजिए कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर पुकारो। जिस (नाम) से भी पुकारोगे, सो उसके बहुत अच्छे (अच्छे) नाम हैं।[8] और अपनी नमाज़ में न तो बहुत पुकारकर पढ़िए और न बिलकुल चुपके-चुपके ही पढ़िए, और दोनों के दरमियान एक तरीक़ा इख़्तियार कर लीजिए। **(110)** और कह दीजिए कि तमाम ख़ूबियाँ उसी अल्लाह (तआ़ला) के लिए (ख़ास) हैं, जो न औलाद रखता है और न बादशाहत में कोई उसका शरीक है, और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और उसकी बड़ाइयाँ ख़ूब बयान किया कीजिए।[9] **(111)** ❖

18 सूरः कह्फ़ 69

सूरः कह्फ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[10]तमाम ख़ूबियाँ उस अल्लाह के लिए (साबित) हैं जिसने अपने (ख़ास) बन्दे पर (यह) किताब नाज़िल फ़रमाई, और इसमें ज़रा भी टेढ़ नहीं रखी। **(1)** बिलकुल इस्तिक़ामत "यानी मज़बूती" के साथ मौसूफ़ बनाया ताकि वह एक सख़्त अ़ज़ाब से जो कि अल्लाह की तरफ़ से होगा, डराए। और उन ईमान वालों को जो नेक

---

1. यानी उनको शहर-निकाला दे दे।

2. यानी जिस तरह कातिब (लिखने वाले) के पास से चला था उसी तरह मक्तूब इलैहि (जिसके लिए लिखा था, उस) तक पहुँच गया, और दरमियान में कोई अदलाव-बदलाव और तसर्रुफ़ नहीं हुआ। पस वह पूरी तरह रास्ती ही रास्ती (यानी सच्चाई और दुरुस्ती) है।

3. इसलिए अगर कोई ईमान न लाए तो कुछ ग़म न कीजिए।

4. ताकि वे अच्छी तरह समझ सकें और ताकि मायने ख़ूब ज़ाहिर हो जाएँ।

5. यानी अहले किताब के इन्साफ़-पसन्द उलमा।

6. सो जिस किताब का जिस नबी पर नाज़िल करने का वायदा पहली किताबों में किया था उसको पूरा फ़रमा दिया।

7. यह सज्दे में गिरना या तो शुक्र के तौर पर है कि पहली किताबों में दर्ज वायदा पूरा हुआ, या ताज़ीम व बुज़ुर्गी के लिए है कि क़ुरआन सुनकर हैबत तारी होती है, या किनाया है इन्तिहाई यक़ीन और आ़जिज़ी व इन्किसारी से। और सज्दा चेहरे के बल होता है मगर ठोड़ी के बल कहना मुबालग़े के लिए है, कि अपने चेहरे को ज़मीन और मिट्टी से इस क़द्र लगा देते हैं कि ठोड़ी लगने के क़रीब हो जाती है।

8. इसमें शिर्क से कोई ताल्लुक़ नहीं क्योंकि मुसम्मा (यानी जिसके ये नाम हैं, वह) तो एक ही है, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 532 पर)**

अ़-वजा (1) क़य्यिमल् लियुन्ज़ि-र बअ्सन् शदीदम्-मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सालिहाति अन्-न लहुम् अज्रन् ह-सना (2) माकिसी-न फ़ीहि अ-बदा (3) व युन्ज़िरल्लज़ी-न क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व-लदा (4) मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिंव्-व ला लि-आबाइहिम्, कबुरत् कलि-मतन् तख़्रुजु मिन् अफ़्वाहिहिम्, इंय्यक़ूलू-न इल्ला कज़िबा (5) फ़-लअ़ल्ल-क बाख़िअुन्-नफ़्स-क अ़ला आसारिहिम् इल्लम् युअ्मिनू बिहाज़ल्-हदीसि अ-सफ़ा (6) इन्ना जअ़ल्ना मा अ़लल्- अर्ज़ि ज़ी-नतल्-लहा लिनब्लु-वहुम् अय्युहुम् अह्सनु अ़-मला (7) व इन्ना लजाअ़िलू-न मा अ़लैहा सअ़ीदन् जुरुज़ा (8) अम् हसिब्-त अन्-न अस्हाबल्-कह्फ़ि वर्रक़ीमि कानू मिन् आयातिना अ़-जबा (9) इज़् अवल्-फ़ित्यतु इलल्-कह्फ़ि फ़क़ालू रब्बना आतिना मिल्लदुन्-क रह्म-तंव्-व हय्यिअ् लना मिन् अम्रिना र-शदा (10) फ़-ज़रब्ना अ़ला आज़ानिहिम् फ़िल्-कह्फ़ि सिनी-न अ़-ददा (11) सुम्-म बअ़स्नाहुम् लि-नअ़्ल-म अय्युहल्-हिज़्बैनि अह्सा लिमा लबिसू अ-मदा (12) ❖

नह्नु नक़ुस्सु अ़लै-क न-ब-अहुम् बिल्हक़्क़ि, इन्नहुम् फ़ित्यतुन् आमनू बिरब्बिहिम् व ज़िद्नाहुम् हुदा (13) व रबत्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् इज़् क़ामू फ़क़ालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि लन्-नद्अु-व मिन् दूनिही इलाहल्-ल-क़द् क़ुल्ना इज़न् श-तता (14) हाउला-इ क़ौमुनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतन्, लौ ला यअ्तू-न अ़लैहिम् बिसुल्तानिम्-बय्यिनिन्, फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबा (15) व

اَبَدًا ۙ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۝٤ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ
عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۭ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ
يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝٥ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ
يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝٦ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً
لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝٧ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا
صَعِيْدًا جُرُزًا ۝٨ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ
كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝٩ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ
اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝١٠ فَضَرَبْنَا عَلٰٓى
اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۝١١ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ
الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ۝١٢ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ
بِالْحَقِّ ۭ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ۝١٣ وَّرَبَطْنَا
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ۝١٤ هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمُنَا
اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ۭ
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝١٥ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ
وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ

काम करते हैं (यह) ख़ुशख़बरी दे कि उनको अच्छा अज्र मिलेगा। **(2)** जिसमें वे हमेशा रहेंगे। **(3)** और ताकि उन लोगों को डराए जो (यूँ) कहते हैं (हम अल्लाह तआ़ला की पनाह चाहते हैं) कि अल्लाह तआ़ला औलाद रखता है। **(4)** न तो इसकी कोई दलील उनके पास है और न उनके बाप-दादों के पास थी। बड़ी भारी बात है जो उनके मुँह से निकलती है। (और) वे लोग बिलकुल ही झूठ बकते हैं। **(5)** सो शायद आप उनके पीछे ग़म से अपनी जान दे देंगे, अगर ये लोग इस (क़ुरआनी) मज़मून पर ईमान न लाए। (यानी इतना ग़म न करें कि हलाकत के क़रीब कर दे)। **(6)** हमने ज़मीन पर की चीज़ों को उस (ज़मीन) के लिए रौनक़ का सबब बनाया, ताकि हम लोगों की आज़माइश करें कि उनमें ज़्यादा अच्छा अ़मल कौन करता है।[1] **(7)** और हम इस (ज़मीन) पर की तमाम चीज़ों को एक साफ़ मैदान (यानी फ़ना) कर देंगे।[2] **(8)** क्या आप (यह) ख़्याल करते हैं कि ग़ार वाले और पहाड़ वाले हमारी (क़ुदरत की) अ़जीब चीज़ों में से कुछ ताज्जुब की चीज़ थे?[3] **(9)** (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकि उन नौजवानों ने (उस) ग़ार में जाकर पनाह ली, फिर कहा कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको अपने पास से रहमत (का सामान) अ़ता फ़रमाइए, और हमारे लिए हमारे (इस) काम में दुरुस्ती का सामान मुहैया कर दीजिए। **(10)** सो हमने (उस) ग़ार में उनके कानों पर सालों तक (नींद का) पर्दा डाल दिया।[4] **(11)** फिर हमने उनको उठाया ताकि हम मालूम कर लें कि उन दोनों गिरोह में से कौनसा (गिरोह) उनके रहने की मुद्दत का ज़्यादा जानकार था। **(12)** ❖

हम उनका वाक़िआ़ आपसे ठीक-ठीक बयान करते हैं,[5] वे लोग कुछ नौजवान थे, जो अपने रब पर ईमान लाए थे और हमने उनकी हिदायत में और तरक़्क़ी कर दी थी। **(13)** और हमने उनके दिल मज़बूत कर दिए, जबकि वे (दीन में) पक्के होकर कहने लगे कि हमारा रब (तो वह है जो) आसमानों और ज़मीन का रब है। हम तो उसको छोड़कर किसी माबूद की इबादत न करेंगे, (क्योंकि) उस सूरत में हमने यक़ीनन बड़ी ही बेजा बात कही। **(14)** यह जो हमारी क़ौम है, उन्होंने ख़ुदा को छोड़कर और माबूद क़रार दे रखे हैं, ये लोग उन (माबूदों) पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते। तो उस शख़्स से ज़्यादा कौन ग़ज़ब ढाने वाला होगा? जो अल्लाह तआ़ला पर झूठी तोहमत लगा दे। **(15)** और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से भी, मगर अल्लाह तआ़ला से (अलग नहीं हुए) तो तुम (फ़लाँ) ग़ार में चलकर पनाह लो, तुमपर तुम्हारा रब अपनी रहमत फैला देगा, और तुम्हारे लिए तुम्हारे इस काम में कामयाबी का सामान दुरुस्त कर

(पृष्ठ 530 का शेष) नाम अनेक हैं। शिर्क जब वाजिब होता जब मुसम्मा दूसरा होता।

9. सूरः को तस्बीह (यानी अल्लाह की पाकी के बयान) से शुरू किया, तम्हीद व तकबीर (यानी अल्लाह की तारीफ़ और बड़ाई के बयान) पर ख़त्म किया। पस 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अकबर' के मायनों पर शुरूआत और ख़ात्मा हुआ।

10. इस सूरः में ये मज़ामीन हैं, तौहीद व रिसालत की बहसें, दुनिया का फ़ानी व ज़लील होना, आख़िरत की जज़ा व सज़ा, तकब्बुर व झगड़े की बुराई, शिर्क का बातिल होना, रिसालत व तौहीद और मरने के बाद ज़िन्दा होने पर दलालत करने के लिए कुछ क़िस्से, और इन सबके अन्दर ताल्लुक़ व मुनासबत ज़ाहिर है कि इन सब मज़ामीन को ईमान के हासिल होने में दख़ल है।

1. यानी कौन तो इसके ज़ीनत के असबाब में मश्गूल होकर हक़ तआ़ला से ग़ाफ़िल हो जाता है, और कौन इसपर फ़रेफ़्ता न होकर हक़ तआ़ला की तरफ़ मश्गूल होता है। ग़रज़ यह आज़माइश का घर ठहरा, पस ज़रूरी हुआ कि कोई कुफ़्र में मुब्तला हो और कोई ईमान से शर्फ़ (इज़्ज़त व सम्मान) पाए, फिर ग़म बेकार है, आप अपना काम किए जाइए और उनके कुफ़्र के नतीजे की फ़िक्र में न पड़िए कि उसका मुरत्तब करना हमारा काम है।

2. क़ुरैश के काफ़िरों ने यहूद के सिखलाने से नुबुव्वत के इम्तिहान के लिए आपसे तीन सवाल किए थे, एक रूह के मुताल्लिक़ जिसका जवाब पिछली सूरः में गुज़र चुका है। एक 'अस्हाबे कहफ़' का क़िस्सा जिसका अभी ज़िक्र होता है। एक ज़ुल्क़रनैन का क़िस्सा जो इस सूरः के आख़िर में आएगा। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 534 पर)**

इज़िअ्-तज़ल्तुमूहुम् व मा यअ्बुदू-न इल्लल्ला-ह फ़अ्वू इलल्-कह्फि यन्शुर् लकुम् रब्बुकुम् मिर्रह्मतिही व युहय्यिअ् लकुम् मिन् अम्रिकुम् मिर्फ़का (16) व-तरश्शम्-स इज़ा त-लअ्त्तज़ा-वरु अ़न् कह्फ़िहिम् ज़ातल्-यमीनि व इज़ा ग़-रबत् तक़्रिज़ुहुम् ज़ातश्शिमालि व हुम् फ़ी फ़ज्वतिम् मिन्हु, ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि, मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुल्मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहू वलिय्यम्-मुर्शिदा (17) ❖

व तह्सबुहुम् ऐक़ाज़ंव्-व हुम् रुक़ूदुंव्-व नुक़ल्लिबुहुम् ज़ातल्-यमीनि व ज़ातश्शिमालि व कल्बुहुम् बासितुन् ज़िराअैहि बिल्-वसीदि, लवित्त-लअ्-त अ़लैहिम् लवल्लै-त मिन्हुम् फ़िरारंव्-व लमुलिअ्-त मिन्हुम् रुअ्बा (18) व कज़ालि-क बअ़स्नाहुम् लि-य-तसाअलू बैनहुम्, क़ा-ल क़ाइलुम्- मिन्हुम् कम् लबिस्तुम्, क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन्, क़ालू रब्बुकुम् अअ्लमु बिमा लबिस्तुम् फ़ब्अ़सू अ-ह-दकुम् बिवरिक़िकुम् हाज़िही इलल्-मदीनति फ़ल्यन्ज़ुर् अय्युहा अज़्का तआमन् फ़ल्यअ्तिकुम् बिरिज़्क़िम्- मिन्हु वल्य-त-✪-लत्तफ़् व ला युश्अिरन्-न बिकुम् अ-हदा (19) इन्नहुम् इंय्यज़्हरू अ़लैकुम् यर्जुमूकुम् औ युअ़ीदूकुम् फ़ी मिल्लतिहिम् व लन् तुफ़्लिहू इज़न् अ-बदा (20) व कज़ालि-क अअ्सर्ना अ़लैहिम् लि-यअ्लमू अन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व अन्नस्साअ्-त ला रै-ब फ़ीहा, इज़् य-तना-ज़अू-न बैनहुम् अम्रहुम् फ़क़ालुब्नू अ़लैहिम् बुन्यानन्, रब्बुहुम् अअ्लमु बिहिम्, क़ालल्लज़ी-न ग़-लबू अ़ला अम्रिहिम्

رَحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا
طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مَنْ
يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا
مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ
الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ
لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾
وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ
لَبِثْتُمْ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا
لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوْا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ
اَيُّهَا اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ
بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ
فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ
لِيَعْلَمُوْا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا اِذْ
يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ
اَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ

❖ रु. 2/5/14 ✪ हुरूफ़ की तायदाद के हिसाब से यहाँ आधा क़ुरआन हो गया।

देगा। **(16)** और (ऐ मुख़ातब!) जब धूप निकलती है तो तू उसको देखेगा कि वह उनके ग़ार के दाहिनी तरफ़ को बची रहती है,[1] और जब छुपती है तो (ग़ार के) बाईं तरफ़ हटी रहती है।[2] और वे लोग उस ग़ार की एक कुशादा जगह में थे। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसको अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाता है, और जिसको वह बेराह कर दे तो आप उसके लिए कोई मददगार, राह बताने वाला न पाएँगे। **(17)** ❖

और (ऐ मुख़ातब!) तू उनको जागता हुआ ख़्याल करता, हालाँकि वे सोते थे, और हम उनको (कभी) दाहिनी तरफ़ और (कभी) बाईं तरफ़ करवट दे देते थे, और उनका कुत्ता दहलीज़ पर अपनें दोनों हाथ फैलाए हुए था। अगर (ऐ मुख़ातब!) तू उनको झाँककर देखता तो उनसे पीठ फेरकर भाग खड़ा होता, और तेरे अन्दर उनकी दहशत समा जाती।[3] **(18)** और इसी तरह हमने उनको जगा दिया, ताकि वे आपस में पूछताछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि तुम (नींद की हालत में) कितनी देर रहे होगे? (उनमें से बाज़ों ने) कहा कि (ग़ालिबन) एक दिन या एक दिन से भी कुछ कम रहे होंगे। (दूसरे कुछ ने) कहा कि यह तो तुम्हारे खुदा ही को ख़बर है कि तुम कितनी देर रहे, अब अपने में से किसी को यह रुपया देकर शहर की तरफ़ भेजो, फिर वह खोज करे कि कौन-सा खाना (हलाल) है,[4] सो उसमें से तुम्हारे पास कुछ खाना ले आए। और (सब काम) बड़ी होशियारी (से) करे, और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। **(19)** (क्योंकि) अगर वे लोग तुम्हारी ख़बर पा जाएँगे तो तुमको या तो पत्थरों से मार डालेंगे या तुमको अपने तरीक़े में फिर कर लेंगे, ''यानी वापस उसी में लौट लेंगे'' और (ऐसा हुआ तो) तुमको कभी कामयाबी न होगी। **(20)** और इसी तरह हमने (लोगों को) उनपर मुत्तला कर दिया, ताकि वे लोग इस बात का यक़ीन कर लें कि अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं। (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकि (उस ज़माने के लोग) उनके मामले में आपस में झगड़ रहे थे,[5] सो उन लोगों ने कहा कि उनके पास कोई इमारत बनवा दो, उनका रब उनको ख़ूब जानता था। जो लोग अपने काम पर ग़ालिब थे उन्होंने कहा[6] कि हम तो उनके पास एक मस्जिद बना देंगे।[7] **(21)** (कुछ लोग तो) कहेंगे कि वे तीन हैं चौथा उनका कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे कि वे

(पृष्ठ 532 का शेष) 3. ग़ार वाले और पहाड़ वाले दोनों एक ही जमाअ़त के लक़ब हैं।

4. यानी ऐसे बेखुद होकर सोए कि कोई आवाज़ उनके कान में न पहुँचती थी, और इसमें ज़्यादा मुबालग़ा है इसके मुक़ाबले में कि कहा जाए कि आँख पर पर्दा डाल दिया, क्योंकि आँख तो बिना गहरी नींद के भी चीज़ों के देखने से सुस्त और बेकार हो जाती है।

5. चूँकि लोगों ने इसको मुख़्तलिफ़ तौर पर मश्हूर किया था इसलिए फ़रमाया कि ठीक वह है जो क़ुरआन में है।

1. यानी ग़ार के दरवाज़े से अलग रहती है।

2. यानी उस वक़्त भी दरवाज़े पर नहीं पड़ती ताकि धूप से तकलीफ़ न हो। ग़ार की दाहिनी और बाईं जानिब या तो उसमें दाख़िल होने वाले के एतिबार से है, या उससे निकलने वाले के एतिबार से। पस पहली सूरत में वह ग़ार उत्तर मुँहाना होगा और दूसरी सूरत में दक्षिण मुँहाना। और पूरब मुँहाना होने में सूरज निकलने के वक़्त उनपर धूप पड़ती और पश्चिम मुँहाना होने में सूरज छुपने के वक़्त, और मक़सूद इससे उस जगह का महफ़ूज़ होना है।

3. ग़ालिबन ये सब चीज़ें उनकी हिफ़ाज़त के असबाब हैं। इस आयत में आ़म लोगों को ख़िताब है, पस इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मरऊब होना लाज़िम नहीं आता।

4. क्योंकि उनके ग़ार में छुपने के ज़माने में बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया हुआ गोश्त कसरत से बिकता था।

5. वह मामला उनकी लाशों की हिफ़ाज़त की ग़रज़ से या निशान के लिए यादगार क़ायम करने की ग़रज़ से उस ग़ार का मुँह बन्द करना था।

6. यानी अहले हुकूमत जो उस वक़्त दीने हक़ पर क़ायम थे।

7. ताकि मस्जिद इस बात की भी निशानी रहे कि ये लोग आ़बिद थे, उनको कोई माबूद न बना ले, जैसा कि दूसरी इमारतों में पूजा का अन्देशा है।

ल-नत्तख़िज़न्-न अ़लैहिम् मस्जिदा **(21)** स-यक़ूलू-न सला-सतुर्-राबिअ़ुहुम् कल्बुहुम् व यक़ूलू-न ख़म्सतुन् सादिसुहुम् कल्बुहुम् रज्मम्-बिल्ग़ैबि व यक़ूलू-न सब्अ़तुंव्-व सामिनुहुम् कल्बुहुम्, क़ुर्रब्बी अअ़्लमु बिअ़िद्दतिहिम् मा यअ़्लमुहुम् इल्ला क़लीलुन्, फ़ला तुमारि फ़ीहिम् इल्ला मिराअन् ज़ाहिरंव्-व ला तस्तफ़्ति फ़ीहिम् मिन्हुम् अ-हदा **(22)** ❖

व ला तक़ूलन्न-न लिशैइन् इन्नी फ़ाअ़िलुन् ज़ालि-क ग़दा **(23)** इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, वज़्कुर्-रब्ब-क इज़ा नसी-त व क़ुल् अ़सा अंय्यह्दि-यनि रब्बी लिअक़्र-ब मिन् हाज़ा र-शदा **(24)** व लबिसू फ़ी कह्फ़िहिम् सला-स मि-अतिन् सिनी-न वज़्दादू तिस्अ़ा **(25)** क़ुलिल्लाहु अअ़्लमु बिमा लबिसू लहू ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि अब्सिर् बिही व अस्मिअ़्, मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्-व ला युश्रिकु फ़ी हुक्मिही अ-हदा **(26)** वत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिन् किताबि रब्बि-क ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिही, व लन् तजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा **(27)** वस्बिर् नफ़्स-क मअ़ल्लज़ी-न यद्अ़ू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अ़शिय्यि युरीदू-न वज्हहू व ला तअ़्दु अ़ैना-क अ़न्हुम् तुरीदु ज़ी-नतल्-हयातिद्दुन्या व ला तुतिअ़् मन् अग़्फ़ल्ना क़ल्बहू अ़न् ज़िक्रिना वत्त-ब-अ़ हवाहु व का-न अम्रुहू फ़ुरुता ▲ **(28)** व क़ुलिल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम्, फ़-मन् शा-अ फ़ल्युअ्मिंव्-व मन् शा-अ फ़ल्यक्फ़ुर् इन्ना अअ़्तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न नारन् अहा-त बिहिम् सुरादिक़ुहा, व इंय्यस्तग़ीसू युग़ासू बिमाइन् कल्मुह्लि यश्विल्-वुजू-ह, बिअ्सश्शराबु, व साअत् मुर्त-फ़क़ा **(29)** इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअ़ु अज्-र मन्

سبحن الذي ١٥ ٢٦٨ الكهف ١٨

مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ
كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُل رَّبِّي
أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۗ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً
ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾ وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي
فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَاذْكُر رَّبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ
عَسَىٰ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ
ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۖ لَهُ
غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُم مِّن دُونِهِ
مِن وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن
كِتَابِ رَبِّكَ ۖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَن تَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾
وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ
يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ
وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَن ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ
فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن شَاءَ
فَلْيَكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن
يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ وَ

منزل ٤

पाँच हैं छठा उनका कुत्ता है, (और) ये लोग बिना छाने-फटके बात को हाँक रहे हैं, और (कुछ) कहेंगे कि वे सात हैं आठवाँ उनका कुत्ता है, आप कह दीजिए कि मेरा रब उनकी गिनती ख़ूब (सही-सही) जानता है, उन (की गिनती) को बहुत कम लोग जानते हैं[1] सो आप उनके बारे में सरसरी बहस के अ़लावा ज़्यादा बहस न कीजिए,[2] और आप उनके बारे में उन लोगों में से किसी से भी न पूछिए। **(22)** ❖

और आप किसी काम के बारे में यूँ न कहा कीजिए कि मैं इसको कल कर दूँगा। **(23)** मगर ख़ुदा तआ़ला के चाहने को मिला दिया कीजिए, और जब आप भूल जाएँ तो अपने रब का ज़िक्र कीजिए और कह दीजिए कि मुझको उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (नुबुव्वत की) दलील बनने के एतिबार से इससे भी नज़दीकी बात बतला दे।[3] **(24)** और वे लोग अपने ग़ार में (नींद की हालत में) तीन सौ वर्ष तक रहे, और नौ वर्ष ऊपर और रहे। **(25)** आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला उनके रहने (की मुद्दत) को ज़्यादा जानता है, तमाम आसमानों और ज़मीन का ग़ैब (का इल्म) उसी को है, वह कैसा कुछ देखने वाला और कैसा-कुछ सुनने वाला है। उनका अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने हुक्म में शरीक करता है। **(26)** और आपके पास जो आपके रब की किताब वह्य के ज़रिये से आई है, (लोगों के सामने) पढ़ दिया कीजिए, उसकी बातों को (यानी वायदों को) कोई बदल नहीं सकता, और आप अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई पनाह की जगह न पाएँगे। **(27)** और आप अपने को उन लोगों के साथ रोके रखा कीजिए जो सुबह व शाम (यानी हमेशा) अपने रब की इबादत सिर्फ़ उसकी ख़ुशी हासिल करने के लिए करते हैं,[4] और दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक़ के ख़्याल से आपकी आँखें (यानी तवज्जोह) उनसे हटने न पाएँ।[5] और ऐसे शख़्स का कहना न मानिए जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है, और वह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पर चलता है, और उसका (यह) हाल हद से गुज़र गया है। ▲ **(28)** और आप कह दीजिए कि (यह दीने) हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से (आया) है, सो जिसका जी चाहे ईमान ले आए और जिसका जी चाहे काफ़िर रहे,[6] बेशक हमने ऐसे ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, कि उस (आग) की क़नातें उनको घेरे होंगी।[7] और अगर (प्यास से) फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद-रसी की

---

1. चूँकि उसके निशानदेही से कोई ख़ास फ़ायदा हासिल न होता था लिहाज़ा इस इख़्तिलाफ़ का कोई वाज़ेह फ़ैसला आयत में नहीं फ़रमाया, लेकिन रिवायतों में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल आया है कि मैं उन्हीं क़लील (थोड़े लोगों) में से हूँ और वे सात थे, और आयत में भी इशारे के तौर पर इसका सही होना मालूम होता है, क्योंकि इस आख़िरी क़ौल को नक़ल करके इसको रद्द नहीं फ़रमाया।
2. सरसरी बहस से यह मुराद है कि आप वह्य के मुताबिक़ उनके सामने क़िस्सा बयान कर दीजिए और ज़्यादा सवाल व जवाब न कीजिए।
3. आपसे रूह, अस्हाबे कहफ़ और ज़ुल्करनैन का क़िस्सा पूछा गया तो आपने वह्य के भरोसे पर ज़बान से इन्शा-अल्लाह कहे बग़ैर वायदा फ़रमाया कि कल जवाब दूँगा। चुनाँचे पन्द्रह दिन तक वह्य नाज़िल न हुई और आपको बड़ा ग़म हुआ, उसके बाद जवाब के साथ यह हुक्म भी नाज़िल हुआ कि ये लोग आपसे कोई बात जवाब के क़ाबिल दरियाफ़्त करें और आप जवाब का वायदा करें तो उसके साथ इन्शा-अल्लाह तआ़ला या इसके मायने जैसी कोई बात ज़रूर मिला लिया करें।
4. 'वस्बिर नफ़्स-क....' का यह मतलब नहीं है कि जब तक ये लोग न उठेंगे आप बैठे रहा कीजिए, बल्कि मतलब यह है कि पहले ही की तरह उनको अपनी लम्बी बैठक से सम्मान दीजिए।
5. रौनक़ के ख़्याल से यह मुराद है कि सरदार मुसलमान हो जाएँ तो इस्लाम में ज़्यादा जमाल व कमाल होगा। पस इसमें बतला दिया कि इस ज़ाहिरी सामान से इस्लाम का जमाल व कमाल नहीं है बल्कि इसका मदार इख़्लास और कामिल इताअ़त पर है, चाहे ग़रीबों ही से हो।
6. हमारा कोई नफ़ा व नुक़सान नहीं बल्कि ईमान न लाने से अपना ही नुक़सान और ईमान लाने से अपना ही नफ़ा है।
7. यानी वे क़नातें भी आग ही हैं जैसा कि हदीस में है, और उसमें से निकल न सकेंगे।

अह्स-न अ़-मला **(30)** उलाइ-क लहुम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव्-व यल्बसू-न सियाबन् ख़ुज़्रम्-मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम्-मुत्तकिई-न फ़ीहा अ़लल् अराइकि, निअ़्मस्सवाबु, व हसुनत् मुर्त-फ़का **(31)** ❖

वज़्रिब् लहुम् म-सलर्-रजुलैनि जअ़ल्ना लि-अ-हदिहिमा जन्नतैनि मिन् अअ़्नाबिंव्-व हफ़फ़्नाहुमा बिनख़्लिंव्-व जअ़ल्ना बैनहुमा ज़र्अ़ा **(32)** किल्तल्-जन्नतैनि आतत् उकु-लहा व लम् तज़्लिम् मिन्हु शैअंव्-व फ़ज्जर्ना ख़िला-लहुमा न-हरा **(33)** व का-न लहू स-मरुन् फ़क़ा-ल लिसाहिबिही व हु-व युहाविरुहू अ-न अक्सरु मिन्-क मालंव्-व अ-अ़ज़्ज़ु न-फ़रा **(34)** व द-ख़-ल जन्नतहू व हु-व ज़ालिमुल् लिनफ़्सिही क़ा-ल मा अज़ुन्नु अन् तबी-द हाज़िही अ-बदा **(35)** व मा अज़ुन्नुस्सा-अ़-त क़ाइ-मतंव्-व ल-इर्रुदित्तु इला रब्बी ल-अजिदन्-न ख़ैरम्-मिन्हा मुन्क़-लबा **(36)** क़ा-ल लहू साहिबुहू व हु-व युहाविरुहू अ-कफ़र्-त बिल्लज़ी ख़-ल-क़-क मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म सव्वा-क रजुला **(37)** लाकिन्-न हुवल्लाहु रब्बी व ला उशिरकु बिरब्बी अ-हदा **(38)** व लौ ला इज़् दख़ल्-त जन्न-त-क क़ुल्-त मा शा-अल्लाहु ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि इन् तरनि अ-न अक़ल्-ल मिन्-क मालंव्-व व-लदा **(39)** फ़-अ़सा रब्बी अंय्युअ़ति-यनि ख़ैरम्-मिन् जन्नति-क व युरसि-ल अ़लैहा हुस्बानम्-मिनस्समा-इ फ़तुस्बि-ह सअ़ीदन् ज़-लक़ा **(40)** औ युस्बि-ह माउहा ग़ौरन् फ़-लन्

سَآءَتْ مُرْتَفَقًا ۝۲۹ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ
مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ۝۳۰ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ
الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا
خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ نِعْمَ
الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝۳۱ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا
بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝۳۲ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا وَّ
فَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝۳۳ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ
اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝۳۴ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ
قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۝۳۵ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً وَّ
لَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝۳۶ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ
وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝۳۷ لٰكِنَّا هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝۳۸ وَلَوْلَآ
اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اِنْ تَرَنِ اَنَا
اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝۳۹ فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ
وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝۴۰ اَوْ

ع ۱۶

जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा, मुँहों को भून डालेगा, क्या ही बुरा पानी होगा और (दोज़ख़ भी) क्या ही बुरी जगह होगी। **(29)** बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसों का बदला बर्बाद न करेंगे जो अच्छी तरह काम को करे। **(30)** (पस) ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, उनके (ठिकानों के) नीचे नहरें बहती होंगी, उनको वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और हरे रंग के कपड़े[1] बारीक और मोटे रेशम के पहनेंगे, वहाँ मसहरियों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी जगह है। **(31)** ❖

और आप उन लोगों से दो शख़्सों का हाल बयान कीजिए। उन दो शख़्सों में से एक को हमने दो बाग़ अँगूर के दे रखे थे, और उन दोनों (बाग़ों) का खजूर के पेड़ों से घेरा बना रखा था, और उन दोनों के दरमियान में खेती भी लगा रखी थी। **(32)** (और) दोनों बाग़ अपना पूरा फल देते थे, और किसी के फल में ज़रा भी कमी न रहती थी, और उन दोनों के दरमियान में नहर चला रखी थी। **(33)** और उस शख़्स के पास (और भी) मालदारी का सामान था, सो वह (एक बार) अपने उस (दूसरे) मुलाक़ाती से इधर-उधर की बातें करते-करते कहने लगा कि मैं तुझसे माल में भी ज़्यादा हूँ और मजमा भी मेरा ज़बरदस्त है। **(34)** और वह अपने ऊपर (कुफ़्र का) जुर्म क़ायम करता हुआ अपने बाग़ में पहुँचा, (और) कहने लगा कि मेरा तो ख़्याल नहीं है कि यह (बाग़ मेरी ज़िन्दगी में) कभी भी बर्बाद हो।[2] **(35)** और मैं क़ियामत को नहीं ख़्याल करता कि आएगी, और अगर मैं अपने रब के पास पहुँचाया गया तो ज़रूर इस (बाग़) से बहुत ज़्यादा अच्छी जगह मुझको मिलेगी। **(36)** उससे उसके मुलाक़ाती ने (जो कि दीनदार और ग़रीब था) जवाब के तौर पर कहा, क्या तू उस (पाक) ज़ात के साथ कुफ़्र करता है जिसने (पहले) तुझको मिट्टी से पैदा किया,[3] फिर नुत्फ़े से,[4] फिर तुझको (सही व सालिम) आदमी बनाया। **(37)** लेकिन (मैं तो यह अ़क़ीदा रखता हूँ कि) वह (यानी) अल्लाह तआ़ला मेरा (हक़ीक़ी) रब है, और मैं उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। **(38)** और तू जिस वक़्त अपने बाग़ में पहुँचा था तो तूने यूँ क्यों न कहा कि जो अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर (होता) है (वही होता है, और) अल्लाह तआ़ला की मदद के बग़ैर (किसी में) कोई ताक़त नहीं, अगर तू मुझको माल और औलाद में कमतर देखता है **(39)** तो (मुझको वह वक़्त) नज़दीक (मालूम होता) है कि मेरा रब मुझको तेरे बाग़ से अच्छा (बाग़) दे दे, और इस (तेरे बाग़) पर कोई (तक़्दीरी) आफ़त आसमान से भेज दे, जिससे वह (बाग़) यकायक एक साफ़ मैदान (होकर) रह जाए। **(40)** या (उससे) इसका पानी बिलकुल अन्दर (ज़मीन में) उतर

---

1. यह जो फ़रमाया कि हरा लिबास होगा, इससे इसी का ख़ास करना मक़सूद नहीं क्योंकि आयतों में वाज़ेह है कि जिस चीज़ को जी चाहेगा वह मिलेगी।

2. यह उसने तौहीद के मसले में कलाम किया कि तू जो दुनिया को बनाने वाले का और उसकी क़ुदरत वग़ैरह का क़ायल है, सो मैं नहीं समझता कि तबई असबाब को कोई नाकारा कर सकता है, और इस बाग़ वग़ैरह का कारख़ाना, जिसके आबाद रहने के सारे असबाब जमा हैं, किस तरह इसके वीरान हो जाने का गुमान व ख़्याल किया जा सकता है।

3. जो कि तेरा दूर का माद्दा है आदम अ़लैहिस्सलाम के वास्ते से।

4. जो कि तेरा क़रीबी माद्दा है माँ के रहम (यानी पेट या बच्चेदानी) में।

तस्तती-अ़ लहू त-लबा (41) व उही-त बि-स-मरिही फ़-अस्ब-ह युक़ल्लिबु कफ़्फ़ैहि अ़ला मा अन्फ़-क़ फ़ीहा व हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला अ़ुरूशिहा व यक़ूलु यालैतनी लम् उश्रिक् बिरब्बी अ-हदा (42) व लम् तकुल्लहू फ़ि-अतुंय्यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का-न मुन्तसिरा (43) हुनालिकल्-वला-यतु लिल्लाहिल्-हक़्क़ि, हु-व ख़ैरुन् सवाबंव्-व ख़ैरुन् अ़ुक़्बा (44) ❖

يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهٖ فَأَصْبَحَ
يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوشِهَا وَيَقُولُ
يٰلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّيٓ أَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُونَهٗ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ
ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ
أَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا
تَذْرُوهُ الرِّيٰحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُونَ
زِينَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا
وَّخَيْرٌ أَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَّ
حَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾ وَعُرِضُوا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا
لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَّجْعَلَ
لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا
فِيهِ وَيَقُولُونَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَّلَا
كَبِيرَةً إِلَّآ أَحْصٰهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
أَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِأٰدَمَ فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ
كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهٖ أَفَتَتَّخِذُونَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ أَوْلِيَآءَ

वज़्रिब् लहुम् म-सलल्-हयातिद्दुन्या कमाइन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा-इ फ़ख़्त-ल-त बिही नबातुल्अर्ज़ि फ़अस्ब-ह हशीमन् तज़्रूहुर्रियाहु, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्-मुक़्तदिरा (45) अल्मालु वल्बनू-न ज़ीनतुल्-हयातिद्दुन्या वल्बाक़ियातुस्सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुन् अ-मला (46) व यौ-म नुसय्यिरुल्-जिबा-ल व तरल्-अर्-ज़ बारि-ज़तंव्-व हशर्नाहुम् फ़-लम् नुग़ादिर् मिन्हुम् अ-हदा (47) व अ़ुरिज़ू अ़ला रब्बि-क सफ़्फ़न्, ल-क़द् जिअ्तुमूना कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिम् बल् ज़अ़म्तुम् अल्-लन् नज्-अ़-ल लकुम् मौअ़िदा (48) व वुज़िअ़ल्-किताबु फ़-तरल्-मुज्रिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू-न यावैल-तना मा लि-हाज़ल्-किताबि ला युग़ादिरु सग़ी-रतंव्-व ला कबी-रतन् इल्ला अह्साहा व व-जदू मा अ़मिलू हाज़िरन्, व ला यज़्लिमु रब्बु-क अ-हदा (49) ❖

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, का-न मिनल्-जिन्नि फ़-फ़-स-क़ अ़न् अम्रि रब्बिही, अ-फ़-तत्तख़िज़ूनहू व ज़ुर्रिय्य-तहू औलिया-अ मिन् दूनी व हुम् लकुम् अ़दुव्वुन्, बिअ्-स लिज़्ज़ालिमी-न ब-दला (50) मा अश्हत्तुहुम् ख़ल्क़स्-
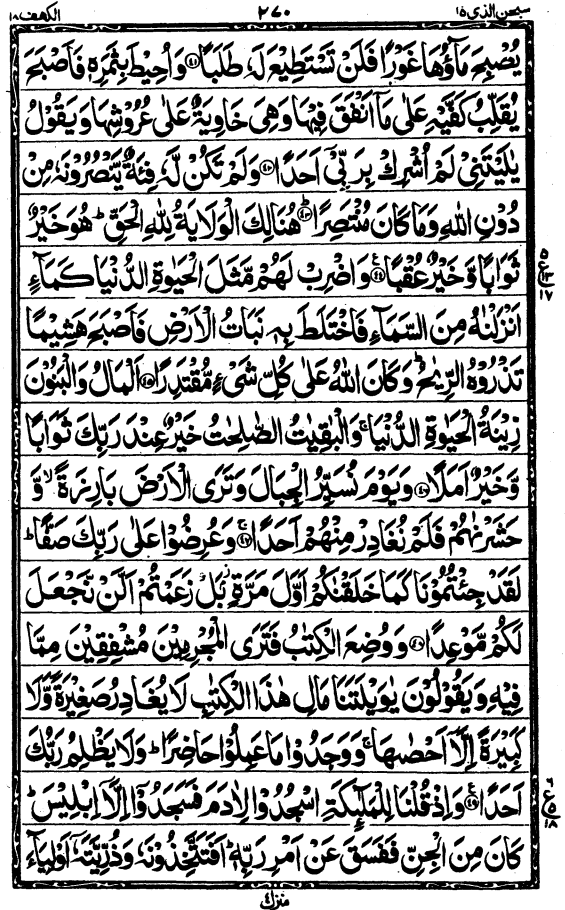
(कर सूख) जाए, फिर तू उस (के लाने और निकालने) की कोशिश भी न कर सके।[1] **(41)** और उस शख़्स के माल व दौलत के सामान को (आफ़त ने) आ घेरा[2] फिर उसने जो कुछ उस (बाग़) पर ख़र्च किया था, उसपर हाथ मलता रह गया, और वह (बाग़) अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ (पड़ा) था। और कहने लगा, क्या ख़ूब होता कि मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता।[3] **(42)** और उसके पास कोई (ऐसा) मजमा न हुआ कि अल्लाह तआ़ला के सिवा उसकी मदद करता, और न वह ख़ुद (हमसे) बदला ले सका। **(43)** ऐसे मौक़े पर मदद करना अल्लाह बरहक़ ही का काम है, उसी का सवाब सबसे अच्छा है और उसी का नतीजा सबसे अच्छा है।[4] **(44)** ❖

और आप उन लोगों से दुनिया की ज़िन्दगी की हालत बयान फ़रमाइए (कि वह ऐसी है) जैसे आसमान से हमने पानी बरसाया हो, फिर उसके ज़रिये से ज़मीन की नबातात "यानी घास और पेड़-पौधे" ख़ूब घनी हो गई हो, फिर वह चूरा-चूरा हो जाए कि उसको हवा उड़ाए लिए फिरती हो,[5] और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। **(45)** माल और औलाद दुनिया की ज़िन्दगी की एक रौनक़ हैं और (जो) नेक अ़माल बाक़ी रहने वाले हैं वे आपके रब के नज़दीक सवाब के एतिबार से भी (हज़ार दर्जा) बेहतर हैं, और उम्मीद के एतिबार से भी (हज़ार दर्जा) बेहतर हैं।[6] **(46)** और (उस दिन को याद करना चाहिए) जिस दिन हम पहाड़ों को हटा देंगे, और आप ज़मीन को देखेंगे (कि खुला मैदान पड़ा है) और हम उन सबको जमा कर देंगे, और उनमें से किसी को भी न छोड़ेंगे। **(47)** और (सबके-सब) आपके रब के सामने बराबर-बराबर खड़े करके पेश किए जाएँगे। (देखो, आख़िर) तुम हमारे पास आए (भी) जैसा कि हमने तुमको पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुम (यही) समझते रहे कि हम तुम्हारे लिए कोई वायदा किया गया वक़्त न लाएँगे। **(48)** और नामा-ए-आमाल रख दिया जाएगा, तो आप मुज्रिमों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ (लिखा) होगा उससे डरते होंगे, और कहते होंगे कि हाय हमारी कम-बख़्ती इस नामा-ए-आमाल का अ़जीब हाल है कि बेलिखे हुए न कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा गुनाह (छोड़ा) और जो कुछ उन्होंने किया था वह सब (लिखा हुआ) मौजूद पाएँगे। और आपका रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा।[7] **(49)** ❖

और जबकि हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के सामने सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया, अ़लावा इब्लीस के, वह जिन्नों में से था। सो उसने अपने रबके हुक्म को न माना। सो क्या फिर भी तुम उसको और उसके पैरोकारों को दोस्त बनाते हो मुझको छोड़कर, हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं।[8] ये ज़ालिमों के

---

1. हासिल यह हुआ कि तेरा शक व शुब्हा करने का मन्शा यह दौलत व जायदाद है जो तेरे पास है और मेरे पास नहीं, यह समझना ही ग़लत है। क्योंकि अव्वल तो यहाँ ही मुम्किन है कि उल्टा हो जाए, फिर कभी न कभी तो यह फ़ना होने वाली ही है और आख़िरत की नेमतें कभी फ़ना न होंगी, इसलिए एतिबार वहाँ का है यहाँ का नहीं।
2. मालूम नहीं क्या आफ़त थी मगर ज़ाहिरन उसके ग़ैर-वाज़ेह (अस्पष्ट) होने से मालूम होता है कि कोई बड़ी आफ़त थी।
3. मुराद यह कि कुफ़्र न करता। मतलब यह मालूम होता है कि वह समझ गया कि यह आफ़त कुफ़्र के इन्तिक़ाम में आई है इसलिए उसपर शर्मिन्दा होता है कि अगर कुफ़्र न करता तो या तो आफ़त न आती या आती तो उसका बदल आख़िरत में मिलता, अब दुनिया व आख़िरत दोनों जगह घाटे वाली बात हो गई। ये बातें मोमिन से उसके कान में पड़ी होंगी। और इससे यह लाज़िम नहीं आता कि वह मोमिन हो गया हो, क्योंकि यह शर्मिन्दगी नुक़सान की वजह से है कुफ़्र के बुरा होने की वजह से नहीं।
4. यानी अगर उसके मक़बूल बन्दों का कोई नुक़सान हो जाता है तो दोनों जहान में नेक बदला मिलता है, बख़िलाफ़ काफ़िर के कि बिलकुल घाटे में रह गया।
5. यही हाल दुनिया का है कि आज हरी-भरी नज़र आती है फिर इसका नाम व निशान भी न रहेगा।
6. यानी नेक आमाल पर जो-जो उम्मीदें बाँधी होती हैं वे आख़िरत में पूरी होंगी और उससे भी ज़्यादा सवाब मिलेगा, बख़िलाफ़ दुनिया के फ़ायदे और सामान के कि उससे ख़ुद दुनिया में उम्मीदें पूरी नहीं होतीं और आख़िरत में तो गुन्जाइश ही नहीं, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 542 पर)**

समावाति वल्अर्ज़ि व ला ख़ल्-क़ अन्फ़ुसिहिम् व मा कुन्तु मुत्तख़िज़ल्-मुज़िल्ली-न अज़ुदा **(51)** व यौ-म यक़ूलु नादू शु-रकाइ-यल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् फ़-दऔहुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व जअ़ल्ना बैनहुम् मौबिक़ा **(52)** व र-अल् मुज्रिमूनन्ना-र फ़-ज़न्नू अन्नहुम् मुवाक़िअूहा व लम् यजिदू अ़न्हा मस्रिफ़ा **(53)** ❖

व ल-क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि लिन्नासि मिन् कुल्लि म-सलिन्, व कानल्-इन्सानु अक्स-र शैइन् ज-दला **(54)** व मा म-नअ़न्-ना-स अंय्युअ्मिनू इज़् जाअहुमुल्हुदा व यस्तग़्फ़िरू रब्बहुम् इल्ला अन् तअ्ति-यहुम् सुन्नतुल्-अव्वली-न औ यअ्ति-यहुमुल्-अ़ज़ाबु क़ुबुला **(55)** व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न व युजादिलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्-क़ वत्त-ख़ज़ू आयाती व मा उन्ज़िरू हुज़ुवा **(56)** व मन् अज़्लमु मिम्-मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही फ़-अअ़्र-ज़ अ़न्हा व नसि-य मा क़द्दमत् यदाहु, इन्ना जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्न-तन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन्, व इन् तद्अुहुम् इलल्-हुदा फ़-लंय्यह्तदू इज़न् अ-बदा **(57)** व रब्बुकल्-ग़फ़ूरु ज़ुर्रह्मति, लौ युआख़िज़ुहुम् बिमा क-सबू ल-अ़ज्ज-ल लहुमुल्-अ़ज़ा-ब, बल्-लहुम् मौअ़िदुल्-लंय्यजिदू मिन् दूनिही मौअिला **(58)** व तिल्कल्-क़ुरा अह्लक्नाहुम् लम्मा ज़-लमू व जअ़ल्ना लिमह्लिकिहिम् मौअ़िदा **(59)** ❖

व इज़् क़ा-ल मूसा लि-फ़ताहु ला अब्रहु हत्ता अब्लु-ग़ मज्म-अल् बह्रैनि औ अम्ज़ि-य

مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ
خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ
الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ۝ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۝ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ
النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝ وَلَقَدْ
صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ
شَيْءٍ جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا
رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝
وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا
هُزُوًا ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ
مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ
اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ۝
وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ
الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ۝ وَتِلْكَ
الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝ وَاِذْ قَالَ

लिए बहुत बुरा बदल है। **(50)** मैंने उनको न तो आसमान और ज़मीन के पैदा करने के वक़्त बुलाया और न खुद उनके पैदा करने के वक़्त (बुलाया) और मैं ऐसा (आजिज़) न था कि गुमराह करने वालों को अपना (हाथ व) बाज़ू बनाता।[1] **(51)** और उस दिन (को याद करो कि) हक़ तआला फ़रमाएगा कि जिनको तुम हमारा शरीक समझा करते थे, उनको पुकारो। पस वे उनको पुकारेंगे, सो वे उनको जवाब ही न देंगे, और हम उनके दरमियान में एक आड़ कर देंगे। **(52)** और (उस वक़्त) मुज्रिम लोग दोज़ख़ को देखेंगे, फिर यक़ीन करेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं, और उससे बचने की कोई राह न पाएँगे। **(53)** ❖

और हमने इस क़ुरआन में लोगों के वास्ते हर क़िस्म के (ज़रूरी) उम्दा मज़मून तरह-तरह से बयान फ़रमाए हैं और (इसपर भी इनकार करने वाला) आदमी झगड़े में सबसे बढ़कर है। **(54)** और लोगों को, इसके बाद कि उनको हिदायत पहुँच चुकी, ईमान लाने से और अपने परवर्दिगार से (कुफ़्र वग़ैरह की) मग़्फ़िरत माँगने से और कोई चीज़ रोक नहीं रही, इसके अ़लावा कि (उनको इसका इन्तिज़ार हो) कि अगले लोगों के जैसा मामला उनको भी पेश आए, या यह कि (अल्लाह का) अ़ज़ाब उनके सामने आकर खड़ा हो।[2] **(55)** और रसूलों को तो हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले (बनाकर) भेजा करते हैं, और काफ़िर लोग नाहक़ की बातें पकड़-पकड़कर झगड़े निकालते हैं ताकि उसके ज़रिये से हक़ बात को बिचला दें। और उन्होंने मेरी आयतों को और जिस (अ़ज़ाब) से उनको डराया गया था उसको दिल्लगी बना रखा है। **(56)** और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसको उसके रब की आयतों से नसीहत की जाए, फिर वह उससे मुँह फेर ले और जो कुछ अपने हाथों (गुनाह) समेट रहा है, उस (के नतीजे) को भूल जाए। हमने उस (हक़ बात) के समझने से उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, और (उसके सुनने से) उनके कानों में डाट (दे रखी) है, और (इसी वजह से) अगर आप उसको सही रास्ते की तरफ़ बुलाएँ तो ऐसी हालत में हरगिज़ भी रास्ते पर न आएँ। **(57)** और आपका रब बड़ा मग़फ़िरत करने वाला (और बड़ा) रहमत वाला है। अगर उनसे उनके आमाल पर पकड़ करने लगता तो उनपर फ़ौरन ही अ़ज़ाब ला देता, (मगर ऐसा नहीं हुआ) बल्कि उनके वास्ते एक तय वक़्त है, (यानी क़ियामत का दिन) कि उससे इस तरफ़ (यानी पहले) कोई पनाह की जगह नहीं पा सकते।[3] **(58)** और ये बस्तियाँ, (जिनके क़िस्से मश्हूर व मज़कूर हैं) जब उन्होंने (यानी उनके रहने वालों ने) शरारत की तो हमने उनको हलाक कर दिया,[4] और हमने उनके हलाक होने के लिए वक़्त तय किया था।[5] **(59)** ❖

(पृष्ठ 540 का शेष) इसलिए दुनिया से दिलचस्पी या इसपर फ़ख़्र न करना चाहिए बल्कि आख़िरत का एहतिमाम करना चाहिए।

7. कि बिना किया हुआ गुनाह लिख ले, या की हुई नेकी जबकि शर्तों के साथ की जाए, न लिखे। ख़ुलासा यह कि मुश्रिकों के सरदार जिस चीज़ पर फ़ख़्र करते हैं उन्होंने उसका हाल और अन्जाम सुन लिया, और जिन ग़रीबों को हक़ीर समझते हैं उनके नेक आमाल का कभी ख़त्म न होना मालूम कर लिया, अब भी अ़क़्ल न आए तो गोली मारिए।

8. यानी मेरी पैरवी को छोड़कर अ़क़ीदे में उनकी पैरवी करते हो, जो कि बिलकुल शिर्क है।

1. यानी मददगार तो वह ढूँढे जो क़ादिर न हो।

2. मतलब यह है कि क्या इसलिए ईमान नहीं लाते कि ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तब ईमान लाएँगे जैसा कि उनके हाल से ज़ाहिर होता है, और कह भी डालते थे कि ऐसी चीज़ें ज़ाहिर क्यों नहीं होतीं।

3. पस मोहलत इसलिए दी है कि अगर मुसलमान हो जाएँ तो उनकी मग़्फ़िरत कर दूँगा, दूसरे ख़ुद रहमत भी इसका तक़ाज़ा करती है कि ईमान न लाने पर भी दुनिया में सख़्त अ़ज़ाब से मोहलत दी जाए।

4. पस कुफ़्र का हलाकत का सबब होना साबित हुआ।

5. ऊपर काफ़िरों के सरदारों की इस दरख़्वास्त की बुराई थी कि हमारी तालीम की मज्लिस में ग़रीब मुसलमान न रहने पाएँ। आगे हज़रत मूसा के एक क़िस्से से इसके बुरा होने को और ज़्यादा वाज़ेह किया है, कि उन्होंने तो अपने से छोटे को बाज़ ख़ास उलूम में उस्ताद बनाने से भी शर्म नहीं फ़रमाई और तुमको इन ग़रीबों के तालीम में शरीक होने से शर्म आती है। और साथ ही इस मक़सूद के साथ इस क़िस्से में आपकी नुबुव्वत पर भी दलालत हो गई जिसकी वजह ज़ाहिर है।

हुक़ुबा **(60)** फ़-लम्मा ब-लग़ा मज्म-अ़ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फ़त्त-ख़-ज़ सबीलहू फ़िल्बह्रि स-रबा **(61)** फ़-लम्मा जा-वज़ा क़ा-ल लि-फ़ताहु आतिना ग़दा-अना, ल-क़द् लक़ीना मिन् स-फ़रिना हाज़ा न-सबा **(62)** क़ा-ल अ-रऐ-त इज़् अवैना इलस्सख़्रति फ़-इन्नी नसीतुल्-हू-त व मा अन्सानीहु इल्लश्शैतानु अन् अज़्कु-रहू वत्त-ख़-ज़ सबी-लहू फ़िल्बह्रि अ़-जबा **(63)** क़ा-ल ज़ालि-क मा कुन्ना नब्ग़ि फ़र्तद्दा अ़ला आसारिहिमा क़-ससा **(64)** फ़-व-जदा अ़ब्दम्-मिन् अ़िबादिना आतैनाहु रह्म-तम् मिन् अ़िन्दिना व अ़ल्लम्नाहु मिल्लदुन्ना अ़िल्मा **(65)** क़ा-ल लहू मूसा हल् अत्तबिअ़ु-क अ़ला अन् तुअ़ल्लि-मनि मिम्मा अ़ुल्लिम्-त रुश्दा **(66)** क़ा-ल इन्न-क लन् तस्तती-अ़ मअ़ि-य सब्रा **(67)** व कै-फ़ तस्बिरु अ़ला मा लम् तुहित् बिही ख़ुब्रा **(68)** क़ा-ल स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु साबिरंव्-व ला अअ़्सी ल-क अम्रा **(69)** क़ा-ल फ़-इनित्त-बअ़्तनी फ़ला तस्अल्नी अ़न् शैइन् हत्ता उह्दि-स ल-क मिन्हु ज़िक्रा **(70)** ❖

الكهف ١٨ ٢٧٢ سبحٰن الذی ١٥

مُوسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾
فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ
سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا
هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ
وَمَآ اَنْسٰىنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ
عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾
فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا
عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ
رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا
لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِىْ
لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ
لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا قَالَ
اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ
اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَ
لَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ
قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

منزل ٤

फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा रकिबा फ़िस्सफ़ी-नति ख़-र-क़हा, क़ा-ल अ-ख़रक़्तहा लितुग़्रि-क़ अह्लहा ल-क़द् जिअ्-त शैअन् इम्रा **(71)** क़ा-ल अलम् अक़ुल् इन्न-क लन् तस्तती-अ़ मअ़ि-य सब्रा **(72)** क़ा-ल ला तुआख़िज़्नी बिमा नसीतु व ला तुर्हिक़्नी मिन् अम्री अ़ुस्रा **(73)** फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा लक़िया ग़ुलामन् फ़-क़-त-लहू क़ा-ल अ-क़तल्-त नफ़्सन् ज़किय्य-तम् बिग़ैरि नफ़्सिन्, ल-क़द् जिअ्-त शैअन् नुक्रा **(74)**

और (वह वक़्त याद करो) जबकि मूसा ने अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि मैं (इस सफ़र में) बराबर चला जाऊँगा, यहाँ तक कि उस मौक़े पर पहुंच जाऊँ जहाँ दो दरिया आपस में मिले हैं, या (यूँ ही) लम्बे अ़र्से तक चलता रहूँगा।[1] **(60)** पस जब (चलते-चलते) दोनों दरियाओं के जमा होने के मौक़े पर पहुँचे, अपनी मछली को दोनों भूल गए और उस (मछली) ने दरिया में अपनी राह ली और चल दी। **(61)** फिर जब दोनों (वहाँ से) आगे बढ़ गए (तो मूसा ने) अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि हमारा नाश्ता तो लाओ, हमको तो इस सफ़र में (यानी आजकी मन्ज़िल में) बड़ी तकलीफ़ पहुँची। **(62)** (ख़ादिम ने) कहा, कि (लीजिए) देखिए (अ़जीब बात हुई) जब हम उस पत्थर के क़रीब ठहरे थे, सो मैं (उस) मछली (के ज़िक्र करने) को भूल गया और मुझको शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता, और (वह क़िस्सा यह हुआ कि) उस (मछली) ने (ज़िन्दा होकर) दरिया में अ़जीब तौर पर अपनी राह ली। **(63)** (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने यह क़िस्सा सुनकर) फ़रमाया, यही वह मौक़ा है जिसकी हमको तलाश थी, सो दोनों अपने क़दमों के निशान देखते हुए उल्टे लौटे। **(64)** सो (वहाँ पहुँचकर) उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे (यानी ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम) को पाया, जिनको हमने अपनी (ख़ास) रहमत (यानी मक़बूलियत) दी थी, और हमने उनको अपने पास से (एक ख़ास तरीक़े का) इल्म सिखाया था। **(65)** मूसा ने (उनको सलाम किया और) उनसे फ़रमाया, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त से कि जो मुफ़ीद इल्म आपको (अल्लाह की तरफ़ से) सिखाया गया है, उसमें से आप मुझको भी सिखला दें। **(66)** (उन बुज़ुर्ग ने) जवाब दिया, आप से मेरे साथ (रहकर मेरे कामों पर) सब्र न हो सकेगा। **(67)** और (भला) ऐसे मामलों पर आप कैसे सब्र करेंगे जो आपकी जानकारी से बाहर हैं। **(68)** (मूसा ने) फ़रमाया कि इन्शा-अल्लाह आप मुझको सब्र करने वाला (यानी ज़ब्त करने वाला) पाएँगे, और मैं किसी बात में आपके ख़िलाफ़े हुक्म न करूँगा। **(69)** (उन बुज़ुर्ग ने) फ़रमाया कि (अच्छा) अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो (इतना ख़्याल रहे कि) मुझसे किसी बात के बारे में कुछ पूछना नहीं, जब तक कि उसके बारे में मैं ख़ुद ज़िक्र (शुरू) न कर दूँ। **(70)** ❖

फिर दोनों (किसी तरफ़) चले, यहाँ तक कि जब दोनों नाव में सवार हुए तो (उन बुज़ुर्ग ने) उस नाव में छेद कर दिया। (मूसा ने) फ़रमाया कि क्या आपने इस नाव में इसलिए छेद किया (होगा) कि इसमें बैठने वालों को डुबो दें। आपने बड़ी भारी (यानी ख़तरे की) बात की। **(71)** (उन बुज़ुर्ग ने) कहा, क्या मैंने कहा नहीं था कि आप से मेरे साथ सब्र न हो सकेगा। **(72)** (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, (कि मुझको याद न रहा था, सो) आप मेरी भूल (चूक) पर पकड़ न कीजिए और मेरे इस मामले में मुझपर ज़्यादा तंगी न डालिए। **(73)** फिर दोनों (कश्ती से उतरकर आगे) चले, यहाँ तक कि जब एक (छोटी उम्र के) लड़के से मिले तो (उन बुज़ुर्ग ने) उसको मार डाला, (मूसा अ़लैहिस्सलाम घबराकर) कहने लगे कि आपने एक बेगुनाह जान को मार डाला (और वह भी) किसी जान के बदले के बग़ैर, बेशक आपने (यह तो) बड़ी बेजा हरकत की। **(74)**

---

1. इस सफ़र की वजह यह हुई थी कि एक बार मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इसराईल में वअ़ज़ (तक़रीर) फ़रमाया तो किसी ने पूछा कि इस वक़्त आदमियों में सबसे बड़ा आ़लिम कौन शख़्स है? आपने फ़रमाया, मैं। मतलब यह था कि उन उलूम में जिनको अल्लाह की निकटता हासिल करने में दख़ल है, मेरे बराबर कोई नहीं। और यह फ़रमाना सही था क्योंकि आप बड़े मर्तबे के रसूल थे। चूँकि ज़ाहिरन लफ़्ज़ आ़म था इसलिए अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर हुआ कि आपको कलाम करने और बोलने में एहतियात की तालीम दी जाए। इर्शाद हुआ कि दो दरियाओं के संगम में हमारा एक बन्दा तुमसे भी ज़्यादा इल्म रखता है। मतलब यह था कि बाज़ उलूम में वह तुमसे भी ज़्यादा है, अगरचे उन उलूम को अल्लाह से क़रीब होने में दख़ल न हो, लेकिन इस बिना पर जवाब में बिला क़ैद तो अपने को सबसे ज़्यादा जानने वाला न कहना चाहिए था। ग़रज़ मूसा अ़लैहिस्सलाम उनसे मिलने के इच्छुक हुए और पूछा कि उन तक पहुँचने की क्या सूरत है? इर्शाद हुआ कि एक बेजान मछली अपने साथ लेकर सफ़र करो, जहाँ वह मछली गुम हो जाए वह शख़्स वहाँ है। उस वक़्त मूसा अ़लैहिस्सलाम ने यूशा अ़लैहिस्सलाम को अपने साथ लिया और यह बात फ़रमाई।